पं० श्रीराम शर्मा आचार्य वाङ्मय

विचारसार एवं सूक्तियाँ

(प्रथम खण्ड)

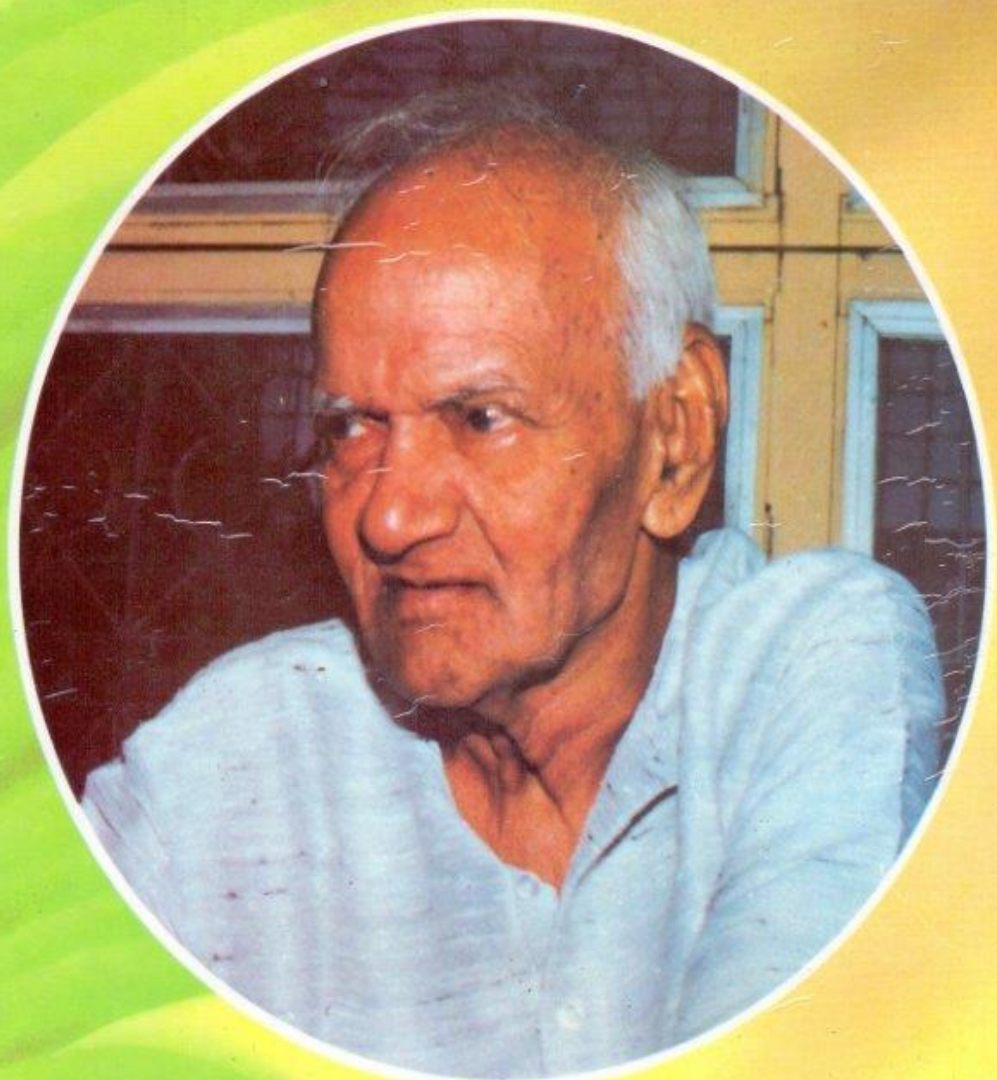

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विचारसार एवं सूक्तियाँ
(प्रथम खण्ड)

सम्पादक
ब्रह्मवर्चस

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

प्रकाशक :
अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रकाशक
अखण्ड ज्योति संस्थान
मथुरा-२८१ ००३

© सर्वाधिकार सुरक्षित

द्वितीय संस्करण १९९८

www.vicharkrantibooks.org

मूल्य १२५)

मुद्रक
जनजागरण प्रेस, मथुरा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समर्पणम्

ॐ वन्दे भगवतीं देवीं श्रीरामञ्च जगद्गुरुम् ।
पादपद्मे तयोः श्रित्वा प्रणमामि मुहुर्मुहुः ।।

मातृवत् लालयित्री च पितृवत् मार्गदर्शिका ।
नमोऽस्तु गुरुसत्तायै श्रद्धा-प्रज्ञा युता च या ।।

भगवत्याः जगन्मातुः, श्रीरामस्य जगद्गुरोः ।
पादुकयुगले वन्दे, श्रद्धाप्रज्ञास्वरूपयोः ।।

नमोऽस्तु गुरवे तस्मै गायत्रीरूपिणे सदा ।
यस्य वागमृतं हन्ति विषं संसारसंज्ञकम् ।।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

असम्भवं सम्भवकर्तुमुद्यतं प्रचण्डझञ्झावृतिरोधसक्षमम् ।
युगस्य निर्माणकृते समुद्यतं परं महाकालममुं नमाम्यहम् ।।

त्वदीयं वस्तु गोविन्द ! तुभ्यमेव समर्पये ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विराट गायत्री परिवार एवं उसके संस्थापक-संरक्षक एक संक्षिप्त परिचय

इतिहास में कभी-कभी ऐसा होता है कि अवतारी सत्ता एक साथ बहुआयामी रूपों में प्रकट होती है एवं करोड़ों ही नहीं, पूरी वसुधा के उद्धार-चेतनात्मक धरातल पर सबके मनों का नये सिरे से निर्माण करने आती है। परमपूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य को एक ऐसी ही सत्ता के रूप में देखा जा सकता है जो युगों-युगों में गुरु एवं अवतारी सत्ता दोनों ही रूपों में हम सबके बीच प्रकट हुई, अस्सी वर्ष का जीवन जीकर एक विराट् ज्योति प्रज्वलित कर उस सूक्ष्म ऋषि चेतना के साथ एकाकार हो गयी जो आज युग परिवर्तन को सन्निकट लाने को प्रतिबद्ध है। परमवंदनीया माताजी शक्ति का रूप थीं जो कभी महाकाली, कभी माँ जानकी, कभी माँ शारदा एवं कभी माँ भगवती के रूप में शिव की कल्याणकारी सत्ता का साथ देने आती रही हैं। उनने भी सूक्ष्म में विलीन हो स्वयं को अपने आराध्य के साथ एकाकार कर ज्योतिपुरुष का एक अंग स्वयं को बना लिया। आज दोनों सशरीर हमारे बीच नहीं हैं किन्तु, नूतन सृष्टि कैसे ढाली गयी, कैसे मानव गढ़ने का साँचा बनाया गया, इसे शान्तिकुंज, ब्रह्मवर्चस, गायत्री तपोभूमि, अखण्ड ज्योति संस्थान एवं युगतीर्थ आँवलखेड़ा जैसी स्थापनाओं तथा संकल्पित सृजन सेनानीगणों के वीरभद्रों की करोड़ों से अधिक की संख्या के रूप में देखा जा सकता है।

परमपूज्य गुरुदेव का वास्तविक मूल्यांकन तो कुछ वर्षों बाद इतिहासविद, मिथक लिखने वाले करेंगे किन्तु, यदि उनको आज भी साक्षात कोई देखना या उनसे साक्षात्कार करना चाहता हो तो उन्हें उनके द्वारा अपने हाथ से लिखे गये उस विराट परिमाण में साहित्य के रूप में युग संजीवनी के रूप में देखा सकता है जो वे अपने वजन से अधिक भार के बराबर लिख गये। इस साहित्य में संवेदना का स्पर्श इस बारीकी से हुआ है कि लगता है लेखनी को उसी की स्याही में डुबोकर लिखा गया हो। हर शब्द ऐसा जो हृदय को छूता, मन को व विचारों को बदलता चला जाता है। लाखों-करोड़ों के मनों के अंतःस्थल को छूकर उसने उनका कायाकल्प कर दिया। रूसो के प्रजातंत्र की, कार्लमार्क्स के साम्यवाद की क्रान्ति भी इसके समक्ष बौनी पड़ जाती है। उनके मात्र इस युग वाले स्वरूप को लिखने तक में लगता है कि एक विश्वकोश तैयार हो सकता है, फिर उस बहुआयामी रूप को जिसमें वे संगठनकर्ता, साधक, करोड़ों के अभिभावक, गायत्री महाविद्या के उद्धारक, संस्कार परम्परा का पुनर्जीवन करने वाले, ममत्व लुटाने वाले एक पिता, नारी जाति के प्रति अनन्य करुणा बिखेरकर उनके ही उद्धार के लिए धरातल पर चलने वाला नारी जागरण अभियान चलाते देखे जाते हैं, अपनी वाणी के उद्बोधन से एक विराट् गायत्री परिवार एकाकी अपने बलबूते खड़े करते दिखाई देते हैं तो समझ में नहीं आता, क्या-क्या लिखा जाये, कैसे छन्दबद्ध किया जाय, उस महापुरुष के जीवनचरित को।

आश्विन कृष्ण त्रयोदशी विक्रमी संवत् १९६७ (२० सितम्बर, १९११) को स्थूल शरीर से आँवलखेड़ा ग्राम जनपद आगरा जो जलेसर मार्ग पर आगरा से पन्द्रह मील की दूरी पर स्थित है, में जन्मे श्रीराम शर्मा जी का बाल्यकाल-कैशोर्य काल ग्रामीण परिसर में ही बीता। वे जन्मे तो थे एक जमींदार घराने में, जहाँ उनके पिता श्री पं. रूपकिशोर जी शर्मा आस-पास के, दूर-दराज के राजघरानों के राजपुरोहित, उद्भट विद्वान, भागवत कथाकार थे किन्तु, उनका अंतःकरण मानव मात्र की पीड़ा से सतत विचलित रहता था। साधना के प्रति उनका झुकाव बचपन में ही दिखाई देने लगा। जब वे अपने सहपाठियों को, छोटे बच्चों को अमराइयों में बिठाकर स्कूली शिक्षा के साथ-साथ सुसंस्कारिता अपनाने वाली आत्मविद्या का शिक्षण दिया करते थे, छटपटाहट के कारण हिमालय की ओर भाग निकलने व पकड़े जाने पर उनने संबंधियों को बताया कि हिमालय ही उनका घर है एवं वहीं वे जा रहे थे। किसे मालूम था कि हिमालय की ऋषि चेतनाओं का समुच्चय बनकर आयी यह सत्ता वस्तुतः अगले दिनों अपना घर वहीं बनाएगी। जाति-पाँति का कोई भेद नहीं। जातिगत मूढ़ता भरी मान्यता से ग्रसित तत्कालीन भारत के ग्रामीण परिसर में एक अछूत वृद्ध महिला

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
की जिसे कुष्ठ रोग हो गया था, उसी के टोले में जाकर सेवा कर उनने घरवालों का विरोध तो मोल ले लिया पर अपना व्रत नहीं छोड़ा। उस महिला ने स्वस्थ होने पर उन्हें ढेरों आशीर्वाद दिये। एक अछूत कहलाने वाली जाति का व्यक्ति जो उनके आलीशान घर में घोड़ों की मालिश करने आता था, एक बार कह उठा कि मेरे घर कथा कौन कराने आएगा, मेरा ऐसा सौभाग्य कहाँ। नवनीत जैसे हृदय वाले पूज्यवर उसके घर जा पहुँचे एवं कथा पूरे विधान से कर पूजा की, उसको स्वच्छता का पाठ सिखाया, जबकि सारा गाँव उनके विरोध में बोल रहा था।

किशोरावस्था में ही समाज सुधार की रचनात्मक प्रवृत्तियाँ उनने चलाना आरम्भ कर दी थीं। औपचारिक शिक्षा स्वल्प ही पायी थी किंतु, उन्हें इसके बाद आवश्यकता भी नहीं थी क्योंकि जो जन्मजात प्रतिभासम्पन्न हो वह औपचारिक पाठ्यक्रम तक सीमित कैसे रह सकता है। हाट-बाजारों में जाकर स्वास्थ्य-शिक्षा प्रधान परिपत्र बाँटना, पशुधन को कैसे सुरक्षित रखें तथा स्वावलम्बी कैसे बनें, इसके छोटे-छोटे पैम्फलेट्स लिखने, हाथ की प्रेस से छपवाने के लिए उन्हें किसी शिक्षा की आवश्यकता नहीं थी। वे चाहते थे, जनमानस आत्मावलम्बी बने, राष्ट्र के प्रति स्वाभिमान उसका जागे, इसलिए गाँव में जन्मे इस लाल ने नारी शक्ति व बेरोजगार युवाओं के लिए गाँव में ही एक बुनताघर स्थापित किया व उसके द्वारा हाथ से कैसे कपड़ा बुना जाय अपने पैरों पर कैसे खड़ा हुआ जाय यह सिखाया।

पंद्रह वर्ष की आयु में वसंत पंचमी की वेला में सन् १९२६ में उनके घर की पूजास्थली में, जो उनकी नियमित उपासना का तब से आगार थी, जबसे महामना पं. मदनमोहन मालवीय जी ने उन्हें काशी में गायत्री मंत्र की दीक्षा दी थी, उनकी गुरुसत्ता का आगमन हुआ अदृश्य छायाधारी सूक्ष्म रूप में। उनने प्रज्ज्वलित दीपक की लौ में से स्वयं को प्रकट कर उन्हें उनके द्वारा विगत कई जन्मों में सम्पन्न क्रिया-कलापों का दिग्दर्शन कराया तथा उन्हें बताया कि वे दुर्गम हिमालय से आये हैं एवं उनसे अनेकानेक ऐसे क्रियाकलाप कराना चाहते हैं, जो अवतारी स्तर की ऋषिसत्ताएँ उनसे अपेक्षा रखती हैं। चार बार कुछ दिन से लेकर एक साल तक की अवधि तक हिमालय आकर रहने, कठोर तप करने का भी उनने संदेश दिया एवं उन्हें तीन संदेश दिए- १. गायत्री महाशक्ति के चौबीस-चौबीस लक्ष्य के चौबीस महापुरश्चरण जिन्हें आहार के कठोर तप के साथ पूरा करना था। २. अखण्ड घृतदीप की स्थापना एवं जन-जन तक इसके प्रकाश को फैलाने के लिए समय आने पर ज्ञानयज्ञ अभियान चलाना, जो बाद में अखण्ड ज्योति पत्रिका के १९३८ में प्रथम प्रकाशन से लेकर विचार-क्रान्ति अभियान के विश्वव्यापी होने के रूप में प्रकटा तथा ३. चौबीस महापुरश्चरणों के दौरान युगधर्म का निर्वाह करते हुए राष्ट्र के निमित्त भी स्वयं को खपाना, हिमालय यात्रा भी करना तथा उनके संपर्क से आगे का मार्गदर्शन लेना।

यह कहा जा सकता है कि युग निर्माण मिशन, गायत्री परिवार, प्रज्ञा अभियान, पूज्य गुरुदेव जो सभी एक-दूसरे के पर्याय हैं, की जीवन यात्रा का यह एक महत्त्वपूर्ण मोड़ था, जिसमें भावी रीति-नीति का निर्धारण कर दिया। पूज्य गुरुदेव अपनी पुस्तक 'हमारी वसीयत और विरासत' में लिखते हैं कि- ''प्रथम मिलन के दिन समर्पण सम्पन्न हुआ। दो बातें गुरुसत्ता द्वारा विशेष रूप से कही गईं- संसारी लोग क्या करते हैं और क्या कहते हैं, उसकी ओर से मुँह मोड़कर निर्धारित लक्ष्य की ओर एकाकी साहस के बलबूते चलते रहना एवं दूसरा यह कि अपने को अधिक पवित्र और प्रखर बनाने की तपश्चर्या में जुट जाना- जौ की रोटी व छाछ पर निर्वाह कर आत्मानुशासन सीखना। इसी से वह सामर्थ्य विकसित होगी जो विशुद्धतः परमार्थ प्रयोजनों में नियोजित होगी। वसंत पर्व का यह दिन गुरु अनुशासन का अवधारण ही हमारे लिए नया जन्म बन गया। सद्गुरु की प्राप्ति हमारे जीवन का अनन्य एवं परम सौभाग्य रहा।''

राष्ट्र के परावलम्बी होने की पीड़ा भी उन्हें उतनी ही सताती थी जितनी कि गुरुसत्ता के आदेशानुसार तपकर सिद्धियों के उपार्जन की ललक उनके मन में थी। उनके इस असमंजस को गुरुसत्ता ने ताड़कर परावाणी से उनका मार्गदर्शन किया कि युगधर्म की महत्ता व समय की पुकार देख-सुनकर तुम्हें अन्य आवश्यक कार्यों को छोड़कर अग्निकाण्ड में पानी लेकर दौड़ पड़ने की तरह आवश्यक कार्य भी करने पड़ सकते हैं। इसमें स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के नाते संघर्ष करने का भी संकेत था। १९२७ से १९३३ तक का समय उनका एक सक्रिय स्वयं सेवक-स्वतंत्रता सेनानी के रूप में बीता, जिसमें घरवालों के विरोध के बावजूद

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
पैदल लम्बा रास्ता पार कर वे आगरा के उस शिविर में पहुँचे, जहाँ शिक्षण दिया जा रहा था, अनेकानेक मित्रों-सखाओं-मार्गदर्शकों के साथ भूमिगत हो कार्य करते रहे तथा समय आने पर जेल भी गये। छह-छह माह की उन्हें कई बार जेल हुई। जेल में भी वे जेल के निरक्षर साथियों को शिक्षण देकर व स्वयं अँग्रेजी सीखकर लौटे। आसनसोल जेल में वे श्री जवाहरलाल नेहरू की माता श्रीमती स्वरूपरानी नेहरू, श्री रफी अहमद किदवई, महामना मदनमोहन मालवीय जी, देवदास गाँधी जैसी हस्तियों के साथ रहे व वहाँ से एक मूलमंत्र सीखा जो मालवीय जी ने दिया था कि जन-जन की साझेदारी बढ़ाने के लिए हर व्यक्ति के अंशदान से, मुट्ठी फण्ड से रचनात्मक प्रवृत्तियाँ चलाना। यही मंत्र आगे चलकर एक घण्टा समयदान, बीस पैसा नित्य या एक दिन की आय एक माह में तथा एक मुट्ठी अन्न रोज डालने के माध्यम से धर्मघट की स्थापना का स्वरूप लेकर लाखों-करोड़ों की भागीदारी वाला गायत्री परिवार बनाता चला गया, जिसका आधार था प्रत्येक व्यक्ति की यज्ञीय भावना का उसमें समावेश।

स्वतंत्रता की लड़ाई के दौरान कुछ उग्र दौर भी आये, जिनमें शहीद भगतसिंह को फाँसी दिये जाने पर फैले जनआक्रोश के समय श्री अरविन्द के किशोर काल की क्रान्तिकारी स्थिति की तरह उनने भी वे कार्य किये, जिनसे आक्रान्ता शासकों के प्रति असहयोग जाहिर होता था। नमक आन्दोलन के दौरान वे आततायी शासकों के समक्ष झुके नहीं, वे मारते रहे परन्तु, समाधि स्थिति को प्राप्त राष्ट्र देवता के पुजारी को बेहोश होना स्वीकृत था पर आन्दोलन से पीठ दिखाकर भागना नहीं। बाद में फिरंगी सिपाहियों के जाने पर लोग उठाकर घर लेकर आये। जरारा आन्दोलन के दौरान उनने झण्डा छोड़ा नहीं जबकि, फिरंगी उन्हें पीटते रहे, झण्डा छीनने का प्रयास करते रहे। उनने मुँह से झण्डा पकड़ लिया, गिर पड़े, बेहोश हो गये पर झण्डे का टुकड़ा चिकित्सकों द्वारा दाँतों में भींचे गये टुकड़े के रूप में जब निकाला गया तब सब उनकी सहनशक्ति देखकर आश्चर्यचकित रह गये। उन्हें तब से ही आजादी के मतवाले उन्मत्त श्रीराम मत्त नाम मिला। अभी भी आगरा में उनके साथ रहे या उनसे कुछ सीख लिए अगणित व्यक्ति उन्हें मत्तजी नाम से ही जानते हैं। लगानबन्दी के आँकड़े एकत्र करने के लिए उनने पूरे आगरा जिले का दौरा किया व उनके द्वारा प्रस्तुत वे आँकड़े तत्कालीन संयुक्त प्रान्त के मुख्यमंत्री श्रीगोविन्द वल्लभ पंत द्वारा गाँधीजी के समक्ष पेश किये गये। बापू ने अपनी प्रशस्ति के साथ वे प्रामाणिक आँकड़े ब्रिटिश पार्लियामेण्ट भेजे, इसी आधार पर पूरे संयुक्त प्रान्त के लगान माफी के आदेश प्रसारित हुए। कभी जिनने अपनी इस लड़ाई के बदले कुछ न चाहा उन्हें सरकार ने अपना प्रतिनिधि भेजकर पचास वर्ष बाद ताम्रपत्र देकर शांतिकुंज में सम्मानित किया। उसी सम्मान व स्वाभिमान के साथ सारी सुविधाएँ व पेंशन उनने प्रधानमंत्री राहत फण्ड के नाम समर्पित कर दीं। वैरागी जीवन का सच्चे राष्ट्र संत होने का इससे बड़ा प्रमाण क्या हो सकता है?

१९३५ के बाद उनके जीवन का नया दौर शुरू हुआ, जब गुरुसत्ता की प्रेरणा से वे श्री अरविन्द से मिलने पाण्डिचेरी, गुरुदेव ऋषिवर रवीन्द्रनाथ टैगोर से मिलने शांति निकेतन तथा बापू से मिलने साबरमती आश्रम, अहमदाबाद गये। सांस्कृतिक, आध्यात्मिक मोर्चे पर राष्ट्र को कैसे परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त किया जाय, यह निर्देश लेकर अपना अनुष्ठान यथावत् चलाते हुए उनने पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश किया, जब आगरा में 'सैनिक' समाचार पत्र के कार्यवाहक संपादक के रूप में श्रीकृष्णदत्तपालीवाल जी ने उन्हें अपना सहायक बनाया। बाबू गुलाब राय व पालीवाल जी से सीख लेते हुए सतत स्वाध्यायरत रहकर उनने अखण्ड ज्योति नामक पत्रिका का पहला अंक १९३८ की वसंत पंचमी पर प्रकाशित किया। प्रयास पहला था, जानकारियाँ कम थीं अतः पुनः सारी तैयारी के साथ विधिवत् १९४० की जनवरी से उनने परिजनों के नाम पाती के साथ अपने हाथ से बने कागज पर पैर से चलने वाली मशीन से छापकर 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका का शुभारंभ किया जो पहले तो दो सौ पचास पत्रिका के रूप में निकली, किन्तु क्रमशः उनके अध्यवसाय घर- घर पहुँचाने, मित्रों तक पहुँचाने वाले उनके हृदयस्पर्शी पत्रों द्वारा बढ़ती-बढ़ती नवयुग के मत्स्यावतार की तरह आज दस लाख से भी अधिक संख्या में विभिन्न भाषाओं में छपती व एक करोड़ से अधिक व्यक्तियों द्वारा पढ़ी जाती है।

पत्रिका के साथ-साथ 'मैं क्या हूँ' जैसी पुस्तकों का लेखन आरम्भ हुआ। स्थान बदला, आगरा से मथुरा आ गये, दो-तीन घर बदलकर घीयामण्डी में जहाँ आज अखण्ड ज्योति संस्थान है, आ बसे। पुस्तकों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

का प्रकाशन व कठोर तपश्चर्या, ममत्व विस्तार तथा पत्रों द्वारा जन-जन के अंतःस्थल को छूने की प्रक्रिया चालू रही। साथ देने आ गयीं परमवंदनीया माताजी भगवती देवी शर्मा, जिन्हें भविष्य में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका अपने आराध्य इष्ट गुरु के लिए निभानी थी। उनके मर्मस्पर्शी पत्रों ने, भाव भरे आतिथ्य, हर किसी को जो दुःखी था- पीड़ित था, दिये गये ममत्व भरे परामर्श ने गायत्री परिवार का आधार खड़ा किया, इसमें कोई सन्देह नहीं। यदि विचारक्रांति में साहित्य ने मनोभूमि बनायी तो भावात्मक क्रान्ति में ऋषियुगल के असीम स्नेह ने ब्राह्मणत्व भरे जीवन ने शेष बची भूमिका निभायी।

'अखण्ड ज्योति' पत्रिका लोगों के मनों को प्रभावित करती रही, इसमें प्रकाशित 'गायत्री चर्चा' स्तम्भ से लोगों को गायत्री व यज्ञमय जीवन जीने का संदेश मिलता रहा, साथ ही एक आना से लेकर छह आना सीरज की अनेकानेक लोकोपयोगी पुस्तकें छपती चली गयीं। इस बीच हिमालय के बुलावे भी आये, अनुष्ठान भी चलता रहा जो पूरे विधि-विधान के साथ १९५३ में गायत्री तपोभूमि की स्थापना, १०८ कुण्डी यज्ञ व उनके द्वारा दी गयी प्रथम दीक्षा के साथ समाप्त हुआ। गायत्री तपोभूमि की स्थापना के निमित्त धन की आवश्यकता पड़ी तो परमवंदनीया माताजी ने जिनने हर कदम पर अपने आराध्य का साथ निभाया, अपने सारे जेवर बेच दिये, पूज्यवर ने जमींदारी के बाण्ड बेच दिये एवं जमीन लेकर अस्थायी स्थापना कर दी गयी। धीरे-धीरे उदारचेताओं के माध्यम से गायत्री तपोभूमि एक साधना पीठ बन गयी। २४०० तीर्थों के जल व रज की स्थापना वहाँ की गयी, २४०० करोड़ गायत्री मंत्र लेखन वहाँ स्थापित हुआ, अखण्ड अग्नि हिमालय के एक अति पवित्र स्थान से लाकर स्थापित की गयी जो अभी तक वहाँ यज्ञशाला में जल रही है। १९४१ से १९७१ तक का समय परमपूज्य गुरुदेव का गायत्री तपोभूमि, अखण्ड ज्योति संस्थान में सक्रिय रहने का समय है। १९५६ में नरमेध यज्ञ, १९५७ में सहस्रकुण्डी यज्ञ करके लाखों गायत्री साधकों को एकत्र कर उनने गायत्री परिवार का बीजारोपण कर दिया। कार्त्तिक पूर्णिमा १९५८ में आयोजित इस कार्यक्रम में दस लाख व्यक्तियों ने भाग लिया, इन्हीं के माध्यम से देशभर में प्रगतिशील गायत्री परिवार की दस हजार से अधिक शाखाएँ स्थापित हो गयीं। संगठन का अधिकाधिक कार्यभार पूज्यवर परमवंदनीया माताजी पर सौंपते चले गये एवम् १९५९ में पत्रिका का संपादन उन्हें देकर पौने दो वर्ष के लिए हिमालय चले गये, जहाँ उन्हें गुरुसत्ता से मार्गदर्शन लेना था, तपोवन नंदनवन में ऋषियों से साक्षात्कार करना था तथा गंगोत्री में रहकर आर्ष ग्रन्थों का भाष्य करना था। तब तक वे गायत्री महाविद्या पर विश्वकोश स्तर की रचना गायत्री महाविज्ञान के तीन खण्ड लिख चुके थे, जिसके अब तक प्रायः पैंतीस संस्करण छप चुके हैं। हिमालय से लौटते ही उनने महत्वपूर्ण निधि के रूप में वेद, उपनिषद्, स्मृति, आरण्यक, ब्राह्मण, योगवाशिष्ठ, मंत्र महाविज्ञान, तंत्र महाविज्ञान जैसे ग्रन्थों को प्रकाशित कर देव संस्कृति की मूलथाती को पुनर्जीवन दिया। परमवंदनीया माताजी ने उन्हीं वेदों को पूज्यवर की इच्छानुसार १९९१-९२ में विज्ञानसम्मत आधार देकर पुनर्मुद्रित कराया एवं वे आज घर-घर में स्थापित हैं।

युग निर्माण योजना व 'युग निर्माण सत्संकल्प' के रूप में मिशन का घोषणा पत्र १९६३ में प्रकाशित हुआ। तपोभूमि एक विश्वविद्यालय का रूप लेती चली गयी तथा अखण्ड ज्योति संस्थान एक तप-पूत की निवास स्थली बन गया, जहाँ रहकर उनने अपनी शेष तप साधना पूरी की थी, जहाँ से गायत्री परिवार का बीज डाला गया था। तपोभूमि में विभिन्न शिविरों का आयोजन किया जाता रहा, पूज्यवर स्वयं छोटे-बड़े जन सम्मेलनों के द्वारा विचार क्रान्ति की पृष्ठभूमि बनाते रहे, पूरे देश में १९७०-७१ में पाँच १००८ कुण्डी यज्ञ आयोजित हुए। स्थायी रूप से विदाई लेते हुए एक विराट सम्मेलन (जून १९७१) में परिजनों को विशेष कार्य-भार सौंप परमवंदनीया माताजी को शांतिकुंज, हरिद्वार में अखण्ड दीप के समक्ष तप हेतु छोड़कर स्वयं हिमालय चले गये। एक वर्ष बाद वे गुरुसत्ता का संदेश लेकर लौटे एवं अपनी आगामी बीस वर्ष की क्रिया-पद्धति बतायी। ऋषि परम्परा का बीजारोपण, प्राण प्रत्यावर्तन, संजीवनी व कल्प साधना सत्रों का मार्गदर्शन जैसे कार्य उनने शांतिकुंज में सम्पन्न किये।

सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थापना अपनी हिमालय की इस यात्रा से लौटने के बाद ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान की थी, जहाँ विज्ञान और अध्यात्म के समन्वयात्मक प्रतिपादनों पर शोध कर एक नये धर्म वैज्ञानिक धर्म के मूलभूत आधार रखे जाने थे। इस सम्बन्ध में पूज्यवर ने विराट परिमाण में साहित्य लिखा, अदृश्य जगत के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
अनुसंधान से लेकर मानव की प्रसुप्त क्षमता के जागरण तक, साधना से सिद्धि एवं दर्शन-विज्ञान के तर्क, तथ्य, प्रमाण के आधार पर प्रस्तुतीकरण तक। इसके लिए एक विराट ग्रन्थागार बना व एक सुसज्जित प्रयोगशाला। वनौषधि उद्यान भी लगाया गया तथा जड़ी-बूटी, यज्ञ विज्ञान तथा मंत्र शक्ति पर प्रयोग हेतु साधकों पर परीक्षण प्रचुर परिमाण में किये गये। निष्कर्षों ने प्रमाणित किया कि ध्यान साधना, मंत्र चिकित्सा व यज्ञोपैथी एक विज्ञानसम्मत विधा है। गायत्री नगर क्रमशः एक तीर्थ, संजीवनी विद्या के प्रशिक्षण का, एकेडमी का रूप लेता चला गया एवं जहाँ ९-९ दिन के साधना प्रधान, एक-एक माह के कार्यकर्त्ता निर्माण हेतु युगशिल्पी सत्र सम्पन्न होने लगे।

कार्यक्षेत्र में विस्तार हुआ। स्थान-स्थान पर शक्तिपीठें विनिर्मित हुईं, जिनके निर्धारित क्रियाकलाप थे- सुसंस्कारिता व आस्तिकता संवर्धन एवं जन-जाग्रति के केन्द्र बनना। ऐसे केन्द्र जो १९८० में बनना आरंभ हुए थे, प्रज्ञासंस्थान, शक्तिपीठ, प्रज्ञामण्डल, स्वाध्याय-मण्डल के रूप में पूरे देश व विश्व में फैलते चले गये। ७६ देशों में गायत्री परिवार की शाखाएँ फैल गयीं, ४६०० से अधिक भारत में निज के भवन वाले संस्थान विनिर्मित हो गये, वातावरण गायत्रीमय होता चला गया।

परमपूज्य गुरुदेव ने सूक्ष्मीकरण में प्रवेश कर १९८५ में ही पाँच वर्ष के अंदर अपने सारे क्रिया-कलापों को समेटने की घोषणा कर दी। इस बीच कठोर तपसाधना कर मिलना-जुलना कम कर दिया तथा क्रमशः क्रिया-कलाप परमवंदनीया माताजी को सौंप दिये। राष्ट्रीय एकता सम्मेलनों, विराट दीप यज्ञों के रूप में नूतन विधा को जन-जन को सौंप कर राष्ट्र देवता की कुण्डलिनी जगाने हेतु उनने अपने स्थूल शरीर छोड़ने व सूक्ष्म में समाने की, विराट से विराटतम होने की घोषणा कर गायत्री जयन्ती २ जून, १९९० को महाप्रयाण किया। सारी शक्ति वे परमवंदनीया माताजी के दे गये व अपने व माताजी के बाद संघशक्ति की प्रतीक लाल मशाल को ही इष्ट-आराध्य मानने का आदेश देकर ब्रह्मबीज से विकसित ब्रह्मकमल की सुवास को देवसंस्कृति दिग्विजय अभियान के रूप में आरंभ करने का माताजी को निर्देश दे गये।

एक विराट श्रद्धांजलि समारोह व शपथ समारोह जो हरिद्वार में सम्पन्न हुए, में लाखों व्यक्तियों ने अपना समय समाज के नवनिर्माण, मनुष्य में देवत्व के उदय व धरती पर स्वर्ग लाने का गुरुसत्ता का नारा साकार करने के निमित्त देने की घोषणा की। परमवंदनीया माताजी द्वारा भारतीय-संस्कृति को विश्वव्यापी बनाने, गायत्री रूपी संजीवनी घर-घर पहुँचाने के लिए पूज्यवर द्वारा आरम्भ किये गये युग संधि महापुरश्चरण की प्रथम व द्वितीय पूर्णाहुति तक विराट अश्वमेध महायज्ञों की घोषणा की गयी। वातावरण के परिशोधन, सूक्ष्मजगत के नवनिर्माण एवं सांस्कृतिक व वैचारिक क्रान्ति ने सारी विश्ववसुधा को गायत्री व यज्ञमय, वासंती उल्लास से भर दिया। स्वयं परमवंदनीया माताजी ने अपनी पूर्व घोषणानुसार चार वर्ष तक परिजनों का मार्गदर्शन कर सोलह यज्ञों का संचालन स्थूल शरीर से किया व फिर भाद्रपद पूर्णिमा १९ सितम्बर, १९९४ महालय श्राद्धारंभ वाली पुण्य वेला में अपने आराध्य के साथ एकाकार हो गयीं। उनके महाप्रयाण के बाद, दोनों ही सत्ताओं के सूक्ष्म में एकाकार होने के बाद मिशन की गतिविधियाँ कई गुना बढ़ती चली गयीं एवं जयपुर के प्रथम अश्वमेध यज्ञ (नवम्बर ९२) से छब्बीसवें अश्वमेध यज्ञ शिकागो (यू. एस ए. जुलाई ९५) तक प्रज्ञावतार का प्रत्यक्ष रूप सबको दीखने लगा है।

गुरुसत्ता के आदेशानुसार सतयुग के आगमन तक १०८ महायज्ञ देवसंस्कृति को विश्वव्यापी बनाने हेतु सम्पन्न होने हैं। युग संधि महापुरश्चरण की अंतिम पूर्णाहुति उसी के बाद होगी। प्रथम पूर्णाहुति नवम्बर १९९५ में कार्त्तिक पूर्णिमा के अवसर पर युगपुरुष पूज्यवर की जन्मभूमि आँवलखेड़ा में मनायी गई। उनके द्वारा लिखे गये समग्र साहित्य के वाङ्मय का जो एक सौ आठ खण्डों में फैला है, विमोचन भी यहीं सम्पन्न हुआ। विनम्रता एवं ब्राह्मणत्व की कसौटी पर खरे उतरने वाले वरिष्ठ प्रज्ञापुत्र ही उनके उत्तराधिकारी कहे जाएँगे, यह गुरुसत्ता का उद्घोष था एवं इस क्षेत्र में बढ़-चढ़कर आदर्शवादी प्रतिस्पर्धा करने वाले अनेकानेक परिजन अब उनके स्वप्नों को साकार करने आगे आ रहे हैं। 'हम बदलेंगे-युग बदलेगा' का उद्घोष दिग-दिगन्त तक फैल रहा है एवं इक्कीसवीं सदी उज्ज्वल भविष्य, सतयुग की वापसी का स्वप्न साकार होता चला जा रहा है, यह स्पष्ट दिखाई दे रहा है। ❑❑❑

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भूमिका

सूक्तियाँ छोटे तीर के समान हैं, जो बड़े गम्भीर घाव करने में, मर्मस्थल को स्पर्श करने में सक्षम हैं। यह न केवल याद करने में सुगम होती हैं, बल्कि हृदयस्पर्शी इस सीमा तक होती हैं कि जीवन को बदल देने तक की सामर्थ्य इनमें है । परमपूज्य गुरुदेव ने समय-समय पर अपनी अमृतवाणी में भी तथा लेखनी के माध्यम से भी इस तथ्य को समझाने की कोशिश की है कि भारतीय संस्कृति की इस सूत्र-प्रणाली रूपी विशेषता को यदि हृदयंगम कर लिया जाए, तो ज्ञान की विशिष्ट पूँजी हस्तगत हो सकती है । इस खण्ड में वेदों की स्वर्णिम सूक्तियाँ भी हैं, साम्प्रदायिक सद्भाव की प्रतीक विभिन्न धर्मग्रन्थों की वाणी भी, शास्त्रमंथन नवनीत भी, तो महापुरुषों के छोटे-छोटे वाक्यों के रूप में अमृतवाणी, ऋषि-चिन्तन भी है एवं विवेक-सतसई भी ।

बड़ी विविधता का समुच्चय यह खण्ड स्वयं में विलक्षण है । एक स्थान पर उन सभी विचारों का संकलन है, जो मनुष्य को महान बनाने की सामर्थ्य रखते हैं । वेदों की सूक्तियों को पूज्यवर ने आत्मसत्ता-परमसत्ता, सत्य और सद्विचार, ब्राह्मणत्त्व, सज्जनता और सद्व्यवहार, उन्नतशील जीवन, प्रेम व कर्त्तव्यपरायणता की महत्ता, दुष्प्रवृत्तियों का शमन, अर्थव्यवस्था का सुनियोजन, दुष्टता से संघर्ष, इन छोटे-छोटे लेखों में बाँटकर परिपूर्ण व्याख्या की है । स्वाध्याय में प्रमाद न करो, हे देवो! गिरे हुओं को उठाओ, क्रोध को नम्रता से शान्त करो, सत्कर्म ही किया करो, किसी का दिल न दुखाओ-ये सूक्तियाँ वेदों में स्थान-स्थान पर आयी हैं । संस्कृत की सरल हिन्दी देकर जो व्याख्या प्रस्तुत की गयी है, उससे विषय सीधा अन्दर तक प्रवेश कर जाता है ।

'पंथ अनेक लक्ष्य एक' प्रकरण में विभिन्न धर्मों के मुख्य ग्रन्थों से उनके मूल उपदेशों को संग्रहीत कर यह जताने का प्रयास किया गया है कि सर्व-साधारण में धर्मों-सम्प्रदायों की भिन्नता, पारस्परिक विरोध की जो भावनाएँ फैली हैं वे निराधार हैं, अज्ञानताजनित हैं । सभी धर्मों के मूल में मूल स्वर एक ही है । अथर्ववेदादि चारों वेद, उपनिषद्, भागवत पुराण, रामचरितमानस, कोधवग्गो, दण्डवग्गो आदि बौद्ध ग्रन्थ, गुरु ग्रंथ साहब, यहूदी भजनावली, मिदराश, यलकुत आदि ग्रन्थ, ताओ तेह किंग, लूका-मत्ती आदि ईसाई ग्रन्थों के उद्धरण, कुरान शरीफ आदि के माध्यम से यह प्रमाणित करने का प्रयास किया गया है कि जीवनशोधन, सदाचार, सत्य ही धर्म है, अहिंसा और प्रेम, कर्त्तव्यपरायणता, दाम्पत्य जीवन की पवित्रता आदि सभी विषयों पर सभी ग्रन्थ समान रूप से एक ही बात का प्रतिपादन करते हैं।

शास्त्रमंथन के नवनीत के रूप में मनुस्मृति, नीतिसार, शब्दार्थ चिन्तामणि, महाभारत, स्मृतिग्रन्थादि, सूत्रग्रन्थ, नीतिशतक, योगवासिष्ठ, सुभाषित रत्नभाण्डागार, चरक, सुश्रुत आदि सभी ग्रन्थों का सार अमृतवचनों के रूप में, सूक्तियों के रूप में प्रस्तुत है । यह एक विलक्षण उपलब्धि है कि यह सारा चिन्तन एक ही स्थान पर आ गया है एवं इसके लिए पाठक को ढेरों ग्रन्थों के स्थान पर मात्र वाङ्मय के इन दो खण्डों के स्वाध्याय से वह उपलब्धि हो सकती है जो अतुलनीय है । अमृतकण के माध्यम से स्वामी रामतीर्थ, स्वामी विवेकानन्द, लाला हरदयाल, गाँधीजी, जेम्सएलन, टाल्सटाय, रामकृष्ण परमहंस, स्पिनोजा, विक्टर ह्यूगो, गेटे, जानसन, बेकन, टेनीसन आदि के विचार जो हृदयस्पर्शी हैं, २-२ पंक्तियों में दे दिए गए हैं । ये 'कोटेशन्स' न केवल वक्ताओं, धर्मोपदेशकों के लिए महत्त्वपूर्ण हैं, जीवनपथ पर प्रगति के मार्ग पर चलने वाले हर व्यक्ति के लिए प्रेरणा के स्रोत हैं । जो भी इन्हें पढ़ेगा, वह अपना जीवन सदा श्रेष्ठ विचारों से ओत-प्रोत रखेगा ।

'ऋषि-चिन्तन' परमपूज्य गुरुदेव के मौलिक विचारों का प्रस्तुतीकरण है । सद्विचारों के माध्यम से महामानव कैसे किसी समयविशेष में समुदाय को एक विशिष्ट लक्ष्य की ओर मोड़ देते हैं, इसका परिचय इन छोटे-छोटे विचारसार रूपी गद्य संदेशों द्वारा मिलता है । समय-समय पर अखण्ड-ज्योति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
पत्रिका, युगनिर्माण योजना, युगशक्ति गायत्री, प्रज्ञा अभियान में प्रथम पृष्ठ पर दिशा-निर्देश के रूप में प्रकाशित होते रहे हैं । सभी का संकलन यहाँ एक साथ कर दिया गया है । आत्मविज्ञान से लेकर व्यावहारिक अध्यात्म के हर क्षेत्र को स्पर्श करने वाले गागर में सागर के समान बहुमूल्य इन विचारों को क्रमबद्ध रूप में यहाँ प्रस्तुत किया गया है । अंधकार को दीपक की चुनौती, तप में प्रमाद न करें, धर्म न तो अवैज्ञानिक है न अनुपयोगी, पतन नहीं उत्थान का मार्ग अपनाएँ, जीवन जीने की कला की सच्ची साधना, जीवन-संग्राम का अनिवार्य सोपान-दृष्टिकोण परिवर्तन, वैभव ही नहीं विवेक भी-इनको पढ़कर मन विधेयात्मक चिन्तन की गंगोत्री में डुबकी लगाने लगता है । आज आवश्यकता ऐसे ही सद्विचारों के प्रवाह की है, जो कलियुग के सूक्ष्मजगत में संव्याप्त प्रदूषित प्रवाह से जूझने की सामर्थ्य दे सकें । यही प्रयास इस वाङ्मय में किया गया है कि पूज्यवर द्वारा लिखित एवं संकलित हर विचारसार एवं सूक्तियाँ एक स्थान पर इन दो खण्डों में समा जाएँ । निश्चित ही इससे सभी विचारशील पाठक लाभान्वित होंगे ।

* * *

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विषय-सूची

अध्यात्म एक चिन्तनधारा	१.१
धर्म और विज्ञान	२.१
कथनी और करनी	३.१
जीवन-साधना	४.१
मनोबल एवं इन्द्रियनिग्रह	५.१
सद्गुणों की सच्ची सम्पत्ति	६.१
समय का सदुपयोग	७.१
छिद्रान्वेषण	८.१
मूढ़मान्यताएँ और अन्धविश्वास	९.१
पतन-पराभव	१०.१
मित्रता	११.१
प्रसन्नता	१२.१
आहार और उपवास	१३.१
शिक्षा	१४.१
प्रशासन तन्त्र	१५.१
जन्म-मरण	१६.१
गायंत्री और यज्ञ	१७.१
परिवार	१८.१
संस्कृति के प्रहरी हमारे तीर्थ	१९.१
सिद्धान्त विवेचन	२०.१
वेदों की स्वर्णिम सूक्तियाँ	२१.१
मानवीय गरिमा	२२.१
पात्रता का विकास	२३.१
कर्मफल और ईश्वर	२४.१
पुरुषार्थ	२५.१
साहसिकता	२६.१
दूरदर्शी विवेकशीलता	२७.१
स्वार्थ नहीं परमार्थ भी	२८.१
प्रगति की आकांक्षा	२९.१

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

अध्यात्म एक चिन्तनधारा

- जिसे अपने जीवन के लिए मन-प्राण की गरज नहीं, जिसे अपने ज्ञान के लिए मन और इन्द्रियों की गरज नहीं, जिसे अपने आनन्द के लिए पदार्थ मात्र के बाह्य स्पर्श की दरकार नहीं, उसी तत्त्व को 'आत्मा' नाम दिया गया है। *—महायोगी अरविन्द*
- आत्म-ज्ञान के बिना अभाव दूर नहीं हो सकते, आत्म-ज्ञानी को कोई अभाव नहीं होता। *—स्वामी रामतीर्थ*
- सारी दुनिया का ज्ञान प्राप्त करके भी जो स्वयं को नहीं जानता, उसका सारा ज्ञान ही निरर्थक है। *—शंकराचार्य*
- अन्तःकरण के चेतन-भाव को जो आत्मा रूप में जानता है, वही पंडित और वही ज्ञानी है। *—महर्षि रमण*
- जो अपने को जानता है, अपने भविष्य को भी जानता है।
- जीवात्मा अमर है। नष्ट होने वाला तो शरीर है इसलिए अमरत्व पाना है तो शरीर नहीं आत्मा की उपासना करो। *—रामकृष्ण परमहंस*
- आनन्द का स्रोत बाह्य जगत में मत ढूँढ़ो, यह तो अपने भीतर दिया है। *—महर्षि रमण*
- केवल आत्म-ज्ञान ही हृदय को सच्चा आनन्द प्रदान करता है। *—स्वामी रामतीर्थ*
- अन्तःकरण आत्मा की वाणी है, जैसे कि शरीर की वासनाएँ। अन्तःकरण की आवाज सुनो और आत्मा को प्राप्त करो। *—रूसो*
- अपनी आत्मा से ही युद्ध कर, दूसरों के साथ युद्ध करने से तुझको क्या प्रयोजन ? अपनी आत्मा द्वारा अपने मन को जीत लेने पर सुख प्राप्त होता है।
- प्रथम अन्तर में अपनी आत्मा का मान जाग्रत करो, तत्पश्चात् विचार करो और तब कर्म में प्रवृत्त हो जाओ।
- अपने छोटे से व्यक्तित्व को विराट व्यक्तित्व में परिवर्तित करो। आत्मा को दिव्य बनाना ही तुम्हारा लक्ष्य है।
- भोगेच्छा को सत्त्वयुक्त आनन्द की पराकाष्ठा में रूपान्तर करो। आत्मा का आनन्दस्वरूप प्राप्त करना ही तुम्हारा लक्ष्य है।
- सुख और आनन्द की खोज बाहर करते हैं, लेकिन वह अन्दर ही है। *—रवीन्द्रनाथ टैगोर*
- प्राप्ति में जो आनन्द है, उसकी अपेक्षा प्रयत्न का आनन्द श्रेष्ठ है। *—विनोबा*
- **इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति न चेदिहावेदीन्महती विनष्टिः।**

  भूतेषु भूतेषु विचित्य धीराः प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति।।

  —केनोपनिषद २/५

  अर्थात्—यदि मनुष्य ने इसी जन्म में अपने सच्चे स्वरूप को जान लिया तब तो ठीक है। यदि नहीं जान लेता है तो इसकी बहुत बड़ी हानि है, क्योंकि जब तक उसे आत्मस्वरूप का ज्ञान नहीं होगा, तब तक उसके दुःखों का अन्त नहीं होगा। इस प्रकार वह आजीवन दुःखी ही रहेगा।
- अपनी आत्मा की महत्ता से बड़ी कोई महत्ता नहीं है। अपनी आत्मा के भीतर जो सार्वलौकिकता है, उससे परे कोई सार्वलौकिकता नहीं है। *—इमैन्स्टहाकिंग*
- आत्म-विकास का पौधा सांसारिक विषय-वासना की भूमि पर नहीं उगता, उसके लिए यत्नपूर्वक तैयार की हुई प्रेम-वारि से तर समतल भूमि चाहिए। *—स्वामी रामतीर्थ*
- **न शास्त्रैनापि गुरुणा दृश्यते परमेश्वरः।**

  दृश्यते स्वात्मनैवात्मा स्वया सत्त्वस्थया धिया।।

  —योगवासिष्ठ ६/११८/४

  परमात्मा का दर्शन न शास्त्र करा सकते हैं, न गुरु। उनका दर्शन तो अपनी आत्मा को स्वस्थ बनाने से ही होता है।
- **योऽन्तःसुखोऽन्तरारामस्तथान्तर्ज्योतिरेव यः।**

  स योगी ब्रह्मनिर्वाणं ब्रह्मभूतोऽधिगच्छति।।

  —गीता ५/२४

  जिसे आत्म-स्वरूप में ही सुख होता है, जो आत्म-स्वरूप में ही क्रीड़ा करता है, जिसकी आत्म-स्वरूप में ही दृष्टि है, वह व्यक्ति ब्रह्म से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एकरूप होता हुआ ब्रह्म में लीन हो जाता है अर्थात् मोक्ष प्राप्त करता है।

- हमारी आत्मा ब्रह्म का ज्योतिस्वरूप है, उसे मैं द्वेष, इच्छाओं और चिन्ताओं से मुक्त रखना चाहता हूँ। आत्मा के लिए पूर्ण, अखण्ड स्वतन्त्रता सर्वश्रेष्ठ वस्तु है।

- **आत्मा वा इदमेक एवाग्र आसीन्नान्यत्किंचन मिषत्।**
  स ईक्षत लोकान्नु सृजा इति।।

  —ऐतरेय उपनिषद् १।१।१

  पूर्व में एक आत्मा ही थी, अन्य कोई तत्त्व न था, उसी ने अपनी इच्छा से लोक रचे। सब प्राणियों में व्याप्त यही जानने योग्य है।

- आत्मा एक अद्भुत शक्ति का भण्डार है, जिसकी आज विवेचना तो नहीं कर सकते, पर जिसका आप अनुभव अवश्य कर सकते हैं। यही अद्भुत शक्ति आपके निश्चय को कार्य रूप में परिणत करती है। *—स्वेट मार्डन*

- आत्मा जो हमारा आध्यात्मिक जीवन है। हमारा अमरत्व अपने में छिपाये हुए है।

  —महात्मा गाँधी

- **ब्रह्मैवाहं समः शान्तः सच्चिदानन्दलक्षणः।**
  नाहं देहो ह्यसद्रूपो ज्ञानमित्युच्यते बुधैः।।

  —अपरोक्षानुभूति—२४

  सभी में समान रहने वाला, शान्त, सच्चिदानन्द रूप ब्रह्म मैं (जीवात्मा) ही हूँ। क्षण-भंगुर देह में नहीं हूँ, इसी को बुद्धिजन ज्ञान कहते हैं।

- जैसे अड़ियल टट्टू (अथवा गरियार बैल) को हमेशा चाबुक लगाने की जरूरत होती है, उसी तरह मुमुक्ष पुरुष को महापुरुषों द्वारा ताड़ना की अपेक्षा न करनी चाहिए। चालाक घोड़ा जिस तरह चाबुक देखते ही ठीक मार्ग पर आ जाता है, वैसे ही मुमुक्ष साधक को अपने पाप कर्म का भान होते ही उसे छोड़ देना चाहिए।

- युवावस्था में पापों का त्याग करना पैगम्बरों का काम है। वृद्धावस्था में तो जालिम भेड़िया भी साधु बन जाता है।

- भगवान को आत्मसमर्पण करके एक इसी की ओर दृष्टि रखकर, संघबद्ध होकर काम करते जाओ। ध्यान रखो कि कर्म ही जीवन का उद्देश्य नहीं है, ज्ञान का उदय ही सृष्टि का मूल मन्त्र होगा।

- उपवास केवल दिखाने के लिए या डराने के लिए ही हो तो वह केवल पाप-कर्म ही कहा जाता है, इस कारण प्रार्थनायुक्त अपने ही ऊपर असर करने के लिए प्रायश्चित्त रूप होने वाला उपवास ही धार्मिक-उपवास जानना चाहिए।

- कोई सांसारिक भय ज्ञानी पुरुष के मन को नहीं दहला सकता, चाहे वह उसके कितने ही निकट आ जाए ? जैसे कोई तीर पत्थर की विशाल ठोस शिला को नहीं वेध सकता।

- दूसरों का अनादर करने का तात्पर्य है—अपना ही अनादर करना। लघुसत्ता को स्थान दो, जो कि तुम्हारे अधिकार में है तो महान-सत्ता तुम्हें स्वयं स्थान देगी। यह जल-स्तरीय विरोधाभास की तरह है कि जल की एक बूँद विश्व का सन्तुलन बना सकती है। हम वह वस्तु बाहर नहीं देख सकते जो हमारे अन्दर नहीं है। विश्व का हमसे वैसा ही सम्बन्ध है जैसा कि बड़े इञ्जन का छोटे इञ्जन से है। छोटे इञ्जन में खराबी आने पर हम सहज ही बड़े इञ्जन के खराब होने का अनुमान लगा सकते हैं।

- इस संसार में जिस कदम से लाभ मिला है वह प्रेम ही है। आलोचना से कोई लाभ नहीं हो सकता, हजारों वर्षों से इसका प्रयोग किया गया है। आलोचना या अनादर से कुछ काम नहीं बनता। एक सच्चे वेदान्ती को सबके साथ सहानुभूति रखनी चाहिए। अद्वैतवाद या पूर्ण एकतावाद वेदान्त का प्राण है।

  —स्वामी विवेकानन्द

- आज अणुशक्ति हिंसा का सबसे समर्थ आधार माना जाता है। वह दिन दूर नहीं जब जाग्रत जन-शक्ति को प्रगति का सबसे बड़ा माध्यम समझा जाएगा। *—विनोबा*

- यदि तुम भगवान के साथ निष्कपट भाव से रहना चाहते हो तो विश्व में किसी के भी साथ कपट मत रखो, क्योंकि विश्व में वह प्रभु ही तो व्याप्त है। *—स्वामी विवेकानन्द*

- यदि संसार को आत्मा के अस्तित्व का विश्वास हो तो इस बात का सदा ध्यान रखना चाहिए कि शारीरिक बल की अपेक्षा आत्मिक बल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कहीं श्रेष्ठ है। यह प्रेम का वह पवित्र सिद्धान्त है जिससे पर्वत हिल जाते हैं।

❑ पुण्य का परिणाम सम्पत्ति नहीं, सद्बुद्धि है और पाप का परिणाम गरीबी नहीं, कुबुद्धि है।

—विनोबा

❑ जब आत्मा हर कर्त्तव्य का तुरन्त पालन करना चाहे तो उसे ईश्वर की उपस्थिति का भान है।

—बेकन

❑ हवा, पानी और भोजन की तरह नैतिकता भी हर मनुष्य की आवश्यक खुराक है। हवा, पानी और भोजन के बिना मनुष्य अपने शरीर को धारण किए बिना नहीं रह सकता। यह खुराक प्रत्येक व्यक्ति को किसी न किसी रूप में मिलनी चाहिए। एक युग था जब अधिकांश लोग धर्म-स्थानों में पहुँचकर प्रतिदिन के लिए नैतिक प्रेरणाएँ लेते रहते थे। प्रातः उठते ही वे रामायण, गीता आदि धार्मिक ग्रन्थों का स्वाध्याय करते थे। आज बहुधा वैसी स्थिति नहीं है। स्थितियाँ बदली हैं, पर नैतिक प्रेरणाओं की आवश्यकता ज्यों की त्यों है।

—मुनि नागराज

❑ जिन्हें ऊँची-ऊँची आध्यात्मिक डिग्रियाँ प्राप्त करनी हों, उन्हें अनन्त-अनन्त जाँच और परीक्षाएँ पास करनी पड़ती हैं। परन्तु ज्यादातर लोग परीक्षक को घूस देने की ही सोचते रहते हैं।

—महायोगी अरविन्द

❑ प्रयत्न को आत्मबल के सहज और सम्राट के समान मुक्त प्रवाह में रूपान्तरित करो। समस्त आत्माओं को शक्ति के स्वरूप में पहचानो यही तुम्हारा लक्ष्य है।

❑ आत्मा एक चेतन-तत्त्व है, जो अपने रहने के लिए उपयुक्त शरीर का आश्रय लेता है और एक देह से दूसरी देह में जाता रहता है। भौतिक शरीर आत्मा को धारण करने के लिए विवश होता है।

—गेटे

❑ अमरपुरी (सुरलोक) आपके भीतर है, स्वर्ग अर्थात् आनन्द का धाम आपके भीतर है और तब भी आप सुख को बाजारों में, अन्य पदार्थों में ढूँढ़ते हैं, अर्थात् इन्द्रियों के विषय में बाहर ढूँढ़ते हैं, कैसा आश्चर्य है ? स्वर्ग अपने अन्दर है, चलो उसी में प्रवेश करो।

❑ जिस समय आप अपने को एक ऐसी विचित्र, अकथनीय भावना या कल्पना में ढाल लेते हैं कि जो हम और आप दोनों से उत्तम है। उसी समय आप आत्मा को (वास्तव में) पाते हैं। वेदान्त आपको यही बतलाता है।

❑ **न तोयपूतदेहस्य स्नानमित्यभिधीयते।**
स स्नातो यस्य वै पुंसः सुविशुद्धं मनो मतम्।।

—स्कन्द पुराण

अर्थात्—जल से देह के ऊपरी भाग को धो लेना ही स्नान नहीं है। स्नान तो उसका नाम है जिससे बाहरी शुद्धि के साथ-साथ हम अपनी अन्तः-शुद्धि भी कर लें।

❑ **ज्ञानह्रदे ध्यानजले रागद्वेषमलापहे।**
यः स्नाति मानसे तीर्थे स याति परमां गतिम्।।

—गरुड़ पुराण

जो ज्ञान रूप तालाब वाले, ध्यान रूप जल वाले मन के तीर्थ में स्नान करके राग-द्वेष रूपी मल को दूर कर लेता है, वह परमगति (मोक्ष) को प्राप्त होता है।

❑ नवयुग के इस बन्द कपाट को हम लोग अपने आप नहीं खोल सकते। इसे तो शक्ति ही खोल सकती है, किन्तु यह शक्ति हमारी-तुम्हारी या किसी अन्य की नहीं है, यह शक्ति विश्व-शक्ति है।

❑ प्रकृति की सहायता से ही धीरे-धीरे ब्राह्मी स्थिति प्राप्त होगी। जीवन की समूची लीलाओं को आत्मा की लीला में परिणत कर देना चाहिए।

❑ **स्वयं ब्रह्मा स्वयं विष्णुः स्वयमिन्द्रः स्वयं शिवः।**
स्वयं विश्वमिदं सर्वं स्वस्मादन्यन्न किञ्चन।।

—विवेक चूडामणि —३८६

यह आत्मा ही ब्रह्मा, विष्णु अथवा शिव है, यही सारा विश्व है, आत्मा से अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है।

❑ **किं करोमि क्व गच्छामि किं गृह्णामि त्यजामि किम्।**
आत्मना पूरितं सर्वं महाकल्पाम्बुना यथा।।

—योगवासिष्ठ

जिस प्रकार प्रलयकाल में सर्वत्र जल ही जल होता है, उसी प्रकार आत्मा की सर्वत्र उपस्थिति होती है, जब सब और ब्रह्म ही, आत्मा ही व्याप्त है, तो क्या करूँ, कहाँ जाऊँ ? क्या

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org

www.vicharkrantibooks.org

छोड़ूँ ? इत्यादि समस्त प्रश्नों का समापन हो जाता है।

❑ **क्षीराश्रितंजलं क्षीरमेव भवति।** *—चाणक्य सूत्र*

दूध का आश्रय लेने वाला पानी भी दूध के समान ही हो जाता है।

❑ **नाविरतो दुश्चरितान्नाशान्तो नासमाहितः।**
नाशान्तमानसो वापि प्रज्ञानेनैनमाप्नुयात्।।

—कठोपनिषद्

अर्थात्—जो मनुष्य निषिद्ध कर्मों से विरत नहीं है, जिसने अपनी इन्द्रियों को जीता नहीं है, जिसका मन एकाग्र नहीं है, जिसका चित्त शान्त नहीं हुआ है, उसको आत्म-साक्षात्कार कभी नहीं होता।

❑ **मोक्षस्य न हि वासोऽस्ति न ग्रामान्तरेएव वा।**
अज्ञान-हृदय-ग्रन्थि-नाशो मोक्ष इति स्मृतः।।

—शिव गीता

मोक्ष किसी स्थान पर रखा हुआ नहीं मिलता और न उसे ढूँढ़ने के लिए किसी दूसरे गाँव को ही जाना पड़ता है। हृदय की अज्ञान-ग्रन्थि का नष्ट होना ही मोक्ष कहा जाता है।

❑ आत्म-निरीक्षण के द्वारा जो व्यक्ति जीवन में अपना मार्ग विषयों से भरे हुए जंगल में स्वयं निश्चित करता है, वह अपना ज्ञान औरों पर नहीं बघारता, बल्कि अपने आचार से औरों को उपदेश देता है। *—वेदव्यास*

❑ अगर अपने अन्दर खोज करोगे तो तुम्हें सब चीजें वहीं मिल जाएँगी। *—गेटे*

❑ जिसे शान्ति की तलाश है, उसे अपने भीतर निगाह दौड़ानी चाहिए। *—महात्मा गाँधी*

❑ यदि तुम अविच्छिन्न आत्म-चिन्तन नहीं कर सकते तो कम से कम दिन में एक बार तो किया करो, प्रातःकाल अथवा रात्रि में। प्रातःकाल अपना ध्येय निश्चित कर लो और सोते समय अपनी परीक्षा कर लो तुमने क्या किया है ? मन, वचन और कर्म से तुमने कैसा व्यवहार किया है ? *—स्वामी विवेकानन्द*

❑ स्वयं अपने से पूर्ण परिचय प्राप्त करना ही अन्तर्ज्ञान है, जिससे हमें पता चल जाता है कि हम क्या हैं और हमें क्या होना चाहिए ? जिससे हम इस संसार में सुखपूर्वक और उपयोगी रूप से तथा उस लोक में शान्ति एवं आनन्द से रह सकें। *—जे. मेसन*

❑ मनुष्य जब अपनी आलोचना सुनता है तो उसे बहुत बुरा लगता है। मनुष्य का स्वभाव ही ऐसा बन गया है कि वह अपनी आलोचना को सहन नहीं कर सकता, अपनी आलोचना न सुनना मनुष्य का व्यर्थ का अहंकार ही है। यदि अहम् को छोड़ मनुष्य आलोचनाओं का स्वागत कर उनके प्रकाश में आत्मावलोकन कर ले तो वह देवत्व के सन्निकट पहुँचता है।

—मेरी कोनएडी

❑ जिस मनुष्य ने अपने आपको जीत लिया, वही अपना मित्र है, परन्तु जिसने अपने आपको नहीं जीता वह शत्रु है।

❑ सतर्कता, जागरूकता एवं चैतन्यता आत्मा की त्रिमुखी ज्योति है, जिसके प्रकाश में मानव-जीवन का लक्ष्य स्पष्ट दृष्टिगोचर रहता है। आत्मा की त्रिमूर्तिमयी को जाग्रत रखने वाला अनायास ही परमात्मा का साक्षात्कार कर लेता है।

इसके विपरीत संशय, अविश्वास एवं अन्धविश्वास मानव-मन की त्रिधा गन्दगी जिनकी उपस्थिति में ठीक मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति भी पथ-भ्रान्त होकर अपने लक्ष्य से दूर जा पड़ता है। मनुष्य को हर मूल्य पर इस गन्दगी को निकाल डालना चाहिए।

—महायोगी अरविन्द

❑ **वपुषः कान्तिरुत्कृष्टा जठराग्निविवर्धनम्।**
आरोग्यं च पटुत्वं च सर्वज्ञत्वं च जायते।।

—शिव संहिता

आत्म-साधना से शरीर की कान्ति उत्पन्न होती है, जठराग्नि बढ़ती है, शरीर नीरोग होता है, पटुता और सर्वज्ञता प्राप्त होती है तथा सब वस्तुओं का ज्ञान प्राप्त होता है।

❑ **भूतं भव्यं भविष्यञ्च वेत्ति सर्वं सकारणम्।**
अश्रुतान्यपि शास्त्राणि सरहस्यं वदेद् ध्रुवम्।।

—शिव संहिता

आत्म-साधना से भूत, भविष्य और वर्तमान काल की सब वस्तुओं के कारण का ज्ञान होता है। जो शास्त्र सुने नहीं गये हैं, उनके भी रहस्य जानने तथा व्याख्या करने की शक्ति प्राप्त होती है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ बुद्धिमान पुरुष रात्रि के पहले और आखिरी पहर में भगवान का ध्यान करता है, भोजन कम करता है और मन को शुद्ध मानता है। इस तरह वह अपनी आत्मा में ही परमात्मा के दर्शन करता है।

❑ मनुष्य जीवन का उद्देश्य आत्म-दर्शन है और उसकी सिद्धि का मुख्य एवं एकमात्र उपाय पारमार्थिक भाव से जीवमात्र की सेवा करना है। *—महात्मा गाँधी*

❑ मुक्ति का अर्थ—कर्त्तव्यों और मर्यादाओं को झुठलाना नहीं, वरन् क्षुद्रताओं और दुष्टताओं से छुटकारा पाना है। अपने चेतना दीपक का बुझ जाना मोक्ष की व्याख्या नहीं है, वरन् यह है कि हम ससीम से असीम बनें, बिन्दु से सिन्धु में विकसित हों और नन्हें से बीज की स्थिति में पड़े रहने की दशा अस्वीकार करते हुए गलने का साहस सँजोएँ और विशाल वृक्ष बनकर लहलहाएँ। *—सन्त वास्वानी*

❑ गीताकार ने समता अपनाने और कर्म की कुशलता को योग कहा है। आत्मा को परमात्मा में मिला देने को भी।

❑ योग के पथ में अग्रसर होने पर जो समृद्धि और सम्पत्ति उद्भूत होगी, उसी का बाहरी रूप साम्राज्य है। अपने को पा जाने और जान लेने से स्वराज्य प्राप्त होता है, स्वराज्य प्राप्त होने के पश्चात् ही साम्राज्य रचना हो जाती है।

❑ **न तस्य रोगो न जरा न मृत्युः**
प्राप्तस्य योगाग्निमयं शरीरम्।

—श्वेताश्वतरोपनिषद् २।१२

शरीर के योगाग्निमय होने पर उसे कोई रोग नहीं होता, बुढ़ापा नहीं आता, मृत्यु भी नहीं होती।

❑ **आत्मा नदी संयम पुण्यतीर्थः**
सत्योदका शीलतटा दयोर्मिः।
तत्राभिषेकं कुरु पांडुपुत्र
न वारिणा शुध्यति चान्तरात्मा।।

हे पांडुपुत्र ! आत्मा ही नदी है। संयम का ही दूसरा नाम तीर्थ है। सत्य पानी है, शील तट है और दयापूर्ण व्यवहार लहरें हैं। ऐसी आत्म-नदी में स्नान करके पुण्यभागी बन। केवल तीर्थयात्रा से क्या लाभ ? अन्तरात्मा पानी से शुद्ध नहीं होती।

❑ **एगो मे सासओ अप्पा नाण दंसण संजुओ।**
ऐसा मे बाहिरा भावासब्बे स्वजोग लक्षण।
एगस्स चैव मरणं सिज्झई नीरजो।

—दर्शन समुच्चय

अपनी ज्ञान, दर्शन संयुक्त शाश्वत आत्मा ही धर्मात्मा है, शेष सारे संयोग तो बाह्य भाव हैं। एक आत्मा का ही मरण है और एक आत्मा की ही सिद्धि है।

❑ **तमेव विद्वान न विभाव मृत्योः।** *—ऋ.*

उस आत्मा को जान लेने वाला मनुष्य मृत्यु को जीत लेता है।

❑ **घटावभासको भानुर्घटनाशे न नश्यति।**
देहावभासकः साक्षी देहनाशे न नश्यति।।

—आत्मप्रबोधोपनिषद्

घड़े के भीतर दिखलाई पड़ने वाला सूर्य घड़े का नाश हो जाने पर नष्ट नहीं होता, वैसे ही देह में प्रकाशित आत्मा देह का नाश होने पर नष्ट नहीं होती।

❑ प्रत्येक आत्मा ही अव्यक्त ब्रह्म है। बाह्य एवं अन्तःप्रकृति दोनों का नियमन कर इस अन्तर्निहित ब्रह्मस्वरूप को अभिव्यक्त करना ही जीवन का ध्येय है। कर्म, भक्ति, योग या ज्ञान के द्वारा या सबके सम्मिलन के द्वारा यह ध्येय प्राप्त कर लो और मुक्त हो जाओ। यही धर्म का सर्वस्व है। मत-मतान्तर, विधि या अनुष्ठान, ग्रन्थ, मन्दिर—ये सब गौण हैं।

—स्वामी विवेकानन्द

❑ जिस समय मनुष्य को उसके उज्ज्वल स्वरूप का भव्य-ज्ञान प्राप्त हो जाता है, वह आनन्द-विभोर हो जाता है। ज्ञान और इच्छा के क्षेत्रों में जो कुछ दिव्य, भव्य और प्रशंसनीय है, वह अनायास ही उसके सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो जाता है। *—पाल ब्रन्टन*

❑ **अंगुष्ठमात्रो रवितुल्यरूपः संकल्पाहंकारसमन्वितो यः।**
बुद्धेर्गुणेनात्मगुणेन चैव आराग्रमात्रो ह्यपरोऽपि दृष्टः।।
बालाग्रशतभागस्य शतधा कल्पितस्य च।
भागो जीवः स विज्ञेयः स चानन्त्याय कल्पते।।

—श्वेताश्वतरोपनिषद् ५।८

अर्थात्—हे तात ! वह अँगूठे जितना लघु होकर संकल्प-विकल्प युक्त (अर्थात् सोचता-विचारता है) तथा अपनी बुद्धि के गुण से और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

श्रेष्ठ कर्मों के गुण से सुई के अग्रभाग जैसे आकार वाला हो गया है। ऐसी सूर्य के समान तेजस्वी आत्मा को भी ज्ञानियों ने देखा है। बाल के अग्रभाग के सौवें अंश से भी सौवें अंश परिमाण वाला भाग ही प्राणी का स्वरूप जानना चाहिए। यह सूक्ष्मातिसूक्ष्म परिमाण वाली आत्मा असीम गुणों वाली हो जाती है।

❑ **नित्यं शुद्धं विमुक्तोमखण्डानन्दमद्वयम्।**
सत्यं ज्ञानमनन्तं यत्परं ब्रह्माहमेव तत्।।
एवं निरन्तराभ्यस्ता ब्रह्मैवास्मीति वासना।
हरत्यविद्यां विक्षेपं रोगानिव रसायनम्।।

—तत्वबोध ३६-३७

अर्थात्—जो तीनों कालों में रहने वाली कभी नाश नहीं होती, जिसका जो मलरहित और संसार से विरक्त, एक और अखण्ड, अद्वितीय, आनन्दरूप के अहंकार के भाव निरन्तर अभ्यास उत्पन्न होने वाले चित्तविक्षेप के कारण वास्तविक ज्ञान को नष्ट कर देती है और ईश्वरीय चेतना जीवन रूप में काम करती हुई वासनाओं की पूर्ति में कभी यह, कभी वह शरीर धारण करती भ्रमण करने लगती है।

❑ **जलान्तश्चन्द्रवत् वसं जीवितं खलु देहिनाम्।**
तथाविधमिति ज्ञात्वा शाश्वत्कल्याणमाचरेत्।।

देहधारियों का जीवन निश्चय करके पानी के भीतर चन्द्रमा के बिम्ब के समान चञ्चल है, ऐसा इसे जानकर सर्वदा कल्याण करना चाहिए।

❑ **न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।**
तत्स्वयं योगसंसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति।।

—गीता

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला कुछ भी नहीं है। ज्ञान से, सद्ज्ञान से, हमारे विचारों की शुद्धि होती है। विचारशुद्धि से अन्तःकरण की शुद्धि होती है। शुद्ध अन्तःकरण से ही सद्कर्मों की प्रेरणा होती है और निरन्तर किए जाने वाले सद्कर्म भी अन्तःकरण को शुद्ध कर आत्मानन्द की अनुभूति करने वाले होते हैं। आत्मानुभूति ही सद्ज्ञान है।

❑ **नैवायं चक्षुषा ग्राह्यो नापरैरिन्द्रियैरपि।**
मनसैव प्रदीप्तेन महानात्मावसीयते।।
तिलेषु वा यथा तैलं दध्नि वा सर्पिरर्पितम्।
यथापः स्रोतसि व्याप्ता यथारण्यां हुताशनः।।
एवमेव महात्मानमात्मन्यात्मविलक्षणम्।
सत्येन तपसा चैव नित्ययुक्तोऽनुपश्यति।।

—शिव पुराण अ. ६

न तो वह भगवान आँखों से देखा जा सकता है, न अन्य इन्द्रियों से ग्रहण किया जा सकता है, प्रकाशित मन से ही वह महानात्मा प्राप्त की जा सकती है, जैसे तिलों में तेल व दही में घृत छुपा रहता है, जैसे पानी स्रोत में तथा जैसे अरणी में अग्नि छुपी रहती है, वैसे ही विलक्षण परमात्मा आत्मा में छिपी रहता है, उसको योगी सत्य और तप से नित्य अपनी आत्मा में देखा करता है।

❑ जो स्वयं अपनी आत्मा का तिरस्कार करके कुछ का कुछ समझता और करता है—स्वयं को अपनी आत्मा ही जिसका हितसाधन नहीं कर सकती, उसका देवता भी भला नहीं कर सकते।

❑ तुम जो चाहो वही अपने को बना सकते हो। श्रेष्ठ या नीच, पवित्र या पापी, चतुर या मूर्ख अपने आपको बनाने वाले तुम स्वयं ही हो। अपनी जीवन-रेखा को स्वयं ही लिखने वाले हो।

—ऐनी बेसेण्ट

❑ **कर्मेन्द्रियं पंचभिरन्वितोऽयं, प्राणो भवेत्प्राणमयस्तु कोशः।**
येनात्मवानन्नमयोऽन्नपूर्णः, प्रवर्ततेऽसौ सकल-क्रियासु।।

अर्थात्—'अन्नमय कोश' जिससे युक्त होकर अन्न से तृप्त होता है और समस्त कर्मों से प्रवृत्त होता है, वह पाँच कर्मेन्द्रियों से युक्त प्राण-समुच्चय (प्राण-अपान-समान-उदान-व्यान आदि) ही 'प्राणमय कोश' कहलाता है।

❑ **विभर्ति कुण्डलिनी शक्तिरात्मानं हंसमाश्रिता।**

—तन्त्रसार

कुण्डलिनी शक्ति आत्म-क्षेत्र में हंसारूढ़ होकर विचरती है।

❑ बीसवीं शताब्दी का कोई भी आविष्कार, इस आविष्कार के सामने नहीं ठहर सकता कि मनुष्य ने अपनी आत्मा की उस शक्ति का अनुभव कर लिया है, जिसकी सहायता से वह अपनी इच्छा के अनुसार संसार में सब कुछ पा सकता है।

—डॉ. एलन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ जिस तरह तुम्बी पर मिट्टी की तहें जमने से वह भारी हो जाती है और डूबने लगती है, ठीक उसी तरह हिंसा, झूठ, चोरी, व्यभिचार तथा मूर्छा, मोह आदि से युक्त कर्म करने से आत्मा, मिट्टी की तहें जमी हुई तुम्बी की तरह भारी बनकर अधोगति को प्राप्त हो जाती है।

—ज्ञातासूत्र

❑ **प्रकृतिः निश्चला परावाग्रूपिणी पराप्रणवात्मिका कुण्डलिनी शक्तिः।** *—प्रपंचसार तन्त्र*

कुण्डलिनी शक्ति को ही निश्चल प्रकृति, परावाक और प्रणव विद्या कहते हैं।

❑ **यदा कुण्डलिनी शक्तिराविर्भवति साधके।**
तदा स पंचकोशे मत्तेजोऽनुभवति ध्रुवम्।।

जब कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत होती है तो साधक के पाँचों कोश (अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनन्दमय) ज्योर्तिमय हो उठते हैं। *—महायोगविज्ञान*

❑ **प्रायेण मनुजा लोके लोकतत्व_ विचक्षणाः।**
समुद्धरन्ति स्यात्मानमात्मनैवाशुभाशयात्।।
आत्मनो गुरुरात्मैव पुरुषस्य विशेषतः।
यत्प्रत्यक्षानुमानाभ्यां श्रेयोऽसावनुविन्दते।।

अनेक विवेकवान् व्यक्ति जो तत्त्वज्ञान से परिचित हैं, अपने आत्म-पुरुषार्थों से ही अपना उद्धार कर लेते हैं। आत्मा ही आत्मा का गुरु है। प्रत्यक्ष और अनुमान के आधार पर विचारशील लोग अपना कल्याण आप कर लेते हैं।

❑ **पथ्यमौषधसेवा च क्रियते येन रोगिणा।**
आरोग्यसिद्धिर्दृष्टास्य नान्यानुष्ठितकर्मणा।।

—विवेक चूडामणि-५५

पथ्य और औषधि का सेवन करने वाला रोगी ही आरोग्य लाभ प्राप्त करते देखा गया है, न कि किसी और के द्वारा किए हुए (औषधादि सेवन) कर्म से वह नीरोग होता है। इसी प्रकार आत्म-कल्याण के लिए स्वयं ही प्रयास करना होता है।

❑ **आत्मा वा ऽ रे च श्रोतव्यो मंतव्य इति यच्छ्रुतिः।**
सा सेव्या तत्प्रयत्नेन मुक्तिदा हेतुदायिनी।।

—शिव संहिता ३२

आत्मा को सुनो, आत्मा का मनन करो। इस श्रुति के अनुसार प्रयत्नपूर्वक उस आत्मा की ही सेवा करनी चाहिए, क्योंकि वह बन्धनों से छुड़ाती है।

❑ सम्पूर्ण भारत के उद्धार का भार बिना कारण सिर पर मत लो। अपना निज का उद्धार करो। इतना भार काफी है। सब कुछ अपने व्यक्तित्व पर ही लागू करना चाहिए। हम स्वयं ही भारतवर्ष हैं। बस, यही मानने में आत्मा का बड़प्पन है। तुम्हारा उद्धार ही भारतवर्ष का उद्धार है। शेष सब व्यर्थ है, ढोंग है। तुम में सच्चे आत्म-प्रेम का रस उत्पन्न हो, इसी में तुम डूबे रहो। *—महात्मा गाँधी*

❑ जो व्यक्ति अपना सुधार स्वयं कर लेता है, वह लम्बी-चौड़ी बातें करने वाले निर्बल देशभक्तों के समूह से कहीं अधिक जनता का उपकार करता है। *—लेवेटर*

❑ तुम्हारा भाग्य तुम्हारे हाथ में है। जो-जो शक्ति और सहायता तुम चाहते हो, वह सब तुम्हारे भीतर मौजूद है। इसलिए अपना भाग्य अपने आप ही बनाओ।

❑ उत्तम संस्थाओं की इतनी आवश्यकता नहीं, विस्तृत धन और स्वर्ण-राशियों की आवश्यकता नहीं, असीम पौरुष और बलवान लेखनी की आवश्यकता नहीं, बल्कि आवश्यकता है एक मनुष्यता से परिपूर्ण मनुष्य की। *—गोविन्द रानाडे*

❑ महानता की आकांक्षा करने से आत्मा की सर्वोत्कृष्ट शक्तियों का विकास होता है, वे जाग्रत होती हैं। *—स्वेट मार्डन*

❑ अगर मनुष्य का जीवन एक मिशन है या दूसरे शब्दों में एक व्रत है, तो उसका सबसे मुख्य नियम कर्त्तव्य है। व्रत को पूरा करने और कर्त्तव्यपालन करने से ही हमें भावी उन्नति के साधन प्राप्त हो सकते हैं। इस जीवन का अन्त होने पर हमें जो जीवन मिलेगा वह उसी दर्जे का होगा, जिस दर्जे तक हमने इस जीवन में परिश्रम किया है। हमारा भावी जीवन ठीक हमारे परिश्रम या हमारी गफलत का फल होगा। मनुष्य की आत्मा अमर है, परन्तु आत्मा कब और कैसे उन्नति करेगी, यह हमारे अपने हाथ में है। हमें आध्यात्मिक उन्नति के मार्ग पर सफलता प्राप्त करनी चाहिए, जो हमारे वश में है। हम सबका यह कर्त्तव्य है कि अपनी आत्मा को मन्दिर की तरह पवित्र रखें और इस मन्दिर में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अहंकार को न घुसने दें और अगर घुस गया तो उसे निकाल दें। —*मैजिनी*

- यह आत्म-विश्वास रखो कि तुम पृथ्वी के सबसे आवश्यक मनुष्य हो। —*मैक्सिम गोर्की*
- कितनी दर्दनाक बात है कि दुनिया छोड़ने का वक्त आने तक हम इस बात का अहसास न करें कि हम दुनिया में किसलिए आए थे ?

—*बालसिंघम*

- स्वर्ग और नरक दोनों अपने अन्दर हैं। यह अपने मन पर निर्भर है कि स्वर्ग प्राप्त करें या नरक। —*मिल्टन*
- पृथ्वी से हम सब परिचित हैं, पर अपने भीतर विद्यमान देवलोक को कोई नहीं जानता।

—*महात्मा गाँधी*

- मनुष्य का अपना एक मन है। उस मन में कई प्रकार के विकार और वासनाएँ होती हैं। कुछ अंशों में उन वासनाओं की पूर्ति करनी होगी, लेकिन यह पूर्ति कहाँ तक करनी है, यह सोचना पड़ता है। मनुष्य को भूख लगती है, खाने की इच्छा होती है, पर वह अधिक खा लेता है तो बीमार हो जाता है। खाने से तृप्ति होनी चाहिए, परन्तु अत्यधिक खाना भी न चाहिए। इसका अर्थ यही है कि मनुष्य में समत्व रहना चाहिए। मनुष्य भोग करे पर अति न करे। वासना रखे, पर उसमें भी अति न करे। इस तरह बीच की हालत में रहने योग्य कहते हैं। जिस समाज में व्यक्ति यह योग साधते हैं, वह समाज सुखी होता है। हम स्थितप्रज्ञ के लक्षण पढ़ते हैं, उनमें क्या है ? स्थितप्रज्ञ वही है, जो अपनी इन्द्रियों पर अंकुश रखता है—ठीक वैसे ही जैसे कछुवा खतरे के समय इन्द्रियों को भीतर खींच लेता है और जहाँ खतरा न हो, वहाँ उन्हें खुला छोड़ देता है। यह कोई असाधारण शक्ति ही है, अगर बचपन से नेक शिक्षा मिले तो मनुष्य के लिए यह चीज स्वाभाविक हो जाएगी। बुरी आदतों के कारण संयम रखना कठिन होता है, नहीं तो यह मामूली बात है। जो बात कछुआ जानता है, उसे मनुष्य क्यों नहीं जानेगा ? जैसे घुड़सवार अंकुश रखता है तो घोड़ा अच्छा काम देता है, वैसे ही इन्द्रियाँ भी हमें काम देंगी। वे हमारी बड़ी शक्ति हैं, उनको वश में रखने की विद्या सीखनी चाहिए। यह मनुष्य का मुख्य कर्तव्य है। —*विनोबा*
- विपत्ति और अतृप्ति से भरा नीरस जीवन यह बताता है कि अन्तःकरण की गरिमा सूखने और झुलसने लगी है। जड़ें मजबूत और गहरी हों तो जमीन में से पेड़ के लिए पर्याप्त जीवन-रस प्राप्त कर लेती हैं और वह हरा-भरा बना रहता है। आन्तरिक श्रद्धा यदि मर न गई हो तो अभावग्रस्त परिस्थितियों में भी सरसता और प्रफुल्लता खोजी जा सकती है। उल्लास सुख-साधनों पर नहीं उत्कृष्ट दृष्टिकोण पर निर्भर है।
- विलास की सुविधा-सामग्री प्रकृति से मिलती है, पर यदि आनन्द की आवश्यकता हो तो उसे बिना किसी पदार्थ या व्यक्ति की सहायता से अन्तरात्मा का परिशोधन करना पड़ता है। आन्तरिक पवित्रता में इतना सौन्दर्य और मिठास भरा पड़ा है कि उसके दर्शन पाने, करने तथा रसास्वादन करने से वह मिलता है, जिसके अभाव में जीव को निरन्तर भटकना ही पड़ता है।

बाहर दौड़ने में पुरुषार्थ है। पुरुषार्थ कई तरह की सफलताएँ प्रस्तुत करता है। बड़प्पन की प्यास हो तो जल-जंगल छानने ही पड़ेंगे, पर यदि महानता का देवत्व अभीष्ट हो तो उसके लिए भीतर की खोज करनी पड़ेगी। तृप्ति किसी पदार्थ में नहीं, दृष्टिकोण की गरिमा में उसका स्रोत है। जीवन का आनन्द लेना हो, तो उसके लिए अन्तर की गहराई में उतरने का, समुद्र तल से मोती ढूँढ़ने का केवल साहस सँजोना पड़ेगा। —*बल्ला तोल*

- महापुरुष की तपस्या, स्वार्थ-त्यागी का कष्ट-सहन, साहसी का आत्म-विसर्जन, योगी का योगबल, ज्ञानी का ज्ञानसंचार और सन्तों की शुद्धि-साधुता आध्यात्मिक बल का निर्झर है। मूल प्रकृति शुद्धात्मा के आधीन है, वही आद्य-प्रकृति असम्भव को भी सम्भव कर दिखाती है। मूक को वाचालता तथा पंगु को पर्वत चढ़ने की शक्ति देती है। समस्त जगत इसी शक्ति से निर्मित हुआ है।
- हमारे पास बाहुबल नहीं है, समग्र सामग्री नहीं है, शिक्षा नहीं। न राजशक्ति ही है। तब किसके

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बूते पर हम उस कार्यसाधन को उद्यत हुए हैं, जो प्रबल और शिक्षित यूरोपीय जाति के लिए भी असाध्य जान पड़ेगा। लेकिन यह तो सबको स्वीकार करना पड़ेगा कि केवल बाहुबल से किसी महान कार्य का होना असम्भव है। अतः बाहुबल से आत्मबल ही कार्यसिद्धि में अधिक क्षमता रखता है।

❑ आत्म-बल ही बाहुबल को तुच्छ प्रमाणित कर मनुष्य जाति को सिखाता चला आ रहा है कि यह जगत् भगवान का राज्य है। अन्य स्थूल प्रकृति का खाली क्षेत्र नहीं। जिसका आत्मबल विकसित हो चुका है, उसकी सामग्री आप ही आप सामने उपस्थित हो जाती है सारी विघ्न-बाधाएँ और विपत्तियाँ स्वयं टूटकर अनुकूल अवस्था को लाती हैं। कार्यसामर्थ्य स्वयं प्रकट होकर तेजस्वी और वेग गतिवान होता है।

❑ मुझे भय है कि जो लोग इस समय संसार की वर्तमान घटनाओं पर दुःखी हो रहे हैं, उनको मैं कोई विशेष सान्त्वना की बात नहीं कह सकता। इस समय की परिस्थिति निस्सन्देह बुरी है, निरन्तर अधिक बुरी होती जाती है और सम्भव है कि किसी भी समय वह अधिक से अधिक बुरी बन जाए। अतः वर्तमान अशान्तिपूर्ण जगत में कोई भी बात, चाहे वह कितनी भी विपरीत और कठिन क्यों न जान पड़ती हो, हो सकनी असम्भव नहीं है। इस परिस्थिति में सबसे अच्छा यही है कि हम यह विश्वास रखें कि अगर संसार में एक नया और श्रेष्ठ युग आना है तो इसके लिए उन बुराइयों को प्रकट होकर निकल जाना ही चाहिए। यह परिस्थिति वैसी ही है जैसी कि योग-साधन में होती है, जबकि अपने भीतर की हीन भावनाओं को प्रकाश में लाकर, उनके साथ संघर्ष करके उन्हें दूर कर दिया जाता है। शुद्धि करने का यही एक तरीका है। इसके सिवाय लोगों को यह कहावत भी याद रखनी चाहिए कि प्रभात होने के पहले रात्रि का अन्धकार सबसे अधिक घनीभूत हो जाता है। नये संसार का निर्माण वर्तमान की अपेक्षा किसी भिन्न प्रकार के साधनों और तत्त्वों से ही होगा। इस समय बाहरी चीजों का ही ज्यादा महत्त्व है, जबकि नये युग में आन्तरिक शक्तियों की ही प्रधानता होगी। इसलिए इस समय बाहरी वस्तुओं की दुर्दशा हो रही है—उनमें दोष उत्पन्न होकर वे नष्ट होती जाती हैं, उस पर अधिक ध्यान देने या उनके लिए दुःखी होने की आवश्यकता नहीं। इसके बजाय हमको अपनी आत्मिक-शक्तियों के विकास का उपयोग करते रहना चाहिए, जिससे नये युग में उसके अनुकूल रूप में प्रस्तुत हो सकें, उसके उपयुक्त बन सकें।

—महायोगी अरविन्द

❑ **नायमात्मा बलहीनेन लभ्यो न च प्रमादात्तपसो वाप्यलिंगात्।**
एतैरुपायैर्यतते यस्तु विद्वांस्तस्यैष आत्मा विशते ब्रह्मधाम।।

—मुण्डकोपनिषद् ३।२।४

यह आत्मा निर्बल व्यक्तियों को प्राप्त नहीं होती, प्रमाद, तप और चिन्ह त्याग अर्थात् संन्यास से भी नहीं मिलती। जो विद्वान इन त्याग आदि उपायों से बराबर यत्न करते रहते हैं, उनको यह आत्मा प्राप्त होती है और वे ब्रह्मधाम में प्रवेश करते हैं।

❑ **नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रुतेन।**
यमेवैष वृणुते तेन लभ्यस्तस्यैष आत्मा विवृणुते तनुं स्वाम्।।

—मुण्डकोपनिषद् ३।२।३

यह आत्मा न व्याख्यान से मिलती है, न बुद्धि से और न बहुत सुनने-पढ़ने से। यह आत्मा जिसे चुनती है, जिस पर अनुग्रह करती है, उसी को प्राप्त होती है। उसी कृपापात्र के सम्मुख यह अपने आपको प्रगट करती है।

❑ **सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येष आत्मा सम्यग्ज्ञानेन ब्रह्मचर्येण नित्यम्।**
अन्तःशरीरे ज्योतिर्मयो हि शुभ्रो यं पश्यन्ति यतयः क्षीणदोषाः।।

—मुण्डकोपनिषद् ३।१।५

निश्चय ही यह आत्मा सत्य, तप, सम्यग् ज्ञान और नित्य ब्रह्मचर्य से प्राप्त होती है। अन्दर शरीर में यह शुभ और ज्योतिर्मय है, जिसके दर्शन संयमी पुरुषों को होते हैं, जिनके दोष नष्ट हो चुके हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

❑ जैसे केंचली से साँप पृथक होता है, उसी तरह देह से आत्मा पृथक है।

❑ जिसको ब्रह्मज्ञान हुआ हो, वह जीवन्मुक्त है। वह ठीक समझता है कि आत्मा अलहदा है और देह अलहदा। भगवान का दर्शन (आत्म-ज्ञान) होने पर देह में अहंभाव नहीं रहता। जैसे नारियल का जल सूख जाने से भीतरी गिरी पृथक हो जाती है, वैसे ही विषय आदि में अहंभाव चले जाने पर आत्मज्ञान होता है, तब आत्मा अलहदा और देह अलहदा का बोध होता है।

❑ पिचकारी देखने से एक मालूम पड़ती है, पर उसके भीतर का डंडा अलग है। शरीर को मनुष्य समझा जाता है, पर वास्तव में आत्मा उससे अलग है।

❑ जैसे कि एक स्त्री एक राजा से प्रेम करती है, तो वह एक भिक्षुक से कदापि नहीं कर सकती है। उसी तरह जिस जीवात्मा ने दिव्यानन्द की चुसकी ले ली तो उसे संसार के दूसरे सुख नहीं रुचते।

❑ अपने कार्य को सिद्ध करने के लिए बहुत-से प्रयत्नों की जरूरत है। दूध में मक्खन है। इस तरह चिल्लाने से मक्खन नहीं मिलेगा। दही जमाओगे, उसे चलाओगे, तब मक्खन मिलेगा। इसी तरह ईश्वर से मिलना है तो साधनों का ज्ञान करते रहो। हे ईश्वर ! कहने से क्या फायदा ?

❑ मनुष्य का अहंकार दूर होते ही उसे मोक्ष मिलता है।

❑ जब एक पैना काँटा पैर में लग जाता है, तो उसे वैसे ही दूसरे काँटे से निकाला जाता है। फिर दोनों को फेंक देते हैं। इसी तरह हमको सापेक्ष ज्ञान का नाश सापेक्ष ज्ञान से होना चाहिए। जब मनुष्य को सर्वोच्च ब्रह्म का बोध हो जाता है, तो वह अज्ञान और ज्ञान दोनों द्वन्द्वों से रहित हो जाता है।

❑ पतंगे को दीपक का प्रकाश मिल जाए तो फिर वह अँधेरे में नहीं लौटता, भले ही उसे दीपक के साथ प्राण गँवाने पड़ें। जिन्हें आत्म-बोध का प्रकाश मिल जाता है, वे अविद्या के अन्धकार में नहीं भटकते। भले ही उन्हें धर्म के मार्ग में अपना सर्वस्व समाप्त करना पड़े।

❑ अपने को अपने आप उठा। अपनी आप परीक्षा कर। इस प्रकार हे भिक्षु ! तू अपनी आप रक्षा करता हुआ और विचारशील होकर सुखलाभ करेगा।

❑ यह जगह तुम्हारी और सब चीज तुम्हारी है जहाँ से चाहो चल पड़ो, जहाँ पर चाहो ठहर जाओ और जहाँ पर चाहो खत्म कर दो। इसका न कहीं आदि है और न कहीं अन्त, तुम्हें किसका डर ? अपना ही डर और आप ही डराने वाले हो।

❑ आपको अपने शरीर की परवाह नहीं करनी चाहिए, आप से ज्यादा परवाह परमात्मा करता है। केवल आत्मबल प्राप्त करो, शरीर रक्षा ईश्वर के भरोसे छोड़ दो।

❑ योगप्राप्ति के बिना द्वन्द्व का अत्यन्त नाश नहीं होता। गुणातीत योगी यदि नरक में भी डाल दिया जाए तो वह उस नरक को स्वर्ग बना लेता है। यानि इस दुःख रूप जगत को अपना स्वर्ग बना लेता है। वह कहता है—"यह सब आनन्दमय ब्रह्म सत्य है, शिव है, सुन्दर है।"

❑ दुःख और दुर्बलता अज्ञानजनित विकार हैं। ये व्यापक और नित्य तत्त्व नहीं हैं। उनका हमें आत्मबल के द्वारा सदा के लिए नाश करना होगा, अपने लिए और समस्त मानव जाति के कल्याण के लिए इस जगत को स्वर्ग बना देना हमारा कर्त्तव्य है।

❑ आप यह कभी न सोचिये कि मैं ही पूर्ण हूँ, मुझमें सब योग्यताएँ हैं, मैं ही सब कुछ हूँ, सबसे श्रेष्ठ हूँ, वरन् आप यह सोचिये कि मुझमें भी कुछ है, मैं भी मनुष्य हूँ, मेरे अन्दर जो कुछ है उसे मैं बढ़ा सकता हूँ, उन्नत और विकसित कर सकता हूँ।

❑ अपने पापों को देखते रहना और उन्हें प्रकाशित कर देना ही पापों से छूटने का एक प्रधान उपाय है।

❑ प्रथम अपनी परीक्षा लो, फिर ईश को पुकारो, क्योंकि ईश उद्योगी की ही सहायता करता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

- उदर भरने के लिए अपना ही मुँह चलाना पड़ता है। पढ़ने के लिए अपनी ही बुद्धि काम देती है। पराये मुँह से किसका पेट भरा है ? दूसरों की बुद्धि से कौन विद्वान बना है ? आत्मिक प्रगति की आकांक्षा भी अपने ही साधनात्मक पुरुषार्थ से पूरी होती है।
- प्रतिदिन मनुष्य को कुछ समय आत्म-परीक्षा के लिए अलग निकाल देना चाहिए, जिससे वह विचार कर सके कि उसने कौन-सा कर्त्तव्य व कौन-सा अकर्त्तव्य किया ?
- परमेश्वर को देखने के लिए वह चश्मा पहनना पड़ेगा जो वह तुम्हारी परख के लिए अपनी आँखों पर पहने रहता है।
- दूसरे तुम्हें क्या कहते हैं, इस पर ध्यान मत दो, तुम अपनी दृष्टि में अच्छे बनो, महान बनो।
- जिन दोषों के कारण हम दूसरों की भर्त्सना करते हैं, उनसे अपनी सफाई पहले कर डालो।
- **प्रत्यहं प्रत्यवेक्षेत नरश्चरितमात्मनः।**
  कि नु मे पशुभिस्तुल्यं कि नु सत्पुरुषैरपि।।
  बुद्धिमान को चाहिए कि प्रतिदिन अपने किए हुए कर्मों का अवलोकन करे कि मेरे किए हुए कार्य पशुकर्मों के समान हैं या श्रेष्ठ मनुष्यों के कर्त्तव्य के योग्य हैं।
- शास्त्र का आदेश है : **"उत्थाय-उत्थाय बोद्धव्यं किमद्य सुकृतं कृतं।"** अर्थात् उठ-उठकर सोचना चाहिए कि आज मैंने कौन-सा भला काम किया क्योंकि **"आयुष्यखण्डमादाय रविरस्तं गमिष्यति।"** अर्थात् सूर्य हमारी आयु का एक टुकड़ा लेकर अस्त हो जाएगा, इसलिए बार-बार सोचना चाहिए कि हमने क्या भला किया। रोज-रोज इस पर विचार करने की आवश्यकता है। इसलिए शास्त्रवचन है—**"अहरहः सन्ध्यां उपासीत।"** प्रतिदिन सन्ध्योपासना करनी चाहिए।
- भोग-विलास और सैर-तमाशे से आत्मा उसी भाँति सन्तुष्ट नहीं होती जैसे कोई चटनी और अचार खाकर अपनी क्षुधा को शान्त नहीं कर सकता।
- आत्मा अमर है, देह क्षण-भंगुर है। कोई प्रवृत्ति परिणाम प्राप्त किये बिना रहती नहीं, यह सब हम बचपन से सीखते हैं। फिर मौत से क्यों डरें ?
- सत्य ही हम हैं। भूल हमारी आत्मा का स्वभाव नहीं। ऐक्य हमारी आत्मा का गुण है। प्रेम, न्याय, सत्य, सौन्दर्य के हम तत्त्व हैं। इस बात को हृदय से मान लेने से हमें अपूर्व शान्ति का अनुभव होने लगता है। निर्मलता के हमें दर्शन होने लगते हैं। धैर्य हमें प्राप्त हो जाता है, आत्मा आध्यात्मिक भवन पर बहुत ऊँची चढ़ जाती है।
- आत्मा का ज्ञान प्राप्त करना हमारा सबसे पहला और आवश्यक कर्त्तव्य है। आत्म-ज्ञान चरित्र द्वारा प्राप्त होता है। चरित्रवान व्यक्ति सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्तेय, अपरिग्रह निर्भयता आदि व्रतों का पालन करते हुए देखे जाते हैं। वे प्राण दे देने पर भी सत्य को न छोड़ेंगे। स्वयं मर जाएँगे, स्वयं दुःख उठाएँगे, छटपटाएँगे, परन्तु दूसरों को दुःख न देंगे।
- तत्त्वदर्शन हमें हमारे स्वरूप से परिचित कराता है और कर्त्तव्य की राह पर प्रेरणापूर्वक चलाता है।
- तत्त्वदर्शन का अर्थ कोई एक शब्द में पूछे तो कहना चाहिए—आत्म-निर्भरता, आत्म-संयम।
- **अतीव सूक्ष्मं परमात्मतत्त्वं न स्थूलदृष्ट्या प्रतिपत्तुमर्हति।**
  समाधिनात्यन्ततसूक्ष्मवृत्त्या ज्ञातव्यमार्यैरतिशुद्धबुद्धिभिः।।
  —विवेक चूड़ामणि 361
  अर्थात्—अति सूक्ष्मातिसूक्ष्म परमात्म-तत्त्व का दर्शन स्थूल दृष्टि से किया जाना शक्य नहीं है। अतएव सूक्ष्म बुद्धि वाले सज्जनों को समाधि द्वारा अति सूक्ष्मवृत्ति से उसे जानना चाहिए।
- **युवैव धर्मशीलः स्यादनित्यं खलु जीवितम्।**
  को हि जानाति कस्याद्य, मृत्युकालो भविष्यति।।
  अर्थात्—यह जीवन अनित्य है, यह समझकर युवावस्था से ही धर्म का पालन करना चाहिए। मृत्यु का पता नहीं कब हो जाए, यह सोचकर पहले से ही धर्म का पालन करते रहना चाहिए।
- प्रेम, साहस, दया, सत्य और शील नित्य हैं, अतः ये धर्म हैं। घृणा, कायरता, निर्दयता,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

असत्य और नीचता विकार हैं। यही अधर्म है, योगी को विकारात्मक अधर्म छोड़कर सनातन धर्म ग्रहण करने होंगे।

❑ **यमश्च नियमश्चैव तृतीयमासनंमतम्।**
प्राणायामस्तथा गार्गी प्रत्याहारश्च धारणा।
ध्यानं समाधिरेतानि योगागानि निबोध मे।।
हे गार्गी ! तू यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारण, ध्यान, समाधि—इन अंगों को ही योग के आठ अंग जान।

❑ विश्व में एक मूल्यवान वस्तु केवल आत्मा है।

❑ **वक्त्रे सरस्वती देवी सदा नृत्यति निर्भरम्।**
मन्त्रसिद्धिर्भवेत्तस्य जपादेव न संशयः।।
आत्म-साधना से साधक की जिह्वा पर सरस्वती नृत्य करती है और जप मात्र से ही मन्त्र की सिद्धि हो जाती है।

❑ आत्मा का हित चलते रहने में है। एक स्थान पर डेरा डाल देना उसके स्वभाव के प्रतिकूल है। भोग और विषय दुर्गन्ध से भरे हुए हैं। उसके मध्य में तृप्ति मान लेने वाले को असली माधुर्य का पता नहीं लगा। सब विद्याओं में बड़ी मधुर विद्या है, जो आत्मज्ञान का या आध्यात्मिक विद्या का ही दूसरा नाम है।

❑ मनुष्य में दृढ़-संकल्पशक्ति ही दिव्य कौस्तुभ मणि है, जो हृदय का अलंकार है। दृढ़ संकल्प की वीर्यवती शक्ति ही मनुष्य को देव बनाती है।

❑ अज्ञान से तुम अपने को शरीर कहते हो, परन्तु शरीर तुम हो नहीं। तुम अनन्त शक्ति हो, नित्य स्थायी और निर्विकार स्वरूप हो। वही तुम हो। उसे जानो और फिर तुम अपने को समस्त विश्व में रमा हुआ पाओगे।

❑ साधनों को प्राप्त कर यदि आत्मा विवेक का सदुपयोग करता है और उसे अच्छे कार्यों में लगाता है, तो आत्मा अपनी शक्तियों को बढ़ाती हुई अनुकूल साधनों को भी बनाती रहती है और अन्त में प्रारब्ध से स्वाधीन होकर अपनी पूर्ण उन्नति कर लेती है।

❑ आत्मा को जानो। दर्शन, श्रवण, मनन, निदिध्यासन द्वारा आत्मा को जान लेने पर सब कुछ जान लिया जाता है। इसलिए जो ज्ञान इन्द्रियों के वेग को शान्त करने वाला है, वही ज्ञान है। उपनिषदों का यह निश्चित सिद्धान्त है।

❑ आनन्द अपने खेत में प्रयत्नपूर्वक स्वयं उगाना पड़ता है। दूसरों की फसल काटकर कोठा भर लेने की चतुरता इस क्षेत्र में काम नहीं आती।

❑ जीवनोद्देश्य की खोज ही सबसे बड़ा सौभाग्य है। उसे बाहर ढूँढ़ने की अपेक्षा अपने हृदय में तलाश करना चाहिए।

❑ साधना के दर्शन में भ्रान्ति घुस पड़ने से ही देवत्व के साथ सम्पर्क साधना और उससे लाभान्वित हो सकना अशक्य बन गया है। हर क्षेत्र अपने पुरुषार्थ की उपलब्धियों पर प्रसन्न होता और गर्व करता दिखता है। एक अध्यात्म-क्षेत्र ही ऐसा है जिसमें उदासी, निराशा, असफलता का माहौल है। अविश्वास बढ़ने से प्रयत्न शिथिल हो रहे हैं और विडम्बना अनेकानेक प्रपंचों का ढकोसला सिर पर लाद-कर सामने खड़ी हो रही है। इस स्थिति का अन्त होने के लिए आवश्यक है कि आत्मिकी का वास्तविक स्वरूप और प्रयोग सामने आये।

❑ कीमती फसलें उगाने के लिए भूमि को विशेष रूप से तैयार करना पड़ता है, संवेदनशील औषधियाँ रेफ्रीजरेटर में ऋतुप्रभाव से बचाकर रखनी पड़ती हैं, ज्यादा बड़ी धन-राशि घर में रखनी हो तो सुरक्षा के लिए तिजोरी चाहिए ही। उच्चस्तरीय आत्मबल उगाने, उपलब्ध विभूतियों को सँभालकर रखने के लिए परिष्कृत व्यक्तित्व चाहिए। वह सहज ही नहीं मिल जाता, परिश्रमपूर्वक उपार्जित करना होता है। आत्मसाधना की उपेक्षा करते हुए भी अनगढ़ आदतों से, घिनौनी जीवनचर्या से लदे रहते हुए भी जो आत्मिक प्रगति की उस क्षेत्र की विभूतियाँ अर्जित कर लेने का 'शार्टकट' ढूँढ़ते हैं वे भूल करते हैं, इस लक्ष्य तक पहुँचने के लिये एक सुनिश्चित राजमार्ग है, आत्म-साधना का। इसे छोड़कर पगडण्डियों में भटकने से थकान, खीज और निराशा के अतिरिक्त और कुछ पल्ले नहीं पड़ता है।

❑ **शक्तिकुण्डलिनीति विश्वजननव्यापारबद्धोद्यमा।**
ज्ञात्वेऽथ न तनुविशन्ति जननीगर्भेऽर्भकत्वराः।।
कुण्डलिनी शक्ति द्वारा सम्पूर्ण संसार अपने कार्य में संलग्न होकर गतिशील हो रहा है। जो इस

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तथ्य को जान लेता है, वह शोक-सन्ताप भरे माँ के गर्भ में पुनः नहीं आता। अर्थात् उसे मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है।

❑ **ज्ञानेन्द्रियाणि च मनश्च मनोमयः स्यात्**
कोशो ममाहमिति वस्तुविकल्पहेतुः।
संज्ञादिभेदकलनाकलितो बलीयां-
स्तत्पूर्वकोशमभिपूर्य विजृम्भते यः।।

—विवेक चूडामणि १६६

अर्थात्—मैं, मेरा आदि निश्चयों के कारण 'मन' और ज्ञानेन्द्रियाँ ही 'मनोमय कोश' है, जो अन्नमय तथा प्राणमय कोशों को व्याप्त किये रहता है।

❑ ध्यान करते समय बैठे रहने पर चिन्ता-प्रवाह जब कम हो जाए, तब इस ओर पूरी शक्ति लगानी चाहिए। ऐसा करने से भीतर से शान्ति उत्पन्न होगी और उस शान्ति से ज्ञान के प्रकाश से मानस परिपूर्ण हो जाएगा।

❑ ध्यान के द्वारा पवित्र तथा ज्ञानरूपी जल से पूर्ण-राग-द्वेष रूप मल को दूर करने वाले मानस-तीर्थ में जो मानव स्नान करता है, वह परम गति-मोक्ष को प्राप्त होता है।

❑ स्वास्थ्य, वैभव और चातुर्य यदि कम पड़ता है, तो चिन्ता न करो। चिन्ता की बात एक ही है—आत्मगौरव का भान न होना और आत्मबल का घट जाना।

❑ आत्म-विश्वास, आत्म-ज्ञान और आत्म-संयम सिर्फ यही तीन जीवन को बल और सम्बल प्रदान करते हैं।

❑ बादलों का पानी, सूर्य की रोशनी, पूर्वजों की सम्पदा तो अनायास मिल सकती है, पर ज्ञान तो हमें स्वयं उपार्जित करना पड़ता है। उसे अभ्यास में उतारने के लिए भी अपनी ही चेष्टा काम आती है।

❑ वचनों का बवण्डर भले ही समुद्र जितना विस्तृत क्यों न हो, उससे आत्मा की प्यास नहीं बुझती। इसके लिए कर्म के चुल्लू का प्रयोग करना पड़ेगा, भले ही वह आकार में छोटा हो।

❑ अध्यात्मशास्त्र का यह एक अटल सिद्धान्त है कि जो अपने को जैसा मानता है, उसका बाह्य आवरण भी वैसा ही बनने लगता है। बीज से पौधा उगता है और विचारों से आचरण का निर्माण होता है। जो अपने को दीन, दास, दुःखी, दरिद्र मानता है वह वैसा ही बना रहेगा। हमारे देश में दीनता, दासता, दुःख दरिद्रता के विचार फैले और भारत भूमि ठीक वैसी ही बन गई। अपने निवासलोक को जब हम **"जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी"** कहते थे, यह देवलोक थी, जब 'भवसागर' कहने लगे तो वह बद्ध कारागार के रूप में मौजूद है। यदि आप अपने को नीच, पतित मानते हैं तो विश्वास रखिये आप वैसे ही बने रहेंगे। कोई भी आपको ऊँचा या पवित्र न बना सकेगा, किन्तु जिस दिन आपके अन्दर से आत्मगौरव की, आध्यात्मिक महत्ता की हुँकार उठने लगेगी उसी दिन से आपका जीवन दूसरे ही ढाँचे से ढलना शुरू हो जाएगा। संसार में जितने भी महापुरुष हुए हैं। उनमें उनके निजी प्रयत्न का ही श्रेय अधिक है। हम मानते हैं कि दूसरों की सहायता से भी उन्नति होती है, पर यह सहायता उन्हें प्राप्त होती है, जो अपनी सहायता खुद करते हैं।

❑ अध्यात्म की एक छोटी-सी किरण मात्र से मानव-जीवन कमल की तरह खिल उठता है। उसकी सारी विकृतियाँ एक क्षण में विलीन हो जाती हैं। हृदय में प्रसन्नता, सदाचार, निर्भयता, उदारता और करुणा की लहरें उठती हैं। आध्यात्मिक व्यक्ति का तन-मन शरद-ज्योत्स्ना की भाँति शीतल हो उठता है। न केवल वह ही शीतल हो उठता है, अपितु उसके सम्पर्क में आकर ताप-संतप्त व्यक्ति भी शीतल हो उठता है।

❑ लोग अध्यात्म लाभ के लिए वर्षों प्रयत्न करते रहते हैं, किन्तु उसका अनुभव नहीं कर पाते। इसका कारण यह है कि वे केवल बाह्य साधनों एवं पूजा-पाठ में ही अधिक संलग्न रहते हैं। अध्यात्म से वस्तुतः हृदय को पवित्र बनाइये। मन को निर्मल कीजिये, तत्काल ईश्वरीय प्रकाश, अध्यात्म की अनुभूति होगी।

❑ मनुष्य अपनी दुर्बलता पर रोता है, अपनी अवस्था पर शोक, पश्चात्ताप और सन्ताप किया करता है, ऐसा क्यों ? यही कि उसे अपने वास्तविक स्वरूप का कुछ भी ज्ञान नहीं है, वह चाहे तो अपनी अनन्त स्वरूप शक्ति द्वारा उस नैतिक परिसीमा तक पहुँच सकता है, जहाँ कोई भी विकार स्पर्श नहीं कर सकता।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ तुम हीन, असमर्थ, कायर, दुर्बल और निस्तेज नहीं हो। तुम सत सन्तान और आत्म-तेज के केन्द्र हो।

❑ मनुष्य का अपने आप से बढ़कर न कोई शत्रु है, न मित्र।

❑ अपना सुधार करो और अपने अहंकार पर विजय प्राप्त करो।

❑ वह दिन धन्य है, जिस दिन एक आदमी यह अनुभव करता है कि वह स्वयं ही अपना रक्षक और भक्षक है, स्वयं उसमें ही उसके समस्त दुःखों और ज्ञानाभाव के कारण मौजूद हैं और स्वयं उसके अपने ही भीतर समस्त शान्ति तथा प्रकाश के स्रोत विद्यमान हैं।

❑ मनुष्य ही स्वयं अपना पथ-प्रदर्शक है। जो आत्मा मनुष्य को ईमानदार और पूर्ण बना सकती है, वही समस्त प्रकाशपूर्ण प्रभाव और सारे भाग्य पर राज्य करता है। उसके लिए कोई बात समय से पहले या पीछे नहीं होती।

❑ यदि आप दूसरों को सुधारना चाहते हैं तो पहले स्वयं सुधरने का प्रयत्न करिए।

❑ जैसा तुम अपने को बनाते हो, वैसे ही तुम स्वयं अपने स्वामी हो। यदि तुम स्वस्थ हो, शक्तिवान हो तथा साधारण कोटि की बुद्धि रखते हो तो तुम अपनी इच्छानुसार मानसिक, शारीरिक उन्नति कर सकते हो।

❑ जब तक अपने को उठाने और सुधारने को तुम स्वयं तैयार नहीं होते, तब तक कोई दूसरा तुम्हें उठा या सुधार नहीं सकता।

❑ दूसरों की निन्दा करने में खर्च किया जाने वाल समय अपने दोष ढूँढ़ने में लगाओ। दूसरों को सुधारने के लिए प्रयत्न करने का पहला चरण अपने सुधार से आरम्भ करो।

❑ तुम अपने किये पापों से अपने को ही गिराते हो। अपने ही पुण्य से शुद्ध होते हो। शुद्धि और अशुद्धि अपनी ही है। दूसरा कोई किसी को शुद्ध नहीं कर सकता।

❑ जब तक तुम स्वयं अपने उद्धार के लिए कमर कसकर खड़े नहीं होते। तब तक करोड़ों ईसा, मुहम्मद, बुद्ध या राम मिलकर भी तुम्हारी रत्ती भर सहायता नहीं कर सकते। इसलिए दूसरों की तरफ मत ताको, अपनी सहायता आप करो।

❑ नीचे की दिशा में किसी को भी सरलतापूर्वक धकेला जा सकता है, पर ऊँचाई की ओर उठाने में कड़े पुरुषार्थ की आवश्यकता पड़ती है। पुरुषार्थ को दूसरों पर आजमाने से पहले उसकी समर्थता अपने ऊपर जाँचनी चाहिए और देखना चाहिए कि अपने सुधारने, सँभालने में कितनी सफलता मिल सकी ? जो अपना सुधार कर सकेगा, वही दूसरों को सुधारने में सफल होगा।

❑ आध्यात्मिक महत्त्वाकांक्षा की, आत्मगौरव की भूख, शारीरिक भूख की अपेक्षा कई गुनी, तीव्र, आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण है।

❑ जो विचार आत्मा से निकलता है, वही आत्मा में सबसे ज्यादा प्रभाव डालता है।

❑ लोग कहते हैं कि महाराज ! मेरा मन चला गया। किसने देखा कि वह चला गया। वह तुमने देखा। देखकर कहते हो या बिना देखे। फिर कहते हो मन स्थिर नहीं, हमारा मन शान्त नहीं है। फिर बताओ मन कहाँ गया ? ऐसी कोई जगह है जहाँ मन चला गया हो। मन के चले जाने को देखने वाले तुम हो। मन में तुम हो, कार्य में, कर्म में तुम हो, सबमें तुम हो, इसलिए तुम्हारा नाम भगवान है, जो सबका 'मैं' है, मैं न हो तो नाश हो जाए।

❑ **ब्राह्मणः समदृक् शान्तो दीनानां समुपेक्षकः।**
स्रवते ब्रह्म तत्त्वानि भिन्नभाण्डात् पयो यथा।।
दीन-दुर्बलों का अनुचित रीति से सताया जाना जो ब्राह्मण अपने को समदर्शी और शान्त रहकर अपने आराम के लिए उपेक्षापूर्वक देखता रहता है, उसका मिथ्या ब्रह्मज्ञान फूटे हुए बर्तन में से पानी जैसा चू जाता है।

❑ जिसने अपना अविनाशी, अजन्मा-अजर-अमर स्वरूप जान लिया, वह ईश्वर से दूर नहीं रहता।

❑ उत्तराधिकार का बोध होते ही मनुष्य को अपनी पैतृक सम्पत्ति से आत्मीयता हो जाती है। वह उसे अपनी समझने लगता है। अपने में ईश्वरतत्त्व का बोध होते ही आपको सृष्टि का विस्तार, सूर्य का प्रकाश, चन्द्रमा का सौन्दर्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

और नक्षत्रों की ज्योति अपनी लगेगी। वायु की गति, जल का रस और पृथ्वी की गंध आपको अपनी सम्पत्ति लगेगी। आपको अनुभव होगा कि यह सारी सृष्टि आपमें है और आप उसमें रमे हैं। इस महान और महनीय स्थिति में आते ही आप अपने अधिकार सत-चित-आनन्द के अधिकारी बन जाएँगे।

- दूसरों की सुन्दरता पर न रीझें। अपने अन्तराल में झाँकें और देखें कि उसमें सौन्दर्य का भंडार भरा पड़ा है।

- चित्त की शुद्धि न होने तक भगवान की उपलब्धि नहीं हो सकती।

- जो ईश्वर को जानते हैं वे नम्र होते हैं, परन्तु जो अपने को जानते हैं, वे भी अभिमानी नहीं हो सकते।

- त्याग और ज्ञान एक ही वस्तु है। जो ज्ञान त्याग का पर्यायवाची है, वही सत्य ज्ञान है, वास्तविक आत्मा का ज्ञान है, तुम्हारे वास्तविक स्वरूप का ज्ञान है।

- "आप तो ब्रह्म को बड़ा बताते हैं, महात्मन् ! फिर मनुष्यों की सेवा करने को क्यों कहते हैं ?" एक जिज्ञासु ने दीर्घतमा से पूछा ? महर्षि ने गम्भीर भाव से कहा—"इसलिए कि उसमें परमात्मा का वास है।"

- सौरऊर्जा स्वभावतः सर्वत्र बरसती रहती है। उससे कौन, कितना लाभ, किस प्रकार उठाये ? यह प्रयोक्ता की अपनी रुचि एवं कुशलता पर निर्भर है। धूप सेंकने, कपड़ा सुखाने से लेकर सूर्यशक्ति की प्रचण्ड ऊर्जा उपलब्ध करने वाले यन्त्रों का प्रयोग करने तक की अनेक विधि-व्यवस्थाएँ मनुष्य स्वयं ही बनाते हैं। सूर्य को इससे न तो प्रसन्नता है, न अप्रसन्नता। वह इन प्रयोक्ताओं पर प्रसन्न होता हो या महल-कन्दराओं में रहकर धूप से बचे रहने वालों पर अप्रसन्न होता हो ऐसी कोई बात नहीं है। दोनों प्रकार के लोगों के साथ उसका कोई सहयोग-असहयोग भी नहीं है। भगवान सूर्य का अनुग्रह पाना, न पाना जिस प्रकार प्रयोक्ता की अपनी चेष्टा एवं तैयारी पर निर्भर है, उसी प्रकार अध्यात्म पुरुषार्थ के बलबूते पर ब्रह्म का विशेष अनुग्रह किस प्रकार प्राप्त हो सकता है ? आत्मिकी की इस परम्परा का इन दिनों में न तो प्रतिपादन होता है, न प्रचलन ही रह गया है, फलतः आत्मिकी असफल, उपहासास्पद बनकर रह रही है। स्थिति को उलटना, उल्टे को उलटकर सीधा करना यही है आत्मिकी का पुनर्जीवन।

- आत्मज्ञान का सम्पादन करना और आत्मनिष्ठा में स्थिर रहना मनुष्यमात्र का सबसे पहला और प्रधान कर्त्तव्य है।

- जिसकी आत्मा शान्त है, जो बुद्धिशाली है, जिसके हृदय में नम्रता है, वही उन्नति करता है।

- घड़ी में घण्टे और मिनट की सुइयाँ एक ही धुरी से बँधी हुई हैं। मिनट की सुई घूमती हुई जब घण्टे वाली के पास पहुँचती है, तो दोनों आपस में मिल जाती हैं। जीव और ईश्वर आपस में सम्बद्ध हैं और जब उपयुक्त अवसर आता है, तभी दोनों आपस में मिल जाते हैं।

- जब तुम एक ऐसे आत्मा को देखते हो जिसके समस्त काम शाही, प्रतिभापूर्ण और गुलाब के फूलों के समान आनन्ददायक हैं, तब तुम्हें परमात्मा का धन्यवाद करना चाहिए कि ऐसी बातें हो सकती हैं और वर्तमान में है।

- तुमको दूसरा कोई अच्छी सलाह दे, सुनना तुम्हारा कर्त्तव्य है, परन्तु तुम अपनी आत्मा की सलाह से काम-काज करते रहो, कभी धोखा नहीं खाओगे।

- जितनी शक्ति हम अपने अन्दर मानते हैं, उतनी ही हमें अनन्तशक्ति के स्रोत से प्राप्त होती है, इसलिए अधिकाधिक शक्तिसंचय करने के लिए ज्यों ही हम अपनी चेतना और ज्ञान को फैलाते हैं, त्यों ही शक्ति की मात्रा हमारे अन्दर बढ़ने लग जाती है।

- विचारवान वे हैं जो नाशवान भौतिक वस्तुओं को बटोरने की अपेक्षा, आत्मिक समृद्धि का संचय करते हैं।

- पिछले जन्मों में न जाने कितने परिजनों को अपना कहता रहा है और भविष्य में न जाने कितनों को कहेगा ? अनावश्यक मोह और दबाव में मत बँधो। केवल कर्त्तव्यपालन पर ही सन्तोष करो।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

- शरीर के लिए जितना किया जाता है, उतना ही यदि आत्मा के लिए किया गया होता तो मनुष्य देवता बनता और इन्हीं परिस्थितियों में स्वर्ग का रसास्वादन करता।
- सांसारिक आनन्द का लाभ पाने के अतिरिक्त जो लोग पारलौकिक सुख की कामनाओं की पूर्ति की अभिलाषा रखते हैं, वे सर्वप्रथम उदारता, कर्त्तव्यनिष्ठा और परोपकारिता का अनुसरण करें।
- देशसेवा और जातिसेवा ये यथार्थ ही अत्युत्तम हैं, परन्तु आत्म-सेवा सर्वोत्तम है।
- परमात्मा तत्त्व में जिन विभूतियों के भण्डार भरे पड़े हैं, क्या उन्हें जीवात्मा में पाया-देखा जा सकता है ? यदि वस्तुतः प्रसुप्त स्थिति में अध्यात्म वैभव की विपुल सम्भावनाएँ मनुष्य में विद्यमान हैं तो उन्हें प्रकट रूप से देखा-दिखाया जा सकता है ? आत्मिकी का उत्तरदायित्व है कि वह अपने को दुर्दशाग्रस्त दलदल में से उभारे और प्राचीनकाल की तरह अपने वर्चस्व का परिचय दे।
- बहिरंग की तुलना में अन्तरंग जगत् असंख्य गुना अधिक सम्पन्न है। उसे कुरेदा, उभारा और उछाला जा सके तो मनुष्य इसी जीवन में असीम शक्ति का स्वामी बन सकता है। जीवन-मुक्ति का आनन्द ले सकता है। आत्म-शक्ति के जागरण और आत्म-साक्षात्कार की दिव्य उपलब्धियों से लाभान्वित होने के लिए अन्तरंग जगत् की आत्म-साधना का अवलम्बन लेना आवश्यक है।
- बहता हुआ दरिया आस-पास की धरती को सींचता चला जाता है। संत जहाँ प्रकट हो जाते हैं, वहीं शक्ति का साम्राज्य स्थापित हो जाता है।
- आत्मा के खेत को ज्ञान के हल से जोतिये। उसमें श्रद्धा के बीज बोइए। इस खेती से जो फसल उगेगी, वह आपको महान बना देगी।
- आत्मिकी को भौतिकी के समतुल्य एवं उससे भी अधिक उपयोगी सिद्ध करने के लिए, जन-जन को उसे अपनाने पर सहमत करने के लिए—प्रथम आवश्यकता इस बात की है कि इस महाविज्ञान के प्रचलित स्वरूप को संशोधन एवं प्रामाणिक स्तर का प्रतिपादन करने के लिए आधारभूत ढाँचा खड़ा किया जाए। ऐसा ढाँचा जो तत्त्वदर्शी, महामनीषियों के चिरकालीन अनुभव की साक्षी भी साथ लिए हो और साथ ही तर्क, प्रमाण एवं प्रत्यक्ष की हर कसौटी पर पूर्ण रूप से खरा सिद्ध होता हो।
- अध्यात्म का सिलसिला वहाँ से प्रारम्भ होता है, जहाँ मनुष्य उच्चचेतन का द्वार खटखटाता है, अन्तःकरण के परिष्कार-परिमार्जन में निरत होता है। इस प्रयास में जिसे जितनी सफलता मिलती है, वह उतनी ही चुम्बकीय क्षमता अर्जित कर लेता है और सांसारिक सफलताओं की सिद्धि-आत्मिक प्रगति की ऋद्धि को प्रचुर परिमाण में हस्तगत करता है। आत्मिकी इसी उच्चस्तरीय प्रगति-पथ पर बढ़ चलने और अभीष्ट सफलता प्राप्त करने का पथ प्रशस्त करती है। इसी प्रयास में निरत रहकर देवत्व की, उसके साथ जुड़ी हुई अगणित विशिष्टताओं की उपलब्धि सम्भव होती है।
- सामान्यतया लोक-व्यवहार में काम आने वाली क्षमताओं का ही स्वरूप एवं महत्त्व समझा जाता है। मनुष्य इतना ही नहीं, उसकी अपनी निजी दुनिया, निजी सम्पदा, निजी गरिमा भी है। 'व्यक्तित्व' इसी को कहते हैं। वह लोक-व्यवहार में काम न आने पर भी इतना वजनदार हो सकता है कि अपनी प्राणऊर्जा भर के वातावरण का परिशोधन और अन्यों को अनुदान दे सकने में समर्थ हो सके। ऋषिकल्प-आत्माएँ इसी स्तर की होती हैं। उनकी यह वरिष्ठता किसी के द्वारा उपहार में मिली हुई नहीं, वरन् स्वउपार्जित ही होती हैं। इस उपार्जन का एक ही आधार है—आत्म-परिष्कार। आत्म-परिष्कार का तात्पर्य कुसंस्कारों का निराकरण, प्रसुप्त महानता का जागरण एवं अभ्युत्थान को समझा जाना चाहिए।
- दुनिया छोड़ने से पहले यह जान लेना समझदारी है कि संसार और जीवन दोनों ही एक-से एक बढ़कर आनन्ददायक हैं, ताकि उनका गौरव और सदुपयोग समझ सकें।
- **शान्ति तुल्य तपो नास्ति न सन्तोषात्परं सुखम्।**
  न तृष्णायाः परोव्याधिः न च धर्मो दया परः।।
  इस संसार में शान्ति के समान कोई अन्य तप नहीं है, सन्तोष से बढ़कर कोई सुख नहीं है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

तृष्णा से बड़ी कोई दूसरी व्याधि नहीं है और दया के समान कोई धर्म नहीं है।

❑ जिस प्रकार माता अपने छोटे बच्चे को बचपन में असहाय अवस्था में प्रवेश करते हुए देखकर उसे प्रेम और करुणा की दृष्टि से देखती है, उसी प्रकार आत्म-ज्ञानी पुरुष संसार के जीवों को दुःख और संकटमय जीवन में से निकलते हुए देखकर उनसे दया, अनुकम्पा, प्रेम, सहानुभूति और सेवा का व्यवहार करता है।

❑ दुनिया में जितने भी पाप और दुःख हैं, वे सब अज्ञानता के कारण हैं। ऐसा जानकर ज्ञानी पुरुष पापियों और पीड़ितों से घृणा नहीं करता, वरन् उन पर दयादृष्टि से देखता है।

❑ आपकी आत्मा स्वभाव से ही अशुद्ध और पापी नहीं और न किसी एक व्यक्ति के पाप से पतित हुई है और न अपने उद्धार के लिए वह किसी दूसरे मनुष्य के पुण्य के आश्रित ही है।

❑ आत्मोन्नति का सर्वोपरि नियम यह है कि उचित को ग्रहण करने और अनुचित का त्याग करने के लिए सदा प्रस्तुत रहा जाए। जो पक्षपात की हठ न करके सदा सत्य की तलाश में रहता है, वही उन्नति के शिखर पर चढ़ सकता है।

❑ जब चोर चोरी के लिए मकान में जाता है तो पहले निकलने का रास्ता देख लेता है। उसी तरह अगर तुम संसार से तथा सांसारिक चीजों से प्रेम करना चाहते हो तो इससे पहले वह रास्ता देख लो कि अगर तुम्हारा इनसे वियोग भी हो जाए, तो तुम्हारे हृदय में चोट न लगे।

❑ जो खुद ही अपना मालिक है, वह दूसरों का भी बन जाएगा।

❑ घाव को भर जाने से उसके ऊपर की गली हुई खाल आप ही गिर जाती है, किन्तु कच्चे घाव से खाल को उचेलने से खून निकलने लगता है। उसी तरह दिव्यज्ञान की प्राप्ति होने पर भेद-भाव दूर हो जाता है, किन्तु दिव्यज्ञान की उत्पत्ति से पहले भेद-भाव नहीं मिट सकता है।

❑ जब तक भट्टी में आग जलती रहती है, तब तक दूध खौलता रहता है। जब आग का जलना बन्द हो जाता है, तब दूध का खौलना बन्द हो जाता है। उसी तरह आध्यात्मिक ज्ञान को प्राप्त करने वाला जब तक उसी की साधना करता रहता है, तभी तक उसका मन उन्नति के पथ पर चलता रहता है।

❑ प्राणिमात्र से दिल खोलकर मिलो, किसी से घृणा मत करो। याद रखो परमात्मा सदा सबमें समान रूप से विराजमान हैं।

❑ लोगों का एक दुःख मिटता है तो दूसरा उन्हें घेरता है। सदैव कोई न कोई भय-बाधा उन्हें सताती रहती है। कारण यह है कि आनन्द के मूल स्रोत को उन्होंने छोड़ दिया है।

❑ आत्मोत्कर्ष के लिए साधना, स्वाध्याय, संयम, सेवा उसी प्रकार आवश्यक हैं, जिस प्रकार शरीर-निर्वाह के लिए, भोजन, शयन, श्रम और मल-विसर्जन। इन चारों में से एक भी ऐसा नहीं, जिसके बिना काम चल सके या एक के बल ही आत्मिक प्रगति का लक्ष्य पूरा हो सके।

❑ जिनकी कामादि कामना दग्ध नहीं हुई है अर्थात् जिनका रज, तम, शान्त नहीं हुआ है, उन कुयोगी पुरुषों को प्रभु का दर्शन दुर्लभ है। निष्पाप व्यक्ति प्रभु में प्रीति रखने वाला अन्तःकरण की सकल वासनाओं को धीरे-धीरे त्याग देता है।

❑ मनुष्य के लिए उचित है कि धर्म से वेद-शास्त्र का स्वाध्याय तथा गायत्री प्रणव (ॐ) का अर्थ, विचार, जप, पौर्णमास्य आदि हवन, पंच यज्ञ, न्याय से अपनी वर्णानुसार जीविका उपार्जन, निष्काम कर्म, परोपकार, योगभ्यास आदि उत्तम कर्मों से इस शरीर को ब्राह्मी स्थिति के योग्य बनावे।

❑ वही मनुष्य संसार में शान्त और निश्छल रह सकता है, जिसने आध्यात्मिक जगत् का अनुभव प्राप्त कर लिया है, ऐसे मनुष्य पर बाहर की प्रतिकूल परिस्थितियों का कुछ भी असर नहीं होता।

❑ देवताओं के पूजा-लोलुप मन्त्रों की बाजीगरी का कौतुक तथा छुटपुट कर्मकाण्डों से स्वर्ग, मुक्ति जैसी मान्यताओं में से एक भी ऐसी नहीं है जो अपनी यथार्थता प्रमाणित कर सके। इस मकड़ी के जाले के स्थान पर ऐसे आधारों की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रतिष्ठापना करनी होगी, जिसके परिणाम प्रतिफल नकद धर्म की तरह प्रत्यक्ष देखे जा सकें। इस निर्धारण में नया कुछ नहीं करना है। मात्र ऋषि-युग की धारणाओं और प्रयोग-विधियों को फिर से खोजना और अपनाना भर पड़ेगा, इसे खोये को ढूँढ़ लेना, भूले को याद करना भर समझा जा सकता है।

❑ **आरोप्यते शिला शैले यत्नेन महता यथा।**
निपात्यते क्षणेनाधस्तथात्मा गुणदोषयोः।।

—सुभाषित भाण्डागार पृ. ५७०, श्लोक ४७५

किसी ऊँचे स्थान पर शिला बड़ी कठिनाई से चढ़ाई जाती है। किन्तु वही शिला क्षणभर में नीचे आसानी से गिराई जा सकती है। अपने गुण-कर्म और स्वभाव की भी यही स्थिति है। इन्हें उच्चस्तर का बनाने में बड़ी कठिनाई होती है, परन्तु मनुष्य इनको पतनोन्मुख सरलता से कर लेता है। आत्मा के उत्थान व पतन की भी यही स्थिति है।

❑ अध्यात्म-क्षेत्र के सम्बन्ध में एक बहुत बड़ी भ्रान्ति है—उपचार, अनुष्ठानों को बाजीगरी स्तर की चमत्कारी प्रक्रिया मानना और कुछ क्रिया-कृत्य करने के उपरान्त तरह-तरह के अद्भुत दृश्य देखने, ऋद्धि-सिद्धियाँ टपक पड़ने की आशा लगाना। आमतौर से लोग मन्त्र-तन्त्र इन्हीं उद्देश्यों के लिए अपनाते हैं, जब वैसी कुछ बाजीगरी, कौतुक-कौतूहल नहीं दिखते, तो उछलते-मचलते, तमाशे के लालच में इकट्ठे हुए बच्चे उदास मन से घर लौट पड़ते और उस मजमे को खरी-खोटी सुनाते हैं, आज यही स्थिति समूचे धर्मक्षेत्र की है। अध्यात्म इन्हीं भ्रान्तियों के गली-कूँचों में भटक रहा है, अविश्वासी आक्षेप करें तो बात समझ में भी आती है, पर जब विश्वासी और प्रयोक्ता भी जी चुराने लगें, पीछा छुड़ाने लगें और अविश्वास-असन्तोष व्यक्त करने लगें तो समझना चाहिए कहीं दाल में काला अवश्य है।

❑ जब मनुष्य के भीतर उचित और अनुचित का अन्तर्द्वन्द्व उठ खड़ा हो तो समझना चाहिए कि सुख-शान्ति के दिन नजदीक आ गये।

❑ कौन कितना जिया, इसका लेखा-जोखा इस आधार पर किया जाना चाहिए कि उसने कितना आनन्द पाया और कितना लुटाया ?

❑ जीते जी तृष्णा और अहन्ता के बन्धन न तोड़ सकें, तो मरने के बाद मुक्ति पाने की आशा क्यों करते हो ?

❑ मुक्ति अपनी विचारणा पर अंकुश रखने का नाम है। उसके लिए परलोक नहीं जाना पड़ता।

❑ जिस सोने-चाँदी को जमा होने में राजा का, अग्नि का, जल का, चोर का और अपने सगे-सम्बन्धियों तक का भय बढ़ जाता है, भला वो भी कोई धन है ? सच्चा धन तो आत्म-ज्ञान है, जिसके प्राप्त होते ही मनुष्य दसों दिशाओं में निर्भय हो जाता है।

❑ परमात्मा जिस पर अत्यन्त प्रसन्न होता है, उसे नदी-सी शालीनता, सूर्य-सी उदारता और पृथ्वी की-सी सहनशीलता प्रदान करता है।

❑ भौतिक महत्त्वाकांक्षाओं के भार से मनुष्य इतना दब जाता है कि आत्म-कल्याण के लिए कुछ कर सकना तो दूर सोचना तक कठिन पड़ता है।

❑ आत्म-सम्मान की रक्षा हमारा सबसे पहला धर्म है। आत्मा की हत्या कर अगर स्वर्ग भी मिले तो वह नरक है।

❑ क्रोध करना बुरा है। जिसे देर में गुस्सा आवे और जल्द शांत हो जावे वह श्रेष्ठ मनुष्य है। जिसे जल्दी गुस्सा आवे और देर तक उसका असर दिमाग पर रहे वह नीच है।

❑ प्रसिद्धि वीरोचित पराक्रम की सुगन्ध है।

❑ बैठे हुए का भाग्य बैठा रहता है, उठता या नहीं, उठकर खड़े होने वाले का भाग्य उन्नति के लिए उठ खड़ा होता है। जो आलसी भूमि पर पड़ा सोया रहता है, उसका भाग्य भी सोता रहता है, जागता नहीं। जो देश-देशान्तर में अर्जन के लिए चल पड़ता है, उसका भाग्य भी चल पड़ता है, दिन-दिन बढ़ता जाता है।

❑ जीवन-लक्ष्य की सिद्धि के लिए जो उपाय बतलाये हैं, वे दो बातों पर निर्भर करते हैं—एक है—स्वार्थपूर्ण, संकीर्ण, तुच्छ, स्वकीय मर्यादाओं से अपने को मुक्त करना, दूसरा आधार है—अपनी भावनाओं को विकसित कर असीम के प्रति अनुराग, प्राणिमात्र के प्रति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दया, प्रीति, आत्मीयता विराट की अनुभूति का विस्तार करना एक निषेधात्मक है, तो दूसरा है रचनात्मक।

❑ पृथ्वी पर धन जमा न करो। इसमें चोरी होने, ईर्ष्या बढ़ने और अहंकारी-विलासी होने का डर है। अपना धन परलोक में जमा करो, जहाँ वह घटता नहीं बढ़ता ही रहता है।

❑ लोकोत्तर पुरुष की चित्तवृत्ति जानने में कौन समर्थ है ? कोई नहीं। उनके चित्त (हृदय) जहाँ वज्र से भी कठोर होते हैं, वहाँ फूलों से भी बढ़कर सुकोमल होते हैं।

❑ मनुष्य की स्वतन्त्र आत्मा पर अन्याय के विषम फल नहीं लगने पाते।

❑ हे मनुष्यो ! उठो, जागो, सावधान हो जाओ और ब्रह्मज्ञ गुरु के समीप जाकर उस ब्रह्म-तत्त्व को जानो। यह मार्ग छुरे की तरह तीक्ष्ण, धार से भी अधिक खतरनाक एवं दुर्गम है।

❑ सर्वव्यापी अनन्त चेतना में समभाव से स्थित आत्मा वाला तथा सबमें समभाव देखने वाला योगी ही आत्मा को सम्पूर्ण भूतों में और सम्पूर्ण भूतों को आत्मा में देखता है। यही योग दृष्टि है।

❑ चेतनसत्ता का केन्द्र भीतर है। बाहर तो उसका कलेवर मात्र लिपटा हुआ है। परमाणुओं व जीवाणुओं के नाभिक मध्य में होते हैं। शक्ति के स्रोत यहीं पर हैं। बाहर तो उनका सुरक्षा दुर्गमात्र खड़ा होता है। सूर्य की ऊर्जा उत्पत्ति उसके अन्तराल से होती है, बाहर तो विकिरण के वितरण भर की क्रिया चलती रहती है। अन्तरात्मा काय-कलेवर के अन्तरंग में है, बाहर तो उसके निवास-निर्वाह का भवनमात्र खड़ा है।

❑ जीवन की गरिमा बहिरंग के साधनों से नहीं और न शरीर के अवयवों पर उसकी निर्भरता है। उत्कर्ष भीतर से उदय होता है। बाहर तो मात्र हलचलें दिखाई देती हैं। यदि अन्तःचेतना गिरी हुई हो तो हर क्षेत्र में पतन और पराभव मात्र ही उपलब्ध होगा।

हम देखते भी बाहर हैं व खोजते भी बाहर हैं, जबकि जिसे देखना व पाना है, उसका अस्तित्व भीतर ही विद्यमान होता है। कस्तूरी के हिरन की तरह बाहर सुगन्ध खोजने के प्रयत्न निष्फल ही नहीं जाते, खीज और निराशा भी गले बँध जाती हैं। अभीष्ट-प्राप्ति के लिए नाभि-संस्थान का आश्रय लेने के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं। मृगतृष्णा में भटकने के बजाय यदि अपने ही दृष्टिकोण को सुधार लिया जाए तो प्यास बुझाने के लिए उपयुक्त स्थान ढूँढ़ने और सार्थक प्रयास करने का अवसर मिल सकता है। समृद्धि और सर्वांगपूर्ण प्रगति के मूलतत्त्व भीतर है। सुख-शान्ति के केन्द्र भी वहीं विद्यमान हैं। तृप्ति, तुष्टि और शान्ति पानी हो तो अन्तःकरण के रत्नभण्डार को ही खोदना, कुरेदना पड़ेगा।

❑ रात्रि में 'टार्च' का प्रकाश जितने क्षेत्र पर पड़ता है, उतना ही वह प्रकाशित हो उठता है। जहाँ वह रोशनी नहीं पड़ती वह प्रकाश क्षेत्र के अतिसमीप होते हुए भी अन्धकारमय बना रहता है। अँधेरे में भी अनेक वस्तुएँ रखी होती हैं, पर प्रकाश क्षेत्र की वस्तुओं का उपयोग कर सकना, वहाँ के खतरों से बच सकना सम्भव होता है, जबकि अँधेरे में रखी वस्तुओं के बारे में सब कुछ अविज्ञात एवं रहस्यमय ही बना रहता है। रात्रि के अँधेरे में अपरिचित क्षेत्र डरावने लगते हैं, जबकि प्रकाश क्षेत्र में निर्भयता और निश्चिन्ततापूर्वक कहीं भी विचरण किया जा सकता है। प्रकाश के कारण दिन में सभी प्रकार के कार्य होते रहते हैं, पर रात के अँधेरे में सोते रहने या निरर्थक बैठे रहने की ही बात बनती है। तेज रोशनी में कुछ करना तो एक अपवाद है। उसमें भी श्रेय तो प्रकाश का ही माना जाएगा।

❑ तत्त्वज्ञान की दृष्टि से प्रकाश का अर्थ है—प्रखर आत्म-चेतना। उसका प्रकाशपुंज जहाँ भी पड़ता है, वहीं सुन्दर और प्रिय लगने लगता है। क्या सुन्दर और क्या कुरूप है ? इसका निर्धारण नहीं हो सकता। अपनी दृष्टि और पसन्दगी के आधार पर ही सुन्दरता-असुन्दरता का निर्णय होता है। कौन प्रिय, कौन अप्रिय है ? यह भी अपनी ही मान्यता पर निर्भर है, आज जो प्रिय है, वह कल अप्रिय लगने लग सकता है। मात्र व्यवहार की प्रतिक्रिया ही मित्रता को उपेक्षा या

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शत्रुता में बदल देती है। इस परिवर्तन के मूल में सामने वाले का व्यक्तित्व नहीं, अपनी मान्यताओं की हेरा-फेरी ही प्रमुख है। भले ही वह किसी भी कारण उत्पन्न हुई हो।

❑ लोक-व्यवहार में, सांसारिक परिस्थितियों में जो खिन्नता एवं प्रसन्नता उभरती है, उसमें जड़-पदार्थों की उतनी भूमिका नहीं जितनी आत्म-चेतना से उत्पन्न होते रहने वाले प्रकाश की है। वह पाषाण पर जा जमे तो उसमें से भगवान् प्रकट हो सकते हैं। सामान्य परिस्थितियों में ही स्वर्गोपम अनुभूतियाँ हो सकती हैं। वस्तुतः आत्म-प्रकाश की गरिमा ज्योतिर्मय सूर्य से किसी भी प्रकार कम नहीं है।

❑ विभु अचिन्त्य है। विस्तार की कल्पना एवं आराधना कठिन है, किन्तु अणु के भीतर विद्यमान उस महती शक्ति सत्ता का सरल साक्षात्कार हो सकता है। बूँद में सरोवर की समस्त विशेषताएँ विद्यमान हैं। चिनगारी में विश्वव्यापी अग्नि-तत्त्व की समस्त सम्भावनाएँ सन्निहित हैं। बीज में वृक्ष और शुक्राणु में समूचा मनुष्य विराजता है। परब्रह्म की समग्र सत्ता का विराट-दर्शन किन्हीं विरलों को ही होता है, किन्तु उसका अभीष्ट दर्शन अपने अन्तराल में भी भलीप्रकार किया जा सकता है। न केवल दर्शन, वरन् सघन सम्पर्क और महत्त्वपूर्ण आदान-प्रदान का उपक्रम भी इस क्षेत्र में अधिक सरलता और सफलतापूर्वक बन पड़ता है।

❑ सोऽहम्, शिवोहम्, तत्त्वमसि, अयमात्मा ब्रह्म जैसे तत्त्वदर्शी प्रतिपादनों में उसी एकात्म अद्वैत का प्रतिपादन है, जिसे अपनाकर कोई भी अपने को सृष्टि का युवराज होने की वरिष्ठता से अवगत हो सकता है। सौर-मण्डल की समग्र सत्ता परमाणु के छोटे परिकर में सन्निहित है। मानवीय अन्तराल में सत्यं, शिवं, सुन्दरम् झाँकता है और सत्, चित्, आनन्द की अनेकानेक विभूतियों के दर्शन होता है।

❑ अच्छा हो हम दिशाओं को महकाने वाली कस्तूरी को अपनी ही नाभि में केन्द्रीभूत देखें। अपने को समझें, कुरेदें, जगाएँ, उभारें और इस योग्य बनाएँ कि उस एक में ही पारस, कल्पवृक्ष और अमृत की उपस्थिति का अनुभव पग-पग पर होने लगे। मानवीय पराक्रम, विवेक की सार्थकता इसी क्षेत्र की प्रगति से परखी जाती है।

❑ वृक्ष की दृश्यसम्पदा ही चर्म-चक्षुओं को परिलक्षित होती है और प्रतीत होता है कि यह सारा कलेवर धरती की सतह से उठता और ऊँचाई तक उठकर शाखा-प्रशाखाओं, टहनियों और पत्र-पल्लवों के रूप में अपनी सफलता का परिचय देता है। इन्द्रियों की पहुँच इतनी ही है और वे उनके साधन इतनी ही, जानकारी दे सकते हैं।

विवेकदृष्टि से देखने पर आगे की बात का पता चलता है। वृक्ष जितना ऊपर फैला दिखता है, भूमि की गहराई में उसकी मोटी-पतली जड़ें उतने ही विस्तार में फैली होती हैं। उन्हें आँख से नहीं बुद्धि एवं अन्य साधनों की सहायता से जाना जा सकता है। फूल और फल कहाँ से आते हैं ? नयी कोपलें कहाँ से प्रकट होती हैं ? उसके उत्तर में स्थूल दृष्टि आसमान की ओर ही ताकती, सोचती है कि जब यह वृक्ष के ऊपर वाले भाग से चिपके हैं तो सम्भवतः आसमान से ही टपके होंगे।

वृक्षों की स्थिति के सम्बन्ध में अधिकांश लोगों की समझ में वास्तविकता आ गई है। यह जान लिया गया है कि पेड़ का सारा वैभव भूमिगत जड़ों का है। विकास के सम्बन्ध में यह भ्रम अभी भी बना हुआ है कि उसे भौतिक सिद्धियाँ और आत्मिक ऋद्धियाँ किसी बाहरी सत्ता द्वारा उपहार में प्रदान की जाती हैं। सिद्ध पुरुषों, मन्त्र-उपचारों और देवपरिवार से मनोकामनाओं की पूर्ति के वरदान मिलने की अपेक्षा की जाती है। इसी प्रकार समर्थ व्यक्तियों के सहयोग और साधनों के बाहुल्य से प्रगति के सपने सँजोये जाते हैं। यह भूल ठीक वैसी ही है, जैसा कि वृक्ष के वैभव को आसमान से टपका हुआ मानना।

❑ काया के खोखले में संव्याप्त अन्तर्जगत ही व्यक्ति की सर्वतोमुखी प्रगति का वास्तविक क्षेत्र है। अन्तःकरण की सत्प्रवृत्ति में वे जड़ें हैं जिनमें मनुष्य को सर्वतोमुखी सफलता और महानता का श्रेय प्राप्त होता है। इस तथ्य को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

समझा जा सके तो यही माना जाएगा कि सत्य और तथ्य का अति महत्त्वपूर्ण आलोक प्राप्त कर लिया गया।

❑ बहिर्मुखी दृष्टि बाहर को देखती है। जो फैला पड़ा है, उसी का मूल्यांकन करती और उसी में रस खोजती है, जबकि अपने भीतर ही उससे अधिक पाया जा सकता है, जो दिखता है। इसे विधि की विडम्बना ही कहना चाहिए कि पैरों के नीचे की जमीन में दबी हुई प्रचुर खनिज-सम्पदा की ओर ध्यान नहीं जाता और आसमान के तारों से वैभव खोज लाने के लिए मन उड़ानें भरता रहता है। ब्रह्माण्ड की छोटी प्रकृति पिण्ड है। जो बाहर दिखता है उसके बीज भीतर विद्यमान हैं। उन्हें उगाकर अभीष्ट आकांक्षाएँ पूरा कर सकने वाले कल्पवृक्ष जैसे व्यक्तित्व की उपलब्धि प्राप्त कर सकना अपेक्षाकृत सरल है। बाहर का बिखराव-विस्तार बहुत व्यापक है। उसे ढूँढ़कर एकत्रित करने में इतना श्रम और समय लगता है, जिसकी तुलना में घर का उत्पादन कहीं सस्ता रहता है।

❑ प्रकृति के विस्तार में से बहुत कुछ खोजा और पाया गया है। यह पुरुषार्थ और मनोयोग का ही प्रतिफल है। यही प्रयास यदि अन्तरंग की खोज में नियोजित किया जा सके तो उससे अधिक मूल्यवान पाया जा सकता है, जितना कि जड़जगत् में बालू में से तेल निकालने के फलस्वरूप उपलब्ध होता है। मानवीय सत्ता विलक्षण है, उसमें जड़-जगत् की समस्त विशेषताएँ सन्निहित हैं। साथ ही विश्व-चेतना की विभूतियों का सारतत्त्व भी संक्षिप्त किन्तु परिपूर्ण मात्रा में विद्यमान है। खोज का क्षेत्र बाहरी जगत् भी बना रहे, किन्तु यह उचित होगा कि आत्म-सत्ता के कण-कण में ओत-प्रोत उस सम्पदा को भुला न दिया जाए जो अपने लिए सबसे अधिक आवश्यक और उपयोगी है।

❑ हम अपने को देखें, परखें, खोजें। जो प्रतीत होगा वह हमारे लिए नितान्त आवश्यक है, वह भीतर ही मौजूद है। यह वैभव इतना अधिक समर्थ है कि यदि उसे ठीक तरह से सक्षम किया जा सके तो उसे खींच बुलाना तनिक भी कठिन न रहेगा, जिसकी तलाश में हमें निरन्तर मृग-तृष्णा में भटकने और खाली रहने का कष्ट उठाना पड़ता है।

❑ सौन्दर्य और शक्ति का भण्डार भीतर भरा है, बाहरी साधनों से तो मात्र उसकी सुव्यवस्था और सुसज्जा ही सम्भव हो सकती है। जीवन कोई बाहर से नहीं दे सकता, वह तो आन्तरिक क्षमता पर ही निर्भर रहता है और जब वह जीवनी-शक्ति खोखली हो जाती है और चुक जाती है तो कोई बाह्योपचार जीर्णता एवं मृत्यु को रोके रहने में सफल नहीं हो सकता। अध्यापक पढ़ा सकता है, पर मानसिक स्तर नहीं दे सकता। सुन्दरता को निखारने वाले शृंगार प्रसाधन तो बाजार में बहुत बिकते हैं, पर सौन्दर्य की मूलसत्ता तो भीतर ही रहती है। कलेवर की कुरूपता और अवयवों की अपंगता को दूसरों की सहायता से एक सीमा तक ही घटाया जा सकता है।

❑ बीज की उत्पादन शक्ति मौलिक है। किसान उसे उगाने, बढ़ाने में अपने श्रम एवं कौशल का सफल उपयोग कर सकता है, पर गेहूँ के दाने से कपास उगा सकना उसके लिए कब सम्भव होता है? वर्षा के बादल कठोर चट्टानों को न तो गीला कर पाते हैं और न उन पर हरियाली उगा सकने में समर्थ होते हैं।

❑ सौन्दर्य और शक्ति-सम्पदा के अजस्र भण्डार अपने ही भीतर भरे हैं, उन्हें पहचाना, ढूँढ़ा और समेटा जा सकेगा तो कोई भी व्यक्ति अपनी दरिद्रता और कुरूपता से पीछा छुड़ा सकता है। बाहरी साधनों और व्यक्तियों की अनुकूलता के लिए जितना प्रयास किया जाता है उससे कहीं कम में मनुष्य असीम विभूतियों का अधिपति बन सकता है। यदि वह अन्तर को खोजे और उसे परिष्कृत करने की तत्परता बरते।

❑ उनसे प्यार करो, जिन्हें लोग पतित, गर्हित और हेय समझते हैं। जिन्हें केवल निन्दा और भर्त्सना ही मिलती है। जो अपने ऊपर लदे हुए पिछड़ेपन के कारण न किसी के मित्र बन पाते हैं और न जिन्हें कोई प्यार करता है। प्यार करने योग्य वे ही लोग हैं, जिन्हें स्नेह, सद्भाव देकर तुम अपने को गौरवान्वित

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करोगे। माँगो मत। चाहो मत। देकर ही अपने को गौरवान्वित अनुभव करो।

❑ उन्हें देखने के लिए मत दौड़ो जिनकी त्वचा चमकीली और गठन में सुन्दरता भरी है। ऐसा तो तितलियाँ और भौंरे भी कर सकते हैं। तुम उन्हें निहारो जो दरिद्रता और रुग्णता की चक्की में घिसकर कुरूप लगने लगे हैं। अभावों के कारण जिनकी अस्थियाँ उभर रही हैं और आँखों की चमक छिन गई है। निराशों में आशा का संचार करके तुम अपने को धन्य अनुभव करो।

❑ कोलाहल और क्रन्दन के साथ जुड़ी हुई विपन्नताओं को देखकर न डरो और न भागो, वरन् वह करो, जिससे अशान्ति को निरस्त और शान्ति को प्रशस्त कर सको। शान्ति पाने के लिए न एकान्त ढूँढ़ो और न उद्यानों में भटको। वह तो तुम्हारे अन्दर है और तब प्रकट होती है, जब तुम कोई ऐसा काम करते हो जिससे अनीतियों और भ्रान्तियों का निराकरण हो सके। सत्प्रयत्नों के साथ ही शान्ति जुड़ी हुई है।

❑ तुम क्या हो ? इसे तुम खुद ही नहीं जानते। तुम क्या हो ? अगर तुम इसे समझ जाओ, तो जिस संसार में तुम रहते हो, वह स्वर्ग बन जाए। सफलता और सिद्धियाँ तुम्हारे चरणों में लोटने लगें। तुम एक दिव्यपुरुष बन जाओ, दिव्यप्रतिभा तुम्हारे अंग-अंग से फूट निकले। आध्यात्मिक सौन्दर्य की आभाओं से तुम्हारा शरीर अद्भुत बन जाए, प्रकृति तुम्हें नवीन चिरजीवन का वरदान देगी, तुम उसके दुलारे बन जाओगे, लोग तुम्हें वनमाली कहेंगे, माताएँ तुम्हें श्यामसुन्दर कहेंगी, सचमुच तुम मनमोहन हो जाओगे।

❑ शरीर छोटा है, हाड़, माँस, रक्त से बना है, इसकी कीमत ही क्या है ? कल मिट्टी हो जाएगा। दुनिया सराय है, आये चले गये। ये कल्पनाएँ उन दीवानों की हैं, जिन्होंने अपनी एक लगन के लिए दुनिया को ठोकर मार दी, लेकिन उन्होंने धूल में हीरा ढूँढ़ा और समुद्र में मोती खोजा। वे परवाने शमाँ पर जल गये, कबीर, रहीम, तुलसी और मीरा आदि पर जिन्होंने संसार को स्वर्ग समझा, शरीर को सोने की देह समझी, नर से नारायण होने की शक्ति अपने में देखी, उन्होंने इस जीवन को असार नहीं, वेशकीमती समझा, उन्होंने कीचड़ से रतन निकाले।

❑ इस पिंजड़े के अन्दर वे शक्तियाँ सोती हैं, जिनसे तुम एक अमर-प्राणी बनकर परम-पद पा सकते हो। इसी शरीर में कारूँ की तरह शक्तियों का खजाना छिपा है, बस पाने की देर है। मन को हाथ में लो, एकाग्रता की राह पकड़ो—उमंग और आनन्द के सुन्दर हार पहनकर आध्यात्मिक पथ के राही बन जाओ, फिर तुम्हें मालूम होगा कि तुम क्या हो ?

❑ कोई प्रश्न करे कि "ज्ञानी कौन है ?" तो इसके उत्तर में कुछ भी नहीं कहा जा सकता। जो कहता है कि मुझे ज्ञान हो गया, उसे ज्ञानी नहीं कहना चाहिए क्योंकि यों कहने से ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय तीन पदार्थ सिद्ध होते हैं। जो कहता है कि मुझे ज्ञान नहीं हुआ, वह भी ज्ञानी नहीं, क्योंकि वह स्पष्ट कहता है। जो यह कहता है कि मुझे ज्ञान नहीं, मुझे मालूम नहीं सो भी ज्ञानी नहीं है, क्योंकि ज्ञानोत्तर काल में इस प्रकार सन्देह नहीं रह सकता। यदि शरीर को ज्ञानी कहा जाए, तो जड़ शरीर का ज्ञानी होना सम्भव नहीं। यदि जीव को ज्ञानी कहा जाए, तो ज्ञानोत्तर काल में उस चेतन की जीव संज्ञा नहीं रह सकती। यदि शुद्ध चेतन तत्त्व को ज्ञानी कहा जाए, तो भी अपराध है, क्योंकि शुद्ध चेतन तत्त्व तो कभी अज्ञानी हुआ ही नहीं, इसलिए यह नहीं बतलाया जा सकता कि "ज्ञानी कौन है" ! शुद्ध चेतन तत्त्व की दृष्टि में तो कोई दूसरा पदार्थ है ही नहीं। ज्ञानी को जब दृष्टि ही नहीं रहती, तो फिर सृष्टि कहाँ रहती ? अज्ञानी-जन इस प्रकार कल्पना किया करते हैं कि इस शरीर में जो जीव था सो समष्टि चेतन तत्त्व में मिल गया। समष्टि चेतन तत्त्व के जिस अंश में अन्तःकरण का अध्यारोप है, उस अन्तःकरण सहित उस चेतन तत्त्व का नाम ज्ञानी है। वास्तविक दृष्टि में ज्ञानी किसकी संज्ञा है, कोई भी नहीं बतला सकता क्योंकि ज्ञानी की दृष्टि में तो ज्ञानीपन भी नहीं है। ज्ञानी-अज्ञानी की कल्पना केवल लोक-शिक्षा के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

लिए है और अज्ञानियों के अन्दर ही इसकी कल्पना है।

भला जो गुणातीत है, उसमें लक्षण कैसे ? लक्षण तो अन्तःकरण में बनते हैं और अन्तःकरण से होने वाली क्रिया त्रिगुणात्मिकता है, इसलिए यह नहीं बतलाया जा सकता कि "ज्ञानी कौन है ?"

❑ आत्मसम्मान को प्राप्त करने और उसकी रक्षा करने के लिए प्राणपण से चेष्टा करते रहिए, क्योंकि यह बहुमूल्य सम्पत्ति है। पैसे की तरह यह आँख से दिखाई नहीं पड़ती और पास रखने के लिए तिजोरी की जरूरत नहीं पड़ती तो भी स्पष्टतः यह धन है। हम ऐसे व्यापारियों को जानते हैं, जिनके पास अपनी एक पाई न होने पर भी दूसरों से उधार लेकर बड़े-बड़े, लम्बे-चौड़े व्यापार कर डालते हैं, क्योंकि उनका बाजार में सम्मान है, ईमानदारी की प्रतिष्ठा है, हम ऐसे नौकरों को जानते हैं जिन्हें मालिक अपने सगे बेटे की तरह प्राण से प्यारा रखते हैं और उनके लिए प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष रूप से इतना पैसा खर्च कर देते हैं, जो उनके निर्धारित वेतन से अनेक गुना होता है। कारण यह कि नौकर के सद्गुणों के कारण मालिक के मन में उसका सम्मान घर कर लेता है। गुरुओं के वचन मानकर श्रद्धालु शिष्य अपना सर्वस्व देने के लिए तत्पर हो जाते हैं, अपनी जीवन-दिशा बदल देते हैं, प्यारी से प्यारी वस्तु का त्याग कर देते हैं, राजमहल छोड़कर भिखारी बन जाते हैं, ऐसा इसलिए होता है कि शिष्य के मन में गुरु के प्रति अगाध सम्मान होता है। आत्म-सम्मान ऊँची कोटि का धन है, जिसके द्वारा ऐसे महत्त्वपूर्ण लाभ हो सकते हैं, जो कितना ही पैसा खर्च होने पर नहीं हो सकते थे ?

❑ आत्म-सम्मान धन है। बाजार में वह पूँजी की तरह निश्चित फल देने वाला है, समाज में पूजा कराने वाला है, आत्मा को पौष्टिक भोजन देने वाला है, परलोक में शाश्वत सुख प्रदान करने वाला है, इसलिए हम कहते हैं कि—हे अध्यात्मवाद का आश्रय लेने वाले शूरवीर साधको ! आत्म-सम्मान सम्पादित करो और प्रयत्नपूर्वक उसकी रक्षा करो।

❑ पिछले दिनों एकांगी अध्यात्म अपनाया गया और आर्ष-संस्कृति के उन मूल सिद्धान्तों को भुला दिया गया, जिसमें नीति के परिपोषण और अनीति के विरुद्ध प्रचण्ड संघर्ष करने की बात को समान रूप से महत्त्व दिया गया है और उन दोनों की समान प्रगति को अविच्छिन्न रथचक्र बताया गया है। सज्जनता के उदार पथ भर को देखना और दुष्टता की भयंकरता से आँखें मीच लेना न तो अध्यात्म और न धर्म। एकांगी चिन्तन अपूर्ण ही नहीं अनुपयुक्त भी है। मध्यकाल में अहिंसा के प्रतिपादन में कुछ सम्प्रदायों ने अतिवाद बरता। किसी से भी बैर न करना, किसी से भी न लड़ना, हर किसी को क्षमा करने जैसी एकपक्षीय मान्यता पनपी तो सज्जनता का पक्ष अति दुर्बल हो गया और दुष्टता को, आतंकवादी अनाचार को निर्बाध रूप से बरतते रहने की खुली छूट मिली और सामाजिक अधःपतन सामने आया।

❑ प्राचीनकाल में प्रबुद्ध वर्ग को ब्रह्म और क्षात्र दोनों का साथ-साथ निर्वाह करना पड़ता था। परशुराम, विश्वामित्र, द्रोणाचार्य आदि सभी ऋषियों के क्रिया-कलाप में धर्म के दोनों ही पक्ष समान रूप से प्रयुक्त होते रहे हैं। पीछे सुविधा की दृष्टि से इन दो कार्यों के लिए दो पृथक-पृथक वर्ग बना दिये गये। ज्ञान का प्रसार करने वाले ब्राह्मण और अनीति से जूझने वाले क्षत्रिय कहलाने लगे। इसमें अपेक्षाकृत सुविधा भी रही। दोनों वर्ग अपने-अपने उत्तरदायित्वों में अधिक तन्मयता तथा तत्परतापूर्वक संलग्न हुए और प्रवीणता प्राप्त करने, पारंगत बनने में सफल रहे। फिर भी माना यही जाता रहा कि एक ही धर्म की ये दोनों धाराएँ परस्पर पूर्णतया संयुक्त हैं। एक शरीर के दो हाथ, दो पैर, दो आँखें, दो कान, दो नथुने, दो फेफड़े, दो गुर्दे आदि होते हैं, ठीक उसी तरह धर्म शरीर में ब्रह्म-उदारता और क्षात्र-प्रताड़ना दोनों का समान महत्त्व है। एक से ही अपूर्णता दूर होती है। बिजली के तारों की तरह उनके समन्वय से प्रखरता की शक्ति-धारा प्रवाहित होती है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org

www.vicharkrantibooks.org

❑ दृश्यमान व पदार्थ सम्पदा ही सब कुछ नहीं जो गहराई में विद्यमान है, उसका भी महत्त्व है। पेड़ की छाया ऊपर दिखती है, पर जड़ें जमीन की गहराई में ही पाई जा सकती हैं।

❑ कुछ व्यक्ति धन-संग्रह को सफलता मानते हैं। कुछ मान-प्रतिष्ठा को सफलता की अन्तिम सीढ़ी मानते हैं, किन्तु यदि तुम गंभीर चिन्तन करके देखो तो अन्त में तुम्हें यही प्रतीत होगा कि परमानन्द की प्राप्ति ही वास्तविक सफलता है। आपने कितना ही धन-संग्रह किया हो, किन्तु क्या मालूम वह कब जाता रहे। हमें स्मरण रखना चाहिए कि स्थायी वस्तु हमारी आध्यात्मिक सफलता ही है, वही वांछनीय है, किन्तु शोक ! महाशोक !! कंकड़ों के बदले हम हीरों को फेंक देते हैं। क्षणिक सुख के लिए अपनी आत्मा के आनन्द से वंचित रह जाते हैं। आत्मा के आनन्द, उस चिरन्तन सुख की ओर हम देखते तक नहीं। संसार के अधिकांश दुःखों का यही कारण है। इन्द्रिय, वासना तथा मोह के वश तुमने वह परमात्म-तत्त्व विलीन कर दिया है, जो तुम्हारा वास्तविक स्वरूप है। तुम्हारी आत्मा में महान् शक्ति प्रस्तुत है। सब कुछ तुम्हारे अन्तःकरण में मौजूद है। वही सर्वोत्कृष्ट सफलता, स्थायी सफलता है। जब वह अनन्त शक्ति तुमको आलिंगन करेगी, तो तुम्हारी समस्त प्रतिकूलताएँ नष्ट हो जाएँगी।

तुम ईश्वरीय प्रकाश के ज्योतिर्मय पिंड हो। उसे जानो और फिर अपने को सारे संसार में फैला पाओगे। चारों ओर तुम्हारा ही मंजुल प्रकाश होगा।

❑ सच्चे आध्यात्मिक व्यक्ति के हृदय में प्रेम, ईमानदारी, सत्यता, उदारता, दया, श्रद्धा-भक्ति और उत्साह के भाव उत्पन्न होते हैं यह सब आत्मा के स्वाभाविक गुण हैं। ये ही मनुष्य की स्थायी शक्तियाँ हैं। इनको प्राप्त करने का उस समय तक प्रयत्न करते रहना चाहिए, जब तक कि समस्त जीवन पूरी तरह इनमें रँग न जाए। जिस आदमी में यह सब गुण मौजूद हैं, वास्तव में वही आध्यात्मिक व्यक्ति है। इसी सत्य के आधार पर वह परमात्मा से मिल सकता है। ईश्वर-प्राप्ति का मार्ग किसी धर्म-विशेष या किसी कर्मकाण्ड में सीमित नहीं है, यह तो आत्मा की गम्भीरता में विद्यमान है। केवल 'ईश्वर' का नाम रटने वाले धर्मात्मा नहीं होते, वरन् वे ही व्यक्ति धर्मात्मा होते हैं, जो परमात्मा के आदेशों पर अथवा उनके बताये हुए मार्ग पर चलते हैं। धन्य हैं वे आदमी जो परमात्मा का उपदेश सुनते हैं और उसके अनुसार आचरण करते हैं।

❑ जो आत्मा इस सुन्दर जीवन में पदार्पण कर चुकी उसके लिए अन्तर ज्ञान का दरवाजा खुला हुआ है। शुद्ध हृदय वाले आदमी धन्य हैं क्योंकि वे ही परमात्मा का दर्शन करेंगे। इस दर्शन से जो आनन्द है, उसका वर्णन कौन कर सकता है ?

❑ समुद्र अनेकानेक बूँदों तथा लहरों का समुच्चय है। प्रत्येक लहर का अस्तित्व अलग-अलग दिखाई पड़ता है। उगते सूरज के समक्ष देखें तो हर लहर पर एक स्वतन्त्र सूरज् चमकता दिखाई देता है। इतने पर भी तात्विक दृष्टि से देखा जाए तो प्रतीत होता है कि इस भिन्नता के मूल में एक अविच्छिन्न एकता की सत्ता विद्यमान है। सारा समुद्र एक ही है, वही एक सूर्य असंख्यों लहरों पर चमकता दिखाई दे रहा है। हवा और जल के संयोग से उत्पन्न होते रहने 'वाले बबूले एक-दूसरे से अलग दिखाई भले ही दें, वे उस सुविस्तृत जलाशय से पृथक नहीं माने जा सकते।

❑ मनुष्य धरती पर अरबों की संख्या में हैं। देह तथा आकृति-प्रकृति, रंग सभी में अन्तर है। इतने पर भी सभी एक ही अनन्त सत्ता, विश्वात्मा के अविच्छिन्न अंग-अवयव हैं। माला के मध्य पिरोये सूत्र की तरह एक ही आत्मा सबको एकत्व के बंधनों में बाँधे हुए है। देखने में हम भिन्न-भिन्न लग सकते हैं, पर हमारा अस्तित्व पूर्णतया एक-दूसरे पर निर्भर है। एकाकी हमारा जी पाना एक क्षण के लिए भी नहीं। दूसरों की उपलब्धियों का उपयोग किए बिना हम अपने अस्तित्व की रक्षा कर ही नहीं सकते। प्राणीमात्र के भीतर काम करने वाली इस एकात्म-चेतना की अनुभूति ही अध्यात्म-दर्शन का मूलभूत आधार है। समष्टि की इकाई व्यष्टि है। मनुष्य समाज का ही एक पुर्जा है। इस मान्यता को अपनाते,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विकसित करते हुए हम आत्मा को विश्वात्मा का घटक मात्र मानकर अपना विकास करें तो वह जीवन-लक्ष्य सहज ही प्राप्त हो सकता है। जिसे ईश्वर प्राप्ति कहा गया है।

❑ इस विश्व-ब्रह्माण्ड में आत्मा केवल एक है और वही हम, तुम तथा संसार के अन्य समस्त प्राणियों के शरीर में प्रतिबिम्बित होती है और वह भिन्न-भिन्न आत्माओं के रूप में प्रदर्शित है, परन्तु हम यह बात नहीं जानते। हमारी धारणा है कि हम सब एक-दूसरे से भिन्न हैं और ईश्वर से भी भिन्न हैं। जब हमारी यह धारण बनी रहेगी, तब तक संसार के दुःखों का भी अन्त न होगा। यह भ्रान्ति है।

❑ परोक्ष देवता अगणित हैं और उनकी साधना-उपासना के माहात्म्य तथा विधान भी बहुतेरे हैं, किन्तु इतने पर भी यह निश्चित नहीं कि वे अभीष्ट अनुग्रह करेंगे ही। इच्छित वरदान देंगे ही। यह भी हो सकता है कि निराशा हाथ लगे, मान्यता को आघात पहुँचे और परिश्रम निरर्थक चला जाए।

इस बुद्धिवादी युग में देव-मान्यता के सम्बन्ध में सन्देह भी प्रकट किया जाता है, यहाँ तक कि अविश्वास एवं उपहास भरी चर्चाएँ भी होती हैं, ऐसी दशा में हमें सर्वजनीन ऐसे देवता का आश्रय लेना चाहिए, जो साम्प्रदायिक अन्धविश्वासों से ऊपर उठा एवं सर्वमान्य हो। साथ ही जिसके अनुग्रह और वरदान के सम्बन्ध में भी उँगली न उठे।

ऐसा देवता एक है और वह है—आत्मदेव। अपना सुसंस्कृत आपा एवं परिष्कृत व्यक्तित्व। इसका आश्रय रहने पर कोई न अभावग्रस्त रह सकता है और न निराश-तिरस्कृत।

अन्य सभी देवताओं को प्रसन्न करने के लिए कष्टसाध्य साधनाएँ करनी पड़ती हैं। आत्मदेव की सत्ता सबके भीतर समान रूप से विद्यमान रहते हुए भी उसे उत्कृष्ट बनाने के लिए भी निरन्तर अभ्यास की आवश्यकता होती है। अपने चिन्तन, चरित्र और व्यवहार को ऊँचे स्तर का बनाने के लिए आत्म-सुधार और आत्म-विकास का आश्रय लेना पड़ता है। यही सुनिश्चित फलदायिनी आत्मदेव की साधना है।

❑ देवताओं की क्षमता और अनुकम्पा के सम्बन्ध में अनेकों मधुर कल्पनाएँ की जाती हैं। उनकी मनुहार-अभ्यर्थना करते हुए यह आशा की जाती है कि वे द्रवित होंगे और साधक की सुविधा प्रसन्नता बढ़ाने में सहायता करेंगे। देव-पूजन का प्रचलन इन दिनों प्रायः इसी धुरी पर घूमता है। इतने पर भी ऐसे भाग्यशाली थोड़े ही होंगे जो इस परिकल्पना को फलित और सफल होती देख पाते हों।

❑ परोक्ष देवताओं की तुलना में प्रत्यक्ष आत्मदेव की क्षमता की गरिमा और अनुकम्पा की महिमा को इन्हीं आँखों से देखा और यथार्थता की कसौटियों पर परखा जा सकता है। आत्म-परिष्कार के लिए की गई जीवन-साधना से वे भी सभी सिद्धियाँ मिल सकती हैं, जिनके लिए देवताओं के द्वारा भटकने, दीनता दिखाने और निराश रहने की विडम्बना सहन करनी पड़ती है। देवताओं में सर्वश्रेष्ठ आत्मदेव है। उस तक पहुँच अति सरल है। उसकी जैसी उपासना जिसने भी की है, उसे उसी अनुपात से अनुग्रह का लाभ मिला है। भौतिक सिद्धियाँ और आत्मिक ऋद्धियाँ अभीष्ट परिमाण में प्राप्त करने के लिए आत्मदेव से बढ़कर और कोई सुनिश्चित उपाय है नहीं।

❑ साधनाओं में सर्वश्रेष्ठ, सर्वसुलभ और तत्काल फलदायक साधना आत्मदेव की है। जीवन के प्रकाश पर जो दुष्प्रवृत्तियों के आवरण छाये हुए हैं, उन्हीं को साहसपूर्वक हटाने की तपश्चर्या करने से आत्मदेव की साधना का पूर्वार्द्ध पूरा होता है। उत्तरार्द्ध में सत्प्रवृत्तियों का संवर्द्धन करना पड़ता है। योगाभ्यास का तत्त्वज्ञान यही है। आत्मानुशासन और आत्मपरिष्कार के चरण बढ़ाते हुए कोई भी साधक इस परमदेव तक पहुँच सकता है और उसके अनुग्रह का अजस्र लाभ पा सकता है।

❑ मनुष्य को भटके हुए देवता की अत्युक्ति दी गयी है। यह कहा जाता रहा है कि कभी तो उसको अहसास होगा, अपने अन्दर निहित देवत्व का। कभी तो वह पहचानेगा कि किन महान उद्देश्यों को लेकर वह जन्मा है व स्रष्टा ने, उसके परमपिता ने उससे क्या-क्या अपेक्षाएँ रखी हैं ? यह एक विडम्बना ही तो है कि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मनुष्य सब कुछ जानते, समझते हुए भी उसी राह पर चलता रहता है, जो उसे नर-पशु (जो मात्र पेट-प्रजनन तक सीमित ही रहे) बना दे, उसमें इतना लिप्त हो जाए कि दीन-दुनिया, भगवान-परब्रह्म, समाज-परमार्थ किसी का कोई सम्बन्ध वह स्वयं से न माने। इस युग की यह सबसे बड़ी नासमझी है, जो अनेकों पर सवार है ढेरों कुकृत्य उनसे कराती रहती है।

❑ अध्यात्म, भटकन से उबारने की विधा का नाम हैं। अध्यात्म उस दूरदर्शिता का नाम है, जो व्यक्ति यदि अंगीकार करले तो उसका देवत्व की ओर अग्रगमन का पथ कंटकविहीन होता चला जाता है। अध्यात्म, आदर्शों के जीवन में उतारते हुए जीवन को श्रेष्ठतम बनाने की विधा का नाम है। वस्तुतः यह सही अर्थों में वही विधा है, जिसका आश्रय लेने पर मनुष्य अमरत्व को प्राप्त होता है। अध्यात्म मनुष्य को संकीर्णता की पगडंडी से निकालकर उदार परमार्थ की चौड़ी राजमार्ग की पट्टी पर ले जाने वाली एक ऐसी प्रक्रिया का नाम है, जो देखते ही देखते व्यक्ति का आमूल-चूल कायाकल्प कर देती है।

❑ हमें देखना है कि हमें किस पथ पर जाना है ? कहीं यों ही तो नहीं चल दिए, बिना कुछ सोचे-समझे-विचार किए, बिना अपरिचित स्थान का नक्शा देखे, सही मार्ग पहले से मन में रखकर न चलने वाला भटकता ही रहता है, कभी मंजिल तक नहीं पहुँच पाता। यह भटकन बड़ी दुःखभरी, संत्रासभरी परिस्थितियाँ पैदा करती है, तब हम परिस्थितियों को दोष देने लगते हैं। यदि भटकन से मुक्ति पानी है तो हम राजमार्ग पकड़ें अध्यात्म के अवलम्बन का, आदर्शों के समुच्चय को जीवन का अपरिहार्य अंग बनाने का। फिर हम चाहे मंदिर जाएँ, न जाएँ, कर्मकाण्ड करें, न करें, हमारा भविष्य निश्चित ही उज्ज्वल है, क्योंकि वास्तविक भगवान जो अन्दर बैठा है, हमारे साथ है व मार्गदर्शन करता हुआ वह निश्चित ही हमें देवत्व की ओर ले जाएगा।

❑ स्थूल प्रत्यक्ष होने के कारण इन्द्रिय ज्ञान एवं यन्त्र-उपकरणों की सहायता से देखा जा सकता है। उसका नाम-रूप भी होता है तथा विस्तार-मूल्य भी। इतने पर भी उसका स्तर सीमित और क्षमता स्वल्प होती है। इस पर भी लोग उसका प्रत्यक्ष परिचय पाते हैं और हानि-लाभ का शोक-हर्ष अनुभव करते हैं।

❑ सूक्ष्म प्रकृति भिन्न है, वह इन्द्रिय द्वारा बोधगम्य नहीं; प्राण की तरह। शरीर प्रत्यक्ष दिखता है, पर प्राण की नाप-तौल—ऊँचाई, चौड़ाई, लम्बाई नापना कठिन है, किन्तु सभी जानते हैं प्राण ही है। प्राण निकल जाने पर शरीर का मूल्य कानी कौड़ी भी नहीं रह जाता है।

❑ पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति अदृश्य है, पर उसी के सहारे वह सौरमण्डल में अपना स्थान बनाये हुए है। उसके अभाव में वह तिनके या पत्ते की तरह छितराकर कहीं से कहीं चली जाएगी।

❑ मनुष्य पशुवर्ग का प्राणी है, पर उसकी सूक्ष्म क्षमता का कोई आरपार नहीं। महामानव, ऋषि, देवता जैसी प्रतिभाएँ और किसी कारण नहीं मात्र अपनी सूक्ष्मशरीर की विशेषताओं के कारण ही कुछ से कुछ बन जाते हैं। गाँधी, बुद्ध जैसों की शारीरिक विशेषताएँ नहीं, उनका आन्तरिक वर्चस्व ही ऐसा था, जिससे वे अपने समय का काया-कल्प कर सकने में समर्थ हुए।

❑ प्रकृति का सूक्ष्म शरीर अदृश्य है। ताप, ध्वनि, प्रकाश, चुम्बक आदि की किरणें जब किसी से टकराती हैं, तब अपने अस्तित्व का बोध कराती हैं। अधिक शक्तिशाली मानी जाने वाली लेसर किरणें अदृश्य हैं। परमाणु की विखंडित इकाइयाँ अदृश्य होने पर भी अनन्त शक्ति की भाण्डागार हैं।

❑ मनुष्य स्थूल स्थिति में हाड़-माँस का पुतला है। किन्तु जब वह परिष्कृत सूक्ष्म के क्षेत्र में प्रवेश करता है, तब उसे देवात्मा कहते हैं। उसकी सामर्थ्य लगभग ईश्वर के समान होती है।

❑ आनन्द की प्राप्ति आदिकाल से मानव का लक्ष्य रहा है। परमेश्वर की अन्ततः में अनुभूति जिन अनेकानेक रूपों में हो सकती है आनन्द उनमें सर्वोपरि है। सुख भौतिक है तो आनन्द आध्यात्मिक। भौतिक उपादानों का ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से अनुभव प्रायः सभी को एक-सा ही होता है। फूल की गन्ध, वस्तुओं का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सौन्दर्य, फलों के स्वाद से जो अनुभूति हमें होती है, लगभग स्वस्थ इन्द्रियों वाले सभी व्यक्तियों को एक समान ही होती है, लेकिन आनन्द इससे नितान्त भिन्न है। इसका रसास्वादन हर व्यक्ति को अलग-अलग रूपों में होता है। मीरा ने जिस आनन्द रस का पान किया, जिसके लिए सामाजिक मर्यादाएँ तोड़ीं एवं विष का प्याला पिया उसे कौन अपने अन्तस में उसी प्रकार अनुभव कर सकता है। मीरा की तरह प्रेमबेलि बोना और आनन्द-फल पाना सबके लिए सहज नहीं। किसी के लिए मिलन में आनन्द है तो किसी के लिए विरह में। कबीर इसी विरह सुख की अभिव्यक्ति करते हुए कहते हैं—

विरह कमण्डल कर लिए बैरागी दो नैन।
माँगे दरस मधूकरी छके रहें दिन रैन।।

❑ वस्तुतः यह आनन्द अध्यात्मवेत्ताओं की दृष्टि में उस पूर्णता का पर्याय है। जिसकी प्राप्ति की पुरुषार्थ-साधना हेतु ऋषि-मनीषियों ने गहन मन्थन किया है एवं उसे योग की चरम उपलब्धि घोषित किया है। उपनिषद्कार के अनुसार ज्ञान, भक्ति एवं कर्मयोग की सभी धाराएँ अन्ततः इसी आनन्द रूपी अमृत समुद्र में समा जाती हैं। हमारे अध्यात्म-दर्शन की सभी धाराएँ चाहे किसी वाद का समर्थन करती हों, हैं अन्ततः आनन्ददायक ही। इसी कारण मुण्डकोपनिषद् (२.२.७) में विद्वान ऋषि कहते हैं—

"तद्विज्ञानेन परिपश्यन्ति धीरा आनन्दरूपममृतम् यद्विभाति।"

अर्थात् ज्ञानी लोग विज्ञान से अपने अन्तर में स्थित उस आनन्द रूपी ब्रह्म का दर्शन कर लेते हैं एवं ज्ञानियों में भी परमज्ञानी हो जाते हैं। आनन्द हर साधक की साधना की चरम उपलब्धि है, चाहे उसकी अनुभूति के रूप भिन्न-भिन्न हों।

❑ ऐ अविनाशी आत्माओ ! तुम तुच्छ नहीं महान हो। तुम्हें किसी अशक्तता का अनुभव करना या कुछ माँगना नहीं है। तुम अनन्त शक्तिशाली हो, तुम्हारे बल का पारावार नहीं। जिन साधनों को लेकर तुम अवतीर्ण हुए हो, वे अचूक ब्रह्मास्त्र हैं। इनकी शक्ति अनेक इन्द्र-वज्रों से अधिक है। सफलता और आनन्द तुम्हारे जन्मजात अधिकार हैं। उठो, अपने को, अपने हथियारों को, भलीप्रकार पहचानो और बुद्धिपूर्वक कर्त्तव्यमार्ग में जुट जाओ। फिर देखें कैसे वह चीज नहीं मिलतीं, जिन्हें तुम चाहते हो। तुम कल्पवृक्ष हो, पारस हो, अमृत हो और सफलता की साक्षात मूर्ति हो।

तुम शरीर नहीं हो, जीवन नहीं हो, वरन् आत्मा, महान आत्मा-परमात्मा हो। तुम इन्द्रियों के गुलाम नहीं हो, आदतें तुम्हें मजबूर नहीं कर सकतीं। पाप और अज्ञान में इतनी शक्ति नहीं है कि वे तुम्हारे ऊपर शासन कर सकें। अपने को हीन, नीच, पतित, पराधीन और दीन-हीन मनाना एक प्रकार की आत्म-हत्या है। अध्यात्म-शास्त्र का सन्देश है कि ऐ महान पिता के महान् पुत्रो ! अपनी महानता को पहचानो। उसे समझने में, खोजने में और प्राप्त करने में तत्परतापूर्वक जुट जाओ। तुम सत, चित हो, आनन्द हो, अपनी वास्तविकता को अनुभव करो और स्वाधीनता का, मोक्ष का आनन्द प्राप्त करो।

❑ प्रभुस्मरण को ब्रह्म-विद्या अथवा तत्त्व-दर्शन कहते हैं। प्रभु अथवा भगवान को सही शब्द देना हो तो परमात्मा नाम से पुकारा जा सकता है। इस महातत्त्व को आत्मसात करना ही ब्रह्मविद्या का लक्ष्य होता है। परम को व्यापकता एवं उत्कृष्टता दो नामों से समझा जा सकता है। परमात्मा की व्यापकता जितनी उसके अंश मनुष्य के समझने व विचार करने योग्य है, उसे समष्टि कहते हैं, विराट है। इसी का दिग्दर्शन अर्जुन को, यशोदा को, कौशल्या को ज्ञान-चक्षुओं द्वारा कराया गया था। 'स्व' का 'पर' के साथ एकात्मभाव विकसित हो, यही विराट दर्शन का सार तत्त्व है।

❑ उत्कृष्टता परमात्मा का दूसरा पर्याय है, अर्थात् भावना एवं विचारणा में श्रेष्ठता का वरण। सद्भावना, सद्विचारणा, सत्प्रवृत्ति अपनाना, आदर्शों का परिपालन करना ही परमात्मा की उपासना का लक्ष्य है। यह भाव इस शब्दार्थ से प्रकट होता है। संक्षेप में भगवान को सत्प्रवृत्तियों का समुदाय कहा जा सकता है। व्यक्तिगत जीवन में गुण, कर्म, स्वभाव में जो जितनी सत्प्रवृत्तियों का समावेश करता है, वह उसी अनुपात में ईश्वरपरायण माना जाता है। समाज में सत्प्रवृत्तियाँ बढ़ाना, दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन हेतु प्रखर पुरुषार्थ करना एवं इस हेतु स्वयं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

को उस योग्य बनाना परमात्मा की, विश्वात्मा की, विराट् की आराधना है।

- यदि उस महान के साथ अपने क्षुद्र की घनिष्टता अभीष्ट है और तदरूप बनने के रूप में चरम प्रगति तक पहुँचने की अन्तःप्रेरणा उमगे तो फिर पूजा-उपचार से ऊँचे उठकर परमात्मा के सम्बन्ध में यथार्थवादी निर्धारण अपनाना चाहिए। यही योगसाधना है, युगानुकूल उपासना-आराधना है।

- अध्यात्म निष्क्रियता नहीं सिखाता और न जो उसे देखते रहने, करते रहने की प्रेरणा उसमें है। शान्ति का अर्थ चुपचाप बैठा रहना नहीं है। कर्त्तव्य और प्रगति की ओर से मुँह मोड़ लेने का अध्यात्म-दर्शन के साथ सम्बन्ध जोड़ना ब्रह्मविद्या के महान तत्त्वदर्शन पर लांछन लगाना है।

- भेड़ें मिमियाती भर हैं—असत्य नहीं बोलतीं, खरगोश किसकी हिंसा करते, उन्हें न तो सत्यवादी कहते हैं और न अहिंसा साधक। अन्धे, बहरे, गूँगे अशुभ नहीं देखते हैं, उन्हें मुनि नहीं कहा जाता। गहरी नींद में अशुभ क्रिया नहीं होती, तो क्या उसे पुण्यार्जन का समय कहें ?

- अध्यात्म की प्रेरणा लौकिक और पारलौकिक सुखसिद्धि के लिए कठोर श्रम एवं मनोयोग को नियोजित करना है। अशुभ विचारों और अशुभ आचारों को निरस्त करने के लिए जो घोर पुरुषार्थ करना पड़ता है—आध्यात्मिकता को उसी से जुड़ा हुआ मानना चाहिए।

- पवित्रता, महानता और संयमशीलता ये तीन तत्त्व हैं, जो मनुष्य की गरिमा को बनाते और महिमा को बढ़ाते हैं। भौतिक समृद्धि किसी की कितनी है, उसे जाँचने के लिए उसके स्वास्थ्य, शिक्षण, अनुभव, कौशल, पद, धन, साधन आदि अनेक वस्तुओं की जाँच-पड़ताल करनी पड़ती है और उसी के आधार पर उसकी सम्पन्नता का अनुमान लगाया जाता है। अन्तरंग की दैवी-सम्पत्ति किसके पास कितनी है, इसका पता लगाना हो तो यह देखना होगा कि उसके चरित्र और चिन्तन में कितनी पवित्रता है ? व्यक्तित्व में मानवोचित महानता सिद्ध करने वाले सद्गुणों का कितना बाहुल्य है और वह व्यक्ति किस सीमा तक संयमशीलता, सादगी और सज्जनता का अपने व्यवहार में समावेश कर सका है ?

- समृद्धि से कोई व्यक्ति दूसरों को चमत्कृत कर सकता है, पर किसी की श्रद्धा और सद्भावना प्राप्त कर सकने में समर्थ नहीं हो सकता। सम्पन्न व्यक्ति सुख-सुविधा का लाभ दे सकता है। इन्द्रियतृप्ति और अहंता का परिपोषण कर सकने वाले प्रदर्शन भी उपलब्ध हो सकते हैं, किन्तु तृप्ति, तुष्टि और शान्ति की अनुभूति मात्र वैभव के सहारे नहीं हो सकती। विभूतिवान वह है जो भले ही अमीरी के साथ जुड़ी हुई विलासिता या सुविधा से वंचित रहा हो, पर कर्त्तव्यनिष्ठा के सहारे मिलने वाले आत्म-गौरव और आत्म-संतोष का अभाव जिसे कभी नहीं अखरा हो। सज्जनता संसार की सबसे बड़ी विभूति है, जिसने उसे उपार्जित कर लिया समझना चाहिए यह विश्व की गरिमाशील विभूतियों में से एक है। अन्न, जल और हवा के सहारे शरीर जीवित रहता है। आत्मा की गरिमा को जीवन्त रखने के लिए उसे पवित्रता, महानता और विनम्रता की परिस्थितियों में रहने का अवसर मिलना चाहिए।

- सत्चितआनन्दस्वरूप आत्मा को इसलिए इस भूलोक में नहीं भेजा गया है कि असत्य के अज्ञानान्धकार में भटकता रहे अथवा वासनाओं के जाल में, भ्रमों के जंजाल में जकड़ा हुआ फड़फड़ाता रहे। ईश्वर ने आपकी सत्य, शिव और सुन्दर आत्मा को इसलिए अवतार दिया है कि असत्य से बचकर सत्य को ग्रहण करें और अपनी बुद्धिमत्ता का समुचित पुरस्कार पावे।

- आप अपने गौरव को स्मरण कीजिए और असत्य के अँधेरे में रहने से इनकार कर दीजिये। हे ज्योतिस्वरूप अखंड आत्मा ! आप सत्य हैं, इसलिए इस विश्व में से सत्य तत्त्वों को ही चुन लीजिये। माया के बन्धनों में मत बँधिए, असत्य वस्तुओं को पहचानते रहिए और जब वे आपके पास लुभाने के लिए आवें तो खिलखिलाकर हँस पड़िए और कहिए—हे भ्रम में भटकाने वाले प्रलोभनो ! मैं तुम्हारे असत्य बन्धनों में नहीं बँध सकता हूँ। मैं यात्री हूँ—सत्य की शोध करता हुआ महान यात्रा कर रहा हूँ। मुझे इतनी फुरसत नहीं है कि इस झूठे खिलौने से खेलने में समय बर्बाद करूँ। मैं सत्य हूँ, इसलिए मैं तो सत्य को ही ग्रहण करूँगा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धर्म और विज्ञान

❑ धर्माधर्म की परिभाषा इस प्रकार है—

धर्मः कायवाङ्मनोभिः सुचरितम् ।

—सुश्रुत शरीर. १/ १८ डल्हणाचार्य कृति टीका

अधर्मः कायावाङ् मनसादुष्टचरितम् ।

—सुश्रुत सूत्र. अ० ६/ १६ निबन्ध संग्रह व्याख्या

अर्थात् मन-वाणी-शरीर का जो सुन्दर व्यवहार है, वह धर्म है और मन-वाणी-शरीर का जो दुर्व्यवहार है, वह अधर्म है।

❑ आजकल यदि कोई मूसा, बुद्ध अथवा ईसा की उक्ति उद्धृत करता है तो उसकी हँसी उड़ाई जाती है, किन्तु हक्सले, टिण्डल अथवा डारविन का नाम लेते ही बात अकाट्य और प्रामाणिक बन जाती है। हक्सले ने ऐसा कहा है। इतना कहना ही बहुतों के लिए पर्याप्त है। हम लोग सचमुच अन्धविश्वास से युक्त हैं। पहले था धर्म का कुसंस्कार, अब है विज्ञान का कुसंस्कार, फिर भी पहले के कुसंस्कार में से एक जीवन-प्रद आध्यात्मिक भाव आता था, पर आधुनिक कुसंस्कार के भीतर से तो केवल काम और लोभ आ रहे हैं। *—स्वामी विवेकानन्द*

❑ ज्ञान भी अच्छा और विज्ञान भी—यदि उनका उपयोग बुद्धि और विवेक के साथ भलाई के लिए किया जाए। ज्ञान और विज्ञान दोनों किसी काम के नहीं हैं, यदि उनके ऊपर से बुद्धि और विवेक का नियन्त्रण हटा लिया जाए। मनुष्य जब तक ज्ञान-विज्ञान के साथ विवेक का विकास नहीं करता, सुखी नहीं रह सकता। *—बर्ट्रेण्ड रसेल*

❑ धर्म के अभाव में विज्ञान झूठा है और विज्ञान के अभाव में धर्म भी अन्धा है। बुद्धिवाद की माँग है कि धर्म को वैज्ञानिक रूप दिया जाए और विज्ञान को धार्मिक बनाया जाए।

—आइन्स्टाइन

❑ हमारी विकृत बुद्धि तथा विज्ञान की अन्धी दौड़ ने मिलकर जिस तरह से वातावरण का सृजन कर दिया है, उससे मानवीय शान्ति एवं प्रगति में एक प्रकार से अवरोध ही उत्पन्न हो गया है। साधन बढ़े हैं, पर उनके सदुपयोग की विवेकशीलता घट गयी, फलस्वरूप बढ़े हुए साधन सुविधाजनक सिद्ध नहीं हो रहे हैं, वरन् विपत्ति प्रस्तुत कर रहे हैं। परिस्थिति का गहराई से विश्लेषण करने पर यह निष्कर्ष निकालना कठिन हो जाता है कि हमारी तथा-कथित प्रगति कहीं अगति या दुर्गति तो नहीं है। *—अलेक्सस*

❑ जो प्रकट है उतना ही विज्ञान नहीं वरन् अप्रकट का विज्ञान भी जबर्दस्त है। यदि उसे भुलाया गया तो इसे वैज्ञानिक अन्ध-विश्वास ही कहा जाएगा। *—रोम्याँ रोलाँ*

❑ धर्म का स्वरूप न्यायाचरण है। न्यायाचरण उसे कहते हैं, जो पक्षपात छोड़कर सब प्रकार सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग किया जाए।

❑ धर्मात्मा का ही लोक में विश्वास होता है, धर्म से ही लोग पापों से छूटते हैं, जितने उत्तम कर्म हैं, वे सब धर्म के ही अन्तर्गत हैं, इसलिए धर्म को ही सबसे श्रेष्ठ समझना चाहिए।

❑ जहाँ धर्म है, वहाँ जय है। किन्तु धर्म के साथ ही शक्ति होना जरूरी है, नहीं तो अधर्म का अभ्युत्थान हो जाता है।

❑ विरोध और युद्ध, धर्म के अंग हो सकते हैं, किन्तु विद्वेष और घृणा धर्म के बाहर हैं।

❑ पटरी पर चलने वाला इंजन, लोहे व पत्थर से भरे हुए अनेक डिब्बों को खींचता हुआ दौड़ता रहता है। धर्ममार्ग पर चलने वाला अनेक सांसारिक मनुष्यों को अपने साथ पार करता जाता है।

❑ धर्म और विज्ञान एक-दूसरे के विरोधी नहीं सहयोगी हैं—आग और रोशनी की तरह। जो धर्म विज्ञान की कसौटी पर खरा नहीं उतरता, जो विज्ञान धर्म से अनुबन्धित नहीं, वह ऐसा है—जैसा प्राण के बिना शरीर।

❑ पदार्थ-विज्ञान अपने क्षेत्र में अपने पराक्रम के लिए गौरवान्वित हुआ है। अब अध्यात्म-विज्ञान की बारी है कि वह जड़ की तुलना में असंख्य गुनी सामर्थ्य का भाण्डागार अपने में दबाये हुए चेतना-तत्त्व का अनुसन्धान करे और वैसी उपलब्धियाँ हस्तगत करके दिखाए जैसी कि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भौतिकी के वैज्ञानिकों ने अपने पुरुषार्थ के बलबूते उपार्जित की है।

❑ मनुष्य सामर्थ्य का पुंज है, उसकी अपनी सत्ता का क्षेत्र परमाणु संरचना में किसी प्रकार कम अद्‌भुत नहीं है। अणु ऊर्जा की इन दिनों व्यापक चर्चा है और उसके उपयोग के सम्बन्ध में सुविस्तृत योजनाएँ बन रही हैं। अणु ऊर्जा की इन दिनों बारी है कि उसे समझा, खोजा, पकाया और उस रूप में लाया जाए, जिसमें न केवल मानव समुदाय, वरन् समूची सृष्टि व्यवस्था में सतयुगी परम्पराओं से पुनः लाभान्वित होने का अवसर मिल सके। उसमें अनहोनी कुछ नहीं है। प्राचीनकाल में अपेक्षाकृत कम साधन रहते हुए भी जब आत्मिक क्षेत्र की महान उपलब्धियों ऋद्धि-सिद्धियों के रूप में प्राप्त होती रही तो कोई कारण नहीं कि इन दिनों वैज्ञानिक प्रगति के साथ बढ़े हुए ज्ञान और साधनों के सहारे उस क्षेत्र से कुछ बड़े अनुदान उपलब्ध न हो सकें। पौराणिक युग में देव और दानवों ने मिलकर समुद्र मथा था और चौदह बहुमूल्य रत्न प्राप्त किये थे। अध्यात्म का देव और विज्ञान का दैत्य मिल-जुलकर चेतना के महासागर का मन्थन करेंगे तो निश्चय ही पहले की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण विभूतियाँ हस्तगत हो सकेंगी।

❑ अध्यात्म और विज्ञान का युग्म है। एक के बिना दूसरे का निर्वाह नहीं। भोजन पकाने की विधि विदित न हो तो खाद्यसामग्री सामने रहने पर भी सामान की बर्बादी होती रहेगी, किन्तु पेट न भर सकेगा। इसी प्रकार पाक-विद्या में निष्णात व्यक्ति भी पदार्थों के अभाव में अपने को असहाय अनुभव करेगा और भूखा मरेगा।

❑ भौतिक-जगत् के हर क्षेत्र में ज्ञान और विज्ञान को साथ लेकर चलना पड़ता है। जानकारी और सामग्री का समन्वय ही गतिचक्र को अग्रगामी बनाता है। आत्मिक जगत में भी यही तथ्य सुनिश्चित है। चिन्तन में उत्कृष्टता और कर्त्तव्य में कुशलता का समावेश हुए बिना परिष्कृत जीवनक्रम का आधार बन ही नहीं सकता। प्रगति चाहे भौतिक हो, चाहे आत्मिक, दोनों के लिए अपने-अपने स्तर के ज्ञान और विज्ञान की, अनुभव और साधन की आवश्यकता रहेगी ही।

❑ आत्मिक प्रगति के लिए भावनाओं में दिव्य संवेदनाओं और उच्चस्तरीय आस्थाओं को विकसित करना होता है। इसी को श्रद्धा और भक्ति कहते हैं। आदर्शवादी-अध्यात्मवादी उत्कृष्ट प्रतिपादनों के प्रति प्रगाढ़ आस्था परिपक्व करना यही अन्तर्जगत् का ज्ञान पक्ष है। इसे तत्व-दर्शन एवं ब्रह्मज्ञान कहते हैं। इसे उपलब्ध करने के लिए कामकाजी 'अकल' काम नहीं करती, वरन् ऋतम्भरा, प्रज्ञा का आश्रय लेना पड़ता है।

❑ आत्मिक जगत् का विज्ञान पक्ष है—आत्मबल, ब्रह्मतेज। संकल्प की प्रखरता और सघन आत्म-विश्वास के आधार पर विकसित प्रचण्ड साहसिकता से उस प्रसुप्त क्षमता को जाग्रत होने का अवसर मिलता है, जिसे इस विश्व की सर्वोपरि सामर्थ्य और सम्पत्ति कहा जा सकता है। आत्म-ज्ञान और आत्म-तेज के, समन्वय से ही समग्र अध्यात्म बनता है। दोनों को साथ लेकर चलने से ही सर्वतोमुखी आत्मिक प्रगति का लाभ मिलता है।

❑ अध्यात्म और विज्ञान के विग्रह ने जिस सर्वनाश की सम्भावना का सूत्रपात किया है, उसकी प्रथम झाँकी आस्थासंकट के रूप में सामने है। आदर्शवादी मूल्यों के गिर जाने से मनुष्य विलासी, स्वार्थी, अनुदार ही नहीं अपराधी बनता और गरिमा को निरन्तर खोता चला जा रहा है। इससे उसका अपना पतन-पराभव तो हुआ ही है, समूचे समाज को समस्याओं, विपत्तियों और विभीषिकाओं का सामना करना पड़ रहा है। अभी पानी गुनगुना भर हुआ है। अगले दिनों जब वह उबलेगा, भाप बनेगा और बन्द बर्तन को फाड़कर विस्फोटक रौद्ररूप का परिचय देगा तो दिल दहलाने वाली आशंकाएँ सामने आ खड़ी होंगी। आवश्यकता है कि समय रहते समाधान सोचा जाए और विपन्न वर्तमान के भयानक भविष्य का रूप धारण करने से पूर्व ही स्थिति को सँभाल लिया जाए।

❑ अध्यात्म की अपनी शाश्वत सत्ता है, किन्तु विज्ञान ने भी अपनी सामयिक प्रौढ़ता उत्पन्न कर ली है। दोनों लड़ेंगे तो सुन्द-उपसुन्द दैत्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बन्धुओं की तरह एक-दूसरे का विनाश करके अन्ततः ऐसी रिक्तता उत्पन्न करेंगे जिसे फिर से भर सकना असम्भव नहीं तो अत्यधिक कठिन अवश्य होगा। विग्रह को सहयोग में बदल देना है तो कठिन काम, उसे किसी न किसी प्रकार करना ही होगा। इसके अतिरिक्त महामरण ही एकमात्र विकल्प है। अस्तु, उसे किया ही जाना चाहिए, करना ही चाहिए। देव और दैत्य मिलकर समुद्र-मन्थन करने के लिए तत्पर हुए और चौदह बहुमूल्य रत्न उपलब्ध करने के श्रेयाधिकारी बने। उसी उपाख्यान की पुनरावृत्ति के रूप में अध्यात्म और विज्ञान को परस्पर सहयोग करने और उज्ज्वल भविष्य की सम्भावनाएँ साकार करने पर सहमत किया जा सकता है।

❑ धर्म का अर्थ है कर्त्तव्य। धार्मिक पुरुष चाहे वह गृहस्थ हो चाहे संन्यासी, दूसरों की भलाई के लिए कर्त्तव्य-धर्म समझकर करता रहता है। ऐसे कर्त्तव्य-धर्म को जो स्वीकार कर लेता है, उसे न कठिनाइयाँ प्रतीत होती हैं और न दुःख सताते हैं। धर्म का निश्चित परिणाम सुख है, धार्मिक व्यक्ति के हृदय में अभाव की दावानल नहीं जले, उसकी जटाओं में से निर्मल गंगा-जलधारा बहती रहेगी। धर्म, सूर्य है। कोई सभ्यता उसका उपहास करके उसे तिरस्कृत नहीं कर सकती, अज्ञान तिरस्करणीय है, धर्म नहीं। आलोचको ! अज्ञान का तिरस्कार करो, धर्म का नहीं।

❑ **नाणदंसणसंपन्नं संजमे य तपे रतं।**
एवं गुण समाउत्तं संजयं साहुमालवे।।
ज्ञान और दर्शन से सम्पन्न, संयम और तप में रत इस प्रकार गुण समायुक्त संयमी को ही साधु कहे। *—भगवान महावीर*

❑ धर्म अन्तःप्रकृति है, वही सारी वस्तुओं का ध्रुव सत्य है। धर्म ही वह चरम लक्ष्य है, जो हमारे अन्दर काम करता है। *—रवीन्द्रनाथ टैगोर*

❑ इच्छा को जीतकर शान्ति लाभ करना-सब जीवों पर दया करना यही सब धर्मों का मूल मन्त्र है। *—महात्मा बुद्ध*

❑ आज का हमारा सारा वाङ्मय हमारे लिए निकम्मा है—वह बड़े-छोटे स्तर पर है। हमें नया वाङ्मय बनाना होगा। धर्म की नए सिरे से स्थापना करनी होगी और ऊँचे स्तर पर जाना होगा। अब वह पुराना धर्म—मूर्ति, कपूर, आरती आदि हमारा कार्य-साधन नहीं कर सकेगा। अब तो सारा मानव समाज ही भगवान की मूर्ति है। उसकी आरती करनी होगी। उसे दोनों समय भोजन मिलता है या नहीं, यह देखना होगा। आज के विज्ञान जगत में इसके अतिरिक्त हमारा और कोई निस्तार नहीं है।

—विनोबा

❑ सभी धर्म कुछ विचारों का संग्रह हैं और मानव-जाति को उसके कल्याण के उद्देश्य से दिये गये हैं। उनमें जो अन्तर दिखाई देता है, उसका कारण यह है कि वे विभिन्न समयों और विभिन्न स्थानों पर उत्पन्न हुए हैं। उनमें इस कारण से भी भिन्नता है, क्योंकि वे विभिन्न स्वभाव के लोगों के लिए आत्म-सन्तोष देने के उद्देश्य से बनाये गये हैं। हमको ऐसा सर्वोत्तम धार्मिक सिद्धान्त स्वीकार करना चाहिए, जो हमारे पूर्णतः अनुकूल हो और फिर जीवन में उसका सच्चाई से व्यवहार करना चाहिए। धर्म का उद्देश्य हमारे आध्यात्मिक स्वास्थ्य की रक्षा करना है। जो लोग धर्म के नाम पर झगड़ा करते हैं वे शायद ही धर्म को जानते हों। *—राजा महेन्द्र प्रताप*

❑ सारे धर्म भगवान के चरण हैं, इतना जानने वाला व्यक्ति ही धर्म के रहस्य को जानता है। उसके लिए न पुराण पढ़ने की जरूरत है और न कुरान की। *—विनोबा*

❑ शरीर और कीर्ति दोनों नाशवान हैं और मृत्यु भी सदा निकट रहती है। इस कारण धर्म का संग्रह करना उचित है। *—चाणक्य*

❑ प्राणिमात्र के प्रति मैत्री भाव जगाने वाला धर्म ही सच्चा है। *—सन्त तिरुवल्लुवर*

❑ धर्म की क्षति जिस अनुपात से होती है, उसी अनुपात से आडम्बर की वृद्धि होती है।

—प्रेमचन्द

❑ वास्तविक धर्म यह है कि जिस बात को मनुष्य अपने लिए उचित नहीं समझता, दूसरों के साथ भी वैसी बात हर्गिज न करे। *—भीष्म*

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ जितने मत हैं, उतने पंथ हैं। जैसे इस काली मन्दिर में आने के लिए कोई तो नाव में, कोई गाड़ी से और कोई पैदल आता है, उसी प्रकार भिन्न-भिन्न मतों के द्वारा भिन्न-भिन्न लोगों को सच्चिदानन्द की प्राप्ति होती है।

❑ माँ का प्यार सब बच्चों के प्रति समान रहता है, किन्तु वह किसी बच्चे को पूड़ी, किसी को बताशा-जिसे जो खाना सह्य होता है, देती है। इसी तरह भगवान भी विभिन्न साधकों की शक्ति और अवस्था को देखकर साधना की व्यवस्था कर देते हैं।

❑ भगवान तो एक है। फिर धर्म-सम्प्रदायों में इतना पारस्परिक वाद-विवाद क्यों दिखाई पड़ता है ? उत्तर दिया—"जैसे इस पृथ्वी पर लोग यह हमारी जमीन और यह हमारा घर कहकर उसे घेरकर बैठ जाते हैं, किन्तु ऊपर वही अनन्त आकाश है, उसे कोई नहीं घेर सकता। उसी प्रकार लोग अज्ञानवश अपने-अपने धर्म को श्रेष्ठ बताकर वाद-विवाद भले ही करते रहें, पर जब ठीक-ठीक ज्ञान प्राप्त हो जाता तब कोई विवाद नहीं रह जाता।"

—रामकृष्ण परमहंस

❑ जो अन्तःकरण के सत्य से आत्मा का अविच्छेद सम्बन्ध कर दे। सर्वश्रेष्ठ धर्म तो वह है, जो मनुष्य की प्रकृति को ही बदल दे और जो सदा शुद्धि की तरफ हो। *—महात्मा गाँधी*

❑ हमारे शिक्षक जब यह समझने लगेंगे कि हम गुरु के आसन पर बैठे हैं और हमें अपने जीवन द्वारा अपने शिष्यों में जीवात्मा फूँकनी है, अपने ज्ञान द्वारा उसके हृदय में ज्ञान-विद्या की ज्योति जगानी है, अपने प्रेम द्वारा बालकों का उद्धार करना है, उनके अमूल्य जीवन का सुधार करना है, उस समय वे सत्य रूप से स्वाभिमान के अधिकारी बन सकेंगे। तब वे ऐसी वस्तु प्रदान करने को तैयार होंगे, जो विक्रेय नहीं है, जो मूल्य देकर प्राप्त नहीं हो सकती और उसी समय वे शिष्यों के निकट—सरकार द्वारा नहीं, अपितु धर्म के विधान तथा प्राकृतिक नियम के अनुसार सम्मानित तथा पूज्य बन सकेंगे। *—रवीन्द्रनाथ टैगोर*

❑ मैंने कहा है कि अभी भी हमारे पास कुछ ऐसी बातें हैं, जिनकी शिक्षा हम संसार को दे सकते हैं। यही कारण है कि सैकड़ों वर्ष तक अत्याचारों को सहने, लगभग हजार वर्ष तक विदेशी शासन में रहने और विदेशियों द्वारा पीड़ित होने पर भी यह देश आज तक जीवित रहा है। उसके अभी भी अस्तित्व में रहने का कारण यही है कि वह सदैव और अभी भी ईश्वर का आश्रय लिए हुए है तथा धर्म एवं आध्यात्मिकता के अमूल्य भण्डार का अनुसरण करता आया है। *—स्वामी विवेकानन्द*

❑ मेरा दृढ़ विश्वास है कि मानव समाज को धर्म की आवश्यकता सबसे अधिक है। धर्म सही अर्थों में एक ही है—मानव-धर्म। धर्म के नाम पर जो अलग-अलग रूप हम देखते हैं, वे वास्तव में अलग-अलग धर्म नहीं, एक ही धर्म के अलग-अलग सम्प्रदाय हैं। आज धर्म के साथ ही साथ इन अलग-अलग सम्प्रदायों में आपसी सहकार की आवश्यकता है।

❑ मैं मानता हूँ कि धर्म और विज्ञान में, धर्म और उच्चतम सामाजिक नैतिकता में, धर्म और इसके पृथक-पृथक सम्प्रदायों के पारस्परिक सहयोगात्मक, समन्वयात्मक भाव में कोई विरोध नहीं है। धर्म का उद्देश्य है—इस प्रज्ञाजगत में जहाँ विभेद है, द्वैत है, वहाँ हममें सामंजस्य-समन्वय, एकत्व लाते हुए जीवन में सुविकसित होते रहने में हमारी सहायता करना।

❑ धर्म एक आन्तरिक रूपान्तरण है—एक आध्यात्मिक परिवर्तन है। धर्म हमारे अपने विभेदवादी स्वरों में एकरूपता लाने की क्रिया है। धर्म का यह स्वरूप इतिहास के आरम्भ से ही मिलता आया है। यही इसका मूल रूप है।

❑ धर्म एक आध्यात्मिक परिवर्तन है—एक अन्तर्मुखी रूपान्तरण है। धर्म नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा कर उनकी महत्ता प्रतिपादित करता है। यह अन्धकार से प्रकाश की ओर जाता है, आत्मोद्धारहीनता से आत्मोद्धार की स्थिति में पहुँचाता है।

धर्म एक जागरण है—एक प्रकार का पुनर्जन्म है। *—डॉ. राधाकृष्णन्*

❑ अपना गौरव तथा अपनी शक्ति प्रदर्शित करने के अनेक मार्ग लोगों ने खोज निकाले हैं, पर यह समझना चाहिए कि जो वस्तु अपने लिए

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दुःखदायी और हानिप्रद हो सकती है, उसे दूसरों पर आरोपित करना उचित नहीं है। जिससे किसी का अहित हो और पीड़ा पहुँचे, उसे ही अधर्म कहा जाता है। अधर्म जीवन की आवश्यकता नहीं। उसमें कुछ शक्ति भी नहीं है। वह तो पराभूत है।

❑ धर्म की शक्ति ही जीवन की शक्ति है। शक्ति का अर्थ है—संरक्षण। अर्थात् जिसमें प्राणिमात्र के हितों की सुरक्षा होती है, वह धर्म है। इसी की मनुष्य जीवन में अपेक्षा की जाती है। धर्म समाज की अन्तःचेतना है। सुख, शान्ति का आधार है। इसी रूप में वह ग्राह्य भी है। धर्म में ही सब की भलाई है। धर्म की दृष्टि ही जीवन की दृष्टि है। *—डॉ. राधाकृष्णन्*

❑ **त्रयो धर्मस्कन्धा यज्ञोऽध्ययनं दानमिति।**

—छान्दोग्योपनिषद् २। २३। १

धर्म के तीन आधार हैं— १. यज्ञ, २. अध्ययन, ३. दान।

❑ सच्चा धर्म तो पापों की जड़ काटकर मुक्ति का मार्ग-प्रदर्शन करता है, पर मिथ्या धर्म में मुक्ति टकों के बल बिकती है।

❑ लोग धर्म के लिए सोचेंगे, लिखेंगे, बोलेंगे, लड़ेंगे और मरेंगे भी, परन्तु उसके लिए जीने को तैयार नहीं। *—कोल्टन*

❑ जो धर्म सीमा देह में या क्षेत्र में हो उसे मैं नहीं मानता। इसे सिद्ध करने में मैं समर्थ होऊँ यह मेरी प्रभु से प्रार्थना है। *—महात्मा गाँधी*

❑ धर्म आत्मा का विज्ञान है। आत्मिक-शक्ति सब शक्तियों से बढ़कर है। इसलिए धर्म ही सच्चा विज्ञान है। *—महात्मा गाँधी*

❑ **न बिभेति कदाचनेति।** *—तैत्तिरीय*

धर्मात्मा कभी किसी से नहीं डरते।

❑ धर्म सिखाता है कि अत्याचारी का खून करने की अपेक्षा उसे खून देने के लिए तैयार होना बेहतर है, पर अन्याय देखकर पलायन करने से तो हम पशु से भी गये-बीते हो जाते हैं।

—महात्मा गाँधी

❑ **अयुतोऽहमयुतो म आत्मा।** *—अथर्व.*

धर्मात्मा में दस हजार मनुष्यों के बराबर बल होता है।

❑ धर्म सीधी लकीर नहीं, बल्कि विशाल वृक्ष है। उसके करोड़ों पत्ते भी एकसे नहीं हैं।

—महात्मा गाँधी

❑ धर्म मनुष्यों को एक-दूसरे से अलग करने के लिए नहीं, बल्कि उनको बाँधने के लिए होता है। जो धर्म भेदभाव सिखाता है, वह असली नहीं हो सकता। *—डे बुक ऑफ थॉट्स*

❑ **श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वाचैवावधार्यताम्।**
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषान्नसमाचरेत्।।

—महाभारत

धर्म का सार सुनो। सुनकर उसे मन में धारण करो। जो बात अपने को पसन्द न हो उसे दूसरों के लिए व्यवहार मत करो।

❑ **धर्म प्रतिपत्तिश्च वये दया, दानम्, सत्यम्, शौचम्, मोदः साधुता च लोकस्य सजं वर्धिष्यते।**

—अशोक

कोई कार्य धर्म है या नहीं, इसकी पहचान इससे करनी चाहिए कि इसके द्वारा—दया, दान, सत्य, शौच, मोद और साधुता की संसार में वृद्धि हुई या नहीं।

❑ **ऊर्ध्वबाहुर्विरौम्येषनचकश्चिच्छृणोतिमे।**
धर्मादर्थश्चकामश्चसकिमर्थंनसेव्यते।।

—महाभारत स्वर्गारोहणपर्व ५। ६२

व्यासजी कहते हैं—दोनों भुजाएँ ऊँची उठाकर मैं चिल्ला रहा हूँ, पर मेरी कोई सुनता ही नहीं। अरे सुनो, धर्म से ही अर्थ और काम की प्राप्ति होती है। फिर उसका पालन क्यों नहीं करते ?

❑ **धर्मंयोबाधतेधर्मोनसधर्मःकुवर्त्मतत्।**
अविरोधात्तुयोधर्मःसधर्मःसत्यविक्रमः।।

—महाभारत वनपर्व १३१। ११

जो धर्म दूसरे धर्मों का विरोधी हो, वह वास्तविक धर्म नहीं है। जिसका किसी से विरोध नहीं होता, वही वास्तविक कहलाता है।

❑ अपने आपको पहचान लेना ही सत्य को पहचान लेना है। *—महात्मा गाँधी*

❑ **तप्यन्ते लोकतापेन साधवः प्रायशो जनाः।**
परमाराधनं तद्धि पुरुषस्याखिलात्मनः।।

—श्रीमद्भागवत् ८। ७। ४४

❑ सत्पुरुष दूसरों के दुःख से द्रवित हो जाते हैं। यही उनकी सर्वोच्च ईश्वर-भक्ति है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ **सिंहन के लैंह्ड़े नहीं, हंसन की नहिं पाँत।**
लालन की नहीं बोरियाँ, साधु न चले जमात।।

—कबीर

जिस तरह सिंह, हंस और लाल (मणि) सदैव सीमित संख्या में होते हैं, साधु भी असंख्य नहीं, कोई विरले ही होते हैं, भले ही कोई वेश क्यों न बनाये घूमे ?

❑ अधीर (आसक्त) पुरुष तो सचमुच बड़ी कठिनता से इन भोगों को छोड़ पाते हैं, उनसे भोग सुखपूर्वक सरलता से नहीं छूटते। किन्तु जो सदाचारी साधु होते हैं, वे इस अपार दुस्तर संसार सागर को तैरकर पार कर जाते हैं।

—भगवान महावीर

❑ जिसका मन ईश्वरपरायण है, वही सत्पुरुष है। जिसने कामिनी-कंचन का त्याग कर दिया है वही सत्पुरुष है। *—रामकृष्ण परमहंस*

❑ "धर्म की पहचान तो प्रेम से, दया से और सत्य से होती है।" "सत्य की हत्या कभी नहीं हो सकती।" *—महात्मा गाँधी*

❑ आहार के बिना शरीर स्वस्थ नहीं रह पाता, उसी प्रकार अध्यात्म के बिना सुख-शान्ति सम्भव नहीं। *—विनोबा*

❑ धर्म का मूल सिद्धान्त है—मानवीय आत्मा के गौरव को प्राप्त करना, जो भगवान का निवास स्थान है। सब धर्मों का सर्वस्वीकृत मूल सिद्धान्त यह ज्ञान ही है कि परमात्मा प्रत्येक प्राणी के हृदय में निवास करता है। *—डॉ. राधाकृष्णन्*

❑ बिना धर्म का जीवन बिना सिद्धान्त का जीवन होता है और बिना सिद्धान्त का जीवन वैसा ही है जैसा कि बिना पतवार के जहाज। जिस तरह बिना पतवार का जहाज मारा-मारा फिरेगा, उसी तरह धर्महीन मनुष्य भी संसार सागर में इधर से उधर मारा-मारा फिरेगा और अपने अभीष्ट स्थान तक नहीं पहुँचेगा। *—महात्मा गाँधी*

❑ निःस्वार्थता ही धर्म की कसौटी है। जो जितना अधिक निःस्वार्थी है, वह उतना ही अधिक आध्यात्मिक और शिव के समीप है।

—स्वामी विवेकानन्द

❑ **धर्म एव हतो हन्ति, धर्मो रक्षति रक्षितः।**

मारा हुआ धर्म ही हमको मारता और रक्षा किया हुआ धर्म ही हमारी रक्षा करता है। *—वेदव्यास*

❑ आज हमें अभूतपूर्व संकटों का सामना करना पड़ रहा है। यदि हम उन पर विजय प्राप्त करना चाहते हैं तो हमें लोगों के अन्दर धर्म की प्रेरणा जगानी होगी। आज केवल 'वाच्यार्थ ज्ञान' से काम नहीं चलेगा। 'आत्म-ज्ञान' की अति आवश्यकता है। जब हम यह घोषणा करते हैं कि भारत एक 'धर्म-निरपेक्ष' राज्य है, तो इसका अर्थ यह कदापि नहीं होता कि हम उस अदृश्य सर्वव्यापी सत्ता के अस्तित्व से इनकार करते हैं अथवा जीवन में धर्म की उपयोगिता से इनकार। यह अर्थ भी नहीं है कि धर्म-निरपेक्षता का स्वयं ही एक मजहब मान लें अथवा सरकार स्वयं को शक्तिमान समझ बैठी है। ईश्वर की सर्वव्यापी सत्ता के प्रति परम्परा आस्था रखते हुए भी हमने यह निश्चय किया है कि शासन किसी मजहब विशेष का अनुयायी न होगा और न किसी मजहब विशेष के अनुसार संचालित होगा। धार्मिक निरपेक्षता हमारे राष्ट्रीय जीवन में प्रमुख स्थान रखेगी, पर सनातन धार्मिक मूल्यों के प्रति हमें निष्ठा रखनी ही पड़ेगी। धर्म से विमुख होकर हम निर्जीव हो जाएँगे। आज हमारे समाज में जड़ता, व्यर्थ संकुचितता आदि के जो दोष दिखाई देते हैं, उसकी जड़ में यह धर्म-विरोधिता की भावना और तज्जन्य कुसंस्कार ही कार्य करते हैं। राष्ट्र में त्याग और सेवा की विश्वास और समर्पण की भावना जगाने के लिए हमें धर्म को ही आधार बनाना पड़ेगा। *—डॉ. राधाकृष्णन्*

❑ ईश्वर के अस्तित्व में दृढ़ विश्वास होने से जो आचरण स्वभावतः होने लगता है, धर्म उसी को जीवन का आदर्श बनाने की आज्ञा देता है।

—डॉ. राधाकृष्णन्

❑ हिन्दू धर्म का आधार मूलतः मनोवैज्ञानिक है। यही कारण है कि उसकी प्रत्येक विधि-प्रविधि का प्रभाव मनुष्य की अन्तरंग चेतना पर होता है और प्रत्येक भारतीय धर्मानुयायी को इसीलिए जन्म से लेकर मरणपर्यन्त अनेक संस्कारों की क्रिया-प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ता है।

—बी. कोलिंग्स

❑ ईश्वर उस जीव के खून अथवा मांस से सन्तुष्ट नहीं होता, जिसको तुम कुर्बानी कहते

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हो, वरन् वह तुम्हारी धर्मनिष्ठा से सन्तुष्ट होता है। —*कुरान*

- धर्म-भावना संसार का पुनर्निर्माण कर सकती है, शान्तिपूर्ण क्रान्ति पैदा कर सकती है, परन्तु शर्त यही है कि उसका ठीक तरह से आचरण किया जाए। —*डॉ. राधाकृष्णन्*
- हमारे धर्म का मूल कर्त्तव्य-पालन से मिल सकता है, कर्त्तव्य-पालन में आपको कभी किसी मनुष्य से डरने की आवश्यकता न होगी। आप केवल परमेश्वर से भयभीत होंगे।

—*महात्मा गाँधी*

- प्रायः निर्बल मनुष्य पर बली मनुष्य अत्याचार करते देखे जाते हैं। निर्बल हार जाता है। इससे उसकी कुछ अनीति सिद्ध नहीं होती और न बली ही की नीति सिद्ध होती है। दुराग्रही साधनों का विचार नहीं करता। उसका लक्ष्य योग्य अथवा अयोग्य कारणों से केवल अपनी अभीष्ट सिद्धि की ओर ही रहता है। परन्तु यह तो धर्म नहीं, अधर्म है। धर्म में किसी प्रकार की असत्यता नहीं होती, कठोरता नहीं होती और हिंसा नहीं होती। धर्म का नाम तो प्रेम से, दया से और सत्य से होता है। इसके त्याग से प्राप्त हुआ स्वर्ग भी निन्द्य है।
- सन्त स्वभाव के व्यक्ति दूसरों को दुःख से बचाने के लिए कष्ट सहते हैं, जबकि दुष्ट लोग दूसरों को दुःख में डालने के लिए स्वयं कष्ट सहते हैं। —*वाल्मीकि*
- ऐ पैगम्बर ! तुम तो सिर्फ खबरदार कर देने वाले हो। हर कौम में पैगम्बर मौजूद हैं।
- मुनि को गाँव में इस प्रकार विचरना चाहिए, जिस प्रकार भौंरा फूल के रंग और सुगन्ध को न बिगाड़ता हुआ, उसके रस को लेकर चल देता है।
- जो सीधाई से चलता है सो बच जाता है पर जो टेढ़ी चाल से चलता है, सो अचानक गिर जाता है।
- लोग जब तुम्हारी निन्दा करें, सच्चाई पर दृढ़ रहने के कारण झूठे अभियोग लगाएँ, तो तुम अपने को सौभाग्यशाली समझना। भूतकाल में जो सन्त हुए हैं, उन्होंने तिरस्कार और कष्ट सहकर ही साधुता प्राप्त की है।
- सज्जन का तिरस्कार करने वाले पापी मनुष्य का कार्य वैसा ही है जैसे कोई ऊपर देखकर आकाश पर थूके, उसका थूक आकाश को तो नहीं छूता, वरन् लौटकर उसी को मलीन करता है। पुनः उसका कार्य वैसा ही है, जैसे कोई वायु के विपरीत प्रवाह में दूसरे पर, धूलि उड़ाये। उस समय वह धूलि उड़ाने वाले पर ही आकर गिरेगी। सज्जन व्यक्ति आहत नहीं होता, उसे दुःख देने वाला स्वयं ही दुःख में ग्रस्त हो जाता है।
- जैसे चीनी और बालू को मिला देने से चींटी केवल चीनी को ही खाती है, उसी तरह ज्ञानी मनुष्य को दुराचारों की तरफ ध्यान न देकर ज्ञान ही प्राप्त करना चाहिए।
- सूर्य की किरणें सभी जगह चमकती हैं पर दर्पण पर उनका प्रतिबिम्ब विशेष रूप से दमकता है। ईश्वर की सत्ता सर्वत्र विद्यमान है, पर उसका विशेष वैभव सन्तों में ही दृष्टिगोचर होता है।
- सज्जनों का क्रोध ऐसा होता है जैसे पानी पर खींची गई लकीर। जब खींचते हैं तभी वह दिखती है, इसके बाद तुरन्त मिट जाती है। इसी प्रकार सज्जन यदि कारणवश क्रोध भी करे तो वह दूसरे क्षण ही समाप्त हो जाता है, उनके मन में राग-द्वेष नहीं जमता।
- परम्परा प्राप्त योगवृत्ति में असंख्य योगीजन संलग्न हैं। पूरा ही योगराज्य उनके अधीन है। वास्तव में योगमाया, योगलक्ष्मी, योगबल, योगचमत्कार अपने व्यक्तिगत कल्याण के लिए नहीं, वरन् जातीय कल्याण के लिए हैं।
- जिस गृहस्थाश्रम ने अनेक कष्ट सहकर योगाश्रम की, योगी की, योग-विद्या की सर्वथा रक्षा की है, वही गृहस्थाश्रम आज अनेक प्रकार के दुःखों में ग्रसित, दीन-हीन पड़ा हुआ है। क्या ऐसे समय में भी योगीवृन्द अपने ऊपर हुए उपकारों का स्मरण न करेंगे ? क्या स्वर्गीय मुक्ति साधन रूप अपने निज स्वार्थ का त्याग न करेंगे ? अथवा योगसिद्धियों के द्वारा धन, मान, यश का अर्जन कर समाधि के साथ ही गठरी बाँधकर ले चलेंगे ?

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

- आज इस अवसर पर सब योग-शक्तियों को उचित है कि वे एकत्रित हों और योग-निद्रा एवं योगैश्वर्य की सम्पत्ति को अकेले ही भोगने की भावना को छोड़कर भारत के प्राचीन ऋषि-मुनियों का मार्ग अपनावें। लोक-कल्याण में जुट जावें। उनके प्रणपूर्वक प्रयत्न से संसार की कायापलट हो सकती है। अध्यात्म-शक्तियों के तेज से संसार का अन्धकार दूर होकर सर्वत्र निर्मल प्रकाश की ज्योति छिटक सकती है।

- आज सारा संसार आधि-व्याधियों से ग्रसित होकर किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो रहा है। ऐसी दशा में ज्ञानी सन्तों को ज्ञान द्वारा, धनी साधुओं को धन द्वारा, योगीजनों को योग द्वारा, सिद्धों को सिद्धि द्वारा, तत्त्वदर्शियों को तत्त्वज्ञान द्वारा, लोकसेवी महात्माओं को लोकसेवा द्वारा गृहस्थाश्रम को विपत्ति में से निकालने का प्रयत्न करना चाहिए। आज की स्थिति में योगीजनों का यही सच्चा कर्त्तव्य है।

- मानव-धर्म तो है विश्व-प्रेम और गौरव-सिद्धि यानी अपने आपको अपने बन्धुओं के लिए अर्पण कर देना और मानवीय जीवन को उन्नत करना यह ही सत्य धर्म है, जिससे मनुष्य अमर होता है।

- हममें से अधिकांश लोग धर्म को ऐसे आसानी से सँभाल लेना चाहते हैं, जैसे हम समुद्र के किनारे पड़ी सीपी को उठा लेते हैं। हममें अध्यवसायपूर्वक खोज करने का धीरज या शक्ति नहीं है। जैसे हम पुस्तकों की दुकान से पुस्तकें लेते हैं या दवाई बेचने वाले से दवाइयाँ लेते हैं, उसी प्रकार हम उपदेशक या पुरोहित से आशा करते हैं कि उससे हमें कुछ रुपया या प्रति सप्ताह एक घण्टा देकर धर्म प्राप्त हो जाए।

- धर्म का अस्तित्व मैत्री में है और उसके लिए लोग आपस में कलह करें, क्या यह धर्म का उपहास नहीं ? जो धर्म आपसी झगड़ों का निपटारा करता था, उसी धर्म के लिए आज आपस में लड़ाइयाँ होती हैं। आज का धर्म-प्रेमी नागरिक यदि धर्म की महिमा न बढ़ा सके तो कम से कम उसे बदनाम तो न करे।

- **इज्याध्ययनदानानि तपः सत्यं धृतिः क्षमा।**
  अलोभ इति मार्गोऽयं धर्मस्याष्टविधः स्मृतः।।
  अर्थात्—धर्म के आठ मार्ग हैं—यज्ञ करना, पढ़ना, दान देना, तप, सत्य, धैर्य, क्षमा और निर्लोभ।

- संग्रह का अन्त बिखराव है। अभ्युदय के अनन्तर अवसान आता है। संयोग की परिणति वियोग है। इस परिवर्तनचक्र पर घूमते हुए संसार में स्थिर तो एकमात्र 'धर्म' ही है।

- धर्माचरण से दीर्घ आयु, उत्तम सन्तान तथा अक्षयदान की प्राप्ति होती है। इसी धर्म का निष्काम आचरण मोक्षप्रद है। सदाचार धर्म का मूल है, सत्य कर्म तथा सत्पुरुषों का आचरण ही सदाचार है।

- धर्म ही सत्यता को प्राप्त कराता है। धर्म को कोई भी नहीं टाल सकता। धर्म का हृदय प्रेम है और इसका अन्त शान्ति और मधुर सम्पूर्णता है। अतएव धर्म का पालन करो।

- सत्य बोलना, सब प्राणियों को एक जैसा समझना, इन्द्रियों को वश में रखना, ईर्ष्या-द्वेष से बचना, क्षमा, शील, लज्जा, दूसरे को कष्ट न देना, दुष्कर्मों से अलग रहना, ईश्वर-भक्ति, मन की पवित्रता, साहस, विद्या ये तेरह सत्य धर्म के लक्षण हैं। इन्हीं का पालन सबसे उत्तम धर्म है।

- केवल धर्म-धर्म रटने के बातूनी जमा-खर्च से कुछ भी लाभ नहीं। यदि तुम प्रदर्शन के लिए धर्म का आडम्बर करते हो, तो उससे रत्ती भर भी आत्मोन्नति न होगी, इसकी अपेक्षा तो शारीरिक व्यायाम करना और हँसना, खेलना धर्म के अधिक निकट हैं।

- जिस क्रिया से मनोवृत्तियाँ शुद्ध हों उसी का नाम है—धार्मिक क्रिया।

- धर्म को संकीर्णता के बाड़े में बन्द न करें। उसे व्यवहार में उतरने दें, ताकि अपना और दूसरों का भला कर सके।

- तालाब के कितने ही घाट होते हैं। उनमें से किसी में जाकर घड़ा भरा जा सकता है। धर्म एक है। सम्प्रदाय उसके घाट हैं। जो सरल पड़े वहाँ से प्यास बुझाई जा सकती है। अपना जल या अपना घाट उत्तम है। इसके लिए हठ करना व्यर्थ है।

- धर्म का महान महत्त्व केवल दो शब्दों में निहित है। वे शब्द हैं 'दया और प्रेम'।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ खून न कर, व्यभिचार न कर, चोरी न कर, झूठ मत बोल, ठगी न कर और पड़ोसी से अपने समान प्यार कर। धर्म का यही सार है।

❑ ईश्वर की सत्य और पवित्रता के साथ सेवा करना और जीवन की सभी घटनाओं में उसकी आज्ञाओं को श्रद्धा के साथ पालन करना ही यथार्थ धर्म है।

❑ चिन्तन अध्यात्म का क्षेत्र है तो व्यवहार धर्म का। अध्यात्म और धर्म दोनों के मिलने पर ही समग्र धर्म-तन्त्र का निर्माण होता है। इसके लिए प्रचलित धर्म परम्पराओं में से अनेक को निरस्त करना आवश्यक है। धर्म-तत्त्व से आत्मा को उभार सकना तभी सम्भव है।

❑ **आहारनिद्राभयमैथुनानि सामान्यमेतत्पशुभिर्नराणाम्।**
धर्मो हि तेषामधिकोविशेषोधर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः।।
खाना, सोना, डर, सन्तान पैदा करना ये बातें मनुष्यों और पशुओं में समान ही होती हैं। धर्म ही मनुष्य में विशेष होता है। इसके बिना वे पशु हैं।

❑ सत्यता और सरलता ही धर्मात्मा का भूषण हैं, प्राणान्त होने पर भी उसका त्याग मत करो।

❑ **अधर्मेणैधते तावत्ततो भद्राणि पश्यति।**
ततः सपत्नान् जयति समूलस्तु विनश्यति।।
अधर्म के द्वारा कुछ समय तक चतुरता, सफलता तथा लाभ का अनुभव हो सकता है, पर अन्ततः उससे समूल नाश ही होता है।

❑ **उपकारिषु यस्साधुः साधुत्वे तस्य को गुणः।**
अपकारिषु यस्साधुः स साधुः सद्भिरुच्यते।।
जो पुरुष उपकारी व्यक्ति के प्रति सज्जनता दिखलाता है, उसकी सज्जनता का कोई मूल्य नहीं। सज्जनता या साधुता तो वही है, जो दुर्जन के प्रति सज्जनतापूर्ण व्यवहार दिखलाये और सच्चा साधु भी वही जो दुष्ट के प्रति भी साधु व्यवहार करे।

❑ धोबी का व्यवसाय है—दूसरों के मैले कपड़ों को बटोरना और उन्हें धुले हुए चमकदार बनाकर वापस करना। सन्त और सुधारक ऊँची किस्म के धोबी ही हैं।

❑ **मनस्यन्यत्वचस्यन्यत्कर्मण्यन्यद्दुरात्मनाम्।**
मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम्।।
दुरात्मा लोगों के मन में कुछ, वाणी में कुछ कर्मों में कुछ और ही होता है, पर महात्माओं के मन में, वाणी में और कर्म में एक ही बात होती है।

❑ पुष्प, चन्दन, अगर या चमेली किसी की सुगन्ध वायु के विपरीत कभी नहीं जाती, किन्तु सन्तों का यश वायु के विपरीत भी फैलता है। सत्पुरुष सभी दिशाओं में अपनी-अपनी सुगन्ध से सुवासित कर देते हैं।

❑ साधु पुरुषों के जैसे विचार होते हैं, वैसे ही वचन तथा वचनों के अनुरूप ही उनके कार्य होते हैं। उनके विचार, वचन तथा कार्य सदा एकरूप होते हैं।

❑ अपनी क्षुधा-निवारण करने के उपरान्त बची हुई रसोई दूसरों को बाँट देनी चाहिए। इस प्रकार पहले अपने को ज्ञानवान बनाकर तब उस ज्ञान का वितरण दूसरे लोगों में करना चाहिए। तैरने वालों को चाहिए कि यदि कोई पानी में डूब रहा हो तो उसे डूबने न दें। उत्तम गुणों को अपने अन्दर धारण करने के उपरान्त उन्हें दूसरे लोगों में फैलाना कर्त्तव्य है। शरीर का सर्वश्रेष्ठ उपयोग परोपकार है। वह देह धन्य है, जो पराये काम आती है और जिससे किसी का अनिष्ट नहीं होता। दूसरों के दुःख में दुःखी होना, दूसरों के सुख में प्रसन्न होना, पराये को अपना लेना, मधुर वचन बोलना, दुःखी जनों को ढूँढ़-ढूँढ़कर उनकी सेवा-सहायता के लिए प्रस्तुत रहना यह साधुजनों का काम है। आलस्य को त्यागकर कर्त्तव्यपरायण होना, थोड़ा और विवेकयुक्त बोलना, क्रोध और मत्सर को त्यागकर विनीत भाव से रहना यह सत्पुरुषों का स्वभाव है। वे साधु धन्य हैं, जो अपने सद्व्यवहार से दुर्जनों को सुपथ पर आरूढ़ करते हैं, स्वयं कष्ट सहकर दूसरों का उपकार करते हैं। आपत्तिकाल में धैर्य धारण करते हैं और आलोचकों को देखकर विचलित नहीं होते। उन्हीं का भजन सच्चा है और परमात्मा को तृप्त करने वाला है।

❑ जो बोया जाता है वही उगता है इसलिए कर्कश वचन और कठोर व्यवहार के विष बीजों को नहीं बोना चाहिए। इस दुनिया में उत्तम गुण वाले सज्जनों की बड़ी आवश्यकता है। ऐसे पुरुषों को मनुष्य जाति सदैव खोजती रहती है। श्रेष्ठजनों को समूह बनाना चाहिए,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

संगठन करना चाहिए। अकेला आदमी क्या कर सकता है ? इसलिए विवेकवान धर्म-प्रचारक को चाहिए कि शिक्षित साथियों की सहायता से कल्याण के कार्य को बढ़ावे।

❑ धर्म-ग्रन्थों का कोई कितना ही पाठ करे, यदि वह प्रमादवश तदनुसार आचरण नहीं करता तो वह दूसरे की गौवें गिनने वाले ग्वाले की तरह ही है। चाहे थोड़ा ही पाठ करे, लेकिन यदि राग, द्वेष तथा मोह से रहित हो, धर्मानुसार आचरण करता है तो ऐसा बुद्धिमान अनासक्त ही श्रमणत्त्व का भागी होता है। *—महात्मा बुद्ध*

❑ झूठा प्यार वह है जिसमें कहा जाता है, यह स्त्री मेरी, यह पुत्र मेरा। सच्चा प्यार वह है जिसमें कहा जाता है, मैं स्त्री का सहायक, पुत्र का सेवक।

—रामकृष्ण परमहंस

❑ वर्तमान काल में जाति प्रथा जिस रूप में प्रचलित है, उसका विनाश करना ही होगा। यदि भारतीय जनता नवजीवन चाहती है तो उसे वर्णभेद के वर्तमान स्वरूप को मिटा देना होगा, यह प्रगति की दिशा में सबसे बड़ा अवरोध है।

—डॉ. भगवानदास

❑ जब तक मनुष्य में कोई भी भलाई रहे, तब तक उसका सत्कार करना चाहिए, पर जब मनुष्य अपना मनुष्यत्व त्याग देने का हठ करे, तब उसका त्याग करना मनुष्यमात्र का कर्त्तव्य हो जाता है।

❑ "तुम्हारे कार्य से किसी को दुःख न पहुँचे इसका ध्यान रखना और इसके अनुसार कार्य करना तुम्हारा कर्त्तव्य है।" *—महात्मा गाँधी*

❑ **सर्वतीर्थेषु वा स्नानं सर्वभूतेषु चार्जवम्।**
उभे त्वेते समे स्यातामार्जवं वा विशिष्यते।।

—विदुर नीति ३। २

"सब तीर्थों का स्नान और प्राणियों के प्रति उदारतापूर्ण मधुर व्यवहार इन दोनों में उदार व्यवहार ही विशिष्ट है।"

❑ शास्त्र पढ़कर भी लोग मूर्ख होते हैं, किन्तु जो उसके अनुसार आचरण करता है वस्तुतः वही विद्वान है। रोगियों के लिए भली-भाँति सोचकर निश्चित की हुई औषधि नाम उच्चारण करने मात्र से (बिना खिलाये) किसी को नीरोग नहीं कर सकती। *—हितोपदेश*

❑ हम सदाचार द्वारा ईश्वर के कृपा-पात्र हो जाएँ तो फिर जैसी कि उसने प्रतिज्ञा की है फिर हमें किसी बात की कमी न होगी। यही 'अर्थशास्त्र' है। आप और हम इसे प्रेम से अंगीकार करें और अपने दैनिक व्यवहार में इसका आचरण करें।

❑ हे ईमान वालो ! (धर्मयुद्ध) तुम्हारा कर्त्तव्य नियत किया गया है और वह तुमको अनुचित, असह्य भी प्रतीत होगा, परन्तु आश्चर्य नहीं, एक वस्तु तुमको अनुचित प्रतीत हो और वह तुम्हारे निमित्त श्रेयस्कर हो और इसमें भी आश्चर्य नहीं कि एक वस्तु तुमको भली प्रतीत हो और वह तुम्हारे हक में बुरी हो। जिसे अल्लाह जानता है, उसे तुम नहीं जानते।

❑ जाति मत पूछ, तू तो बस एक आचरण पूछ। देख ! आग चाहे जैसे काष्ठ से पैदा होती है। इसी प्रकार 'नीच-कुल' का मनुष्य भी धृतिमान, सुविज्ञ और निष्पाप मुनि होता है।

—अत्तदीप सुत्त

❑ व्यवहारों की शुद्धता और दूसरों के प्रति आदर यही सज्जन मनुष्य के दो मुख्य लक्षण हैं।

—डिजरायली

❑ दुःख सहने और हानि उठाने का एक बड़ा लाभ यह है कि मनुष्य उद्धता छोड़कर नम्र बन जाता है। *—ओरिलियस*

❑ बहस करते समय अगर आप अपना मुँह नहीं बिगाड़ें, तो आपकी बहस भी सुन्दर हो सकती है। *—एडीसन*

❑ जो अपना अदब करते हैं, उनका सब अदब करेंगे ही। *—बौकन्सफील्ड*

❑ सर्वथा निर्दोष व्यक्तित्व अथवा सर्वथा निर्दोष काम, एक उचित तथ्य है कि जिसके लिए हम सबको निरन्तर प्रयत्नशील रहना चाहिए, पर साथ ही यह नहीं भूल जाना चाहिए कि सर्वथा निर्दोष तो केवल परमेश्वर है।

❑ मनुष्यों में कुछ न कुछ खामी पाई जाएगी और काम भले उद्देश्य के लिए ही किये गये हों काम करने वालों की त्रुटियों के कारण कहीं न कहीं त्रुटिपूर्ण रहेंगे। इस कटुतथ्य को ध्यान में रखते हुए हमें अधिक उपयुक्त व्यक्तियों और अधिक सही कामों के साथ ताल-मेल बिठाने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की नीति अपनानी पड़ेगी। इसी में व्यावहारिकता है और इसी में सुविधा। जिन्हें पूर्णता से काम के साथ समझौता करना नहीं आता, उन्हें निरन्तर क्षुब्ध रहना पड़ेगा। यह क्षुब्धता तब और भी अधिक बढ़ जाएगी, जब वे अपने व्यक्तित्व और क्रिया-कलाप की खामियाँ देखने का प्रयत्न करेंगे और अनुभव करेंगे कि वे जैसे हैं और जो करते हैं, वह भी सन्तोषप्रद नहीं है। *—वाल्टेयर*

- भगवान के प्रति अपराध करने से ज्यादातर बुराई है, किसी इनसान को सताना। भगवान से तो कभी पीछे भी क्षमा माँगी जा सकती है, पर जिस आदमी को सताया गया है, वह कब तक क्षमा माँगने और भरपाई करने के लिए उपलब्ध रहेगा ? *—हदीस*
- कोरे कपड़े का पैबन्द पुराने पहरावन पर कोई नहीं लगाता, क्योंकि वह पैबन्द पहरावन से और कुछ खींच लेता है और कट जाता है। *—मत्ती ९*
- आचरण का ओछापन सारी अच्छाई और सद्गुणों का घातक होता है। *—सेनेका*
- जिसने तुम्हारे साथ बुरा व्यवहार किया है, उसके साथ भी शुद्धाचरण रखो। बदला लेने के विचार को दृष्टि में न रखो।
- शिष्टाचार के द्वारा कोई भी मनुष्य संसार में अपनी उन्नति कर सकता है।
- बड़प्पन शालीनता से मिलता है। पद और प्रतिष्ठा तो उसे चमकाते भर हैं।
- देने के बाद वापस मिलने की आशा छोड़ो, किन्तु जो लिया है, उसे चुकाना न भूलो।
- हमारे जीवन का व्यवहार ही हमारे हृदय की सच्चाई का एकमात्र प्रमाण है।
- सत्य पर डटे रहो, न्याय-मुक्त काम को करते हुए कभी लज्जित मत होओ। जिस बात को तुम न्याययुक्त समझते हो, उसी का निश्चय करो और फिर उस पर जम जाओ।
- यदि तुम आपत्ति में दूसरों की सहायता नहीं करते, तो तुम्हें भी विपत्ति में दूसरों से सहायता पाने की आशा नहीं करनी चाहिए।
- अपने ही सदृश दूसरों को भी समझना चाहिए। किसी को अपने से छोटा गिनना, उसकी भावनाओं का आदर न करना, अमानवोचित है।
- न इतने कठोर बनो कि लोग तुमसे डरने लगें और न इतने कोमल कि सिर चढ़ें।
- जो कुछ दूसरा व्यक्ति चाहता है, उसी के अनुसार बातचीत की जाए।
- दूसरे व्यक्ति के दोष दिखाने के पहले अपनी भूल की चर्चा कीजिए।
- अच्छा श्रोता बनिए। दूसरों को उनके अपने विषय में बात करने के लिए प्रोत्साहन कीजिए।
- सदा ऐसा उपाय कीजिए जिससे आप जो कुछ कराना चाहते हैं, उसे करने में दूसरे व्यक्ति को प्रसन्नता हो।
- मनुष्य के हृदय में पहुँचने का राजमार्ग उससे उन चीजों के बारे में बातें करना है, जिनको वह सबसे ज्यादा मूल्यवान समझता है।
- यदि आप चाहते हैं कि लोग आपसे प्रसन्नतापूर्वक मिलें तो आपको उनसे प्रसन्नतापूर्वक मिलना चाहिए।
- बड़प्पन की सरल कसौटी एक ही है कि वह छोटों के साथ कैसा व्यवहार करता है ?
- दूसरों के द्वारा तुम अपना आदर चाहते हो, तो पहले दूसरों का आदर करो।
- दूसरे लोगों में दिलचस्पी लेने से हम दो मास में जितने मित्र बना सकते हैं उतने दूसरे लोग हम में दिलचस्पी लेकर बनाने का यत्न करके दो वर्षों में भी नहीं बना सकते।
- **आवत ही हरसे नहीं, नयनन नहीं सनेह।**
  'तुलसी' तहाँ न जाइये, कंचन बरसे मेह।।
- **रहिमन तब लगि ठहरिये, दान-मान सनमान।**
  घटत मान देखिए जबहिं, तुरतहिं करिय पयान।।
- **प्रेम रीति से जो मिलै, तासों मिलिये धाय।**
  अन्तर राखे जो मिलै, तासों मिलै बलाय।।
- दूसरों से भलमनसाहत का व्यवहार करने वाला एक चमकता हुआ हीरा है। दुनिया को ऐसे मनुष्यों की जरूरत है, जो अपने सभ्य व्यवहार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org

www.vicharkrantibooks.org

से द्वेष और कलह की आग बुझाकर प्रेम की शीतल सरिता बहावें।

- बुद्धिमान अधिक जानने के झंझट में नहीं पड़ते। वे उसे ढूँढ़ते हैं, जो काम का है और व्यवहार में आ सकता है।
- दूसरे व्यक्ति को प्रभावित करने की एक ही रीति है और वह यह है कि उसी वस्तु के सम्बन्ध में बातचीत कीजिए जिसकी उसको आवश्यकता है और उसे उसको प्राप्त करने की विधि बतलाइए।
- मैं किसी काम के परिणाम को देखकर ही उसकी नीतिमत्ता निश्चित करता हूँ। यदि असत्य भाषण से अधिक लोगों का कल्याण होता तो उस समय सत्य को छिपा रखना मैं अपना कर्त्तव्य समझूँगा।
- शास्त्रकारों और आप्तजनों के अनेक उपदेशों का कथन ही सार है कि जो व्यवहार तुम अपने लिए पसन्द नहीं करते, उसे दूसरों के लिए न करो।
- आप चाहते हैं कि प्रतिष्ठा प्राप्त हो तो प्रतिष्ठा के योग्य कार्य कीजिए।
- अधर्ममय और अनीतिवान मित्र के बजाय धर्म और नीतियुक्त शत्रु अच्छा है।
- विवेकपूर्वक सोचो, बोलो और करो ! इतना बन पड़े, तो समझो कि ईश्वर की प्रार्थना सही अर्थों में की जा रही है।
- जो लोग तुम्हारे हितैषी, आत्मीय, स्वजन और मित्र हों उनके साथ अच्छी तरह बातचीत करो, उन्हें उपहार दो, उनका यथासाध्य उपकार करो, उनको अपनी बराबरी का समझो, उन्हें अपने धन का कुछ अंश दो, उनको कुमार्ग पर मत जाने दो, वे दरिद्र हो जाएँ तो उन्हें आश्रय दो, उनके परिजनों के साथ सद्व्यवहार करो। ऐसा करने से तुम्हारे घर का और एक भाग मंगल से सुरक्षित होगा।
- सच्ची बात अच्छी नहीं लगती और अच्छी लगने वाली बात सच्ची नहीं होती। अच्छाई कभी झगड़ा नहीं करती और झगड़ा कभी अच्छा नहीं होता। बुद्धिमान कभी ज्यादा बकवाद नहीं करते और ज्यादा बकवाद करने वाले कभी बुद्धिमान नहीं होते।
- इस संसार में सबके प्रति सद्भावना रखनी चाहिए। यह विचार रखना चाहिए कि सभी सुखी हों, सभी नीरोग हों, सभी कल्याण की प्राप्ति करें और किसी को दुःख न हो।
- जब व्यक्ति इतना घमण्डी हो जाए कि रो न सके, जब इतना गम्भीर हो जाए कि हँस न सके और इतना स्वार्थी हो जाए कि अपने सिवाय किसी और की चिन्ता न कर सके तो समझना चाहिए कि उसने दारिद्र्य ही बटोर रखा है।
- उदारतापूर्ण कार्य स्वयं अपना पारितोषिक है।
- किसी के उपदेश की सत्यता की जाँच लोग उसके आचरण से ही किया करते हैं। इसलिए यदि ज्ञानी पुरुष स्वयं कर्म न करेगा, तो वह सामान्य लोगों को आलसी बनाने का एक बहुत बड़ा कारण हो जाएगा।
- किसी के साथ उपकार किया है, तो उसे प्रसिद्ध करके उपकृत को लज्जित मत करो।
- दूसरों का सम्मान करो, पर अपने लिए सम्मान मत चाहो।
- उदार बनो। दूसरों के विचारों को सुनो, सोचो और यदि ठीक हों तो मानने में मत हिचको।
- कटुवचन कहने वाले से भी कटुवचन न कहे। क्रोध को भी सह ले। इससे विपक्षी नष्ट होगा और उसके पुण्य क्षीण हो जाएँगे।
- सुन्दर आकृति सुन्दर मुँह की अपेक्षा सुन्दर है, किन्तु सद्व्यवहार सुन्दर आकृति से भी अच्छा है। वह मूर्तियाँ और चित्रों से भी अधिक आनन्द देता है। वह सारी ललित-कलाओं में सर्वश्रेष्ठ कला है।
- अग्नि की तीव्रता आग से शान्त नहीं हो सकती है। इसको ठण्डे जल की जरूरत है। इसी तरह क्रोधी का क्रोध भी शीतल शब्दों के प्रयोग से ही दूर हो सकता है, न कि भड़कीले शब्दों से।
- साधना के लिए अलग स्थान की तलाश न करो। अपने दायित्वों और सम्बन्धियों के साथ ऐसा तालमेल बिठाओ, जिसमें आदर्शों का गहरा पुट

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हो। इस प्रकार तुम्हारा व्यावहारिक जीवन ही समग्र साधना बन जाएगा।

- पहले दूसरे व्यक्ति में उत्कट चाह उपन्न करो, जो यह कर सकता है उसके साथ संसार है। जो यह नहीं कर सकता है, वह निर्जन मार्ग पर चलता है।

- यदि किसी मनुष्य का हृदय आपके प्रति द्वेष और दुर्भाव से पीड़ित हो रहा है तो आप सारे संसार का तर्क लगाकर भी उसे अपने विचार का नहीं बना सकते, परन्तु यदि हम सौम्य और मित्रवत् व्यवहार करें तो यह आसानी से सम्भव है।

- 'मानव-चरित्र' कितना रहस्यमय है ? दूसरों का अहित करते हुए जरा भी नहीं हिचकता, किन्तु जब दूसरों के हाथों हमें कोई हानि पहुँचती है, तो हमारा खून खौलने लगता है।

- लोग मुझे मान दें, जब कोई यह चाहता है तो वह अपनी नजरों में खुद छोटा बन जाता है। मैं लोगों को मान दूँ, यह सोचने वालों को दानियों जैसे बड़प्पन की अनुभूति होती है।

- जितना भारी आनन्द निष्कपटता और सत्य व्यवहार में है, उतना ही भारी दुःख, छल, कपट एवं दम्भ में है।

- कुपथगामी मनुष्यों के दोषों को उसके परिवार के सामने या उसके सम्बन्धी के सामने प्रगट करना उचित नहीं है, उचित अवसर और एकान्त स्थान पाकर उसे समझाना चाहिए।

- नम्र होने पर तुम वीर बन सकते हो, मितव्ययी होने पर उदार बन सकते हो, दूसरों के सामने अपने को दिखाने और बड़ाई करने से बचो तो तुम उनके नेता बन सकते हो।

- तुम जो दूसरे से चाहते हो, वही दूसरे को पहले दो, तब तुम्हें अनन्त गुणा होकर वही मिलेगा। सेवा चाहते हो तो सेवा करो, मान चाहते हो तो मान दो। यश चाहते हो तो यश दो। ठीक समझ लो दुःख देते हो तो बदले में तुम्हें दुःख ही मिलेगा, अपमान करते हो तो बदले में तुम्हें अपमान ही मिलेगा। जो तुम दोगे वही तुम्हें मिलेगा।

- सन्मार्ग पर चलते हुए अगर लोग बुरा कहें तो यह उससे अच्छा है कि लोग तुम्हारी प्रशंसा करें।

- अनुचित का त्याग करो। मान, वचन और क्रिया में सत्य का आश्रय ही दुनिया की अनमोल निधि और जीवन का सर्वोपरि नियम है।

- न तो अपने लाभ की उपेक्षा करो और न दूसरे के लाभ में विघ्न डालो।

- अपने व्यक्तित्व का गौरव अक्षुण्य बनाये रहो। चुलबुलापन और बकवाद तुम्हारे व्यक्तित्व के नाश के कारण हो सकते हैं।

- जो संसार को दुःख देने के लिए अवतीर्ण नहीं हुए, वरन् सुख की नदियाँ बहाने के लिए आये, वे मृत्युलोक में मनुष्य रूप में देवता हैं।

- निश्चय भाव से सबके साथ प्रेम करो। अपने प्रेम बल से दूसरों के चरित्र को सुधारो। उन्हें ऊँचा उठाओ। तुम्हारे आचरण पवित्र होंगे तो तुम निराशों के हृदय में आशा का संचार कर सकोगे।

- जो मनुष्य दूसरों को आघात पहुँचाते हैं, वे वास्तव में अपने आपको घायल करते हैं।

- प्रसन्नता और कुकर्म ये दो देश हैं। एक मनुष्य एकदम दोनों देशों में कैसे रह सकता है, जो मनुष्य सुख चाहते हैं, वे कुकर्मों को अवश्य ही छोड़ देंगे।

- सुसंस्कारिता की परीक्षा तब होती है, जब झगड़े के अवसर पर किस प्रकार सोचा और किस तरह व्यवहार किया गया, इस पर विचार किया जाए।

- सच बोलने का सबसे बड़ा फायदा यह है कि यह याद नहीं रखना पड़ता कि तुमने कहाँ, कब, किससे क्या कहा था ?

- किसकी मैत्री किनसे है, यह पता लगा लेने के उपरान्त उसका चरित्र जानना कुछ भी कठिन नहीं रह जाता।

- मूर्खता का सबसे अच्छा प्रतिकार उसकी उपेक्षा है। अहंकारी के नटखटपन पर ध्यान न देना ही समझदारी है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

कथनी-करनी

❑ **पठकाःपाठकाश्चैवयेचान्येशास्त्रचिन्तकाः।**
सर्वेव्यसनिनोमूर्खायः क्रियावानूसपंडितः।।

—महाभारत वन पर्व ३१४। १०

पढ़ने वाले, पढ़ाने वाले और शास्त्र के चिन्तक ये सब एक प्रकार से व्यसनी हैं, परन्तु जो शास्त्र में लिखे पर चलने वाला है, वह पण्डित है।

❑ **न पण्डितो मतो राम बहुपुस्तकधारणात्।**
परलोकभयं यस्त तमाहु पण्डितं बुधाः।।

—विष्णुधर्मोत्तर पुराण २। ५१। १३

हे राम ! बहुत पुस्तक पढ़ने से पण्डित नहीं होता, जिसको परलोक का भय है अर्थात् पाप-कर्म से बचा हुआ है, उसी को बुद्धिमान पण्डित कहते हैं।

❑ जो सही सोचता और सही करता है, वही इस धरती में सबसे बड़ा विद्वान है। *—एमर्सन*

❑ जो लोग कृष्ण-कृष्ण कहते हैं, वे उसके पुजारी नहीं हैं। जो उसका काम करते हैं, वे ही पुजारी हैं। उसी प्रकार रोटी-रोटी कहने से पेट नहीं भरता, रोटी खाने से भरता है।

—महात्मा गाँधी

❑ उपदेश की सफलता इस बात में नहीं कि सुनने वाले उसकी प्रशंसा करते चले जाएँ। जिसे सुनने के बाद वे लोग चिन्तनशील, गम्भीर और परिवर्तन-निरत दिखाई पड़ें तो उसे सफल उपदेश समझना चाहिए। *—गिलबर्ट वरनेट*

❑ ग्रन्थों में बहुत-सी बातें हैं यह तो ठीक है, किन्तु जिन्होंने ग्रन्थ लिखे हैं, वे ग्रन्थों में लिखे हुए तत्त्वों को धारण नहीं करा सकते हैं। साधु-संग होने पर धारणा होती है। ठीक-ठीक त्यागी-ज्ञानी साधु यदि उपदेश दें तो भी लोग उस बात को सुनेंगे और मान लेंगे। खाली पण्डित हो, वह यदि ग्रन्थ लिखे और मुँह से उपदेश देवे तो उससे धारणा उतनी नहीं होती, जितनी त्यागी साधुओं की बातों से होती है।

❑ केवल शब्द कण्ठस्थ कर लेने से कुछ लाभ नहीं, ईश्वर-प्राप्ति के लिए ही पुस्तकों को पढ़ना है। केवल गीता पढ़ने से पूरा लाभ नहीं, जब तक वैराग्य प्राप्त कर ब्रह्म का साक्षात्कार करने की चेष्टा न की जाए। गृहस्थ हो या संन्यासी, सभी को मन से विषयासक्ति निकालनी होगी, तब ध्येय की प्राप्ति होगी।

❑ चाहे जितना गुस्से का कारण मिलने पर भी जो मनुष्य गुस्से के अधीन न होकर नुकसान नहीं करता, वह जीतता है। उसी से नियम का पालन किया, कहा जाएगा।

❑ जो शख्स खुद-पसन्द-घमण्डी आदमी को नसीहत देता है, वह खुद नसीहत का मुहताज है।

—शेखसादी

❑ यदि तुम सहस्रों मनुष्यों के बीच में अपने को श्रेष्ठ सिद्ध करके जनता की ओर से मिलने वाले मन से सुखी और सन्तुष्ट होना चाहते हो तो धन तथा अधिकार बढ़ाने की अपेक्षा अपने को चरित्रवान बनाने का निश्चय करो।

—स्वामी विवेकानन्द

❑ चरित्र जिसके पास है, प्रलोभन और परीक्षा के संसार में जो दृढ़तापूर्वक स्थिर रह सकता है, वही सच्चा पुरोहित है, भले ही शब्दज्ञान में वह औरों से कम ही क्यों न हो ?

—चाणक्य

❑ वह व्यक्ति सम्मान का पात्र नहीं जो धनी व सम्पत्तिवान हो, अपितु वह सम्मान का पात्र है जो अपनी सम्पत्ति का सदुपयोग कर उत्पादन व कल्याण कार्य में लगाता हो।

❑ श्रेष्ठ बुद्धि व सद्विचार करने वाला विद्वान भी सम्मान का पात्र नहीं, यदि वह अपनी बुद्धि विचारों व आचरणों से लोगों को सद्कर्मों की प्रेरणा न देता हो। *—बेली*

❑ केवल एक ही कर्त्तव्य है और एक ही सुरक्षित मार्ग है और वह है ठीक होने का प्रयत्न करना और जो कुछ तुम ठीक समझते हो, उसे करने या कहने में भय न करना। *—चर्चिल*

❑ प्रत्येक मनुष्य दो प्रकार की शिक्षा प्राप्त करता है। एक वह जो उसे दूसरों से मिलती है। उससे भी महत्तर वह दूसरी शिक्षा है, जो अपने अनुभव से वह अपने आप प्राप्त करता है। *—गियन*

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ मस्तिष्क में भरे हुए ज्ञान का जितना अंश काम में लाया जाए, उतने ही का कुछ मूल्य है, बाकी सब व्यर्थ बोझा है। *—महात्मा गाँधी*

❑ दो शख्सों ने वृथा कष्ट उठाया और व्यर्थ उद्योग किया—एक तो वह जिसने धन जमा किया, किन्तु उसे भोगा नहीं। दूसरा वह, जिसने अंक विद्या सीखी, मगर उसका अभ्यास न किया। चाहे जितनी विद्या क्यों न पढ़ लो, अगर तुम उस पर अमल नहीं करते तो तुम नादान हो। वह जानवर जिस पर किताबें लदी हुई हैं, न ही वह विद्वान है, न बुद्धिमान। उस मूर्ख को क्या खबर कि उसके ऊपर किताबें लदी हैं या ईंधन। *—शेखसादी*

❑ बन्ध और मोक्ष की बातें करने वाले, आचार का व्याख्यान देने पर भी स्वयं कुछ आचरण नहीं करते। वे मात्र वाग्शूरता (वाणी की बहादुरी) से ही अपनी आत्मा को (झूठा) आश्वासन देते हैं। *—भगवान महावीर*

❑ भूल में यदि कदाचित चाण्डाल (बुरा) कर्म हो जाए तो उसे कभी मत छुपाओ। जो दोष हो जाए उसे गुरुजनों के समक्ष स्वीकार करो। यदि अपना दोष न हो तो विनयपूर्वक उसका खुलासा कर देना चाहिए। *—भगवान महावीर*

❑ शास्त्र का मुख से उच्चारण करना लाभकारी नहीं है। लाभकारी तो शास्त्र पर अमल करना है। *—महात्मा गाँधी*

❑ कार्य को वचन के अनुसार बनाओ और वचन को कार्य के अनुसार। दोनों में फर्क न पड़े। *—शेक्सपियर*

❑ किसी धार्मिक ग्रन्थ या वेदमन्त्रों को तोता की भाँति रटने से कुछ लाभ नहीं हो सकता। हमें उन नियमों को अपने जीवन में धारण करना चाहिए। *—लॉक*

❑ जीवन का एकमात्र उद्देश्य यह है कि हम जैसे हैं, वैसे दिखें और जैसे बन सकते हैं, वैसे बनें। *—स्टीवेंसन*

❑ मानव के कार्य ही उसके विचारों की सर्वश्रेष्ठ व्याख्या है। *—लॉक*

❑ मनुष्य की सबसे बड़ी आवश्यकता शिक्षा नहीं, वरन् चरित्र है और यही उसका सबसे बड़ा रक्षक है। *—हर्बर्ट स्पेन्सर*

❑ शिक्षा विविध जानकारियों का ढेर नहीं है। जो तुम्हारे मस्तिष्क में ठूँस दिया गया है और आत्मसात हुए बिना, वहाँ आजन्म पड़ा रहकर गड़बड़ मचाया करता है। हमें उन विचारों की अनुभूति कर लेने की आवश्यकता है, जो जीवन-निर्माण, मनुष्य-निर्माण तथा चरित्र-निर्माण में सहायक हो। यदि आप केवल पाँच ही परखे हुए विचार आत्मसात कर उनके अनुसार अपने जीवन और चरित्र का निर्माण कर लेते हैं, तो आप एक पूरे ग्रन्थालय को कण्ठस्थ करने वाले की अपेक्षा अधिक शिक्षित हैं। *—स्वामी विवेकानन्द*

❑ आचरण-दृष्टान्त ही मनुष्य जाति की पाठशाला है। जो कुछ वह इससे सीख सकता है, वह और किसी से नहीं। *—बक*

❑ आचरण एक दर्पण है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति अपना चित्र प्रदर्शित करता है। *—गेटे*

❑ सौन्दर्य का अस्तित्व बना रहे, यही उसकी सच्ची उपासना है। *—डॉ. राधाकृष्णन्*

❑ सौन्दर्य का आदर्श शान्ति व सादगी है। *—गेटे*

❑ सौन्दर्य ही सत्य है और सत्य ही सौन्दर्य है। *—कीट्स*

❑ वास्तविक सौन्दर्य हृदय की पवित्रता में है। *—महात्मा गाँधी*

❑ मेधावी तभी आदर का पात्र होता है, जब वह मानव-जाति की प्रसन्नता और शान्ति के लिए कार्य करता है। *—लार्ड एसेक्स*

❑ कोई व्यक्ति ठण्ड के दिनों में लकड़ियाँ लाकर आग जला ले और बैठ जाए तो पाँच-सात व्यक्ति और भी आ बैठते हैं। इसी प्रकार जब कोई अज्ञान और अविवेक के ठिठुरा देने वाले शीतकाल में ज्ञान और विवेक की अग्नि जला लेता है तो अपनी ठिठुरन दूर करने के लिए और भी कई व्यक्ति उस अग्नि के समीप आ बैठकर तापने लगते हैं। *—रामकृष्ण परमहंस*

❑ **करिष्यामि करिष्यामि करिष्यामीति चिन्तया।**
मरिष्यामि मरिष्यामि मरिष्यामीति विस्मृतम्।।
अर्थात्—मैं एक दिन मर जाऊँगा। निश्चय ही शरीर नाशवान है, यह भूलकर मनुष्य यह करूँगा, वह करूँगा, अभी सब कुछ करने को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पड़ा है, यही सोचता रह जाता है और परलोक जैसी महत्त्वपूर्ण आवश्यकता अधूरी रह जाती है।

- तोता वैसे तो 'सीताराम-सीताराम' रटता रहता है, पर जब बिल्ली उसे पकड़ लेती है, तो सीताराम भूलकर 'टें-टें' करने लगता है। बकवादी मनुष्य रोज-रोज बहुत ज्ञान-विज्ञान की बातें करते हैं, पर जब परीक्षा का समय आता है, तो अपनी बुरी आदतों को ही प्रकट करते हैं।

- जिस मनुष्य ने किसी के सामने एक बार भी चोरी, जुआ या मिथ्याभाषणादि कोई कुकर्म कर लिया, उसकी प्रतिष्ठा उसके सामने मृत्युपर्यन्त नहीं होती। जैसी हानि मिथ्या प्रतिज्ञा करने वाले की होती है, वैसी और किसी की नहीं होती, इसलिए जिसके साथ जैसी प्रतिज्ञा की जाए, उसके साथ उसे उसी प्रकार पूरा करना चाहिए।

- सुन्दर वस्तुओं में मनुष्य का उच्च दृष्टिकोण और आदर्श ही सबसे अधिक सुन्दर है।

- जो मनुष्य अधिकारी व्यक्ति के सामने स्वेच्छापूर्वक अपने दोष शुद्ध हृदय से कह देता है और फिर कभी न करने की प्रतिज्ञा करता है, वह मानो शुद्धतम प्रायश्चित्त करता है।

—महात्मा गाँधी

- झाड़ू से घर बुहारा जाता है और प्रायश्चित से पापों की निवृति होती है।

- भोजन को मुँह से चबाकर तब पेट में पहुँचाया जाता है। बड़ों के परामर्श पर भी विवेकपूर्वक विचार करो और उतना ही ग्रहण करो, जो पाचन के अनुरूप है।

- **असम्यग्गुणयुक्तं हि ज्ञानं सकुशलैरपि।**
  उपलभ्यं नाविदितं विदितं चानुष्ठितम्॥
  पूर्ण बुद्धिमानों द्वारा दिया गया ज्ञान भी निरर्थक हो जाता है, यदि उस सीखे हुए को समझकर उसके अनुकूल आचरण न किया जाए।

- परमात्मा-परमात्मा चिल्लाने वाले आदमी धर्मात्मा न समझे जावेंगे, वरन् परमात्मा के आदेशों को अपने अमली जीवन में परिणत कर दिखाने वाले ही धर्मात्मा माने जावेंगे।

- "जो दूसरों से कराना चाहते हो, उसे कहकर समझाने से काम न चलेगा। पहले स्वयं करके दिखाना होगा। साँचे के अनुरूप खिलौने ढलते हैं।"

- अपना सुधार करो तो सम्पर्क में आने वाले दूसरे भी सुधर जाएँगे, अपने को नहीं सुधार सका उसको दूसरों को धर्मोपदेश देने का अधिकार कहाँ होता है ?

- जो संन्यासी आचार-विचार कर्त्तव्याकर्त्तव्य और पाप-पुण्य की अवहेलना कर मदोन्मत्त और पिशाच सदृश आचरण करता है, उसी सर्वधर्म त्यागी पुरुष को हम श्रेष्ठ व परमहंस कहते हैं।

- अज्ञानी मूर्ख से शास्त्र पढ़ने वाला श्रेष्ठ है, पढ़ने वाले से शास्त्र को स्मृति में धारण करने वाला, धारण करने वाले से शास्त्र के मर्म को समझने वाला ज्ञानी, उससे भी उस पर आचरण करने वाला श्रेष्ठ है।

- श्रेष्ठ व्यक्तियों के तीन रूप होते हैं—नेक हो तो चिन्ताओं से, बुद्धिमान हो तो उलझनों से और सशक्त हो तो भयों से मुक्त रहेगा।

- जरूरी नहीं जो लोग धर्म की लम्बी-चौड़ी बातें करते हैं, वे वास्तव में धर्मात्मा ही हों। यह भी जरूरी नहीं कि जो धर्मचर्चा में शामिल नहीं होते या पूजा-पाठ नहीं करते, वे अधार्मिक ही ठहराये जाएँ। धर्म की जानकारी उपयोगी हो सकती है, पर उसका वास्तविक लाभ तभी है, जब उसे आचरण में उतारने की प्रेरणा मिले।

- धर्म की जानकारी और धार्मिक कर्म-काण्डों में प्रवृत्ति क्या वस्तुतः मनुष्य को धर्मात्मा बनाती है ? इस सम्बन्ध में अमेरिका की 'इन्स्टीट्यूट फॉर सोशल एण्ड रिलीजर्स रिसर्च' संस्था ने विस्तृत शोधकार्य किया। यह शोध व्यापक क्षेत्र में की गई। पाँच वर्ष लगे और एक लाख डालर खर्च आया। इस शोध का विषय था—करेक्टर एजूकेशन इनक्वारी।

  शोध के निष्कर्षों का उल्लेख 'स्टडी इन डिसीट' नाम से प्रकाशित किया गया है। उसमें प्रतिपादन यह है कि धर्मचर्चा की बहुत जानकारी होने पर भी यह आवश्यक नहीं कि उसके आधार पर लोग उसे आचरण में लाने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की भी आवश्यकता समझते हों। कितने ही भ्रष्ट, अनाचारी और अपराधी ऐसे पाये गये, जिनकी धर्मचर्चा और धर्म-क्रिया में बहुत रुचि थी, पर उन्होंने उतने को ही धर्माचरण माना और उसे पर्याप्त समझा। धर्म के आवश्यक अंगों को भी कभी उन्होंने जीवन में ढालने का प्रयत्न नहीं किया, वरन् वे अधर्माचरण में ही जीवनभर निरत रहे, जबकि दूसरे लोग सदाचारी जीवन को एक आवश्यक तथ्य मानते-समझते रहे और बिना धर्मकथा सुने ही, श्रेष्ठ आचरण का आदर्श प्रस्तुत किया। शोध का बल इस बात पर है कि धर्म को आचरण में उतारने की प्रेरणा से भरा हुआ धर्म-कलेवर ही व्यक्ति और समाज के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है। इसके बिना तो वह आडम्बर मात्र ही बनकर रह जाएगा।

- वस्तुतः विद्वान वही भाग्यवान होता है जो स्वयं सुमार्ग पर चलकर दूसरों को भी सद्-उपदेश देता रहता है।
- बहुत गाल बजाने वाला और बड़ा आडम्बर बनाने वाला पंडित नहीं होता। पंडित वह है जो अपने ज्ञान और व्यवहार को एक रखता है।
- सार्थक उपदेश वाणी से नहीं, अनुकरणीय आचरण से दिए जाते हैं।
- सीताजी, रुक्मिणीजी, पार्वतीजी आदि की मूर्तियों को नित्य सिर झुकाने वाला व्यक्ति बस से यात्रा करते हुए, स्त्रियाँ बैठी होने पर गन्दे अश्लील शब्दों को जोर-जोर से बोलते हुए तनिक नहीं सकुचाता।
- दूर से भौंकने वाला कुत्ता काटता नहीं। जो अवसर आने से पहले बहुत बड़बड़ाता है वह समय पर पुरुषार्थ नहीं दिखाता।
- इस धोखे में न रहो कि ईश्वर से छल चल जाएगा। मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटता है।
- कोई कुकर्म तुमसे बन पड़ा है, उसका पछतावा तब तक व्यर्थ है, जब तक कि यह प्रण न करलो कि फिर ऐसा काम न करोगे।
- घाव को बार-बार खोलकर देखने-कुरेदने से घाव अच्छा नहीं होता। मानव-जीवन में भूल तो होती ही है, परन्तु भूल हो जाने के पश्चात् फिर भूल करना पाप है।
- यह याचक जो कहते हैं उन्हें सुनो, उनमें से जो उचित हो उसे अपनाओ, पर वे जो करते हैं सो न करो, क्योंकि इन पुरोहितों की कथनी और करनी में जमीन-आसमान जैसा अन्तर पाया जाता है।
- बड़े काम करो, पर बड़ी डींगें मत हाँको।
- जिनकी तुम प्रशंसा करते हो, उनके गुणों को अपनाओ और स्वयं भी प्रशंसा के योग्य बनो।
- जीवन का एक भी क्षण सोने की करोड़ों मोहरों से नहीं खरीदा जा सकता, तो फिर ऐसे अमूल्य क्षणों को व्यर्थ खो देने से अधिक और क्या मूर्खता होगी ?
- ऊँचे कहलाने वाले जब अन्याय पर उतरते हैं तो छोटे वर्ग भी उनके विरुद्ध क्रान्ति के रूप में उबल पड़ते हैं।
- कथाश्रवण से मात्र कर्त्तव्यबोध होता है, उसे सुनने में न स्वर्ग मिलता है न भगवान।
- जो अपने को सिखा-समझा सकता है, उसी के लिए यह सम्भव है कि दूसरों को समझाये और सही रास्ते पर चलाये।
- कोई वस्तुतः क्या है ? उसकी परख उसकी योग्यता या प्रतिभा से नहीं वरन् उदारता एवं चरित्रनिष्ठा के आधार पर की जानी चाहिए।
- मनुष्य का अच्छा स्वभाव ही उसका सौन्दर्य है। वह कुरूपता की कमी पूरी कर सकता है, किन्तु बुरे स्वभाव के रहते देवताओं जैसे सौन्दर्य का भी कोई मूल्य नहीं।
- ईश्वर की अनुकम्पा सिर्फ उन पर बरसती है, जो उसकी दुनिया में शान्ति पैदा करते हैं न कि उन पर जो बड़बड़ाते तो बहुत हैं, किन्तु काम कलह के बीज बोने का करते हैं।
- काम की बातें इस दुनिया में थोड़ी हैं। उन्हें समझ और अपना सको तो व्यर्थ के उपदेश सुनाते रहने में समय न गँवाना पड़े।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

- भीड़ के पीछे मत भागो, उनका साथ पकड़ो जो अपनी नाव में बिठाकर पार लगा सकते हैं, जिन्होंने वर्चस्व पाया है, वे ही तुम्हें दिला सकते हैं।
- सलाह उनकी पूछो, जिन्होंने कोई मंजिल पकड़ी और दृढ़तापूर्वक चलते रहकर सफलता पाई।
- वही उन्नति कर सकता है, जो स्वयं अपने को उपदेश देता हो।
- जिन दोषों के कारण हम दूसरों की भर्त्सना करते हैं, उनसे अपनी सफाई पहले कर डालो।
- जिसका देह और मन शुद्ध न हो, उसका मन्दिर में जाकर भगवान् की पूजा करना व्यर्थ है। जिनके देह और मन दोनों पवित्र हैं, भगवान उन्हीं की प्रार्थना सुनते हैं।
- योगी का वेश बनाने और आवरण धारण करने की आवश्यकता नहीं। श्रेष्ठता को स्वभाव और प्रयास में सम्मिलित करने वाले योगी कहलाते हैं।
- बहुत-से लोग ईश्वर की पूजा इस प्रकार करते हैं, मानो सचमुच ही भक्त हों, पर जीवन ऐसा जीते हैं, मानो उनकी नास्तिकता में कोई कसर नहीं रही।
- जो प्रामाणिक हैं उन्हीं का विश्वास करो। जो अनेक कसौटियों पर खरे उतरें मात्र उन्हीं से घनिष्ट सम्बन्ध बनाओ। हर अवसर का मूल्यांकन करो और उसके सदुपयोग की बात सोचो। प्रगति के यही तीन तरीके हैं।
- जब मनुष्य कोई गलती कर बैठता है, तब उसे अपनी भूल का भय लगता है। वह सोचता है कि दोष को स्वीकार कर लेने पर मैं अपराधी समझा जाऊँगा, लोग मुझे बुरा-भला कहेंगे और गलती का दंड भुगतना पड़ेगा। वह सोचता है कि इन सब झंझटों से बचने के लिए यह अच्छा है कि गलती को स्वीकार ही न करूँ, उसे छिपा लूँ या किसी दूसरे के सिर मढ़ दूँ। इस विचारधारा से प्रेरित होकर काम करने वाले व्यक्ति भारी घाटे में रहते हैं। एक दोष को छिपा लेने से बार-बार वैसा करने का साहस होता है और अनेक गलतियों को करने एवं छिपाने की आदत पड़ जाती है। दोषों के भार से अन्तःकरण दिन-दिन मैला, भद्दा और दूषित होता जाता है और अन्ततः वह दोषों की, भूलों की खान बन जाता है। गलती करना उसके स्वभाव में शामिल हो जाता है।
- भूल को स्वीकार करने में मनुष्य की महत्ता कम नहीं होती, वरन् उसके महान आध्यात्मिक साहस का पता चलता है। गलती को मानना बहुत बड़ी बहादुरी है। जो लोग अपनी भूल को स्वीकार करते हैं और भविष्य में वैसा न करने की प्रतिज्ञा करते हैं, वे क्रमशः सुधरते और आगे बढ़ते जाते हैं। गलती को मानना और उसे सुधारना यही आत्मोन्नति का सन्मार्ग है।
- जिनमें मानसिक बल नहीं है वे ही अपना दोष स्वीकार करने में थरथराते हैं। वे यह नहीं सोचते कि अपराध स्वीकार करना हृदय का महत्त्व है। अपना दोष प्रकट कर देने से ही मनुष्य निर्दोष होता है, उसके मन को शान्ति प्राप्त होती है, चरित्र निर्मल होता है और अयश के बदले सुयश प्राप्त होता है। अनुचित कर्म करके दोष स्वीकार करना साधु-पुरुष का काम है, जो लोग दोष छिपाते हैं, उन्हें चोर समझना चाहिए। जो अपना दोष जितना ही छिपाने की चेष्टा करता है, उतना ही वह अपने को और दोषी बनाता है। अपने दोषों को छिपाकर कोई साधु नहीं कहला सकता है, साधु तभी कहला सकता है जब वह साफ-साफ अपना दोष प्रकट कर दे और अपने किये हुए दोषों पर पश्चात्ताप करे। दोष छिपाने के लिये झूठ बोलना, एक दोष के रहते दूसरा दोष करने के बराबर है। दोष से दोष का उद्धार कभी नहीं हो सकता। आग से कोई आग को नहीं बुझा सकता। जिस प्रकार आग बुझाने के लिए पानी की आवश्यकता है, उसी प्रकार दोष दूर करने के लिए सत्य की आवश्यकता है। इसे भली-भाँति याद रखो कि एक झूठ के छिपाने के लिये दूसरे झूठ की आवश्यकता पड़ती है, अर्थात् जहाँ अपने दोष को छिपाने के लिये मुँह से एक बात झूठ निकली, वहाँ दूसरी झूठ आपसे आप आ खड़ी होती है और यही वस्तु मनुष्य के मानसिक तथा पारलौकिक पतन का कारण होती है। जिस प्रकार पर-दोष

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दर्शन बुरा है, उसी प्रकार अपने दोषों का छिपाना बुरा है।

❑ जब अपने से कोई भूल हो जाए तो बहादुरी के साथ उसे स्वीकार कर लेना चाहिए। सुधार और उन्नति का यही मार्ग है।

❑ मनुष्य के गहरे अन्तस्तल में से जो दिव्य सात्त्विक अनुभूतियाँ उत्पन्न होती हैं, उन्हें आत्मा की वाणी, परमात्मा की आज्ञा ही समझना चाहिए। सद्इच्छाओं को पूरा करने के मार्ग में कोई आसुरी विघ्न-बाधा उपस्थित होती हो तो उसके सामने हमें झुकना नहीं चाहिए, आत्म-समर्पण नहीं करना चाहिए। मनुष्य ईश्वर का अविनाशी राजकुमार है, यह उसके गौरव के प्रतिकूल होगा कि वह तुच्छ से स्वार्थ, विघ्न और प्रलोभनों के सामने अपनी गरदन झुकावे, आत्मसमर्पण करे। संसार में हर एक प्राणी सुख की इच्छा से काम कर रहा है। वर्तमान युग की वैज्ञानिक और भौतिक प्रगति के मूल में यही सुखेच्छा काम कर रही है। यह प्रवृत्ति अस्वाभाविक नहीं है। भगवान की इच्छा है कि मनुष्य सुखपूर्वक रहे और आनन्दमय सरस जीवन व्यतीत करे। यह सरसता और आनन्दमयी स्थिति केवल मात्र भौतिक सम्पदाओं से प्राप्त नहीं हो सकती। वह तब प्राप्त होती है, जब हम अपनी सात्विक शुभेच्छाओं को—अन्तःकरण की प्रेरणाओं को सुनते हैं और उनको पूरा करने के लिए प्रयत्न करते हैं।

❑ अपनी सात्त्विक इच्छाओं का, सत्कर्म करने की प्रेरणाओं का भय या लोभ के कारण यदि हनन किया गया तो भीतर ही भीतर एक ऐसी जलन उठने लगेगी, जिसे संसार की किसी भी भौतिक सम्पदा से शान्त नहीं किया जा सकता। सच्चे सुख को प्राप्त करने के इच्छुकों को यह जान लेना चाहिए कि सद्इच्छाओं को पूर्ण करने के प्रयत्न में ही सुख का स्रोत छिपा हुआ है।

❑ घण्टों निरर्थक बकवास करने से एक छोटे-से तत्त्व या उपदेश पर अमल करना, अपनी आत्मा का विकास करना, सामाजिक तथा आध्यात्मिक मार्ग पर आगे बढ़ना अधिक कल्याणकर है। बहुत-सी बातें बनाना बड़ा सरल है, दूसरों को उपदेश देने में बहु-तेरे कुशल होते हैं, किन्तु वास्तविक तथ्य तो यह है कि जों बात अन्तरात्मा को लगे, उसे कार्यरूप में परिणत कर प्रत्यक्ष किया जाए। कर्म ही संसार में मुख्य तत्त्व है। सफलता के लिए यदि कोई आवश्यक चीज है, तो वह कठोर कर्म के लिए ही है। केवल बातें बनाना, शेखचिल्लियों तथा ढपोलशंखों का काम है। असली मनुष्य वही है, जो बात कम करता है, किन्तु काम बहुत अधिक करता है।

❑ उन्नति करना अपने आप पर अपने कार्यों पर निर्भर है, जो मनुष्य केवल दूसरों का मुँह ताकता और बातें बनाता है, वह भीतरी आत्म-शक्ति को व्यर्थ बरबाद करता है।

❑ विचार दो प्रकार के होते हैं—केवल कल्पना ही कल्पना मनुष्य के लिए अहितकर है। हमारे विचारों में क्रिया का समन्वय अवश्य होना चाहिए। जो व्यक्ति उत्साहपूर्वक कार्य में प्रविष्ट होता है, वही विजयी भी होता है। जो केवल माला जपने में रहेगा, स्वयं परिश्रम न करेगा उसे कुछ भी प्राप्त न होगा। हम मानते हैं कि विचार में प्रबल शक्ति है, किन्तु विचार में शक्ति तब ही है, जब उसे अंकुरित होने का सुअवसर प्राप्त हो। जो विचारों के प्रवाह को अवरुद्ध करता है, वह अपनी उन्नति को पीछे ढकेलता है। जो विचारों में क्रिया को योग नहीं देता, वह विचारों के अंकुरों को पल्लवित होने से, उन्हें फलित होने से रोकता है। कार्य तथा उन्नति का नित्य सम्बन्ध है।

❑ ❑

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

जीवन-साधना

- **पुनन्ति धीरा अपसो मनीषा।** —ऋ. ३।८।५
ज्ञानवान विवेक द्वारा कर्मों को पवित्र बना लेते हैं।

- **कस्ये मृजाना अति यन्ति रिप्रमायुर्दधानाः प्रतरं नवीयः।**
—अथर्व. १८।३।५७
जो मनुष्य अपना पुरुषार्थ बढ़ाते हैं और अपने आपको ईश्वर की भक्ति से पवित्र बनाते हैं उनके सब दोष दूर होते हैं।

- क्या उचित है ? क्या अनुचित ? यह निरन्तर विचारो।

- सारी दुनिया में से काँटे समाप्त नहीं किये जा सकते। जूते पहनकर काँटों के कष्ट से बचा जा सकता है। संसार में से न दुष्ट मिट सकते हैं, न दुष्टता हट सकती है। अपने मन को विवेकी और सहिष्णु बनाकर दुष्टता के घात-प्रतिघात से बचा जा सकता है।

- यदि सज्जन पुत्र स्वर्गाधिकारी बना सकता है तो दुष्ट व दुर्जन नरक भी पहुँचा सकता है। इसलिए सन्तान द्वारा मुक्ति की कामना मूर्खता ही है। —शंकराचार्य

- अक्षर ब्रह्म का जो ज्ञान है उसमें कर्म एवं भक्ति का आनन्द नहीं है, किन्तु पूर्ण ज्ञान में दोनों का ही स्थान है।

- बर्तन को रोज ही मिट्टी-पानी से माँजना पड़ता है। न माँजने पर वह काला हो जाता है। मन को स्वाध्याय और साधना से नित्य माँजना चाहिए। इसके बिना वह काला हो जाएगा।

- सब पापों को छोड़ो। अच्छे गुणों का सम्पादन करो। अच्छे विचारों को धारण करो। यही बुद्ध की शिक्षा है। —बुद्ध वग्गो

- हे भाई ! तू पवित्र रह। किसी से डर मत, मलिन वस्त्र को ही धोबी पत्थर पर पछाड़ते हैं।

- जो पुराना तो ठीक, जो अभ्यास में है वह सही, यह आग्रह बौद्धिक जड़ता का चिन्ह है। जीवित मनुष्य को जड़ नहीं होना चाहिए। चेतनता ही उनकी शोभा है।

- चेतनता इस बात में है कि वर्तमान को समझें और भविष्य के निर्माण का सुदृढ़ आधार निर्मित करें। —सनयात सेन

- दूसरे को उपदेश देने के बजाय अगर कोई उस समय ईश्वर की आराधना करे तो यही पर्याप्त उपदेश है। जो अपने को स्वतन्त्र करने का प्रयास करता है, वही सच्चा उपदेशक है।
—रामकृष्ण परमहंस

- पवित्र और प्रखर बनने के लिए अपना परिष्कार भी करना होगा।

- विवेकशील के लिए कीचड़ में पड़े रत्न भी ग्रहणीय हैं, कीचड़ में पड़े होने से उसे अस्पृश्य नहीं मानते। —हरिऔध

- वह वीरता कैसी जिसमें शक्ति के साथ आत्म-संयम न हो। वीरता उन्माद नहीं, वह आँधी नहीं है, जो उचित-अनुचित का विचार न रखती हो।
तुम्हें दूसरे क्षेत्रों में भी ध्यान दौड़ाना चाहिए। केवल शक्ति-बल पर टिकी हुई वीरता बिना पैर की होती है। उसके साथ विवेक का समभाव भी बना रहना चाहिए। —जयशंकर प्रसाद

- संसार पर शासन शक्ति करती है, पर विचार जब शक्ति पर शासन करने लगता है तो मनुष्य भगवान हो जाता है। —स्वामी विवेकानन्द

- इस प्रकार शुद्ध सिद्ध आनन्दमय पद को प्राप्त कर, इस जीवन को भगवान का समझकर साधना करनी चाहिए। बिना इस साधना के कहीं भी किसी को सिद्धि नहीं मिली है।

- **ममत्तं छिन्दये ताये महाना गोव्व कंचुयं।**
—उत्तराध्ययन १६।८७
आत्म-साधक ममत्व के बन्धन को उसी प्रकार उतार फेंकें जैसे सर्प अपने पर आई केंचली उतार फेंकता है।

- विश्व-शक्ति का विविध कारोबार सतत् चल रहा है। उस कारोबार में से अपने हिस्से आये हुए काम को हम भी निरन्तर करते रहें, इसी में परमात्मा की सच्ची उपासना है। —नाथ जी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ दिन भर राम-राम जपना ही भजन नहीं है। यदि आप अपने दोषों को ढूँढ़ने और उन्हें निकालने में लग जाते हैं, तो यह निश्चित मानिये कि आप ईश्वर की ओर अग्रसर हो रहे हैं। मन की मलीनता, अन्तः के पाप जिन उपायों से मिटें, वह सब ईश्वर के भजन हैं। भले ही उसमें नाम-जप सम्मिलित न हो।

—मेहर बाबा

❑ "हे लोगो ! जो कुछ मैं कहूँ वह परम्परागत है। इसलिए उसे सच मत मानना। तुम्हारी पूर्व परम्परा के अनुसार है, इसलिए उसे सच मत मानना। कदाचित वैसा ही होगा, यह समझ कर उसे सच मत मानना। तर्क सिद्ध है ऐसा समझकर उसे सच मत मानना। लौकिक प्रचलन है, ऐसा मानकर उसे सच मत मानना। सुन्दर लगता है इसलिए उसे सच मत मानना। तुम्हारी श्रद्धा का पोषक है, इसलिए उसे सच मत मानना।"

"मैं प्रसिद्ध साधु हूँ—पूज्य हूँ, ऐसा मानकर कथन को सच मत मानना। परन्तु यदि तुम्हारी विवेक-बुद्धि को मेरा उपदेश सच मालूम हो तो ही उसे स्वीकार करना।"

—महात्मा बुद्ध

❑ "मनोनिग्रह की अपेक्षा शरीरनिग्रह का अभ्यास अधिक सहज है। इसलिए शरीर के अभ्यास से प्रारम्भ करना श्रेयस्कर है। शरीरनिग्रह का अभ्यास अच्छी तरह दृढ़ होने पर मनोनिग्रह का अभ्यास करना सरल हो जाता है।"

—स्वामी विवेकानन्द

❑ "किसी विशेष विषय के ज्ञान से ही हमको सन्तुष्ट नहीं होना चाहिए, विशेष ज्ञान के पहले साधारण ज्ञान ऐसा होना चाहिए, जो मनुष्य को जीवन-संग्राम में सफल बना सके। उसकी विवेक-बुद्धि को निर्णय की क्षमता दे सके, जो अधिक ज्ञान प्राप्त करने की परिभाषा को हमेशा जाग्रत रखे और जिससे प्रत्येक मनुष्य समाज और देश में अपने कर्त्तव्यों के प्रति निष्ठा जाग्रत रखे।"

—डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

❑ परिस्थितियों के परिवर्तन से कोई लाभ नहीं। हमारी बाधा तो मन है, चाहे घर हो या जंगल, हमें इस पर विजय प्राप्त करनी है। आप जंगल में मन पर विजय पा सकते हैं, तो घर में क्यों नहीं ? इसीलिए परिस्थितियों को क्यों बदला जाए ? कोई भी परिस्थितियाँ हों, आप अभी से प्रयत्न प्रारम्भ कर सकते हैं।

—महर्षि रमण

❑ **समाधौ क्रियमाणे तु विघ्ना आयान्ति वै बलात्।**
अनुसन्धानसाहित्यमालस्यं भोगलालसम्॥
लयस्तमश्च विक्षेपो रसास्वादश्च शून्यता।
एवं यद्विघ्नबाहुल्यं त्याज्यं ब्रह्मविदा शनैः॥

—अपरोक्षानुभूति १२७-१२८

समाधि का अभ्यास करते समय कौन-कौन से विघ्न आते हैं, जिनसे साधक को सावधान रहने की नितान्त आवश्यकता होती है ? इस विषय में आचार्य शंकर का मत है कि समाधि के अभ्यास के समय अनुसन्धान, साहित्य, आलस्य, भोगेच्छा, लय, तम, विक्षेप, रसास्वाद और जड़ता (शून्यता) आदि विघ्न हठात आ जाते हैं। इस आने वाले विघ्नों के प्रति साधक, ब्रह्मवेत्ता को सावधान रहना चाहिए और शनैः-शनैः उसे दूर करना चाहिए।

❑ गाय का तुरन्त का जन्मा बच्चा जैसे बीसों बार गिरने-उठने पर कहीं खड़ा हो सकता है, इसी प्रकार साधना करते समय साधक अनेक बार गिर पड़ने पर कहीं अन्त में सिद्धि लाभ प्राप्त करता है।

—रामकृष्ण परमहंस

❑ आत्मा का स्वरूप आनन्दमय है। जिसे आत्मज्ञान हो जाता है, उसे निरन्तर आनन्दित ही देखा जा सकता है। आध्यात्मिकता का दूसरा नाम है—प्रसन्नता। जो प्रसन्न नहीं रह सकता, उसने न आत्मा को जाना और न ईश्वर को। शोक-संतप्त-उद्विग्न और विक्षुब्ध व्यक्ति तो अनात्मतत्त्वों के बहाने मात्र हैं। जो क्रोध से झल्लाया करता है, जिसे खीज और आवेश का बार-बार शिकार होना पड़ता है, उसकी आस्तिकता संदिग्ध ही मानी जाएगी।

❑ **"देवो दानाद्वा द्योतनाद्वा दीपनाद्वा"** (निरुक्त ७. ४. १५) के अनुसार समाज को देने वाला, समाज की सहायता व रक्षा करने वाला ही देवता माना गया है। देवता वह है जो औरों को दे। जो व्यक्ति अपनी ज्ञानग्नि से अपने समस्त कषाय-कल्मषों को जलाकर स्वयं प्रकाशरूप हो, दूसरों के अन्धकारमय जीवन को 'प्रकाशित' करता हो, अपने ज्ञान से दूसरे भूले-भटकों को मार्ग दिखाता हो तथा इस तरह पूरे समाज का सत्पथ प्रदर्शक बने उसे ही 'देवता' माना जाता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ अपने में निहित शक्ति की उपयोगिता जगती में सिद्ध कर सूर्य, चन्द्र, अग्नि आदि ने 'देवता' की संज्ञा प्राप्त की है। यह निरन्तर देते रहते हैं। सृष्टि में विद्यमान चेतना और वैभव सब इन्हीं देव-शक्तियों की देन है। इस उत्सर्ग की भावना ने ही उन्हें यह पदवी दिलाई। 'देवत्व' ने ही सूर्य-चन्द्र आदि को 'देवता' के रूप में निरूपित किया अन्यथा स्थूल रूप में तो यह ग्रह, उपग्रह, पिंड आदि ही वैज्ञानिकों द्वारा माने गये हैं।

❑ जिन प्रकाश-पुंज व्यक्तित्वों के व्यवहार्य सिद्धान्तों एवं कर्त्तव्य से संतप्त प्राणियों को मार्ग मिले, उसके कषाय-कल्मषों को दूर करने की प्रेरणा मिले, सांसारिक कष्टों से मुक्ति पाने का पथ-प्रशस्त हो वे 'देवतुल्य' ही माने जाकर सम्मानजनक स्थान प्राप्त करते हैं।

देवता होने के लिए मात्र ज्ञान व शक्ति का पुंज होना ही पर्याप्त नहीं, वरन् अपनी शक्ति से लोक-मंगल व लोक-निर्माण के कार्य करना भी है। अपनी शक्तियों का लोक-मंगल से उत्सर्ग किये बिना कोई भी देवता नहीं बन सकता।

—डॉ. राधाकृष्णन्

❑ मैं ही आगे हूँ, मैं ही कूड़ा-करकट। मेरी आग मेरे कूड़े को जलाकर भस्म कर दे, तो मैं अच्छा जीवन पाऊँगा। *—खलील जिब्रान*

❑ जो दे नहीं सकता उसे पाने का भी अधिकार नहीं। *—बेकन*

❑ चरित्र का विकास तो संगति से होता है, परन्तु बुद्धि व चिन्तन एकान्त के ही विषय हैं। *—गेटे*

❑ बुद्धि की शक्ति उसके उपयोग में ही है। बुद्धि को विश्राम देने से तो बुद्धि मन्द हो जाती है।

—अलेक्जेण्डर पोप

❑ जो समय चिन्ता करते कटा वह समझो कूड़ेदान में डाल दिया, जो चिन्तन में लगा समझो कि वह ब्याज सहित लौटाने वाली बैंक में जमा हो गया। *—चिंगचाओ*

❑ ज्ञान का सार यह है कि यदि वह पास हो तो उसका प्रयोग करना चाहिए और न हो तो अपने अज्ञान को स्वीकार करना चाहिए।

—कन्फ्यूशियस

❑ एकान्त से अच्छा साथी मुझे और कोई नहीं मिला। *—थोरो*

❑ आत्मा कुछ न कुछ जरूर कहती है, उसकी सलाह मानना तुम्हारा धर्म है। *—प्रेमचन्द*

❑ वह शक्ति जो मनुष्य को धरती से उठाकर आकाश तक पहुँचा सकती है, केवल ज्ञान में सन्निहित है। ज्ञान ही सर्वोपरि शक्ति है। *—रैंडौल्फ*

❑ दूसरे को जीतने की अपेक्षा अपने आपको जीतो। अपने आपको जीतने का अर्थ है मन को जिधर चाहे उधर मत दौड़ने दो। जब वह वासना की ओर झुके तो उसे संयम की ओर उठाओ, जब वह लोभ, लालच करे तो उसे जीवन की नश्वरता दिखाओ। दूसरों पर ऐंठ और ऐब करने की प्रवंचना से बचकर यदि सीधी-सच्ची सरल राह चल सको तो समझ लो संसार समर के सच्चे विजेता तुम हो। उस विजय की विभूतियाँ तो अनायास ही मिलेंगी।

—बटलर

❑ मन का मैल मन में ही दबाते चले जाने से मन विषाक्त हो जाता है। उसकी प्रतिक्रिया मनुष्य जीवन में बड़ी खराब और कुरूप होती है। क्या ही अच्छा होता यदि हमारा मन पारदर्शक होता, शीशे की तरह आर-पार होता। यदि ऐसा होता तो हम कितने सुखी रहते, कितने निर्मल होते ? क्योंकि पार दिखने वाले शीशे में मैल ज्यादा दिन तक निभता नहीं। मन की बुराइयाँ भी प्रकट कर देने से मन के कुसंस्कारों का अन्त हो जाता है और स्वच्छता को प्रवेश के लिए स्थान मिल जाता है।

—सम्राट लुई

❑ मैंने यही तो कहा था कि बुरी बात मत सोचा करो। तुम्हें वह साधारण बात लगी, पर मन में आया हुआ, यह एक ही गन्दा विचार और व्यवहार में प्रयुक्त हुआ छोटा-सा अशुभ कर्म ही हृदय और आत्मा के अमित वैभव को नष्ट कर डालता है। *—लुइसकेन*

❑ जब तक पूर्णतया विवेक से मार्गदर्शन होता, मनुष्य पशु से कुछ ही अच्छा रहता है। मानवीय आवश्यकताओं की वृद्धि और परिष्कार के लिए जब अतीत के अनुभवों का भी उपयोग होगा, मनुष्य तभी पूर्ण बनेगा।

—थियोडोर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

- समाज में एक सुखपूर्ण सम्मानित स्थिति प्राप्त करने की कामना सभी में रहती है और इसकी तैयारी के लिए लोग धन, बल, विद्या और सहयोगियों का संग्रह भी करते हैं। किन्तु इस संग्रह के लिए लोग किस-किस प्रकार के साधन उपयोग में लाते हैं, इसका विचार नहीं करते, जिसका परिणाम यह होता है कि उनका वास्तविक व्यक्तित्व विकृत हो जाता है, जिससे यदि वे वांछित स्थिति प्राप्त भी कर लेते हैं तो भी एक तरह से हास्यास्पद ही बने रहते हैं।
- किसी जन्नत दशा को प्राप्त करने के लिए व्यक्तित्व का विकास सबसे समीचीन साधन है। यदि मनुष्य अपने गुण-कर्म-स्वभाव में उदात्तता का समावेश कर अपने व्यक्तित्व को विकसित कर ले तो समुन्नत स्थिति पाने के लिए किन्हीं अन्य साधनों की आवश्यकता ही न रहे। संसार के सारे साधन व्यक्तित्व के अधीन रहते हैं और व्यक्ति बाह्य साधनों के अधीन नहीं रहता। व्यक्तित्वरहित प्राणी कोई उन्नत दशा प्राप्त करने पर भी वह अपेक्षित सुख नहीं पाता जो उसे प्राप्त होनी चाहिए। *—रोम्याँ रोलाँ*
- अपनी भूलों को समझना, उन्हें सुधारना ही प्रगति का मूलमन्त्र है। *—अरस्तू*
- अपने विवेक को अपना शिक्षक बनाओ। शब्दों का कर्म से और कर्म का शब्दों से मेल कराओ। *—शेक्सपियर*
- भूतकाल को शोकपूर्ण दृष्टि से न देखो, वह पुनः लौट नहीं सकता। बुद्धिमत्ता के साथ वर्तमान की उन्नति करो, यह तुम्हारा है। *—लाँगफैलो*
- जीवन में तुम्हारी सबसे बड़ी भूल यह है कि तुम पर्याप्त दूर तक आगे नहीं देखते। *—डिकेन्स*
- मनुष्य को उसकी शैक्षणिक योग्यता नहीं, आन्तरिक प्रतिभा आगे बढ़ाती है। उन्नति चाहने वाले हर व्यक्ति को चाहिए कि वह अपनी आत्मा सुदृढ़ करे। *—सनयात सेन*
- सुन्दरता की तलाश में चाहे हम सारी दुनिया का चक्कर लगा आएँ, अगर वह हमारे अन्दर नहीं है तो कहीं नहीं मिलेगी। *—एमर्सन*
- क्या उचित है या अनुचित यह निरन्तर बिचारते रहो।
- अन्धपरम्परा को छोड़कर तर्क और विवेक का आश्रय ग्रहण करो।
- तर्क की सार्थकता तब है, जब वह श्रद्धा के साथ जुड़ा हो।
- सद्विचार पर बुद्धि रखने का ही नाम श्रद्धा है। यही श्रद्धा मनुष्य को बल देती है, सब प्रकार की प्रेरणा देती है और उसके जीवन को सार्थक बनाती है।
- पराये पापों के प्रायश्चित की चिन्ता न करो, पहले अपने पापों का प्रायश्चित करो।
- पाप का प्रायश्चित पश्चात्ताप है। पश्चात्ताप का अर्थ है—पाप की पुनरावृत्ति न करना।
- पश्चात्ताप अन्तिम चेतावनी है, जो हमें आत्म-सुधार के निमित्त ईश्वर की ओर से मिलती है। यदि इसका अभिप्राय न समझकर हम शोकावस्था में अपने प्राणों का अन्त कर दें तो मानो हमने आत्मोद्धार की अन्तिम प्रेरणा को भी निष्फल कर दिया।
- "भक्ति अपने सुख के लिए हुआ करती है, दुनिया को दिखलाने के लिए नहीं, जहाँ दिखलाने का भाव है वहीं कृत्रिमता है।"
- हे सौन्दर्य ! तू अपने को प्रेम के अन्दर ढूँढ़। अपने दर्पण की मिथ्या प्रशंसा में नहीं।
- "उपासना में चरित्र द्वारा जो हम ग्रहण करते हैं, वही हमारा प्रधान खाद्य है। वहाँ चाञ्चल्य नहीं, वहाँ वैचित्र्य का अन्वेषण नहीं। वहाँ हम शान्त होते हैं शुद्ध होते हैं और ईश्वर में प्रतिष्ठित होते हैं।"
- उपासना का अर्थ है, देवत्व के समीप बैठना अथवा अपनी जगह पर देवता को घसीट लाना। दोनों का सारांश है सद्गुणों से अपने को ओत-प्रोत कर लेना।
- सच्ची उपासना यही है कि जिस ईश्वर के हम उपासक हैं, उसी के प्रतिरूप बन जाएँ। परमात्मा को जानकर उसके अनन्त सौन्दर्य का रसपान करें और उसके कार्यों को करें।
- जिस प्रकार बहता हुआ जल पत्थरों को चीरता हुआ, अपने स्रोत सागर में पहुँचता है, उसी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रकार साधक, कठिन परिस्थितियों से गुजरता हुआ, लक्ष्य की ओर अग्रसर होता है।

- साधक के लिए सबसे बड़ा प्रतिबन्ध कीर्ति है।
- यदि हम त्योहारों और पर्वों की महत्ता तथा वास्तविकता को समझकर उनमें छिपे रहस्यों को जानकर अपने जीवन में धारण करने का प्रयत्न करें तो यह हमारे निर्वाण में विशेष सहायक होंगे।
- महावीर से किसी ने पूछा कि हम क्या करें ? तो महावीर ने कहा—"क्या करने की उतनी चिन्ता तुम्हें नहीं करनी चाहिए। जो भी तुम करो विवेक युक्त करो, होश में रहकर करो। यदि किसी पर अचानक क्रोध भी करना पड़े तो होश मत गँवाओ।"
- विद्वत्ता युवकों को संयमी बना देती है। यह बुढ़ापे का आराम है। निर्धनता में धन का काम देती है और धनवानों के लिए आभूषणों का काम करती है
- अपनी समझदारी को बढ़ाने के साथ ही यह भी ध्यान रखें कि वे बेवकूफियाँ भी हैं, जिन्हें आपको घटाना भी है।
- विद्वत्ता एक अच्छी चीज है और हर आदमी के हृदय में उसको प्राप्त करने की तीव्र आकांक्षा होनी चाहिए, किन्तु दृढ़ व्यक्तित्व प्राप्ति के वास्ते यह अकेली काफी नहीं होती इसके साथ-साथ संस्कार भी होना चाहिए।
- तुम्हें अपने प्रत्येक उद्देश्य की खूब छानबीन करनी चाहिए और इस काम में तुम्हें तब तक लगे रहना चाहिए, जब तक अपने उद्देश्य के बारे में यह विश्वास न हो जाए, कि इसका भाव ठीक है।
- जो कुछ करो नियमानुसार करो, जो कुछ कहो ठीक-ठाक कहो और जो कुछ सोचो युक्तिपूर्वक सोचो।
- न जाने क्यों, हम दूसरों की बुराइयों से बहुत कुछ सीखते हैं। यदि अच्छाइयों से सीख सके होते तो कितना अच्छा होता ?
- दूसरों की बुद्धि पर ही चलने वाले मूर्ख होते हैं। नई व पुरानी बातों की परीक्षा करके जो चलते हैं, वही बुद्धिमान कहलाते हैं।
- **दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्ययालंकृतोऽपि सन्।**
  मणिना भूषितः सर्पः किमसौ न भयंकरः।।
  दुर्जन विद्यावान भी हो उसे छोड़ देना चाहिए, क्योंकि मणि से शोभायमान सर्प क्या भयंकर नहीं होता ?
- उखड़ो मत, झल्ला न उठो, झुँझलाना छोड़ दो, धीरता से सुनो, अपनी झूठी निन्दा भी चुपचाप सुनो, फिर शांतचित्त से विचार करो क्यों वह तुम्हारी निन्दा करता है ? जरूर कोई कारण मिलेगा, अधिकांश में तो अपनी कोई कमजोरी ही मिलेगी, उसे दूर करो और निन्दक का उपकार मानो।
- लोग प्रशंसा करते हैं या निन्दा, इसकी चिन्ता छोड़ो। सिर्फ एक बात सोचो कि ईमानदारी से जिम्मेदारियाँ पूरी की गईं या नहीं।
- विवेकहीन उत्साह तूफान से घिरे जहाज की तरह है, जिसके डूबने की आशंका ही क्षण-क्षण बनी रहेगी।
- सांसारिक सफलताओं में पुरुषार्थ की अत्यधिक प्रगति के लिए आत्म-परिष्कार एवं श्रद्धा की आवश्यकता पड़ती है।
- अन्तःकरण का परीक्षण, सुधार और परिष्कार जारी रखो, ताकि भौतिक प्रगति और आन्तरिक शांति के मार्ग पर द्रुतगति से बढ़ सको।
- इन्द्रियाँ किसी को नहीं सतातीं, वे तो उपयोगी प्रयोजनों के लिए बने हुए साधनमात्र हैं। उच्छृंखल तो मन है। उसी को समेटो, ताकि इन्द्रियों द्वारा अपनी उच्छृंखलता के लिए बाधित न हों।
- इच्छाओं को त्यागने का अर्थ यह नहीं है कि महानता के लक्ष्य तक पहुँचने की उमंगों को भी गँवा बैठा जाए।
- ज्ञान का अर्थ है—जानने की शक्ति। सच को, झूठ को पृथक करने वाली जो बुद्धि है, उसी का नाम विवेक है।
- आत्मा का यथार्थ ज्ञान सम्पादन करना प्रत्येक मनुष्य का आवश्यक कर्त्तव्य है। आत्मा अत्यन्त सूक्ष्म, अचल, शुद्ध और सच्चिदानन्द रूप है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जो मनुष्य यथार्थ ज्ञान दृष्टि से आत्मा को नहीं जानता, किन्तु भ्रम व अज्ञानवश होकर उसका कर्त्ता, भोक्ता, सुखी, दुःखी, स्थूल, कृश, अमुक का पिता, अमुक का पुत्र, अमुक की स्त्री, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र इत्यादि भिन्न-भिन्न प्रकार का समझता है, वह बड़ा अपराधी है।

❑ ज्ञान का अर्थ घटनाओं अथवा तथ्यों की जानकारी नहीं है। हो सकता है कि किसी मनुष्य को सारी दुनिया की जानकारी हो और फिर भी वह ज्ञान शून्य ही हो।

❑ जो दुनिया के बारे में बहुत जानता है, उसे अध्ययनशील, अनुभवी और जानकार भी कहा जा सकता है। ज्ञानवान वह है, जिसने अपनी आत्मा को समझा और दायित्वों को निबाहा।

❑ उपासना द्वारा विवेक होता है और विवेकवान होने से शोक तथा हर्ष दोनों नहीं होते।

❑ प्रयत्न द्वारा बुराइयों से बचना तथा श्रेष्ठता से लाभ उठाना अपने वश की बात है। बस यह ही तुम्हारी होशियारी है।

❑ प्रत्येक पुरुष के भीतर जो एक आदेश देने वाली शक्ति होती है, जिसके शासन के सारे जीवन की लीला नियंत्रित एवं संगठित होती रहती है, वही विवेचना शक्ति उसी का देवता है।

❑ मनुष्य की प्रत्येक भूल उसे कुछ न कुछ सिखा देती है, यदि वह सीखना चाहे।

❑ दिनभर के दुराचारों तथा बुरी आकांक्षाओं से अलग रहना रात भर के भजन से ज्यादा अच्छा है।

❑ भूल तो मनुष्य से ही हो जाती है, किन्तु बुद्धिमान तथा गुणवान वह है, जो अपनी भूल को मान लेता है।

❑ किसी कर्म की नीतिमत्ता कर्त्ता के उद्देश्य पर अर्थात् जिस बुद्धि से कार्य करता है, उस पर अवलम्बित रहती है।

❑ जो कूड़े को खाद बना सके, उसे सच्चा कलाकार समझो।

❑ एक अनपढ़ व्यक्ति दार्शनिक अरस्तू के पास पहुँचा और ब्रह्मज्ञान की दीक्षा माँगने लगा। सिर से पैर तक दृष्टि डालने के बाद उन्होंने सिखावन दी। नित्य कपड़े धोना और बाल सँवारना आरम्भ करो। गलतियाँ सुधारते चलने का सिलसिला ही साधना कहलाता है और परमात्मा तक पहुँचाता है।

❑ भूत अब लौटने वाला नहीं। भविष्य का कोई निश्चय नहीं। सँभालने और बनाने योग्य तो वर्तमान ही है।

❑ सुनो अनेकों की पर अपनाओ उन्हीं की, जो न्यायोचित दिखे। लोगों का अविवेकी बकवाद तुम्हें भ्रान्त धारणाओं में न उलझा दे। इसलिए हर कथन की उपयोगिता का विवेक-बुद्धि से परीक्षण करो।

❑ शास्त्र पत्थर की लकीर नहीं है और न श्रेष्ठ पुरुषों के वचन आत्यंतिक सत्य पर आधारित हैं ? ऐसा होता तो उनके बीच विरोध क्यों पाए जाते ? तुम सच्चाई को ढूँढ़ो और वह जहाँ भी मिले, वहाँ से चुन लो।

❑ क्षुद्रतम में भी विराट के सन्देश छुपे हैं। जो उन्हें उखाड़ना जानता है वह ज्ञान को उपलब्ध करता है। जीवन में सजग होकर चलने से प्रत्येक अनुभव प्रज्ञा बन जाता है और जो मूर्छित बने रहते हैं, वे द्वार आये आलोक को भी वापस लौटा देते हैं।

❑ फ्रांस के क्रान्तिकारी लेखक विक्टर ह्यूगो ने लिखा है—"ईश्वर ने यदि मनुष्य को पीछे की ओर लौट चलने के इरादे से बनाया होता तो उसकी आँखें आगे की ओर न बनाकर पीछे की ओर बनाई होतीं।"

❑ **जीवत्यर्थदरिद्रोऽपि धी दरिद्रो न जीवति।**
धन का दरिद्री तो जीवित रहता है, पर बुद्धि का दरिद्री जीवित नहीं होता।

❑ भ्रान्त विचारों से बढ़कर अनर्थकारी और कोई नहीं। जो सुनो उसे बिना विचारे ग्रहण न करो। आँखें मूँदकर किसी के भी कथन को मान्यता न दो।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मनोबल एवं इन्द्रिय-निग्रह

❑ जो मन की शक्ति के बादशाह होते हैं, उनके चरणों पर संसार नतमस्तक होता है।

—स्वामी रामतीर्थ

❑ लोभ, दीनता, भय और धन आदि किसी भी कारण से मैं अपना व्रत नहीं छोड़ सकता—यह मेरा दृढ़ निश्चय है। *—भीष्म*

❑ पानी जैसी चंचलता से मनुष्य महान नहीं बनता। *—बर्क*

❑ हारता वह है, जिसके मन में फैसला होने से पहले ही हारने का भय समा जाता है। भय उसे लगता है, जो किसी को सताता और पाप करता है। *—नेपोलियन*

❑ इतिहास, पुराण सभी साक्षी हैं कि मानव के संकल्प के सम्मुख देव-दानव सभी पराजित होते हैं। *—एमर्सन*

❑ दृढ़निश्चय वाले मन को तथा नीचे की ओर बहने वाले जल की गति को रोक पाना बहुत कठिन है। *—कालिदास*

❑ अशुभ कर्मों को न करो। शुभ कर्मों का अभ्यास करो, चित्त पर पूर्ण निग्रह रखो, यही बुद्ध की शिक्षा है। *—उदान वग्ग*

❑ **परद्रव्येष्वभिध्यानं मनसानिष्टचिन्तनम्।**
वितथाभिनिवेशश्च त्रिविधं कर्म मानसम्।।

—मनुस्मृति १२।५

परधन के लेने की इच्छा, मन में किसी का अनिष्ट चिन्तन करना, नास्तिकता यह तीन मानसिक पाप हैं।

❑ ईश्वरीय कृपा मानवीय संकल्प के बिना कुछ नहीं कर सकती, न मानवीय संकल्प ईश्वरीय कृपा के बिना कुछ कर सकता है।

—सन्त जॉन क्राइसोस्टोम

❑ जब तक मन अस्थिर और चंचल है, तब तक किसी को अच्छा गुरु और साधु लोगों की संगति मिल जाने पर भी कोई लाभ नहीं होता। *—रामकृष्ण परमहंस*

❑ स्वर्ग या नरक में जाने की कुंजी भगवान ने हमारे ही हाथों में दे दी है और वह कुंजी है मन। *—स्वामी शिवानन्द*

❑ फल-फूल लगते तो टहनियों पर हैं, पर उन्हें फलने-फूलने योग्य बनाने वाली बहुमूल्य सामग्री भूमिगत जड़ों से ही उपलब्ध होती है। भले ही वह तारतम्य प्रत्यक्ष आँखों से दिख न पड़े। सौभाग्य घटनाओं, उपलब्धियों, परिस्थितियों एवं सफलताओं के रूप में दृष्टिगोचर होता है तो भी उनका उद्गम केन्द्र मनुष्य के अन्तराल में छिपा रहता है। जब वहाँ आदर्शवादी उमंगें उठती हैं, तो उन्हीं का प्रतिफल सौभाग्य भरे सुअवसरों के रूप में फलता-फूलता दृष्टिगोचर होता है।

❑ मनुष्य तत्त्व के अन्तर्गत 'मन' ही सार वस्तु है। इसी औजार के सहारे वह छोटे-बड़े कार्यों का प्रतिपादन करता है। पाप-पुण्य, उन्नति-अवनति, सफलता-असफलता, स्वर्ग-नरक की रचना करता है। जिस औजार के ऊपर सारा दुःख निर्भर है, उसका ठीक प्रकार से प्रयोग करना हर व्यक्ति को आना चाहिए। किन्तु कितने लोग हैं, जो अपने मन की शक्तियों का उपयोग करना जानते हैं ? बन्दर के हाथ में तलवार हो, बछड़े की दुम से राजसिंहासन बँधा हो तो वे दोनों पशु उससे कुछ लाभ न उठा सकेंगे वरन् उल्टे आफत में फँस जावेंगे। जिसे बन्दूक के कलपुर्जों का ज्ञान न हो, वह गोली-बारूद सहित बढ़िया राइफल लिये फिरे तो उससे लाभ तो कुछ न उठावेगा, यदि कुछ भूल हुई तो उल्टा मुसीबत में पड़ जावेगा। अनेक मनुष्यों को हम नाना प्रकार की आपत्तियों, कठिनाइयों और वेदनाओं में तड़पता हुआ देखते हैं। इनमें से अधिकांश कष्ट उनके पैदा किए हुए और काल्पनिक होते हैं। इन दुःखों का सारा कारण मन का कुसंस्कारी होना है। यदि मन रूपी औजार को लोग ठीक तरह प्रयोग करना जानते हैं और कर सकते हैं तो दुनिया के आधे से अधिक कष्टों का अपने आप अन्त हो जाता है।

—महायोगी अरविन्द

❑ मन ही सबसे प्रबल है। मन की प्रेरणा से मनुष्य की जीवनदिशा बनती है। मन की शक्तियों से वह बड़े काम करने में समर्थ होता है। मन ही नीचे गिराता है, मन ही ऊँचा उठाता है। असंयमी और उच्छृंखल मन से बढ़कर अपना और कोई शत्रु नहीं। जिसका मन विवेक और कर्त्तव्य को ध्यान

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में रखते हुए सन्मार्ग पर चलने का अभ्यस्त हो गया हो तो वह देवताओं के सान्निध्य जैसा सुखकर होता है।

- मन की गतिविधियों पर सूक्ष्म दृष्टि से निरंतर ध्यान रखे। उसे कुमार्गगामी न होने दे। दुर्भावनाओं को प्रवेश न करने दे। वासना और तृष्णा से चित्तवृत्तियों को हटाए। किसी का अहित न सोचे। अहंकार को न बढ़ने दे। पाप से मन को बचाये रहना और उसे पुण्य में प्रवृत्त रखना, यही मॉनव जीवन का सबसे बड़ा पुरुषार्थ है। *—वशिष्ठ*

- जब समुद्र के किनारे कोई बड़ी लहर आकर टक्कर मारती है, तब उससे बड़ी भारी आवाज निकलती है, परन्तु वह लहर करोड़ों सूक्ष्म तरंगों के एकीकरण से उत्पन्न होती है और वह बड़ी भारी आवाज भी उन सूक्ष्म तरंगों की तरह छोटी-छोटी आवाजों के एकीकरण का ही फल होती है। वे छोटी-छोटी आवाजें स्वतन्त्र रूप से हमारे अनुभव में नहीं आतीं। इसी प्रकार हमारे हृदय की गति इत्यादि सब क्रियाएँ कर्म ही हैं। यदि किसी मनुष्य का सच्चा चरित्र आपको जानना हो, तो उसके किए हुए किसी बड़े कार्य में आप उसकी ठीक-ठीक परीक्षा नहीं कर सकते। मौका आ जाने पर कोई अत्यन्त कृपण मनुष्य कर्ण को भी लज्जित कर सकता है। यदि ऐसे ही किसी मौके से हम किसी के चरित्र का अनुमान करेंगे तो प्रायः उसमें भूल होने की सम्भावना है। मनुष्य के प्रतिदिन के व्यवहार और उसकी छोटी-छोटी बातों का सूक्ष्म अवलोकन करने से ही उसके चरित्र का यथार्थ ज्ञान होगा। प्रत्येक मनुष्य के जीवन में कुछ ऐसे मौके आते हैं कि वह उस समय लघुत्व भूलकर कुछ महत्त्वार्थ कर जाता है।

  किसी मनुष्य का दैनिक जीवन ध्यानपूर्वक और निकटस्थ होकर देखने से पता चल जाता है कि यह किस प्रकार के विचार करता है। विचारों की अत्यन्त सूक्ष्म लहरें जब घनीभूत होकर दृश्यमान होती हैं तो वह कार्य के रूप में दिखाई पड़ती हैं। अपनी व्यापक इच्छाशक्ति से जिन्होंने संसार का स्वरूप ही बदल दिया, वे समर्थ पुरुष बड़े भारी कर्मशील थे। सम्पूर्ण संसार की उलट-पुलट देने वाली सामर्थ्य उन्होंने अनेक युगों तक सूक्ष्म कर्म—विचार करके अपने में एकत्र की थी। भगवान बुद्ध अथवा भगवान ईसामसीह ने जन्म-जन्मान्तरों से अपने मन में शुभसंकल्पों का बीजारोपण किया था, उनके अन्तिम पराक्रम उन्हीं संकल्पों का एकत्रीकरण समझना चाहिए। *—स्वामी विवेकानन्द*

- मन की शक्ति का सदुपयोग करना सीखिए।

- पदार्थ जड़ है। उसमें हलचल उत्पन्न करने का काम शक्ति करती है। जागतिक हलचलों में जो शक्ति झाँकती है, उसे विज्ञान की भाषा में एनर्जी-पावर कहते हैं। विद्युत के अनेक रूप उसके भेद-उपभेदों का परिचय देते हैं। संसार में जो कुछ घटित हो रहा है उसका श्रेय उसी शक्ति को है, जिसे विज्ञानी अपने यन्त्रों द्वारा और आत्म-ज्ञानी अपने मन्त्रों द्वारा प्रकट कर पाते एवं प्रमाणित करते हैं।

- जीव चेतना है, पर वह चेतना भी सक्रिय तब होती है, जब उसे शक्ति का सहयोग मिलता है। चेतना के साथ समर्थन का समन्वय होने से ही वह अपने वर्चस्व को प्रकट कर पाती है। अकेली चेतना तो अपने अस्तित्व को बनाये रहने भर में सीमित बनी रहती है। परब्रह्म की मूल सत्ता का तत्त्वदर्शियों ने साक्षी, द्रष्टा, अचिन्त, निर्विकल्प जैसे शब्दों में निरूपण किया है।

- चेतना के प्रकटीकरण और प्रस्फुरण की समस्त सम्भावनाएँ संकल्प-शक्ति में केन्द्रीभूत हैं। संकल्प की शक्ति से अपरिचित होने और उसके उपयोग का अभ्यास-अनुभव न होने के कारण ही मनुष्य को अभावग्रस्त, अविकसित स्थिति में पड़े रहने का दुर्भाग्य सहन करना पड़ता है; जिन्हें अपने को बढ़ाना और उठाना है, उन्हें संकल्प-शक्ति को उभारने और उसका सुदृढ़ अवलम्बन ग्रहण करने के अतिरिक्त और कोई मार्ग है नहीं। संकल्पवान ही अपनी प्रसुप्त क्षमताओं को जगाते हैं और उसके चुम्बकत्व से अभीष्ट साधनों तथा सफलताओं को उपलब्ध करते चले जाते हैं। प्रगति का दार्शनिक इतिहास यही है। द्रुतगति से आगे बढ़ने वालों को संकल्पपरथ पर आरूढ़ होकर ही लक्ष्य तक पहुँचने में सफलता मिलती रही है।

- परमात्मा को एकाकीपन अखरा, उसने अपने विस्तार और विनोद के लिए अभीष्ट साधनों की आकांक्षा की। संकल्प द्वारा उसने कल्पवृक्ष की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भूमिका निबाही और वह सब कुछ प्रस्तुत हो गया। जो स्रष्टा को अभीष्ट था। संकल्प का देवता हमारी प्रगति और सुविधा के लिये जो आवश्यक है, उसका वरदान देने खड़ा है। आवश्यकता इतनी भर है कि हम उसकी शक्ति को पहचानें और भक्ति की साधना कर सकने का साहस जुटाएँ।

❑ इच्छाशक्ति का एक प्रचंड बल है। मनुष्य जीवन का यही बिजलीघर है। इस शक्ति का जो जैसा उपयोग करता है, वह वैसा ही बन जाता है। आग में जलाने की ताकत मौजूद है। कोई इस ताकत को भली ओर लगाता है, कोई बुरी ओर। वैज्ञानिक और शिल्पी लोग इसकी सहायता से भाप बनाकर कल-कारखाने चलाते और तरह-तरह की चीजें तैयार करते हैं। पण्डित हवन करके इसके द्वारा वायु शुद्ध करते हैं और चोर, डाकू, लुटेरे आग लगाकर गाँव के गाँव तबाह कर देते हैं—सैकड़ों को अनाथ बना देते हैं। शक्ति का क्या परिणाम होगा, यह प्रयोग करने वालों की इच्छा पर निर्भर है।

❑ ईश्वर को प्राप्त करने की इच्छा से कितने ही अज्ञात पुरुष पर्वतों की गुफाओं में बैठे हुए तप कर रहे हैं। मनुष्य यदि अपने उद्देश्य की सिद्धि के लिये दृढ़-संकल्प कर ले तो शरीर का दुःख-कष्ट कोई बाधा खड़ी नहीं कर सकता। पहाड़ से निकला हुआ पानी का झरना जैसे सामने की शिलाओं और पत्थरों को तोड़ता-फोड़ता अपना रास्ता बना लेता है वैसे, ही दृढ़ इच्छाशक्ति भी विघ्नों को हटाकर सफलता तक पहुँचा देती है।

❑ मनुष्य यदि किसी विषय पर विचार करके 'करूँगा' स्थिर करले तो उसे करने में वह अपने शरीर तक को होम सकता है, ऐसी दशा में कोई कारण नहीं कि सफलता न मिले। सर्वशक्तिवान मंगलमय परमात्मा ने मनुष्य के भीतर यह महाशक्ति रखी है। हम इस महाशक्ति के माहात्म्य को नहीं समझते। बहुतों को तो इसके अस्तित्व का भी ज्ञान नहीं, पर यह निश्चित है कि इस शक्ति की सहायता बिना कोई सफलता को प्राप्त नहीं कर सकता।

❑ भाग्य ने जहाँ छोड़ दिया, वहीं पड़ गये और कहने लगे कि हम क्या करें किस्मत साथ नहीं देती। सभी हमारे खिलाफ हैं, प्रतिद्वन्द्विता पर तुले हैं। जमाना बड़ा बुरा आ गया है। यह मानव की अज्ञानता के द्योतक पुरुषार्थहीन विचार हैं, जिन्होंने अनेक जीवन बिगाड़े हैं।

❑ साधारणतः लोग समझते हैं कि वर्तमान सुविधाएँ अथवा असुविधाएँ पूर्व जन्म के कर्मों के अनुसार हैं, मनुष्य भाग्य के हाथ में कठपुतली है, खिलौना है, वह मिट्टी है, जिसे समय-असमय यों ही मसल डाला जा सकता है। यह भाव अज्ञान, मोह एवं कायरता के प्रतीक हैं।

❑ अपने अन्तःकरण में जीवट के बीज बोओ। साहस, पुरुषार्थ, सद्संकल्पों के पौधों को जल से सींच-सींचकर फलित-पुष्पित करो। साथ ही अकर्मण्यता की घास-फूँस को छाँट-छाँट कर उखाड़ फेंको। उमंग-उल्लास की वायु के हिलोरें उड़ाओ।

❑ आप अपने जीवन के, भाग्य, परिस्थितियों, अवसरों के स्वयं निर्माता हैं। स्वयं जीवन को उन्नत या अवनत कर सकते हैं। जब आप सुख-सन्तोष के लिये प्रयत्नशील होते हैं, वैसी ही मानसिक धारा में निवास करते हैं तो सन्तोष और सुख आपके मुखमण्डल पर छलक उठता है, जब आप दुःखी-क्लान्त रहते हैं तो जीवन-वृक्ष मुरझा जाता है और शक्ति का ह्रास हो जाता है।

❑ शक्ति की, प्रेम की, बल और पौरुष की बात सोचिये, संसार के श्रेष्ठ वीर पुरुषों की तरह स्वयं परिस्थितियों का निर्माण कीजिए। अपनी दरिद्रता, न्यूनता, कमजोरी को दूर करने की सामर्थ्य आप में है। बस केवल आन्तरिक शक्ति प्रदीप्त कीजिए।

❑ सबसे अधिक अपने मन की रक्षा क्योंकि जीवन के निकास उसी से होते हैं। ऐसी बात बोलने से परे रह। तेरी आँखें सामने की ही ओर लगी रहें। न तो दाहिनी ओर मुड़ें, न बायीं ओर। अपने पाँव को बुराई के मार्ग पर रखने से रुका रख।

❑ जितनी हानि किसी मनुष्य को उससे बैर करने वाला पहुँचा सकता है या जितना दुःख उसे उसका शत्रु दे सकता है, उससे अधिक क्लेश उसे उसका अपना मन टेढ़े मार्ग पर चलकर देता है।

❑ जैसे महान पर्वत हवा के झकोरों से विकम्पित नहीं होता, वैसे ही बुद्धिमान लोग निंदा और स्तुति से विचलित नहीं होते।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

- चित्त में उद्विग्नता तभी तक रहती है, जब तक तत्त्वज्ञान प्राप्त नहीं होता। भौंरा तभी तक गूँजता और चक्कर काटता है, जब तक कि फूल पर बैठता नहीं। जैसे ही वह फूल पर बैठा और रसपान का स्वाद मिला कि वह पूरी शान्ति और तन्मयता के साथ उसी आनन्द में निमग्न हो जाता है। फिर उसको न गुंजन करने की आवश्यकता होती है और न चक्कर लगाने की।
- आदमी सिर पर बोझ लादे हुए भी मुँह से साँथी से बातचीत करता चलता है, इसी प्रकार मनुष्य सांसारिक कर्त्तव्यों का बोझ वहन करते हुए भी मन प्रभुपरायण रख सकता है।
- पानी जब तक गन्दा रहता है, तब तक उसमें सूर्य-चन्द्र तक का प्रतिबिम्ब नहीं चमकता, पर जब वह निर्मल हो जाता है तो जल-तल में पड़ी वस्तुओं से लेकर अपनी छाया तक सब कुछ दिखने लगता है। मन की मलीनता नष्ट होने पर निर्वाण और ब्रह्म-दर्शन का लाभ मिलता है।
- स्त्रियाँ धान कूटती हैं। एक हाथ से कूटने की क्रिया करती हैं और दूसरे हाथ से गोद के बच्चे को सँभालती और उसे दूध पिलाती हैं। इसी प्रकार शरीर से सांसारिक कर्त्तव्यों का पालन और मन से भगवान का स्मरण दोनों काम साथ-साथ चल सकते हैं।
- जीवन एक संग्राम है, जिसमें विजय केवल उन्हें ही मिलती है, जो दृढ़ और उन्नत मनोबल का कवच धारण किए रहते हैं और जो अपने निहित पराक्रम और पौरुष की उत्कृष्टता सिद्ध करते हैं। शारीरिक स्वास्थ्य ठीक हो, पर मनोबल न हो, तो आदमी मानसिक आघात से, अकाल मृत्यु को प्राप्त होता है। अविकसित मनोबल के कारण हमारी योजनाएँ सफल नहीं होतीं। हमारा मन हारा रहता है, तो शरीर भी हारता है और व्यक्ति भी पराजित होता है।
- हो सकता है कि किसी को किसी कार्य को करने पर भी आनन्द न मिले, पर इतना निश्चित है कि आनन्द उसी को मिला है, जिसने कर्त्तव्य के मार्ग पर चलते रहने का निश्चय किया।
- हमारे जीवन का उद्देश्य केवल इच्छाशक्ति को दृढ़ बनाना है। दृढ़ मनुष्य के लिए सर्वदा ही सुअवसर और सुभीता है।
- संकल्प की शुद्धि और दृढ़ता ने ईश्वर तक को घण्टों कच्चे धागे में बाँधकर नाच नचाया है।
- जब संकल्प दृढ़ हो जाता है, अध्यवसाय अशिथिल हो जाता है और महामाया के श्री चरणों में अखण्ड विश्वास हो जाता है, तब उद्देश्य की सफलता भी निश्चित हो जाती है। संकल्प कर लो, सोच-समझकर कर लो, किन्तु करने के बाद उसे मत छोड़ो। सत्यसंकल्प ही ईश्वर के प्रति सबसे बड़ी निष्ठा है।
- शरीर की शक्ति तो कभी पराजित हो सकती है, पर मन की शक्ति को कभी पराजय का मुँह नहीं देखना पड़ता।
- उत्तम मन शरीर को उत्तम बनाता है।
- जिसका मन हार जाता है, वह बहुत कुछ होते हुए भी अन्त में पराजित हो जाता है। जो शक्ति न होते हुए भी मन से हार नहीं मानता, उसको दुनिया की कोई ताकत परास्त नहीं कर सकती।
- मन को दृढ़ बनाने की उतनी ही आवश्यकता है, जितनी कि शरीर की पुष्टि के वास्ते भोजनों की जरूरत है।
- अपनी जगह रहकर भी मन स्वर्ग को नरक और नरक को स्वर्ग बना सकता है।
- **सर्वेषामुत्तमस्थानां सर्वासां चिर सम्पदाम्।**
  स्वमनो निग्रहोभूमिर्भूमिः सस्य श्रियामिव।।
  समस्त उत्तम परिस्थितियों और सम्पूर्ण श्रेय चिर स्थायिनी सम्पदाएँ केवल अपने मन के निग्रह से उसी प्रकार प्राप्त होती हैं जैसे अच्छी भूमि से सब उत्तम अन्न प्राप्त होते हैं।
- शरीर के रोगी होने पर भूख, प्यास, नींद सभी चली जाती है। मन के रोगी होने पर साहस, विवेक, धन और मित्र साथ छोड़ देते हैं।
- पानी जैसी चंचलता से मनुष्य ऊँचा नहीं पहुँचता।
- जुगनू तभी तक चमकता है, जब तक वह उड़ता है। वही हाल मन का है। जब हम रुक जाते हैं—अन्धेरे में पड़ जाते हैं।
- **यतो निर्विषस्यास्य मनसो मुक्तिरिष्यते।**
  अतो निर्विषयं नित्यं मनः कार्यं मुमुक्षुणा।।
  मन का निश्चय होना ही मुक्ति है। अतएव इस भव-बन्धन से मुक्त होने की इच्छा रखने वाले

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मनुष्यों को अपना मन निर्विषय अर्थात् विषयासक्ति शून्य करना चाहिए।

- हर आदमी का जीवन पूर्ण रूप से उसके मन से ही पैदा होता है।
- यदि आप दृढ़ व्यक्तित्व पाने की इच्छा रखते हैं, यदि अपने जीवन को प्रभावशाली बनाना चाहते हैं तो अपने मन को सच्चे रूप से संस्कृत तथा शिक्षित बनाओ।
- मन की वह शान्ति जो विघ्न-बाधाओं के समय भंग नहीं होती और दूसरों द्वारा अपने ऊपर दोषारोपण करते समय, जिसमें कोई विकार नहीं आता, वह उस आत्मिक बल से प्राप्त होती है।
- सफलता का रहस्य है, लक्ष्य को सोच-विचार कर निर्धारित करना, फिर उस पर संकल्प और साहस के साथ चल पड़ना।
- धैर्य और सहिष्णुता दो महान गुण हैं। जिनके पास इनकी प्रचुरता है उसको और चाहिए ही क्या ?
- जैसे किसी पहाड़ी पर चढ़ना दुर्गम दिखाई देता है, उसी तरह विपत्तियों का सामना करना भी असह्य मालूम पड़ता है। परन्तु जैसे धीरे-धीरे पहाड़ी पर चढ़ जाते हैं, उसी तरह आपत्ति भी आसानी से धैर्य रखने पर धीरे-धीरे दूर हो जाती है।
- उद्यत, दृढ़ और स्थिर विचारों के सामने काई की भाँति सारे विघ्न हट जाते हैं।
- निश्छल स्वभाव अपनी इच्छा की पूर्ति का मार्ग स्वयं ढूँढ़ निकालता है।
- विचारमंथन से विवेक मिलता है और सत्कर्मों से आत्मबल बढ़ता है, भगवान उन पर प्रसन्न होते हैं, जो उसकी सृष्टि को सुन्दर बनाने में निरत रहते हैं।
- जिसकी प्रेरणा परिष्कृत अन्तःकरण में उठती है, वह पूरी होकर रहती है।
- सर्वश्रेष्ठ मनुष्य वह है जो अटल प्रतिज्ञा के साथ सत्य का अनुसरण करता है, जो आन्तरिक और बाह्य सभी प्रलोभनों का प्रतिरोध करता है, जो भारी से भारी भारों को खुशी से सहता है, जो तूफानों में शान्त रहता है; धमकियों एवं त्यौरियों में निडर रहता है और सत्य, नेकी तथा ईश्वर पर जिसकी निर्भरता सर्वथा अडिग है।
- जीवन को शक्तिशाली बनाने के तीन सूत्र हैं—आत्म-ज्ञान, आत्म-संयम और आत्म-सम्मान।
- समर्थ वे हैं, जो कार्यरत रहने का साहस अपनाये रहे। सुंदर वे हैं, जिन्होंने संयम बरता और संकल्प निभाया।
- मन का संकल्प और शरीर का पराक्रम यदि किसी काम में पूरी तरह लगा दिया जाए तो सफलता मिलकर रहेगी।
- ऐसा कोई अक्षर नहीं जिससे मंत्र बन न सके। ऐसी कोई वनस्पति नहीं जो औषधि का काम न करे। ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जो किसी काम को सिद्ध न कर सके। आवश्यकता केवल नियोजन-कर्त्ता की है।
- अपने मन को जीतने वाले समस्त संसार को जीतने वाले से अधिक बलवान हैं।
- मनुष्य को पहले यह निश्चय कर लेना चाहिए कि मैं क्या नहीं करूँगा ? ऐसा निश्चय करने से शेष जो कुछ करना है, वह अवश्य दृढ़ता के साथ किया जा सकता है।
- जो भविष्य में महान, प्रभावशाली और प्रतिष्ठित पदों पर पहुँचना चाहते हैं, उन्हें निश्चय से अपने व्यक्तित्व को दृढ़ करना होगा। व्यक्तित्व को बनाना होगा।
- यदि मनुष्य को सफलता प्राप्त करनी हो तो उसे जीवन में अपना कार्य निर्धारित कर लेना चाहिए। फिर उसकी प्राप्ति के लिए एकाग्रता से प्रयत्न करना चाहिए।
- **मनः प्रमादाद्वर्धन्ते दुःखानि गिरिकूटवत्।**
  तदप्रमादेव नश्यन्ति सूर्यस्याग्रे हिमं यथा।।
  अपने मन के प्रमाद से ही संसार में समस्त दुःख पर्वत की चोटी के समान बढ़ जाया करते हैं। अपने मन की विवेकशीलता होने पर वे सारे दुःख शीघ्र ही ऐसे नष्ट हो जाते हैं जैसे सूर्य की धूप से बर्फ गलकर नष्ट हो जाया करती है।
- अच्छी योजना बनाना, जो करना है उस पर अच्छी तरह विचार करना, अभीष्ट के अनुरूप साधना जुटाना जितना आवश्यक है, उतना ही यह भी कि जो किया जाना है, उसे ऊँचे मन और परिश्रम के साथ सम्पन्न किया जाय।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सद्गुणों की सच्ची सम्पत्ति

❑ वशीकरण का सर्वश्रेष्ठ उपाय अपने को सद्गुणी बनाना है। सद्गुणों से मनुष्य और देवता ही नहीं परमात्मा भी प्रसन्न होते हैं और उसके वश में हो जाते हैं। श्री लक्ष्मण जी ने हनुमान से राम की ओर संकेत करके कहा—

अहमस्यावरो भ्राता गुणैर्दास्यमुपागतः।

—वाल्मीकि रामायण ४।१२

मैं इन (राम) का छोटा भाई हूँ। इनके गुणों के कारण इनका दास हो गया हूँ।

❑ महर्षि वेदव्यास जी ने युधिष्ठिर से कहा—

तथापिनिष्नंनपतावकीनैः प्रक्षीकृतम् हृदयं गुणौघैः।

हे युधिष्ठिर ! हम सरीखे पुरुषों को सर्वत्र समदृष्टि रखनी चाहिए, तो भी तुम्हारे गुणों से पिघला हुआ मेरा मन तुम्हारे कब्जे में हो गया है।

❑ श्री विष्णु भगवान ने राजा पृथु से कहा है—

वरं घ मत्कंचन मानवेन्द्र वृणीष्वतेऽहं गुणशील यंत्रितः।

हे राजन ! मुझसे कुछ वरदान माँग, तेरे गुण और शील से मैं तेरे वश में हो गया हूँ।

❑ एक समय सुरपति इन्द्र ने राजा हरिश्चन्द्र से कहा—

तितिक्षादमसत्याद्यैः सद्गुणै परितोषितः।

—मार्कण्डेय पुराण अ. ८।४६

हे राजन् तितिक्षा (सहनशीलता), दम (इन्द्रिय निग्रह), सत्य आदि अपने गुणों से आपने मुझे प्रसन्न कर लिया है।

❑ **येषां गुणगणैः कृष्ण दौत्यादौ भगवान् कृतः।**

—भागवत् १।७।५७

पाण्डवों के सद्गुणों ने भगवान कृष्ण से दूत और सारथी के काम करा लिए।

❑ **यस्य प्रसन्नो भगवान् गुणैर्मेव्यादिभिर्हरिः।**
तस्मै नमन्ति भूतानि निम्नमापइवस्वतम्।।

—भागवत् १।७।५७

सद्गुणों से भगवान प्रसन्न होते हैं और सद्गुणों के लिए संसार नमता है, जैसे जल नीचे को जाता है। इसलिए जो कोई दूसरों को वश में करने की विद्या सीखना चाहते हों उन्हें चाहिए कि अपने अन्दर त्याग, प्रेम, सदाचार, सत्य व्यवहार, उदारता, सेवा, मधुर भाषण, निरालस्यता आदि गुणों को पैदा करें। सद्गुणों से ही दूसरे के हृदय को जीतकर अपने वश में किया जा सकता है। अर्थसाधन के लिए किसी के साथ कपट, धूर्तता और चालबाजी के मंत्र-तंत्र किये जाएँ तो वे अस्थायी होते हैं और उनसे लाभ के स्थान पर हानि अधिक होती है।

❑ जब तक लज्जा हमारी निगरानी करती है, तब तक हृदय में सद्गुण बने रहते हैं। *—वर्क*

❑ **ऐश्वर्यस्य विभूषणं सुजनता शौर्यस्य वाक्संयमो।**
ज्ञानस्योपशमः श्रुतस्य विनयो वित्तस्य पात्रेव्ययः।।
अक्रोध स्तपसः क्षमा प्रभवितुर्धर्मस्य निर्व्याजता।
सर्वेषामपि सर्वकारणमिदं शीलं परं भूषणम्।।

—भर्तृहरि

ऐश्वर्य का भूषण सज्जनता है, शूरता का वाकसंयम, ज्ञान का शांति, श्रेष्ठ कुल का विनय, धन का सुपात्र के लिए दान, तपस्वी का भूषण क्रोध न करना, बलवान का क्षमा, धर्म का निश्छलता और सब गुणों का भूषण एकमात्र शील (सच्चरित्र) है।

❑ सम्मान ही सद्गुण का पुरस्कार है।

—सिसेरा

❑ **गुण सुट्ठियस्स वयणं घयपरिसित्तुव्व पावओ भाई।**
गुण हीणस्स न सोहइ नेहविहूणो जह पाईवो।।

—बृहत्कल्प भाष्य २४५

गुणवान व्यक्ति के वचनों का अनुसरण करो, क्योंकि गुणवान व्यक्ति का वचन अग्नि की तरह तेजस्वी होता है, जबकि गुणहीन व्यक्ति का वचन तेलशून्य दीपक की तरह तेज और प्रकाशरहित होता है।

❑ हृदय को शुद्ध करो। एक-एक दोष चुन-चुन कर निकाल दो। सद्गुणों को ढूँढ़-ढूँढ़ कर हृदय में बसाओ। तुम्हारा हृदय देवपुरी बन जाएगा। देवता वही है, जिसके हृदय में दैवीय गुण भरे हैं।

—महात्मा गाँधी

❑ धन से सद्गुण उत्पन्न नहीं होते, अपितु सद्गुणों से ही धन एवं अन्यान्य इच्छित वस्तुएँ प्राप्त होती हैं। *—कन्फ्यूशियस*

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ संकट के समय में धैर्य रखना, उत्कर्ष के समय दण्ड देने की शक्ति होते हुए भी क्षमा कर देना, सभा में वक्तृता देना तथा युद्ध में शूरता प्रकट करना मनुष्य में उत्तम गुण हैं।

—चाणक्य

❑ तृष्णारहित चित्त की शीतलता के आगे कदली वृक्ष, चन्दन, हिमालय और चन्द्रमा की शीतलता तुच्छ है।

—वशिष्ठ

❑ महान पुरुषों में यह गुण स्वभावतः पाये जाते हैं—विपत्ति में धैर्य, अभ्युदय उन्नति में क्षमा, सभा में भाषण-कुशलता, युद्ध में विक्रम, यश में रुचि, वेद-शास्त्र के अध्ययन का व्यसन और जो श्रेष्ठ महान पुरुष हैं, वे सभी धर्म, सभी इतिहास और सभी नीतियों से संसार का श्रेष्ठ ज्ञान ग्रहण करते हैं।

—हितोपदेश

❑ प्रगतिशील जीवन केवल वे ही जी सकते हैं, जिन्होंने हृदय में कोमलता, मस्तिष्क में तीक्ष्णता, रक्त में उष्णता और स्वभाव में दृढ़ता का समुचित समावेश कर लिया है।

—रस्किन

❑ क्या तुमने कभी ऐसे आदमी का नाम सुना है, जिसने श्रद्धा और सरलता के साथ जीवन भर प्रयास किया हो ? अगर कोई आदमी उन्नति के लिए प्रयत्न करता है, तो क्या ऊँचा नहीं उठता, क्या कभी किसी आदमी ने वीरता, महानता, सत्य, दयालुता को अपनाया है और यह पाया है कि इनसे कोई लाभ नहीं होता, यह प्रयास वृथा है।

—थोरो

❑ उदार होना, दृढ़ रहना, बड़ों का मान करना और मीठे वचन बोलना सर्वप्रिय बनने के साधन हैं।

—भीष्म

❑ **उद्यमं साहसं धैर्यं बुद्धिः शक्तिः पराक्रमः।**
षडेते यत्र वर्तन्ते तत्र देव सहायकृत्।।

—देवी भागवत

जहाँ उद्यम, साहस, धीरज, बुद्धि, शक्ति और पराक्रम ये छह गुण होते हैं, वहीं भगवती सहायता करती है।

❑ वेद की अपेक्षा सत्य, सत्य की अपेक्षा इन्द्रिय निग्रह, इन्द्रिय निग्रह की अपेक्षा दान, दान की अपेक्षा तपस्या, तपस्या की अपेक्षा वैराग्य, वैराग्य की अपेक्षा आत्मज्ञान, आत्मज्ञान की अपेक्षा समाधि और समाधि की अपेक्षा ब्रह्मप्राप्ति उत्कृष्ट है।

❑ ज्ञान ही परमात्मा है एवं साधना सर्वोत्तम मार्ग। जो व्यक्ति निगूढ़ भाव से ज्ञानतत्त्व को जानने में समर्थ होता है, उसकी समस्त कामनाएँ परिपूर्ण हो जाती हैं।

❑ काल समस्त प्राणियों को विनष्ट कर देता है। किन्तु जिसके प्रभाव से वह काल भी विनष्ट हो जाता है, उसको कोई भी नहीं जान सकता। वह परमस्वरूप परमात्मा ऊपर, बीच में, नीचे व निर्जन स्थानों में नहीं दिखाई पड़ता है, क्योंकि वह सारे लोक उसी के अन्तस्थ हैं, उनका बहिर्मार्ग कुछ नहीं है।

❑ जिस पुण्यात्मा पुरुष ने कभी कोई पाप नहीं किया, उसकी अपेक्षा घोर पापी के पश्चात्ताप की महिमा कहीं अधिक है, क्योंकि जिन्होंने पापमय जीवन की कटुता का कभी अनुभव नहीं किया, उनके लिए दूर रहना कुछ कठिन कार्य नहीं है।

❑ प्रार्थना का द्वार किसी समय खुला रहता है और किसी समय बन्द, पर पश्चात्ताप का द्वार तो सदा अनावृत रहता है।

❑ आज ही तुम अपने पापों का प्रायश्चित्त कर लो, क्योंकि कल तुम्हारी मृत्यु भी हो सकती है।

❑ सद्गुणों में सबसे अधिक आवश्यक वह गुण है जो अहंकार को दूर करता है और वह सद्गुण है—विनम्रता।

❑ आत्मा में जो अभयादि शक्ति निवास करती है, उसको जाग्रत करने वाला साधन मन ही है। इसलिए मन को विशाल बनाकर अधिक सामर्थ्यशाली बनाने की आवश्यकता है। यदि वह कमजोर होगा तो सामर्थ्य को जाग्रत नहीं कर सकेगा।

❑ चैतन्य सर्वव्यापी है, प्रत्येक मनुष्य उसका अंश है। इसलिए प्रत्येक मनुष्य, ईश्वर का अंश माना जाता है। यह भावना सदा जाग्रत रखनी चाहिए। "मेरे लिए कोई बात असम्भव नहीं"—यह वाक्य हृदय-पटल पर मुद्रित करके उसके अनुसार चलना अत्यन्त आवश्यक है। अपने शरीर के आन्तरिक भाग में शांति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

रखकर उस भाग में प्रवेश कर यहाँ के निद्रित कम्पन को अपने सामर्थ्य से जाग्रत करना चाहिए।

- समस्त प्राणिमात्र के प्रति प्रेमभाव धारण करना चाहिए। मानसिक शक्ति के विकास के लिए प्रेम का बहुत उपयोग होता है। सर्वव्यापी चैतन्य के यदि हम एक अंश हैं तो क्या प्रेम भी सर्वव्यापी न होना चाहिए ? समस्त भूतमात्र में परमेश्वर व्याप्त है, इसलिए यह बात ध्यान में रखकर यदि ऐसी ही भावना करोगे तो अन्य विकास होने में अधिक समय न लगेगा।

- शरीर व मन के प्रत्येक अणु-अणु में सामर्थ्य भरी है। जब उसका उपयोग होगा, तभी वह जाग्रत भी होगी। स्वयं काम कीजिए, स्वयं सोचिए। प्रत्येक परमाणु को जाग्रत करना अत्यन्त आवश्यक है।

- मन और विचार में पूर्ण एकता होनी चाहिए। व्यवहार एक तरह का, भाषण दूसरी तरह का, व्यवहार और मन में अब ऐसा असामंजस्य बुद्धि को ढीला करता है।

- घड़े में एक बार पानी भरकर यदि फिर उसे कहीं यों ही रखा रहने दो तो कुछ दिन में पानी सूख जाएगा, किन्तु यदि पानी के भीतर ही वह घड़ा रखा रहे तो पानी कभी न सूखेगा। यदि एक बार सत्य मार्ग का अवलम्बन करके फिर उस ओर उदासीन हो जाओ तो परिश्रम व्यर्थ चला जाएगा, किन्तु यदि उस पथ पर सदैव आरूढ़ रहो तो जीवन उसी तत्त्व से ओत-प्रोत हो जावेगा।

- जिस घड़े के पैंदे में छोटा-सा भी छेद हो जाता है तो उसमें पानी नहीं ठहरता। जिस मनुष्य का आचरण बुरा है उसमें सद्गुण नहीं ठहरते।

- जो अपने अपराध छिपा रखता है, उसका कार्य सफल नहीं होता, पर जो उनको मान लेता है और छोड़ भी देता है, उस पर दया की जाती है।

- मनुष्य को चाहिए कि क्रोध को प्रेम से, बुराई को भलाई से, लोभ को उदारता से और मिथ्या को सत्य से जीते।

- अधर्म का प्रायश्चित्त कृपा और सच्चाई से होता है।

- **हस्तस्य भूषणं दानं सत्यं कण्ठस्य भूषणम्।**
  श्रोत्रस्य भूषणं शास्त्रं भूषणे किं प्रयोजनम्।।
  हाथ का भूषण दान, कण्ठ का भूषण सत्य और कान का भूषण शास्त्र है। अन्य सोने-चाँदी के गहनों की क्या आवश्यकता है ?

- सौन्दर्य फैशन में नहीं है। सौन्दर्य हृदय के आदर्श गुणों में है—सौन्दर्य बोल-चाल, रहन-सहन, आचार-व्यवहार, विनय-नम्रता, सच्चाई-सफाई, स्वास्थ्य और शक्ति आदि की स्वाभाविक सत्यता में है। जिसका हृदय सुन्दर और मधुर है, जिसके कार्य सुन्दर और मधुर हैं, वही उससे बढ़कर सुन्दर है।

- गलती तब मिटती है जब उसकी दुरुस्ती कर लेते हैं। गलती जब दबा देते हैं, तब वह फोड़े की भाँति फूटती है और भयंकर स्वरूप ले लेती है।

- जीना उसी मनुष्य का सफल है, जो गुणी और धर्मात्मा हो। गुण-धर्म से हीन मनुष्य का जीना व्यर्थ है।

- बूँद-बूँद से घड़ा भरता है। सद्गुणों की सम्पदा संग्रह करने के लिए दत्त-चित्त और प्रयत्नशील रहने वाले मनुष्य एक दिन महा-मानवों का स्तर प्राप्त करते हैं।

- जीवन खोने की बजाय मानवी गुणों को संगठित करने में अपने समय का अधिक उपयोग करो।

- जिसमें अधिक गुण हों वही वास्तव में बड़ा है। नाम से कोई बड़ा नहीं होता। 'कनक' धतूरे को भी कहते हैं, पर उससे गहने नहीं गढ़े जाते।

- आप चाहते हों कि ऊँचा पद प्राप्त हो तो उनके योग्य गुणों को एकत्रित कीजिए।

- सोने की चार तरह परीक्षा की जाती है। काटकर, तपाकर, घिसकर और पीटकर। आदमी की भी चार तरह से परीक्षा होती है। त्याग, शील, गुण और कर्म से।

- संसार बलवान को ही नतमस्तक होता है, उसकी प्रतिष्ठा और मान करता है, इसलिए यदि तुम अपनी प्रतिष्ठा और कीर्ति चाहते हो तो छोटे-छोटे स्वार्थों का त्याग करके अपने आत्मिक, बौद्धिक, शारीरिक एवं सामाजिक बल को बढ़ाने का निरन्तर प्रयत्न करते रहो।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

- प्रेम, सेवा, त्याग, सहानुभूति और मधुरभाषण ने किसको अपने बस में नहीं किया ?
- उन लोगों को यह संसार बन्धन रूप नहीं होता जो पृथ्वी के समान संतोषी, खंभे के समान सुस्थिर और झील के समान निर्मल हैं।
- नेकी और भलाई को अपने अन्दर धारण कर लेने से मनुष्य बुराई की सम्पूर्ण शक्तियों से सुरक्षित रहता है और परीक्षा के समय और भी दृढ़ हो जाता है। इन गुणों को अपने में उत्पन्न करना मानो अक्षय सुख और सफलता प्राप्त करना है।
- इन्द्रिय-निग्रह में बल है, सद्विचारों में विजय है और शांति में शक्ति है।
- जिस मनुष्य में स्थिरता, संयम, मनुष्य के प्रति विश्वास और सहयोग बुद्धि है, वही संसार का सफल व्यवस्थापक हो सकता है।
- यदि सफलता चाहते हो तो अध्यवसाय को मित्र, अनुभव को सलाहकार, सावधानी को सहचर और आशा को अभिभावक बनाओ।
- इस संसार में विजयी वे हैं जो नम्र हैं, सेवाभावी हैं, उदार हैं और मधुर स्वभाव के हैं। इस संसार में हार उनकी है जो अहंकारी हैं, लोभी हैं, स्वार्थी हैं और संकीर्ण भावों से घिरे हुए हैं।
- चन्दन बीहड़ में उगता है। जाति का काठ है। सर्पों से घिरा रहता है तो भी अपने गुणों के कारण सम्मान पाता है।
- स्पेन की एक कहावत है कि भगवान ने मनुष्य से कहा—मैं तुम्हें सब कुछ दे सकता हूँ पर शर्त यह कि तुम्हें उसकी कीमत चुकानी होगी। हाँ प्रतिभावान व्यक्ति गुणों की कीमत पर ही जन-सहयोग खरीदता है।
- एक ही मक्खी दूध में पहुँचकर उसे अभक्ष्य बना देती है। एक ही दुर्गुण मनुष्य की अनेक विशेषताओं को नष्ट कर देता है।
- सद्गुण चिथड़ों में भी उतने ही चमकते हैं जितने कि मखमली वेशभूषा में।
- राजहंस दूध पीते हैं और जल छोड़ देते हैं। मोती चुगते हैं, कीड़े नहीं खाते। ऐसी व्रतशीलता निभाकर कोई भी श्रेष्ठ बन सकता है।
- आवेश बुद्धि, बल, शक्ति, क्षमता सबका दिवाला निकाल देता है, उससे प्रभावित मनुष्य पतन के गर्त में चला जाता है, किन्तु वही आवेश यदि वश में कर लिया जाए तो उसमें शक्ति का विकास होता है और उसको आत्मबल के रूप में परिवर्तित किया जा सकता है।
- धैर्य और दृढ़ता के मसाले से जीवन की इमारत बनती है। इसे शालीनता की पुताई से सुन्दर बनाया जाता है।
- एकाग्रता आवेश को पवित्र और शांत कर देती है, विचारधारा को शक्तिशाली व कल्पना को स्पष्ट करती है।
- प्रतिष्ठा उन कामों में नहीं, जिनसे हम प्रख्यात होते हैं, वरन् उनमें हैं जो हमारे स्वभाव की नम्रता में है।
- स्वर्ग का रास्ता बड़ी कठिनाई से प्राप्त होता है। धन तो संसार में बहुत-से छोड़ जाते हैं, किन्तु नाम तो बिरला ही छोड़ता है।
- चुप रहना योग्यता की मुहर है, जिसके पेट में भेद न रह सके वह रद्दी चिथड़ा है। कीमती चीजें कीमती तिजोरियों में रहती हैं।
- मनुष्य जितना अधिक नम्र होगा, जितना अधिक परमात्मा में विश्वास करेगा, उतना ही वह अपने कार्यों में कुशल होगा और उतनी ही अधिक शांति और तृप्ति भोगेगा।
- कमल के पत्ते पर बूँद की तरह जो काम-भोगों से अलिप्त है वही ब्राह्मण है। जो गम्भीर प्रज्ञा वाला है, जो मेधावी है, जो मार्ग-कुमार्ग को पहचानता है, जो संयमी है, जो इच्छारहित है, संयम विरत है, जिसने गाढ़े अमृत को पी लिया हैं वह ब्राह्मण है। जो पुण्य-पाप से परे है, शोकरहित है, निर्मल है, शुद्ध है वही ब्राह्मण है।
- भलाई कभी मरती नहीं और न भला आदमी कभी मरता है।
- मुसकान स्नेह-सौजन्य की भाषा है। खीझ अपने दोष, असन्तोष और अशक्ति की अभिव्यक्ति है।
- उसके चेहरे पर सदा वसन्त ऋतु बनी रहती है जो हँसना और हँसाना जानता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ असन्तोष ही ऐश्वर्य का मूल है।

❑ राक्षसों की सम्पत्ति घृणा है। मनुष्यत्व का चिन्ह क्षमा है और प्रेम देवताओं का स्वभाव है।

❑ हरेक की प्रकृति में दया, करुणा और कुकर्म से अरुचि के अंकुर हैं, चाहे वह उन्हें सींचकर बढ़ाये, चाहे सुखा दे। यह सब गुण केवल अभ्यास से पुष्ट होते हैं।

❑ **संग्रहैक परः प्रायः समुद्रोऽपि रसातले।**
दातारं जलदःपश्य गर्जन्ते भुवनोपरि।।
बराबर संग्रह करने वाला समुद्र भूमि पर ही स्थित है, किन्तु दाता मेघों को ऊपर आकाश में गरजते देखिए।

❑ **एकेनापि सुवृक्षेण पुष्पितेन सुगन्धिना।**
वासितं स्याद्वनं सर्वं सुपुत्रेण कुलं यथा।।
जैसे एक ही वृक्ष विकसित होकर अपनी सुगन्ध से समस्त सम्पन्न वन को सुवासित कर देता है, वैसे ही एक ही सद्गुण सम्पन्न सुपुत्र समस्त कुल को यश का भागी एवं विख्यात कर दिया करता है।

❑ **अष्टौ गुणाः पुरुषं दीपयन्ति**
प्रज्ञा च कौल्यं च दमः श्रुतं च।
पराक्रमश्चाबहुभाषिता च
दानं यथाशक्ति कृतज्ञता च।।
आठ गुण पुरुष को श्रेष्ठता प्रदान करते हैं। वे इस प्रकार हैं—प्रज्ञा, कुलीनता, इन्द्रियदमन, ज्ञान, पराक्रम, मितभाषण, यथाशक्ति दान और कृतज्ञता।

❑ कँटीली झाड़ियों में भी जब पुष्प खिलते हैं, तो वे बड़ी नयनाभिराम बन जाती हैं, तुच्छ और नगण्य मनुष्य में भी जब सद्गुणों का समावेश हो जाता है, तो वे महान पुरुषों की समता करने लगते हैं।

❑ जीवन की सुन्दरता बाहरी वैभव में नहीं, मनुष्य के आन्तरिक संसार में हुआ करती है। जिसके गुण, कर्म, स्वभाव जितने ही सात्विक और सुरुचिपूर्ण होंगे, उसका जीवन उतना ही सुन्दर होगा। जो अविचारी, व्यभिचारी अथवा अवगुणी है, वह कितना ही धनी, स्वस्थ और सुन्दर क्यों न हो, सुन्दर जीवन की परिधि में नहीं आ सकता। इसके विपरीत जो गरीब है, सुन्दर भी नहीं है, यदि वह शिष्ट, सभ्य, सन्तुष्ट और शांत है तो वह अधिक सुन्दर जीवन वाला कहा जाएगा।

❑ जो सद्गुणी है, वही बुद्धिमान है, वही सज्जन है। जो सज्जन है, वह सदा सुखी है।

❑ किसी नेक आदमी की जिन्दगी को देखें तो उसमें दया करुणा, उदारता, निरहंकारिता झलकती मिलेगी।

❑ **षडेव तु गुणाः पुंसा न हातव्याः कदाचन।**
सत्यं दानमनालस्यमनसूया क्षमा धृतिः।।
पुरुषों को इन छह गुणों को कभी न छोड़ना चाहिए—सत्य, दान, आलस्यहीनता, दूसरों में दोष न देखना, क्षमा और धैर्य।

❑ सत्य, सरलता, क्रोध का त्याग, इन्द्रियों का दमन, शम, पर सन्ताप न करना, अहिंसा, पवित्रता, इन्द्रियों का संयम, ये ही गुण पुण्यात्मा पुरुषों के पुरुषार्थ लाभ या अभ्युदय के साधन हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समय का सदुपयोग

- जो कर्त्तव्य कल करना है, उसे आज ही कर लेना अच्छा है। मृत्यु बड़ी निर्दय है, वह कब आ जाएगी उसका कुछ पता नहीं।

- **न श्वः श्वमुपासीत। को हि मनुष्यस्य श्वो वेद।**

—शतपथ २।१।३।६

कल के भरोसे मत बैठे रहो। कल किसने देखा है ?

- **अलं कालसंगेन क्रियतां बुद्धि निश्चयः।**

—वाल्मीकि

बस और समय मत चाहो, जो कुछ करना है अब निश्चय ही कर लो।

- अपने बारे में बड़ी-बड़ी बातें बनाने की आदत डाल लेना आसान है, लेकिन हम जानते हैं कि कभी-कभी बड़े उत्तम शब्द निकृष्टतम व्यक्तियों की जुबान पर चढ़ जाते हैं और उसका कुछ भी अर्थ नहीं होता। हम देशभक्ति और राष्ट्रप्रेम की चर्चा करते हैं और बहुधा तथाकथित देशभक्त नीचतापूर्ण कार्यों में भाग लेते हैं। इसलिए इस बात का कुछ अधिक महत्त्व नहीं है कि मैं कितनी सुन्दर भाषा का प्रयोग करता ? अन्तिम कसौटी कर्म है।

- **आयुषः क्षण एकोऽपि न लभ्यः स्वर्णकोटिभिः।**
स वृथा नीयते येन तस्मै नृपशवे नमः।।

—वेद व्यास

आयु का एक क्षण भी करोड़ों स्वर्णमुद्राओं में भी नहीं मिल सकता। ऐसे मूल्यवान क्षणों को जो व्यर्थ ही गँवाते हैं, उन नरपशुओं को नमस्कार।

- अधिकांश व्यक्ति जितना समय व्यर्थ में बर्बाद कर देते हैं, उतने ही समय में संसार के अनेक महापुरुषों ने चिरस्मरणीय कार्य कर दिखाये हैं। जो लोग यह बहाना किया करते हैं कि हमको सेवाकार्य अथवा परोपकार के कामों के लिए अवकाश ही नहीं मिलता, उनको महापुरुषों के जीवन पर ध्यान देकर अपनी भूल सुधारनी चाहिए। *—स्वेट मार्डन*

- सफलता को खो देने का निश्चित तरीका अवसर को खो देना है। *—बेसिल्स*

- गया आज फिर कभी लौटने वाला नहीं है। इसलिए यदि अच्छा करना है तो आज ही कर, कौन जाने कल उगने वाला सूर्य तू देख सके या नहीं।

- जो बीत चुका उसे भूल जाओ। वह लौट नहीं सकता। भविष्य की बात सोचो और उसे मूर्तमान करने के लिए आज ही सरंजाम जुटाओ।

- सुअवसर की प्रतीक्षा में न बैठे रहें। ज्योतिषी से मुहूर्त न पूछें। हर दिन और हर पल काम करने के लिए ही शुभ मानकर चलें।

- **अद्यैव कुरु यच्छ्रेयो वृद्धः सन्किं करिष्यसि।**
स्वगात्राण्यपि भाराय भवन्ति हि विपर्यये।।

जो अपने कल्याण की बात है उसे आज ही कर। वृद्ध होकर क्या करेगा ? क्योंकि वृद्धावस्था में अपने शरीर भी भारभूत हो जाते हैं।

- ज्ञानी वह है जो वर्तमान को ठीक प्रकार समझ सके और परिस्थिति के अनुसार आचरण करे।

- क्या तुम जीवन से प्रेम करते हो ? फिर समय को व्यर्थ नष्ट न होने दो, क्योंकि वही तो जीवन-तत्त्व है।

- "समय का सदुपयोग न करने से मनुष्य दीन और दुनिया दोनों में कंगाल हो जाता है, इसलिए समय को व्यर्थ मत जाने दो।"

- जो कार्य आपके सामने है, उसे शीघ्रता और निष्कपट भाव से करना ही कर्त्तव्य है—यही आज के अधिकार की पूर्ति है।

- मनुष्य के जीवन का एक-एक क्षण बहुमूल्य है। प्रत्येक क्षण भगवान की प्राप्ति में हेतु बन सकता है, इसलिए जीवन का कोई भी क्षण प्रमाद में, न करने योग्य कर्मों में या व्यर्थ में कभी नहीं जाना चाहिए।

- समय की कदर करो। प्रत्येक दिवस एक जीवन है। एक मिनट भी फिजूल न गँवाओ। जिन्दगी की सच्ची कीमत हमारे वक्त का एक-एक क्षण ठीक उपयोग करने में है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

- समय का दुर्व्यय करना अपने ही जीवन से द्वेष करना है। समय के द्वारा ही जीवन का संगठन हुआ है।
- **श्वः कार्यमद्य कुर्वीत पूर्वाह्णे चापराह्णिकम्।**
  नहि प्रतीक्षते मृत्युः कृतमस्य न वा कृतम्।।
  कल का काम आज और शाम का सबेरे ही कर डालो। मृत्यु प्रतीक्षा नहीं करती कि तुमने क्या कर लिया और क्या शेष रह गया ?
- अवसर की प्रतीक्षा में न बैठो। आज का अवसर ही सर्वोत्तम है। उसका सही उपयोग कर सकें तो बड़ा अवसर भी आपके सामने हाथ बाँधकर आ खड़ा होगा।
- समय प्रकृति का खजाना है। घण्टे और घड़ियाँ वे उसकी मजबूत तिजोरी हैं। क्षण उसके मूल्यवान हीरे हैं। इन अमूल्य हीरों को व्यर्थ ही इधर-उधर न फेंक दो।
- तुम जीने की ही चिन्ता में पड़े रहते हो और जिससे जीवन बना है, उस 'समय' को पानी की तरह बहा देते हो। यह कहाँ की बुद्धिमानी है ?
- जीवन समय का सदुपयोग करने पर ही बड़ा होता है, सो समय का दुरुपयोग करता है। चाहे उसकी जिन्दगी बड़ी है, किन्तु छोटी ही है। कर्मयुक्त जीवन बड़ा जीवन है। आलस्य ही मृत्यु है।
- आज का काम कल पर न टालो। वह कल निरन्तर आगे ही बढ़ता रहेगा और उस दिन को कभी आने ही न देगा, जिसमें टाले हुए कामों का बोझ हलका किया जा सके।
- यशपूर्ण जीवन का एक व्यस्त घण्टा कीर्ति रहित युगों से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है।
- आलस्य का अर्थ समय की चोरी है। यदि मनुष्य आज का काम कल पर न टाले तो बहुत-सी बुराइयों से बच सकता है।
- आज का दिन हमारा है, गुजरा हुआ कल मर गया और आने वाला कल अभी पैदा नहीं हुआ।
- जो काम कभी भी हो सकता है, वह कभी नहीं हो सकता। जो काम अभी होगा, जो शक्ति आज के काम को कल पर टालने में खर्च हो जाती है, उसी शक्ति के द्वारा आज का काम आज ही किया जा सकता है।
- जीवन का सबसे बड़ा पुरस्कार, जीवन की सबसे बड़ी दौलत समय है।
- अवसर आता है और तेजी से निकल जाता है। जो पहले से तैयार होता है, वही उसे पकड़ पाता है जो इस तैयारी में चूक जाता है वह हाथ मलता रह जाता है।

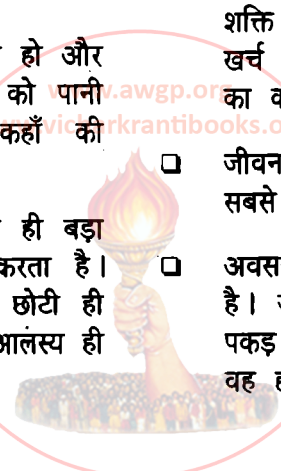

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

छिद्रान्वेषण

❑ न दूसरों के दोष को, दूसरों के कृत-अकृत को देखो। अपने ही कृत-अकृत को देखते रहो।

—महात्मा बुद्ध

❑ दुर्बल तथा अज्ञानी लोग ही हमेशा सबसे अधिक नुक्ताचीनी किया करते हैं।

—स्वामी रामतीर्थ

❑ पूछने पर सावद्य (दूषित) कहे। अपने स्वार्थ के लिए अथवा अन्य किसी भी कारण से ऐसे वचन न बोलें जो निरर्थक (अर्थशून्य) हों अथवा जो सुनने वाले के हृदय में चुभें।

—महावीर

❑ जो अपराध हमने किये हैं, उनसे भलीभाँति घृणा न करें, तब तक दूसरे के दोष देखने, बताने का हमें हक ही नहीं हो सकता।

—महात्मा गाँधी

❑ जिस समाज में अधिकांश अच्छे लोग रहते हैं उसे सभ्य समाज कहा जाता है। पर मेरी दृष्टि में उससे भी सभ्य वे लोग हैं, जो बुरे लोगों को भी निबाह लेते हैं और प्रेमपूर्वक उन्हें अच्छा बनाने का प्रयत्न करते हैं।

—अब्राहम लिंकन

❑ न क्रोध करो, न ईर्ष्या, न छल। दूसरे मूर्खता करते हैं तो तुम्हें उनका अनुकरण करने की क्या आवश्यकता ? अपना मुँह उजला और हाथ स्वच्छ रखो। दूसरे किस तरह रहते हैं और क्या करते है ? यह ढूँढ़ने के लिए दुर्जनों के समुदाय में मत जाओ।

❑ मनुष्य को दूसरों की दुर्बलताओं का ध्यान नहीं करना चाहिए। उसे अपने सम्बन्ध में सोचना चाहिए कि उसने कहाँ अनुचित कर्म किया और कहाँ जो करना चाहिए था, नहीं किया।

❑ दूसरों का दोष देखना आसान है, किन्तु अपना दोष देखना कठिन है। लोग दूसरे के दोषों को भुस के समान फटकते-फिरते हैं, किन्तु अपने दोषों को इस तरह छिपाते हैं, जैसे चतुर जुआरी हारने वाले पासे को छिपा लेता है।

❑ जो साधक अपना भला चाहता है, वह दूसरे की बुराई न देखे। अपनी बुराई को हजार आँखों से देखे, बड़ी सावधानी से देखे, कहीं छिपी न रह जाए और जो दिखाई दे, उसे तुरन्त बड़े प्रयत्न से निकाले। जैसे साँप को घर से तुरन्त निकाल देना चाहते हैं, वैसे ही बुराई से बचना चाहिए। ऐसा न करें तो बुराई समुद्र की तरह बढ़ जावेगी।

❑ लोगों की बुराइयाँ ढूँढ़ने में जितनी अक्ल खर्च की जाती है, उतनी यदि अच्छाइयाँ खोजने में लगे, तो कुछ काम की चीज पल्ले पड़े।

❑ दूसरों की निन्दा करके किसी को कुछ नहीं मिला, जिसने अपने को सुधारा उसने बहुत कुछ पाया।

❑ परदूषण परखने से कोई सहज कार्य संसार में नहीं और आत्म-अध्ययन से बढ़कर कठिन कार्य भी नहीं।

❑ बने जितना कम देखो, किसी के दोष देखने में दक्षता प्रकट मत करो, यदि हो सके तो एकान्त में दोष-निवारण का उपदेश दो।

❑ एक बार एक विद्यार्थी अपने गुरु की बुराई कर रहा था, तो परमहंस जी ने कहा, तुम अवगुणों की तरफ ध्यान न देकर गुणों को ग्रहण करते रहो।

❑ **सहजान्धदृशः स्वदुर्नये परदोषेक्षणदिव्यचक्षुषः।**
स्वगुणोच्चगिरो मुनिव्रताः परवर्णग्रहणेष्वसाधवः।।
दुर्जन लोग अपने दोषों की ओर से आँखों पर पट्टी बाँध लेते हैं, दूसरे के दोष देखने में दिव्य नेत्र धारण करते हैं। अपने गुणों को गला फाड़-फाड़कर गाते हैं और दूसरों की प्रशंसा का अवसर आने पर मौन धारण कर लेते हैं।

❑ **दूरेऽपि परस्यागसि पटुर्जनो नात्मनः समीपेऽपि।**
स्वं वृणमक्षि न पश्यति शशिनि कलंकं निरूपयति।।
दूर होने पर भी लोग दूसरों के दोष ढूँढ़ने में निपुण होते हैं, पर समीप होने पर भी अपने दोष नहीं देखते। आँख अपना घाव नहीं देखती, चन्द्रमा के कलंक को निहारती है।

❑ ❑

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मूढ़मान्यताएँ और अन्धविश्वास

❑ आन्दोलन द्वारा सनसनी फैलाकर किसी सामाजिक बुराई को दूर करने की कोशिश से कोई लाभ नहीं हो सकता। —*स्वामी विवेकानन्द*

❑ रूढ़ियाँ कभी धर्म नहीं होतीं, वे एक समय की सामाजिक शृंखलाएँ हैं, वे पहले की श्रृंखला जिनसे समाज में सुथरापन था, मर्यादा थी, पर अब वो जंजीरें बन गई हैं। —*निराला*

❑ विवाह में दहेज लेना और जानवर खरीदना एक ही बात है, भारतीय समाज इस कलंक को त्यागे बिना समर्थ नहीं बन सकता।

—*स्वामी दयानन्द सरस्वती*

❑ जो युवक दहेज लेते हैं, वे निश्चय ही अनैतिक हैं। जो स्वयं दहेज का आग्रह नहीं रखते, किन्तु माँ-बाप द्वारा वसूल किये जा रहे दहेज का खुला विरोध नहीं करते, वे जीवन में किसी महत्त्वपूर्ण मसले पर पर्याप्त नैतिक दृढ़ता नहीं दिखा सकते।

—*स्वामी विवेकानन्द*

❑ विवाह एक ऐसी बाढ़ है, जो धर्म की रक्षा करती है। यदि तोड़ दी जाएगी तो धर्म का नाश हो जाएगा। —*महात्मा गाँधी*

❑ विवाह दो आत्माओं को मिलाने, एक-दूसरे के सहयोगी और सच्चे सहचर बनकर आत्म-कल्याण के मार्ग में दृढ़तापूर्वक चलने की शक्ति देने वाला संस्कार है, उसमें लेन-देन का अर्थ संस्कार न होकर पशु-व्यापार होगा।

—*रामकृष्ण परमहंस*

❑ दुष्ट लोगों को निन्दा में बहुत आनन्द आता है। कौवा पक्षी सभी रसों को चखने के पश्चात् गन्दगी से ही सन्तुष्ट होता है।

—*महाभारत*

❑ कुरीति के अधीन होना कायरता है और उसका विरोध करना पुरुषार्थ है। —*महात्मा गाँधी*

❑ माथे पर चन्दन पोतने से क्या फायदा ? जबकि मन में बुराइयों के ढेर जमा हो रहे हों। बाहरी बनावट से कुछ काम न चलेगा। जबकि दिल मक्कारियों की गठरी बना हुआ है। चेहरे को विशेष आकृति का बनाकर धर्मात्मा नहीं बना जा सकता है। ढोंग करना सज्जनों का काम नहीं, ठगों का व्यापार है। बाहर से उजाला और भीतर से मैला मनुष्य उस गधे के तुल्य है, जो शेर की खाल ओढ़े फिरता है, पर घूरों पर चरता है। धर्मात्मा बनने वाला, दुराचारी उस बधिक की तरह है कि जो जाल बिछाकर झाड़ियों के पीछे छिपा रहता है और भोली चिड़ियों को फँसाता है। अपवित्र मन को लेकर तीर्थ में जाने से कुछ लाभ न होगा।

❑ मन में वासनाएँ भरी रहें और बाहर से त्याग का आडम्बर करें, तो उससे क्या प्रयोजन ? ढोंगी आदमी समझता है कि मैं दूसरों को खूब चकमा देता हूँ, परन्तु यथार्थ में वह अपने सिवाय और किसी को नहीं ठग सकता। जो पापी है, वह अन्त समय बहुत पछतायेगा और कहेगा—हाय ! मैंने अपने हाथों अपना नाश क्यों किया ? जिनके हृदय पवित्र हैं उन्हें आडम्बर की क्या जरूरत है और न जटा रखने की।

—*सन्त तिरुवल्लुवर*

❑ **शब्दादिभिः पञ्चभिरेव पञ्च पञ्चत्वमापुः स्वगुणेन बद्धाः।**
कुरंगमातंगपतंगमीनभृंगा नरः पञ्चभिरञ्चितः किम।।

—*विवेक चूडामणि ७८*

अर्थात् 'हरि, हाथी, पतंगा, मछली और भौंरे'—ये अपने-अपने स्वभाव के कारण शब्दादि पाँच विषयों में से केवल एक-एक से सशक्त होने के कारण मृत्यु को प्राप्त होते हैं, तो फिर इन पाँचों विषयों से जकड़ा हुआ, असंयमी पुरुष कैसे बच सकता है ? (उसकी तो दुर्गति सुनिश्चित ही है।)

❑ **अन्नं न परिचक्षीत। तद्व्रतम्।** —*तैत्तिरीय ३।८*

जूठन छोड़कर, अन्न देवता का तिरस्कार न करो।

❑ अब धर्म भी एक शौकीनों की चीज बनता चला जाता है। घर में अनेक तरह के सुसज्जा-साधन और जी बहलाने वाले उपकरण रहते हैं, उसी तरह धर्म को भी घर के एक कोने में स्थान देने की आवश्यकता समझी जाती है। शौकीनी सुसज्जा में विभिन्न स्तर की वस्तुएँ इकट्ठी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करनी पड़ती हैं। सभ्यता ने धर्म को एक ऐसा ही उपकरण समझना आरम्भ किया है और कितने ही लोग अपने कई तरह के शौकों में एक शौक धर्मचर्चा का भी सम्मिलित कर लेते हैं।

यह स्थिति धर्म जैसे जीवन तत्त्व का उपहास करना है। स्नानघर सजाकर रखने मात्र से स्वच्छता की आवश्यकता पूरी नहीं होती। रसोईघर में आवश्यक वस्तुएँ जमा कर देने भर से क्या भूख बुझ सकती है। पलंग भर बिछा रहे तो क्या बिना सोये नींद पूरी हो जाएगी।

❑ दूसरों की दृष्टि में धर्मात्मा बनकर अपनी आन्तरिक अधार्मिकता को छिपाने के लिए आवरण ओढ़ना किस काम का ? यदि धर्म के प्रति सचमुच आस्था हो तो उसे न केवल दृष्टिकोण में वरन् क्रिया-कलाप में भी समाविष्ट करना चाहिए, अन्यथा मूल रूप को खुला रहने दें और धार्मिक बनने का दम्भ न करें। इससे अधर्म के साथ दम्भ को जोड़ने की दुहरी बुराई तो न बढ़ेगी।

—रवीन्द्रनाथ टैगोर

❑ जो घर आर्थिक संकट में भी ईमानदार है, असफलताओं में भी निराश नहीं होते, बड़ी-बड़ी विपत्ति में भी धैर्य को नहीं खोते, सत्य की रक्षा के बड़े से बड़े वैभव, प्रतिष्ठा, यश, पद आदि को ठोकर मार सकते हैं। कठोर से कठोर और विशाल से विशाल आवरण के भीतर छिपे हुए कष्ट की खोज कर सकते हैं—ऐसे मनुष्य सच्चे चमत्कारी हैं। विवेकी मनुष्य ऐसे ही चमत्कारों की पूजा करते हैं। वे भूत, पिशाच, देव आदि चमत्कारों की पूजा नहीं करते।

❑ पवित्रता बन्द घर के भीतर नहीं पनपती। वह ऊपर से भी लादी नहीं जा सकती। पर्दा की चहारदीवारी खड़ी करके उसकी रक्षा नहीं की जा सकती।

—महात्मा गाँधी

❑ जब वर कन्या के बाप से विवाह करने की मेहरबानी के लिए धन लेता है, तब नीचता की हद हो जाती है। पैसे के लालच से किया गया विवाह, विवाह नहीं है, एक नीच सौदा है।

—महात्मा गाँधी

❑ अन्धानुकरण से आत्म-विश्वास के बजाय आत्म-संकोच होता है।

—महायोगी अरविन्द

❑ अपनी अन्ध-परम्पराएँ बदल दें तो हमारी शक्ति और सामर्थ्य का ठिकाना न रहे।

—स्वामी विवेकानन्द

❑ अन्धविश्वास हानिकारक है पर अति-विश्वास उससे भी घातक। आज लोगों ने विज्ञान पर अति-विश्वास कर लिया है, इसी के फलस्वरूप व्यक्ति पतन की ओर जा रहा है।

—डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

❑ जिस राजा के राज्य में सुरादेवी आदर प्राप्त करेगी, वह राज्य कालवेदी पर नष्ट होगा। वहाँ न औषधि उपजेगी, न अनाज होगा।

—महात्मा बुद्ध

❑ जो जितना कृत्रिम होता है, वह उतना ही दीन और डरपोक। जिसमें सत्य प्रकट करने की क्षमता नहीं वह ही कृत्रिमता का सहारा लिया करता है। सत्य की कमी ही कृत्रिमता का आधार है। जिस जौहरी के पास सच्चे और खरे मोती होंगे, वह बिल्लौर के चमकीले टुकड़े किसी के सामने नहीं रखता, जल के अभाव में ही नदी किसी को दलदल में फाँसने का प्रयत्न करती है। किसी आलोचना अथवा टीका-टिप्पणी के भय से सत्य को न छिपाने वाला भी एक वीर है और सर्वसाधारण के आदर का पात्र भी।

❑ जो जितनी अधिक कृत्रिमता अपनाता है या ढोंग करता है, वह उतना ही अपने को धोखा देता है। संसार को असत्य के छल से ठगा नहीं जा सकता। संसार की दृष्टि व्यक्ति की ओर और व्यक्ति की दृष्टि संसार की ओर रहती है। जगत हजार आँखों से देखता है और व्यक्ति केवल दो से।

—ठक्कर बापा

❑ **यौवनं धनसम्पत्तिः प्रभुत्वमविवेकिता।**
एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम्।।

—पंचतन्त्र

यौवन, धन-सम्पत्ति, प्रभुता और अविवेक इनमें से एक-एक भी अनर्थ का कारण होता है, फिर जहाँ ये चारों मौजूद हों, उसके लिए क्या कहना ?

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ मृतक संस्कार के अवसर पर किसी के यहाँ भोजन न करो, क्योंकि ऐसे समय के भोजन से भगवद्भक्ति और प्रेम नष्ट हो जाते हैं।

—रामकृष्ण परमहंस

❑ अगर हम अहिंसात्मक प्रयत्न द्वारा अपना ध्येय प्राप्त करना चाहते हैं, तो जो लाखों स्त्री-पुरुष शराब, अफीम बगैरह नशीली चीजों के व्यसन के शिकार हो रहे हैं। उनके भाग्य का निर्णय हम सरकार पर नहीं छोड़ सकते। स्थायी और स्वास्थ्य पूर्ण मुक्ति भीतर से ही आती है, यानी आत्म-शुद्धि से ही उद्भूत होती है।

—महात्मा गाँधी

❑ कितने दुर्भाग्य की बात है कि मनुष्यों में से अधिकांश का अधिकांश समय अपने भविष्य को बिगाड़ने में लगता है। *—ज्यां दिला ब्रीयेयर*

❑ मांस खाने में कोई आपत्ति नहीं, पर ऐसा करते हुए मनुष्य को यह भी स्वीकार करना पड़ेगा कि सृष्टि में मानवीय सभ्यता नाम की कोई वस्तु शेष नहीं। मांस मानवता को त्याग कर ही खाया जा सकता है। *—हर्बर्ट स्पेन्सर*

❑ मनोरंजन जीवन की अनिवार्य आवश्यकता है, पर जो मनोरंजन मन और इन्द्रियों को कुमार्गगामी बनाये, ऐसे सस्ते मनोरंजन से तो एकान्त में विश्राम अच्छा, उससे शरीर को नयापन तो मिलेगा ही। *—ओरिलियस*

❑ परम्पराएँ लैम्पपोस्ट (मार्ग-दीप) की तरह होती हैं। बुद्धिमान उनकी रोशनी में अपनी मंजिल तय करते हैं और आलसी-अकर्मण्य उनके द्वारा अपनी विफलताओं का समर्थन करते हैं।

—वाइकाउण्ट हेलशाम

❑ हर साल एक बुरी आदत को जड़ से खोदकर फेंका जाए तो कुछ साल में बुरे से बुरा आदमी भला हो सकता है। *—फ्रैंकलिन*

❑ बड़ों के प्रति श्रद्धा और आदर आवश्यक है, पर अंधश्रद्धा और उनकी अनीति का सामना करना उससे भी अधिक आवश्यक है। *—हर्बर्ट स्पेन्सर*

❑ एक आदमी मृत्यु का मुकाबला तो बिना डरे कर सकता है, किन्तु नैतिक बातों में परिपाटी से बाहर जाने की उसमें हिम्मत नहीं होती।

—एनातौले फ्रांस

❑ संसार की सारी सेवाएँ मिलकर इतने मनुष्यों और इतनी सम्पत्ति नष्ट नहीं करती, जितना अकेला नशा। नशा समाज का सबसे बड़ा शत्रु है। *—मिल्टन*

❑ शराब न केवल आदमी के भीतर शैतान के लिए रास्ता बनाती है, बल्कि आदमी को शैतान की ओर ले जाती है। *—आक्म क्लार्क*

❑ तम्बाकू के धुएँ में फास्फरोल और कार्बनमोनो-ऑक्साइड गैस भरी होती है। वह सब मिलकर मनुष्य के मस्तिष्क और शरीर को विषाक्त एवं निष्क्रिय बनाती हैं और उसकी आयुष्य तथा शक्ति को भारी क्षति पहुँचाती हैं।

❑ आदमी की सबसे भारी भूल यही है कि वह सोचता है कि कुदरतन वह कमजोर और पापी है, किन्तु सत्य यह है कि प्रकृति से मानव दिव्य है। जो पापी और बलहीन होते हैं, वह उसकी आदतें हैं, इच्छाएँ हैं और विचारधारा हैं। वह स्वयं पापी और बलहीन कभी नहीं हो सकता है।

❑ चाहे तुमको मूर्खों की संगति हँसा भी दे तो भी पीछे वह अत्यन्त हानिकारक होती है।

❑ लगातार क्षमा माँगना या क्षमा माँगना जैसी सूरत बनाये रखना, रूढ़ियों और प्रथाओं का प्रभुत्व तथा शक्ति को स्वीकार करना है। इससे यह भी प्रकट होता है कि क्षमा-प्रार्थी आदमी भी समाज का गुलाम और रूढ़ियों का दास है।

❑ तुम्हें न तो आदमियों की बुराइयों तथा असफलता की नकल करनी चाहिए, न उनकी त्रुटियों की बराबरी करने या उनसे बढ़ने का प्रयत्न करना चाहिए और न उनकी बुरी आदतों की नकल करनी चाहिए।

❑ धन, लक्ष्मी, विद्या, जाति, युवावस्था का मद त्याग करो।

❑ राग-द्वेष और बैर-भाव को त्यागकर अपने बन्धुओं का, देश का हित करो।

❑ जिनके मस्तिष्क अन्ध-विश्वास से मुक्त हैं। उन्हें मृत्यु भी भयभीत नहीं कर सकती।

❑ मरने के बाद कुत्ते भी समाधिस्थ हो जाते हैं। समझदारी इसमें है कि कठिनाइयों के बीच शान्त-संतुलित ठहरा जा सके। जब बछड़ा गले

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की रस्सी तुड़ा सकता है तो तुम भव-बन्धनों को क्यों नहीं काट सकते ?

- सूप से सीखो, कि वह श्रेष्ठ को तो पास में रखता है और सड़े-गले को फेंक देता है।

- ईश्वर निन्दा-प्रशंसा से परे है। न उसे किसी की स्तवन सुनने में रुचि है, न उपहार पाने की जरूरत। वह सिर्फ यह देखता है कि भक्त ने अनुशासन पाला या आडम्बरों के खेल-खिलौनों से उसे फुसलाया।

- इन दिनों लौकिक प्रचलन और तथाकथित अध्यात्म के आडम्बर दोनों ही दो ओर से अन्तःकरण की उत्कृष्टता को गिराने वाले आक्रमण करते हैं। लौकिक प्रचलनों में स्वार्थपरता की निष्ठुरता और अपहरण की निर्दयता को चातुर्य माना गया है और इसी को अपनाकर लोग अपना उल्लू सीधा करने में निरत हैं।

  यह आक्रमण का एक पथ हुआ। दूसरा वह है, जिसमें देवता को प्रसन्न करने और मन्त्र-तन्त्र के सहारे ऋद्धि-सिद्धियाँ प्राप्त करने के स्वप्न सँजोये जाते हैं और आत्म-निर्माण की बात को एक प्रकार से पूरी तरह फलश्रुतियों से, पाप-पुण्य से निवृत्ति और बिना तप-त्याग के ऐसे ही स्वर्ग-मुक्ति झटक लेने के जो सब्जबाग दिखाये गये हैं, उससे नीतिमत्ता का पक्ष बेतरह कमजोर हुआ है। जब नदी-सरोवरों के स्नान भर से पापदण्डों से बचाव हो सकता है तो कोई भ्रष्टचिन्तन और दुष्ट कर्त्तव्य के द्वारा मिलने वाले लाभों को क्यों छोड़े ?

- जब आत्मिकी के प्रतिपादित सत्परिणाम मात्र सस्ते टंट-घंटों से ही उपलब्ध हो सकते हैं, तो फिर कोई आत्म-सुधार और आत्म-निर्माण की कष्टसाध्य प्रक्रिया से होकर क्यों गुजरे ?

- जिस कर्त्तव्य से तुम दूर होकर भागते हो, वह तो तुम्हारा सुधार करने वाला है। जिस व्यसन को तुम पकड़ने दौड़ रहे हो, वह तुम्हारा शत्रु है।

- मनुष्य जितना अपनी आत्मा की तरफ ध्यान नहीं देता उतना ही दूसरे की निन्दा में चित्त लगाता है।

- काम, क्रोध और लोभ ये तीनों नरक के दरवाजे हैं। ये आत्मा के नाश करने वाले हैं, इसलिए इनसे बचना चाहिए।

- **कृपणेन समो दाता न भूतो न भविष्यति।**
  अस्पृशन्नेव वित्तानि यः परेभ्यः प्रयच्छति।।
  कंजूस के समान दानी भला और कौन होगा, जो अपने काम के लिए धन का कुछ भी उपयोग न करके दूसरों के लिए उसे छोड़ जाता है।

- बिरादरी दावत खाना जानती है ? यह नहीं समझ पाती कि किसी जेब में कितनी गुंजायश है ?

- भूल-सुधार संसार की सबसे बड़ी सेवा है, जबकि बुराइयों से मुँह मोड़ना सबसे बड़ा पाप है।

- अपने को भरसक बुराइयों से बचाते रहना और अनिवार्य बातों से लाभ उठाना—यही कर्म का कौशल है।

- जो मनुष्य जीवन-संग्राम में परास्त हो जाते हैं, वे अज्ञानवश दूसरों की निन्दा करने लगते हैं और असफलता का दोष दूसरों पर मढ़ते हैं, जबकि उसके जिम्मेदार वे स्वयं हैं।

- लोभ और दम्भ ईश्वर द्वारा शापित हैं ही, सभी के लिए दुर्गुण हैं, पर धर्माचार्य के तो वे निकृष्ट गुण हैं।

- **असती भवति सलज्जा क्षारं नीरं च शीतलं भवति।**
  दम्भी भवति विवेकी प्रियवक्ता भवति धूर्तजनः।।
  कुलटा स्त्री लाजवन्ती बनती है, खारा पानी साफ और ठण्डा होता है, पाखंडी आदमी विवेकी बनता है और मधुर बोलने वाला प्रायः धूर्त होता है।

- सच्चे मनुष्य के वस्त्र साधारण होते हैं। वस्त्रों में वह बहुत कम व्यय करता है। उसके वस्त्र सस्ते और संख्या में भी कम होते हैं, किन्तु वह मैले और गंदे नहीं होते।

- वस्त्र के विषय में अपनी रुचि को अत्यन्त सरल बना लो। अपने को बहुमूल्य वस्त्रों से सजाने वाले उन व्यर्थ के छैलाओं और रंगीलों के समान मत बनो, जो अपने धन का प्रदर्शन करना अथवा चालाकी से अपने मुख पर झूठा सौन्दर्य लाना चाहते हैं। वास्तविक सौन्दर्य को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org

www.vicharkrantibooks.org

सजाने के लिए वस्त्रों का ही विश्वास होता है कि उत्तम वस्त्रों में उनकी कुरूपता छिप जावेगी।

❑ इस बात को स्मरण रखो कि बजाज और दर्जी आपके आकार में लेशमात्र भी परिवर्तन नहीं कर सकता। आप कितने भी बढ़िया वस्त्र पहन लो, जो कुछ हो वही रहोगे। सौन्दर्य के विषय में यह है कि उत्तम स्वास्थ्य और शुद्ध आचरण पैरिस के अच्छे से अच्छे क्रीम और पाउडर से भी अधिक सौन्दर्य बढ़ाते हैं। गाजर खाने से आपका रूप अन्य सभी श्रृंगार सामग्री की अपेक्षा इतना अधिक सुन्दर हो जाएगा कि उत्तम से उत्तम वस्त्राभूषण तथा सुगंधि आदि से श्रृंगार करने वाली नवयुवतियों का भी नहीं हो सकता। अतः वस्त्रों में सरलता को ही पसन्द करो। बहुव्यय, कृत्रिमता और अत्यन्त बनाव-श्रृंगार को छोड़ दो। इससे बहुत शीघ्र घृणा और उपहास सहन करना पड़ता है।

❑ निष्ठुरता से बढ़कर कुरूपता और कोई नहीं।

❑ सम्पदा को दुर्व्यसनों में गँवा बैठना सरल है, पर उस कारण लदे बोझ का वहन करना कठिन।

❑ प्रचलनों को महत्त्व मत दो। बहुसंख्यक वे हैं, जिनमें विचारने की क्षमता नहीं और जो परिपाटी का आश्रय लेने के अतिरिक्त और कुछ कर नहीं सकते।

❑ दुष्ट मनुष्यों का मन ऐसे है जैसे कुत्ते की पूँछ। उसे बार-बार सीधा कीजिए, फिर भी टेड़े होने की आदत न छूटेगी।

❑ आदमी चाहे तो थोड़े में गुजर कर सकता है। सुखी बन सकता है और महान कार्यों के लिए समय निकाल सकता है, पर आश्चर्य यह है कि अनीतिपूर्वक कमाता है तथा दुष्प्रयोजनों में गँवाता है।

❑ दुनिया के भाग्य को रोककर नष्ट करने वाले दो ही कारण हैं, पहला अभिमान, दूसरा घृणा।

❑ चिन्ता के समान कोई आग नहीं, द्वेष के समान कोई विष नहीं, क्रोध के समान कोई शूल नहीं, लाभ के समान कोई जाल नहीं।

❑ बड़े बनने वाले इस दुनिया में बहुत कम हैं। अधिकांश लोग बड़े बनने का शौक रखते हैं।

❑ न नग्न रहने से, न जटा से, न भस्म लगाने से, न उपवास से, न भूमि पर लेटने से, न भिन्न-भिन्न आसनों से वह पुरुष पवित्र हो सकता है, जो तृष्णा के बन्धनों से नहीं छूटा है

❑ यदि तुम संसार को वश में तथा अपनी ओर आकर्षित करना चाहते हो, तो एक आदत छोड़नी होगी, वह है—कटुवचन।

❑ किसी की निन्दा मत करो। याद रखो इससे तुम्हारी जुबान गंदी होगी, तुम्हारी वासना मलिन होगी। जिसकी निंदा करते हो उससे बैर होने की सम्भावना रहेगी और चित्त में कुसंस्कारों के चित्र अंकित होंगे।

❑ दुनिया में जितने दुष्ट हुए हैं, उनमें से प्रायः सभी बचपन में अपने माता-पिता और बड़े-बूढ़ों की अवज्ञा करने वाले थे।

❑ दुनिया के सत्कार्यों में बाधा डालने वाले खुद भी नष्ट हो जाते हैं, जैसे फसल को नष्ट करने वाला ओला खुद भी नष्ट हो जाता है।

❑ पाप में किसी को आनन्द नहीं मिला और न दुर्भावनाओं के बीच किसी ने शांति प्रदान की है।

❑ थोड़े भी अपरिचित व्यय से सावधान रहो, ज्यादा छिद्र होने से ही बड़े-बड़े जहाज डूब जाते हैं।

❑ घर त्यागने और वेष धारण करने से कोई साधु नहीं होता। साधु वह जिसके विचार और व्यवहार साधुतापूर्ण हैं।

❑ निर्धन होना दुर्भाग्य है, पर सबसे अभागे वे हैं, जो कृपणता से ग्रस्त हैं। संकीर्णता का अभिशाप साधनों का सदुपयोग नहीं करने देता और वैभव को संकट और पतन का कारण बना देता है।

❑ केवल सिर मुड़ा लेने से कोई श्रमण नहीं होता। केवल नाम जपने से कोई सिद्ध नहीं होता। केवल क्रिया करने से कई योगी नहीं होता। केवल मृगछाला पहनने से कोई योगी नहीं होता। सन्त को मन बदलना पड़ता है।

❑ इन दिनों आत्मिकी के बारे में चल रहे अन्ध-विश्वासों ने जन-मान्यता कुछ विचित्र स्तर की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बना दी है। समझा जाता है कि आसमान में रहने वाले देवी-देवता बेकार बैठे रहते हैं। उन्हें पूजा कराने की भारी उत्कण्ठा है। जो उनकी इस आवश्यकता को छोटे रूप में भी, उपेक्षापूर्वक भी कर दे, उसी को वे अपना भक्त मान लेते हैं और मनोकामना पूर्ण करने के लिए आँख मूँदकर दौड़ पड़ते हैं, उचित-अनुचित जैसा भी कुछ उन्हें नहीं सूझता। पूजा लेने और वरदान देने भर का धन्धा उन्होंने अपनाया हुआ है, इसी भ्रमग्रस्तता में देव-पूजा के नाम पर आत्मिकी का अधिकांश आडम्बर कागजी रावण की तरह अपना विशालकाय ढकोसला रचे खड़ा है।

❑ लोग धर्म की परवाह न कर गुप्त रूप में अन्याय, शोषण, रिश्वत और अनीति के अदृश्य मार्गों को अपनाकर धनोपार्जन में जुटे रहते हैं। उन्हें अधर्म का भय नहीं है। उनको यह भी ज्ञान नहीं कि तुम्हारा यह अधर्म किसी दिन तुम्हारा नाश कर देगा। पाप से कमाया धन तुम्हारा कभी साथ न देगा। इस प्रकार लोग मानव-धर्म से दूर हो जाते हैं।

❑ जहाँ सस्ता खरीदा और बेचा जाता है, वहाँ धोखा है। न ईश्वर को पाना उतना सस्ता है और न धर्म का पालन, जितना कि धूर्त लोग मूर्खों को बहकाते हुए बताया करते हैं।

❑ धोखा देना संसार की सबसे बड़ी निर्बलता है, छल-कपट करना संसार की सबसे बड़ी मूर्खता है, क्योंकि धोखेबाजी से जितना लाभ उठाने की जो व्यक्ति आशा करते हैं, उससे अनेकों गुनी हानि उन्हें उठानी पड़ती है।

❑ दूसरों की निन्दा सुनना हानिकारक है, क्योंकि वह झूठी है तो व्यर्थ ही मन में भ्रम और दुर्भाव. पैदा होकर अपनी मनःस्थिति खराब करते हैं और यदि वह निन्दा सच्ची हो तो, न विचारने लायक तुच्छ मनुष्य के सम्बन्ध में विचारने से अपनी समय-वृत्ति होती है।

❑ स्वार्थ, अहंकार और लापरवाही की मात्रा बढ़ जाना यही किसी व्यक्ति के पतन का कारण होना है।

❑ कायरता एक प्रकार की मनुष्य की दुर्बलता है, मनुष्य का जन्मजात गुण नहीं। वह एक प्रकार की अहितकर आदत है, जो दूसरी आदतों के समान अभ्यास से उत्पन्न होती है।

❑ मनुष्य के संवेगात्मक जीवन में परिवर्तन होने पर उसकी कुत्सित आदतें सदा के लिए दूर हो जाती हैं।

❑ जटिल आदतें मनुष्य के मन में किसी विशेष प्रकार की भावना-ग्रन्थि से सन्नद्ध रहती हैं। मनुष्य इन आदतों को छोड़ना चाहते हुए भी नहीं छोड़ पाता। इससे मुक्ति के लिए मनोविश्लेषण की आवश्यक्रता है।

❑ मूर्ख मनुष्य अपनी सम्पूर्ण मानसिक और आत्मिकशक्ति को छिछोरेपन, व्यर्थ की बकवाद और स्वार्थयुक्त बातों में नष्ट कर देते हैं साथ ही बुरे कामों में अपना समय भी बर्बाद कर देते हैं।

❑ जो मनुष्य अपनी गलतियों तथा निर्बलताओं का प्रकाश में आना सहन नहीं कर सकता है, उसका सत्य के रास्ते पर चलना मुश्किल है।

❑ आलस्य, अवगुणों का बाप, दरिद्रता की माता, रोगों की धाय और जीवित आदमी की कब्र है।

❑ लोग चाहे तुम्हें बड़ा भाग्यवान समझें, परन्तु यदि तुम्हारे मन में पाप भरे हैं, कामना की ज्वाला जल रही है, भगवत प्रेम का अमृत नहीं बह रहा है, तो निश्चित समझो कि तुम्हारा जीवन निष्फल है।

❑ आवेश में आकर कोई काम मत करो। ताव में मनुष्य आपे में नहीं रहता, फिर अपना भला-बुरा कैसे सोच सकता है ? जब क्रोध से बाहर हो रहा हो तो बुद्धिमानी इसी में है कि उस स्थान से उठकर चले जाओ।

❑ दुराग्रहपूर्वक गलत राह पर चलते जाने की अपेक्षा भूल प्रतीत होने पर लौट पड़ना ही बुद्धिमानी है।

❑ अनुचित लाभ तत्काल तो बहुत प्रिय लगते हैं, किन्तु पीछे असीम त्रास देते हुए विदा होते हैं।

❑ कभी-कभी मन सोचने पर विवश हो जाता है कि उपासना-गृहों की संख्या व उनमें जाने वालों की तादाद बढ़ते चले जाने के बावजूद

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नास्तिकता क्यों तेजी से बढ़ रही है ? क्यों व्यक्ति परमसत्ता के अनुशासन की उपेक्षा कर, कर्मकाण्डों के आडम्बरों में उलझा निजी जीवन में अनैतिक आचरण करता जाता है ? क्यों वह यह समझ नहीं पाता कि मात्र बाह्योपचार करते चलने से उसकी आत्मिक प्रगति नहीं सध पाएगी, न उसकी भौतिक महत्त्वाकांक्षाएँ ही पूरी होंगी ? सम्भवतः इसके मूल में नासमझी हो, गहराई तक घुसा अज्ञान हो, विचार-संस्थान में संव्याप्त भ्रान्तियाँ हों, जिनसे वह उबरना न चाहता हो।

आज की सबसे बड़ी आवश्यकता इन प्रच्छन्न नास्तिकों के चिन्तन में आमूलचूल हेर-फेर की है। व्यक्ति बहिरंग जीवन में धार्मिक आचरण करे, न करे किन्तु उसके मानस का परिष्कार तो होना ही चाहिए। उसे यह समझना जरूरी है कि बिना भावनात्मक कायाकल्प के सारे बाह्योपचार निरर्थक हैं। यह तभी सम्भव हो सकेगा, जब अध्यात्म धर्म के सम्बन्ध में, उपासना-सिद्धि के सम्बन्ध में छाई तमाम भ्रान्तियों का निवारण उसे विज्ञानसम्मत बनाकर किया जाए। विज्ञानसम्मत से अर्थ है तर्क, तथ्य, प्रमाण, लौजिक की कसौटी पर कसते हुए। आज समाज में छाई अनास्था स्वयं को नास्तिक कहने वालों की बजह से नहीं है, अपितु उन आस्तिकों की बजह से है जो स्वयं वैसा ही कहते हैं, बाहर वैसा ही आडम्बर रचते हैं, पर उनके जीवन में वह कहीं भी लेशमात्र भी नजर नहीं आता। प्रगतिशील अध्यात्म की जितनी आवश्यकता आज है, उतनी पहले कभी नहीं रही।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

पतन-पराभव

- पैरों से जो लोग उत्तेजनाओं की नई-नई ताड़नाओं से उद्भावित होकर फैशन के भँवर में पड़ गन्दले हो जाते हैं, वे बेइज्जती के कूड़े में जमा होकर समाज की हवा को दूषित करते रहते हैं। *—रवीन्द्रनाथ टैगोर*
- विषयों ने उसे एक बार जीता (वह विषयासक्त हुआ) तो उसकी वह दुर्गति होती है, जहाँ से बहुत लम्बे समय बाद भी निकलना उसके लिए दुर्लभ हो जाता है। *—भगवान महावीर*
- जो मैं अन्यायों को सहायता दूँ तो मैं अन्याय में शामिल होऊँ। इस कारण अन्याय का स्वरूप जब उग्र हो, तब सहायता बन्द करना हमारा धर्म है। *—महात्मा गाँधी*
- जो स्वार्थी हैं, उनका पतन एक न एक दिन जरूर होगा। जो सेवापरायण हैं, उन्हें पतन के लिए अवसर और अवकाश ही कहाँ मिलेगा ? पतित व्यक्ति पहले सत्य विमुख होता है। पीछे अन्धकार में प्रवेश करता है, क्योंकि पाप अँधेरे में ही हो सकता है। असत्य और अन्धकार यही तो दो पतन के अवलम्बन हैं।
- विचारोत्तेजक भावनाओं से बचने के लिए विकारोद्दीपक मुद्राएँ न देखो, क्योंकि भाव तो मुद्रा की जननी है। *—रवीन्द्रनाथ टैगोर*
- लोकशिक्षक चरित्रहीन हो तो वह बिना खारेपन के नमक जैसा फीका होगा।
- मन को गन्दा, आत्मा को कलुषित करे, ऐसी कला से बचना ही अच्छा है। सिनेमा कुछ ऐसी ही कला है, जिसे बदलना आवश्यक है। *—महात्मा गाँधी*
- यह सम्भव नहीं कि कोई व्यक्ति पशु-प्रवृतियों में निरत रहे और अन्ततः पूर्ण पतित न हो पाये। झूठ के साथ खिलवाड़ भी मत करो। इससे तुम अपने मन की कोमलता गँवा बैठोगे। जिसे अपना खेत साफ-सुथरा रखना होता है, वह खरपतवार को उखाड़ने में हिचक नहीं करता। *—हेमर शोल्ड*
- पाप को स्वीकार न करना दुनिया का सबसे बड़ा पाप है और सबसे मुक्ति सम्भव है, पर इससे मुक्ति सम्भव नहीं। *—लूथर*
- कला का रुख लोकशिक्षण की ओर न मुड़ा तो संसार को एक दिन कला ही नष्ट कर देगी। *—हर्बर्ट स्पेन्सर*
- **बला मन क, स, बा सैयतंव अहातत् बिही खती आतुहू फ ओलाये, का असअहाबुन्नारे हिम फीहा खालिदून।** *—सूरये बकर १। १। १०*

  वास्तविक बात तो यह है कि जिन्होंने कुकर्म कमाये और जो अपने पाप-परिधि में आ गये, ऐसे ही लोग फलतः नारकी हैं, वे सदा नर्क ही में रहेंगे।
- गुप्त तथा प्रकट पापों को छोड़ दो तो लोग पाप कमाते हैं, उनको अपने कृत्य का परिणाम शीघ्र प्राप्त हो जाएगा। *—सूरये माइदा २। ८। १४। ११*
- जो मनुष्य तुम्हारे साथ युद्ध करे तुम भी अल्लाह के मार्ग में उनसे युद्ध करो और अत्याचार न करो। निःसंदेह अल्लाह अत्याचारियों से प्रसन्न नहीं होता। *—सूरये बकर १। २। २४*
- जो जिन्दगी भर बुरे काम करते रहे उनकी तौबा कबूल नहीं की जाएगी। *—सूरये निसाअ*
- जिस समाज या जाति में चरित्रता की ओर ध्यान नहीं दिया जाता, वह समाज या जाति प्रतिदिन अवनति के मार्ग पर अग्रसर होती चली जाएगी, चरित्रहीनता उसको जर्जर व अशक्त करके छोड़ेगी।
- जैसे कि काष्ठ का पैदा हुआ कीड़ा काठ ही को नष्ट कर देता है, उसी तरह अधर्म करने वाले को अधर्म ही नष्ट-भ्रष्ट करके नरक में ढकेल देता है।
- लालची आदमी चाहे करोड़पति हो जाए तो भी सदा नीच, पतित और घृणित रहेगा। जब तक दुनिया में उससे अधिक धनवान रहेंगे, वह उन्हें देखकर अपने आप को निर्धन ही समझेगा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

मित्रता

❑ जो मनुष्य अपने मित्र के शत्रुओं से मित्रता करता है, वह अपने मित्र को नुकसान पहुँचाना चाहता है। ऐ बुद्धिमान मनुष्य ! तू उस मित्र से हाथ धो ले जो शत्रुओं से मेल-जोल रखता है। *—शेखसादी*

❑ संसार में केवल मित्रता ही एक ऐसी चीज है, जिसकी उपयोगिता के सम्बन्ध में दो मत नहीं हैं।

—सिसरो

❑ वह जो जान-बूझकर अपने मित्र को धोखा देता है, वह अपने ईश्वर को भी धोखा देता है। *—लेवेटर*

❑ जीवन भर आनन्द प्राप्त करने के लिए बुद्धि ने जितने साधन जुटाये हैं, उनमें मित्रता की प्राप्ति सबसे महत्त्व की वस्तु है।

❑ एक दार्शनिक कहा करता था कि दुश्मनों से मैं अपने आप निपट लूँगा। ईश्वर मुझे दोस्तों से बचाये।

❑ सच्चे मित्र उन्हीं को मिलते हैं, जो दूसरों के दुःख में दुःखी होते और हाथ बँटाते हैं।

❑ अक्सर देखने में आता है कि किसी-किसी व्यक्ति को जीवनभर प्रयत्न करने पर भी सच्चे मित्र की प्राप्ति नहीं होती। वह आजीवन मित्रता तोड़ता है और जोड़ता रहता है अथवा निराश होकर सोच लेता है सच्ची मित्रता एक ऐसा मीठा स्वप्न है, जिसे सभी आमरण देखते हैं, पर कभी पूर्ण नहीं होता। किसी विषय पर जब बुद्धि निर्णय करने में असमर्थ हो जाती है, तब अपने श्रद्धाभाजन व्यक्तियों से राय लेते हैं। आइये ! हम भी जगतवन्द्य तुलसीदास जी की सम्मति लें। सुनिये तो वे इस कठिन समस्या का क्या उत्तर देते हैं—

इष्ट मिले अरु मन मिले, मिले भजन की रीति।
तुलसी ऐसे जीव सन, हठि कर कीजै प्रीति।।

❑ जरा व्यापक रूप में लीजिये—इष्ट (जीवन का लक्ष्य अर्थात् जिसे पाने की आपको सर्वाधिक चाह है) मिले, अरु मन मिले (स्वभावतः ही आपके, उसके प्रति सद्भाव हों और उसके आपके प्रति दोनों के हृदय एक-दूसरे के प्रति निःस्वार्थ भाव से आकर्षित हों) मिले भजन की रीति (चिन्तन करने की रीति भी दोनों की मिलती-जुलती हो) यह है—मित्रता का निष्कण्टक राजमार्ग। ऐसी मैत्री दिन-दिन बढ़ती है, टूटने का डर नहीं। इसका मतलब यह नहीं कि इन तीनों गुणों के बिना मैत्री हो ही नहीं सकती, अगर अपने पास सहिष्णुता है, धैर्य है और है विमुख और रुष्ट मित्र के लिए भी हार्दिक सद्भाव और शुभ-कामनाएँ हैं तो एक दिन वह आपको इस सच्चे प्रेम का मूल्य समझेगा और हृदय से पश्चात्ताप दग्ध होकर आपसे क्षमा-प्रार्थना करेगा। संसार की कोई भी शक्ति आपकी मित्रता नष्ट नहीं कर सकती, क्योंकि सत्य और न्यायपूर्ण पथ पर जगत्पिता सर्वशक्ति केन्द्र जगत-नियन्ता अपनाकर सदैव ही सहायक है।

❑ उत्तम पुरुषों की मित्रता शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा की तरह है, जो दिन रोज बढ़ती है, किन्तु नीचों का प्रेम कृष्ण पक्ष के समान है। मतलब निकल जाने के बाद उनका प्रेम दिन-दिन घटने लगता है। मित्रता का उद्देश्य मनोरंजन करना नहीं, बल्कि यह है कि दो आत्माएँ एक-दूसरे को कुमार्ग से बचाती हुई सन्मार्ग पर लगावें। महान पुरुषों की मित्रता धर्मशास्त्रों के स्वाध्याय के समान है। तुम जितना ही उनके निकट सम्पर्क में आओगे उतनी ही महानताएँ उनके अन्दर देखोगे। हँसी-दिल्लगी तो भाँड़ भी करते हैं। पर क्या वे मित्र हुए ? मित्र तो वह है जो हृदय के अन्तस्तल में आह्लाद का आविर्भाव करता है। हवा में किसी अंग का कपड़ा उड़ जाए तो हाथ तुरंत ही उसे ढँकने को दौड़ता है, मित्र वह है जो कुमार्ग पर जाते हुए साथी को बचाने के लिए तत्पर रहता है। मित्र तो उसे ही कहना चाहिए जो बुराइयों की विपत्ति से बचाकर नेकी के कार्यों में प्रोत्साहित करता है।

❑ अगर तुमको ऐसा निष्पक्ष साथी मिल जाए जो नेक और बुद्धिमान हो और किसी प्रकार की कठिनाई से न हारे, तो तुम निश्चिन्त होकर उसके साथ चल दो।

❑❑

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

प्रसन्नता

❑ **प्राप्या आगाम नृतये हसाय।**
जिन्दगी हँसते-खेलते जीने के लिए है।

❑ **सन्तोषं परमास्थाय सुखार्थी संयतो भवेत्।**
सन्तोषमूलं हि सुख दुःखमूल विपर्ययः।।
—मनुस्मृति ४।१२
सुख चाहने वाले सन्तोषी बनें और अपने आपको संयम में रखें। सन्तोष ही सुख की जड़ है। असन्तोष में तो दुःख-ही-दुःख है।

❑ प्रसन्नता मनुष्य के भाग्य की एक विशेष रचना है, जो सब में समान है, परन्तु मनुष्य अपनी अजानकारी के कारण उसके लाभ से वंचित रहता है। *—वाल्मीकि*

❑ प्रसन्नता बाह्य पदार्थों में नहीं, यह तो हृदय के अन्दर एक वस्तु है। जो बाहरी आडम्बरों से प्रभावित नहीं होता, वह सदैव प्रसन्न रहता है। *—शेखसादी*

❑ मुसकान में खर्च कुछ नहीं पड़ता, पर वह पैदा बहुत करती है। इसे देने वाले दरिद्र नहीं होते किन्तु पाने वाले निहाल बनते हैं। यह कोंधती तो बिजली जैसी है। पर उसकी स्मृति कभी-कभी चिरस्थायी बनी रहती है। कोई भी इतना धनी नहीं जिसे मुसकान पाने की आवश्यकता न हो। कोई इतना दरिद्र नहीं जो इसे पाकर पुलकित न हो उठे। वह घर में सुख बिखेरती है, व्यापार में लाभ कमाती है और सम्पर्क में आने वालों को मित्रता के धागों से जकड़ती चली जाती है। मुसकान थके हुओं का विश्राम, निराशों का प्रकाश, ठिठुरे हुओं की धूप और पीड़ितों के लिए प्रकृति-प्रदत्त सर्वोपरि उपचार है। *—डेल कारनेगी*

❑ हँसेंगे तो सफल समझे जाएँगे और लोगों का सम्मान पाएँगे। रोयेंगे तो साथ देने वाले विरले ही होंगे। सामान्यतया रोने वालों से लोग बचते हैं कि कहीं अपने दुर्भाग्य की चपेट में हमें भी न लपेट ले।

❑ मनोरंजन के बाद मनुष्य हलकापन, प्रकाश और नई चेतना अनुभव न करे तो वह मनोरंजन निरर्थक और समय का अपव्यय ही कहा जाएगा। *—औरिलियस*

❑ अच्छे और बुरे व्यक्तित्व को पहचानने का एक सही तरीका यह है—अगर मुसकराने से किसी व्यक्ति का चेहरा अधिक सुन्दर हो उठता है तो वह अच्छा है और अगर भद्दा लगता है तो वह सचमुच बहुत बुरा है। *—सी. विलियम*

❑ स्वस्थ मनुष्य के चित्त के लिए प्रसन्नता वैसी ही प्राकृतिक है जैसे उसके गालों की लाली, और जहाँ कहीं स्वाभाविक म्लानता होती है, वहाँ या तो दूषित वायु, अस्वास्थ्यकर भोजन, अनुचित रूप से कठिन परिश्रम होता है या भूल से भरी जीवनचर्या। *—रस्किन*

❑ नारी के जीवन का सन्तोष ही स्वर्णश्री का प्रतीक है। *—रामकुमार वर्मा*

❑ मन की प्रसन्नता ही व्यवहार में उदारता बन जाती है। *—प्रेमचन्द*

❑ अपने अतिथियों से प्रसन्नचित्त और हँसमुख बने रहो। *—शेक्सपीयर*

❑ दीप-सा जलकर प्रकाश दे दो, फूल-सा मिटकर सुवास दे दो। देनी है मिट्टी को अमरता तो जिससे मिलो उसे उल्लास दे दो।
—लालाराम साहु 'मधुप'

❑ असन्तोष ही सबसे बढ़कर दुःख है और संतोष ही सबसे बड़ा सुख है, अतः सुख चाहने वाले पुरुष को सदा संतुष्ट रहना चाहिए। सन्तोष-सेतु जब टूट जाता है, तब इच्छा का बहाव अपरिमित हो जाता है। *—प्रेमचन्द (प्रेमपचीसी)*

❑ मन को हर्ष और उल्लासमय बनाओ, इससे हजारों हानियों से बचोगे और लम्बी उम्र पाओगे। *—शेक्सपियर*

❑ प्रसन्नता स्वास्थ्य की आधारशिला है। जो सदैव मुसकराते रहते हैं, वे अस्वस्थ नहीं हो सकते।
—विक्टर ह्यूगो

❑ हे विश्वासियो ! यदि तुम पर किसी प्रकार का संकट आ पड़े तो उसकी निवृत्ति के निमित्त सन्तोष और प्रार्थना का आश्रय लो। निस्सन्देह अल्लाह सन्तोषियों का साथी है।
—सूरये बकर १-२-१६

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ **ऐ किनायत तवंगराँ गरदाँ**
कि वराये तो हेच नेमत नेस्त।

—गुलिस्ताँ बाब-३

ऐ सन्तोष ! मुझे दौलतमन्द बना दे, क्योंकि संसार की कोई दौलत तुझसे बढ़कर नहीं है।

❑ फिजूल शक नहीं करना चाहिए। हमेशा प्रसन्न रहिए। चित्त को कोमल तथा हर्षान्वित बनाओ।

❑ जगत में 'संतोष' ही सबसे बड़ा धन है। जिसमें संतोष नहीं है, वह भारी से भारी धनी होने पर भी निर्धन है। जिसके हृदय में असंतोष नहीं है, वही सदा सुखी है। लाख, करोड़ और अरब-खरब की सम्पदा होने पर भी जो सन्तोषहीन है, वह परम दुःखी है। सन्तोषी मनुष्य ही सच्चा सुख भोग सकता है।

❑ सन्तोष सर्वोपरि सम्पन्नता है और असंतोष कृत्रिम निर्धनता।

❑ असन्तुष्ट मनुष्य संसार में अधिक दिन तक जीवित नहीं रहते।

❑ वास्तविक उल्लास मन को संतुष्ट रखने पर मिलता है। इसलिए उन बातों से बचो जो असंतोष भड़काती हैं।

❑ प्रसन्नता तो चन्दन है, दूसरे के माथे पर लगाइये तो आपकी उँगलियाँ अपने आप सुगन्धित हो जाएँगी।

❑ प्रसन्न रहना ही उत्तम धर्म तथा कर्त्तव्य है। यदि हम स्वयं प्रसन्न रहते हैं तो अत्यन्त परोपकारी हैं।

❑ सन्तोष, शान्ति और सादगी का पालन करो।

❑ जो सदा सन्तुष्ट है वही यथार्थ धनी है। इन्द्रियाँ ही मनुष्यत्व की शत्रु हैं। विषयों का अनुराग ही बन्धन है।

❑ महात्मा गाँधी कहा करते थे—यदि कोई मुझसे विनोदप्रियता छीन ले तो मैं उसी दिन पागल हो जाऊँगा। मुसकान तथा आह्लाद थकान की दवा है। विनोद इनका जनक है। विनोदप्रियताएँ अधिकांश महापुरुष का गुण रही हैं। गाँधी जी के जीवन का तो यह अनिवार्य पहलू था।

❑ प्रसन्नता पुरस्कार नहीं, वरन् सही ढंग से सोचने की आदत का स्वाभाविक परिणाम है। इस प्रकार दुःख कोई दंड नहीं वरन् गलत ढंग से सोचते रहने की सहज प्रतिक्रिया है।

❑ जो लोग दूसरों के जीवन को प्रसन्न बनाते हैं, वे अपने जीवन को प्रसन्नता से दूर नहीं रख सकते।

❑ मुसकराने की कला आधे बोझ को हलके कर देती है।

❑ अपने को खुश रखो। दूसरे भी तुमसे खुश रहेंगे। खिन्न रहने वाले किसी की खुशी हासिल नहीं कर सकते।

❑ प्रसन्नता मनुष्य के भाग्य की एक विशेष रचना है, जो सबमें समान है, परन्तु मनुष्य अपनी अजानकारी के कारण उसके लाभ से वंचित रहता है।

❑ यदि कोई अप्रसन्न रहता है तो यह उसका अपना दोष है। ईश्वर ने तो प्रत्येक मनुष्य प्रसन्न रहने के लिए उत्पन्न किया है।

❑ हँसी वह तेल है जिसके बिना जीवन रूपी यन्त्र बिगड़ जाता है।

❑ प्रसन्न रहना हमारा कर्त्तव्य है। यदि हम प्रसन्न रहेंगे तो अज्ञात रूप से संसार की बहुत भलाई करेंगे।

❑ प्रसन्नता अन्तःकरण की परिपक्वता का चिन्ह है, खिन्नता बिगड़े बच्चों के मचलने जैसी बुरी आदत।

❑ **क्वचिद्धृष्टः क्वचित्तुष्टो रुष्टस्तुष्टः क्षणे क्षणे।**
अव्यवस्थितचित्तस्य प्रसादोऽपि भयंकरः।।

कभी अप्रसन्न और कभी प्रसन्न, इस प्रकार जो मनुष्य क्षण-क्षण में असन्तुष्ट और संतुष्ट होता रहता है, उसकी प्रसन्नता या कृपा भी भयानक है।

❑ संसार को आँसुओं से भरकर गमगीन मत बनाइए। बुद्धिमानी इसमें है कि आप हँसें, दूसरों को हँसाएँ और हँसी की, खुशी की दुनिया बनाएँ।

❑ सारे सुखों का मूल कारण प्रसन्नता है। हे मनुष्य ! तू इस संसार में सदा प्रसन्न रहा कर।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

- प्रसन्नता एक कुंजी है जो दूसरों के हृदय के दरवाजे को हमारे लिए खोल देती है।
- रोना होता है तब मैं एकान्त की खोज करता हूँ और हँसना होता है तब मित्रों की।
- भौतिक पदार्थों के न रहते हुए भी मनुष्य प्रसन्न रह सकता है। देवता ऐसे मनुष्य की सहायता करते हैं।
- प्रसन्नता मनुष्य के भाग्य की एक विशेष रचना है जो सबमें समान है। मनुष्य अपने अज्ञान के कारण उससे वंचित रहता है।
- तुम मुझसे धन-सम्पत्ति छीन सकते हो और उस पर अपना अधिकार जमा सकते हो, परन्तु ऐसा मुझे कहीं नहीं दीख पड़ता जो मेरे होंठों की मुसकराहट और हृदय की शांति छीन सके।
- किसी दोष पर हम सहृदयता और हास्य से हँसें और अपराधी को भी हँसाएँ, तो सहज में ही बिना मनोमालिन्य के सुधार हो सकता है।
- हास्यरस हृदय में आनन्द की धारा ही प्रवाहित करके नहीं रह जाता। दिल की गाँठों को भी खोलता है।
- प्रसन्न रहना परमकर्त्तव्य है, हम यदि स्वयं प्रसन्न रहते हैं तो संसार का महान उपकार करते हैं।
- नित्य हँसमुख रहो, मुख को कभी मलीन न करो, यह निश्चय कर लो कि शोक ने तुम्हारे लिए जगत् में जन्म नहीं लिया है। आनन्दस्वरूप में सिवा हँसने के, चिन्ता को स्थान ही कहाँ है ?
- इस संसार में रहने का सच्चा तत्त्वज्ञान यही है कि प्रतिदिन एक बार खिलखिलाकर हँसना चाहिए। अपनी तरफ से उद्योग की पराकाष्ठा करनी चाहिए और किसी भी बात को अधिक महत्त्व नहीं देना चाहिए।
- हँसी मन की गाँठें खोलती है। अपनी ही नहीं दूसरों की भी।
- सरलता शान्ति का प्रथम चरण है और उदारता अन्तिम।
- हँसते और हँसाते रहो, पर यह कार्य व्यंग्य-उपहास के आधार पर मत करो, अन्यथा मैत्री के स्थान पर दुर्भाव बढ़ेगा।
- जो मुसकरा न सका, उसे जीना नहीं आया।
- जो मुसकान का दीपक नहीं जला सकते, उन्हें समूची जिन्दगी अन्धेरी रात की तरह डरावनी प्रतीत होती है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

आहार और उपवास

❑ ग्लानि और दुःख के समय तथा आत्मशुद्धि और चित्त की एकाग्रता के लिए उपवास बहुत सहायक होता है। *—महात्मा गाँधी*

❑ उपवास एक प्रकार का प्रायश्चित्त है। इससे पतित को अपने दोषों का मान-अनुमान होता है। इससे मन हल्का और शान्त होता है। *—नारायण*

❑ खाने, पीने और वृत्तियों को सन्तुष्ट करने में हम पशुओं के ही समान हैं, लेकिन क्या आपने कभी किसी घोड़े या गौ में उतना अधिक चटोरापन देखा है, जितना हम लोगों में होता है ? क्या आप समझते हैं कि अपने खाद्य पदार्थों की संख्या को उस सीमा तक पहुँचा देना कि जहाँ हमें स्वयं अपनी दशा का भी ज्ञान न रहे, वास्तविक जीवन और सभ्यता का चिन्ह है। *—महात्मा गाँधी*

❑ भोजन की पवित्रता से मन की पवित्रता आती है। जो शक्ति मन और शरीर को जोड़े हुए है, वह उस भोजन में मौजूद रहती है, जिसे हम खाते हैं। विभिन्न प्रकार के भोजनों का विभिन्न प्रकार का प्रभाव पड़ता है। कुछ ऐसे भोजन होते हैं, जो हमारे मन-शरीर दोनों को स्वस्थ बनाते हैं। अतः यह परमावश्यक है कि हम शुद्ध और सात्विक भोजन करें। भोजन की पवित्रता पर उचित ध्यान दिया जाए तो ब्रह्मचर्य पालन करना बड़ा ही आसान हो जाए। *—स्वामी शिवानन्द*

❑ **'जपे होमोपहारेज्याञ्जलिनः संस्कार तपोनियम दयादा नदीक्षाम्युपगम देवता ब्राह्मण गुरुपुरैवितव्यम् ।'**

—सुश्रुत, सूत्र ६ / २

अर्थात्—जप, हवन, तप, व्रत, नियम, नदी तट सेवन, देव, गुरु, ब्राह्मण आदि के सहारे स्वास्थ्य रक्षा होती है।

❑ फरमाया रसूल अल्लाह ने कि गाय का दूध शिफ़ा है और घी दवा, उसका मांस तो मर्ज (रोग) है। *—हजरत आयशा*

❑ स्वाद की आकांक्षा बुरी नहीं, पर उसे स्वास्थ्य की कीमत पर स्वीकार न किया जाए। *—स्मो*

❑ एक दिन ऐसा जरूर आएगा जब लोग औषधियों से निराश होकर यह सोचेंगे कि यदि नीरोग रहना है तो प्रकृति की शरण में लौटना चाहिए और उच्छृंखलता छोड़कर संयमित और संयमित जीवनपद्धति अपनानी चाहिए। *—एमर्सन*

❑ भोजन से पूर्व सदैव हमें ध्यान रखना चाहिए कि हमारी कमाई बिल्कुल खरी है। *—रस्किन*

❑ **चूकम खुदर्न तबीयव शुद कसेरा।**
चू सख्ती पेशश आयद सल गीरद।।
बगर तन परवरस्त अन्दर फराखी।
चू तंगी बीनद अज सख्ती बिमीरद।।

अल्पाहार करने वाला आसानी से तकलीफों को सहन कर लेता है, पर जिसने सिवाय शरीर पालने के और कुछ किया ही नहीं, उस पर यदि सख्ती की जाती है तो वह मर जाता है।

❑ जो मनुष्य थोड़ा खाने का आदी होता है, वह सुख से संकट सह लेता है, लेकिन जो सुख के दिनों में नाक तक ठूँस-ठूँस कर खाता है, उसको दुःख के दिनों में अपनी आदत में डूबकर मरना पड़ता है। तात्पर्य यह है कि जो थोड़े ही में संतुष्ट रहते हैं, उन्हें संसारी यातनाएँ नहीं सतातीं।

❑ दूध का सेवन मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है और दूध के द्वारा अनेक प्रकार की व्याधियाँ दूर हो सकती हैं, इस तथ्य को हमारे यहाँ के साधारण मनुष्य भी जानते हैं। बाल्यावस्था से ही हमारे यहाँ दूध पीने पर जोर दिया जाता है, क्योंकि लोगों का विश्वास है कि इस आयु में दूध का नियमपूर्वक सेवन करने से स्वास्थ्य में दृढ़ता और स्थिरता आती है, वह जन्म भर मनुष्य की सहायक रहती है। इस देश के चिकित्सा ग्रन्थों में तो दूध के गुण विस्तारपूर्वक बतलाये गये हैं, जिनके आधार पर भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में अनुकूल उसका उपयोग हो सके।

❑ गुण, कर्म, स्वभाव का प्रवाह बहुत कुछ अचेतन द्वारा अपनाये गये अभ्यासों पर निर्भर रहते हैं। मनोविकार भी इसी क्षेत्र में चलते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नवीन शोधों के अनुसार शरीरगत और मनोगत आधि-व्याधियों की जड़ मनोविकारों में पाई गई है। आरोग्यशास्त्री अब इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि रोगों में आहार-विहार के व्यतिक्रम से विषाणुओं के आक्रमण की, ऋतुप्रभाव की तथा विशेष परिस्थितियों की जितनी भूमिका होती है, उन सबसे कहीं अधिक प्रभाव मनःसंस्थानों में चलने वाली उथल-पुथल का पड़ता है।

❑ **गुणा च षण्मितभुक्तें भजन्ते,**
आरोग्यमायुश्च बलं सुखं च।
अनाविलं चास्य भवत्यपत्यं,
न चैनमाधुर्नमिति क्षिपन्ति।।
मिताहार में छह गुण हैं। उससे रोग नहीं होता है। आयु बढ़ती है, बल तथा सुख लाभ होता है। मिताहारी के पुत्र आलस्यपरायण नहीं होते हैं और लोग औदरिक भी नहीं कहते हैं।

❑ **अनारोग्यमनायुष्यमस्वर्ग्यं चातिभोजनम्।**
अपुण्यं लोकविद्विष्टं तस्मात्तं परिवर्जयेत्।।
अमिताहार से रोग होता है, आयु घटती है, स्वर्ग नष्ट होता है, पुण्य नष्ट होता है और लोक विद्विष्ट भी है, अतः अतिभोजन त्यागना चाहिए।

❑ **द्वौ भागौ पूरयेदन्नैस्तोयेनैकं प्रपूरयेत्।**
वायोः संचरणार्थाय चतुर्थमवशेषयेत्।।
पेट का आधा भाग भोजन करे, चौथाई पानी से भरे और एक चौथाई वायु के आवागमन के लिए खाली रहने दो।

❑ भोजन का सम्बन्ध शरीर से उतना नहीं जितना आत्मा से है।

❑ जार्ज बर्नार्ड शा एक प्रीतिभोज में निमन्त्रित किये गये। जो भोजन उन्हें परोसा गया वह मांस मिश्रित था। वे यह कहते हुए उठकर चले आये कि भगवान ने मुझे पेट दिया है, कब्रिस्तान नहीं।

❑ जो परमार्थी न होते हुए भी भिक्षा का अन्न खाते हैं वे पारा खाते हैं। जो एक दिन देह फोड़कर फूट निकलता है।

❑ साधारणतः अमृत का अर्थ वह पदार्थ समझा जाता है, जो समुद्र मंथन के समय निकला था। जो देवताओं के पास है और जिसे पीने वाला अमर हो जाता है—कभी मरता नहीं।

❑ मेदिनी कोष में दूध को पीयूष या अमृत कहा है। **"पीयूषं सप्तदिवसावधि क्षीरे तथामृते"** आयुर्वेद का मत भी ऐसा ही है **"अमृतं क्षीर भोजनम्"** दूध मर्त्यलोक का अमृत है। निघंटु ने भी दूध को अमृत कहा है **"क्षीरं पीयूषपूर्णस्य दुग्धं स्तन्यं पयोऽमृतम्।"**

❑ जल को भी अमृत कहा गया है। अमरकोष (१.६.३) में **"जलं कीलालममृतं जीवनं भुवनं वनं"** इस लोक में पानी का नाम अमृत बताया है।

❑ **"अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा। अमृतापिधानमसि स्वाहा।"** (आश्वलायन गृह्य सूत्र १.२४) इन श्रुतिवचनों में जल को अमृत की समता दी गई है। अथर्ववेद में पानी को सब रोगों की दवा माना है—**"अप्सु मे सोमोऽब्रवीदंत विश्वानि भेषजा।"**

❑ राजनिघंटु में घृत को अमृत बताया है—**"अमृतघाभिधार च होम्युमायु घतेजसम्।"**

❑ मठ्ठा या छाछ (तक्र) के लिए भी अमृत की उपमा प्रयोग की जाती है—**"यथा सुराणाममृतं हिताय तथा नराणामिह तक्रमाहुः।"** जैसे देवताओं के लिए अमृत है वैसे ही मनुष्यों के लिए मट्ठा हितकर है।

❑ पौष्टिक घृत शर्करायुक्त भोजन भी अमृत है। भाव प्रकाश में हलुवे को अमृत कहा है।

❑ ❑

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

शिक्षा

❑ सत्याचरणी को कोई धोखा दे ही नहीं सकता, क्योंकि उसके सामने झूठ बोलना अशक्य हो जाना चाहिए। संसार में कठिन से कठिन व्रत सत्य का है।

—महात्मा गाँधी

❑ सामाजिक व्याधि को हम बाहरी प्रयत्नों से दूर नहीं कर सकते। सुधार तो मन के ऊपर प्रभाव डालने से ही हो सकता है। शिक्षा द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से उसके लिए प्रयत्न करना होगा।

—स्वामी विवेकानन्द

❑ वाणी अथवा मन से गुप्त अथवा प्रकट रूप में गुरुजनों से कभी बैर नहीं करना चाहिए।

—भगवान महावीर

❑ "मैंने भूगोल सीखा, बीजगणित का स्वाद लिया, भूमिति का ज्ञान प्राप्त किया, भूगर्भ विद्या में रुचि घटी, किन्तु इन सबका परिणाम ? मैंने इनसे क्या तो अपना भला किया और क्या अपने आपस वालों का ? मैंने यह सारा ज्ञान क्यों लिया ? मुझे इससे क्या फायदा हुआ ? इस अँग्रेज विद्वान (हक्सले) ने शिक्षा के सम्बन्ध में कहा है—

"वास्तविक शिक्षा उस मनुष्य ने पाई है जिसका शरीर उसके काबू में रहता है और वह शरीर सौंपे हुए काम को आराम और आसानी से पूरा करता है। सच्ची शिक्षा उसे मिलनी चाहिए जिसकी बुद्धि शुद्ध है, शान्त है और न्यायपरायण है। उस मनुष्य ने सच्ची शिक्षा ली है। जिसका मन प्राकृतिक नियमों से पूर्ण है और इन्द्रियाँ उसके वश में हैं। जिसकी अन्तर्वृत्ति विशुद्ध है, जो दुराचरण को धिक्कारता है और सबको अपने समान मानता है। ऐसा मनुष्य सही रूप में शिक्षित माना जाएगा।"

जो सच्ची शिक्षा की यही परिभाषा हो तो मुझे कसम खाकर कहना चाहिए कि ऊपर मैंने जिन शास्त्रों का उल्लेख किया है, वे अपने शरीर या अपनी इन्द्रियों को वश में मेरे किसी काम नहीं आये।

—महात्मा गाँधी

❑ उच्च शिक्षा वही मानी जाएगी जिसे पाकर मनुष्य में विनम्रता, परोपकारी वृत्ति, सेवाभावी स्वभाव एवं कार्य करने की तत्परता में वृद्धि होती हो।

—स्वामी विवेकानन्द

❑ शिक्षा को लोगों ने जाने क्या समझ रखा है ? मात्र अक्षर ज्ञान को शिक्षा कहना शिक्षा शब्द का अपमान करना है। जिस शिक्षा को पाकर मनुष्य अपने लिए परिवार एवं समाज के लिए समस्या ही बना रहा, उस शिक्षा को शिक्षा कैसे कहा जाए ? शिक्षा वह है, जो व्यक्ति के जीवन में प्रकाश बनकर फूट पड़े। शिक्षित व्यक्ति का हर कार्य व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सामाजिक स्तर पर तुष्टि-पुष्टि बढ़ाने वाला होना चाहिए। आवश्यकता है ऐसे शिक्षितों की और ऐसी शिक्षा की। उनकी उपयुक्त व्यवस्था भी समाज को करनी ही होगी।

—स्वामी विवेकानन्द

❑ शिक्षा का मतलब है, व्यक्ति का समाजोपयोगी विकास।

—जैनेन्द्र

❑ मनुष्य में जो सम्पूर्णता गुप्त रूप से विद्यमान है, उसे प्रत्यक्ष करना ही शिक्षा का कार्य है।

—स्वामी विवेकानन्द

❑ शिक्षा का फल उदारता, त्याग, सद्इच्छा, सहानुभूति, न्यायपरता और दयाशीलता है।

—प्रेमचन्द

❑ दरिद्र से दरिद्र हिन्दुस्तानी मजदूर भी शिक्षा के उपकार का कायल है। उसके मन में यह अभिलाषा होती है कि मेरा बच्चा चार अक्षर पढ़ जाए। इसलिए नहीं कि उसे कुछ अधिकार मिलेगा, बल्कि केवल इसलिए कि शिक्षा मानवीय शील का एक शृंगार है।

—प्रेमचन्द

❑ मनुष्य में विद्यमान परिपूर्णता को जगाना और प्रत्यक्ष करना ही शिक्षा का कार्य है। जब तक वह लागू नहीं होता हम अपनी सर्वोपरिता सिद्ध न कर पायेंगे।

—स्वामी विवेकानन्द

❑ मनुष्य के भीतर जो अदृश्य रहस्य छिपे पड़े हैं, उन्हें प्रत्यक्ष करने वाली शिक्षा ही सच्ची शिक्षा है।

—स्वामी विवेकानन्द

❑ **माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः।**
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा।।

वे माता-पिता वास्तव में बैरी हैं, जिन्होंने अपनी सन्तान को शिक्षित नहीं बनाया। इस कारण वे

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बुद्धिमानों के समुदाय में ऐसे जान पड़ते हैं जैसे हंसों के बीच में बगुला। *—चाणक्य*

❑ गुरुजन की शिक्षा (दण्ड) कठोर तथा कठिन होने पर भी दुष्कृत्य की नाशक होती है। इसलिए चतुर साधक उसको अपना हितकारी मानता है, किन्तु असाधुजन उसको द्वेषजनक तथा क्रोधकारी मानता है। *—भगवान महावीर*

❑ जिस तरह सड़ी कुतिया सब जगह दुत्कारी जाती है, उसी तरह शत्रु समान, वाचाल (बहुत बोलने वाला) तथा दुराचारी (स्वच्छन्दी) शिष्य सर्वत्र अपमानित होता है। *—भगवान महावीर*

❑ अवधूत का एक गुरु था भ्रमर। उसने अत्यन्त कष्ट सह-सहकर मधु-सञ्चय किया। कहीं से एक मनुष्य आया और उसके मधु का छत्ता तोड़कर सारा मधु ले गया। अपने चिरसंचित मधु का उपभोग भ्रमर न कर सका। अवधूत ने यह देखकर भ्रमर को प्रणाम किया और कहा—प्रभो ! तुम मेरे गुरु हो ! सञ्चय करने से क्या परिणाम होता है, यह मैंने तुम से आज सीख लिया है। *—रामकृष्ण परमहंस*

❑ क्या पुस्तकों का ढेर शिक्षा है ? बिल्कुल नहीं, बल्कि संसार के साथ मनुष्यों के साथ और कार्यों से पारस्परिक सम्बन्ध जोड़ना ही सच्ची शिक्षा है। *—वर्क*

❑ शरीर में, आत्मा में अधिक से अधिक जितने सौन्दर्य और जितनी सम्पूर्णता का विकास हो सकता है, उसे सम्पन्न करना ही शिक्षा का उद्देश्य है। *—प्लेटो*

❑ शिक्षा का ध्येय चरित्रनिर्माण हो, कोरी शिक्षा से कोई लाभ नहीं। *—वर्क*

❑ थोड़ी-सी पुस्तकें पढ़कर ज्ञान बढ़ा लेना कोई बड़ी बात नहीं है। शिक्षा का उद्देश्य तो मानव को परिपूर्ण बनाना है। *—हर्बर्ट स्पेन्सर*

❑ अशिक्षित होने की अपेक्षा जन्म न लेना अधिक अच्छा है, क्योंकि अज्ञान ही दुर्गति की जड़ है। *—प्लेटो*

❑ शिक्षा का ध्येय मनुष्य के ज्ञान की वृद्धि करना ही नहीं है, अपितु मनुष्य के मस्तिष्क और व्यक्तित्व का विकास करना है। साथ ही उसका प्रमुख ध्येय यह भी है कि वह व्यक्ति को जीवन की विभिन्न परिस्थितियों को निभाने की योग्यता भी उत्पन्न करे।

—जान. जी. हिबन

❑ जिस समय कोई युगावतार होता है उस समय उसी के साथ-साथ जगत में कुछ विलक्षण विभूतियाँ भी अवतीर्ण हुआ करती हैं, जो भस्म से ढँकी हुई अग्नि की तरह स्थान-स्थान पर छिपी रहती हैं, परन्तु समय पर अवतारी पुरुष का संकेत मिलते ही प्रकाश में आकर अपना पावन कार्य करने लगती हैं।

❑ परोपकार करना, दूसरों की सेवा करना और उसमें जरा भी अहंकार न करना, यही सच्ची शिक्षा है।

❑ **सर्वद्रव्येषु विद्यैव द्रव्यमाहुरनुत्तमम्।**
अहार्यत्वादनर्घ्यत्वादक्षयत्वाच्य सर्वदा।।
विद्या से श्रेष्ठ कोई धन नहीं, क्योंकि न तो यह चोरों द्वारा चुराया जा सकता है और न ही कभी क्षय होता है।

❑ मौखिक एवं लिखित शिक्षा की अपेक्षा व्यावहारिक और सदाचरण रूपी शिक्षा का प्रभाव अधिक पड़ता है।

❑ वास्तविक शिक्षा वह है जो अपने को सुधारना और दूसरों को सँभालना सिखाये।

❑ हमारी शिक्षा तब तक अपूर्ण रहेगी, जब तक उसमें धार्मिक विचारों का समावेश नहीं किया जाएगा।

❑ जिस शिक्षा में समाज और राष्ट्र की हित-चिन्ता के तत्त्व नहीं हैं, वह कभी सच्ची शिक्षा नहीं कही जा सकती।

❑ शिक्षा वह जो हाथों को आजीविका, उपार्जन सिखाये और मानवीय दायित्वों का निर्वाह सिखाये। जो शिक्षा पेट के लिए पराधीनता सिखाये और मन के लिए विलासिता का आवरण उढ़ाये वह किस काम की ?

❑ जो शिक्षा मनुष्य को धूर्त, परावलम्बी और अहंकारी बनाती हो वह अशिक्षा से भी बुरी है।

❑ मनुष्य एक अनगढ़ पत्थर है जिसे शिक्षा की छैनी एवं हथौड़ी से सुन्दर आकृति प्रदान की जाती है। □ □

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

प्रशासनतंत्र

❑ चुनावों में जनतन्त्र को पूरी तरह से अपनी इच्छा प्रकट करने दो, यथासाध्य कानूनी तौर पर चलो, पर अधिक से अधिक लोगों को मत देने की सुविधा प्रदान करो, तभी नई सरकार जनता का सही प्रतिनिधित्व करने वाली होगी।

—अब्राहम लिंकन

❑ लाओत्से ने भ्रष्टता के बारे में कहा है कि जब हम एक नहीं रहते, अपने में ही बँट जाते हैं, तभी हमारे शत्रुओं को हमारे भीतर घुसपैठ करने के चोर-दरवाजों का पता चल जाता है।

❑ हमारा लोकतन्त्र हमारे शासकों के द्वारा दो भागों में बाँट दिया गया—एक लोक और दूसरा तन्त्र। तन्त्र उन्होंने अपने हाथों में ले लिया और लोक छोड़ दिया भाग्य के भरोसे। इस विभक्ति के भीतर भ्रष्टाचार को अपनी कर गुजरने का मौका न मिला तो कहाँ मिलता ? लोक और तंत्र का अलग-अलग होना तो शिव और शक्ति का अलग-अलग होना है। दोनों एक-दूसरे के बिना औरों का तो क्या अपना ही कल्याण नहीं कर सकते। हमारे आगम शास्त्रों में स्पष्ट है—

शिवेन च विना देवी न देव्या च विना शिवः।
नानयोरन्तरं किंचित् चन्द्रैचन्द्रिकयोरिव।।

दोनों का चन्द्र-चन्द्रिका संयोग है। विभक्ति में दोनों का अस्तित्व ही क्या ? शक्ति के बिना शिव जड़ है, शिव के बिना शक्ति भटका हुआ अंधड़ है, जो दूसरों के साथ अपने को भी स्वाहा कर लेता है।

❑ बढ़िया शासन-विधान बनाना सरल है। उसके अनुसार आचरण कर सकना बड़ा कठिन है यह तभी हो सकता है, जबकि सर्वसाधारण में नागरिकता का उच्चभाव विकसित किया जाए।

—श्रीनिवास शास्त्री

❑ जो लोग आजादी के आराम को ज्यादा पसन्द करते हैं, स्वतन्त्रता के सुख का मूल्य अधिक मानते हैं, वे न आराम ही पाते हैं और न आजाद ही रह सकते हैं। *—दादा धर्माधिकारी*

❑ शासन का प्रधान कर्त्तव्य भीतर और बाहर की अशान्तिकारी शक्तियों से देश को बचाना है, शिक्षा और चिकित्सा, उद्योग और व्यवसाय उसके गौण कर्त्तव्य हैं। *—प्रेमचन्द*

❑ बाप की इज्जत पर लड़का जैसे बहुत समय तक नहीं जी सकता, उसी तरह प्रजा अकेले प्राचीन हिन्दुस्तान के गौरव पर हमेशा अपनी शान नहीं दिखा सकती।

❑ प्रजा को, निर्बल को सताकर कोई पुण्यवान नहीं होता। जिसे पापी होना हो उसे पाप करने का अखत्यार है। पाप होने की आजादी होने पर भी जो पाप नहीं करता, वही पुण्यवान कहाता है और उससे देश का लाभ होता है। *—महात्मा गाँधी*

❑ बादशाहों की मीठी-मीठी बातों पर भरोसा न करना चाहिए, क्योंकि बादशाहों की दोस्ती जरा से शक पर टूट जाती है और लड़कों की प्यारी-प्यारी बातें रात भर में बदल जाती हैं। जिनके हजार चाहने वाले हैं, उसे अपने दिल मत दो, अगर दो तो जुदाई की तकलीफें सहने को तैयार रहो। *—शेखसादी*

❑ नेतृत्व का उद्देश्य लोगों को सही रास्ता बताना है, हुकूमत करना नहीं। *—विनोबा*

❑ प्रजातन्त्र का अर्थ मेरी समझ में यह है कि इसमें नीचे से नीचे और ऊँचे से ऊँचे आदमी को आगे बढ़ने का समान अवसर मिले।

—महात्मा गाँधी

❑ दार्शनिक-शासक में हिंसा और अन्याय की ओर सम्मान नहीं होता। वह हर मसले को मानवता की भलाई की दृष्टि से देखता है। उसका निर्णय न्यायोचित और समाज के कल्याण के लिए होता है। *— डॉ. राधाकृष्णन्*

❑ जिस देश की प्रजा जितनी अधिक चरित्रवान होगी, उस देश का प्रजातन्त्र उतना ही सफल होगा।

❑ अगर गुलामी पाप नहीं है, तो संसार में कुछ भी पाप नहीं है। *—अब्राहम लिंकन*

❑ राजनीति विपत्तियों को खोजने, उसे सर्वत्र प्राप्त करने, उनका निदान करने और अनुपयुक्त चिकित्सा करने की कला है।

—सर अर्नेस्ट वेम

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org

www.vicharkrantibooks.org

- सार्वजनिक काम करने के लिए कहीं भी क्षेत्र की कमी नहीं, केवल मन में निःस्वार्थ सेवा का भाव होना चाहिए।
- सही व्यक्तियों का निर्माण किया जाता है, निर्वाचन नहीं। निर्वाचन एक अवधि तक ही सही रहता है, इसके बाद वह पदजन्य विकृतियों से भर जाता है, जनमत को चुनने का नहीं हटाने का अधिकार होना पर्याप्त है।
- प्रत्येक व्यक्ति में अच्छाई और ईमानदारी का विकास ही प्रजातन्त्रीय शासन की सफलता का मूल सिद्धान्त है।
- कलह से परिवार नष्ट होते हैं। कटुवचन से मित्रता नष्ट होती है। कुशासन से राष्ट्र नष्ट होते हैं और कुकर्म से सर्वनाश होता है।
- **ज़बाने खल्क नक्कारये खुदा।**
  अर्थात्—जनता की आवाज ईश्वर की आवाज है।
- **प्रजानां रक्षणं दानमिज्याऽध्ययनमेव च।**
  विषयेष्वप्रसक्तिश्च क्षत्रियस्य समासतः।।

  —मनुस्मृति १.८९

  प्रजा की रक्षा करना, दान करना, यज्ञ करना, पढ़ना और विषयों में न फँसना, उनसे विरक्त होना यह सब कर्म संक्षेप में बतलाये गये हैं। यह कर्म क्षत्रिय वर्ण के करने योग्य हैं।
- वह भिक्षुक सराहनीय है जो अपनी एक रोटी में से आधी दूसरों को देकर खाता है। उस राजा को क्या कहा जाए जो एक देश का स्वामी होते हुए भी दूसरे को हड़पने की योजना बनाता और रक्तपात करता है। किसके पास कितनी सम्पन्नता है ? सराहना इस बात की नहीं, वरन् उस बात की है कि उसका सत्प्रयोजनों के लिए कितना वितरण हुआ ?
- जहाँ बहुत लोग नेता बनना चाहते हैं। जहाँ महत्त्वाकांक्षाओं की भरमार है, वह समुदाय आज नहीं तो कल नष्ट होकर रहेगा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

जन्म-मरण

❑ जैसे पक्षी दिन में चारों तरफ इधर-उधर उड़ता फिरता है, लेकिन शाम के समय अपने घोंसले में जाकर स्थिर हो जाता है, वैसे ही जीवात्मा जब संसार में सब तरह के कामों से थककर भटक जाता है, तब विश्राम के लिए परमेश्वर के पास पहुँच जाता है। —*विनोबा*

❑ मृत्यु नवीन जीवन का आरम्भ मात्र है।

—*नारायण*

❑ यह जीवन समुद्र यात्रा की भाँति है, जिसमें हम सभी एक ही संकुचित नौका में परस्पर मिलते हैं। मृत्यु तट पर पहुँचने के समान है, जहाँ हम सभी अपने-अपने लोक को चले जाते हैं। —*रवीन्द्रनाथ टैगोर*

❑ कायर लोग ही मृत्यु से भयभीत हुआ करते हैं। जब एक दिन मृत्यु का आना निश्चित है, तो वह चाहे जिस क्षण आ जाए, उससे डरना क्या ? —*शेक्सपियर*

❑ कई झगड़ने वाले लोग यह अनुभव नहीं करते कि किसी समय हम सबको इस संसार से चल देना है। हाँ कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो इस बात का अनुभव करते हैं, वे अपने आप का निर्णय कर लेते हैं।

❑ मृत्यु की निकटता से चिन्तित न होओ। वह पुराना कपड़ा बदलकर नया पहनने जैसी उत्साहवर्द्धक स्थिति है। तुम्हारी सत्ता तो अमर है।

❑ मृत्यु जीवन का अन्तिम अतिथि है, इससे डरने का कोई कारण नहीं। दिनभर चलकर थका हुआ पथिक अन्धकारमयी रात्रि की कामना करता है, जिसमें विश्राम करके वह नए उत्साह के साथ नवीन प्रभात में अपने पथ पर अग्रसर हो सके, उसी प्रकार लम्बी यात्रा से थके हुए प्राणियों को मृत्यु का अभिनन्दन करना चाहिए।

❑ जैसे हम फटे-पुराने या जले-गले कपड़ों को छोड़ देते हैं और नये कपड़े धारण करते रहते हैं, वैसे ही पुराने शरीरों को बदलते और नयों को धारण करते रहते हैं। जैसे कपड़ों को उलट-फेरने का शरीर पर कुछ प्रभाव नहीं पड़ता। वैसे ही शरीर की उलट व पुलट का आत्मा पर असर नहीं होता। जब कोई व्यक्ति मर जाता है तो भी वस्तुतः उसकी आत्मा का नाश नहीं होता।

❑ मृत्यु कोई वस्तु नहीं जिसके कारण हमें रोने या डरने की आवश्यकता पड़े। शरीर के लिए रोना वृथा है, क्योंकि वह निर्जीव पदार्थों का बना हुआ है। मरने के बाद भी व ज्यों का त्यों बना रहता है। कोई चाहे तो मसालों से लपेटकर मुद्दतों तक अपने पास रखे रह सकता है, पर सभी जानते हैं कि देह जड़ है। सम्बन्ध तो उस आत्मा से होता है, जो शरीर छोड़ देने के बाद भी जीवित रहती है। फिर जो जीवित है, मौजूद है उसके लिए रोने और शोक करने से क्या प्रयोजन ?

❑ दो जीवनों को जोड़ने वाली ग्रन्थि को मृत्यु कहते हैं। यह एक वाहन है जिस पर चढ़कर आत्मा इधर से उधर, उधर से इधर आती-जाती रहती है। जिन्हें हम प्यार करते हैं, वे मृत्यु द्वारा हमसे छीने नहीं जा सकते हैं। वे अदृश्य बन जाते हैं तो भी उनकी सत्ता में कोई अन्तर नहीं आता। जो कल मौजूद था वह आज भी मौजूद है। हम न दूसरों को मरा हुआ मानें, न अपनी मृत्यु से डरें, क्योंकि मरना एक विश्राम मात्र है, उसे अन्त नहीं कहा जा सकता।

❑ ❑

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

गायत्री और यज्ञ

❑ जिस बहुमुखी दासता के बन्धनों में भारतीय प्रजा जकड़ी हुई है उसका अन्त राजनैतिक संघर्ष करने मात्र से न हो जाएगा, उसके लिए आत्मा के अन्दर प्रकाश उत्पन्न करना होगा, जिससे सत और असत का विवेक हो, कुमार्ग को छोड़कर श्रेष्ठ मार्ग पर चलने की प्रेरणा मिले। गायत्री मन्त्र में यही भावना विद्यमान है। *—लोकमान्य तिलक*

❑ "मैं लोगों से कहता हूँ कि लम्बी-लम्बी साधना करने की उतनी जरूरत नहीं है। इस छोटे-से गायत्री मन्त्र का जप करके देखो। गायत्री का जप करने से बड़ी-बड़ी सिद्धियाँ मिल जाती हैं। यह मन्त्र छोटा है, पर इसकी शक्ति भारी है।"

—रामकृष्ण परमहंस

❑ **चत्वारिशृंगा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्यः।**
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्यां २ आविवेश।।

"चार सींग वाला, तीन पैर वाला, दो सिर वाला, सात हाथों वाला, तीन जगह बँधा हुआ, यह गायत्री महामन्त्र रूपी वृषभ जब दहाड़ता है, तब महान देव बन जाता है और अपने सेवक का कल्याण करता है।" भाव यह कि चार वेद चार सींग हैं। आठ-आठ अक्षरों के तीन चरण अर्थात् तीन पैर। ज्ञान और विज्ञान दो सिर। सात विभूति देने वाली सात व्याहृतियाँ सात हाथ हैं। ज्ञान, कर्म, उपासना से तीन जगह बँधा हुआ यह महामन्त्र रूपी बैल दहाड़ता है, उच्चारण करता है तो देवत्व भरी परिस्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं और सान्निध्य में रहने वाला व्यक्ति सब कुछ पा लेता है। *—यजु.*

❑ **गायत्री वेदजननी गायत्री पापनाशिनी।**
गायत्र्यास्तु परन्नास्ति दिवि चेह च पावनम्।।

गायत्री वेदों की जननी है। गायत्री पापों का नाश करने वाली है। गायत्री से बड़ा और कोई पवित्र मन्त्र स्वर्ग तथा पृथ्वी पर नहीं।

❑ **तदित्यृचः समो नास्ति मन्त्रो वेदाचतुष्टये।**
सर्वे वेदाश्च यज्ञाश्च दानानि च तपांसि च
समानि कलया प्राहुर्मुनयो न तदित्यृचः।।

गायत्री के समान मन्त्र चारों वेदों में नहीं है। सम्पूर्ण वेद, यज्ञ, दान, तप, गायत्री की एक कला के समान भी नहीं हैं, ऐसा मुनि लोग कहते हैं।

❑ **नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायोः न विद्यते।**
स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्।।

—गीता २.४०

इस मार्ग पर कदम बढ़ाने वाले का पथ अवरुद्ध नहीं होता। उलटा परिणाम भी नहीं निकलता, थोड़ा-सा प्रयत्न करने पर भी भय से त्राण मिलता है।

❑ **यएतांवेदगायत्रींपुण्यांसर्वगुणान्विताम्।**
तत्वेनभरतश्रेष्ठसलोकेनप्रणश्यति।। *—महाभारत*

जो इस पवित्र, सर्वगुण सम्पन्न गायत्री तत्त्व को जानता है, उसकी इस लोक में अवनति नहीं होती।

❑ **यथा मधु च पुष्पेभ्यो घृतं दुग्धाद्रसात्पयः।**
एवं हि सर्ववेदानां गायत्री सारमुच्यते।।

—व्यास

जिस प्रकार पुष्पों का सार मधु, दूध का घृत, रसों का सार दूध है, उसी प्रकार समस्त वेदों का सार गायत्री मन्त्र है।

❑ ईसाई धर्म ईसा के बिना कुछ नहीं। मुस्लिम धर्म हजरत मुहम्मद के बिना कुछ नहीं। बुद्ध धर्म महात्मा बुद्ध के बिना कुछ नहीं। ये ही पुरुष इन धर्मों के ध्येय अथवा प्राणपुरुष हैं, परन्तु मुझे यह सत्य बात कहने में कोई संकोच नहीं। यद्यपि मैं ईसाई हूँ लेकिन हिन्दुओं का ध्येय मन्त्र गायत्री ऐसा है, जो बिना किसी ऋषि-मुनि या महान पुरुष के बिना ही जीवित रह सकता है। हिन्दू धर्म का आधार किसी विशेष पुरुष पर नहीं है। इस मन्त्र के द्वारा हर एक मनुष्य सीधा परमेश्वर से ज्ञान प्राप्त कर सकता है। *—सर मेगनियर विलियम*

❑ **सर्व वेद सारभूता गायत्र्या समर्चना ब्रह्मादयोऽपि।**
संध्यायां तां ध्यायन्ति जपन्ति च।।

—देवी भागवत

गायत्री मन्त्र का आराधन समस्त वेदों का सारभूत है। ब्रह्मादि देवता भी संध्याकाल में गायत्री का ध्यान करते हैं और जप करते हैं।

❑ **यो देवः सवितास्माकं धियो धर्मादिगोचरः।**
प्रेरयेत्तस्य यद्भर्गस्तं वरेण्यमुपास्महे।।

जो सविता देव हमारी बुद्धियों को धर्मादि में लगाता है, उस सविता देव को जो प्रार्थनीय

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

'भर्ग' रूप तेज है, उसकी हम उपासना करते हैं।

❑ **केचित्तां तप इत्याहुस्तमः केचिज्जडं परे।**
ज्ञानं मायां प्रधानं च प्रकृतिं शक्तिमप्यजाम्।।
आनन्दरूपता चास्याः परप्रेमास्पतत्वतः।

—देवी भागवत ७.३२.५७

कोई मुझे तप-शक्ति कहते हैं, कोई जड़, कोई ज्ञान कहते हैं, कोई माया, कोई प्रकृति। मैं ही परम प्रेमास्पद तथा आनन्दरूपा हूँ।

❑ **सर्वकारणभूताय निष्ठाय ज्ञानचेतसाम्,**
नमः सूर्यस्वरूपाय प्रकाशात्मस्वरूपिणी।
भास्कराय नमस्तुभ्यं तथा दिनकृते नमः।।

—मार्कण्डेय पुराण ६०। ५। ६

हे सूर्य भगवान् ! आप ही ज्ञान चित्त वाले पुरुषों के लिए निष्ठास्वरूप तथा सर्वभूतों के कारण स्वरूप हैं। आप ही सूर्य रूपी प्रकाश आत्मरूपी भास्कर हैं। आप दिनकर को नमस्कार है।

❑ **सूर्याद्भवन्ति भूतानि सूर्येण पालितानि तु।**
सूर्ये लयं प्राप्नुवन्ति यः सूर्यः सोऽहमेव च।।

—सूर्योपनिषद् ६

सूर्य से ही सब प्राणी उत्पन्न होते हैं, उसी से इनका पालन होता है, उसी में लय हो जाते हैं, जो सूर्य है सो ही मैं हूँ।

❑ **नमस्ते सूर्य संकाशे सूर्य सावित्रिकेऽमले।**
ब्रह्मविद्ये महाविद्ये वेदमातर्नमोऽस्तु ते।।

हे सूर्य के समान रूप वाली ! हे सूर्य सावित्री ! हे अमले ! आप ब्रह्मविद्या हैं, आप महाविद्या हैं तथा वेदों की माता हैं, आपके लिए मेरा प्रणाम समर्पित किया जाता है।

❑ **ब्रह्मैवास्मीति सद्वृत्त्या निरालंबतया स्थितिः।**
ध्यानशब्देन विख्याता परमानन्ददायिनी।।
निर्विकारतया वृत्त्या ब्रह्माकारतया पुनः।
वृत्तिविस्मरणं सम्यक् समाधिर्ज्ञान संज्ञकः।।

—अपरोक्षानुभूति १२३-१२४

जप भी एक प्रकार की प्रतीक उपासना ही है, जप के लिए जो नाम अथवा मन्त्र लिया जाता है, उसको ही देवता की सूक्ष्म मूर्ति माना जाता है, इसीलिए उसमें भी ब्रह्मदृष्टि रखकर जप करना चाहिए। जप करते-करते यदि शरीर में कम्प, रोमांचादि होने लगे, तो समझना चाहिए कि मन्त्र चेतन हो गया।

❑ मन्त्र अत्यन्त छोटा है, किन्तु उसकी शक्ति महान होती है। स्वयं ब्रह्माजी, विष्णु भगवान तथा शिवजी भी उसके वशीभूत हैं, जैसे कि शक्तिशाली गजराज भी अंकुश के वश में रहता है।

—तुलसीदास

❑ संसार में यज्ञ, दान और तप ये तीन ही ऐसे कर्म हैं, जिनके करने से मनुष्य पवित्र हो जाता है। इसलिए इन्हें कभी न छोड़ना चाहिए।

—गीता

❑ **तस्या एव तृतीयः पादः स्वर्धियो यो नः प्रचोदयादिति स्त्री चैव पुरुषश्च प्रजनयतो यो वा एतां सावित्रीमेवं वेद स पुनर्मृत्युं जयति।**

—सावित्र्युपनिषद्

इस सावित्री देवी की जो स्त्री, पुरुष, गृहस्थ धर्म-पालन करते हुए उपासना करते हैं, वे श्रेष्ठ सन्तान उत्पन्न करते हैं, उनकी बार-बार मृत्यु नहीं होती।

❑ **सावित्र्यास्तु परं नास्ति।** *—मनुस्मृति २। ८३*

गायत्री से श्रेष्ठ और कुछ नहीं है।

गायत्री वह है जो वसन्त में गाई जाए और गाने वाले की रक्षा करे।

❑ **गायत्र्येव तपो योगः साधनं ध्यानमुच्यते।**
सिद्धीनां सा मता माता नातः किंचिद् बृहत्तरम्।।

—स्कन्द पुराण

गायत्री ही तप है, गायत्री ही योग है, यही सबसे बड़ा साधन और ध्यान है। इससे बढ़कर सिद्धिदायक और कोई साधना नहीं है।

❑ भारतवर्ष को जगाने वाला मन्त्र तो गायत्री है, क्योंकि वह लोक और परलोक दोनों को प्रकाशित करने वाला है। *—रवीन्द्रनाथ टैगोर*

❑ मनुस्मृति में गायत्री के उद्भव के सम्बन्ध में यह कथा पाई जाती है कि इस सृष्टि के कर्त्ता ब्रह्मा ने ऋक्, यजु और साम—इन तीनों वेदों से क्रमशः 'अ' 'उ' 'म' तीन अक्षर निकाले और एकाक्षर 'ओउम्' की रचना की। इसके साथ पृथ्वी, अन्तरिक्ष और स्वर्ग के प्रतीक स्वरूप भूः, भुवः, स्वः को उसमें सम्मिलित किया गया। तत्पश्चात् ब्रह्माजी ने 'तत् सवितुः' आदि से प्रारम्भ करके पवित्र गायत्री मन्त्र के अन्य अक्षरों की रचना करते हुए तीन मात्राओं का दोहन किया।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org

www.vicharkrantibooks.org

इस मन्त्र की उपासना से आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक इन तीनों तापों से मुक्ति मिलती है। गायत्री की उपासना से अविद्या काम और कर्म, इन तीन ग्रन्थियों का नाश होता है और धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति होती है।

—स्वामी शिवानन्द

❑ गायत्री मन्त्र द्वारा विश्व को उत्पन्न करने वाले परमात्मा का जो उत्तम तेज है, उसका ध्यान करने से बुद्धि की मलीनता दूर हो जाती है और धर्माचरण में श्रद्धा और योग्यता उत्पन्न होती है। *—स्वामी दयानन्द सरस्वती*

❑ नरक रूपी समुद्र से गिरते हुए को हाथ पकड़कर बचाने वाली गायत्री ही है। उससे उत्तम वस्तु स्वर्ग और पृथ्वी पर कोई नहीं है। गायत्री का ज्ञाता निस्सन्देह स्वर्ग को प्राप्त करता है। *—शंख स्मृति*

❑ जिस प्रकार पुष्पों का सार शहद, दूध का सार घृत है, उसी प्रकार समस्त वेदों का सार गायत्री है। सिद्ध की हुई गायत्री कामधेनु के समान है। गंगा शरीर के पापों को निर्मल करती है, गायत्री रूपी ब्रह्मगंगा से आत्मा पवित्र होती है। जो गायत्री छोड़कर अन्य उपासनाएँ करता है, वह पकवान छोड़कर भिक्षा माँगने के समान मूर्ख है। काम्य, सफलता तथा तप की वृद्धि के लिए गायत्री से श्रेष्ठ और कुछ नहीं है। *—वेदव्यास*

❑ अन्य उपासना चाहे न करें, केवल गायत्री जप से द्विज जीवन-मुक्त हो जाता है। सांसारिक और पारलौकिक समस्त सुखों को पाता है। संकट के समय दस हजार जप करने से विपत्ति का निवारण होता है। *—शौनक ऋषि*

❑ गायत्री उपासना के द्वारा अन्तःकरण में विवेक उत्पन्न होता है और जिसे विवेक प्राप्त हो गया उसके लिए न कोई शोक है, न दुःख है। *—स्वामी दयानन्द सरस्वती*

❑ ऐसी कोई कामना नहीं जो गायत्री द्वारा पूर्ण न होती हो।

❑ आत्मा और ईश्वर को मिलाने वाली, सब पापों को हरने वाली और निर्मल प्रकाश देने वाली गायत्री को प्रणाम है। *—पिप्पलाद*

❑ आत्मा की उन्नति सुख और शान्ति के लिए गायत्री सर्वश्रेष्ठ शक्ति है। जो अपनाते हैं वे परमपद पाते हैं। *—कात्यायन*

❑ राजा से वही वस्तु माँगी जानी चाहिए, जो उसके गौरव के अनुकूल हो। परमात्मा से माँगने योग्य वस्तु सद्बुद्धि है। जिस पर परमात्मा प्रसन्न होते हैं, उसे सद्बुद्धि प्रदान करते हैं। सद्बुद्धि से सतमार्ग पर प्रगति होती है और सतकर्म से सब प्रकार के सुख मिलते हैं। जो सत की ओर बढ़ रहा है, उसे किसी प्रकार से सुख की कमी नहीं रहती। गायत्री सद्बुद्धि का मन्त्र है। इसलिए उसे मन्त्रों का मुकुटमणि कहा है। *—स्वामी विवेकानन्द*

❑ यज्ञ का अर्थ आहुतियाँ देना मात्र ही नहीं, वरन् मुख्यतः परोपकारार्थ शरीर का उपयोग है। *—महात्मा गाँधी*

❑ मन्त्र के प्रभाव व प्रेरणा से मनुष्य का जीवन तदनुरूप अपने आप बनता है। *—विनोबा*

❑ अग्नि देवताओं का मुख है, अग्नि में डाली हुई आहुतियाँ देवताओं को प्राप्त होती हैं। *—वेदव्यास*

❑ **रुद्रलोकं गता त्वं हि विष्णुलोकनिवासिनी।**
त्वमेव ब्रह्मणो लोकेऽमर्त्यानुग्रहकारिणी।।

सावित्री रुद्र-लोक में, सरस्वती विष्णुलोक में और ब्राह्मी ब्रह्मलोक में विराजमान रहती हैं—ये सब प्राणियों पर कृपा करने वाली हैं।

❑ महात्मा गाँधी कहते हैं—"गायत्री मन्त्र का निरन्तर जप रोगियों को अच्छा करने और आत्माओं की उन्नति के लिए उपयोगी है। गायत्री का स्थिर चित्त और शान्त हृदय से किया गया जप आपत्तिकाल व संकट को दूर करने की क्षमता रखता है।"

❑ महामना मदनमोहन मालवीय जी ने कहा है—"ऋषियों ने जो अमूल्य रत्न हमें दिये हैं, उनमें से एक अनुपम रत्न गायत्री ऐसा है, जिससे बुद्धि पवित्र होती है। गायत्री में ईश्वर में श्रद्धा उत्पन्न करने की शक्ति है, साथ ही वह भौतिक अभावों को भी दूर करती है।"

❑ **तेषां एते पञ्च ब्रह्मपुरुषा स्वर्गस्य लोकस्य द्वारपालस्य एतानेकं पंचब्रह्म पुरुषात् स्वर्गस्य लोकस्य द्वारपालस्य वेदास्य कुले वीरो जायते प्रतिपद्यते स्वर्गलोकम्।**

हृदय की चैतन्य ज्योति गायत्री—ब्रह्म रूप है। उस तक पहुँचने के लिए प्राण, व्यान, अपान,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समान, उदान ये पाँच प्राण द्वारपाल हैं। इनको वश में करना चाहिए, जिससे कि हृदय स्थित गायत्री रूप ब्रह्म की प्राप्ति सम्भव हो सके। इस क्रिया से उपासना करने वाले को स्वर्ग का सुख प्राप्त होता है और उसकी कुल-परम्परा से वीरजन उत्पन्न होते हैं।

❑ **गुरौ मनुष्यबुद्धिश्च मन्त्रे चाक्षरबाधितत्।**
प्रतिमासु शिलाबुद्धिः कुर्वाणो नरकं व्रजेत्।।
गुरु में मनुष्य, मन्त्र में अक्षर और प्रतिमा में प्रस्तर बुद्धि रखने वाला नरकगामी होता है।

❑ **अशुचिर्वा शुचिर्वापि गच्छतस्तिष्ठन्नपि।**
मन्त्रैकशरणो विद्वान् मनसैव समभ्यसेत्।।
न दोषो मानसे जापे सर्वदेशेऽपि सर्वदा।
जपनिष्ठो द्विजश्रेष्ठोऽखिलं यज्ञफलं लभेत्।।
जो विद्वान निरन्तर मन्त्रों के जप करने का व्रत ग्रहण कर चुके हैं, उनके लिए सोते-जागते, चलते-फिरते, पवित्र तथा अपवित्र किसी अवस्था में, किसी देश या काल में मानसिक जप करने में दोष नहीं है, वे अपने मानसिक जप का अभ्यास चालू रख सकते हैं। इस प्रकार निरन्तर जपपरायण श्रेष्ठ द्विज समस्त यज्ञों के फल के भागी होते हैं।

❑ **अग्निहोत्रं तु गायत्री मन्त्रेण विधिवत् कृतम्।**
सर्वेष्ववसरेष्वेव शुभमेव मतं बुधैः।।
—गायत्री संहिता
गायत्री मन्त्र से विधिपूर्वक किया गया अग्निहोत्र सभी अवसरों पर विद्वानों ने शुभ माना है।

❑ **सकामोयसिबमं कुर्यात् गायत्री होमदक्षते।**
शतं काममवाप्नोति पदं यानत्यमश्नुते।।
जो मनुष्य सकाम भावना से गायत्री यज्ञ करता है, उसकी इच्छित कामनाएँ पूरी होती हैं और अन्त समय में वह परमपद को प्राप्त करता है।

❑ **विद्यात्वमेव ननु बुद्धिमतां नराणां, शक्तिस्त्वमेव किल शक्तिमतां सदैव। त्वं कीर्तिकान्तिकमला मलतुष्टिरूपा, मुक्तिप्रदा विरतिरेव मनुष्य लोके।।**
हे गायत्री ! आप ही बुद्धिमानों में प्रज्ञा, शक्तिवानों में शक्ति बनकर निवास करती हो। आप ही कीर्ति, कान्ति, तुष्टि एवं मुक्तिदायिनी हो।

❑ **सावित्री जापतो नित्यं स्वर्गमाप्नोति मानवः।**
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन स्नातः प्रयतमानसः।
गायत्री तु जपेत् भक्त्या सर्वपापप्रणाशिनीम्।।
गायत्री मन्त्र जानने वाला मनुष्य स्वर्ग को प्राप्त करता है। इसी कारण स्नान कर समस्त प्रयत्नों से स्थिर चित्त हो सारे पापों को नाश करने वाली गायत्री का जप करें।

❑ **गायत्रीं तु परित्यज्य अन्यमन्त्रानुपासते।**
त्यक्त्वा सिद्धान्नमन्यत्र भिक्षामटति दुर्मतिः।।
जो गायत्री को छोड़कर दूसरे मन्त्रों की उपासना करता है, वह दुर्बुद्धि मनुष्य पकाये हुए अन्न को छोड़कर भिक्षा के लिए घूमने वाले पुरुष के समान होता है।

❑ **नित्ये नैमित्तके काम्ये तृतीये तपो वर्धने।**
गायत्र्यास्तु परं नास्ति इह लोके परत्र च।।
❑ नित्य-नैमित्तिक, काम्य की सफलता तथा तप की वृद्धि के लिए इस लोक तथा परलोक में गायत्री से बढ़कर कोई नहीं है।

❑ **गायत्र्या वर्णमेकैकं साक्षात् देव स्वरूपकम्।**
तस्मात् उच्चारणात्तस्य त्राणमेव भविष्यति।।
गायत्री का एक-एक अक्षर साक्षात देवस्वरूप है। इसलिए उसके उच्चारण से उपासक का कल्याण ही होता है।

❑ **गुह्यति गुह्यगोप्त्रीत्वं गृहाणास्मत्कृतंजपम्।**
सिविर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात्करे स्थिता।।
हे देवी ! तुम अत्यन्त गुप्त रहस्य की रक्षा करने वाली हो, इसलिए मेरे जप को स्वीकार करो। तुम्हारे हाथ में सिद्धि रखी है, वह तुम्हारी कृपा से मुझे प्राप्त हो।

❑ **अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः।**
यं कामये तं तमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम्।।
मैं तत्त्वज्ञान का उपदेश करती हूँ, मैं जिसे चाहती हूँ उसे समुन्नत करती हूँ, उसे सद्बुद्धि देती हूँ ऋषि बनाती हूँ और ब्रह्मपद प्रदान करती हूँ।

❑ **तत्सद् ब्रह्मस्वरूपा त्वं किंचित्सवसदात्मिका।**
परात्परेशी गायत्री नमस्ते मातरम्बिके।।
हे गायत्री आप ही तत्सद् ब्रह्म का स्वरूप धारण करने वाली हैं तथा आप सद-सदात्मिक हैं। हे माता ! आप पर से पर की स्वामिनी हैं। हे अम्बिके ! आपके चरणों में यह मेरा प्रणाम समर्पित है।

❑ **सौम्य सौम्यतरा शेष सौम्येभ्यत्वति सुन्दरी।**
परा पराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी।।
हे माता ! तुम परा-अपरा तत्त्व स्वरूप हो। परम सौम्य सुन्दरता को धारण करने वाली

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हो। तुम्हारा जैसा अत्यन्त सौम्य रूप कहीं देखने को नहीं मिलता। हम बालक भाव से जगज्जननी इस अनुपम छवि का दर्शन कर सकते हैं।

❑ **त्वमेव ब्रह्माणी त्वमसि कमला त्वं गिरिसुता।**
त्रिसन्ध्यं सेवन्ते चरण युगले तेऽत्र मनुजाः।।
जगज्जम्बालेऽस्मिन् निपतितमथालोक्य सततं।
समुद्धारार्थं मे यतिपति ! मति सन्तनु मनाक्।।

आप ही ब्रह्माणी अर्थात् सरस्वती हैं और आप ही कमला अर्थात् महालक्ष्मी हैं तथा आप ही गिरिजा हैं। यहाँ पर मनुष्य तीनों कालों में आपके चरणयुगल की सेवा किया करते हैं। इस जगत के जम्बाल में पड़े हुए निरन्तर मुझको देखकर हे यति वाली ! मेरे उद्धार के लिए थोड़ी-सी बुद्धि करने की कृपा करो।

❑ **एकाक्षरं परं ब्रह्म प्राणायामाः परं तपः।**
सावित्र्यास्तु परं नास्ति मौनात्सत्यं विशिष्यते।।

—मनुस्मृति अ. २। ८३

एकाक्षर अर्थात् 'ॐ' परब्रह्म है। प्राणायाम परम तप है और गायत्री मन्त्र से बढ़कर पवित्र करने वाला कोई भी मन्त्र नहीं है।

❑ **न गायत्री समो मन्त्रः।**

—स्कन्द पुराण काशी खण्ड ६। ५२

गायत्री के समान कोई मन्त्र नहीं है।

❑ **न गायत्र्याः परं जप्यम्।**

—पद्म पुराण स्व. ५३। ५८

गायत्री से श्रेष्ठ जप करने योग्य मन्त्र नहीं है।

❑ **गायत्री वा इदं सर्वं भूतं यदिदं किंच।**

—छान्दोग्योपनिषद् ३। १२। १

जो कुछ था और जो कुछ है अर्थात् यह समस्त विश्व गायत्रीमय है।

❑ **यया कयाचिज्जप्तैषा देवी परमपावनी।**
सर्वकामप्रदा प्रोक्ता विधिना किं पुनर्नृप।।

—विष्णुधर्मोत्तर पुराण १। १०५। १५

गायत्री जप जैसे बने वैसे करने से भी मनुष्य को पवित्र कर उसकी सब कामनाएँ सफल बना देता है, फिर वैध रीति से जपानुष्ठान करने वाले के विषय में कहना ही क्या ?

❑ **योवाअत्राग्निर्गायत्रीसनिदानेन।**

—शतपथ १। ८। २। १५

गायत्री को ही निदान (ब्रह्मज्ञान) और अग्नि (ब्रह्मशक्ति) का रूप समझना चाहिए।

❑ **ब्रह्मण्य तेजो रूपा च सर्वसंस्काररूपिणी।**
पवित्ररूपा सावित्री वांछतिस्यात्मशुद्धये।।

—देवी भागवत

गायत्री ब्रह्मतेज रूप है, पवित्र एवं संस्कार रूपिणी है, आत्म-शुद्धि के लिए इसकी उपासना करनी चाहिए।

❑ **यतः साक्षात् सर्वदेवात्मनः सर्वात्मद्योतकः।**
सर्वात्मप्रतिपादकोऽयं गायत्री मन्त्रः।।

यह गायत्री मन्त्र साक्षात देवरूप, सर्वशक्तिमान, सबको प्रकाश देने वाला और सर्वात्मज्ञान का प्रतिपादक है।

❑ **गायत्री संस्मरेद्योगात् स याति ब्रह्मणः पदम्।**
गायत्रीजपनिरतो मोक्षोपायञ्च विन्दति।।

—वृहत् पाराशर ५। ७८

योगाभ्यास सहित जो गायत्री उपासना करता है, वह ब्रह्मपद को प्राप्त कर लेता है। गायत्री जप में संलग्न व्यक्ति मोक्ष के उपाय को प्राप्त कर लेता है।

❑ **गायत्री साधना लोके न कस्यापि कदापि हि।**
याति निष्फलामेतत् ध्रुवं सत्यं भूतले।।
योगिकानां समस्तानां साधनानां तु वरानने।।

कभी किसी की भी गायत्री साधना निष्फल नहीं जाती। समस्त योग-साधनाओं का आधार गायत्री ही है।

❑ **स य एवमेतद्गायत्रं प्राणेषु प्रोतं वेद प्राणीभवति सर्वमायुरेति ज्योग्जीवति महान्प्रजया पशुभिर्भवति महान्कीर्त्या महामनाः स्यात्तद्व्रतम्।**

—छान्दोग्योपनिषद् २। १०। २

यह 'गायत्री' तत्त्व समस्त प्राणों में विद्यमान है। जो उसकी उपासना करता है; वह विद्वान, प्राणवान, दीर्घजीवी, यशस्वी, सुसम्पन्न, उदार और महामनस्वी बनता है।

❑ गायत्री मन्त्र द्वारा समस्त विश्व को उत्पन्न करने वाले परमात्मा का जो उत्तम तेज है, उसका ध्यान करने से बुद्धि की मलीनता दूर हो जाती है और धर्माचरण में श्रद्धा तथा योग्यता उत्पन्न होती है।

—स्वामी दयानन्द सरस्वती

❑ प्राणायाम और गायत्री जप गंगा-जमुना के संगम की तरह है। उससे मनुष्य शरीर में अनेक दिव्य-शक्तियाँ जाग्रत होती हैं। आत्मिक विकास के लिए इससे सुलभ उपाय और कुछ नहीं है।

—स्वामी दयानन्द सरस्वती

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ **ब्रह्मवर्चसयुक्ता च सर्वशत्रुविमर्दिनी।**
ब्रह्मास्त्रं ब्रह्मशापं च ब्रह्मविद्या सनातनी।।

—देवी भागवत

हे गायत्री माता ! आप ब्रह्मवर्चस की शक्ति से युक्त, सभी शत्रुओं को नष्ट करने वाली ब्रह्मास्त्र, ब्रह्मशाप और ब्रह्मविद्या प्रदान करने वाली हो।

❑ **सैषा प्रसन्ना वरदा नृणां भवति मुक्तये।**

वह भगवती प्रसन्न होकर मनुष्य को संसार सागर से मुक्त कर देती है।

❑ **जपता जुह्वता चैव विनिपाते न विद्यते।**

गायत्री जप और हवन करते रहने वाले का कभी पतन नहीं होता।

❑ **गायत्र्यासि प्रथम वेदकला त्वमेव,**
स्वाहा स्वधा भगवती सगुणार्धमात्रा।
आम्नाय एव विहितो निगमोभवत्या
संजीवनाय सततं सुरपूर्णजान्तम्।।

आप ही वेदों की सार हैं। यज्ञ कर्मों में स्वाहा-स्वधा हैं। आपका ही विस्तार आगम और निगम में हुआ है। आप ही देवपूजित संजीवनी शक्ति हैं।

❑ **गायत्री भावयेद्देवी सूर्यमंडलसंस्थिताम्।**
प्रातःमध्याह्नसायाह्ने ध्यानं कृत्वा जपेत्सुधीः।।

—शाक्तानन्दतरंगिणी ३। ४। १

बुद्धिमान मनुष्य को सूर्य के रूप में स्थित गायत्री देवी का प्रातः, मध्याह्न और सायं त्रिकाल ध्यान करके जप करना चाहिए।

❑ **ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।**

ॐ (परमात्मा), भूः (प्राणाधार), भुवः (दुःखनाशक), स्वः (सुखदाता), तत् (उस), सवितुः (जन्म देने वाला तेजस्वी), वरेण्यं (वरने योग्य, श्रेष्ठ), भर्गः (पापनाशक), देवस्य (दिव्य), धीमहि (धारण करें), धियो (बुद्धि), यो (जो) नः (हमारी), प्रचोदयात् (प्रेरित करें)।

❑ विरक्त पुरुषों का आदर्श, इनकी स्थिति के लिए नारी से दूर रहना उचित है, किन्तु पारिवारिक जीवन में, सामान्य जीवन में कभी बहिन-भाई के भेंट-मिलन के, वधू द्वारा सास-ससुर के चरण स्पर्श करने, वैद्य द्वारा नाड़ी देखने या ऐसे ही अन्य पवित्र स्पर्श जहाँ आवश्यक हों वहाँ विरक्त पुरुषों के उदाहरण देना "सब धान बाईस पसेरी" डालने के समान ही होगा। नारी द्वारा किसी पुरुष का शरीर-स्पर्श, चरण-स्पर्श न हो यह कोई सामान्य नियम नहीं है, पर साधु-विरक्तों की साधनाओं में यह विशेष आवश्यक है।

❑ **सर्वेषां जपसूक्तानामृचाञ्च यजुषान्तथा।**
साम्नां चैकाक्षरादीनां गायत्री परमो जपः।।
तस्याश्चैव तु ओंकारो ब्रह्मणा या उपासितः।
आभ्यान्तु परमं जप्यं त्रैलोक्योऽपि न विद्यते।।

—वृहत् पाराशर संहिता

सम्पूर्ण सूक्तों में, ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा सामवेद में तथा प्राणादि जितने हैं, उन सबमें गायत्री को सर्वश्रेष्ठ कहा है। जिस ओंकार की उपासना ब्रह्मा जी ने की थी वह भी उसी का अंग है। इन दोनों से बढ़कर जपने योग्य तीनों लोकों में और कुछ नहीं है।

❑ **ओंकारसहिता जप्तव्यं तां च व्याहृतिपूर्वकम्।**
संध्ययोर्वेदविद्विप्रो वेदपुण्ये न मुच्यते।।

जो ब्राह्मण दोनों संध्याओं में प्रणव-व्याहृति सहित गायत्री का जप करता है, वह वेदों के पढ़ने के फल को प्राप्त करता है।

❑ **यस्याः प्रभावमखिलं नहि वेद धाता तो वा हरर्निगि रिशोनहि चाप्यनन्तः। अंशांशका अपिकृते किमुताम्य देवा स्तस्यै नमोऽस्तु सततं जगदम्बिकायाः।**

जिसे देवी का पूर्व प्रभाव ब्रह्मा, हरि, शिव और शेष कोई नहीं जानता है, इसके अंशांश भी नहीं जानते हैं। अन्य देवों की तो बात ही क्या ? उस जगत की माता को सर्वदा नमस्कार है।

❑ **गायत्री सर्वमन्त्राणां शिरोमणिस्तथा स्थिता।**
विधानामपि तेनैतां साधने सर्वसिद्धिदे।।
त्रिव्याहृतियुता देवीमोंकारयुगसम्पुटाम्।
उपास्यचतुरो वर्गान्साधयेयोन सोऽन्धधी।।
देव्या द्विजत्वमासाद्य श्रेयसैन्यरतास्तु ये।
ते रत्नापिवांछन्ति हित्वा चिन्तामणिं करात्।।

गायत्री सब मन्त्रों तथा विद्याओं में शिरोमणि है। उससे इन्द्रियों की साधना होती है। जो व्यक्ति इस उपासना के द्वारा धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चारों पदार्थों को प्राप्त करने से चूकते हैं वे मन्द बुद्धि हैं। जो द्विज गायत्री मन्त्र के होते हुए भी अन्य मन्त्रों की साधना करते हैं, वे ऐसे ही हतभागी हैं जैसे कि चिन्तामणि को फेंककर छोटे-छोटे चमकीले पत्थर ढूँढ़ने वाले।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ **चन्द्रशेखरकेशोभ्यो निर्गतो हि सुरापगा,**
भागीरथं ततारैव परिवारसमं यथा।
जगद्धात्री समुद्भूत्य या ह्यन्मानसरोवरे,
गायत्री सकुलं पारं तथा नयति साधकम्।।
सास्ति गंगैव ज्ञानाख्यसुनीरेण समाकुला,
ज्ञाना गंगा तु तां भक्त्या बारं बारं नमाम्यहम्।
जिस प्रकार शिव के केशों से निकलने वाली गंगा ने परिवार सहित भगीरथ को पार कर दिया। उसी प्रकार संसार का पालन करने वाली गायत्री, हृदय रूपी मानसरोवर से प्रकट होकर सपरिवार साधक को भवसागर से पार ले जाती है। वही गायत्री ज्ञान रूपी जल से परिपूर्ण गंगा है। उस गंगा को मैं भक्ति से बार-बार नमस्कार करता हूँ।

❑ **गायत्री तेजो वै गायत्री छन्दसां तेजो रथन्तरं साम्नाम् तेजश्चतुर्विंऽशस्तोमानां तेज एवं तत्सम्यक् दधाति पुत्रस्य पुत्रतेजस्वी भवति।**
गायत्री सब वेदों का तेज है। सामवेद का यह रथन्तर छन्द है। चौबीस स्तोतों का यह तेज है। इस तेज को धारण करने वाले के पुत्र और पौत्र तेजस्वी होते हैं।

❑ **कामान्दुग्धे विप्रकर्षत्यलक्ष्मी,**
पुण्यं सूते दुष्कृतं या हिनस्ति।
शुद्धां शान्तां मातरं मंगलानां,
धेनुर्धीरा गायत्रीमन्त्र याहुः।।
गायत्री आवश्यक वस्तुओं को प्रदान करती है। दुर्भाग्य-दरिद्र आदि कष्टों को दूर करती है। ऐसी परम शुद्ध कल्याण जननी गायत्री को विज्ञपुरुष गायत्री कहते हैं।

❑ **यो ह वा एवं वित्त स ब्रह्मवित्पुण्यां च कीर्तिं लभते सुरभींश्च गन्धान् सोऽपहतपाप्मानन्तां श्रियमश्नुते य एवं वेद यश्चैवं विदानेवमेतां वेदानां मातरं सावित्रीसम्पदमुपनिषदमुपास्त इति ब्राह्मणम्।**
—गायत्री उपनिषद् ८.१
जो वेदमाता गायत्री को ठीक तरह जान लेता है, वह ब्रह्मवेत्ता पुण्य, कीर्ति एवं दिव्य विभूतियों को प्राप्त करता है और निर्मल अन्तःकरण होकर परमश्रेय का अधिकारी बनता है।

❑ **मया सो अन्नमत्ति यो विपश्यति यः प्राणिति य ईं शृणोत्युक्तम्। अमन्तवो मां त उप क्षियन्ति श्रुधि श्रुत श्रद्धिवं ते वदामि।** *—ऋ. १०.१२५.४*
वह मुझसे ही जीवित है। मेरे द्वारा ही उसे अन्न मिलता है। मेरी शक्ति से ही वह बोलता है और सुनता है। जो मेरी उपेक्षा करता है वह नष्ट हो जाता है। श्रद्धावानो, सुनो ! यह सब मैं तुम्हारे कल्याण के लिए करती हूँ।

❑ **गायत्र्यास्तु परं नास्ति शोधनं पापकर्मणाम्।**
महाव्याहृति संयुक्तां प्रणवेन च संजपेत्।।
—संवर्त स्मृति
गायत्री से बढ़कर पापकर्मों का शोधक दूसरा कुछ नहीं है। ओंकार सहित तीन महाव्याहृतियों से युक्त गायत्री का जप करना चाहिए।

❑ **ज्वलनाघातपवनाघातैरुन्निद्रितोऽहिराट्।**
ब्रह्मग्रन्थिं ततो भित्त्वा विष्णुग्रन्थिं भिनत्त्यतः।
रुद्रग्रन्थिं च भित्त्वैव कमलानि भिनत्ति षट्।
सहस्रकमले शक्तिः शिवेन सह मोदते।
सैवावस्था परा ज्ञेया सैव निर्वृतिकारणी।
—योगकुण्डल्युपनिषद्
अग्नि और प्राणवायु दोनों के आघात से सुप्त कुण्डलिनी जाग पड़ती है और ब्रह्मग्रन्थि, विष्णुग्रन्थि, रुद्रग्रन्थि तथा षटचक्र का भेद करती हुई सहस्रार कमल में जा पहुँचती है। वहाँ वह शक्ति शिव के साथ मिलकर, आनन्द की स्थिति में निवास करती है। यही श्रेष्ठ स्थित है। यही मोक्ष का कारण है।

❑ गायत्री अग्निस्वरूप है, वह जिसके अन्तरात्मा में प्रवेश करती है, उसे समुचित ऊष्णता, प्रतिभा, स्फूर्ति एवं तेजस्विता प्रदान करती है। गायत्री अनुग्रह उन लोगों को प्राप्त होता है, जो स्थान, भावना लक्ष्य और आकांक्षा की दृष्टि से स्थिर हैं तथा धैर्यपूर्वक दीर्घकाल तक साधना में संलग्न रहते हैं। गायत्री आदि लक्ष्मी है, वह उन २६ सम्पदाओं की जननी है, जिनका वर्णन गीता के १६ अध्याय में किया गया है। इन्हें प्राप्त करने वाला विपुल रत्न-राशि के भण्डार का स्वामी बनने की अपेक्षा अधिक उन्नतशील, सुखी तथा सन्तुष्ट देखा जाता है। दैवी-सम्पदाएँ जो आत्मा के लिए आत्मिक रत्नजड़ित आभूषणों के समान शोभनीय हैं, गायत्री के द्वारा ही प्राप्त होती हैं। अरिषडवर्ग भेदिनी आदिशक्ति गायत्री का आविर्भाव अन्तःकरण में होने से काम, क्रोध, लोभ, मद एवं मत्सर आन्तरिक शत्रुओं का विनाश हो जाता है।

❑ मनुष्य का वास्तविक हित तो आत्मकल्याण में ही है। आत्मा सूक्ष्म है, इसलिए उस पर स्थूल पदार्थों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की अपेक्षा सूक्ष्म तत्त्वों का ही विशेष प्रभाव पड़ सकता है। इस बात को समझकर भारतीय ऋषि-मुनियों ने हजारों वर्ष तक योगाभ्यास तथा तपश्चर्या द्वारा ऐसी विधि का आविष्कार किया है, जिससे सांसारिक और पारलौकिक दोनों प्रकार के उद्देश्यों की पूर्ति हो सके। इन विधियों में से गायत्री जप सबसे अधिक लाभदायक है और प्रभावशाली है। यह मन्त्र पूर्णरूपेण सार्थक है और समझदार जप करने वाला इसके अर्थ का ध्यान रखते हुए इच्छानुसार प्रगति कर सकता है।

❑ इस प्रकृति में रहने वाले मन का ही गायत्री मन में भर्ग के रूप में वर्णन किया गया है और उसी का ध्यान करके सद्बुद्धि की कामना की जाती है। अगर हम इस ध्यान अथवा जप को विधिपूर्वक करें और अपने मन को विश्व-मन के साथ एकाग्र करने का प्रयत्न करें तो निस्सन्देह हम कल्याण के मार्ग पर अग्रसर हो सकते हैं।

❑ **अशुचिर्वाशुचिर्वापि गच्छन् तिष्ठन् यथा तथा। गायत्री प्रजेपेद्धीमान् जपात् पापान्नवर्तते।।**

अपवित्र हो अथवा पवित्र हो, चलता हो अथवा बैठा हो, जिस भी स्थिति में हो, बुद्धिमान मनुष्य गायत्री का जप करता रहे। इस जप के द्वारा पापों से छुटकारा मिलता है। *—गायत्री मन्त्र*

❑ गायत्री की महिमा का वर्णन करना मनुष्य की सामर्थ्य से बाहर है। बुद्धि का होना इतना बड़ा कार्य है, जिसकी समता संसार में और किसी काम से नहीं हो सकती। आत्म-ज्ञान प्राप्त करने की दिव्यदृष्टि जिस बुद्धि से प्राप्त होती है, उसकी प्रेरणा गायत्री द्वारा होती है। गायत्री आदि मन्त्र है। उसका अवतार दुरितों को नष्ट करने और अति के अभिवर्धन के लिए हुआ है। *—शंकराचार्य*

❑ **या ते तनूर्वाचि प्रतिष्ठिता या श्रोत्रे या च चक्षुषि। या च मनसि सन्तता शिवां तां कुरु मोत्क्रमीः।। प्राणस्येदं वशे सर्वं त्रिदिवे यत्प्रतिष्ठितम्। मातेव पुत्रान्न रक्षस्व श्रीश्च प्रज्ञां च विधेहि न इति।।**

—प्रश्नोपनिषद् २। १२-१३

हे प्राण ! तेरा ही रूप वाणी में निहित है, तू ही श्रोत, मन में विद्यमान है। तू उन्हें कल्याणकारी बना। इस शरीर में ही विद्यमान रह। इस ब्रह्माण्ड में जो कुछ है सो सब तुझ प्राण के ही आश्रित हैं। तू माता-पिता के समान हमारी रक्षा कर और हमें सम्पदाओं तथा विभूतियों से सम्पन्न कर।

❑ **भुवि विहाय तवान्तक सेवन क रहवाञ्छति राज्यमकण्टकम्। त्रुटिरसौ किल याति युगात्मतां न निकटं यदि तेऽकिं स्मरोरुहम्। पयसि ये निरता मुनयोऽमला स्तव विहाय पदाम्बुज पूजनम्। जननि ते ! विधिना किल वञ्चिताः परिभवो विकवे परिकल्पितः।। न तपसा न दमेन समाधिना न च तथा विहितैः क्रतुभिर्यथा। तव पदाब्ज पराग निषेवणाद्भवति मुक्ति रजेभव तागुरान्।।**

हे माता ! कौन ऐसा मूर्ख है, जो इस भू-मण्डल में आपकी सान्निध्य-सेवा का परित्याग करके निष्कंटक राज्य की इच्छा किया करता है, अर्थात् आपके समीप में स्थित रहकर सेवा के महत्त्व के सामने राज्य की प्राप्ति भी तुच्छ है। ऐसी त्रुटि फिर युगों तक दुःखद होती है, यदि कोई आपके चरणकमल के समीप में नहीं पहुँचता है। जो मुनिगण आपके चरण-कमल का त्यागकर निरन्तर तपस्या करने में ही निरत रहा करते हैं। हे जननि ! वास्तव में विधाता ने उन्हें वंचित ही कर दिया है और विभव में भी उनका परिभव कर दिया है। तप, समाधि, दम तथा ऋतुओं के करने पर भी इस भवसागर से छुटकारा उस प्रकार नहीं हो सकता है, जैसे केवल आपके चरण-कमलों का समाश्रय लेने से होता है।

❑ **ध्यात्वैतन्मूलचक्रान्तरविवरलसत् कोटिसूर्यप्रकाशां**
वाचामीशो नरेन्द्रः स भवति सहसा सर्वविद्याविनोदी।
आरोग्यं तस्य नित्यं निरवधि च महानन्दचित्तान्तरात्मा
वाक्यैः काव्यप्रबन्धैः सकलसुरगुरून् सेवते शुद्धशीलः।।

—षट्चक्र निरूपणम् २

मूलाधार चक्र में कोटि सूर्य जैसे प्रकाश से युक्त कुण्डलिनी शक्ति का ध्यान रखने पर वाणी की सिद्धि होती है, वह मनुष्यों का नेतृत्व करता है। विद्यावान बनता है। आरोग्य बनता है। चित्त में आनन्द रहता है। ऐसा शीलवान् साधक देवताओं द्वारा पूजित होता है।

❑ **सं उत त्वः पश्यन्न ददर्श वाचमुत त्वः शृण्वन्न शृणोत्येनाम्।**
उतो त्वस्मै तन्वं १ विसस्रे जायेव पत्य उशती सुवासाः।।

—सरस्वती रहस्योपनिषद्

हे भगवती वाक् ! तुम्हारी कृपा से ही सब लोग बोलते हैं। तुम्हारी कृपा से ही विचार करना सम्भव होता है। तुम्हें जानते हुए भी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org

www.vicharkrantibooks.org

जान नहीं पाते। देखते हुए भी देख नहीं पाते। जिस पर तुम्हारी कृपा होती है, वही तुम्हें समझ पाता है।

❑ **सावित्री सौख्यानां सकल जगदेनः प्रशमनी।**
सावित्री जालानां जनि-मरण-जानां पदजुषाम्।।
धवित्रीं शत्रूणां हृदय पटल स्यार्तिहृतये।
भावित्रीं गायत्री स्वशरण्यतां नौमि निवेतराम्।।

आप सम्पूर्ण सौख्यों की सावित्री अर्थात् प्रसन्न करने वाली हैं और जगत के समस्त पापों का प्रशमन करने वाली हैं। जो आपके चरणों का सेवन करने वाले हैं, उनके जन्म तथा मरण से उत्पन्न होने वाले जालों को काटने वाली सावित्री हैं। हृदय-पटल की आर्ति को हरण करने के लिए, शत्रुओं को भगा देने वाली धावित्री हैं और अपने शरण में प्राप्त होने वालों को गायत्री होने वाली आपको मैं प्रणाम करता हूँ।

❑ **एभिः स्तवैश्च मां नित्यं स्तोष्यते यः समाहितः।**
तस्याहं सकलां बाधां शमयिष्याम्यसंशयम्।।
सर्वाबाधासु घोरासु वेदनाऽभ्यर्दितोऽपि वा।
स्मरन्ममैतच्चरितं नरो मुच्येत संकटात्।।

नित्यप्रति हृदय से महाशक्ति जगन्माता का स्तवन करने से निस्सन्देह समस्त बाधाओं से छुटकारा मिल जाता है। सब प्रकार की कठिन आपत्तियों और रोग, शोक, पीड़ा आदि यह देवी के चरित्र का पाठ करने से दूर हो जाते हैं।

❑ **सा च ब्रह्मस्वरूपा च नित्या सा च सनातनी।**
यथाऽऽत्मा च तथा शक्तिर्यथाग्नौ दाहिका स्थिता।।
अत एव हि योगीन्द्रैः स्त्रीपुम्भेदो न मन्यते।
सर्वं ब्रह्ममयं ब्रह्मञ्छश्वत्सदपि नारद।।

—देवी भागवत ६। १। ९०। ११

वही ब्रह्म प्रकृति, ब्रह्मस्वरूपा, नित्या और सनातनी है। परब्रह्म परमात्मा के अनुरूप सभी गुण उस प्रकृति में निहित हैं जैसे अग्नि में दाहिका शक्ति सदा रहती है। इसी से परम योगीगण स्त्री-पुरुष में भेद नहीं मानते। हे नारद ! वे कहते हैं कि सत-असत जो कुछ भी है सब ब्रह्ममय है।

❑ **स्तुता सम्पूजिता पुष्पैर्गन्ध धूपादिभिस्तथा।**
वित्तं ददातिपुत्रांश्च मतिधर्मे तथा शुभाम्।।
स्वर्गापवर्गदे देवि, नारायणि नमोऽस्तुते।।

हे नारायणि ! स्तुति और पूजा करने वाले भक्तों को तुम धन, पुत्र, सद्विचार, धर्मबुद्धि प्रदान करती हो। तुम्हीं स्वर्ग और मुक्ति की दाता हो। तुमको हमारा नमस्कार है।

❑ **विशुद्धा परा चिन्मयी स्वप्रकाशा, मतानन्दरूपा जगद् व्यापिका च।**
तवेदृग्विधा या निजाकारमूर्ति, किमस्माभिरन्तर्हृदि ध्यायितव्या।।

हे महाशक्ति ! तुम परमशुद्ध, स्वयं प्रकाशमान, अमृतरूप और जगतव्यापी हो, तो भी अपनी मूर्ति को मेरे भीतरी हृदय में विराजमान कर देती हो और मैं उसी का ध्यान करता हूँ।

❑ **अचिन्त्यापि साकारशक्तिस्वरूपा,**
प्रतिव्यत्यधिष्ठान्न सत्वैकमूर्तिः।
गुणातीतनिर्द्वन्द्व बोधैकगम्या,
त्वमेकापरब्रह्मरूपेण सिद्धा।।

—महाकाल स्तवन

तुम अचिन्तनीय होते हुए भी साकार मूर्तिरूपा हो। प्रत्येक प्राणी में सत्वगुण में विराजमान रहती हो तथा गुणातीत हो। केवल तत्त्वज्ञान से ही तुम जानी जाती हो। तुम्हीं परब्रह्म रूप से प्रसिद्ध हो।

❑ **तत्सवितुर्वरेण्यम्। मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः। भूः स्वाहा। भर्गो देवस्य धीमहि। मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳरजः मधु द्यौरस्तुः न पिता। भुवः स्वाहा। धियो यो नः प्रचोदयात्। मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ ३ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः। स्वः स्वाहेति। सर्वाश्च मधुमतीरहमेवेद ꣳ सर्वं भूयासं भूर्भुवः स्वः स्वाहा।** *—बृहदारण्यक*

(तत्सवितुर्वरेण्यं) मधुर वायु चले, नदी और समुद्र रसमय होकर रहें। औषधियाँ हमारे लिए सुखदायक हों।

(भर्गो देवस्य धीमहि) रात्रि और दिन हमारे लिए सुखकारी हों, पृथ्वी की रज हमारे लिए मंगलमय हो। द्युलोक हमें सुख प्रदान करे।

(धियो यो नः प्रचोदयात्) वनस्पतियाँ हमारे लिए रसमयी हों। सूर्य हमारे लिए सुखप्रद हों। उसकी रश्मियाँ हमारे लिए कल्याणकारी हों। सब हमारे लिए सुखप्रद हों। मैं सबके लिए मधुर बन जाऊँ।

❑ **सर्वावस्थोऽपि यो विप्रः सन्ध्योपासनतत्परः।**
ब्रह्मण्यश्च न हीयते सोऽन्य जन्म गतोऽपि सन्।।
या सन्ध्या सा तु गायत्री त्रिधा भूत्वा प्रतिष्ठिता।
सन्ध्या ह्युपासिता येन तेन विष्णुरुपासितः।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पूर्वा सन्ध्या तु गायत्री सावित्री मध्यमास्तथा
या भवेत्पश्चिमा सन्ध्या सा विज्ञेया सरस्वती।।
सन्ध्यौ सन्ध्यामुपासीत नास्तगे नोदूके रवौ,
सन्ध्या त्रयं तु कर्त्तव्यं द्विज आत्म विदा सदा।।

सब प्रकार की दशा में रहने वाला भी जो विप्र सन्ध्योपासना करने में सदा परायण रहता है, वह अन्य जन्म में भी ब्राह्मणत्व से हीन नहीं होता है। जो सन्ध्या है वही गायत्री है, जो तीन स्वरूपों से प्रकट होकर प्रतिष्ठित होती है। जिसने सन्ध्या की उपासना की है, उसने भगवान विष्णु की उपासना भी कर ली है ऐसा समझ लेना चाहिए। प्रातःकाल में की जाने वाली पूर्व सन्ध्या गायत्री का स्वरूप है—मध्याह्न काल की मध्यमा सन्ध्या सावित्री कही गई है और सायंकाल में की हुई पश्चिम सन्ध्या है, वह सरस्वती समझनी चाहिए। दोनों कालों के मिलने की जो सन्धि है, उस सन्धिकाल में ही सन्ध्या की उपासना करें। सूर्य के अस्ताचलगामी होने पर तथा सूर्य के उदित हो जाने पर नहीं करें। जो आत्मवेत्ता द्विज है, उसे सदा तीनों काल में संध्या की उपासना करनी चाहिए। यह परम आवश्यक कर्त्तव्य है।

❑ **परमात्मास्तु या लोक ब्रह्मशक्तिविराजते।**
सूक्ष्मा च सात्विका चैव गायत्रीत्वभिधीयते।।

—स्कन्द पुराण

सब लोकों में विद्यमान, जो सर्वव्यापक परमात्मा शक्ति है, वह अत्यन्त सूक्ष्म एवं सतोगुणी प्रकृति में निवास करती है, यह चेतनाशक्ति गायत्री ही है।

❑ **त्वमेव सर्वजननी मूलप्रकृतिरीश्वरी**
त्वमेवाद्या सृष्टिविधौ स्वेच्छया त्रिगुणात्मिका।
कार्योऽर्थे सगुणा त्वं च वस्तुतो निर्गुणा स्वयम्,
परब्रह्मस्वरूपा त्वं सत्या नित्या सनातनी।।
तेजः स्वरूपा परमा भक्तानुग्रहविग्रहा
सर्वस्वरूपा सर्वेशा सर्वाधारा परात्परा।।
सर्वबीजस्वरूपा च सर्वपूज्या निराश्रया
सर्वज्ञा सर्वतोभद्रा सर्वमंगलमंगला।।

—ब्रह्मवैवर्त पुराण प्रकृति २१६६।७।१०

तुम्हीं विश्वजननी, मूल प्रकृति ईश्वरी हो, तुम्हीं सृष्टि उत्पत्ति के समय आद्यशक्ति के रूप में विराजमान रहती हो और स्वेच्छा से त्रिगुणात्मिका बन जाती हो। यद्यपि वस्तुतः तुम निर्गुण हो तथापि प्रयोजनवश सगुण हो जाती हो। तुम परब्रह्म स्वरूप, सत्य, नित्य एवं सनातनी हो। परम तेजस्वरूप और भक्तों पर अनुग्रह करने के हेतु मानव शरीर धारण करती हो। तुम सर्वस्वरूप, सर्वेश्वरी, सर्वाधार एवम् परात्पर हो। तुम सर्वबीजस्वरूप, सर्वपूज्या एवं आश्रयरहित हो। तुम सर्वज्ञ, सब प्रकार से मंगल करने वाली और सर्वमंगलों की मंगल हो।

❑ **ब्रह्मत्वं वेदाप्तुकामोस्युयात्व गायत्रीं वेस्तोक कामोऽन्यदेवम्। बुद्धेः साक्षी बुद्धिगम्यो जयादौ गायत्र्यर्थः। सोऽनघो वेदसारः तद ब्रह्मतोपासकस्या ष्येनं मन्त्रः कोऽस्ति तन्त्रे पुराणे। —देवी भागवत**

ब्रह्मतेज प्राप्त करने की इच्छा हो तो वेदमाता गायत्री की ही उपासना करनी चाहिए। अन्य कामनाओं के लिए अन्य देवताओं को पूजें। इसी से साक्षी बुद्धि—ऋतम्भरा-प्रज्ञा का उदय होता है। यही वेदों का सार है। पापों से निवृत्ति और पवित्रता की सिद्धि इसी से मिलती है। ब्रह्मत्व की उपासना करने वाले के लिए यही साक्षात ब्रह्म है। यह शिरोमणि मन्त्र है। इससे बढ़कर और कोई मन्त्र-तन्त्र आदि नहीं है।

❑ **ओजस् शक्तिः बल प्रभाव सुषमा तेजस्वीर्य प्रभा।**
ज्ञानैश्वर्यमहस्साहो जययशस्स्थैर्य प्रतिष्ठाश्रियः।।
विज्ञान प्रतिभा मतिस्मृतिधृति प्रज्ञा प्रथस्तुष्टयः।
वर्णास्त्वन्मानुगंस्त्रिरष्टभिरहो वर्ध्वन्त एवाग्रमे।।

ओज, शक्ति, बल, महिमा, कान्ति, तेज, पराक्रम, प्रकाश, ज्ञान, ऐश्वर्य, विकास, सहनशक्ति, जय, कीर्ति, स्थिरता, प्रतिष्ठा, लक्ष्मी, विज्ञान, प्रतिभा, मति, स्मृति, धृति, प्रज्ञा, ख्याति यह चौबीस गुण हे माता ! तुम्हारे मन्त्र में रहने वाले चौबीस वर्णों द्वारा मुझमें अभिवृद्धि पा रहे हैं।

❑ **प्रभावेणैवगायत्र्याःक्षत्रियकौशिकोवशी।**
राजर्षित्वंपरित्यज्यब्रह्मर्षिपदमीयिवान्।।
सामर्थ्यंप्रापयात्युच्चैरन्युर्भुवनसर्जने।
किंकिंनदद्यादायत्रीम्युसम्यगेवमुपासिता।।

—स्कन्द पुराण

क्षत्रिय विश्वामित्र ने राजर्षि पद से उन्नति करते हुए ब्रह्मर्षि पद गायत्री उपासना के बल पर ही प्राप्त किया था। दूसरी नयी सृष्टि रच डालने की शक्ति भी प्राप्त की थी। भलीप्रकार साधना की हुई गायत्री से भला कौन-सा लाभ प्राप्त नहीं किया जा सकता।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ **परब्रह्मस्वरूपा च निर्वाणपद दायिनी।**
ब्रह्मतेजोमयी शक्तिस्तदधिष्ठातृदेवता।।

—देवी भागवत

(वह देवी गायत्री) परब्रह्म स्वरूपा, निर्वाणपद देने वाली, ब्रह्म तेजमयी परम शक्ति तथा अधिष्ठात्री देवी है।

❑ **सावित्र्याश्चैव मन्त्रार्थं ज्ञात्वा चैव यथार्थतः।**
तस्या संयुक्त योपास्य ब्रह्मभूयाय कल्पते।।

गायत्री का गूढ़ मर्म और रहस्य जानकर जो उसकी उपयुक्त उपासना करता है, वह ब्रह्मभूत ही हो जाता है।

❑ **कुण्डलिन्या समुद्भूता गायत्री प्राणधारिणी।**
प्राणविद्या महाविद्या यस्तां वेत्ति स वेदवित्।।

—योग चूडामणि उपनिषद्

कुण्डलिनी ही प्राण शक्तिमयी गायत्री की उत्पत्ति स्थान है, जो गायत्री की प्राणविद्या रूपी महाविद्या को जानते हैं वे ही वेदवित हैं।

❑ **सा गायत्री समिद्धाऽन्यानि छन्दांसि समिन्धे।**

—शतपथ १। ३। ४। ६

गायत्री के जाग्रत होने पर अन्य मन्त्र जाग्रत होते हैं।

❑ **परां सिद्धिमवाप्नोति गायत्रीमुत्तमां पठेत्।**

—शक्ति समुच्चय

गायत्री मन्त्र के जप करने से परासिद्धि की प्राप्ति होती है।

❑ **देवी दात्री च भोक्त्री च देवी सर्वमिदं जगत्।**
देवी जयति सर्वत्र यो देवी साऽहमेव च।
सर्वात्मना हि सा देवी सर्वभूतेषु संस्थिता। गायत्री मोक्ष हेतुर्वा मोक्षस्थानम् लक्षणम्।

दिव्य, देने वाली, भोक्ता, सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त, जिसकी सर्वत्र जय ही जय है। ऐसी गायत्री परब्रह्म है। वही मोक्ष का आधार है, वही मोक्ष का स्थान है।

❑ **समिद्धा अग्निः सुपुना पुनाति।**

—अथर्व. १२। १। ११

अग्निहोत्र का स्थान पवित्र हो जाता है। मन, शरीर और स्थान को पवित्र बनाने के लिए यज्ञ करते रहना चाहिए।

❑ **अर्संस्थितो वा एष यज्ञः।** *—तैत्तिरीय १। ४। ६*

यज्ञ का पुण्यफल कभी नष्ट नहीं होता। बुद्धिमानो यज्ञ का पुण्य संचय करते रहो।

❑ **"प्रजापतिरकामयत। सर्वान्कामानाप्नुया सर्वा व्यष्टीर्व्याश्नुवीयेति सएतमश्वमेधं त्रिरात्रं यज्ञक्रतुमपश्यत्तमाहरत्तेनायजत तेनेष्ट्वा सर्वान्कामानाप्नोत्सर्वा व्यष्टीर्व्याश्नुत सर्वान्ह वै कामानाप्नोति सर्वा व्यष्टीर्व्याश्नुते योऽश्वमेधेन यजते।"**

—शतपथ १३। ४। १। १

प्रजापति ने इच्छा की कि मेरी सभी कामनाएँ पूरी हो जाएँ, मुझे सभी पदार्थ मिलें। उसने इस त्रिरात्र (तीन रात वाले) यज्ञ-क्रतु, अश्वमेध को देखा, उसको ले आया। उसने यज्ञ किया। इस यज्ञ को करके सब कामनाओं को पूरा किया। सब पदार्थों को प्राप्त किया। जो अश्वमेध यज्ञ करता है, उसकी सभी कामनाओं की पूर्ति होती है। वह सभी पदार्थों को प्राप्त कर लेता है।

❑ **सर्वेषां वा एष भूतानां सर्वेषां देवानामात्मा यद् यज्ञः।** *—शतपथ १४। ३। २। १*

निश्चय ही यह यज्ञ सब प्राणियों और सब देवताओं का जीवन है।

❑ **अग्निहोत्रात्परंनान्यत्पवित्रमिहपठ्यते।**
सुकृतेनाग्निहोत्रेणप्रशुद्ध्यंतिपुविद्विजाः।।
पंथानोदेवलोकस्यब्राह्मणैर्दर्शितास्त्वमी।
एकोग्निसर्वदाधार्योगृहस्थेनद्विजन्मना।। *—पद्म पुराण*

अग्निहोत्र से बढ़कर कोई पवित्र कर्म नहीं। अच्छी प्रकार से किए गये अग्निहोत्रों के द्वारा द्विजों का अन्तःकरण पवित्र हो जाता है।

ब्राह्मणों ने विश्व को यज्ञ करने की प्रक्रिया बताकर सभी के लिए स्वर्ग को पाने का निश्चित पथ बता दिया है, अतः हे गृहस्थो ! यज्ञ को प्रतिदिन करते रहना ही गृहस्थों का धर्म है।

❑ **आयुष्यञ्यापि भक्तानां त्रयाणां विधिपूर्वकम्।**
यजेत जुहुयादग्नौ जपेद्यज्जितेन्द्रियः।।

—कूर्म पुराण

जो भक्त जितेन्द्रिय रहकर जप और यज्ञ करते हैं, आयु बढ़ती है।

❑ **देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय।**
दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाजं नः स्वदतु।।

—यजु.

मन, वाणी, बुद्धि की उन्नति तब होगी, जब यज्ञ एवं यज्ञ पति की उपासना की जाए।

❑ **अग्निहोत्रात्परो धर्मो द्विजानां नेह विद्यते।**
तस्मादाराधयोन्नित्यमग्निहोत्रेण शाश्वतम्।।

—कूर्म पुराण

इस लोक में अग्निहोत्र से बढ़कर और कोई धर्मकृत्य नहीं। उसकी आराधना नित्य ही करनी चाहिए।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ **मनुश्चसगरोराजामरुत्तोनहुषात्मजः।**
एते ते पूर्वजाः सर्वेयज्ञंकृत्वा पदं गताः।।

—पद्म पुराण

शेष जी कहते हैं हे राम ! राजा मनु, सगर, नहुष के आत्मज मरुत, ये सब आपके पूर्वज, यज्ञ करने से ही परमपद को प्राप्त हुए हैं।

❑ **संपत्करीतथाज्ञेयासायमग्न्याहुतिर्द्विजाः।**
आयुष्करीतिविज्ञेयाप्रातः सूर्याहुतिस्तथा।।

—शिव पुराण

सन्ध्याकाल में अग्नि में आहुति देने से वह सम्पत्ति देने वाली है और सूर्योदय के समय की आहुति आयु को बढ़ाने वाली होती है।

❑ **अहन्यहन्यनुष्ठानंयज्ञानांपार्थिवोत्तम।**
उपकारकरंपुंसांक्रियमाणंफलार्थिनाम्।।

—पद्म पुराण

सुख पाने की इच्छा करने वालों को नित्य अग्निहोत्र करना चाहिए, इससे निश्चित रूप से कल्याण होता है।

❑ **स्वाहा युक्तं च मन्त्रं च यो गृहणाति प्रशस्तकम्।**
सर्वसिद्धमवित्तस्य ब्रह्मग्रहणमात्रतः।।

जो स्वाहा युक्त अग्निहोत्र करते हैं, उन्हें समस्त सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं।

❑ शुद्ध बुद्धि से किए गये स्वार्थहीन काम यज्ञ कहलाते हैं।

—लोकमान्य तिलक

❑ जो ज्ञान एवं कर्म के समन्वयकारी विद्वान विश्व को धारण करने वाले सत्कर्म रूपी यज्ञ का अनुष्ठान करते हैं, वे स्वर्गलोक में गमन करते हुए शोकरहित दिव्य स्थिति को प्राप्त होते हैं, उन्हें फिर किसी की अपेक्षा नहीं रहती है।

❑ प्राणायाम से युक्त नियत आत्मा वाले विप्र के समस्त दोष नष्ट हो जाया करते हैं और फिर वह केवल सत्त्वगुण में ही स्थित रहा करता है। जो भी तपस्याएँ तपी जाती हैं, व्रत लिए जाते हैं और नियम ग्रहण किए जाते हैं तथा समस्त यज्ञों के करने का जो भी कुछ फल होता है, वह सब प्राणायाम के समान होता है।

—वायु पुराण

❑ **यज्ञो वै श्रेष्ठतम् कर्म, अयज्ञियो हत वर्चः।**
नाग्निहोत्रात्परोधर्मः गायत्री परःसर्वात्।।

—गौतम ५।७।१२

यज्ञ ही संसार का सर्वश्रेष्ठ शुभ कार्य है, जो यज्ञ नहीं करते उनका तेज नष्ट हो जाता है। यह सत्य है कि अग्निहोत्र से श्रेष्ठ कोई धर्म नहीं, पर समस्त अग्निहोत्रों में भी गायत्री यज्ञ सर्वश्रेष्ठ है।

❑ **यज्ञोऽयं सर्वकामधुक्।** *—अंगिरा*

यह यज्ञ सब कामनाएँ पूर्ण करने वाला है। जो यज्ञ करते हैं, उन्हें किसी प्रकार का अभाव नहीं रहता।

❑ **यज्ञाः कल्याण हेतवः।** *—विष्णु पुराण*

कल्याण का मूल कारण यज्ञ है। जो यज्ञ करते हैं उनका कल्याण होता है।

❑ **अनाहूतोऽध्वरं व्रजेत्।** *—याज्ञवल्क्य*

बिना बुलाये भी यज्ञ में जाना चाहिए। यज्ञ में सहयोगी बनना एक पुनीत धर्म-कर्त्तव्य है।

❑ **छन्दः शिक्षा च कल्पश्च तथा व्याकरणानि च।**
शास्त्रं ज्योतिर्निरुक्तं चाप्याग्निहोत्रकृते कृतम्।।

छन्द शिक्षा, कल्प, व्याकरण, ज्योतिष और निरुक्त की संरचना अग्निहोत्र के लिए ही हुई है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

परिवार

- स्त्री का पति और पति की स्त्री परस्पर एक-दूसरे के प्रियतम मित्र हैं। मित्र ही नहीं उनकी आशाएँ, आकांक्षाएँ, कामनाएँ, जीवन और श्वास भी एक ही हैं। *—भवभूति*
- जब समाज में नारी का स्थान बहुत नीचा होता है, तब उसके साथ शिशुओं का स्थान भी नीचे उतर आता है। *—शरतचन्द*
- जिन कृत्यों ने मानव-जाति का मुख उज्ज्वल किया है, उनका श्रेय मुख्यतः दाम्पत्य योगियों को है।
- दाम्पत्य-जीवन चित्त की शान्ति का एक प्रधान साधन है। *—प्रेमचन्द*
- विवाह भी अन्य संस्कारों की भाँति एक संस्कार है। इसका विशेष महत्त्व इसलिए है कि यह दो आत्माओं का पवित्र गठबन्धन है, पर इसका मतलब यह नहीं है कि इसे घरेलू उत्सव न मानकर महाभारत जीतने का, इन्द्रासन पाने जैसा काम समझा जाए। समाज की कैसी स्थिति है कि लोग बजाय वर-कन्या का जोड़ा चुनने के स्थान पर शादी में खर्च किए जाने वाले धन की चिन्ता करते हैं और बच्चों को पढ़ाने-लिखाने तथा सुसंस्कृत बनाने के स्थान पर उनकी शादी का ताना-बाना बुनने लगते हैं। *—स्वामी दयानन्द सरस्वती*
- गृहस्थ जीवन की सार्थकता तभी है, जब पति-पत्नी दोनों समान रूप से अपना शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास करते रहें, अन्यथा विवाह निरर्थक है। *—स्वामी श्रद्धानन्द*
- प्रत्येक कुटुम्ब के प्रमुख को अपने मितव्ययी पड़ोसी का अनुकरण करना चाहिए और उन पुरुषों के अनुभव से लाभ उठाना चाहिए, जो अपनी आय के अनुपात में खर्च का सन्तुलन बनाकर चलते हैं। *—सुकरात*
- यह भी कहा गया है कि जो कोई अपनी पत्नी को त्यागे वह उसे त्याग-पत्र दे, पर मैं तुमसे कहता हूँ कि जो कोई व्यभिचार को छोड़ और किसी कारण से अपनी पत्नी को त्यागे वह उससे व्यभिचार कराता है।
- मनुष्य अपने माता-पिता से अलग होकर अपनी पत्नी के साथ रहेगा और वे दोनों एक तन होंगे। सो वे अब दो नहीं एक तन हैं, इसलिए जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे।
- पति-पत्नी ऐसा व्यवहार करें जिससे उनकी आपसी आशंका एवं उद्वेग नष्ट हो जाएँ। एकता बढ़े, विश्वास सघन हो तथा उत्साह प्रबल हो। इससे गृहस्थाश्रम में ही स्वर्गीय सुख की अनुभूति होती है। *—साने गुरुजी*
- जिस परिवार के सदस्य, सिद्धान्तों में पत्थर की तरह अटल और रुचि में दूसरों की इच्छा पर चल सकते हैं, केवल वे ही परिवार सुखी व समुन्नत होते हैं। *—टामस जैफरसन*
- प्यार भरे परिवार में स्वर्ग अपने आप आता है। जो अपनी पत्नी और बच्चों को प्यार नहीं करता, वह अपने घर में शेरनी को पाल रहा है और दुःखों के घोंसले को पोस रहा है। *—टेलर*
- भारतीय दाम्पत्य जीवन कोमलता एवं प्रगाढ़ प्रेम से परिपूर्ण जीवन है। *—डॉ. राधाकृष्णन्*
- जहाँ पुरुष से स्त्री और स्त्री से पुरुष सन्तुष्ट हों, उसी घर में निश्चित ही कल्याण का निवास होता है।
- मुझे अगर अब किसी से ज्यादा उम्मीद है—सेवा करने की, कौम की खिदमत करने की तो बहिनों से, औरतों से है, क्योंकि उन लोगों में अभी तक खुदगरजी नहीं आयी है। परमात्मा के लोग बेगरजी होते हैं। परमात्मा का आशीर्वाद वे ही हासिल करते हैं। *—सीमान्त गाँधी*
- नारी जगत की एक पवित्र स्वर्गीय ज्योति है, त्याग उसका स्वभाव, प्रदान उसका धर्म, सहनशीलता उसका व्रत और प्रेम उसका जीवन है। *—चतुरसेन शास्त्री*
- भारतीय धर्म और संस्कृति अपनी महान नारियों के कारण जिन्दा हैं और नारियाँ ही उसे जिन्दा रखेंगी। *—लाला लाजपतराय*

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

- विवाह गुड़ियों का खेल नहीं। यह प्रेम की वह व्यवस्था है, जो हमारी मानसिक, शारीरिक तथा आध्यात्मिक इन्द्रियों का विकास करती है। जहाँ यह आवश्यकता पूरी न हो, यह मानना चाहिए वहाँ विवाह नहीं खेल होता है। *—स्वामी श्रद्धानन्द*
- जिस जाति में माँ का सम्मान नहीं, उसके लिए समुचित व्यवस्था का ध्यान नहीं, वह जाति कभी ऊँची नहीं उठ सकती। *—लाला लाजपतराय*
- पति के लिए चरित्र, सन्तान के लिए ममता, समाज के लिए शील, विश्व के लिए दया और जीवमात्र के लिए करुणा सँजोने वाली महाकृति का नाम नारी है। *—महर्षि रमण*
- कौन-सी ऊँचाई है जहाँ नारी नहीं चढ़ सकती। कौन-सा स्थान है, जहाँ वह पहुँची नहीं। हजारों अपराध करो, यह क्षमा कर देती है। जब किसी बात पर अड़ जाए तो संसार की कोई शक्ति रोक नहीं सकती। *—कार्लटन*
- ईश्वर के बाद हम सबसे अधिक ऋणी नारी के हैं। पहले तो स्वयं अपने जीवन के लिए और फिर इस जीवन को जीने योग्य बनाने के लिए। *—बोबी*
- शरीर का विवाह नहीं होता, विवाह होता है आत्मा का। यही विवाह का धार्मिक महत्त्व है, इसी से नैतिक महत्त्व की उपलब्धि हुआ करती है और सामाजिक सुव्यवस्था तथा संस्कृति की स्थिरता और प्रगति का आधार बनता है। *—जनार्दन द्विज*
- पत्नी पति की उन अव्यवस्थाओं से रक्षा करती है, जिनके कारण वह दुराचार में फैल सकता है। विवाह हमें एक सच्चा जीवन-साथी देता है, जिसे सिवा मृत्यु के हमसे कोई अलग नहीं कर सकता। *—ऐनी बेसेण्ट*
- पति-पत्नी के बीच प्रेम होना चाहिए, मोह नहीं। प्रेम और सत्य एक-दूसरे से अभिन्न रूप से जुड़े हैं। जिस मैत्री और घनिष्टता का आधार सत्य नहीं है, वह प्रेम पूर्ण नहीं, मोह भरा अस्थायी खिंचाव भर है। *—महात्मा गाँधी*
- सामाजिक व्यवहार और रीति-रिवाज जन्म से ही स्त्रियों के विकास में इतने बाधक होते हैं कि उन्हें अपनी आन्तरिक शक्तियों के विकास का अवसर ही नहीं मिल पाता। *—सरोजिनी नायडू*
- नारी की मुसकान में जीवन का स्रोत झरता और अमृत बहता है। *—रवीन्द्रनाथ टैगोर*
- जिस देश अथवा राष्ट्र में नारी-पूजा नहीं, उसका यथोचित सम्मान नहीं, वह देश या राष्ट्र कभी महान या उन्नत नहीं हो सकता। नारी रूपी शक्ति की अवमानना करने से ही आज हमारा अधःपतन हुआ है, स्त्रियाँ माता की प्रतिमा हैं। शक्तिस्वरूपा हैं, जब तक उनका उद्धार न होगा, तब तक हमारे देश का उद्धार होना असम्भव है। *—स्वामी विवेकानन्द*
- स्त्रियों की कोमलता ही पुरुषों की काव्य-कल्पना है। उनमें चाहे शारीरिक सामर्थ्य कम हो, पर उनमें वह धैर्य और साहस है जिस पर काल की दुश्चिन्ताओं का जरा भी असर नहीं होता। *—प्रेमचन्द*
- ईश्वरप्रदत्त प्रकाश, जल, वायु आदि सबके लिए समान रूप से उपलब्ध हैं, फिर उसके दिए ज्ञान से नारी को भी वंचित क्यों रखा जाए ? *—होरेस*
- देवताओं की पूजा और वन्दना से दूर रहने पर भी जो स्त्री अपने स्वामी की सेवा में लगी रहती है, वह उस सेवा के प्रभाव से उत्तम स्वर्गलोक को प्राप्त होती है। स्त्री क्या है ? साक्षात त्याग की मूर्ति है। जब कोई स्त्री किसी काम में जी-जान से लग जाती है, तो वह पहाड़ को भी हिला देती है। *—महात्मा गाँधी*
- जिन देवियों के थोड़े-से अंश-अनुदान को पाकर पुरुष सबल बना है—उन्हें दुर्बल कहना, जो अपनी अजस्र अनुदान परम्परा के कारण देवी कहलाती है, उन्हें स्वावलम्बन के अयोग्य ठहराना, बुद्धि का दिवालियापन नहीं तो और क्या है ? *—कार्लाइल*
- नारियों की अव्यवस्था में सुधार न होने तक विश्व के कल्याण का कोई मार्ग नहीं। किसी पक्षी का एक पंख के सहारे उड़ना नितान्त असम्भव है। *—स्वामी विवेकानन्द*
- स्त्री एक ईश्वरीय उपहार है, जिसे स्वर्ग के खो जाने पर ईश्वर ने मनुष्य को उसी की क्षति-पूर्ति के लिए दिया है। *—गोल्डस्मिथ*

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ स्त्री काँटेदार झाड़ी को फूल बनाती है। दरिद्र से दरिद्र मनुष्य के घर को भी सुशील स्त्री स्वर्ग बना देती है। —*विक्टर ह्यूगो*

❑ मानव-जाति ने आज तक जो सांस्कृतिक विकास किया है, वह स्वतन्त्र वायुमण्डल में ही किया है, इसलिए समाज में स्त्रियों का अधिकार पुरुषों से तनिक भी कम नहीं होना चाहिए। अगर भेद करना ही है तो स्त्रियों को हम कुछ ज्यादा अधिकार दे सकते हैं, क्योंकि मानवता द्रोह पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों ने कम किया है। —*काका कालेलकर*

❑ भारतवर्ष का धर्म उसके पुत्रों से नहीं, सुपुत्रियों के प्रताप से ही स्थिर है। भारतीय देवियों ने यदि अपना धर्म छोड़ दिया होता तो देश कबका नष्ट हो चुका होता ?

—*स्वामी दयानन्द सरस्वती*

❑ जिस कुल में निकट सम्बन्ध की स्त्रियाँ शोकातुर होकर दुःख पाती हैं, वह कुल शीघ्र ही नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है। जिस कुल में वे प्रसन्न रहती हैं, वह सदा बढ़ता रहता है। इसलिए ऐश्वर्य या कल्याण की कामना करने वाले मनुष्यों को चाहिए कि वे सदैव और विशेषतः सत्कार और उत्सव के अवसरों पर उत्तम भूषण, वस्त्र और भोजन से स्त्रियों का समादर करें।

❑ **सोमः शौचं ददावासां गन्धर्वश्चशुभंगिरम्।**
पावकः सर्वमध्यत्वं पवित्रायोषितो यतः।।

—*याज्ञवल्क्य*

चन्द्रमा ने नारी को स्वच्छता प्रदान की, गन्धर्व ने सुन्दर वाणी तथा अग्निदेव ने पवित्रता प्रदान की।

❑ सदाचार की रक्षा के लिए नारी का सम्मान आवश्यक है। उसकी करुणा का कभी अन्त नहीं होता और सदाचार केवल करुणा पर ही टिकता है। —*जयशंकर प्रसाद*

❑ जातीय महानता की आरम्भिक पहचान इस बात से होती कि उस जाति की माता और बच्चों की रक्षा और शिक्षा किस प्रकार होती है ? जिस जाति में नारी के उत्थान की व्यवस्था नहीं, वह जाति कभी ऊँची नहीं उठ सकती। —*लाला लाजपतराय*

❑ पर्दे से यदि शील का रक्षण होता है तो फिर उसे पुरुषों के लिए भी प्रयुक्त क्यों नहीं करते ?

—*स्वामी राम*

❑ **यद्गृहे रमते नारी लक्ष्मीस्तद्गृहवासिनी।**
देवताः कोटिशो वत्स न त्यजन्ति गृहं हि तत्।।
जिस घर में सुलक्षणी, सद्गुण सम्पन्ना नारी का निवास होता है, उस घर में लक्ष्मी भी निवास करती है। करोड़ों देवता भी उस घर का त्याग नहीं करते।

❑ सौन्दर्य से स्त्री अभिमानित बनती और सद्गुणों से उसकी प्रशंसा होती है, किन्तु लज्जा से वह देवी बन जाती है। —*शेक्सपियर*

❑ नारी उत्थान के लिए यदि तुम सचमुच ही कुछ करना चाहते हो तो केवल इतना करो कि उसे हर क्षेत्र में विकसित होने का अवसर दो, उसके लिए उसे उत्साहित करो और पूरी तत्परता से उसका सहयोग करो। अपनी भूलों का सुधार भर तुम कर लो, नारी अपना पक्ष सँभालने में सक्षम है। —*स्वामी विवेकानन्द*

❑ स्त्रियों की परम्परागत अन्धश्रद्धा से पुरुषों ने इतना अधिक लाभ उठाया है कि कोई विदेशी शासक भी किसी पराधीन देश के गुलाम लोगों का शोषण एवं उत्पीड़न करके उतना लाभ न उठाता होगा। —*शरतचन्द*

❑ मनुष्य दृष्टि है तो नारी दिव्यदृष्टि। दिव्य दृष्टि तो सदैव उपासनीय है। —*विक्टर ह्यूगो*

❑ आज्ञाकारिणी और शुद्ध चरित्र स्त्री भिखमंगे पति को भी सम्राट बना देती है। सुन्दर और लज्जावती स्त्री का दर्शन ही पुरुष के लिए स्वर्ग है।

❑ अतिशय शुद्ध मन वाली और सुशिक्षिता स्त्री का साथ मिलना इतना बड़ा स्वर्गीय आनन्द है कि उसका वर्णन नहीं हो सकता। —*डिटाक्वेल*

❑ बालक को सुशिक्षण देने के काम में केवल माता जितनी उपयोग में आती है, उतने और अच्छे शिक्षक उपयोग में नहीं आ सकते।

—*जार्ज हर्बर्ट*

❑ भू-मण्डल के प्रत्येक भाग में स्त्रियों पर अत्याचार और उनका अनादर करना असभ्यता का मुख्य चिन्ह समझा जाता है। बहशी और जंगली आदमी ही स्त्री जाति को तुच्छ दृष्टि से देखते हैं। —*राबर्टसन*

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

- रोमन राष्ट्र अपनी स्त्रियों के साथ, ग्रीक जाति की अपेक्षा अधिक अच्छा बर्ताव करता था। इसी कारण रोम राष्ट्र ग्रीक से अधिक बलवान् हो गया और ग्रीक को रोम के सम्मुख सिर झुकाना पड़ा। *—गिबन*
- अपनी माता की देखभाल के कारण मैं अपने साथियों की बुरी संगत से बचा। *—दादा भाई नौरोजी*
- जो दूसरों की स्त्री की ओर पाप की दृष्टि से देखता है, वह परमात्मा के कोप-कटाक्ष को जाग्रत करता है और अपने लिए नरक का रास्ता पैदा करता है।
- किसी भी स्त्री के सतीत्व का अपहरण करने से पूर्व मर जाना अच्छा है। किसी स्त्री को बुरे काम से बचा लेना सबसे बड़ा पुण्य है। *—स्वामी दयानन्द सरस्वती*
- तेरा स्वर्ग तेरी माता के पैरों तले है। *—हजरत मुहम्मद*
- भली स्त्री संसार को प्रकाश और बुरी संसार का अन्धकार है।
- स्त्री जंगल को भी राजमहल बना देती है।
- पिता, भाई, पति और देवर यदि अपनी भलाई चाहें तो उन्हें चाहिए कि वे अपनी पुत्री, भगिनी, भार्या और भाभी का अनादर न करें। *—मनुस्मृति*
- नारी की करुणा, अन्तर्जगत का उच्चतम विकास है, जिसके बल पर समस्त सदाचार ठहरे हुए हैं। *—जयशंकर प्रसाद*
- दाम्पत्य जीवन की सफलता के लिए कोमलता व प्रगाढ़ प्रेम के साथ प्रत्येक पक्ष को समता का समानाधिकार भी आवश्यक है। *—डॉ. राधाकृष्णन्*
- आदम के लिए स्वर्ग घर था। उसके वंशजों में भले आदमियों के लिए घर ही स्वर्ग था। *—हेयर*
- सौ आदमी एक छावनी बनाते हैं, किन्तु एक स्त्री एक घर बना सकती है।
- जब लड़कों की तरह लड़कियों की भी शिक्षा में जीविका की सुविधाएँ निकल आयेंगी, तो दहेज प्रथा भी विदा हो जाएगी। *—प्रेमचन्द*
- कोई भी युवक जो दहेज को विवाह की शर्त बनाता है—अपनी शिक्षा को कलंकित करता है, अपने देश को कलंकित करता है और नारी जाति का अपमान करता है। देश में आज बहुत-से युवक आन्दोलन चला रहे हैं। मैं चाहता हूँ कि ये आन्दोलन इस किस्म के सवालों को अपने हाथ में लें। ऐसे संगठनों को कोई ठोस सुधार-कार्य उन्हें अपने अन्दर से शुरू करने चाहिए। दहेज की इस नीचे गिराने वाली प्रथा के खिलाफ शक्तिशाली लोकमत पैदा करना चाहिए। जो युवक इस पाप के कीचड़ से अपने हाथ गन्दे करते हैं, उनका समाज से बहिष्कार किया जाना चाहिए। लड़कियों के माता-पिताओं को अँग्रेजी डिग्रियों का मोह छोड़ देना चाहिए और अपनी कन्याओं के लिए सच्चे एवं स्त्री जाति के प्रति सम्मान की भावना रखने वाले सुयोग्य वरों की खोज में अपने प्रान्त तथा जाति के तंग दायरों के बाहर जाने में भी संकोच नहीं करना चाहिए। *—महात्मा गाँधी*
- समाज के आवरण को बनाना, घर का प्रबन्ध करना तथा कोमलता, प्रेम और सहनशीलता से जीवन की विषम यात्रा को सरल और सुखद बनाना नारी का कार्य है। *—ग्रियर्सन*
- सुन्दर महिला रत्न है तो गुणी महिला खजाना। *—शेखसादी*
- नर और नारी कैंची के दो भागों के समान पारस्परिक जीवन को पूरा करते हैं। *—फ्रैंकलिन*
- अगर मैं स्त्री का जन्म पाऊँ तो पुरुष की इस झूठी धारणा के खिलाफ बगावत कर दूँ कि स्त्री उसका खिलौना बनने को पैदा हुई है। *—महात्मा गाँधी*
- मानव जाति के दुधमुँहे बच्चों को पाल-पोसकर बड़ा करना स्त्री का विशेष और एकमात्र अधिकार है, वह साज-सँभाल न करे तो बच्चे अच्छे नागरिक नहीं बन सकते। *—महात्मा गाँधी*
- नारी केवल मांसपिण्ड की संज्ञा नहीं है। आदिमकाल से आज तक विकास-पथ पर पुरुष का साथ देकर, उसकी यात्रा को सरल बनाकर उसके अभिशापों को स्वयं झेलकर और अपने वरदानों से जीवन में अक्षय शक्ति भरकर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मानवी ने जिस व्यक्तित्व चेतना और हृदय का विकास किया है। उसी का पर्याय नारी है।

—महादेवी वर्मा

❑ नारी के अस्तित्व में हर उम्र में मातृत्व का अंश रहता है और वही अंश उनमें सहिष्णुता, क्षमा और स्नेह को प्रेरित करता है, दुःख को कम करने की शक्ति लाता है और इसी से उनकी दिग्विजय इतनी सरल हो जाती है।

❑ माँ मेरे लिए हाड़-माँस की पुतली नहीं, मानवीय संवेदना का पुंज है। उसे मैंने सम्पूर्ण सृष्टि में अमृतोपम मधुरता के रूप में विद्यमान पाया है, उस स्वरूप को निहारते ही रोंम-रोम पुलकित हो उठता है, आँखों में ऐसी दिव्यचेतना फूटती है, जिसकी बारम्बार अनुभूति के लिए जीवन का सर्वस्व त्यागा जा सकता है और कदाचित मनुष्य समाज उस दिव्यचेतना का अवगाहन कर पाता ?

मेरे शरीर का रोम-रोम माँ के त्याग की स्नेह की गाथा है। अपने लिए रूखा-सूखा, बचा-बचाया आहार लेकर अपनी सन्तान की सर्वतोन्मुखी प्रगति की कल्पना करने वाली माँ का सर्वव्यापी स्वरूप। स्वयं मात्र खाद-पानी से सन्तुष्ट होकर, कोलाहल और मनुष्यजन्य विष पीकर भी प्राणियों को निरन्तर पोषण प्रदान करने वाली चेतना को माँ के अतिरिक्त क्या तो कहा जाए ? और क्या माना जाए ?

जगत के कण-कण में विद्यमान माँ के दर्शन कर मेरा रोम-रोम पुलकित हो गया है। मैं चाहता हूँ, उस दर्शन से कोई भी वंचित न रहे।

—रामकृष्ण परमहंस

❑ चारों आश्रम एक-दूसरे के साथ इस प्रकार मिले हुए हैं कि एक के बिना दूसरे का पालन नहीं हो सकता। ब्रह्मचर्याश्रम में तो मनुष्य का जन्म ही होता है, इसलिए इस आश्रम को बिल्कुल अनिवार्य समझना चाहिए। इस दिव्य आश्रम को जीवन-पर्यन्त या दीर्घकाल तक पालन करने का मनुष्य को अधिकार है। फिर भी कम से कम लड़कियों को १८ वर्ष तक और लड़कों को २५ वर्ष तक पवित्रतापूर्वक ब्रह्मचर्य आश्रम का पालन करना ही चाहिए।

यह विचार बिल्कुल भ्रमपूर्ण है कि गृहस्थाश्रम भोग-विलास के लिए है। हिन्दू धर्म की सारी व्यवस्थाएँ संयम की ही परिपुष्टि के लिए हैं। इस धर्म में भोग-विलास कभी अनिवार्य नहीं हो सकता। सादगी और संयम तो गृहस्थाश्रम का आभूषण है, परन्तु कितने ही मनुष्य भोगों के आकर्षण से बच नहीं पाते, इसलिए गृहस्थाश्रम में भोगों की मर्यादा बाँध दी गई है। आज तो सभी मनुष्य गृहस्थ वृत्ति में, प्रजा वृद्धि में प्रवृत्त हैं। इससे अधिकतर व्यभिचार और स्वेच्छाचार की ही वृद्धि होती है।

इस प्रकार के व्यभिचारी और स्वेच्छाचारी का जीवन बिताते हुए अन्त में वानप्रस्थ या संन्यास का पालन असम्भव हो जाता है। गृहस्थ को चाहिए कि वह क्रमशः इन भागों को कम करता हुआ ब्रह्मचर्य को पुनः सतेज बनाये और वानप्रस्थ को अपनावे। भोगेच्छाओं पर विजय प्राप्त करने के लिए इन्द्रियों का संयम करना ही वानप्रस्थ है।

❑ जिसने राग, द्वेष को पूरी तरह से जीत लिया है और जो तन, मन तथा वचन से सत्य, अहिंसा आदि नियमों का पालन करता है, उसे संन्यासी कहा जा सकता है। ऐसा संन्यासी निष्काम भाव से सेवा करने में अपने जीवन को लगाता है और निर्वाह का आधार भिक्षा समझता है।

आश्रमों का बाहरी वेशभूषा से कोई सम्बन्ध नहीं है।

—महात्मा गाँधी

❑ समाज की अदम्य शक्ति के विवरण साहित्य एवं इतिहास में जगह-जगह प्रचुर मात्रा में मिलते हैं, किन्तु कैसी विडम्बना है कि आज वही समाज अपना सन्तुलन बनाये रखने में, आत्म-कल्याण में स्वयं असमर्थ अनुभव कर रहा है।

ऐसा क्यों ? सिद्धान्त है कि समाज की शक्ति संगठन में है तथा अशक्ति का कारण बिखराव है। यों तो समाज के संगठित स्तर पर अनेक प्रयास चल रहे हैं, किन्तु उसके दो मूल घटक, नर और नारी सही अर्थों में एक संयुक्त इकाई के रूप में मिलकर खड़े नहीं हो पा रहे हैं। इसी कारण परिणाम समाज की विशृंखलता तथा अशक्ति के रूप में सामने है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्राचीन परम्परा तथा वर्तमान प्रगतिशीलता, दोनों की ही विकृतियाँ नारी को पुरुष से भिन्न रखे हैं। कारण कुछ भी हों—रूढ़िवादिताजनित प्रतिबन्ध एवं आत्महीनता अथवा प्रगतिशीलता के नाम पर स्वच्छन्दता एवं अहंकार दोनों नर-नारी को संयुक्त इकाई के रूप में परिवर्तित होने में बाधक हैं। इन बाधाओं को दूर करना तथा शिव एवं शक्ति-पुरुष प्रकृति की तरह नर-नारी को संयुक्त, सशक्त इकाई के रूप में खड़ा करना ही नारी-जागरण एवं समाज-निर्माण का मुख्य आधार बन सकता है।

—सन्त वास्वानी

❑ हिन्दुस्तान में स्त्रियों ने धर्म की रक्षा अधिक की है। पुरुषों में जितने व्यक्ति व्यसनी मिलते हैं, उससे बहुत कम स्त्रियाँ व्यसनी मिलेंगी। स्त्रियों ने दुनिया में सदाचार जिन्दा रखा है, इसलिए उन पर समाज की जिम्मेदारी होती है। बच्चों में अच्छी बात, अच्छी आदतें डालने और उनको सामाजिक जीवन में साफ-सुथरा रखना स्त्रियों के हाथ में है। स्त्रियाँ यह विचार करेंगी कि समाज को अच्छा बनाने की जिम्मेदारी उनकी है और उसके लिए उन्हें कुछ त्याग और सेवा व्रत लेना है तो परिष्कृत समाज की आधी आवश्यकता तत्काल दूर हो सकती है। कैथोलिक लोगों में ब्रह्मचारिणी बहिनें हुईं। जगह-जगह अस्पतालों में केरल की रोमन कैथोलिक स्त्रियाँ सेवा करने को तैयार दिख पड़ेंगी, ब्रह्मचर्य का व्रत लिया हुआ है, जगह-जगह जाकर वे जीसस का सन्देश सुनाती हैं और अस्पतालों में जाकर काम करती हैं। निरन्तर सेवा करना उनका काम है। कहा जाता है कि १०० क्रिश्चिनों में—रोमन कैथोलिकों में ५५ स्त्रियाँ 'नन्स' यानी संन्यासिनी होती हैं। हमें जीसस क्राइस्ट के मुताबिक स्त्रियों को स्वतन्त्र और शक्तिशाली बनाना होगा।

—विनोबा

❑ नर और नारी का पारस्परिक सम्बन्ध वैसा ही है जैसा कि पृथ्वी के उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों का। ध्रुवों में अपनी-अपनी विशेषताएँ भी हैं और अपूर्णताएँ भी। दोनों की शक्तियाँ एक-दूसरे की ओर दौड़ती हैं, अपूर्णता को इस समन्वय से पूर्ण करती हैं। ध्रुवों का एक दूसरा कार्य भी है। इन प्रचण्ड शक्ति केन्द्रों से जो अवांछनीय धाराएँ उत्पन्न होती हैं, उनका निराकरण करके विश्व का सन्तुलन बनाये रखने का भी कार्य करती हैं। यदि एक ही धुरी होती तो यह पृथ्वी लड़खड़ा पड़ती और अपनी वर्तमान शोभा-सुषमा से सर्वथा वंचित हो जाती।

ध्रुवों में असन्तुलन उत्पन्न होते ही सारा वातावरण विक्षुब्ध हो जाता और प्रलय या खण्डप्रलय की स्थिति बन जाती है। नर और नारी को समान रूप से सुविकसित और पूरक होना चाहिए। असन्तुलन से समूचे समाज में विसंगतियाँ उत्पन्न होती हैं और सर्वनाशी दुष्परिणाम उत्पन्न करती हैं। 'वेलेन्स' बिगड़ते ही साइकिल सवार ओंधे मुँह गिरता है। नर और नारी की समानान्तर स्थिति सन्तुलित न रहेगी तो कभी न सुलझ सकने वाली समस्याएँ और कभी न टलने वाली विपत्तियाँ सामने आ खड़ी होंगी। यहाँ इतना और ध्यान रखा जाना चाहिए कि नर और नारी का तात्पर्य पति-पत्नी से नहीं मानव जाति के उन दो अविच्छिन्न अंगों से है, जो लिंगभेद के कारण गिने तो जा सकते हैं, पर अनेक सम्बन्ध-सूत्रों में बँधे होने के कारण एक-दूसरे से पृथक नहीं किये जा सकते।

—रोम्याँ रोलाँ

❑ माँ बच्चे को दूध ही नहीं पिलाती, पहले वह उसका रस, रक्त और हाड़-मांस से निर्माण भी करती है, पीछे उसके विकास, उसकी सुख-समृद्धि और समुन्नति के लिए अपना सब कुछ न्योछावर कर देती है। उसकी एक ही कामना रहती है, मेरे सब बच्चे परस्पर प्रेमपूर्वक रहें, मित्रता का आचरण करें, न्यायपूर्वक सम्पत्तियों का उपभोग करें, परस्पर ईर्ष्या-द्वेष का कारण न बनें। चिर-शान्ति, विश्व-मैत्री और **"सर्वे भवन्तु सुखिनः"** वह आदर्श है, जिनके कारण माँ सब देवताओं से बड़ी है। हमारी धरती ही हमारी माता है, यह समझकर उसकी उपासना करें। संसार भर के प्राणी उसकी सन्तान—हमारे भाई हैं। यदि हमने माँ की उपासना न की होती तो छल-कपट, ईर्ष्या-द्वेष, दम्भ, हिंसा, पाशविकता, युद्ध को प्रश्रय न देते। स्वर्ग और है भी क्या, जहाँ यह बुराइयाँ न हों वहीं तो स्वर्ग है। माँ की उपासना से स्वर्गीय आनन्द की अनुभूति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इसीलिए यहीं प्रत्यक्ष रूप से अभी मिलती है। इसलिए मैं कहता हूँ कि कुछ दिन और सब उपासना पद्धति बन्द कर केवल 'माँ' की 'मातृ-भावना' की उपासना करनी चाहिए।

—स्वामी विवेकानन्द

❑ कोई भी पक्षी एक पंख से नहीं उड़ सकता, उसी प्रकार कोई भी राष्ट्र स्त्री और पुरुष में से किसी एक वर्ग द्वारा समुन्नत नहीं हो सकता। राष्ट्र की स्त्रियाँ पत्नी रूप में पुरुष को साहस प्रदान करती हैं, माता के रूप में भावी संततियों को इस प्रकार शिक्षित करती हैं, जिससे कि वे आत्म-सम्मान, स्वतन्त्रता और श्रेष्ठ आचरण का अनुगमन कर सकें।

❑ ईश्वर की कर्त्तव्य शक्ति स्त्री स्वरूपा है। जब कभी विपत्ति आती है असत से रक्षा के लिए शक्ति को पुकारते हैं। ईश्वर की दिव्य शक्ति का प्रतिनिधित्व नारी करती है। 'माँ' उसका मधुरतम नाम है।

—ऐनीबेसेण्ट

❑ मनुष्य प्राणी के दो लिंगपरक पक्षों में एक नारी को गिना गया है, यह उसकी मोटी परिभाषा हुई। वस्तुतः नारी इस सृष्टि का एक सूक्ष्म तत्त्व है, जिसे आत्मा की भावभरी कोमलता और सौन्दर्य भरी कलाकारिता कह सकते हैं। खेत की रक्षा के लिए कँटीली बाड़ लगायी जाती है और शरीर की सुरक्षा के लिए वस्त्र धारण करते हैं। नर को प्रहरी और नारी को रत्न-राशि कह सकते हैं। इस संसार में भावनात्मक दिव्यसंवेदनाओं का जितना कुछ वैभव विद्यमान है, उसका प्रतीक-प्रतिनिधि नारी शरीर में आवेष्ठित आत्माएँ करती हैं।

❑ भौतिक उत्पादन और साधन-अभिवर्द्धन में नर की अपनी भूमिका है। यों वह भावना क्षेत्र में भी कुछ न कुछ करता है, पर उसकी प्रधानता कठोर पुरुषार्थ में है। नारी की विशेषता उन भाव-संवेदनाओं में है, जिनके बिना मानवीय आत्मा को जीवन्त बनाये रह सकना असम्भव है। ममता और करुणा उसके दो ऐसे अनुदान हैं, जिसे पाकर मानवता जीवित रही, विकसित हुई और गौरवान्वित बनी है। *—सन्त वास्वानी*

❑ इस सृष्टि के कर्त्ता की सर्वोत्तम कलाकृति नारी है। उसे अन्य जीवधारियों की तरह जीवित रह सकने योग्य सामग्री से ही नहीं वरन् विशिष्ट भाव संवेदनाओं के साथ गढ़ा गया है। उसकी इसी विशेषता ने इस सृष्टि की भौतिक शोभा में दिव्य सौन्दर्य एवं असीम उल्लास भर दिया है।

धरित्री जीवनयापन के लिए आवश्यक साधन प्रदान करती है, इसलिए वह वन्दनीय है। प्रत्येक जीवधारी उसका कृतज्ञ है, किन्तु नारी तो समूचे जीवन का ही सृजन करती है। हम सब जो कुछ भी हैं, जननी जीवन को जन्म देती है। उसकी अमूर्त स्थिति को मूर्तिमान बनाने में उसकी समूची सत्ता अपने आप को विखण्डित करके हँसने, बोलने एवं सोचने-करने में समर्थ प्राणी की दृश्य सत्ता का सृजन करती है। जनन के सहयोग के बिना मनुष्य का अस्तित्त्व ही इस जगत में सम्भव न होता। जगती से भी जननी बड़ी है।

❑ पत्नी के रूप में वह पति की अपूर्णता दूर करती है। भगिनी के रूप में शालीनता और मर्यादा के प्रतिबन्ध लगाती है तथा पुत्री बनकर भाव भरी कोमलता से सम्पन्न शैशव की अनुभूतियाँ सजीव बनाये रहती है। नर का नर के लिए भी सद्भाव-सहयोग हो सकता है, पर नारी तो न केवल जीवन, वरन् जीवन को समृद्ध, सरस और सफल बनाने वाले सारे आधार ही उँड़ेल देती है। *—सन्त वास्वानी*

❑ एक लड़की ने मुझसे कहा—"भगवद् गीता में तो स्त्रियों के लिए कोई शिक्षा ही नहीं दिखती। वहाँ स्थितप्रज्ञ है, गुणातीत है, योगी है, लेकिन स्थितप्रज्ञा, गुणातीता, योगिनी के लक्षण बताये ही नहीं हैं।"

यह शायद 'ही' ओर 'शी' वाले अँग्रेजी कानून की भाषा चाहती थी। अतः मैंने उससे कहा—"उसकी फिक्र मत कर। गीता खुद तो स्त्री है और उसके उदर में ये स्थितप्रज्ञ आदि पड़े हैं। हमें तो गुरुमन्त्र मिला है, तत्त्वमसि।

. . . . . ये तो हुई 'शी' और 'ही' की भाषा। वस्तुतः तो स्त्री पुरुष में एक ही तत्त्व जो चेतन है, समान रूप से मौजूद है और दोनों शरीर उसी प्रकृति तत्त्व के बने हैं। संसार शक्ति और संसार बन्धन दोनों में समान है और मोक्ष के अधिकारी भी दोनों ही समान हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अतः दोनों के विकास का अधिकार भी एक समान है।

—विनोबा

❑ **प्रजनार्थं महाभागाः पूजार्हा गृहदीप्तयः।**
स्त्रियः श्रियश्च गेहेषु न विशेषोऽस्ति कश्चन।।

—मनुस्मृति ९/२६

स्त्रियाँ पूजा के योग्य हैं, महाभाग हैं, घर की दीप्ति हैं। कल्याणकारिणी हैं।

❑ **अपत्यं धर्मकार्याणि शुश्रूषा रतिरुत्तमा।**
दाराधीनस्तथा स्वर्गः पितृणामात्मनश्च ह।।

—मनुस्मृति ९/२८

स्त्रियाँ धर्मकार्यों की सहायिका हैं। स्त्रियों के अधीन ही स्वर्ग है।

❑ **अबलाएँ हैं शक्ति रूपिणी आत्मिक बल में।**
इसे सिद्ध कर दिया उन्होंने समरस्थल में।।
आधे का अधिकार उचित ही उन्हें मिला है।
मानव का पशु-भाव उन्हीं के हाथ हिला है।।
छोटों की माँ और बड़ों की वे बेटी हैं।
समवयस्कों की बहिन, कहाँ किसकी चेरी हैं।।

—मैथिलीशरण गुप्त (राजा-प्रजा)

❑ **सानन्दं सदनं सुताश्च सुधियः कान्ता मनोहारिणी,**
सन्मित्रं सुधनं स्वयोषितरतिः सेवारता सेवकाः।
आतिथ्यं सुर पूजनं प्रतिदिनं मिष्टान्नपानं गृहे,
साधोः संग उपासना च सततं धन्यो गृहस्थाश्रमः।।

सचमुच वह गृहस्थाश्रम धन्य है, जिसमें आनन्दमय घर, विद्वान पुत्र, मनोनुकूल स्त्री, सच्चा मित्र, सात्विक धन, अपनी पत्नी से प्रीति, सेवापरायण सेवक, अतिथि-सत्कार, नित्य-प्रति देव पूजा, सन्तोषप्रद भोजन, सज्जनों की संगति और उपासना-साधना ये सभी विशेषताएँ उपलब्ध रहती हैं। तात्पर्य यह कि अपनी घर-गृहस्थी को उत्कृष्ट बनाने की चाह हो तो इन विशिष्टताओं का उसमें समावेश अवश्य करना चाहिए।

❑ देश और भविष्य की सम्भावना देखनी है तो आज के बच्चों का स्तर देखो।

❑ जिस घर में अन्न इकट्ठा रहता है। मूर्खों का निरादर होता है। पति-पत्नी में प्रेम होता है, उस मकान में निश्चय ही लक्ष्मी वास करती है।

❑ अहिंसा के पथ पर नई खोज करने तथा साहसपूर्ण कदम उठाने के लिए पुरुष की अपेक्षा स्त्री अधिक सुयोग्य है।

❑ राष्ट्र का उदय नारी जाति के उदय से होता है।

❑ स्त्री अहिंसा की मूर्ति है।

❑ बच्चे का भावी भाग्य बनाना सदा माता का कार्य होता है।

❑ परिवार के प्रेम के कारण ही बड़े-बड़े कामों में हाथ डाला जाता है। यदि स्त्री और मित्र का सुख न हो तो बहुत अधिक प्रतिष्ठा पाने पर भी मनुष्य वास्तव में सुखी नहीं हो सकता है।

—गिजो

❑ अहिंसा की नींव पर रचे गये जीवन की योजना में जितना और जैसा अधिकार पुरुष को अपने भविष्य की रचना का है, उतना और वैसा ही अधिकार स्त्री को भी अपना भविष्य तय करने के बारे में है, लेकिन अहिंसक समाज की व्यवस्था में जो अधिकार या हक मिलते हैं, वे किसी न किसी कर्त्तव्य या धर्म-पालन से प्राप्त होते हैं, इसलिए यह भी मानना चाहिए कि सामाजिक आचार-व्यवहार के नियम स्त्री और पुरुष आपस में मिलकर और राजी-खुशी से तय करें।

—महात्मा गाँधी

❑ मंदबुद्धि कवियों ने स्त्री को बदनाम करने के लिए उन्हें महँगी विपदा, खरीदा हुआ विष और दुःख की काली रात कहा है, परन्तु यह कटाक्ष सरासर झूठ है। इस संसार में और चीजें तो परिश्रम से प्राप्त होती हैं, परन्तु पवित्र स्त्री तो ईश्वर की असीम कृपा से प्राप्त होती है।

❑ संसार में और कोई वस्तु नहीं जितनी सुशील पुण्यात्मा और सुन्दर स्त्री।

❑ तारे आकाश की कविता हैं, तो स्त्रियाँ पृथ्वी की। दुनिया के भाग्य का विस्तार इन्हीं के हाथ में है।

❑ **उपाध्यायान्दशाचार्य आचार्याणां शतं पिता।**
सहस्रं तु पितॄन्माता गौरवेणातिरिच्यते।।

दस उपाध्यायों की अपेक्षा आचार्य का, सौ आचार्यों की अपेक्षा पिता का और सहस्र

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पिताओं की अपेक्षा माता का गौरव अधिक होता है।

- **स्त्रियः पवित्रमतुलं नैता दुष्यन्ति कर्हिचित्।**
  मासि मासि रजो यासां दुष्कृतान्यपकर्षति।।
  स्त्री जाति मूलतः पवित्र है। इनमें दोष कभी आ नहीं सकता, क्योंकि प्रतिमास रज के द्वारा इनके दोष दूर होते रहते हैं।

- **भर्तृभ्रातृपितृज्ञातिश्वश्रू श्वशुरदेवरैः।**
  बन्धुभिश्च स्त्रियः पूज्याः।।
  पति, भ्राता, पिता, कुटुम्बी, सास, ससुर, देवर, बन्धु-बान्धव इस प्रकार स्त्री के सभी सम्बन्धियों का कर्त्तव्य है कि वे उसका सभी प्रकार सम्मान करें।

- गणेश एवं कार्तिकेय जैसे अजेय देव पुरुषों, अवतार शक्तियों को जन्म देने वाली माँ पार्वती अपनी निष्ठा के बल पर, संकल्पशक्ति के कारण ही शिव का साथ पा सकीं। भगवत सत्ता के सम्पर्क-सान्निध्य से जो संस्कार वे इन अवतार-सत्ताओं को दे पाईं, उसमें उनका पुरुषार्थ कम नहीं, अधिक ही था। यह नारी का ही धैर्य एवं तप सहने की शक्ति है, जो असम्भव को भी सम्भव कर सकती है।

- किसी व्यक्ति के जीवन पर उसकी माँ के लालन-पालन, शिक्षा-दीक्षा की छाप स्थायी रूप से अवश्य पड़ती है।

- जिस घर में स्त्रियाँ सुसंस्कारी, मृदुभाषी एवं परिश्रमी होती हैं, उस घर में न दरिद्र प्रवेश करता है, न विग्रह।

- गृहस्थ जीवन एक तपोभूमि है। सहनशीलता और संयम खोकर कोई इसमें सुखी नहीं रह सकता।

- नारियाँ वेदमन्त्रों की द्रष्टा हो सकती हैं, तो फिर उन्हें गायत्री मन्त्र के लिए अनधिकारिणी घोषित करने का क्या औचित्य हो सकता है ? गायत्री मन्त्र नर व नारी सबके लिए है। सब उसे जप सकते हैं।

- जो साध्वी निर्धन, रोगी, दुःखी, राह चलकर थके हुए भी पति की पुत्र की भाँति वत्सलता से (कामभावना में नहीं) सेवा करती है, वह अपने धर्म का पालन करती है।

- जो स्त्री अपने पति की जितनी चाह रखती है, उतनी काम, भोग, ऐश्वर्य और सुख की भी नहीं करती, उसे धर्म प्राप्त होता है।

- स्वर्ग का राज्य किसके लिए है ? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए ईसा ने एक छोटा बालक गोदी में उठाया और सबको दिखाते हुए कहा—"जिसका मन इस बालक की तरह निर्मल है, स्वर्ग का राज्य उन्हीं के लिए है।"

- योगी दो प्रकार के होते हैं—व्यक्त और गुप्त। गुप्त योगी गृहस्थी में रहता है, पर कोई उसे पहचान नहीं पाता। गृहस्थ मन से त्याग करता है। ऊपरी त्याग से उसका कोई सम्बन्ध नहीं। जिस प्रकार एक मूर्ख माली पौधों को बार-बार काटकर उसे बढ़ने नहीं देता है, उसी तरह मूर्ख मनुष्यों द्वारा बच्चों का हर समय विरोध हो और उन्हें अपनी आन्तरिक न्याय बुद्धि को व्यवहार में लाने का अवसर न दिया जाए तो उनके लिए दुर्बल तथा परावलम्बी के सिवाय और कुछ बनना असम्भव है।

- तत्त्व के विकास के लिए माता-पिता, स्त्री, पुत्र, भाई-बन्धु सभी उपलब्ध होते हैं। उनका प्यार मिलता है, अपना भी देना होता है। कभी कटुता का अवसर मिलता है, कभी सरसता का। कटुअनुभवों से अपने साहस, धैर्य, परमशीलता, तत्परता और आत्म-विश्वास का विकास करने का अवसर प्राप्त होता है और सरसता तथा मधुर मिलन में प्रेम, दया, वात्सल्य, उदारता, करुणा, स्नेह, सौहार्द्र, निष्ठा, श्रद्धा और आत्म-विश्वास के विकास की सचमुच भगवान की परिवार-व्यवस्था आत्म-विकास की एक सुरम्य वाटिका है।

- जिस समय समाज के सदाचारी व्यक्तियों ने मोक्ष का ध्येय स्वीकार किया, उस समय व्यक्ति और समाज का उससे कुछ न कुछ कल्याण हुआ होगा, पर जब आगे चलकर इस कल्याण के कारण गृहस्थाश्रम और उसके कर्त्तव्यों के प्रति अनादर पैदा होने लगा और कर्म-मार्ग के विषय में शिथिलता आयी, तब से हमारी अवनति शुरू हुई। मोक्ष की कल्पना बहुजन-समाज पर उसके अनिष्ट परिणाम को देखकर भी विचारशील व्यक्तियों ने इस तरह अधिक ध्यान नहीं दिया। इसलिए गृहस्थाश्रम

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के बारे में उत्पन्न अनादर जैसे का तैसा कायम है। आज हमारा रहन-सहन और बर्ताव संन्यासपरायण न रहने पर गृहस्थाश्रम के बारे में हमारे मन में सच्चा आदर और सद्भाव नहीं है। गृहस्थाश्रम में रहते हुए भी हम सबका यही ख्याल रहता है कि वह दोषमय और पापमय है। यह परिस्थिति हानिकारक है और बदली जानी चाहिए।

- विवाह सामाजिक संस्था है। उससे परिवार बनता है, जो समाज की इकाई है। उसे केवल दो का निजी सम्बन्ध समझना और उस आधार पर विवाह को स्थापित करना गलत होगा, क्योंकि तब उसकी भूमिका सामाजिक न होकर वैयक्तिक होगी।

- परिवार बहुमुखी प्रेम का अभ्यास-गुरुकुल है। उसे तपोवन बनाकर स्वर्ग जैसा बनाया जा सकता है।

- पिता वह नहीं, जिसने तुम्हें केवल पैदा कर दिया, बल्कि वास्तविक पिता वह है, जिसने तुम्हें सचमुच मनुष्य बनाने का तन-मन-धन से प्रयत्न किया।

- बालक का भविष्य में भला-बुरा होना उसकी माता पर अवलम्बित है। *—नेपोलियन*

- वृद्ध मरता है तो अतीत मरता है। शिशु मरता है तो भविष्य मरता है।

- "बालक प्रकृति की अमूल्य देन है, सुन्दरतम कृति है, सबसे निर्दोष वस्तु है। बालक मनो-विज्ञान का मूल है, शिक्षक की प्रयोगशाला है। बालक मानव जगत का निर्माता है। बालक के विकास पर दुनिया का विकास निर्भर है। बालक की सेवा ही विश्व की सेवा है।"

- यदि दुनिया की भूलें और उसके दोषों को दूर करना चाहते हो तो इस कार्य में माताओं को प्रवृत्त करो।

- **या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता।**
  नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।
  संसार के सर्वभूतों का धारण-पोषण करने वाली देवीशक्ति मातृ-रूप में ही स्थित होकर अपना कार्य कर रही है। इसलिए इस मातृ-रूपा नारी को हम बारम्बार नमन करते हैं।

- नारी सनातन शक्ति है। वह आदिकाल से उन सामाजिक दायित्वों को अपने कन्धों पर उठाये आ रही, जिन्हें केवल पुरुष के कन्धों पर डाल दिया जाता तो वह न जाने कब लड़खड़ा गया होता, किन्तु विशाल भवनों का असह्य भार वहन करने वाली नींव के समान वह उतनी ही कर्त्तव्यनिष्ठ, उतनी ही मनोयोग, सन्तोष और उतनी ही प्रसन्नता के साथ उसे आज भी ढोये चल रही है। वह मानवी तपस्या की साक्षात प्रतिमा है।

- लोपामुद्रा, घोषा, वैश्ववारा, गार्गी और मैत्रेयी के रूप में उन्होंने धर्म और तत्त्वज्ञान को जीवन-दान दिया तो मल्लिनाथ और संघमित्रा के रूप में उन्होंने संस्कृति के सन्देश विश्व के एक कोने से दूसरे कोने तक पहुँचाए। परिवार के पालन में तो वह परम वैष्णवी शक्ति है त्याग, तप, सहनशक्ति, सक्रियता और तेजस्विता में उसकी तरह की और कोई रचना सृष्टि में दिखाई नहीं देती। अव्यवस्थित संसार को व्यवस्था, अनुशासन और मर्यादा का पाठ उसी ने पढ़ाया है। अपने प्रत्येक रूप में वह देवत्व की प्रतिष्ठा और संवेदना की प्रतिमूर्ति है। ऋषियों ने उसकी महत्ता को धरती की कामधेनु के रूप में एक स्वर से स्वीकारा और उसका अभिवन्दन किया।

  भौतिक जीवन की लालसाओं को उसी ने रोका और सीमाबद्ध कर उन्हें प्यार की दिशा दी। प्रेम नारी का जीवन है, अपनी इस निधि को वह अतीतकाल से मानव पर न्योछावर करती आई है। कभी न रुकने वाले इस अमृत निर्झर ने संसार को शान्ति और शीतलता दी है। इस कल्पवृक्ष की छाया में बैठकर ही मनुष्य को आत्म-तृप्ति मिलती है। उसे काटने की नहीं जीवन देने की बात सोची जाए अन्यथा मानवता अपने पथ से भटककर न उबरने वाले गर्त में गिर सकती है।

- मनुष्यकृत संस्थाओं के अनेक नाम, रूप और क्रिया-कलाप सर्वत्र दिख पड़ते हैं। ईश्वरकृत संस्था एक ही है—परिवार। यह एक ऐसा नैसर्गिक संगठन है, जिसके अन्तर्गत छोटे और बड़े सभी को एक-दूसरे से अपनी-अपनी आवश्यकता के अनुरूप अनुदान मिलते हैं। सभी एक-दूसरे को बहुत कुछ देते हैं और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बदले में उतना पाते हैं, जो देने की तुलना में कम नहीं अधिक ही होता है। इस संगठन की रज्जु शृंखला में बँधा हुआ परिवार का हर सदस्य मर्यादाओं को समझने और अनुशासन अपनाने का अभ्यास करता है। फलतः वह क्रमिक गति से अधिक सभ्य और सुसंस्कृत बनता जाता है। साथ ही समुन्नत और सुसम्पन्न भी।

❑ परिवार संस्था की सूत्र-संचालिका परमेश्वर ने नारी को बनाया है। वही पत्नी के रूप में एक नये परिवार का श्रीगणेश करती है। जननी के रूप में उसका विकास-विस्तार करती है। गृहिणी के रूप में सुव्यवस्था के सूत्रों को सँभालती है। अन्ततः वही है जो गृहलक्ष्मी के रूप में उस संस्था को नर-रत्नों की खदान बना देती है। देवमानवों का निवास स्वर्ग कहा जाता है। ऐसे स्वर्ग की संरचना एक छोटे-से घर-घरौंदे में कर सकना नारी का ही चमत्कार है। विधाता ने सृष्टि बनाई या नहीं यह संदिग्ध है, पर नारी द्वारा किसी भी घरौंदे को स्वर्ग बना सकने की सम्भावना सुनिश्चित है। भगिनी और पत्नी के रूप में उसे सृष्टि की पवित्रतम कला और पारिजात जैसी सुषमा को देखकर किसकी अन्तरात्मा पुलकित नहीं हो उठती।

❑ नारी स्रष्टा की उत्कृष्टतम कृति है। उसमें सज्जनता और सहृदयता के वे तत्त्व भरे पड़े हैं, जिन्हें पाकर प्राणी की अन्तरात्मा कृत-कृत्य हो उठती है। आवश्यकता इस बात की है कि अमृतबल्लरी को विकसित होने और अपना दौशल दिखाने का अवसर दिया जाए। उसे मोड़ा और मरोड़ा न जाए। दबाने और जलाने से तो नारी ही नहीं मरेगी, वरन् वह सब भी मरेगा जो इस सृष्टि में सुन्दर-सुख है—श्रेष्ठ कहा, समझा जाता है।

❑ नर में संघर्ष की बलिष्ठ क्षमता का बाहुल्य भले ही हो, उसमें सृजन की सर्वतोमुखी प्रतिभा, क्षमता और प्रकृतिप्रदत्त विशिष्टता वैसी नहीं जैसी नारी को उपलब्ध है। नारी-सृजन की मूर्तिमान अधिष्ठात्री है। उसे धरित्री की उपमा दी जा सकती है। अपनी काया का स्वत्व निचोड़कर वह अभिनव मनुष्य प्राणियों को उत्पन्न करती है। धरती से वनस्पति और खनिज पैदा होते हैं, पर वह भी प्राणियों के उत्पादन में समर्थ नहीं। सृष्टि का मुकुटमणि समझा जाने वाला मनुष्य प्राणी जिस जननी की कोख से उत्पन्न होता है, उसे पृथ्वी से भी महान् माना जाएगा।

❑ प्रजनन ही नहीं पोषण भी। पोषण ही नहीं भरण भी। शिशु के उपयुक्त अमृतोपम आहार माता के वक्षस्थल से ही मिलता है। आत्मरक्षा तक में असमर्थ मानवी शिशु की काया माता की परिचर्या अहर्निश प्राप्त करने के उपरान्त ही जीवन-धारण किए रहने योग्य बनती है। इन अनुदानों के बिना इस धरती पर मनुष्य का न जन्म हो सकता था, न जीवन-धारण। पुरुष इन दिव्य विशिष्टताओं की दृष्टि से सर्वथा असमर्थ ही कहा जाएगा।

❑ अधिकार, ग्रहण, उपभोग एवं दमन की शक्ति, वैभव और वर्चस्व का लाभ देती है। इस दृष्टि से नर को श्रेय मिल सकता है, किन्तु जिसमें आदि से अन्त तक करुणा, सहनशीलता, क्षमा, सेवा और समर्पण की विभूतियाँ कूट-कूटकर भरी हों, जो इन अनुदानों के कारण बालक से लेकर वृद्ध तक को कृत-कृत्य करती रहती हों, वह गरिमा स्रष्टा ने मात्र नारी को ही प्रदान की है। नारी जीवन्त सरसता है। छोटे, साथी, वृद्धा सभी उस कल्पवृक्ष की छाया से अपने-अपने स्तर के वरदान प्राप्त करते हैं। नारी सुषमा है, कला है, आशा है, जीवन है और वह सब कुछ है, उसे इस संसार की श्रेष्ठतम तत्त्व की संज्ञा दी जा सकती है।

❑ नारी इस सृष्टि का सौन्दर्य है। उसे जीवन्त कलाकृति के रूप में देखा जा सकता है। स्नेह उसकी प्रवृत्ति है और अनुदान उसका स्वभाव। उसमें जीवन-संचार के सभी तत्त्वों को स्रष्टा ने कूट-कूटकर भरा है और सृजन की अनगढ़ कुरूपता को सुगढ़ता के रूप में परिणत कर सकने की क्षमता से नारी को सँजोया है।

❑ मनुष्य के पास अपना कहलाने योग्य जो कुछ है, वह नारी का अनुदान है। जीवन उसी की उदर-दरी से उपजता है। हरीतिमा उपजाने वाली धरित्री की अपनी गरिमा है, पर मानुषी-सत्ता की सृजनकर्त्री तो जननी है। खनिजों और वनस्पतियों से मनुष्य श्रेष्ठ है,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इसलिए धरित्री से जन्मदात्री जननी की महिमा असंख्य गुनी मानी जाएगी। पृथ्वी पर हम निर्वाह करते, पर नारी तो समूची मानवी-सृष्टि का ही सृजन और परिपोषण करती है।

❑ मानवी-अण्ड, माता के गर्भ में पकता है। शिशु का आरम्भिक आहार ममतामयी माँ के वक्षस्थल से टपकता है। दुलार पीकर अन्तरात्मा हुलसती और विकसित होती है, उससे बढ़कर पोषण, अभिवर्द्धन एवं संरक्षण और कोई कर नहीं सकता। न केवल शरीर वरन् अन्तःकरण का अधिकतर निर्माण माता के अंचल की छाया में ही होता है। वयस्क पुरुष नारी का समर्पण भरा अनुराग पाकर अलौकिक आनन्द से भरता और तृप्ति अनुभव करता है। सृजन की देवी जिस घर में पहुँचती, निवास करती है, वहाँ गृहलक्ष्मी की भूमिका सम्पन्न करती है और मिट्टी के घरौंदे से स्वर्ग का अवतरण किस प्रकार सम्भव हो सकता है, उसे सिद्धान्त और व्यवहार में प्रत्यक्ष कर दिखाती है।

❑ मनुष्य वर्ग के दो अंग हैं—एक वह जो पीढ़ियों का सृजन करता है, वह जो उपार्जन से सृजन को समुन्नत बनाने वाले उपार्जन में लगा रहता है। यों व्यक्तित्व को विकसित करने वाली अनेक मानसिक एवं शारीरिक गतिविधियाँ अपनानी पड़ती हैं, पर प्रत्यक्ष और प्रमुख क्रिया-कलापों में नारी स्रजेता और नर उपार्जन कर्त्ता की भूमिका निभाता है।

❑ चेतनात्मक सृजन की गरिमा का मूल्यांकन नहीं हो सकता। मनुष्य अपने आप में अद्भुत है। उसे स्रष्टा की सर्वोपरि कलाकृति माना गया है। उस अमूर्त प्रयोजन को मूर्त रूप देने का श्रेय नारी को ही है। अवतारों से लेकर शिल्पियों तक संसार का प्रत्येक वर्ग नारी के उदर में उगता, रस पीकर पनपता, गोद में पलता और स्नेह-सहयोग पाकर बढ़ता है। इसलिए उसे दूसरा स्रष्टा कह सकते हैं। ब्रह्माजी ने कभी प्रजा का निर्माण करके प्रजापति का पद पाया होगा, पर अब तो उसकी प्रत्यक्ष भूमिका नारी को ही निभाते हुए देखा जाता है।

❑ वह अपने छोटे संसार की, परिवार की साम्राज्ञी है। राजा का स्तर और कौशल किसी देश को उठाने, गिराने का प्रमुख कारण होता है। नारी को भी यही करना होता है। वह अपने छोटे-से शासनक्षेत्र की व्यवस्था ही नहीं बनाती, उसमें इच्छानुसार स्वर्ग या नरक की स्थापना भी करती है। पति उसका स्नेह, सहयोग पाकर अपनी अपूर्णता को पूर्ण करता और कृत-कृत्य बनता है। भाई को यह परम पवित्रता का देवत्व प्रदान करती है। उसे पशुता से ऊँचा उठाकर मानवीय मर्यादाओं के बन्धन में राखी के धागों से बाँधती है। पिता के लिए वह वात्सल्ययुक्त कोमल संवेदनाओं की प्रतिमा बनकर सामने आती है और उसके मर्मस्थल की उस ममता को जगाती है, जिसे भक्ति-भावना के नाम से जाना जाता है।

❑ नारी शरीर में रहने वाली आत्मा को यदि श्रद्धा की दृष्टि से देखा जा सके तो वह मूर्तिमान सौन्दर्य है, माधुर्य करुणा है, तपस्या है, पवित्रता है जिसे उत्कृष्ट कहा जा सके।

❑ नारी को परिपोषण और संरक्षण का उत्तरदायित्व निभा सकने की क्षमता मिली है, किन्तु उत्पादन और अभिवर्द्धन की अभीष्ट समर्थता, नारी की विशिष्टता देखते हुए विधाता ने इसे ही सौंपी है। अपनी इस सृजन-क्षमता का सर्वविदित परिचय सन्तानोत्पादन के रूप में इस प्रकार देती है, जिसे चर्म-चक्षुओं से देखा और हाथों से उठाया जा सके। यह उसके सृजन-शिल्प की प्रत्यक्ष देखी-समझी जाने वाली अनुकृति है। उसका वास्तविक सृजन तो वह है, जो चेतना के विश्वव्यापी महा-समुद्र में सर्वत्र बहते और लहराते हुए प्रज्ञावानों द्वारा अनुभव किया जा सकता है।

❑ चेतना जगत् में संव्याप्त उत्कृष्टता की यदि दृश्यमान प्रतिमा ढूँढ़नी हो तो उसे स्रष्टा की सर्वोपरि कलाकृति नारी के रूप में देखा जा सकता है, उसकी समूची सत्ता में वे तत्त्व समाये हुए हैं, जिनका नीतिशास्त्री उत्कृष्टता और दर्शनशास्त्री दिव्यता के नाम से भावभरा निरूपण करते-करते थकते नहीं हैं। नारी का काय-कलेवर सुन्दरता से, सरसता से, चिन्तन, सहयोग, श्रम और सृजन से, अन्तःकरण, करुणा, सेवा और समर्पण से निरन्तर अनुप्राणित देखा जा सकता है, अपने आप में वह पूर्ण है। अपनी इस पूर्णता से वह स्वजन-सम्बन्धियों की अभावग्रस्तता और आवश्यकता पूर्ण करती है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

- देवी का निवास उच्च लोकों में भी हो सकता है, पर उसका प्रत्यक्ष दर्शन करना हो तो नारी के कलेवर में विद्यमान उस दिव्य-चेतना की झाँकी की जा सकती है, जिसमें आदि से अन्त तक देवत्व की गरिमा भरी पड़ी है। नारी धरती की आत्मा है। मातृ-शक्ति में कला और क्षमता का कैसा अद्भुत समन्वय है, उसे देखकर स्रष्टा और उसकी इस अद्भुत सृष्टि के सामने सहज ही मस्तक झुक जाता है।

- देवप्रतिमा को चमड़े की आँखों से देखने पर वह पत्थर का टुकड़ा भर मालूम पड़ता है और उसे सिंहासन पर स्थापित करने वालों और पूजने वालों की बुद्धि पर हँसी आती है, किन्तु किसी तत्त्व-ज्ञानी को जब उसी प्रतिमा की आराधना से आत्म-शान्ति प्राप्त करते और सिद्धि-प्रतिफल प्राप्त करते प्रत्यक्ष देखा जाता है, तब प्रतीत होता है कि देव-प्रतिमा की दोनों स्थितियाँ सही हैं। चर्म-चक्षुओं से वह निश्चय ही पाषाण खण्ड मात्र है, पर जिस तत्त्वज्ञानी ने प्रतिमा के अन्तराल में मुसकराती दिव्य-सत्ता को देखा है और उसके सान्निध्य का चमत्कारी प्रतिफल पाया है, वह भी भ्रान्त नहीं है। उसने भी सत्य का साक्षात्कार ही किया है।

- नारी काया की दृष्टि से दुर्बल किन्तु मांसलता की दृष्टि से आकर्षक है। स्थूल बुद्धि इन दोनों का दोहन करने की बात सोचती है। इसके लिए वह भोग्य पदार्थों की श्रेणी में आती है, तदनुसार वैसा ही व्यवहार भी चलने लगा है।

- जिन्हें ज्योतिर्मय दिव्य दृष्टि मिली है, उनके लिए नारी के कलेवर में मूर्तिमान देवत्व झाँकता है, वह आद्यशक्ति की प्रतीक है। वह लक्ष्मी है, क्योंकि परिवार को अपने कर्तृत्व द्वारा सुसम्पन्नता से भरती है। वह सरस्वती है, क्योंकि वह अपनी स्नेहसिक्त सद्भावनाओं से अपने सम्पर्क क्षेत्र को वीणा की कलात्मक झंकार से गुञ्जित करती है। वह प्रत्यक्ष दुर्गा है, क्योंकि जब वह प्रकट होती है, तो कोई महिषासुर उसकी क्रोधाग्नि को सहन करने में समर्थ नहीं होता।

- नारी परब्रह्म की मूर्तिमान सृजन सत्ता है। वह सृजनात्मक समस्त सम्भावनाएँ अपने साथ लेकर जन्मती है। विभिन्न अनुदान देकर सम्बद्ध व्यक्तियों को, समस्त समाज को सर्वतोमुखी प्रगति की दिशा में अग्रसर करती है।

- कहते हैं कल्पवृक्ष पर धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के चार फल लगते हैं। नारी प्रत्यक्ष कल्पवृक्ष है। वह पिता का वात्सल्य उभारती है, भाई को पवित्रता प्रदान करती है, पति को अपूर्णता से छुड़ाकर पूर्ण बनाती है और सन्तान का तो वह प्राण ही है। एक नगण्य से जीवाणु को मनुष्य के दिव्य कलेवर में परिणत कर देना उसी की सृजन शक्ति का चमत्कार है। मनुष्य, जिसमें नर और नारी दोनों ही सम्मिलित हैं, जितनी कुछ उपलब्धियाँ प्राप्त करते हैं, उनकी आधी से अधिक सम्भावनाएँ बीज रूप में माता के अनुदान से प्राप्त होती हैं। गुण, कर्म, स्वभाव की विशेषताएँ ही भौतिक जीवन में स्वास्थ्य, विद्या, प्रतिभा, सम्पत्ति आदि के रूप में विकसित होती हैं। आन्तरिक दृष्टि, श्रद्धा, आकांक्षाएँ ही व्यक्ति को लघु से महान एवं नर से नारायण रूप में परिणत करती हैं। क्या बहिरंग और क्या अन्तरंग दोनों ही क्षेत्रों के उसके अजस्र अनुदान, समस्त मानव समाज पर अनवरत रूप से बरसते रहते हैं।

- नारी कामधेनु है। सत्य है, शिव है, सुन्दर है। उसके उभयपक्षीय अनुदान पाकर स्त्री और पुरुष रूप में हलचल करता यह समस्त विश्व कृत-कृत्य होता है। ब्रह्म की उस प्रत्यक्ष सशक्तता को, नारी को, मानवीय चेतना के श्रद्धासिक्त भावभरे अनन्त अभिनन्दन।

- बलिष्ठता की दृष्टि से पुरुष की काय-संरचना को बड़प्पन मिल सकता है, किन्तु जहाँ तक प्रकृतिगति आध्यात्मिकता का सम्बन्ध है, वहाँ नारी को ही वरिष्ठ और विशिष्ट माना जाएगा।

- नारी अन्तराल में विद्यमान करुणा उसे सेवा और सौजन्यता का परिचय देने के लिए प्रेरित करती है। जन्म से लेकर मरणपर्यन्त नारी जिस रीति-नीति को सहज-स्वाभाविक क्रम से अपनाती है, उसे उच्चस्तरीय परमार्थपरायणता की ही संज्ञा दी जा सकती है।

- परिवारों में उगने वाले कल्पवृक्ष की उपमा नारी को दी जाए तो इसमें तनिक भी अत्युक्ति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

न होगी। माता के काम में हाथ बँटाते हुए, भाई-बहिनों को खिलाते हुए, खेल और विनोद में सौजन्य का समावेश रखे हुए हर लड़की को देखा जा सकता है। किशारों में उद्दण्डता बढ़ती है और किशोरियों में संकोच भरी शालीनता। पति के लिए अर्द्धांगिनी की भूमिका वही निभाती है। उसकी अपूर्णताओं और अतृप्तियों को पूर्ण करना, घर-परिवार को प्रसन्नता और सुसम्पन्नता से भर देना उसी अन्नपूर्णा का काम है। बच्चों से लेकर वृद्धों तक, समर्थों से लेकर असमर्थों तक सभी को उसके आँचल की छाया मिलती है। उसके श्रम, सहयोग, स्नेह एवं सौजन्य से घर के हर सदस्य को कृत-कृत्य होने का अवसर मिलता है। नर-रत्न उसी का उत्पादन है।

❑ मातृशक्ति की गरिमा समझी जा सके तथा उसे श्रद्धासिक्त परिपोषण दिया जा सके तो देवी नाम से सम्बोधित की जाने वाली नारी इस धरती को देवताओं के स्वर्ग जैसी शान्ति और समृद्धि से भर सकती है।

❑ यों जंगल में खजूर के पेड़ एकांगी भी खड़े रहते हैं और दूसरों की तुलना में अपने बड़प्पन की घोषणा भी करते रहते हैं, किन्तु वृक्षों की शोभा-सुषमा उद्यान में ही देखने को मिलती है।

पूरा उद्यान आकर्षण का केन्द्र बना रहता है और अपने अस्तित्व से अनेक की अनेकानेक आवश्यकताएँ पूर्ण करता है। पक्षी अपने परिवार बसाते हैं, व्यापारी फल खरीदने पहुँचते हैं, राह में उधर से निकलने वाले विश्राम पाते हैं। समीपवर्ती लोगों को सुगन्ध का आनन्द मिलता है। माली का परिवार अपना गुजारा करता है और श्रेय तथा स्वास्थ्य का आनन्द लूटता है। उपयोगी आरोपण करने के कारण लगाने वाले को सन्तोष और यश तो मिलता ही है, शास्त्रकार उसे स्वर्ग मिलने तक का आश्वासन देते हैं। उद्यान धन्य होता है और उससे सम्बन्धित समुदाय भी।

परिवार एक उद्यान है, जिसमें छोटे पौधे और बड़े वृक्ष मिलजुलकर रहते तथा सिंचन-पोषण का समग्र लाभ प्राप्त करते हैं, संयुक्त परिवार का हर सदस्य कितना सुखी और श्रेयाधिकारी बनता है, उसे उद्यान में लगे हुए हर पौधे से पूछा और जाना जा सकता है। पक्षी परिवार बसाते और वन्य-पशु झुण्ड बनाकर रहते हैं। चींटी और दीमक, मधुमक्खी और टिड्डी जैसे छोटे कीड़े अपनी विशिष्टता का परिचय, परिवार-परम्परा अपनाकर ही दे सके हैं। जिन्होंने एकाकीपन अपनाया उन्होंने और कुछ भले ही पाया हो, वे उस आनन्द से वञ्चित ही रह गये जो सहकारी जीवनचर्या अपनाने वालों के ही भाग्य में बदा है।

❑ नारी की सत्ता, मूर्तिमान परिवार है। उसकी शारीरिक संरचना और मानसिक संवेदना परिवार बनाने, बसाने और बढ़ाने की ही नहीं उसे समुन्नत, सुसंस्कृत बना सकने में भी स्रष्टा ने हर दृष्टि से समर्थ बनाया है। वह जहाँ रहती है उद्यान बनाकर ही रहती है और अपने कर्त्तव्य से सारे वातावरण को उल्लास से भरती है।

❑ परिवार, मात्र एक संगठन नहीं, वरन् तत्त्व-दर्शन भी है। व्यक्ति की महत्ता और समाज की समर्थता इसी तत्त्वदर्शन के प्रयोग पर अवलम्बित है कि पारिवारिकता की मनोवृत्ति एवं प्रवृत्ति को कहाँ, किसने, किस प्रकार अपनाया ? जहाँ उसमें अनुदारता बरती और उपेक्षा की गई होगी, वहाँ संकीर्ण स्वार्थपरता ने दूसरों का ही नहीं, अपना भी सर्वनाश किया होगा। विकास का एक ही आधार है वह है—भावभरा सहयोग। जहाँ इस सदाशयता का जितना उपयोग हो रहा होगा, वहाँ प्रगति, समृद्धि और प्रसन्नता का वातावरण उसी अनुपात में बन रहा होगा।

❑ आत्मीयता का क्षेत्र जितना ही बढ़ता है, उतना ही पारस्परिक आदान-प्रदान का द्वार उसी अनुपात में खुलता है। उदारता और सहायता की सम्भावना भी उसी अनुपात में बढ़ती है, जितनी कि आत्मीयता सघन और समर्थ बन सकी। पारिवारिकता और आत्मीयता एक ही तथ्य के दो विवेचन हैं।

❑ पारिवारिकता का अभ्यास घर-कुटुम्ब की पाठशाला में आरम्भ होता है। संस्कारों की जीवन में स्थापना के लिए यही प्रयोगशाला सफल होती है। घर-परिवारों में पारिवारिकता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का अनुभव-अभ्यास कराने के बाद ही व्यक्तित्व में उदार दृष्टिकोण और आदर्श व्यवहार पनपता है। यही है वह ध्रुव केन्द्र, जिस पर मानवीय प्रगति और सुख-शान्ति को निर्भर समझा जा सकता है।

❑ मानवीय सत्ता की सबसे महत्त्वपूर्ण विभूति है—उसका दृष्टिकोण। उसका जैसा उपयोग जिस भी पदार्थ या प्राणी पर किया जाता है, उसकी स्थिति तदनुरूप ही बन जाती है। पत्थर प्रयोगशाला के हर परीक्षण में जड़ पाषाण ही रहेगा, पर जब उसमें देवत्व की स्थापना की जाती है तो श्रद्धालु की श्रद्धा उसमें भगवान् प्रकट कर देती है। प्रतिमा के निर्माण और भावना के निर्धारण में मनुष्य के ही कर्त्तव्य ने काम किया, इस प्रकार तत्त्वतः वह मानवीय कृति ही हुई। इतने पर भी उसकी शक्ति सच्चे भगवान् की तरह प्रकट होती है। यह दृष्टिकोण की सामर्थ्य का परिचय है। नदी के सामान्य जल-प्रवाह में हम गंगा, यमुना जैसी भावश्रद्धा का आरोपण करते हैं और वह सचमुच तरण-तारणी बन जाती है। यह दृश्यमान जगत् गतिशील तो है, पर इसमें रस, आनन्द और सौन्दर्य जैसा कहीं कुछ नहीं है। जड़ तो जड़ ही ठहरा।

❑ अनेक भाव-सम्वेदनाएँ हम अपने भीतर से उभारते हैं और उनका जिस-तिस पर आरोपण करके उसे उसी रंग का बना लेते हैं जैसा कि दृष्टिकोण रूपी चश्मा पहनकर रखा गया है। दृष्टिकोण का परिष्कार ही इस जगत् के सजीव-निर्जीव घटकों को दिव्यता से भरता है। उनमें भावभरी उत्कृष्टता का संचार करता है। कस्तूरी मृग का यह अमृत मनुष्य के अन्तरंग में भरा है। बाहरी ढूँढ़-खोज तो मृगतृष्णा मात्र है।

❑ नारी के प्रति पवित्रता की, करुणा की, श्रद्धा की, उदारता की, मूर्तिमान प्रतिमा जैसी स्थापना की जा सके, तो निस्सन्देह हम इस संसार की जीती-जागती, हँसती-हँसाती भाव भरे अमृत बरसाती २०० करोड़ देवियों के दर्शन करते रह सकते हैं। यह कल्पना नहीं यथार्थता भी है। पुत्री, भगिनी, माता और धर्मपत्नी में देवी तत्त्व कितने अधिक हैं ? इसे भावना और बुद्धि दोनों ही कसौटियों पर खरा पाया जा सकता है।

❑ मनुष्य का वरिष्ठ भाग नारी है। उसकी शोभा, कोमलता का नयनाभिराम होना तो विशिष्टता का आरम्भिक परिचय मात्र है। अनन्तर की परतों में वह एक से एक दिव्य तत्त्व छिपाये बैठी है। अभिभावकों को पुत्री से बढ़कर मृदुलता का दर्शन कदाचित ही अन्यत्र कहीं होता हो। कन्या की पवित्रता को देवोपम माना गया है। उसका पूजा-प्रचलन सर्वथा सार्थक है। देवत्व की जीवन्त-प्रतिमा का दर्शन भोली सुकुमार कन्या में सहज ही हो सकता है।

❑ भाई के लिए वह बहिन है। बहिन का भ्रातृ-भाव कितना निर्मल, कितना सौम्य और कितना उत्कृष्ट स्नेह-सम्बन्ध हो सकता है, इसे प्रेम की दुनिया में अनोखी उपलब्धि ही कहा जा सकता है। वयस्क नर और नारी अति निकट, अति घनिष्ट रहते हुए भी कितना विशुद्ध प्रेम कर सकते हैं, इसकी जीवन्त साक्षी बहिन ही देती है। यौन सम्भावनाओं का निर्बाध अवसर होते हुए भी भावनात्मक पवित्रता किस प्रकार पवित्रता को अक्षुण्ण बनाये रह सकती है, इसका मूर्तिमान प्रमाण बहिन से बढ़कर इस धरती पर और क्या हो सकता है ?

❑ पति के प्रति स्वेच्छा समर्पण—उसके लिए सब कुछ लुटा देने का उत्साह देखते ही बनता है। अध्यात्म शास्त्र में जिस सर्वतोभावेन आत्म-समर्पण को ईश्वर-प्राप्ति का आधार माना गया है, वह तत्त्व-ज्ञान किस प्रकार व्यावहारिक जीवन में कार्यान्वित हो सकता है, इसे खोजना हो तो किसी पतिव्रता के चित्त और चरित्र की गहराई में उतरकर सहज ही देखा जा सकता है। सन्तान के लिए वह अपना शरीर, मन और श्रम का महत्त्वपूर्ण अंश जिस प्रकार बाँटती-बिखेरती है, उस आधार पर उसे त्याग और बलिदान की देवी ही कहा जा सकता है। 'प्रेम' जिसे ईश्वर का स्वरूप कहा गया है, शास्त्रकारों ने भक्ति रूप में प्रतिपादित किया है। इस अमृत-तत्त्व पर नारी प्रवचन तो नहीं करती, पर पितृ-कुल और पति-कुल के सदस्यों के साथ भाव-भरे अनुदान प्रस्तुत करते हुए बताती है कि प्रेम क्या है ? किस प्रकार किया

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाता है और उसके कितने मधुर फल इसी जीवन में चखे जा सकते हैं ?

❑ मैं मानता हूँ कि स्त्रियों के सामाजिक, कौटुम्बिक तथा राजकीय अधिकार और कर्त्तव्य वे ही हैं, जो पुरुषों के हैं। दोनों का आर्थिक अधिकार समान है और दोनों की नैतिक योग्यता भी एक है। दोनों का शिक्षण एक होना चाहिए और विषय भी समान होना चाहिए। स्त्री-पुरुष का भेद है, मूलभूत नहीं। इससे भिन्न भी एक विचारधारा है, लेकिन मैं अपने विचार रख रहा हूँ—"स्त्री और पुरुष में समान मानव आत्मा होती है। इसलिए बाह्य भेद के कारण दोनों के कार्य-क्षेत्रों में कुछ फर्क होना स्वाभाविक है, लेकिन इतने से आधार पर उस भेद-भाव को ठीक नहीं कहा जा सकता है, जो आज हम लोगों में मौजूद है।"

❑ "स्त्री-पुरुष में एक ही पुरुष-तत्त्व, जो चेतना है, समान भाव से मौजूद है और दोनों के शरीर उसी प्रकृति-तत्त्व के बने हैं। दोनों की संसार-शक्ति और संसार-बन्धन समान हैं और मोक्ष का आधार भी दोनों का समान है। अतएव दोनों ही उभयपक्षीय प्रगति के भी समान अधिकारी हैं। स्त्रियों को एक ओर घर-गृहस्थी, सामाजिक, आर्थिक क्षेत्रों में समानता प्राप्त हो तो दूसरी ओर उन्हें उनके आध्यात्मिक वर्चस्व से वंचित नहीं रखा जाना चाहिए। दोनों प्रकार की उन्नति से ही नारी की महान सन्तति देने वाली क्षमता जाग्रत हो सकेगी।"

❑ सहकारिता में उपार्जन की असीम शक्ति और सम्भावनाएँ विद्यमान हैं। कल-कारखानों से लेकर सैन्यदलों तक में सम्मिलित प्रयासों की चमत्कारी परिणति का परिचय मिलता है। बुहारी से लेकर घड़ी तक छोटे-छोटे घटक मिलकर एक संयुक्त शक्ति बनते और अपनी उपयोगिता सिद्ध करते हैं। परिवार को सहकारिता की शाश्वत-संगठित संस्था के रूप में देखा जा सकता है।

❑ सहवितरण-सभ्यता का भौतिक सिद्धान्त है—अपनी रोटी मिल-बाँटकर खाओ। यह अर्थ-तन्त्र के सुसंचालन का मूलमन्त्र है। धर्मतन्त्र की शिक्षा है कि अपनी समर्थता बाँटो और दूसरों पर लदी असमर्थता का बोझ स्वयं बँटाओ।

❑ कुशलता, योग्यता और समर्थता के अभाव में भी क्या साझेदारी चल सकती है ? क्या मत्स्यन्याय अपनाने के अलावा समर्थों की असमर्थों के अभाव में भी क्या साझेदारी चल सकती है ? इसका उत्तर परिवार संगठन के अन्तर्गत भलीप्रकार मिल जाता है। अनुदान के बदले प्रतिदान की अपेक्षा लोक-व्यवहार है, पर एक क्षेत्र ऐसा भी है, जहाँ अनुदान से लेकर समर्पण तक की सद्भावना ही प्रमुख होती है। अधिकार की प्रमुखता और कर्त्तव्य की उपेक्षा का माहौल सर्वत्र है, पर एक लोक अभी ऐसा है, जहाँ कर्त्तव्य ही सब कुछ होता है। अधिकार की चर्चा भी नहीं चलती। इस लोक का नाम है परिवार।

❑ सहकारिता और सभ्यता एक ही बात है। जो मिलजुलकर रहते हैं, वे सुखी भी बनते हैं और समुन्नत भी। सुख की सार्थकता उसे मिल-जुलकर उपयोग करने और दुःख की निवृत्ति उसे परस्पर बँटा लेने में सन्निहित है। यह दोनों ही प्रयोजन मिलजुलकर रहने और सहकारी विधि-व्यवस्था अपनाने से ही सम्भव हो सकते हैं।

❑ मनुष्य की मौलिक विशेषता सहकारिता है। उसी के सहारे उसने समुदाय में रहना और परस्पर सहयोग करना सीखा। प्रगति का द्वार खोलने और अनेकानेक सुख-साधन जुटाने में इसी प्रवृत्ति ने भूमिका निभाई है। वह बुद्धिमत्ता जिस पर मनुष्य को गर्व करते पाया जाता है, कोई स्वतन्त्र उपलब्धि नहीं है। अनुभवों के आदान-प्रदान ने ही ज्ञान का वह ढाँचा खड़ा किया है, जिसके सहारे मनुष्य को सृष्टि का मुकुटमणि बनने का सुअवसर मिला।

❑ प्रगति और समृद्धि के सुखद प्रतिफल सहकारिता की बल्लरी पर लगते और फलते हैं। जो सहयोगी सद्भावना का जितना विकास और उपयोग करते हैं, वे उतने ही अधिक समुन्नत और सुसंस्कृत माने जाते हैं।

❑ सहकारिता की सत्प्रवृत्ति का बीजारोपण एवं अभिवर्द्धन परिवार क्षेत्र में जैसी सरलता, सुविधा और सफलता के साथ होता है, उतना अन्यत्र कहीं नहीं। परिवारों में यदि सुसंस्कारिता और सुव्यवस्था का समावेश किया जा सके तो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उस आनन्द और वातावरण का अनुभव अपने इन्हीं घर-घरौंदों में किया जा सकता है, जिनके सहारे देवता सामान्य से असामान्य बनते हैं।

- वरिष्ठता और सम्पन्नता की भौतिक शक्तियों को प्रमुखता मिल जाने और उन पर पुरुष का आधिपत्य बन जाने से कुछ ऐसी दुर्भाग्यपूर्ण प्रवंचना बन पड़ी कि नारी की सहज गरिमा ही उसके हाथ से छिन गई। नई पीढ़ियों के उत्पादन, परिपोषण और उन्नयन जैसे महान् उत्तरदायित्व को निभाने में उसका शरीर अपेक्षाकृत दुर्बल बैठा और परिवार संस्था के संचालन की व्यस्तता में स्वतन्त्रता, अर्थोपार्जन भी उसके लिए सम्भव न रहा। गलत मूल्यांकन करने की दृष्टि ने इसे नारी की दुर्बलता माना और वैसा सोचना, व्यवहार करना आरम्भ कर दिया जैसा कि समर्थ, असमर्थों के सम्बन्ध में करते हैं। मत्स्यन्याय की, जंगल के कानून की, बड़े पेड़ द्वारा नीचे उगने वालों के प्रति अपनाई जाने वाली नीति की चर्चा तो हो सकती है, पर वह पिछड़े प्राणियों की बात है। मनुष्य, मनुष्य के प्रति वह नीति अपनाने लगे तो फिर मनुष्यता की विशिष्टता समाप्त ही हुई समझी जानी चाहिए।

- नारी कनिष्ठ कैसे हुई ? निकृष्ट कैसे मानी गई ? नर ने उसका अभिवन्दन करने के स्थान पर आधिपत्य कैसे जमा लिया ? पूज्या को शोषण के बन्धनों में क्यों कर बाँधा गया ? यह सभी अनबूझे प्रश्न अन्तरिक्ष में गूँजते हैं और अपना समाधान पूछते हैं।

  भूल वहाँ से आरम्भ हुई, जहाँ से नारी को नर-सत्ता का अभिन्न अंग न मानकर उसे उपयोगी साधन मानने की कुकल्पना किसी के मस्तिष्क में उठी। वस्तुतः वैसा कुछ है नहीं। दोनों परस्पर पूरक ही नहीं एक-दूसरे के साथ इतनी सघनता के साथ जुड़े हुए हैं कि किसी को किसी से पृथक करने की बात ही नहीं बनती। फिर भोक्ता और भोग्या का रिश्ता तो बन ही कैसे सकता है ?

- माता और सन्तान में कौन किसका उपभोक्ता हुआ ? इसका उत्तर देना कठिन है। माता गाय या धाय नहीं है। सन्तान की स्वजेता, पोषक और संरक्षक है। जो इतना दे सके वह दाता हुई, उसे उपभोग सामग्री कैसे कहा जाए ? दाम्पत्य जीवन में पुरुष को सरसता, सहकारिता, सेवा के जितने अनुदान, जितने स्वल्प प्रतिदान प्रदान करती है, उसे देखते हुए उसे ऐसा आश्रयदाता, अन्नदाता, जीवनदाता कामधेनु ही कहा जाएगा, जिसके प्रति अनवरत कृतज्ञता ही बरसाई जा सकती है।

- भगिनी और पुत्री के रूप में उसके अनुदान, स्नेह, सौजन्य की चरम पवित्रता के रूप में उन सबको उपलब्ध होते हैं, जिन्होंने अपने को भाई और पिता के उच्च पद पर प्रतिष्ठित, गौरवान्वित किया। यदि यह दृष्टि उपलब्ध न हुई होती तो मनुष्य शालीनता एवं श्रेष्ठता स सर्वथा वंचित ही बना रहता, तब उसे पशुता से ऊँचे उठ सकने का उच्चस्तरीय भाव-संवेदनाओं से भरे-पूरे प्रेम का रसास्वदन ही नहीं मिल सका होता।

- यदि अन्तर करना ही आवश्यक हो तो मानवीय काया को नर और मानवीय आत्मा को नारी कहा जा सकता है। दोनों के सघन सहयोग और उच्चस्तरीय मिलन का नाम ही वह जीवन है, जिसे आन्तरिक उल्लास और भौतिक विकास से भरा-पूरा देव-जीवन कह सकते हैं।

- यह भी सच है कि मनुष्य को गिराने-उठाने में दूसरों का अनाचार और परिस्थितियों का दबाव बहुत बड़ा कारण होता है, पर यह तथ्य भी भुला न दिया जाना चाहिए कि व्यक्ति की आन्तरिक कमजोरी भी उसे सताने और गिराने के अनेक आधार खड़े करती और विपत्तियों को न्यौत बुलाती है।

- नारी के अपकर्ष का कारण क्या रहा ? अब इस पर देर तक चर्चा करते रहना व्यर्थ है। सोचा यह जाना चाहिए कि अवांछनीय स्थिति को बदलने का उपाय क्या हो सकता है ? इस सन्दर्भ में एक बड़ी तैयारी यह होनी चाहिए कि नारी स्वयं ऊँचा उठने का प्रयास करे। अपनी स्थिति सुधारे। उस दबाव को स्वीकार करने से इनकार करे जो नीतियुक्त न होते हुए भी परम्परा के नाम पर स्वाभाविक जैसे प्रतीत होते हैं। आवश्यक नहीं कि इस इनकारी का रूप विद्रोह जैसा हो। मन से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अस्वीकार कर देने पर भी लदे हुए लदान पतझड़ के पत्तों की तरह झड़ने और गिरने लगते हैं। अनीति तभी तक लदी रह सकती है, जब तक उसके प्रति अपनी अस्वीकृति स्पष्ट व्यक्त न की जाए।

❑ बच्चे को उँगली का सहारा तब मिलता है, जब वह अपने पैरों पर खड़ा होने का प्रयास करता है। ऊपर चढ़ने की इच्छा व्यक्त किए बिना माता तक बच्चे को गोदी में नहीं उठाती। नारी को अपने उत्कर्ष की आवश्यकता अनुभव करने और उसके लिए प्राणवान चेष्टा करने के लिए अपने पुरुषार्थ को आप जगाना होगा। अनुकूलता और सहायता पाने के लिए इतना तो हर किसी को करना पड़ता है। नारी का परित्राण भी उसके स्वतः प्रयासों के बिना सम्भव न हो सकेगा।

❑ परिवार एक शरीर है और जाग्रत-महिला उसका प्राण। दीखता तो शरीर का समग्र ढाँचा है, पर उसमें जो स्फुरणा और प्रखरता पाई जाती है, वह प्राण-शक्ति की ही होती है। प्राण दुर्बल पड़े तो शरीर मुरझाया हुआ प्रतीत होगा और उसके निकल जाने पर तो मरण ही निश्चित है। परिवार के ढाँचे को शरीर माना जाए और उसमें प्रखरता भरने वाली प्राण-शक्ति को जाग्रत-महिला।

❑ यों नारी भी एक प्राणी है और अन्य जीवधारियों की तरह वह भी अपनी जीवन-यात्रा चलाती है, पर उसका गौरव 'महिला' सिद्ध होने में है। महिला भी नहीं, जाग्रत-महिला। जाग्रत का अर्थ है—अवनति को रोकने और प्रगति की सम्भावनाओं को बढ़ाने में जागरूक, सक्रिय और सक्षम। नारी को महिला बनाया जाए। उसके शुभचिन्तकों का यही सबसे बड़ा अनुग्रह है कि अपने सम्पर्क के स्त्री समुदाय को मात्र नारी न रहने दें, वरन् उन्हें महिला, जाग्रत महिला बनाने के लिए योजना बनाएँ और सक्रियता अपनाएँ।

❑ नारी देखने में एक व्यक्ति की तरह प्रतीत होती है, पर उसकी प्रतिभा समूचे परिवार को अनुप्राणित करती है। किसी सुसंस्कृत परिवार को देखकर उसके वैभव को कारण नहीं मानना चाहिए, वरन् यह सोचना चाहिए कि यह इस घरौंदे में रहने वाली किसी जागरूक महिला का चमत्कार है। नारी की जागरूकता आमतौर से उसके वेश-विन्यास या कला-कौशल, शिष्टाचार एवं व्यवस्था-क्रम में दृष्टिगोचर होती है, पर वस्तुतः उसकी गरिमा का क्षेत्र इससे कहीं अधिक बड़ा है। परिवार सुव्यवस्थित, सन्तुष्ट, समुन्नत एवं सुसंस्कृत बनाने में जिसने जितना श्रम, मनोयोग एवं कौशल लगाया हो, इसके लिए जितने आत्म-नियन्त्रण एवं उत्सर्ग का परिचय दिया हो, उसे उसी स्तर की जाग्रत-महिला कहना चाहिए। जाग्रत-महिला अर्थात् परिवार मन्दिर में निवास करने वाली गृह-लक्ष्मी, सृजन की अधिष्ठात्री मानव-आकृति में रहने वाली मातृ-शक्ति एवं देहधारी देवी।

❑ अनैतिकताओं की जितनी भर्त्सना की जाए उतनी ही कम है, पर इस तथ्य को भी ध्यान में रखना ही पड़ेगा कि दुर्बलता-दुष्टता की जननी है। जब तक दुर्बलता रहेगी, तब तक उससे अनुचित लाभ उठाने का लोभ किसी न किसी समर्थ पर चढ़ा ही रहेगा। गन्दगी से बदबू उठती है और दुर्बलता की मवाद से दुष्टता पनपती है।

❑ साधनों की दृष्टि से कोई कितना ही समर्थ क्यों न हो-दूसरों को अपना अनुचर तभी बना सकता है, जब प्रतिरोध का सामना न करना पड़े। अनीति को अस्वीकृत करने में कई प्रकार के खतरे तो हैं, पर सबसे महत्त्वपूर्ण लाभ यह है कि दुष्टता की, सामर्थ्य की कलई खुल जाती है। अनीति को अस्वीकृत करने वाला कष्टों में पड़ सकता है, पर हारता नहीं। सत्य ही जीतता है, असत्य नहीं। इस प्रतिपादन को सर्वत्र सही पाया जा सकता है। शर्त एक ही है कि दुष्टता को स्वीकार न करने की साहसिकता को जीवित बनाये रखा जाए।

❑ नर और नारी के मानवीय अधिकार एक हैं। ईश्वर ने उन्हें एक ही मनुष्य जाति के दो अविच्छिन्न घटक बनाया है, औचित्य ने उनके कर्त्तव्य और अधिकारों को समान माना है। सहयोग और सद्भावना की दृष्टि से दोनों पक्ष एक-दूसरे को श्रेष्ठ मानें, श्रेय दें और नमन करें। यह शालीनता है। इससे न्याय प्रतिपादित समानता का सिद्धान्त किसी प्रकार कटता नहीं है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ प्रजनन के अतिरिक्त उत्तरदायित्व से शारीरिक क्षमता में कमी पड़ना स्वाभाविक है। इसे दुर्बलता समझा गया और दुष्टता को खुलकर खेलने का अवसर मिला। इसमें दोष दुष्टता का तो है ही। दुर्बलता भी निर्दोष नहीं है। उसने अनीति के आगे सिर क्यों झुकाया ?

❑ यह परिमार्जन की बेला है। दुष्टता अपनी पकड़ कब शिथिल करेगी, इसकी प्रतीक्षा किए बिना दुर्बलता को अपना प्रायश्चित करने का साहस समेटना चाहिए। आखिर 'न' कहने का अधिकार तो उसके पास है ही। अनीति सहने की तुलना में प्रतिरोध का संकट भारी नहीं हलका ही पड़ता है।

❑ अतिथि को भारतीय संस्कृति में माता, पिता और गुरु के पश्चात् चौथा महान देवता माना गया है। यों तो घात लगाने के लिए आने वाले चोर, ठग और हरामी लोग भी अतिथि होने का वैसा प्रयत्न कर सकते हैं जैसा कि रावण ने सीता को अतिथि-सत्कार के नाम पर ही ठगा था, किन्तु वस्तुतः अतिथि से प्रयोजन उन उदार आत्माओं से है, जो कृपापूर्वक स्वयं कष्ट उठाकर किसी के यहाँ आते हैं और उसे अपने सहयोग-अनुदान से लाभान्वित करते हैं। प्राचीनकाल में उदारमना सन्त ऐसा ही अनुग्रह करने गृहस्थों के यहाँ पधारते थे और उन्हें अपने पुण्य-प्रभाव से सुखी-समुन्नत बनाने का प्रयास करते थे। ऐसे मेघ-मानवों का, अतिथियों का देवोपम सत्कार किया जाना उचित भी है और आवश्यक भी। शास्त्र ने इसीलिए अतिथि को चौथा देवता मानने और उसका समुचित सम्मान करने का निर्देश दिया है।

नारी ससुराल में जाकर पूरी तरह अतिथि की भूमिका निभाती है। पति की सहचरी और पूरी परिवार की भावभरी समृद्धि एवं अनवरत श्रम-साधिका के रूप में उस गृहस्थ को कामधेनु की भाँति सुखी-समुन्नत बनाने में अपने व्यक्तित्व का चिरस्थायी उत्सर्ग करती है। यह सन्त-महात्माओं के अनुदानों की तुलना में कहीं अधिक भारी अनुग्रह है। रूखा-सूखा खाकर उदार अनुग्रहों से इस प्रकार लाभान्वित करने में स्वर्ग की कामधेनु और पृथ्वी की नारी की गणना हो सकती है। जिस घर में वह पहुँचे, वहाँ उसे भाव-भरा सत्कार और देवोपम सम्मान मिले, इसी में कृतज्ञता तत्त्व के दर्शन होते हैं, इसी में अतिथि देव के प्रति कर्त्तव्य-पालन का सांस्कृतिक संरक्षण है।

❑ सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर ने चाहा कि एक से अनेक बनूँ। इसी संकल्प के फलस्वरूप विराट ब्रह्म बना और यह विशाल ब्रह्माण्ड बनकर खड़ा हो गया। इस विश्व में जो कुछ सुखद, सुन्दर और श्रेष्ठ दिखता है, वह एकाकीपन की बहुलता में परिणति का ही प्रतिफल है।

❑ क्षुद्रता आकार से सम्बन्धित नहीं, वरन् संकीर्णता से सम्बन्धित है, जो सीमित है वह क्षुद्र है, जो असीम है वह महान। महान होने के कारण ही ब्रह्म को भगवान् कहा गया है। मनुष्यों में जो जितना संकीर्ण है, उसे उतना ही हेय समझना चाहिए। उसका चिन्तन और चरित्र इस संकीर्णता के कारण निकृष्ट स्तर का रहेगा और निज के तथा दूसरों के लिए दुःखदायी परिणाम उत्पन्न करेगा। एक को अनेक में विकसित करना इसी का नाम आत्म-विकास है। जिसका 'अहं' जितना सीमित है, वह उतना ही स्वार्थी है। अर्हता का विस्तार ही भव-बन्धनों से छुटकारा पाना तथा जीवन-मुक्ति का आनन्द लेना है।

❑ आत्मीयता को शरीर से बाहर विकसित करने का प्रथम चरण परिवार है। शरीर के अवयवों की तरह ही, परिवार के परिजनों को मानकर चलने से उसे छोटे क्षेत्र को समुन्नत एवं परिष्कृत बनाने की भावना का उदय होता और प्रयत्न चलता है। यह पारिवारिकता अधिक व्यापक होने पर 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की दृष्टि बनती है और **'आत्मवत् सर्वभूतेषु'** का व्यवहार बन पड़ता है। आत्म-विकास का मूल्यांकन इसी सुविस्तृत आत्मीयता की परिधि के आधार पर किया जाता है।

❑ कौटुम्बिक सहकारिता और सृजन-प्रक्रिया उस महान परमार्थपरायणता का प्रथम चरण है। यही सुनियोजित रीति से व्यवहृत होने पर क्रमशः विश्व-मानव की सेवा-साधना में विकसित होता है। पारिवारिक भावना बढ़े। पारिवारिक उत्तरदायित्वों की तरह ही विश्व-परिवार का ध्यान रहे, इसी में वास्तविक कल्याण है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ यह अच्छा है कि पिछड़ों को उठाना समर्थ लोग अपना कर्त्तव्य समझें, उन्हें जो विशिष्टता मिली है, उसका ठीक उपयोग यही हो सकता है कि समर्थता को पिछड़े वर्ग की धरोहर समझें। जिस प्रयोजन के लिए ईश्वर ने दी है, उसे उसी काम में नियोजित करके अपनी सदाशयता का परिचय दें, बदले में यशस्वी बनें और आत्म-सन्तोष प्राप्त करें। धनी, विद्वान, बलिष्ठ, प्रभावी, प्रतिभाशाली, कलाकार वर्ग के मूर्धन्य व्यक्तियों के लिए अपनी विशिष्टता को संसार का पिछड़ापन दूर करने में लगाने में ही शोभा है। साधनों का सहारा देकर पिछड़ेपन को दूर करना सर्वविदित उपाय है। प्रचलन भी इसी का है। सरल और सुलभ भी यही है, किन्तु यदि तथ्यों की गहराई में उतरना हो तो प्रतीत होगा कि यह साधन-सहयोग भी प्रारम्भिक उपचार हैं। समस्या का आत्यन्तिक समाधान नहीं। जड़-पदार्थों की सामर्थ्य के आधार पर उठक-पटक हो सकती है, पर चेतन प्राणियों को पिछड़ेपन से विरत करके उत्कर्ष के लक्ष्य तक पहुँचने में उनका निजी सहयोग भी उतना ही आवश्यक है, जितना समर्थ और उदार व्यक्तियों का साधन-सहयोग।

❑ अन्तरंग और बहिरंग क्षेत्र को बुरी तरह आच्छादित किये बैठे पिछड़ेपन को निरस्त करने के लिए समर्थ व्यक्तियों की उदार साधन-सहायता जुटाई जानी चाहिए पर साथ ही यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि असमर्थ वर्ग को उस हेय स्थिति से छुटकारा पाने की ललक और लगन भी इस स्तर तक उभरनी चाहिए, जिसकी प्रखरता के सामने पिछड़ेपन को अपने पैर जमाये रहना शक्य न रह जाए।

❑ पिछड़ापन किसी के कन्धे पर किसी के कारण से लदा क्यों न हो, उसका भार उतारने के लिए पीड़ितों को ही करवट बदलनी पड़ती है। न्याय संसार में है तो पर उसकी दीर्घसूत्रता सर्वविदित है। पुकारने और माँगने के उपरान्त ही इस दुनिया में यह आवश्यकता समझी जाती है कि अनीति हटे और उसका स्थान न्याय-नीति को मिले। यदि अकुलाहट के लक्षण प्रकट न हों तो शायद इस जड़-पदार्थों से बने संसार में न्याय भी जड़ बना बैठा रहेगा।

❑ मनुष्य की आत्मा चेतन है। उसे अपने ऊपर अनीति का आक्रमण न होने देने के लिए सजग रहना चाहिए। यदि हो रहा हो तो उसका प्रतिरोध करना चाहिए। दूसरों के साथ अनीति न बरतने, आक्रमण न करने का सिद्धान्त सही है, पर उसके साथ इतना और जुड़ा रहना चाहिए कि अनीति और आक्रमण को सहन भी न किया जाएगा। पीड़ित पक्ष को भाग्य, विधि-विधान, परम्परा, सन्तोष, शान्ति, क्षमा आदि के कितने ही दार्शनिक भूल-भुलैया में उलझाकर चुप बैठे रहने के लिए कहा जाता रहा है। निहित स्वार्थों का कुचक्र इन्हीं बन्धनों से बाँधकर सदा सहन करते रहने के लिए कहता आ रहा है। उत्पीड़न, अनीति और आक्रमण की तरह ही इस शान्तिवाद कुचक्र को भी अमान्य ठहराना है। उत्पीड़न का अन्त उसे निरस्त करने की अकुलाहट से ही होगा।

❑ अपने विकृत युग की आपाधापी ने नर और नारी दोनों ही पक्षों का एक बड़ा वर्ग पिछड़ेपन के गर्त में धकेल दिया है। सम्भवतः इसमें समर्थों की आक्रामकता और असमर्थों की आत्महीनता का दोनों का ही योगदान रहा है। अब परिवर्तन की घड़ी आ गई। इससे आक्रान्ताओं को अपने पंजों की पकड़ ढीली करने के लिए समझाना पड़ेगा। साथ ही उत्पीड़ितों को कहा जाएगा कि उनमें अकुलाहट तो उभरनी ही चाहिए अन्यथा पिछड़ेपन की दुर्गति से छुटकारा मिल नहीं सकेगा।

❑ आधिपत्य के आधार पर पदार्थों का मनचाहा उपयोग होता है। पालतू पशुओं से भी वैसा ही लाभ उठाया जाता है, पर यह प्रयोग मनुष्यों पर सफल नहीं हो सकता। मनुष्य में स्वतन्त्र चेतना है, जो स्नेह-सम्मान पाने और सहयोग-सद्भाव देने के आदान-प्रदान से कम में सन्तुष्ट नहीं रह सकती। कभी दास-दासी खरीदने-बेचने की प्रथा रही होगी, पर अब वैसा नहीं चल सकता। मजदूर और कैदियों तक के साथ आदान-प्रदान, मर्यादा और सद्भावना की नीति बरती जाती है। वह नीति है जिसे अपनाकर पारस्परिक हितों की अधिक सद्भावनापूर्वक, अधिक मात्रा में पूर्ति की जा सकती है। नर और नारी के बीच अधिक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सघनता और सहकारिता की अपेक्षा की जाती है, पर यह प्रयोजन स्वामी और सेवक का रिश्ता पूरा नहीं कर सकता। पुरुष अधिपति, नारी सम्पत्ति, यह मान्यता एक का अहंकार बढ़ाती और दूसरे को दीनता के गर्त में धकेलती है। इसमें दोनों का पतन और दोनों का अहित है।

मित्रता की नीति ही सर्वश्रेष्ठ है। स्नेह, सम्मान और सहयोग का समानता के आधार पर आदान-प्रदान करने की नीति अपनाकर ही उभयपक्षीय सद्भाव और सहकार बढ़ सकता है। नर और नारी को सघनता अपेक्षित हो तो वहाँ भी इसी आदर्श एवं तथ्य को अपनाकर चलना होगा।

❑ उपेक्षित वस्तु कूड़ा-करकट होती है और उपेक्षित व्यक्ति निरर्थक बनकर रह जाता है। जिसका महत्त्व समझा जाता है, उसे सुरक्षित रखा जाता है और अधिक उपयोगी, अधिक सुन्दर, समुन्नत बनाने का प्रयत्न किया जाता है। अपने आप की उपेक्षा करने वाले जीवन का महत्त्व नहीं समझते और उसमें कुछ कहने लायक उपलब्धियाँ तो दूर, किसी प्रकार मौत के दिन ही पूरे कर पाते हैं।

नारी का महत्त्व भी जीवन की भाँति ही गया-गुजरा समझा गया। फलतः वह कूड़ा-करकट बनती चली गई। उसे घर की छोटी-सी सीमा में, छोटे-से प्रयोजन पूरे करते रहने में ही दिन गुजारने पड़ते हैं। इस क्षेत्र में भी वह बहुत कुछ कर सकती थी, पर करे कैसे ? जिसे तुच्छ माना गया है, जिसे तुच्छ बनाया गया है, वह तुच्छता की भूमिका ही निभाता रह सकता है।

❑ कोयले की खदान में हीरा भी उसी मूल्य का है जितना कि जलावन का वह पूरा ढेर। उपेक्षा के दलदल में फँसी नारी अपनी गरिमा खोती चली जा रही है और उसके द्वारा सम्बन्धियों का, परिवार तथा समाज का हित-साधन हो सकता था वह हो नहीं पा रहा है। नारी ही क्यों किसी भी पदार्थ या प्राणी का महत्त्व गिरा दिया जाए और उसे उपेक्षित रखा जाए तो वह बहुमूल्य होते हुए भी निरर्थक बनकर रह जाएगा। नारी के सम्बन्ध में भी यही हुआ है और जीवन के सम्बन्ध में भी यही बात रही है।

❑ जीवन हो, नारी हो, समय हो, धन हो, कुछ भी हो, यदि उसका महत्त्व और सही उपयोग समझा जाएगा तो ही यह प्रयत्न सम्भव होगा, जिसके आधार पर उसकी गरिमा का चमत्कार देखा जा सके।

❑ मानवीय मस्तिष्क में देवत्व के अवतरण का प्रत्यक्ष परिचय इस लक्षण से मिलता है कि उसके द्वारा पवित्रता का दर्शन होता है या नहीं। असुरक्षता की दृष्टि नर के द्वारा नारी को और नारी के द्वारा नर को विलास-उपभोग की वस्तु समझने के पाशविक आकर्षण में पाई जाती है। यह शरीर के अत्यन्त उथले स्तर, कामुक विलास तक सीमित रहती है। अच्छा होता इसका स्तर थोड़ा और ऊँचा रहा होता और स्वास्थ्य-गठन के सौभाग्य पर प्रसन्नता अनुभव करने तक सन्तुष्ट रहा जाता। उपभोग की वह अश्लील बातें न सोची जातीं जो व्यवहारतः असम्भव ही बनी रहती हैं और असन्तोष की आग भड़कती है।

❑ देवत्व की दृष्टि से देखने पर नारी मात्र भगिनी, पुत्री, माता एवं सहचरी रह जाती है। इसी प्रकार नारी के लिए कोई नर मात्र भाई, पुत्र, पिता और सखा भर दृष्टिगोचर होता है। इस प्रकार की पवित्रता का अवतरण यदि अन्तःचेतना में विकसित होने लगे तो समझा जाना चाहिए कि मनुष्य में देवत्व का अवतरण होने लगा।

❑ शोषण का लाभ तत्काल मिलता है और शोषण का परिणाम समयसाध्य है। सरसों का तेल तुरन्त निकाला जा सकता है, किन्तु उसे उगाकर अनेक गुना लाभ उठाने के लिए धैर्य रखने की आवश्यकता होती है। अदूरदर्शिता तात्कालिक लाभ देखती है और पीछे पाखण्डियों और आततायियों की भाँति भारी घाटा उठाती है। दूरदर्शिता कृषि, उद्योगों में पूँजी लगाने, विद्याध्ययन, व्यायाम में श्रम करने की तरह आरम्भ में भले ही अखरती है, पर उसे अपनाने वाले अन्ततः उत्साहवर्द्धक लाभ ही उठाते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ नारी के प्रजनन के गौरवशाली उत्पादन एवं परिवार संस्था के संचालन का मूल्यांकन नहीं किया गया। उसकी ममता, सेवा, शोभा एवं सरसता की गरिमा भी नहीं आँकी जा सकती। मात्र शारीरिक बलिष्ठता की प्रतिरोध की प्रखरता की न्यूनता को दुर्बलता समझा गया और उसका अनुचित लाभ उठाया गया। लगता है कि तत्काल लाभ पाने के लिए बीज को बेच खाने वाले और उद्यान में बकरी चराने वाले और चन्दन वृक्ष को कोयला बेचने के लिए जला डालने वाले अदूरदर्शियों जैसा व्यवहार नारी के साथ करने की बात सोची गई। पशुओं को पकड़-जकड़कर अधिक काम लेने और दुर्बल पड़ने पर उन्हें मार खाने का तरीका नारी पर भी अजमाया गया है। जो हो, यह अदूरदर्शिता अन्ततः भारी पड़ी और महँगी सिद्ध हुई है।

❑ नारी के शोषण में नहीं सहयोग में लाभ है। उसे पददलित रखने में उतना स्वार्थ सिद्ध नहीं हो सकता, जितना सुविकसित बनने पर अनुदानों की रत्न-राशि उपलब्ध करने में। यह तथ्य जिस दिन पुरुष वर्ग समझ सकेगा और शोषण के स्थान पर उत्कर्ष की व्यवस्था करेगा उस दिन से उसे नये भाग्योदय का नया अनुभव और नया दर्शन होने लगेगा।

❑ दूसरों को श्रेय-सम्मान एवं सहयोग प्रदान करना दैवीय गुण है। यह सत्प्रवृत्ति जहाँ जितनी मात्रा में होगी, वहाँ उतना ही सन्तोष, सहयोग एवं उत्थान का आधार बनता और अपने सत्परिणामों में आनन्द भरता दृष्टिगोचर होगा। इतना न बन पड़े तो मानवीय गरिमा का इतना निर्वाह तो होना ही चाहिए कि दूसरों के न्यायोचित अधिकारों पर आक्रमण न किया जाए। उन्हें जीने और जीने देने के अधिकार से वंचित न किया जाए। सहायता और उदारता का व्यवहार न बन पड़े तो शोषण, अपहरण और उत्पीड़न की अनीति तो नहीं ही बरती जानी चाहिए। दैवीय गरिमा न अपनाई जा सके तो भी मानवीय शालीनता को हाथ से न जाने दिया जाए। स्वार्थान्धता हो या भ्रष्टपरम्परा किसी को भी यह अधिकार नहीं मिलना चाहिए कि समर्थता अनुचित लाभ उठाती रहे। जंगल का कानून मनुष्य समाज में नहीं चलना चाहिए। मत्स्य न्याय को सामाजिक मान्यता न मिले और जिसकी लाठी उसकी भैंस की नीति व्यवहार का अंग न बने।

❑ नारी अपने महान अनुदानों का प्रत्युपकार नहीं चाहती। उसकी माँग इतनी भर है कि मनुष्य जाति में जन्म लेने के कारण जो मानवीय अधिकार उसे स्रष्टा ने दिये हैं। उनका अपहरण न किया जाए। उसे मात्र न्याय चाहिए। मानव-समाज का सभ्य सदस्य मान लेने की व्यवस्था बना सकते तो असन्तोष और असहयोग के कारण अदृश्य, किन्तु रोमांचकारी जो क्षति सहन करनी पड़ रही है, उससे सहज ही मुक्ति मिल जाएगी।

❑ पिछड़ेपन को दूर करने के लिए भावभरा योगदान प्रस्तुत करना उनका कर्त्तव्य है, जिन्हें प्रगतिशील होने का सुअवसर मिला है। सामान्य स्तर से जो भी आगे है, उनकी अग्रगामिता इसी प्रकार सार्थक होती है कि वे अपने से पिछड़ों को बराबर लाने में, बराबर वालों को आगे बढ़ाने में उपलब्ध समर्थता का उपयोग करें।

❑ पिछड़ेपन के कई भाग हैं—आर्थिक, शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक आदि। इन सबसे अधिक भयावह भावनात्मक पिछड़ापन है। कोई अपने को हेय या हीन समझ, किसी को मानवीय गौरव-गरिमा से लाभान्वित होने से वंचित रखा जाए, प्रतिबन्धित किया जाए, यह भावनात्मक पिछड़ापन है। सर्वप्रथम इसे दूर किया जाए ? यदि इसका चयन किया जाए तो सबसे अधिक हानिकारक और कष्टदायक भावनात्मक पिछड़ापन ही असह्य माना जाना चाहिए और उसी को दूर करने का अविलम्ब प्रयत्न होना चाहिए।

पिछड़ापन कौन दूर करे ? इसके लिए उनसे कहा जाएगा जो प्रगतिशील हैं। सुख और सौभाग्य को मिल-बाँटकर खाया जाना चाहिए, अन्यथा वह विग्रह, ईर्ष्या, अहंकार और अनाचार के संग उपस्थित करेगा। नर को नारी की तुलना में वरिष्ठता प्राप्त है। समर्थता का उन्हें अहंकार भी और उसे स्वीकार करने आतंकित नारी की सहमत विवशता भी।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रचलन कुछ भी क्यों न हो, अनीति, अनीति ही रहेगी। स्थिति बदल जानी चाहिए, स्त्रियों के पिछड़ेपन को दूर करने की जिम्मेदारी पुरुषों को अपने कन्धों पर उठानी चाहिए। पुरुष का पौरुष इसी में है कि वह अपनी जन्मदात्री, सहचरी एवं शालीनता की संरक्षिका नारी के पुनरुत्थान में प्राण-पण से योगदान करे। नव-जाग्रति की इस पुण्यवेला में समर्थ कहलाने वाले पुरुष को यह उत्तरदायित्व उठाना ही होगा कि वह नारी को मानवीय अधिकारों से वंचित करने वाले बन्धनों से मुक्त कराने में समुचित योगदान प्रस्तुत करें।

❑ नर और नारी के युग्म में प्रकृतितः वरिष्ठता नारी की है। वही समस्त मनुष्य जाति को अपने उदर में से जन्म देती है। उसे अपना लाल रक्त सफेद दूध के रूप में परिणत करती और बिना किसी प्रकार का अहसान जताए परिपूर्ण स्नेह-वात्सल्य के साथ पिलाती है। छोटे-से मांसपिण्ड को अपने समर्पण जल से सींचती और विकसित वृक्ष बनाकर मानव-समाज की श्री-समृद्धि बढ़ाती है। अपनी भावना और गतिविधियों की दृष्टि से नारी सचमुच ही देवी है। माता के रूप में सन्तान को वह जीवन प्रदान करती है। पिता के एक नगण्य से बिन्दुकण को आत्म-सत्ता से सींचकर उसे सुयोग्य नागरिक बना देना उसी का चमत्कार है। पिता को वह नारी के प्रति पवित्रता, मृदुलता, कोमलता और ममता उभारने के लिए गंगा जैसी निर्मलता का प्रतिनिधित्व करती हुई नन्हीं-सी गुड़िया बनकर उसकी गोदी में खेलती है। भाई के लिए उसकी ममता, आत्मीयता, सरलता, सहृदयता देखते ही बनती है। भाई के लिए वह क्या सोचती है, उसे कितना चाहती है ? किस दृष्टि से देखती है ? इसका कोई सजीव चित्र बना सके तो प्रतीत होगा प्रेम की पवित्रता दुनिया में अन्यत्र ढूँढ़े भले ही न मिलती हो, पर बहिन के मन में भाई के प्रति वह अभी भी विद्यमान है। पति के लिए वह स्वर्ग की अप्सरा से अधिक मनोरम, दाहिनी भुजा की तरह साथी, काया की तरह सहचरी और हृदय की धड़कन जैसी जीवनदात्री है। नारी के बिना नर की क्या स्थिति हो सकती है ? इसका एक भावपूर्ण कथा-चित्र सती की मृत्यु के उपरान्त शिव के विक्षिप्त हो उठने के कथानक से मिलता है। गृहस्थ में जिस 'गृह' को लक्ष्य माना गया है, वह कोई इमारत नहीं, वरन् गृहिणी, घरवाली, गृहलक्ष्मी ही है। उसी के परिश्रम, अनुदान एवं सृजन-प्रयत्न से नये परिवार का नये वंश का शुभारम्भ होता है।

❑ नारी का उन्मूलन और उत्पीड़न अब तक जागरण के आलोक में पिछड़े दिनों की, पिछड़ेपन की दुःखद स्मृतियाँ भर बनी रह सकती हैं। उनके जड़ जमाये रहने का समय चला गया। प्रथम परम्परा को दुहाई देने वाले, उनका आश्रय लेकर अनैतिक और नैतिक को झुठलाने वाले लोग भी यह समझने लगे हैं कि समय बहुत आगे बढ़ गया। मनुष्य के बीच खाई खड़ी करने वाले तक, अब अपनी मौत के साथ मर रहे हैं। जाति, लिंग और अर्थ- विषमता का निर्माण करने और उसे चलाते रहने वाले तत्त्वों का उन्मूलन सुनिश्चित है। प्रकाश के सामने अन्धकार कैसे टिके ? तथ्य के सम्मुख विडम्बना का आग्रह कब तक चले ?

❑ जो अपनी मौत आप कर रहा हो उस अनौचित्य के सन्दर्भ में बहुत चिन्ता करने की नहीं, आवश्यकता इस बात की है कि खाई को भरा कैसे जाए ? क्षति की पूर्ति कैसे हो ? खाई पाटने के लिए क्या बाकी बचे ? और खण्डहरों के स्थान पर नया भवन कैसे खड़ा हो ?

समय की माँग यह है कि रचनात्मक प्रयोगों को हाथ में लिया जाए। अनौचित्य को निरस्त करना ही काफी नहीं, महत्त्वपूर्ण यह है कि उसका स्थानापन्न ढूँढ़ा जाए। नारी को उतना ही सुयोग्य एवं समर्थ बनाने का अवसर मिले जितना कि नर को मिलता रहा है और मिल रहा है। क्षति की पूर्ति के लिए यह विशेष प्रयास और साहस करना पड़ता है। नारी को नर के समतुल्य-समर्थ बनाने के लिए किए जाने वाले प्रयत्नों में जितनी तत्परता बरती जाएगी, न्याय युग की वापसी उतनी ही सुलभ होगी।

❑ गृहस्थ जीवन गाड़ी के दो पहियों की तरह है, जिसकी सफलता नर और नारी के समग्र सहयोग पर निर्भर है। गृहस्थ एक जीवन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आनन्द है। स्वर्ग की छोटी-सी प्रतिकृति है, किन्तु शर्त यह है कि वह सघन आत्मीयता के आधार पर विनिर्मित हुआ हो। जहाँ स्वार्थों की खींचतान चल रही होगी, वहाँ नफे में कोई भी रहे, घाटा किसी को भी उठाना पड़े, किन्तु नरक के प्रत्यक्ष दृश्य अवश्य ही दिखाई देंगे। विवशता की स्थिति में दिया गया और बलपूर्वक लिया गया सहयोग भौतिक दृष्टि से भले ही कुछ लाभदायक हो, लेकिन आन्तरिक असन्तोष उसे क्षत-विक्षत और कुरूप बनाकर रख देता है।

❑ परिवार की सुदृढ़ता और सुगठन उसके दोनों पक्ष की सघन सहकारिता पर निर्भर है। इसमें पति-पत्नी ही नहीं, माता-सन्तान, भाई-बहिन आदि भी सम्मिलित हैं। इमारत ईंट-चूने से मिलकर बनती है; परिवार की गाड़ी भी नर और नारी के सघन सहयोग पर आगे बढ़ती है। उसके न रहने पर टूटे पहिये वाली गाड़ी किसी प्रकार अपना अस्तित्व बनाये खड़ी तो रह सकती है, आगे नहीं बढ़ सकती। परिवार का भव्य-भवन इसी सहकारिता के आधार पर चिरस्थायी बनता है।

❑ सहयोग के लिए सद्भाव की आवश्यकता तो हर जगह है, पर नारी की प्रकृति के अनुरूप उसे अधिक स्नेह, सौहार्द, सम्मान और विश्वास उपलब्ध होना चाहिए, इसके बिना वह चाहते हुए भी परिवार-निर्माण में वैसा योगदान नहीं कर सकती जैसा कि कर सकना उसके लिए सम्भव है।

—मैरी स्टोप

❑ शरीर की बनावट के आधार पर मनुष्य-मनुष्य के बीच ऐसा अन्तर किया जाना जो मानवीय मौलिक अधिकारों की उपेक्षा करता हो, हर दृष्टि से अनुचित है। लम्बे, ठिगने, मोटे, पतले, सुन्दर, कुरूप काया होने पर भी सभी को समान नागरिक अधिकार प्राप्त रहते हैं, फिर नर और नारी की शरीर-रचना में नहीं, वरन् यौन-संस्थान में तनिक-सा आकृतिभेद रहने मात्र से ऐसा कुछ नहीं होता, जिससे किसी को अधिपति और किसी को सम्पत्ति की संज्ञा दी जा सके।

❑ वरिष्ठता गुण, कर्म, स्वभाव में पाई जाने वाली श्रेष्ठता के आधार पर किसी को भी मिल सकती है। सज्जनता को, परमार्थपरायणता को सदा सम्मान मिला है। हेय उन्हें समझा गया है, जिन्होंने अपने को मानवीय गरिमा के अनुरूप बनाने में प्रमाद बरता। इस कसौटी के अतिरिक्त यदि जन्म-जाति अथवा लिंग-भेद के आधार पर किसी को वरिष्ठ, किसी को निकृष्ट ठहराया जाएगा तो उसमें स्पष्टतः औचित्य का हनन है।

❑ नर और नारी मनुष्य जाति के दो अविच्छिन्न पक्ष हैं। दो हाथ मिलकर काम करते और दो पैर मिलकर चलते हैं। दोनों की सार्थकता मिल-जुलकर काम करने में है। ऐसा सार्थक समन्वय, भावभरी मित्रता और उदार सहकारिता के आधार पर ही सम्भव हो सकता है। बड़प्पन यदि आवश्यक ही हो तो उसके लिए यही उपाय है कि दोनों दूसरे पक्ष को वरिष्ठता दें। दूसरे की तुलना में अपने को बड़ा नहीं कुछ घटकर ही व्यक्त करें। साथी का सच्चा सम्मान पाना इसके बिना शक्य नहीं है। अधिकारों के अपहरण को नहीं उदार अनुदान की बात को ध्यान में रखकर ही नर और नारी के बीच स्नेह और सद्भाव की स्थिरता रह सकती है।

❑ आध्यात्मिक पवित्रता के अभिवर्द्धन की सरल किन्तु श्रेष्ठतम साधना यह है कि हर आत्मा में परमात्मा की दिव्यसत्ता का आलोक निहारा जाए और उस पर जो मलीनता के आवरण लदे हुए हैं, उन्हें उतार फेंका जाए। मनुष्य में दोष-दुर्गुण भी कम नहीं, उन्हें देखा और सुधारा जाए। पर दृष्टि यही रखी जाए कि बालक पवित्र है, मात्र उसके पैर पर चिपकी हुई गन्दगी ही निरस्त करने योग्य है। हम अपने को एवं अन्यों को भी पवित्र समझें, मलीनता के आवरण हटाकर पवित्र बनाएँ और उपार्जित पवित्रता को अक्षुण्य बनाए रखें।

❑ इस सन्दर्भ में एक बहुत अच्छा साधनात्मक पक्ष है कि पुरुष नारी को ईश्वर की पवित्रतम शक्ति का प्रतीक माने और उसे माता-बहिन एवं पुत्री की प्रगाढ़ श्रद्धा युक्त दृष्टि से देखे। धर्मपत्नी भी भोग्या नहीं, सहधर्मिणी और सहचरी है। घनिष्टतम आत्मीयता की भावना से उसे असीम प्यार दिया जा सकता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आवश्यकतानुसार सन्तानोत्पादन भी किया जा सकता है, पर इसके लिए अपने या पत्नी स्तर को गिराने की आवश्यकता नहीं है। ठीक यही पवित्र दृष्टि नारी को नर के अध्यात्म के प्रति रखनी चाहिए। वह उसे पिता, भाई, पुत्र की दृष्टि से देखे और पति के प्रति अभिन्न सहचर जैसी उदात्त-भावना रखे।

❑ नर-नारी के बीच चल रहा वासनात्मक अपवित्र चिन्तन, अध्यात्म दृष्टि के विकास में सबसे बड़ा व्यवधान है। प्रस्तुत निकृष्टता को पवित्र उत्कृष्टता में बदलने का प्रयत्न भावनात्मक तप है। इस तप में जो जितना सफल होगा, वह अपने में उतनी ही ईश्वरीय दिव्यशक्ति का जाज्वल्यमान अवतरण अनुभव करेगा।

❑ नर बुद्धि का प्रतिनिधित्व करता है और नारी भावना की प्रतिमा है। बुद्धि और हृदय के समन्वय से ही व्यक्तित्व में पूर्णता आती है। एकाकी सुहृदयता के भटक जाने का भय और एकाकी बुद्धि के दुष्टता पर उतर पड़ने की आशंका बनी ही रहेगी। शक्ति और श्रद्धा दोनों ही अपेक्षित हैं। नर की शक्ति और नारी की श्रद्धा का समन्वय होने से ही एक पूर्ण मानव का दर्शन सम्भव है।

❑ प्रकृति ने नर और नारी तत्त्व को एक-दूसरे का सहयोगी और पूरक बनाकर भेजा है। दोनों की सघन सहकारिता सर्वतोमुखी सुख-शान्ति का सृजन कर सकती है। सभी जानते हैं कि दोनों के बीच स्नेह-सहयोग की जितनी सघनता होगी उल्लास और विकास की स्थितियाँ उसी अनुपात में बढ़ती चली जाएँगी।

❑ सद्भाव भरा सहयोग मात्र सज्जनता, सहृदयता, उदारता, आत्मीयता जैसे उच्चस्तरीय आधारों पर अवलम्बित है। मानवीय आदर्शों को अक्षुण्ण बनाये रहने और प्रगति का पथ प्रशस्त किए रहने के लिए आवश्यक है कि दोनों की बची घनिष्टता एवं एकता बढ़ाने वाले तत्त्वों को बढ़ाया जाए। इस मार्ग के अवरुद्ध करने वाली मान्यताओं और प्रथाओं को क्षण भर के लिए भी सहन नहीं किया जाना चाहिए।

❑ स्नेह की भावनात्मक और सहयोग की भौतिक शक्ति इस संसार में सर्वोपरि मानी गई है। दोनों का अभिवर्द्धन नर और नारी की घनिष्टता के लिए आधार बनाया जा सके तो अपने छोटे घर-परिवारों में स्वर्गीय वातावरण का सृजन हो सकता है और उसमें निवास-निर्वाह करने वाले मनुष्य आनन्द-उल्लास की देवोपम अनुभूतियों का रसास्वादन करते रह सकते हैं।

❑ जिस देवालय का विग्रह विखण्डित हो, वहाँ दर्शनों की परम्परा समाप्त हो जाती है। खण्डित देव प्रतिमा के अंग-प्रत्यंग के निष्प्राण हो जाने की अवधारणा से दर्शनार्थी की श्रद्धा समाप्त हो जानी स्वाभाविक है। ऐसे देवालय खण्डहर न भी हों तो भीं वहाँ कोई जाता नहीं।

गृहस्थ जीवन भी ऐसा ही एक देवमन्दिर है, जिसका विग्रह नारी मानी गई है। वह शरीर से सँभली ही रहे, किन्तु यदि उसका हृदय भग्न हो जाए तो गृहस्थ में निवास करने वाली शोभा, शान्ति, समृद्धि और प्रसन्नता के क्षणों का इस तरह तिरोधान हो जाता है जिस तरह टूटी हुई प्रतिमा के देवमन्दिर से दर्शनार्थी का। प्रतिमा उस श्रद्धा का मूलाधार होती है, इसी प्रकार गृहस्थ जीवन में आत्मीय सरसता का आधार नारी होती है। उसे बाधित रखकर यदि किसी ने आनन्दमिश्रित वातावरण की कल्पना की तो उस जैसा अभागा कोई नहीं होगा।

आज हमारे गृहस्थ देवमन्दिर कुछ इसी तरह विग्रह-विखण्डित हुए पड़े हैं। वहाँ पुरुष भी हैं, नारियाँ भी, किन्तु देवता और भक्त के बीच की श्रद्धा-शृंखला टूट चुकी है, उसे जोड़े बिना मन्दिर की पवित्रता कैसे प्रतिष्ठित होगी ? नारी जीवन के प्रति सामाजिक जीवन में आनन्द, आदर और आस्था पैदा करके ही उस विसंगति को दूर किया जा सकता है। गृहस्थ मन्दिर को भावनामय बनाया जा सकता है। यह पुण्य-कार्य आज से, अभी से अपने ही घर से आरम्भ कर देना आवश्यक है।

❑ "पुरुष विष्णु है स्त्री लक्ष्मी, पुरुष विचार है स्त्री भाषा, पुरुष धर्म है स्त्री शान्ति, पुरुष प्रयत्न है स्त्री इच्छा, पुरुष दया है स्त्री दान, पुरुष मन्त्र है स्त्री उच्चारण, पुरुष अग्नि है स्त्री ईंधन, पुरुष समुद्र है स्त्री किनारा, पुरुष धनी है स्त्री धन, पुरुष युद्ध है स्त्री शान्ति,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पुरुष दीपक है स्त्री प्रकाश, पुरुष दिन है स्त्री रात्रि, पुरुष वृक्ष है स्त्री फल, पुरुष संगीत है स्त्री स्वर, पुरुष दण्ड है स्त्री पताका, पुरुष शक्ति है स्त्री सौन्दर्य, पुरुष आत्मा है स्त्री शरीर।"

उक्त भावों के साथ विष्णुपुराण में बताया है कि पुरुष और स्त्री की अपने-अपने स्थान पर महत्ता, एक-दूसरे के अस्तित्व की स्थिति, एक से दूसरे की शोभा आदि सम्भव है, एक के अभाव में दूसरा कोई महत्त्व नहीं रखता।

- अपूर्णता में मात्र असन्तोष ही बना रहेगा और विग्रह ही खड़ा रहेगा। सन्तोष और सौजन्य का समन्वय होने से ही प्रगति का रथ आगे बढ़ता है। नर और नारी के बीच घनिष्ट सद्भाव और सहकार हर दृष्टि से आवश्यक है, पर वह एकांगी नहीं हो सकता। नर के प्रति नारी को जितनी उदार और मृदुल होने की अपेक्षा की जाती है, ठीक उसी के अनुरूप नारी के प्रति नर को भी बनना पड़ेगा। विशृंखलता नारी ने नहीं, नर ने उत्पन्न की है। इसलिए उदार सहयोग के सृजन में उसे ही अपनी सद्भावनाओं का परिचय देने के लिए आगे आना पड़ेगा।

- नारी सम्बन्धी दो अतिवाद मध्यकाल की विकृति के रूप में अभी भी चले आ रहे हैं। एक ओर तो उसे रमणी-भोग्या का स्वरूप दे दिया गया तो दूसरी ओर पर्दे में बाँधकर अपंग बना दिया गया। इस अमानवीय प्रक्रिया से मुक्ति पाकर नर-नारी के सौहार्दपूर्ण पवित्र मिलन को प्रधानता मिले तो ही नारी का उन्नयन व समाज की प्रगति सम्भव है।

- नारी केवल मांसपिण्ड का पर्याय नहीं है। अनादि काल से लेकर आज तक पुरुष को गढ़कर, उसके विकास में सहायक, अनुगामी बनकर, उसके अभिशापों को स्वयं सहते हुए अपने वरदानों से जिसने उसके जीवन में अक्षयशक्ति का अभिसंचार किया है, वह नारी है।

- नारी स्नेह और सौजन्य की देवी है। वह नर-पशु को मनुष्य बनाती है, वाणी से जीवन अमृत-मय बनाती है, उसके नेत्र में आनन्द का दर्शन होता है, वह संतृप्त हृदय की शीतल छाया है, उसके हास्य में निराशा मिटाने की अपूर्व शक्ति है।

- मैं आपकी पत्नी हूँ, प्रेयसी हू, आपका माता हूँ, आपकी बहिन हूँ, आपकी मित्र हूँ। मैं इसलिए बनाई गई थी कि मैं दुनिया को सौम्यता, आश्वासन, गम्भीरता, सुन्दरता और प्रेम-सौहार्द दे सकूँ, लेकिन मैं देखती हूँ कि मेरे अस्तित्व के इस उद्देश्य की पूर्ति कठिन होती जा रही है। विज्ञापनबाजी और अश्लील प्रदर्शन द्वारा मेरी समस्त विशेषताओं को भुलाकर मेरा इस्तेमाल केवल एक के लिए जा रहा है वह है—कामोत्तेजन। इसके कारण मैं अपमानित हुई हूँ, इसने मेरी आबरू को नष्ट कर दिया है, मैं वह बन सकने में असमर्थ हूँ, जो आप चाहते हैं कि बनूँ—सौन्दर्य, प्रेरणा और स्नेह का स्रोत। प्रेम की मूर्ति-मेरे बच्चों के लिए, पति के लिए, समाज के लिए, मेरे परमेश्वर के लिए।

  मैं फिर से वही स्थान प्राप्त करने के लिए आपकी मदद चाहती हूँ ताकि स्रष्टा के उद्देश्य; जिसके लिए सृजन हुआ है, को पूरा कर सकूँ।

❑ ❑

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

संस्कृति के प्रहरी हमारे तीर्थ

❑ **सितासिते सरिते संगते तन्नप्लुतासो दिवमुत्पतन्ति।**

—ऋक् परिधि

तीर्थों के आश्रय से मनुष्य भारी से भारी विपत्तियों से मुक्ति पाता है।

❑ सन्त और सज्जनों के लिए यह शरीर ही तीर्थ है, जब दुष्ट-दुराचारियों के लिए ही एक मर्म भी है। *—महात्मा गाँधी*

❑ **व्रजेवाऽप्यथवाऽरण्येयत्रसन्तिबहुश्रुताः।**
तत्तन्नगरमित्याहुःपार्थतीर्थंचतद्भवेत्।।

—महाभारत वनपर्व

नगर में अथवा वन-आरण्यक में जहाँ भी ज्ञानी लोग रहते हैं, वही स्थान तीर्थ बन जाता है।

दानमिज्या तपः शौचं तीर्थसेवा श्रुतं तथा।
सर्वाण्येतान्यतीर्थानि यदि भावो न निर्मलः।।
निग्रही नेन्द्रियग्रामो यत्रैव च वसेन्नरः।
तत्र तस्य कुरुक्षेत्रं नैमिषं पुष्कराणि च।।

—महर्षि अगस्त्य

मन-भाव यदि शुद्ध न हो तो दान, यज्ञ, शौच तीर्थसेवन, शास्त्रश्रवण एवं स्वाध्याय ये सभी अतीर्थ हो जाते हैं, पर जिस व्यक्ति ने अपनी इन्द्रियों को, वासनाओं को वश में कर लिया है, वह जहाँ निवास करता है, वहीं उसके लिए कुरुक्षेत्र, नैमिषारण्य और पुष्कर आदि तीर्थ हो जाते हैं।

❑ **अन्यक्षेत्रे कृतं पापं पुण्यक्षेत्रे विनश्यति।**
पुण्यक्षेत्रेकृतं पापं वज्रलेपो भविष्यति।।

स्कन्द पुराण ४। ६६-७०

तीर्थों में रहते हुए भूलकर भी पाप नहीं करना चाहिए, क्योंकि दूसरे स्थान के पाप तो तीर्थ में स्नान करने से कट जाते हैं, किन्तु तीर्थ-स्थल में किया गया पाप वज्रलेप हो जाता है। वह फिर किसी प्रकार नष्ट नहीं होता।

❑ **गंगादितीर्थेषु वसन्ति मत्स्या, देवालये पक्षिगणाश्च सन्ति।**
भावोज्झितास्ते न फलं लभन्ते तीर्थाच्च देवायतनाच्च मुख्यात्।।
भावं ततो हृत्कमले निधाय तीर्थानि सेवेत् समाहितात्मा।

—नारद पुराण

गंगा आदि तीर्थों में मछलियाँ निवास करती हैं और मन्दिरों में पक्षीगण रहते हैं, किन्तु उनके चित्त भक्तिभाव से रहित होने के कारण उन्हें तीर्थसेवन और देवमन्दिर में निवास करने से कोई फल नहीं मिलता। अतः हृदयकमल में भाव का संग्रह करके एकाग्र चित्त होकर तीर्थसेवन करना चाहिए।

❑ **नृणां पापकृतां तीर्थे पापस्य शमनं भवेत्।**
यथोक्तफलदं तीर्थं भवेच्छुद्धात्मनां नृणाम्।।

पापी मनुष्यों के तीर्थ में जाने से उनके पाप की शान्ति होती है, जिनका अन्तःकरण शुद्ध है, ऐसे मनुष्यों के लिए तीर्थ यथोक्त फल देने वाला है।

❑ **कामं क्रोधं च लोभं च यो जित्वा तीर्थमाविशेत्।**
न तेन किंचिदप्राप्तं तीर्थाभिगमनाद् भवेत्।।

जो काम, क्रोध और लोभ को जीतकर तीर्थ में प्रवेश करता है, उसे तीर्थयात्रा से कोई भी वस्तु अलभ्य नहीं रहती।

❑ **न जलाप्लुत देहस्य स्नानमित्यभिधीयते।**
स स्नातो यो दमस्नातः शुचिः शुद्धमनोमलः।।

जल में शरीर को डुबो लेना ही स्नान नहीं कहलाता। जिसने दम रूपो तीर्थ में स्नान किया है, मन इन्द्रियों को वश में रखा है, उसी ने वास्तव में स्नान किया है। जिसने अपने मल को धो डाला वही शुद्ध है, वही स्नान है।

❑ विद्याभ्यास, सुविचार, ईश्वरोपासना, धर्मानुष्ठान, सत्संग, ब्रह्मचर्य, जितेन्द्रियता आदि जितने उत्तम कार्य हैं, वे सब तीर्थ कहलाते हैं, क्योंकि इनके द्वारा जीव दुःख सागर से तर सकते हैं।

❑ ❑

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

सिद्धान्त विवेचन

❑ जब संगीत के स्वर बदलने लगते हैं तो नगर की दीवारें तक हिल जाती हैं। हमारे विचार और विश्वासों के रूप में परिवर्तन होना बढ़ती हुई बेचैनी का प्रथम चिन्ह है। यह शीघ्र ही राजनैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक व्यवस्थाओं में स्वयं प्रकट करेगा; जिसके फलस्वरूप दीवारें हिलने लगेंगी। हमें दुनिया को बदलना है अपनी सांस्कृतिक विरासत के बलबूते आगामी कुछ दशकों में हम अध्यात्म क्रान्ति द्वारा यह कर दिखायेंगे।

—डॉ. राधाकृष्णन्

❑ आसक्तिरहित से अतिरिक्त संसार में कोई सुखी नहीं।

—सन्त तिरुवल्लुवर

❑ सोते रहने का नाम कलियुग, आलस्य में पड़ने रहने का द्वापर, अनिश्चय की स्थिति में खड़े रहने का नाम त्रेता और निरन्तर गतिशील रहने का नाम सतयुग है।

—ऐतरेय ब्राह्मण

❑ मेरा हिन्दूधर्म मुझे सिखाता है कि मुझे भलाई करने पर फल की आशा नहीं रखनी चाहिए और अच्छे का नतीजा अच्छा होगा, यह विश्वास करना चाहिए।

❑ अवतार आता है, पर प्रेरणाओं के रूप में। कुछ करने का श्रेय तो वह अपने भक्तों को ही देता है।

—स्वामी विवेकानन्द

❑ उपवास तो सच्चा तभी कहलाता है, जब उपवास के साथ शुद्ध विचारों का सेवन हो और अधम वासनाओं के विरोध का संकल्प हो।

❑ देवत्व की रक्षा से बढ़कर धर्म नहीं और देवत्व अपनाने से बड़ा कर्त्तव्य नहीं।

—सन्त तिरुवल्लुवर

❑ विज्ञान को 'विज्ञान' तभी कह सकते हैं, जब वह शरीर, मन और आत्मा की भूख मिटाने की ताकत रखता हो न कि इन्हीं को मिटाने की।

—महात्मा गाँधी

❑ देशकाल और कठिन परिस्थितियों में से भी जो धर्म का त्याग नहीं करता, उसे इन्द्र भी पराजित नहीं कर सकते।

—शंकराचार्य

❑ चिड़ियों की तरह हवा में उड़ना और मछलियों को तरह पानी में तैरना सीखने के बाद अब हमें इनसानों की तरह पृथ्वी पर चलना सीखना है।

—डॉ. राधाकृष्णन्

❑ संसार धूल को अपने पैरों के नीचे रौंदता है, पर सत्य ढूँढ़ने वाले को इतना नम्र होना चाहिए कि वह धूल भी उसे रौंद सके।

❑ जो अन्याय होता हुआ देखकर क्रुद्ध हो जाता है और अपमान सहन नहीं करता, वही सच्चा पुरुष है। जिसके मन में क्रोध या तिरस्कार नहीं वह और नपुंसक समान ही है।

❑ आज शिक्षा का जरूरी अंग यह होना चाहिए कि युवक जीवन-संग्राम में असत्य को सत्य से, घृणा को प्रेम से और हिंसा को कष्ट-सहिष्णुता से जीतना सीख सके।

—महात्मा गाँधी

❑ मैं जीवन में तभी तक विश्वास करता हूँ, जब तक इसमें विश्व-बन्धुत्व की भावना है। मैं दानवीशक्ति से मनुष्य की मुक्ति का प्रचार करता हूँ।

—रवीन्द्रनाथ टैगोर

❑ तिनके के समान हलका बनने से, वृक्ष के समान सहिष्णु बनने से, मान छोड़कर दूसरों को मान देने से, इष्ट की महिमा समझने से तथा अभिमान का त्याग करने से साधना शीघ्र सफल होती है। इस प्रकार योग्यता प्राप्त करने के लिए सत्संग, धर्मग्रन्थ और भक्तचरित्र का अभ्यास, गुरुज्ञान का पालन तथा माता-पिता आदि गुरुजनों की तथा भक्तों की सेवा-पूजा करना बहुत आवश्यक है।

—विजयकृष्ण गोस्वामी

❑ जिन लोगों के पास शक्ति है, उनका प्रयत्न रहता है कि अपना प्रभुत्व बनाये रखें और अपना विस्तार बढ़ाते रहें। शक्ति-सम्प्रदाय का मूलमन्त्र बलिदान है। स्वयं अपनी सीमाओं को बढ़ाने का यह आवश्यक परिणाम होता है कि दूसरे की मर्यादाओं पर आक्रमण किया जाय।

—रवीन्द्रनाथ टैगोर

❑ युग हमेशा बदलते रहे हैं। बुराइयाँ कितनी ही सघन दिख रही हों, पर एक बार युग फिर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बदलेगा, प्रकृति के इस विधान को रोक सकना किसी के वश की बात नहीं। —*महायोगी अरविन्द*

- हमें उत्तम अवसरों के सहारे न बैठना चाहिए, बल्कि साधारण समय को उत्तम अवसर में परिणत करना चाहिए।

- मैं इस संसार में गाँवों के समान दूसरा कोई धन नहीं समझता। गाँवों के नाम और गुणों का कीर्तन-श्रवण, गाँवों का दान तथा उनका दर्शन—इनकी बड़ी प्रशंसा की गयी है। यह समस्त कार्य सम्पूर्ण पापों को दूर करके परम कल्याण को प्रदान करने वाले हैं। —*वेदव्यास*

- तीक्ष्ण बुद्धि वाले बाण की भाँति स्वल्प-स्थल में स्पर्श करते हैं, किन्तु अन्तःप्रविष्ट हो जाते हैं और मन्दबुद्धि लोग पत्थर के टुकड़े की भाँति बहुत चौड़े स्थल में स्पर्श करने पर भी बाहर ही रह जाते हैं। —*शंकराचार्य*

- अहिंसा में किसी को न मारना तो है ही, कुविचार मात्र हिंसा है, मिथ्या भाषण हिंसा है, किसी का बुरा चाहना भी हिंसा है। —*महात्मा गाँधी*

- जो अपने परिचित मित्रों के साथ उचित सम्पर्क तथा सद्व्यवहार नहीं रखता है, वह मानव आकृति से मानव होते हुए भी वृक्ष की टहनी पर रहने वाले वानर के समान है।

—*महात्मा बुद्ध*

- दुनिया में दो तरह की प्रकृति के लोग हैं। एक चलनी जैसे दूसरे सूप जैसे। चलनी प्रकृति निरर्थक बातें अपने अंचल में रखती है और सारतत्त्व को बाहर निकाल देती है, पर सूप स्वभाव के लोग इस संसार के मिले-जुले ढेर में से निरर्थक को झटककर दूर हटा देते हैं और जो सारगर्भित है, उसे ग्रहण कर लेते हैं।

- सत्यता, सद्वचन, सत्कर्म, उदारता, क्षमा, लोकहित आदि कोई न कोई कार्य करते रहना चाहिए, ये सब बहुत बड़े सहायक हैं।

—*स्वामी रामतीर्थ*

- लाभ क्या है ? गुणियों की संगति। दुःख क्या है ? मूर्खों का संग। हानि क्या है ? समय को नष्ट करना। निपुणता क्या है ? धर्म में प्रीति। शूर कौन-कौन हैं ? जिसने अपनी इन्द्रियों को जीत लिया है। प्रियतम कौन है ? जो पवित्रता है। धन क्या है ? विद्या। सुख क्या है ? परदेश न जाना। राज्य क्या है ? अपनी आज्ञा का चलाना। —*भर्तृहरि*

- सुखी उसे नहीं कहा जाना चाहिए जिसे दूसरे लोग सुखी समझते हैं। असल में सुखी वह है जो अपने में सन्तुष्ट है।

- तमोगुण का लक्षण ही यह है कि उसमें किसी भोग का त्याग न करना पड़े, कैसी भी कठिनता न सहन करनी पड़े।

- जो लोग इस शक्ति का दर्शन सिद्ध कर लेते हैं, उनकी वाणी तलवार की धार के समान और कर्म आनन्द की लहरी के तुल्य हो जाते हैं।

- दुष्टता के नाश के समय ही शब्द होता है। लकड़ी जलते समय आवाज करती है। सब जल जाने से फिर आवाज नहीं करती।

- जमीन, जोरू और रुपया ये तीनों चीज लोगों को संसार में बद्ध करती हैं। इन तीनों चीजों पर मन रखने से भगवान की ओर उनका कोई योग नहीं होता है।

- यह साधना किसी एक आदमी पर निर्भर नहीं है, एक आदमी के सिद्धि-प्रवाह में बहने से तो प्राचीनयुग के समान जाति का जीवन मिट्टी में मिल जाएगा। सबके जीवन के समान रूप से उन्नत होना चाहिए।

- काया और वचनों से मदान्ध बना हुआ तथा दुःख और स्त्रियों में आसक्त बना हुआ वह, जैसे केंचुआ मिट्टी को दो प्रकार से इकट्ठा करता है। भिक्षाचरी करने वाला भिक्षु भी यदि दुराचारी होगा तो वह नरक से नहीं छूट सकता।

- यदि मनुष्य के भोग, डाव की नोंक पर स्थित जलबिन्दु के समान हैं, तो दिन-प्रतिदिन क्षीण होने वाली इस छोटी-सी आयु में कल्याण मार्ग क्यों न जाना (साधा) जाय ?

- भिन्न-भिन्न तरह की (विभिन्न) भाषाएँ (इस जीव को) शरणभूत नहीं होती हैं तो फिर कोरी विद्या का अधीश्वरपन (पण्डितपन) क्या शरणभूत होगा ? पापकर्मों द्वारा पकड़े हुए मूर्ख कुछ न जानते हुए भी अपने को पण्डित मानते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

- क्रोध के आवेश में आकर जब मनुष्य दूसरे पर प्रहार करता है, तब वह आप परास्त होता है और अपना सामना करने वाले का अपराधी होता है। जब मनुष्य क्रोध से पीड़ित होकर अपने आप दुःख सहन करता है, तब वह अपने ऊपर पवित्र असर पैदा करता है।

- क्षत्रियता सीखने के लिए पुष्ट शरीर की (उतनी) जरूरत नहीं, पर मजबूत निडर दिल की जरूरत है। क्रूरता-कठोरता क्षत्रियता का गुण नहीं, परन्तु सहनशीलता, क्षमा, दया, उदारता और संकटों का मूसलाधार मेह बरसता हो तब भी स्थिर होकर निर्भयता से खड़े रहने की शक्ति क्षत्रियता है।

- जैसे जुल्म और न्याय का विरोध करना अपना धर्म है, उसी तरह जुल्म करने वाले से द्वेष न करना अपना धर्म है।

- केवल शान्ति और अटल निश्चय का मिलाप जब न्यायपूर्ण कारण के साथ होता है, तब उसके परिणाम में सदा विजय ही होती है। न्याय के लिए मरना मनुष्य का नियम है, मारना जानवर का नियम है।

- मेरे लिए सत्य से परे कोई धर्म नहीं है और अहिंसा से बढ़कर कोई परम कर्त्तव्य नहीं है। इस कर्त्तव्य को करते-करते आदमी सत्य की पूजा कर सकता है।

- सन्तोष तो प्रयासों में है, उपलब्धि में नहीं।

—महात्मा गाँधी

- उद्योगी, जागरूक, पवित्र कर्म करने वाले सोच-समझकर काम करने वाले संयमी, धर्मानुसार जीविका चलाने वाले अप्रमादी मनुष्य के यश की वृद्धि होती है।

- चित्त चंचल है, चपल है, रक्ष्य है, दुरनिवार्य है। मेधावी पुरुष इसे इसी प्रकार सीधा करता है, जैसे बाण बनाने वाला बाण को।

- प्रमाद मत करो। कामभोगों में मत फँसो। प्रमादरहित हो ध्यान करने से विपुल सुख के भागी बनोगे।

- जो काम भोगों को छोड़ अनिकेतन हो परिव्राजक बन गया है, जिसका पुनर्जन्म क्षीण हो गया है और उसने निर्वाण प्राप्त कर लिया है, वही सच्चा ब्राह्मण कहा जा सकता है।

- ज्ञान जिस समय भक्ति और शक्ति के सम्मिश्रण का स्वरूप धारण करेगा, उस समय यह विश्व सार्थक हो जाएगा।

- भाव और कर्म की तरंग से ही काम नहीं चल सकता, उसके साथ ज्ञान का मिश्रण चाहिए। ज्ञान का मिश्रण हुए बिना सब निष्फल हो जाएगा। पूर्ण साधना में ही ज्ञान और शान्ति है।

- मैं हिन्दू हूँ, इसलिए चोटी रखनी चाहिए, मैं ऐसा नहीं सोचता, वरन् चोटी मेरे हिन्दूपन की रक्षा करती है, इसलिए चोटी रखना मैं परम धर्म मानता हूँ।

—महात्मा गाँधी

- शिखा जातीयता का प्राण है, हम उसका परित्याग नहीं कर सकते।

—मदनमोहन मालवीय

- संसार में सभी नर-नारी स्वभावतः शान्तिप्रेमी होते हैं, क्योंकि शान्तिमय जीवन में ही उनको अपना कल्याण दिखाई पड़ता है। केवल थोड़े-से असाधारण पेटू घोर स्वार्थी राजनैतिक व्यक्ति भले ही युद्ध को आदर्श मानें और उसकी प्रशंसा के गीत गाएँ, पर उनकी गिनती स्वस्थ-समाज के व्यक्तियों में नहीं की जा सकती। संसार के करोड़ों और अरबों लोग ईमानदारी से अपनी मेहनत की रोटी कमाना, गृहस्थी पालन, निर्दोष मनोरंजन करना, किसी धर्म या निष्ठा पर विश्वास रखना, अभागों और जरूरतमन्दों की सहायता करना पसन्द करते हैं।

—लाला हरदयाल

- मनुष्य का सच्चा जीवन तब आरम्भ होता है, जब वह यह अनुभव करता है कि शारीरिक जीवन अस्थिर है और वह सन्तोष नहीं दे सकता।

- अपने जीवन को समय के किनारे पर पत्ती पर पड़ी हुई ओस की भाँति हलके-हलके नाचने दो।

- जीवन के युद्ध में चोटें और आघात बर्दाश्त करने से ही उसमें विजय प्राप्त होती है, उसमें आनन्द आता है।

—रवीन्द्रनाथ टैगोर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

- शिक्षा को जीविका का साधन बनाना मेरे विचार से तुच्छ वृत्ति है। जीविका उपार्जन का साधन शरीर है, फिर आत्मा पर यह बोझ क्यों लादा जाए ?

- वास्तविक शोभा इसी में है कि उपकार के बदले उपकार किया जाए।

- मनुष्य को चाहिए कि झूठ से कामना सिद्ध न करे। निन्दा, स्तुति तथा भय से भी झूठ न बोले और न लोभवश। चाहे राज्य भी मिलता हो तो भी झूठ, अधर्म को न अपनावे। भोजन, जीविका बिना भी चाहे प्राण जाते हों तो भी धर्म त्याग न करे, क्योंकि जीव और धर्म नित्य हैं। वे मनुष्य धन्य हैं जो धर्म को किसी भाव नहीं बेचते।

- जन-साधारण का विरोध योजना की महानता का प्रमाण-पत्र होता है। जिस योजना का विरोध नहीं होता, जिस नियोजन की आलोचना नहीं होती, समझ लेना चाहिए कि उस योजना में कोई जीवन नहीं है, कोई नवीनता नहीं।

- मनुष्य बिगड़ता है या तो परिस्थितियों से या पूर्व संस्कारों से। परिस्थितियों का त्याग करने से ही बच सकता है, संस्कारों से गिरने वाले मनुष्य का मार्ग उससे भी कहीं कठिन है।

—प्रेमचन्द

- जो बुद्धिवाद सर्वज्ञता का दावा करने लगता है, उसे भयंकर राक्षस समझना चाहिए।

—महात्मा गाँधी

- सौ मूर्ख हों इसकी अपेक्षा सद्गुणी सन्तान एक अच्छी।

—वेदव्यास

- सभ्यता एकान्तिक वस्तु नहीं है। उसका अर्थ हर जगह एक ही नहीं होता। पश्चिम की सभ्यता पूर्व की असभ्यता हो सकती है।

—महात्मा गाँधी

- किसी विचार को केवल उसके नयेपन से आकर्षित हो अपना लेने और फिर उससे भी नये विचार के लिए उसको त्याग देने की मनोवृत्ति से पूरी शक्तियाँ बिखर जाने का भय है।

—स्वामी विवेकानन्द

- नाशवान शरीर की नहीं, चिन्ता तो सदैव स्थिर रहने वाले यश की करनी चाहिए।

—भोज

- गीता में समुचित उपभोग की तुलना एक यज्ञ से की गयी है, जिसमें इन्द्रियों के विषय तो हैं ही और इन्द्रियाँ यज्ञ की अग्नि हैं। आत्म-संयम के प्रत्येक रूप को, जिसमें हम अहंकार पूर्ण आनन्द को उच्च आनन्द के लिए त्याग देते हैं, जिसमें हम निरन्तर निम्नतर मनोवेगों को छोड़ देते हैं यज्ञ कहा गया है।

—डॉ. राधाकृष्णन्

- जिसमें सत्य और सेवा पूर्ण रूप से प्रकट हो वह संसार के हृदयों का साम्राज्य अवश्य भोगेगा और अपनी मनोभिलाषा पूर्ण करेगा।

—महात्मा गाँधी

- प्राप्ति के आनन्द की अपेक्षा प्रयत्न का आनन्द श्रेष्ठ है।

—विनोबा

- **एवं सर्वमिदं कृत्वा यन्मया सदितिं शुभम्।**
  तेनस्यां सर्वसत्वानां सर्वदुःखप्रशान्ति कृत्।।
  मैंने जो कुछ भी पुण्य किया हो, उसके शुभ फल में सब प्राणियों के दुःख मिटें।

- **अक्लेशेन शरीरस्य कुर्वीत धनसंचयम्।**

—मनुस्मृति ४। ३

उतना धन संचय करें जिसके लिए शरीर को बहुत कष्ट न उठाना पड़े।

- जो मनुष्य अपने सुकर्मों का मूल्य चाहता है, तो जिस मनुष्य की उसने भलाई की हो, उसके लिए उसे सुखी देखने की प्रसन्नता ही पूर्ण पुरस्कार है।

—वियोगी हरि

- **अपहृत्यतमस्तीव्रंयथाभात्युदयेरविः।**
  तथाऽपहृत्यपाप्मानंभातिगंगाजलोक्षितः।।

—महाभारत २.६।३३

उदयकाल में भगवान सूर्य जिस प्रकार रात्रि के अन्धकार को विदीर्ण कर डालते हैं, उसी प्रकार गंगाजल से स्नान करने वाले के पाप नष्ट होकर तेजस की वृद्धि होती है।

- सम्भव असम्भव से पूछता है, तुम्हारा निवास स्थान कहाँ है ? उत्तर मिला, निर्बल के स्वप्न में।'

—रवीन्द्रनाथ टैगोर

- अन्धकार प्रकाश की ओर चलता है, पर अन्धापन मृत्यु की ओर।

- **कालो न यातो वयमेव यातास्तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णाः।**

—वैराग्य शतक

काल समाप्त न हुआ, जीवन समाप्त हो चला, वृद्धावस्था आ गई, किन्तु तृष्णा अभी भी न छूटी।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ विचारों की गन्दगी और जीवन के संकट दोनों समानुपाती हैं। विचार जितने गन्दे होंगे, जीवन उतना ही अधिक व्याधिग्रस्त बनता जाएगा।

—चरक

❑ मनुष्य की श्रेष्ठता इस बात में है कि वह अपने चारों ओर शान्ति और प्रफुल्लता का आनन्दमय वातावरण उत्पन्न करे। यह कार्य वह तभी कर सकता है, जब अपने दृष्टिकोण में उदारता एवं सज्जनता और कर्त्तव्य में पुरुषार्थ एवं सदाचार का समन्वय रखे।

—याज्ञवल्क्य

❑ **कायेन संवुता धीरा अथो वाचाय संवुता।**
मनसा संवुता धीरा ते वे सुपरिसंवुता।।

—धम्मपद

शरीर, वचन व मन से संगत रहने वाले, बुद्धिमान मनुष्य ही वास्तव में सुसंयमी कहलाते हैं।

❑ **नारुन्तुदः स्यादार्तोऽपि न परद्रोहकर्मधीः।**
ययास्योद्विजते वाचा नालोक्यां तामुदीरयेत्।।

—मनुस्मृति २/१६१

स्वयं कष्ट की स्थिति में रहते हुए भी दूसरों को कष्ट न पहुँचाएँ। दूसरों के प्रति द्रोह न रखें। साथ ही दूसरों को कष्ट (उद्विग्न) पहुँचाने वाली अशुभ वाणी न बोलें।

❑ **न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धाः,**
वृद्धाः न ते ये न वदन्ति धर्मम्।
धर्मं न तत् यत्र न सत्यमस्ति,
सत्यं न तत्यच्छलमभ्युपैति।। *—वेदव्यास*

जिस सभा में वृद्ध न हों वह सभा नहीं, जिस धर्म में सत्य न हो वह धर्म नहीं और जो सत्य छलरहित न हो वह सत्य नहीं।

❑ **पूर्वे वयसि तत्कुर्याद् येन वृद्धः सुखं वसेत्।**
यावज्जीवेन तत्कुर्याद् येन प्रेत्य सुखं वसेत्।।

—विदुर नीति ३/६८

चढ़ती आयु में वह काम करे जिससे बुढ़ापा सुखपूर्वक बीते और जीवनभर वह काम करे, जिससे मृत्यु के उपरान्त भी सुख मिले।

❑ **युक्तियुक्तमुपादेयं वचनं बालकादपि।**
अन्यतृणमिव त्याज्यमप्युक्तं पद्मजन्मना।।
अपि पौरुषमादेयं शास्त्रं चेद्युक्तिबोधकम्।
अन्यतृणमिव त्याज्यं भावयन्याय सेविका।।

—योगवासिष्ठ

बालक की भी युक्तियुक्त बात को मान लें और यदि अयुक्त बात ब्रह्मा कहें तो भी न मानें। युक्तियुक्त लेख चाहे साधारण लेखक का हो तो भी माननीय है। अयुक्तियुक्त शास्त्र चाहे वह किसी ऋषि का ही बनाया क्यों न हो ? घृणा से फेंक देना चाहिए।

❑ **अन्तर्गतमलो दुष्टस्तीर्थस्नानशतैरपि।**
न शुध्यति यथा भाण्डं सुराया दाहितं च सत्।।

—चाणक्यनीति ११.७

जिसका हृदय द्वेष अथवा विकार से दूषित है ऐसा दुष्ट सौ बार तीर्थ स्नान से भी शुद्ध नहीं हो सकता, जैसे मदिरा का पात्र आग में तपाने से भी शुद्ध नहीं होता।

❑ **सम्मानाद् ब्राह्मणो नित्यमुद्विजेत विषादिव।**
अमृतस्येव चाकांक्षेदवमानस्य सर्वदा।।

—मनुस्मृति

ब्राह्मण को सदैव सम्मान से विष की तरह बचना चाहिए और उपेक्षा अथवा अवमानना की अमृत के समान आकांक्षा करनी चाहिए।

❑ **आरोग्यं विद्वत्ता सज्जनमैत्री महाकुले जन्म।**
स्वाधीनता च पुंसां महदैश्वर्यं विनाप्यर्थैः।।

धन न होने पर भी मनुष्य को आरोग्य, विद्वत्ता, सज्जनों के साथ मैत्री, श्रेष्ठ कुल में जन्म और स्वाधीन वृत्ति रखने से ऐश्वर्य प्राप्त होता है।

❑ **कष्टा वृत्तिः पराधीना कष्टो वासो निराश्रयः।**
निर्धनो व्यवसायश्च सर्वकष्टा दरिद्रता।।

पराधीन जीविका से जीवन, आश्रय बिना निवास और धन बिना व्यवसाय बड़ा कष्टकारी होता है और दरिद्रता तो सब प्रकार से कष्ट देने वाली होती है।

❑ संसार को आँसुओं से भरने की अपेक्षा उसे हँसकर उड़ा देना सचमुच अधिक अच्छा है। वास्तव में संसार-चक्र के चलने का यही एक मार्ग है।

—रवीन्द्रनाथ टैगोर

❑ कुछ लोगों को यह संसार कंटकों से भरे हुए वन के समान जान पड़ता है और उन्हें उसमें अपने लिए एक मार्ग ढूँढ़ना पड़ता है। किसी को तो मार्ग मिल जाता है और किसी को नहीं मिलता।

—शरतचन्द

❑ जिसे हम उन्नति कहते हैं, वह वस्तुतः एक बाधा से मिलकर दूसरी बाधा में फँसने का ही नाम है।

—हैवलौक एलिस

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ संसार की क्रूरता और पापी की बात मत करो। इसी बात पर खेद करो कि तुम अभी भी क्रूरता देखने को विवश हो। इसी का तुमको दुःख होना चाहिए कि तुम सब ओर केवल पाप देखने के लिए बाध्य हो। यदि तुम संसार की सहायता करना आवश्यक समझते हो तो उसकी निन्दा मत करो। उसे और अधिक कमजोर मत बनाओ। पाप, दुःख आदि सब क्या हैं ? कुछ भी नहीं, वे कमजोरी के परिणाम हैं। ऐसे उपदेशों से संसार अधिकाधिक कमजोर बन रहा है। *—स्वामी विवेकानन्द*

❑ जो जगत् से दूर होकर, उसकी उपेक्षा करके आत्मा को देखना चाहेगा, वह अहंकार के ही दर्शन करेगा। उसे ही आत्मा समझकर भ्रमित हो जाएगा। यदि एक उठी हुई लहर या व्यक्त हुआ बुलबुला समुद्र से भिन्न अपनी सत्ता में विश्वास करता है तो यह उसकी भूल भर होगी।

❑ आत्मा के दर्शन में जगत् को बाधक समझने पर उससे द्वेष रहता है। घृणा की अनुभूति होती है। यह दोनों अवस्थाएँ आत्म-दर्शन के मार्ग में पहाड़ जैसे अवरोध हैं।

किन्तु जो जगत् में आत्मा और आत्मा में जगत का विश्वास रखता है, उसका द्वन्द्व-द्वेष मिट जाता है और वह आत्मा ही नहीं, मूल आत्मा परमात्मा तक को देख लेता है।

—स्वामी विवेकानन्द

❑ यह संसार एक धर्म-क्षेत्र है, नैतिक संघर्ष के लिए समर भूमि। निर्णायक तत्त्व मनुष्यों के हृदयों में विद्यमान हैं, जहाँ कि वह समर प्रतिदिन और प्रतिघड़ी चल रहा है। पृथ्वी से स्वर्ग तक और दुःख से आत्मा तक धर्म के मार्ग द्वारा ही उठा जाता है।

❑ सृजन की प्रक्रिया दो परस्पर विरोधी तत्त्वों में जो एक-दूसरे के विरुद्ध खड़े होते हैं, निरन्तर तनाव की प्रक्रिया है। जहाँ अच्छाइयों को बढ़ावा देना चाहिए, वहीं बुराइयों का निराकरण भी करना चाहिए। यही सनातन सत्य है।

—डॉ. राधाकृष्णन्

❑ कृष्णदर्शन को उनके अवतार की आत्मा कहना चाहिए। इसलिए उनके शरीर जन्म वाले जन्माष्टमी पर्व से अधिक महत्त्व गीताजयन्ती का है। गीता में भगवान ने अर्जुन को अपना विराट रूप दिखाकर यह बताया कि यह प्रत्यक्ष विश्व ही मेरा साकार रूप है। संसार को सुन्दर, समुन्नत, सुविकसित और सुव्यवस्थित बनाने के लिए, समस्त प्रयत्न ईश्वराराधना हैं। यह प्रतिपादन पूरा एकांगी मान्यता का खण्डन है, जिसमें अमुक नाम-रूप की अनुष्ठानपरक उपासना को ही जीवन-लक्ष्य की पूर्ति का साधन समझा जाता रहा है।

❑ **अन्तः शीतलायां तु लब्धायां शीतलं जगत्।**

—योगवासिष्ठ

जिसने अन्तःकरण को शीतल बना लिया उसके लिए सारा संसार ही शीतल ही है।

❑ जिसके पास श्रद्धा है, जिसने मन और इन्द्रियों को वश में कर लिया है, उसे ही ज्ञान मिलता है। ज्ञान पाकर वह शीघ्र ही शान्ति पा लेता है।

—गीता

❑ शान्ति ठीक वहाँ से शुरू होती है, जहाँ महत्त्वाकांक्षा का अन्त हो। *—यंग*

❑ हृदय के प्रबल उच्छ्वास से ही हृदय में स्फूर्ति पैदा होती है। बुद्धि और विचारशक्ति अच्छी चीजें हैं, लेकिन वे दूर तक नहीं जा सकतीं। भावों से ही गम्भीर रहस्यों का उद्घाटन होता है।

—स्वामी विवेकानन्द

❑ अगर आपके दोस्त आपको सच्चा बताते हैं तो मैं आपको सच्चा मानने में जरूर झिझकूँगा, अगर आपके बैरी आपको सच्चा बताते हैं तो मैं बिना झिझक आपको सच्चा मान लूँगा।

—महात्मा भगवानदीन

❑ आज्ञा का उल्लंघन करने वाले, गुरुजनों के हृदय से दूर रहने वाले शत्रु समान (विरोधी) तथा विवेकहीन साधक को अविनीत कहते हैं।

❑ कर्म के हेतु (कारण) को ढूँढ़ो। क्षमा से कीर्ति प्राप्त करो, ऐसा करने से पार्थिव (स्थूल) शरीर को छोड़कर तू ऊँची दिशा में जाएगा।

❑ कोप करना चाण्डाल कर्म है, यह न करना चाहिए। व्यर्थ बकवाद मत करो। समय की अनुकूलता के अनुसार उपदेश श्रवण कर फिर उसका एकान्त में चिन्तन-मनन करना चाहिए।

❑ भिक्षु कभी असत्य भाषण न करे। कभी भी निश्चयात्मक (अमुक बात ऐसी ही है अथवा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अन्य रूप में हो ही नहीं सकती इत्यादि प्रकार के) वचन नहीं कहने चाहिए। भाषा के द्वेष (द्विअर्थी शब्द प्रयोग, जिससे दूसरे को भ्रम या धोखा हो) से बचे और न मन में कपट भाव ही रखे।

❑ मनुष्य बुद्धि के, परिस्थितियों के प्रलोभन के मायाजाल में फँसे भले ही, आत्म-चेतना को, उस रोक को न माने, लाख पशुता करे, वह चेतना अपना काम करती रहती है। तभी तो बुरे होकर भी प्रशंसा हम भलाई की ही करते हैं, दुष्ट होकर भी विजय हम सज्जनता की ही चाहते हैं। इस प्रकार ऊपर पशुता का लाख अँधेरा छा जाए, हमारे अन्तर में देवत्व का प्रकाश ही रहता है। यही संस्कृति का दीपक है। इसी दीपक के प्रकाश की वाणी है—**"नहि मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किंचित्"** मनुष्य से श्रेष्ठ कुछ भी नहीं है। सभा में चार आदमियों में बैठकर जो आदमी भला लगे, जिसका व्यवहार अच्छा हो, वही सभ्य कहलाता है।

❑ प्राचीनकाल में सिर्फ ब्राह्मणों को ही वेदाध्ययन का अधिकार था, ऐसी बात नहीं है, लेकिन उस समय सारी रचना ही ऐसी थी कि ब्राह्मणों को वेदाध्ययन जैसा कठिन काम करना पड़ता था और साथ-साथ अपरिग्रही रहना पड़ता था। संस्कृत का उच्चारण शुद्ध बनाने के लिए उन्हें सालों तक उच्चारण के पीछे लगना पड़ता था। अतः सम्भव है अन्य लोगों को ऐसा कठिन जीवन बिताने की इच्छा ही न होती हो अथवा इच्छा होने पर भी वे अपने को उस काम के लिए असमर्थ पाते हों। किन्तु मैं यह मानता हूँ कि यदि किसी दूसरे को वेदाध्ययन की इच्छा हो तो उसे उस अधिकार से वंचित रखना अनुचित है। सबको अधिकार न देने से व्यर्थ में झगड़े पैदा होते रहते हैं। इसलिए यदि स्त्रियाँ वेदाध्ययन करना चाहें तो उसमें बाधा डालने की कोई बात होनी ही नहीं चाहिए।

—विनोबा

❑ जहाँ शक्ति का भण्डार न्यून पड़ जाता है, वहाँ सस्ती साधुता अकस्मात आ जाती है। इसके विपरीत जिस मनुष्य में शक्ति का अपार भण्डार है, उसे प्रयत्नपूर्ण उद्देश्यों की ललकार स्वीकार करने में प्रसन्नता प्राप्त होती है। वह शक्तियुक्त जीवन व्यतीत करता है।

जनता किसी की प्रशंसा शक्तिमान अधिकारियों के मुँह से सुनती है, तो उसकी दृष्टि से उस प्रशंसित मनुष्य का आदर-सम्मान शतगुण हो जाता है। सम्पत्ति शक्ति की प्रतीक है। इसलिए सम्पत्ति को पूर्णता-प्राप्ति के हेतु गतिमान और प्रवाहयुक्त होना चाहिए, क्योंकि शक्ति क्रियाशील और गतिमान होती है। *—रवीन्द्रनाथ टैगोर*

❑ **मिरिच करेला कटु जदपि, रुचिकर करि सब खात।**
निज मिठास भरि सेइए, मिमि जग के कटुजात।।

—गिरिजा सतसई

जैसे जल से अग्नि को बुझाया जाता है, उसी प्रकार ज्ञान से मानसिक दुःख को शान्त करना चाहिए। मन शान्त हो जाने पर शारीरिक दुःख भी दूर हो जाता है।

❑ यदि तुम अपने साथ किये गए अहसान को न मानकर कृतज्ञता प्रगट न करोगे तो फिर तुम्हें उससे अधिक आशा न रखनी चाहिए, क्योंकि घूरे पर गुलाल को व्यर्थ ही में कोई बिखेरना नहीं चाहता।

❑ न तो निन्दा पर विचार करो और न प्रशंसा की चाह करो। दूसरे तुम्हारे लिए क्या कहते हैं, इसके लिए चिन्तित होने की तनिक भी आवश्यकता नहीं है। जिस कार्य को तुम्हारी अन्तरात्मा ठीक समझती है, उसी पर सच्चे हृदय से आरूढ़ रहो। विरोधी लोग एक दिन समर्थक बन जाएँगे।

❑ यह दुनिया तुम्हारे कार्यों की प्रशंसा करती है, तो इसमें कुछ भी बुरा नहीं, खतरा तब है, जब तुम प्रशंसा पाने के लिए किसी काम को करते हो।

❑ संसार में अप्रिय घटनाएँ होती हैं, तुम विश्व की समस्त घटनाओं को अपने अनुकूल नहीं बना सकते। इस दुःख से छूटकर सुख प्राप्त करने का यह उपाय है कि घटनाओं को ईश्वर की इच्छा समझकर शान्त रहो और धर्म समझ कर अपने कर्त्तव्य का पालन करते जाओ।

❑ किसी अपाहिज, अनाथ और दुःखी मनुष्य की हँसी मत उड़ाओ। क्या पता तुम्हारा भाग्य तुम्हारी हँसी कब उड़ा दे ?

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

- सर्वोत्तम सफलता उसे मिलती है, जो अपने काम में तन्मय हो जाता है और उसे करते-करते अपने को भूल जाता है।
- विवाद करने का तरीका न जानने से ही मनुष्य बहुधा बात करते हुए उत्तेजित होकर लड़ने लगते हैं।
- किसी के दोषों को प्रकट करना सरल है, पर किसी के गुणों का बखान करना बहुत ही कठिन है।
- यदि तुम किसी की भलाई अथवा सेवा नहीं कर सकते तो कम से कम किसी के साथ बुराई तो मत करो।
- पृथ्वी भर पर विचरण करो, जो कुछ भी सीखने लायक हो सीखो और किसी के अधीन मत हो।
- जो मनुष्य द्वेष करने वालों के साथ द्वेष नहीं करता, जो डण्डे का प्रयोग करने वालों के मध्य में भी शान्त रहता है, जो विषयों में फँसे हुए लोगों के मध्य में भी स्वतन्त्र है, वही ब्राह्मण है।
- विचारमाला प्रत्येक कार्य की जननी है एवं चित्त की एकाग्रता या चित्त-संयम उसका स्वामी है। इसलिए प्रत्येक प्राणी अपने विचार और कर्मों को सदैव ध्यान से देखे।
- दूसरों में जो बुराइयाँ हमें दिखा करती हैं, वे प्रायः हमारे ही हृदय के बुरे-भले भावों का प्रतिबिम्ब मात्र होती हैं। यदि हमारे अन्दर बुरे तत्त्व अधिक हैं तो हमें सामने वाले की बुराइयाँ पहले और अधिक दिखाई देंगी। यदि हममें अच्छे तत्त्व अधिक हैं तो अच्छाइयाँ दिखाई देंगी।
- ज्यों-ज्यों मनुष्य का अन्तःकरण निर्मल और निष्पाप होता जाता है, त्यों-त्यों उसे अपने छोटे-छोटे दोष भी दिखाई देने लगते हैं। अपने दोषों की स्वीकृति से चित्त को बड़ा आत्म-सन्तोष होता है। इससे वह अपने प्रति कठोर और दूसरों के प्रति उदार होता जाता है।
- मनुष्य सहस्र बार नीचे गिरता है, उसे सहस्र बार ऊँचे उठने का प्रयत्न करना चाहिए, प्रति बार उस सीमा से कुछ अधिक ऊँचा जहाँ से वह गिरा था। पूर्णता प्राप्त करने का यह अव्यर्थ साधन है।
- अधिकार पाकर उनका दुरुपयोग या अन्याय करना ही परीक्षा में असफल होना है और अनेक कष्टों तथा कठिनाइयों के पड़ने पर भी अपने धर्म और न्याय पर डटे रहना परीक्षा में सफल होना है।
- सज्जनों के साथ नर्क में रहना अच्छा, पर दुर्जनों के साथ स्वर्ग में रहना अच्छा नहीं, क्योंकि सज्जन लोग अपने पुनीत कर्त्तव्यों से नर्क को भी स्वर्ग बना लेते हैं और दुर्जन लोग स्वर्ग को भ्रष्ट करके उसे नर्क बना डालेंगे।
- मनुष्यता सीखने की सबसे बड़ी पाठशाला अपना घर है। स्नेह और त्याग, क्षमा और उदारता की भावनाओं के विकास के जितने सुन्दर अवसर अपने घर में मिल सकते हैं, उतने और कहीं नहीं मिल सकते।
- खोया हुआ धन उद्योग से फिर प्राप्त होगा, नष्ट हुआ आरोग्य मिताहार से फिर मिलेगा, भूला हुआ ज्ञान अभ्यास से फिर ताजा होगा परन्तु खोया हुआ समय क्या किसी ने फिर देखा है या खोया हुआ अवसर फिर पाया है ? नहीं।
- दुनिया में बुराई की कालिमा अधिक है, पर वह भलाई की उज्ज्वलता से अधिक नहीं है। यदि यहाँ भलाई की अपेक्षा बुराई अधिक होती तो कोई भी प्राणी इस संसार में रहना पसन्द न करता।
- दूसरे की त्रुटियों और बुराइयों को ही न ढूँढ़ते रहो, अपनी ओर भी देखो, जो अपनी बुराइयाँ सुधारने के लिए प्रयत्नशील है, उसे ही दूसरों की बुराई ढूँढ़ने का अधिकार है।
- जो मौन रहता है वह मुनि नहीं। मुनि वह है जो सत्य का मनन करता है और सत्य पर आरूढ़ रहता है।
- आदमी जितना सोचता है, उतना बोल नहीं सकता, जितना बोल सकता है, उतना लिख नहीं सकता। जितना लिख सकता है, उतना कार्य नहीं कर सकता। इस सिद्धान्त के विरुद्ध जो आदमी कार्य करता हुआ दिखाई देता है, वह शीघ्र ही उन्नति के शिखर पर चढ़ जाता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

- हम सुख चाहते हैं। सुख का मूल्य चुकाओ बिना चुकाये वह किस प्रकार मिल सकता है ? हलुवा खाने से पहले कोयले में काले हाथ करके आग जलानी पड़ती है।

- यदि सच्ची शान्ति की स्थापना करनी है तो उसकी पूरी कीमत चुकानी होगी। शान्ति की पूरी कीमत यह है कि जो बलवान हैं, वे लोभी होना छोड़ दें और जो निर्बल हैं, वे बलवान बनना सीखें।

- अच्छे सैनिक झगड़ालू नहीं होते, अच्छे योद्धा आपे से बाहर नहीं होते। सर्वश्रेष्ठ विजेता वे हैं जो बिना युद्ध किए अपने बैरियों के हृदय पर विजय पाते हैं।

- प्रकृति की प्रवृत्ति है—प्रगति। वह अपने से सम्बन्धित हर प्राणी और पदार्थ को साथ लेकर उसी ओर ले चलना चाहती है, जिस ओर कि वह स्वयं जा रही है। जो पिछड़ते, लड़खड़ाते और शिथिलता अपनाते हैं, उन्हें वह पतन का अभिशाप देकर आगे बढ़ती चली जाती है।

- सद्उद्देश्य और सत्कर्म अपने आप में दैवी वरदान के समान हैं; जो श्रेष्ठ हैं, उनके असफल होने का कोई कारण नहीं है। इस स्थिति के रहते, किसी से आशीर्वाद माँगने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

- सिद्धान्त ऊँचे जीवन का ढाँचा है। उसे सत्य की रूपरेखा, सजीव जीवन का सौन्दर्य एवं सुडौल उपक्रम भी कह सकते हैं।

- मैंने चार गुरु चुने हैं और उन्हें हर दिन याद रखा है। एक भगवान, दूसरे मौत, तीसरे नेकी करने वाले और खुश रहने वाले, चौथे बुराई की राह पर कदम बढ़ाने वाले और पग-पग पर ठोकरें खाने वाले।

- क्रोधान्ध एक प्रकार का पागल है। वह न कहने योग्य वचन बोलता है और न करने योग्य काम करता है। बदला लेने के आवेश में वह दूसरों का जितना अहित करता है, उससे अधिक गुना अपना कर लेता है।

- बूढ़े अतीत की चर्चा करते और बच्चे भविष्य के सपने देखने में निरत रहते हैं। समर्थ और वयस्क मात्र वर्तमान को देखते हैं। उसमें जुटते हैं जो आज ही करना है।

- विचार मानसिक कारखाना है और उससे सम्बन्धित सारी सच्चाइयाँ, उसका कारखाने में उपयोग आने वाला कच्चा माल। जो सभ्यता हम आज देख रहे हैं, वह किसी के दिमाग की कभी उपज रही होगी, जिसे क्रियान्वित किया गया। अच्छे विचारों को पनपने दें और आचरण का बल प्रदान करें।

- चिन्ता नहीं विचार करें। सारे दिन चिन्ता के बाद भी कुछ हाथ न लगेगा, पर जब कभी भी समस्या का समाधान हाथ लगा है, वह ठीक सोचने और करने से ही लगा है।

- प्रकृति अपनी परम्परा नहीं बदलती। वह हर अकर्मण्य पर रद्दी की मुहर लगाती और कूड़े के ढेर में पटकती जाती है।

- क्रोधी तुम्हारे विवेक की परीक्षा लेता है और क्रोध यह पूछता है कि तुम तर्क और प्रेम से उसका सामना कर सकते हो या नहीं ?

- धन गया तो कुछ गया। स्वास्थ्य गया तो बहुत कुछ गया और चरित्र गया तो समझो सब कुछ चला गया।

- नई वस्तु ही प्रिय लगती है। पुरानी के प्रति अरुचि होनी लगती है। इसका सीधा अर्थ है कि आज की नई वस्तु भी कल पुरानी और अरुचिकर लगने लगेगी।

- जो मन की लालसाओं का गुलाम है, वह न कभी प्रतिभावान बन सकता है और न दूसरों का नेतृत्व करने योग्य है।

- सौन्दर्य पर अपने को निछावर करना वैसा ही है, जैसा कि किसी बन्दर का मदारी के हाथों पराधीन हो जाना।

- रावण ने काल को पाटी से बाँध लिया था। इसी सफलता के कारण उसे अनेकानेक सिद्धियाँ-सफलताएँ मिली थीं। काल पाटी से बाँध लेने का अर्थ है समय की पाबन्दी। हाथ में घड़ी बाँधने का अभिप्राय भी यही होना चाहिए।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

- स्वर्णमहल जितनी सम्पदा और समुद्र की खाई जैसी सुरक्षा-व्यवस्था बनाने वाला रावण जिस काल के गाल में चला गया, उससे और किसका बचाव हो सकता है ?

- परिस्थितियाँ किसी को मजबूत या कमजोर नहीं बनातीं, वरन् वे तो सिर्फ यह सिद्ध करती हैं कि वस्तुतः वह था क्या ?

- हम न तो अपनी पीठ देख सकते हैं और न बुराई। इसलिए यह कार्य दूसरों द्वारा किया गया है तो उससे वस्तुस्थिति समझने का लाभ उठाएँ।

- टिड्डे बरसात में हरे हो जाते हैं और गर्मी में पीले। इसका कारण किसी छात्र ने अपने अध्यापक से पूछा।

  शिक्षक ने समझाया कि बरसात का वातावरण हरा रहता है। उसका प्रभाव टिड्डे का रंग भी अपने अनुरूप बना लेता है। गर्मी के दिनों में सब कुछ सूखा रहता है। सूखापन पीला होता है, उसी के अनुरूप टिड्डे भी पीले पड़ जाते हैं।

  जो व्यक्ति जैसे वातावरण में रहता है, वह भी वैसा ही ढल जाता है।

- विजेता आतंक जमाता है। ज्ञानी का हम आदर करते हैं, लेकिन उदार हमारा अन्तःकरण छूता है।

- पर्वतों की कन्दरा मत ढूँढ़ो। जमीन में गुफा न खोदो। अन्तर्मुखी बनो और अपने अन्तःक्षेत्र को सँभालने-सुधारने में लग जाओ, एकान्त साधना का यही सही स्वरूप है। इसके लिए कोलाहल रहित स्थान ढूँढ़ लेने भर से काम चल जाएगा।

- हो सकता है कि किसी को कार्य करने पर भी आनन्द न मिले, पर इतना निश्चित है कि आनन्द उसी को मिला है, जिसने कर्त्तव्य मार्ग पर चलते रहने का निश्चय किया।

- श्रेष्ठ पुरुष दूसरे पापाचारी प्राणियों के पाप को नहीं ग्रहण करता, उन्हें अपराधी मानकर उनसे बदला लेना नहीं चाहता। इस उत्तम सदाचार की रक्षा करनी चाहिए, क्योंकि सदाचार ही सत्पुरुषों का भूषण है।

- जो मनुष्य दूसरों की जीविका नाश करते हैं, दूसरों का घर उजाड़ते हैं, दूसरे की स्त्री का उसके पति से वियोग कराते हैं और मित्रों में भेद-भाव उत्पन्न करते हैं, वे अवश्य नरक में जाते हैं।

- नशे में क्रोध की भाँति ग्लानि का वेग भी सहज में ही उठ आता है।

- जीवन में निम्नलिखित तीन बातों का सदा स्मरण रखो—(१) क्रोध में क्षमा, (२) अभाव में उदारता, (३) अधिकार में सहिष्णुता।

- यह दुनिया एक पागलखाना है, जहाँ के सभी व्यक्ति पागल हैं। कुछ धन के पीछे, कुछ स्त्री के पीछे, कुछ नाम और यश के पीछे और थोड़े-से ईश्वर के पीछे पागल हैं। मैं ईश्वर के पीछे पागल होना अच्छा समझता हूँ। ईश्वर दार्शनिकों का एक ऐसा पत्थर है, जो कि एक क्षण में हमें स्वर्ग बना देता है। रूप वही रहता है, लेकिन प्रकृति बदल जाती है। मनुष्य का रूप वही रहता है, लेकिन पाप का कोई असर नहीं होता।

- जो ज्यादा काबू पाते हैं या ज्यादा काम करते हैं, वे कम से कम बोलते हैं। दोनों साथ मिलते ही नहीं। देखो, कुदरत सबसे ज्यादा काम करती है, सोती नहीं, लेकिन मूक है।

- यदि हम इस नियमबद्ध संसार में स्वतन्त्र और स्वाधीन बनना चाहते हों तो हमारे स्वतन्त्र विचार होने चाहिए और हमें दूसरों के स्वतन्त्र विचारों का आदर करना चाहिए।

- सोने की परीक्षा अग्नि में पड़ने पर होती है, इसी प्रकार प्रलोभन और आपत्ति की उपस्थिति होने पर मनुष्य के व्यक्तित्व की परख होती है।

- पाप से घृणा करो, असंयम से द्वेष करो, दुष्ट आचरणों से बैर करो, कुविचारों का अपमान करो और अन्याय से लड़ पड़ो। जिनमें यह दोष हों उनसे अलग रहो, किसी भी व्यक्ति से दुर्भाव न रखो।

- रूस के उपन्यासकार और नोबेल पुरस्कार विजेता डॉ. बोरिस पास्तरनाक ने अपनी पुस्तक 'डाक्टर जिवागो' में एक स्थान पर लिखा है—"जो लोग स्वतन्त्र नहीं होते वे अपनी गुलामी को ही आदर्श बना लेते हैं।" इस तथ्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

को हम अपने चारों ओर बिखरा देखते हैं। जिन्हें ज्ञान की राह मालूम नहीं, उनके लिए अज्ञान ही आदर्श है। जो सत्य से दूर हैं, उनके लिए असत्य ही आग्रह बन जाता है।

❑ दुनिया की तीन मूर्खताएँ कितनी उपहासास्पद होते हुए भी कितनी व्यापक हो गई हैं। यह देखकर आश्चर्य होता है। एक यह कि लोग धन को शक्ति मानते हैं। दूसरी यह कि लोग अपने को सुधारे बिना दूसरों को धर्मोपदेश देते हैं। तीसरी यह कि कठोर श्रम से बचे रहकर भी आरोग्य की आकांक्षा की जाती है।

❑ मानवजाति सहानुभूति की सर्वत्र लालसा करती है। शिशु उत्सुकतापूर्वक अपनी हानि का प्रदर्शन करता है। इतना ही नहीं प्रचुर सहानुभूति प्राप्त करने के लिए घाव या चोट भी लगाता है। इसी अभिप्राय से वयस्क लोग अपने-अपने घाव दिखलाते, अपनी दुर्घटनाएँ, रोग और डॉक्टरी ऑपरेशनों की छोटी-छोटी बातें सुनाते हैं। यह आत्मदया की वृत्ति एक विश्वव्यापी प्रथा है। दूसरे व्यक्तियों को अपने विचार का बनाने के लिए उसके विचारों और अभिलाषाओं के साथ सहानुभूति प्रकट कीजिए।

❑ "जो मन नहीं मार सकता, जिसे झुकना और छोटा बनना नहीं आता, जिसे दूसरों की सुविधा और दूसरे को निभाने की दृष्टि से झुकना और राह छोड़ना नहीं आता, वह जिन्दगी में भी कुछ नहीं कमा पाता, जिन्दगी का सन्तोष भी नहीं।"

❑ छोटे काम करना और उन्हें खूबसूरती से पूरे करते चलना प्रकारान्तर से बड़े काम कर सकने की योग्यता अर्जित करना है।

❑ भाग्यवान् का एक ही लक्ष्य है—दूरदर्शिता से काम लेना। अभागे की एक ही पहचान है तुरन्त का लाभ देखकर कुकर्म करना और भविष्य के परिणाम पर विचार न करना।

❑ धन की नहीं यश की रक्षा करो। लोगों की आँखों में गिर जाने के उपरान्त तुम गये-गुजरे गरीब बन जाते हो।

❑ बड़ाई सुनने का लालच न करो। ढिंढोरा न पीटो, न पिटवाओ। ढोंगी लोगों की तरह मंच सजाने और बढ़-चढ़कर बातें करने का प्रयत्न न करो। जो देना है दायें हाथ से ही दे डालें ताकि बायाँ हाथ उसे जान न पाए।

❑ भलाई इसलिए करो कि ईश्वर को प्रसन्नता हो। दीपक की तरह जलो ताकि उजाला फैले। उचकने की कोशिश न करो। दीपक सदा दीवट पर रखा जाता है। उपयुक्त जगह उसे अनायास ही मिल जाती है।

❑ यह मत देखो किसको प्रिय लगा, किसको अप्रिय ? किसकी हानि हुई, किसको लाभ पहुँचा ? मात्र आदर्श को अपनाओ। वे ही अपना-पराया वास्तविक हितसाधन करते हैं।

❑ आदर्शों से प्रेम करो ताकि वह सीमित न रहें और उनके प्रकाश में हर सज्जन प्रियपात्र बन जाए।

❑ सम्मान सबका करो, किन्तु विश्वास केवल उनका जो प्रामाणिकता की कसौटी पर अनेक बार परखे जा चुके हैं।

❑ मर्यादा और लज्जा किसी अवस्था-भेद से प्रादुर्भूत नहीं होते। अपने कर्त्तव्य का भली-भाँति पालन करो, इसी में सच्ची मर्यादा का वास है।

❑ तृष्णा का कहीं ओर छोर नहीं है, उसका पेट भरना कठिन होता है, वह सैकड़ों दोषों को ढोये फिरती है, उसके द्वारा बहुत-से अधर्म होते हैं। अतः तृष्णा का परित्याग कर दें।

❑ बुद्धि को व्यवस्थित स्मृति में रूपान्तरित कर समग्र आत्मा को ज्ञान ज्योतिस्वरूप बनाओ, यही तुम्हारा लक्ष्य है।

❑ दान, तप, विद्या और सम्पदा की दृष्टि से जिसके यश का बखान नहीं करते वह सन्तान अपनी माता के मुख के समान है।

❑ जब तक विषमता रहेगी, तब तक दमन और विद्रोह का सिलसिला चलता रहेगा। चैन किसी को न मिलेगा। शान्ति के लिए आवश्यक है कि समता उत्पन्न करने वाली व्यवस्था बने।

❑ दुःख और गतिरोध किसी अनौचित्य का प्रतिफल है, भले ही वह अपना किया हो या किसी अन्य का। सन्मार्ग अपनाये जाने पर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दुःख या तो मिलता ही नहीं अथवा वह असह्य नहीं होता।

- नेकी करो कुएँ में डालो। उपकारों का ढिंढोरा न पीटो। नेकी के प्रतिफल भले ही कुकरमुत्ते की तरह न उगें, पर उसकी जड़ें दूब की तरह सदा सजीव रहती हैं।
- इस बात की परवाह मत करो कि लोग तुम्हें क्या कहते हैं ? लोग तो अपने-अपने मन की कहेंगे। वे राग, द्वेष का जैसा चश्मा चढ़ाये होंगे, वैसा ही कहेंगे। उनकी प्रशंसा में भूलो मत और उनकी निन्दा से घबराकर लक्ष्य से मत हटो।
- किसी सत्य की खोज करके संसार के सामने रखते समय यह विश्वास न करना चाहिए कि लोग उसे आसानी से स्वीकार कर लेंगे। संसार हर उस नई बात से चाहे वह उसके लिए प्रत्यक्ष रूप में कितनी ही उपयोगी तथा कल्याणकारी क्यों न हो, प्रारम्भ में बिदकता ही है। इसमें उसका कोई दोष नहीं है। वह अपने प्राचीन संस्कारों के कारण ही ऐसा करता है।
- संसार अधिकतर अबोध ही रहता है और अपनी इस अबोधता के कारण ही उसके संस्कारों में एक ऐसी कायरता घर कर जाती है जो उसे किसी नई खोज या नये निष्कर्ष को स्वीकार करने में भय दिखाती है। संसार की यह कायरता धीरे-धीरे दूर होती है। इसमें सहसा क्रान्ति उत्पन्न कर देने से किसी भयानक सांस्कारिक संघर्ष का भय रहता है। मनुष्य को सच्चे हृदय से काम करना चाहिए और धैर्यपूर्वक निर्लिप्त भाव से परिणाम की प्रतीक्षा करनी चाहिए।
- दूसरे को दुःख देना तो अज्ञानता है, परन्तु दूसरे के प्रति दुःख उठाना सत्य के नजदीक पहुँचना है। दुःख ही लोगों को दया और कृपालुता सिखाता है।
- किसी दूसरों में दोष बतलाना स्वयं अपने दोषों को बतलाना है। लोग समझ लेते हैं कि यह अपने दोषों की दूसरों पर रखकर प्रकट कर रहा है।
- इच्छाओं की पूर्ति से जो सन्तोष होता है, वह क्षणिक और काल्पनिक होता है। इससे इच्छा-पूर्ति की और अधिक चाह बढ़ती है। सच्चा सुख—जिसे आनन्द और शान्ति भी कहते हैं। यह वह अवस्था है, जिसमें किसी प्रकार की इच्छा नहीं होती।
- वास्तविकता बहुत देर तक छिपाए नहीं रखी जा सकती। व्यक्तित्व में इतने अधिक छिद्र होते हैं कि उनमें होकर गन्ध दूसरों तक पहुँच ही जाती है। इसलिए कमजोरियों पर, गन्दगी पर आवरण न डालकर उनके निष्कासन के, स्वच्छता के प्रयासों में निरत रहना चाहिए।
- किसी द्रव्य के प्रति राग-द्वेष न हो, जो सुख-दुःख में समभाव रहता है, उसे न पुण्य का आश्रय होता है और न पाप का।
- वानप्रस्थ परम्परा भारतीय संस्कृति का मेरुदण्ड है। परिष्कृत व्यक्तित्व और समाज की संरचना इसी पुण्य-प्रक्रिया के आधार पर चलती रही है। हममें से प्रत्येक को ढलती आयु में परमार्थ प्रधान जीवनयापन के लिए वानप्रस्थ की तैयारी करनी चाहिए।
- दो बातें भूल जाने योग्य हैं। एक वह नेकी है जो अपने द्वारा किसी के साथ बन पड़ी और दूसरी वह बदी जो दूसरे ने अपने साथ की। दो बातें याद रखने योग्य हैं। एक—कर्त्तव्य, दूसरा—मरण।
- उतावली न करो। प्रकृति के सब काम एक निश्चित गति से चलते हैं।
- क्रान्तियाँ तलवारों से नहीं आदर्शों से होती हैं। जो मात्र तलवार से पायी जाती हैं, वह तलवार से छिन भी जाती हैं।
- संगति का असर इसलिए पड़ता है कि वह सोये हुए संस्कारों को जगा देती है। भले-बुरे संस्कार सभी में हैं, पर वे तब तक नहीं जागते, जब तक कि आग को ईंधन की तरह संगति न मिले।
- क्या आप बतायेंगे मूर्ख कौन है और बुद्धिमान कौन ? एक बार एक मित्र ने प्रेसीडेण्ट जॉनसन से यह प्रश्न किया। जॉनसन ने सहज भाव से उत्तर दिया—"जो केवल अपने अनुभवों को प्राथमिकता देता है, उन्हें ही सब कुछ मानता है, वह मूर्ख है। जो दूसरों के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अनुभवों से भी लाभ उठाये वह बुद्धिमान।" जॉनसन ने, इसी तारतम्य में मुसकराते हुए कहा—"और जो अपने-पराये किसी के अनुभव से लाभ न उठाये वह तो निरा पशु ही कहा जाएगा।"

- सदा मृत्यु का स्मरण रहे तो दुष्कर्म बन भी न पड़ें। चक्रवर्ती भरत निरन्तर जनसमुदाय में घिरे रहते थे। उन्हें भय हुआ कि कहीं इस मेले में अपने को ही न भूल बैठूँ। प्रातः आशीर्वचनों की ध्वनि बजाकर जगाने वाले वादकों को बुलाकर उसने कहा—"कल से वह ध्वनि बजाया करो **वर्धते भयम् वर्धते भयम्** भय बढ़ रहा है। खतरे को ध्यान में रखो और जागो।"

- बच्चे परमात्मा का स्वरूप होते हैं। उनमें निश्छलता स्वाभाविक एवं प्रकृतिदत्त होती है। जाति-पाँति, भाषा-भेद, ऊँच-नीच और आगे-पीछे का ज्ञान उनमें नहीं होता, अतः उन्हें निर्दोष और आदर्श कहा जा सकता है। कमी होती है तो मात्र इतनी कि वे अबोध होते हैं।

- वास्तव में हमें जो आवश्यकता है, उचित रूप से चाहिए, वह हमें प्रभु अवश्य देते हैं तथा आगे भी जो आवश्यकता होगी, उसकी पूर्ति भी वे अवश्य करेंगे। जो हमें प्राप्त नहीं, उसकी आवश्यकता भी हमें नहीं। हमारे लिए जो आवश्यकता है, वह प्रभु न दें यह असम्भव है, क्योंकि उन जैसा स्वामी, रक्षक, हेतुरहित दयालु भर्ता कोई नहीं है। केवल हमारी इच्छाएँ किवाड़ बनकर हमें प्रभु के दान से वंचित कर रही हैं।

- आवेश में आदमी एक बार कुछ भी कर सकता है, किन्तु निरन्तर छोटे-बड़े कामों में आदर्शों का समावेश करते रहना मात्र सिद्धान्तवादियों का काम है।

- एक साधक ने अपना जीवन आदर्श के ढाँचे में ढाला। पवित्रता और प्रखरता बढ़ने से वह नर-नारायण समझा जाने लगा। उसकी आकृति मात्र नर की थी, पर अन्तराल में विद्यमान प्रकृति नारायण जैसी थी।

  कोई व्यक्ति नर से नारायण बन सकता है।

- कुपात्र को नहीं दूँगा, ऐसा मत कहो। तुम्हारे उद्यान के फूल ऐसा भेदभाव नहीं करते और न चारागाह ही गायों पर ऐसा प्रतिबन्ध लगाते हैं। हवा और सूरज तुम्हें अपने अनुदान देते समय क्या परख करते हैं ? फिर तुम्हीं इतनी गहरी छान-बीन और जाँच-पड़ताल किसलिए करने लगे ?

- जो तुम्हें बुरा लगता है, उसका समर्थन, अनुमोदन भी न करो।

- ज्ञान मोम की तरह है। कला की गर्मी उसे गलाती है और आकर्षक प्रतिमाओं की आकृति में उसे ढालती है। इसी नयनाभिराम संरचना को सौन्दर्य की संज्ञा दी जाती है।

- कला क्या है ? इसका उत्तर रस्किन के शब्दों में इस प्रकार दिया जा सकता है कि "मनुष्य की बाहर की भावनाओं का प्रबल प्रवाह जब रोक नहीं सकता तो वह कला रूप में फूट पड़ता है।"

- लोगों को निन्दा-स्तुति की तुम्हें जितनी ही अधिक चिन्ता होगी, उतना ही तुम अपने आत्मा का चिन्तन कम करोगे।

- अपने को तो हारना भला है, जगत को जीतने दो। जो हारता है, वह हरि से मिलता है और जो जीतता है वह यम के द्वार पर जाता है।

- अधूरा काम और अधकुचला सर्प कभी भी उलटकर आक्रमण कर सकता है और असावधान को नीचा दिखा सकता है।

- पुष्पवाटिका में भी गोबर का कीड़ा अपनी रुचि के अनुसार गन्दगी ही तलाश करता है और उसी में लिपटा रहता है। मधुमक्खी फूलों को पकड़ती है और पराग चूसकर शहद जमा करती है। ओछे मनुष्य संसार की गन्दगी को ही देखते-खोजते हैं और उसी में उलझे रहते हैं। अच्छे लोग श्रेष्ठता ही देखते-सोचते और श्रेष्ठता में ही निमग्न रहते हैं।

- 'जिस प्रकार ऊसर जमीन में बीज नहीं जमता, उसी प्रकार दुष्ट मनोवृत्तियों से घिरे हुए हृदय में सद्वृत्तियों का प्रादुर्भाव नहीं होता।"

- उस पर विश्वास न करो जो मुँह सामने तुम्हारी प्रशंसा के पुल बाँधता रहता है, सच्चे प्रशंसक को वैसा करने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

—खलील जिब्रान

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

- सच्चे हृदय से कार्य किए जाओ, किन्तु यह मत सोचो कि तुम्हारा मार्ग ही सत्य है और सब असत्य।

- अपनी कटी हुई उँगली मत दिखाओ। अपना दुःख दूसरों के सामने मत कहो, क्योंकि बुरे आदमी तुमको अधिक सतावेंगे। वे बुरे समय की खोज में ही रहते हैं, घाव पर चोट प्रायः लग ही जाती है।

- प्रत्येक व्यक्ति अपने विचारों के वायुमण्डल में ही निवास करता है और प्रत्येक की आत्म-सूचना का प्रभाव उस पर अप्रतिहत हुआ करता है।

- आज तत्त्वदर्शी, मनीषीगण वायुमण्डल के प्रदूषण से नहीं, सूक्ष्म वातावरण के बिगड़ने से अधिक चिन्तित हैं। वे जानते हैं कि वातावरण का प्रवाह मानवीय तूफानों से भी अधिक सशक्त होता है। कभी युद्धोन्माद का प्रवाह बहता है तो कभी विलासिता की लहर दौड़ने लगती है। नाजीवाद और फ्रांस के विकास की अवधि में इसे अच्छी तरह से देखा गया है कि वातावरण कितना सशक्त होता है ? इन दिनों व्यक्तिवादी संकीर्णता, प्रत्यक्षवादी भौतिकता का रंग हर किसी पर चढ़ा हुआ है। ऐसे में उपचार स्थूल स्तर पर नहीं सूक्ष्म स्तर पर सत्प्रवृत्ति संवर्द्धन के रूप में, आदर्शवादी दूरदर्शिता के व्यापक प्रचार-प्रसार के उपचार चल रहे हैं और संकीर्ण स्वार्थपरता का अन्त सन्निकट है।

- दूध में पानी मिलाया जाय तो घुल जाएगा, किन्तु उसी से निकला हुआ मक्खन ऊपर तैरता रहेगा। आत्महीनताग्रस्त लोग मनुष्यों की भीड़ में वैसे ही बन जाते हैं, किन्तु ज्ञानी पुरुष अपना व्यक्तित्व बुरों के बीच भी ऊँचा बनाये रखते हैं।

- **तृणादपि सुनीचेन तरोरपि सहिष्णुना।**
  अमानिना मानदेन कीर्तनीयः सदा हरिः।।
  तृण से भी छोटा बने, वृक्षों से भी अधिक सहिष्णु बने, मद और मान छोड़ दे। ऐसा बनकर हरि का भजन करे।

- धैर्यवान—वह है जो सुख-दुःख, धन-क्षीणता और वृद्धि में सामान्य रहता है।

- विचारवान—वह है जो अपने अवगुणों और दूसरों के गुणों को याद रखता है और कोई वचन बिना समझे मुख से नहीं निकालता।

- ज्ञानी—वह है जिसके मन में संसार के सुख-दुःख से विकार उत्पन्न नहीं होता तथा सत-असत का ज्ञाता हो।

- बलवान—वह है जो इन्द्रियों के प्रबल वेग को रोके।

- रूपवान—वह है जो विद्या, नम्रता, लज्जा, सत्य, शीलता और धर्म के सद्गुणों से अलंकृत हो।

- बुद्धिमान—वह है जो समय का रंग देखकर काम करे।

- डर को आप चाहे जितनी कोशिश करें, कोशिश से नहीं निकाल सकते, इसलिए यह जोर आजमाई बन्द कीजिए। अपने डर के विचार से कहिए "मैं तुम से नहीं डरता"। बस आपका हृदय साहस से भर जाएगा और डर का कोई मूल्य न रहेगा।

- अपनी बुद्धि से मानसिक क्लेशों को और वनस्पति निर्मित दवाओं से शारीरिक दुःखों को दूर करो। मनुष्य के विज्ञान की यही सामर्थ्य है। इस राह को छोड़कर बालकों के से काम मत करो।

- अच्छे काम आरम्भ में असम्भव लगते रहते हैं, पर पीछे इसलिए सरल हो जाते हैं कि ईश्वर भलाई की सहायता करने को उतर आता है।

- संसार में असम्भव कार्य सम्भव हो सकता है, किन्तु क्षुधा की ज्वाला से जलते हुए हृदयों में उच्च विचारों के अंकुर शेष नहीं रह सकते और न बिना उस ज्वाला को मिटाये पुनः जमाये जा सकते हैं।

- पौराणिक रूपकों या छायाओं से परे जो सत्य है, वही हम रहस्यवादी या छायावादी का लक्ष्य है। इन छायाओं के आधार से सत्य को प्राप्त करने वाले लोग छायावादी कहे जा सकते हैं, पर छाया उनका वाद नहीं—उनका वाद सत्य है, अतः वह सत्यवादी है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ गलती ज्ञान की शिक्षा है। जब तुम गलती करो तो उसे बहुत देर तक मत देखो। उसके कारण को ले लो और आगे की ओर देखो। भूत बदला नहीं जा सकता, भविष्य अब भी तुम्हारे हाथ में है।

❑ हम लोगों को बालकों पर दया करनी चाहिए, क्योंकि वे बच्चे हैं। स्त्रियों को क्षमा करना चाहिए, क्योंकि वे अबला हैं। शासकों पर दया करनी चाहिए, क्योंकि उन्हें बहुत कुछ निर्णय करना होता है और वे भूल कर सकते हैं। सज्जनों को क्षमा करना चाहिए, क्योंकि उनका अभिप्राय प्रत्येक कार्य में अच्छा ही रहता है। दुर्जन दया के पात्र हैं, क्योंकि उनका भविष्य अन्धकारमय है।

❑ पाप शीघ्र बढ़ता है, परन्तु पानी के बुलबुलों की भाँति नष्ट भी शीघ्र ही हो जाता है। नेकी देर में फैलती है, परन्तु सदा जिन्दा रहती है। काल का भयानक चक्र और बड़ी-बड़ी क्रान्तियाँ उसे मिटा नहीं सकतीं।

❑ • थोड़ी भी विषय-बुद्धि रह जाती है तो भगवान के दर्शन नहीं होते। दियासलाई की सींक भीग जाए तो कितना ही रगड़ो, जलेगी नहीं, विषयासक्त मन गीली दियासलाई है।

❑ दुनिया को दुष्टता से उतना खतरा नहीं, जितना कि अच्छाई की दुर्बलता से। भलाई का साहसहीन रहना ही बहुत बड़ी बुराई है। घने बादलों से रात नहीं होती। सूरज के निस्तेज होने से ही अँधेरा फैलता है।

❑ आप चाहते हैं कि बहुत-से मित्र हों तो अपना स्वभाव आकर्षक बनाइए।

❑ जवानी और बुढ़ापे का आधार आयु पर नहीं, हृदय पर है।

❑ संसार के दुःखों की जड़ तृष्णा है।

❑ आप शायद सिनेमा देखते होंगे। पैसे खर्च कर सिनेमा भवन के दूषित वातावरण में घण्टों बैठ सकते हैं, पर यदि स्वाध्याय के लिए चाहे आधा घण्टा के लिए ही आपको कहा जाए तो सम्भवतः आपका उत्तर होगा "समय नहीं मिलता"। यह कैसी विडम्बना है ? मैं सोचता हूँ—काश, मनुष्य कुछ अधिक विचारवान हुआ होता।

❑ **मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णा-**
स्त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः।
परगुणपरमाणून्पर्वतीकृत्य नित्यं
निजहृदि विकसंतः संति संतः कियन्तः।।
जिनका मन, वचन और शरीर पुण्य रूपी अमृत से पूर्ण है, जो अपने उपकारों से तीनों लोकों को प्रसन्न करते हैं, जो दूसरों के जरा से गुण को पर्वत के समान करके अपने हृदय को विकसित करते हैं, ऐसे सज्जन कितने हैं ?

❑ **विद्या ददाति विनयं विनायत्याति पात्रताम्।**
पात्रत्वाद्धनमाप्नोति धनाद्धर्मं ततः सुखम्।।
विद्या नम्रता को देती है, नम्रता से योग्यता आती है। योग्य ही धन कमा सकता है और धन से धर्म और धर्म से सुख होता है।

❑ **अर्थागमो नित्यमरोगिता च।**
प्रत्येक मनुष्य में कुछ न कुछ गुण हैं, उसी को तुम ढूँढ़ो, उसी से तुम सुखी रहोगे।

❑ गुण का अभाव होना दोष कहलाता है। असलियत में दोष की कोई खास संज्ञा नहीं, श्रेष्ठ काम न करना ही बुरा है। बुरे का कोई अस्तित्त्व नहीं है।

❑ प्रत्येक से प्यार करो, थोड़े में सन्तोष रखो और किसी को दुःख मत दो।

❑ स्वतन्त्र और निष्पक्ष वाद-विवाद सत्यता के दृढ़तम मित्र सिद्ध होते हैं।

❑ तीन चीजें, तीन चीजों के बिना कायम नहीं रहतीं, दौलत बिना सौदागरी के, इल्म बिना बहस के और बादशाहत बिना दहशत के।

❑ **शीलं शौर्यमनालस्यं पाण्डित्यं मित्रसंग्रहः।**
अचोरहरणीयानि पञ्चैतान्यक्षयो निधिः।।
शीलयुक्त स्वभाव, शौर्य, आलस्य न करना, विद्या और सन्मित्र—ये पाँच ऐसी अक्षय निधियाँ हैं जिनको न कोई चुरा सकता है, न अपहरण कर सकता है।

❑ **यस्तपस्वी जडी मुण्डी नग्नो वा चीवरावृतः।**
सोऽप्यसत्यं यदि ब्रूते निन्द्यः स्यादन्त्यजादपि।।
जो तपस्वी जटाधारी, सिर मुड़ाये हुये, वस्त्रहीन अथवा वस्त्रधारी होते हुए भी असत्य बोलता है, वह चाण्डाल से भी बुरा है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ **वस्तुदोषमनादृत्य गुणान् विभ्रन्ति तद्विदः।**
अपि कंटकिनः पुष्पे गन्धं जिघ्रन्तिषट्पदाः।।
किसी वस्तु के दोष का ध्यान न करते हुए बुद्धिमान उसके गुणों को ही ग्रहण करते हैं। भौंरा काँटे वाले पौधे से भी गन्ध ग्रहण कर लेता है।

❑ **उत्तमा स्वयमाख्याता पितुः ख्याता च मध्यमाः।**
अधमा मातुलात् ख्यातः श्वसुरख्याताधमाधमा।।
उत्तम पुरुष स्वयं अपने नाम से प्रसिद्ध होते हैं, मध्यम पुरुष अपने पिता के नाम से प्रसिद्धि प्राप्त करते हैं, निम्न श्रेणी वाले मामा के नाम से ख्याति प्राप्त करते हैं और सबसे नीचे दर्जे के व्यक्ति ससुर के नाम से प्रसिद्धि प्राप्त करते हैं।

❑ भविष्य की चिन्ता छोड़ देनी चाहिए, उससे कोई कार्य सिद्ध नहीं होता, यदि चिन्ता की ही जाए तो चरित्र की उन्नति करनी चाहिए।

❑ स्वर्ण की अग्नि से और दृढ़ मनुष्य की विपरीत समय से परीक्षा होती है।

❑ अच्छा व्यापारी वही है, जो अपना समय ईश्वर में तथा धन गरीबों में दान करता है।

❑ मनुष्य को दो वक्त तो निश्चय ही आपे में रहना चाहिए, एक तो भोजन करते समय और दूसरे भाषण के समय।

❑ **दुर्जनेन समं सख्यं प्रीतिं चापि न कारयेत्।**
उष्णो दहति चांगारः शीतः कृष्णायते करम्।।
दुष्ट मनुष्य के साथ मित्रता और प्रीति नहीं करनी चाहिए। अंगार गरम रहने पर तो हाथ को जलाता है और ठण्डा होने पर हाथ को काला कर देता है।

❑ जो कुछ तुम्हें कहना या लिखना हो उसे थोड़े ही में कहो या लिखो।

❑ **पापान्निवारयति योजयते हिताय**
गुह्यानि गूहति गुणान्प्रकटीकरोति।
आपद्गतं च न जहाति ददाति काले
सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदंति सन्तः।।
बुरे कामों से बचाकर अच्छे काम में लगावे, छिपाने योग्य बातों को छिपाकर गुणों को प्रकट करे, विपत्ति के समय में साथ न छोड़े और समय पड़ने पर सहायता दे, बुद्धिमान लोग अच्छे मित्र के यही लक्षण बताते हैं।

❑ **विद्या शौर्यं च दाक्ष्यं च बलं धैर्यं च पंचमम्।**
मित्राणि साधवान्याहुर्वर्तयन्ति हितैर्बुधाः।।
विद्या, शूरता, चतुरता, बल और धैर्य ये पाँचों बुद्धिमान के स्वाभाविक मित्र हैं। लोग मित्र के समान इनका व्यवहार करते हैं।

❑ अपने अधिकार के लिए लड़ना अथवा मरना पाप नहीं, वरन् कर्त्तव्य है।

❑ **प्रस्तावसदृशं वाक्यं सद्भावसदृशं प्रियम्।**
आत्म-शक्तिसमं कोपं यो जानाति स पंडितः।।
जो मनुष्य प्रसंग के अनुसार बोलना, स्वभाव से ही प्रिय बनना और अपनी शक्ति के अनुसार क्रोध करना जानता है, वह पण्डित है।

❑ पानी से शरीर, धर्म से आत्मा, ज्ञान से बुद्धि और सत्य से मन पवित्र होता है।

❑ जो तुम्हारे साथ शत्रुता करते हैं, उनसे प्रेम करो। जो तुम्हारे साथ बुराई करते हैं उनके लिए ईश्वर से कल्याण की प्रार्थना करो।

❑ विद्वत्ता का सबसे बड़ा लाभ यह है कि उसके द्वारा अपनी मूर्खता का ज्ञान हो जाता है।

❑ घृणा करना असुरों का काम है, क्षमा मनुष्यता का लक्षण है और प्रेम देवताओं का स्वभाव है।

❑ **न जात्या ब्राह्मणश्चात्र क्षत्रियः वैश्य एव न।**
न च शूद्रो न वै म्लेच्छो भेदिता गुणकर्मभिः।।
जन्म या जाति से न कोई ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य होता है और न शूद्र ही। जाति, जन्म की दृष्टि से सब समान हैं, किन्तु गुण, कर्म के आधार पर अवश्य विभेद तथा अलग-अलग वर्ण हो जाता है। जो जैसा कर्म करेगा, उसे वैसा ही वर्ण प्राप्त होगा।

❑ आनन्द का वास्तविक स्वामी तो कर्त्तव्यपालन और त्याग ही है। यदि हम परमार्थ भी कुछ करते हैं अथवा किसी के लिए हँसते-हँसते कष्ट झेलते हैं अथवा किसी भिखारी को कुछ दे डालते हैं तो हमारी आत्मा में कैसा मधुर सुखकर, शान्त नाद-सा होता है, कितना आनन्द आता है, तब उस सुख के सम्मुख सांसारिक सुख किस खेत की मूली हो सकते हैं ? इसे आत्मिक आनन्द कहते हैं। यह चिरस्थायी कल्याणकारी तथा सदैव सुखकर है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

- एकान्त से ही प्रत्येक वस्तु का जन्म हुआ है। अकेला मनुष्य अधिक तेजी से चलता है।
- **"तमेव ऋषि तमु ब्रह्माणमाहुर्यज्ञन्य सामगाः।"**
  निरन्तर ज्ञानदान करते रहना ब्राह्मण की पवित्र जिम्मेदारी है।
- भाग्यवान वह है, जिसका धन उसका गुलाम है, अभागा वह है, जो धन का गुलाम है।
- प्रतिष्ठा का ध्यान रखना और बात है तथा अपने को बड़ा समझना और बात है।
- जन्म कोलाहल करता आता है, मृत्यु दबे पाँव आती है।
- **दीर्घदर्शी सदा च स्यात्प्रत्युत्पन्नमतिः क्वचित्।**
  साहसी सालसी चैव चिरकारी भवेमहि।।
  मनुष्य को बहुत दूर तक देखने वाला और समय पर सोचने वाला बनना चाहिए, असाहसी, आलसी और देर में सोचने वाला न बनना चाहिए।
- **सुहृदि निरंतरचित्ते गुणवति भृत्ये ऽनुवर्तिनि कलत्रे।**
  स्वामिनि सौहृदयुक्ते निवेद्य दुःखी सुखी भवति।।
  अभिन्न हृदय मित्र से, गुणवान नौकर से, आज्ञाकारिणी स्त्री से और मित्रभाव रखने वाले स्वामी से अपने दुःख की बात कहने से चित्त सुखी हो जाता है, अर्थात् मन का क्लेश कम हो जाता है।
- **यः समुत्पतितं क्रोधं मानञ्चापि नियच्छति।**
  स श्रियोभाजनं पुंसां यश्चापत्सु न मुह्यति।।
  जो मनुष्य उठे हुए क्रोध और अभिमान को रोकता और आपत्तियों में नहीं घबराता, वह पुरुषों में श्री अर्थात् लक्ष्मी का पात्र-धनवान होता है।
- जो बुद्धिमानी और धैर्य से काम करता है, उसके साथ सारी उत्तम वस्तुएँ सहानुभूति रखती हैं।
- अगर इनसान सुख-दुःख की चिन्ता से ऊपर उठ जाए तो आसमान की ऊँचाई भी उसके पैरों तले आ जाए।
- समुद्र के किनारे टटोलने से तो घोंघा ही मिलेगा। मोती की चाह है तो गहरी डुबकी लगाओ।
- उच्च-विचार से अधिक बलवान है, जिसके पास सिद्धान्तों की शक्ति है, वह कहीं भी हारता नहीं।
- विश्व की दो प्रमुख शक्तियाँ हैं। तलवार और कलम। लड़ाई में तलवार हारती और कलम जीतती है।
- तृष्णा का कोई अन्त नहीं। आकाश की तरह उसके पेट में बहुत कुछ भरा होने पर भी खाली ही रहता है।
- संसार में ऐसा कोई नहीं हुआ, जिसकी आलोचना या निन्दा न की गयी हो।
- जैसे-जैसे हम सचमुच ज्ञानवान होते जाते हैं, वैसे-वैसे उदारता बढ़ती जाती है।
- सामर्थ्य होते हुए भी जो परमार्थ कार्यों से जी चुराता है, निन्दनीय है। उससे भी अधिक निन्दनीय वह है, जो दूसरों को भी अपनी जैसी कृपणता अपनाने का परामर्श देता है।
- हमारा एकमात्र सच्चा अध्यापक है—आदर्श। उसकी शिक्षा-दीक्षा लेने वाले छात्र नर-रत्न बनकर निकलते हैं। इस पाठशाला से बढ़कर और कोई शिक्षा-संस्थान नहीं।
- आकाश को मुट्ठियों से न मारो, कूटकर तेल न निकालो। बालू के महल न बनाओ और पानी मथकर घी मिलने की आशा न करो। कुकर्मों के सहारे उन्नतिशील बनने की योजना न बनाओ।
- सहज जीवन नितान्त सरल है, पर लोगों ने जान-बूझकर उसे जटिल बना लिया है।
- अन्तःकरण जितना भ्रष्ट होता जाता है, बुद्धि का वैभव उतना संकीर्णता अपनाता जाता है।
- दृष्टि डालकर भूमि पर पाँव रखे, वस्त्र से पवित्र करके जल पीवे। सत्य से पवित्र की हुई सत्य से युक्त वाणी बोले और मन से पवित्र करके कर्मों का आचरण करे।
- बुद्धिमान वह है जो किसी को गलतियों से हानि खाते देखकर अपनी गलतियाँ सुधार लेता है।
- **सत्यस्य वचनं साधु न सत्याद्विद्यते परम्।**
  सत्येन विधृतं सर्वं सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्।।
  सच बोलना सबसे श्रेष्ठ है, सत्य से बढ़कर कुछ भी श्रेष्ठ नहीं, यह सब कुछ सत्य से ही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धारण किया हुआ है, सत्य में ही सब कुछ प्रतिष्ठित है, सत्य से ही प्रतिष्ठा होती है।

❑ **यस्य न ज्ञायते वीर्यं न कुलं न विचेष्टितम्।**
न तेन संगतिं कुर्यादित्युवाच बृहस्पतिः।।
जिसका पराक्रम, कुल और चेष्टा न जानते हों, उसके साथ संगति कभी नहीं करनी चाहिए ऐसा परम मनीषी बृहस्पति ने कहा है।

❑ **यथा वायु समाश्रित्य वर्तन्ते सर्वजन्तवः।**
तथा गृहस्थमाश्रित्य वर्तन्ते सर्व आश्रमाः।।
यस्यधन्योऽप्याश्रमिणो दानेनान्नेन वान्वहम्।
गृहस्थेनैव पूर्यते तस्माज्ज्येष्ठाश्रमो गृही।।
जिस प्रकार सारे प्राणी वायु के आश्रित रहते हैं, उसी प्रकार सारे आश्रम गृहस्थ के आश्रित रहते हैं। ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और संन्यास तीनों आश्रमों को अन्नादिक के दान से पालन करने वाला गृहस्थाश्रम ही सबसे श्रेष्ठ है।

❑ **संस्कार साक्षात्कारणात् पूर्वजातिज्ञानम्।**
संस्कार का साक्षात करने से पूर्वजन्म का ज्ञान होता है।

❑ यश-अपयश मरण के उपरान्त भी सुगन्ध-दुर्गन्ध की तरह चिरकाल तक बना रहता है। वस्तुतः यही मनुष्य का बहुमूल्य उपार्जन है।

❑ एक विचार का पीछा करने से दूसरा तुम्हारे सामने अपने आप आ जाता है।

❑ संसार दर्पण के सदृश है, वह तुम्हारे रोने पर रोता है और हँसने पर हँसता है।

❑ अपने साथ की हुई बुराई बालू पर लिखनी चाहिए और भलाई पत्थर पर।

❑ ऐश्वर्य से मन दुर्बल होता है। दरिद्रता और अभय से पुष्ठ और बलयुक्त होता है।

❑ सदा दुबारा सोचने के लिए गुंजाइश रखनी चाहिए। पहले प्रभाव पर काम करना योग्यता का अभाव प्रकट करना है।

❑ महान कार्यों से पहले महान विचार उत्पन्न हुआ करते हैं, अर्थात महान विचारों के आये बिना महान कार्य नहीं हो सकते।

❑ सिद्धान्त के दस फूलों की अपेक्षा अनुभव का एक काँटा श्रेष्ठ है।

❑ अपवित्र विचार आदमी को बरबाद कर देते हैं। जिस आदमी का मन गन्दे विचारों में पड़ता है, उसे आगे बढ़ने की आशा कदापि न करनी चाहिए।

❑ पवित्र आदमी की शक्ति अपार है। उसे कौन माप सकता है ? वह अनन्त है, वह ईश्वरीय लाल है, पवित्रता ही व्यक्तित्व प्राप्ति का राज-मार्ग है।

❑ जो आदमी अपने अन्तःकरण के संकेतों से काम लेते रहते हैं, उनकी विवेकशक्ति अथवा भले-बुरे की पहचानने की शक्ति बढ़ती रहती है।

❑ मन की अभिलाषा तप करने से पूर्ण होती है। वृद्धों की सेवा से बुद्धि बढ़ती है। मित्र अधिक करने से सुख प्राप्त होता है। धर्म पर दृढ़ रहने से स्वर्ग मिलता है।

❑ धनुर्धर वे नहीं, जिनका तीर निशाने पर लगता है, वरन् वे हैं जो लक्ष्य वेध कर दिखाते हैं।

❑ घर पर आये अन्न की याचना करने वाले मानव को जो सद्भाव से अन्न देता है, वस्तुतः वही सच्चा दान है। उसे यज्ञ का सम्पूर्ण फल प्राप्त होता है और उसके शत्रु भी मित्र हो जाते हैं।

❑ शरीर को गुलाम बनाकर कैद में रखने की अपेक्षा उसके मन को गुलामी का आदी बना देना अधिक बुरा है।

❑ स्वतन्त्र रहने के अधिकारी वे हैं, जो अपने दायित्वों के बन्धनों में स्वयं बँध जाते हैं।

❑ सीधा रास्ता पकड़ना सबसे सरल है, पर लोग न जाने क्यों कठिन मान बैठते हैं ?

❑ "तिनका हलकी चीज है, तिनके से हलकी रूई और रूई से हलका याचक।"

❑ इसी तरह सांसारिक पुरुष जब तक धर्म की बातें सुनते हैं, तब तक उनके विचार धार्मिकता से पूर्ण रहते हैं, परन्तु सांसारिक व्यवहारों में लगने के साथ ही वे इन श्रेष्ठ और ऊँचे आदर्शों को भूलकर फिर पूर्ववत अपवित्र विचार वाले हो जाते हैं।

❑ जीवन में केवल अवस्था-भेद ही से नहीं, प्रत्युत अवस्थानुसार कर्त्तव्य-पालन करने से श्रेय मिलता है।

❑ दुनिया के साथ भलाई करता जा और भूलता जा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

- बीते हुए की चिन्ता न करो, जो अब करना है उसे विचारो और विचारो कि बाकी का सारा जीवन केवल उस परमात्मा के ही काम में आवे।
- किसी को पीठ पर रखकर पार करने के बजाय तैरना सिखाकर, खुद पार हो जाया करे, ऐसा बना दिया हो तो बहुत ही अच्छा है।
- तिरस्कार का तिलमिलाने वाला तरीका है—उपेक्षा भरा मौन।
- तुम सर्प की तरह चतुर और कबूतर की तरह भोले बनो। चौकन्ने रहो ताकि अपने और बिराने तुम्हें पथभ्रष्ट न करें।
- मनुष्य जीवन को सुसज्जित करने वाला बहुमूल्य आभूषण उसका सुयश है। यशस्वी पुरुष ही सबसे बड़ा भाग्यवान है।
- यदि आप लोगों को अपने विचार का बनाना चाहते हैं, तो दूसरे व्यक्ति को अनुभव करने दीजिए कि विचार उसी का है।
- जब हम सच्चाई पर हों तो हमें नरमी और ढंग के साथ लोगों को अपने विचार का बनाने के लिए प्रयत्न करना चाहिए और जब हम गलती पर हों तो अपनी भूलों को शीघ्रता और उत्साह के साथ स्वीकार कर लेना चाहिए।
- (१) कुसंग से परचर्चा, परनिन्दा में प्राप्ति होती है, (२) विषयशक्ति और भोग-कामना बढ़ती है। (३) काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह इन शत्रुओं की वृद्धि होती है। (४) दम्भ, दर्प, अभिमान, असहिष्णुता, अविवेक, असत्य, कायरता, निर्दयता आदि की वृद्धि होती है। (५) राग, द्वेष, इच्छा, वासना, अहंकार की वृद्धि होकर अज्ञान का परदा मजबूत होता है। (६) भाँति-भाँति के दुराचार बढ़ते हैं। इसलिए कुसंग का त्याग करना ही उचित है।
- माता, पिता, पुत्र, स्त्री, बान्धव आदि सम्बन्धियों का मिलन धर्मशाला में एकत्र हुए पथिकों के समान है, कोई किसी का नहीं है। कुल के लिए एकत्र हुए हैं। पीछे अपने भिन्न मार्ग पर सभी लोग चल बसेंगे, रहेंगे कोई नहीं, अहंता, ममता को छोड़कर एकमात्र उस परमात्मा की निरन्तर चिन्ता करनी चाहिए।
- जीवन एक प्रश्न है और मृत्यु उसका उत्तर।
- दुनिया छोड़ने से पहले यह जान लेना समझदारी है कि संसार और जीवन दोनों ही एक से एक बढ़कर आनन्ददायक हैं, पर उनका अनुग्रह होता उन्हीं पर है, जो उनका गौरव और सदुपयोग समझ सकें।
- सूखी चट्टान पर लगातार पानी के बरसने पर भी एक तिनका नहीं उगता। अन्धे को मनोरम दृश्य कभी नहीं दिखते। बहरा मधुर संगीत तक नहीं सुन पाता। पागल के लिए सारा संसार पागल है। दरवाजे बन्द हों, तो कमरे में न रोशनी पहुँच सकती है, न धूप। औंधे मुँह पड़े हुए घड़े पर से पूरी बरसात निकल जाने पर भी उसमें एक बूँद पानी नहीं घुसता, जबकि उन दिनों सभी जलाशय अपनी गहराई के अनुरूप जल-सम्पदा जमा कर लेते हैं।

  इसी तरह अवतार चेतना प्रवाहित सब जगह होती है। जिनके अन्दर जाग्रति होती है, वे उसे पहचान लेते हैं, उसके लिए आगे आते हैं और लाभ उठाते हैं।
- पहले आत्मा का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए, तत्पश्चात् ऊर्ध्व प्रकृति या पराप्रकृति का रहस्य समझने में तन्मय होना चाहिए। मन रूपी क्षेत्र में शक्ति का संचार होने से ही इस पर प्रकृति के रहस्य का ज्ञान होता है।
- कृपा की याचना केवल परमेश्वर से करो। मनुष्यों में से जिसने जितनी कृपा कर दी, उसे ही पर्याप्त समझो और उसके लिए कृतज्ञ रहो।
- बिना धर्म का जीवन, बिना सिद्धान्त का जीवन होता है और बिना सिद्धान्त का जीवन वैसा ही है जैसा कि बिना पतवार का जहाज। जिस तरह बिना पतवार का जहाज इधर से उधर मारा-मारा फिरेगा और कभी निर्दिष्ट स्थान तक नहीं पहुँचेगा; उसी तरह धर्महीन मनुष्य भी संसार में इधर से उधर मारा फिरेगा और कभी अपने निर्दिष्ट स्थान तक नहीं पहुँचेगा।
- भीतर का भाव शुद्ध न हो तो दान, यज्ञ, तप, तीर्थ-सेवन, शास्त्रों का श्रवण तथा स्वाध्याय ये सभी अतीर्थ हो जाते हैं। अतः जिसने इन्द्रिय समुदाय को वश में कर लिया है, वह मानव

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उसके लिए कुरुक्षेत्र, नैमिषारण्य और पुष्कर आदि तीर्थ हैं।

- यदि उपकार किया है तो बदले की आशा मत करो, यह तो वाणिज्य होगा।
- किसी के गुण-दोष की आलोचना मत करो। तुम्हारा काम सेवा करना है, कर्मों का निर्णय नहीं।
- बहुत बोलने से कोई पण्डित नहीं होता, जो ज्ञानवान बैर और निर्भय है, वही पण्डित कहलाता है।
- नीरोग रहना सबसे बड़ा लाभ है। सन्तुष्ट रहना परम धन है। विश्वास सबसे बड़ा बन्धु है, निर्वाण सबसे बड़ा सुख है।
- यदि शुभकार्य करे तो उसे बार-बार करे। उसमें रत होवे। पुण्य का संचय सुख का कारण होता है।
- सभ्यता उस आचरण का नाम है, जिससे मनुष्य अपना कर्त्तव्यपालन करता है। नीति का पालन करना, अपने मन और इन्द्रियों को अपने वश में रखना है ऐसा करने से हम अपने को पहचान सकते हैं। यही सभ्यता है, इसके विरुद्ध जो है, वह सब असभ्यता है।
- भूतकाल को शोकपूर्ण दृष्टि से न देखो, वह पुनः लौट नहीं सकता। बुद्धिमत्ता के साथ वर्तमान की उन्नति करो, वह तुम्हारा है।
- अन्न और जल के समान कोई दान नहीं है, गायत्री से बढ़कर कोई मन्त्र नहीं है और माता से बढ़कर कोई देवी नहीं।
- इन्द्रियाँ ही मनुष्य की शत्रु हैं। आशा मिट जाने पर यह पृथ्वी ही स्वर्ग है। विषयों में प्रेम ही बन्धन है। सदा सन्तुष्ट ही बड़ा धनी है। मन को जय करने वाला ही संसार में विजयी है।
- काम की श्रेष्ठता इस आधार पर आँकी जानी चाहिए कि उसके पीछे कितना बड़ा उद्देश्य था और करते समय उसे कितनी रुचिपूर्वक किया गया।
- विचारों की शक्ति को समझो, क्योंकि वे ही तुम्हें अपने प्रवाह के अनुरूप चलने को बाधित करेंगे और ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न करेंगे, जो आश्चर्यचकित कर दें।
- शक्ति से रहित न्याय-निरर्थक है और न्याय से रहित शक्ति अत्याचार है। बिना शक्ति के न्याय की दुष्ट लोग अवहेलना किया करते हैं और न्याय से शून्य शक्ति की निन्दा होने लगती है। इसलिए न्याय और शक्ति का समन्वय ही सज्जनों के लिए उपयुक्त मार्ग है।
- महान विचार ही महान् परिस्थितियाँ उत्पन्न करते हैं और अपनाने वाले को महान बनाते हैं। संसार की महान घटनाएँ, महान विचारों के ही कारण सम्भव हुई हैं, उन्हीं ने समय को बदला और उपयुक्त वातावरण बनाया है।
- दूसरे मनुष्य की सम्मतियों का सम्मान कीजिए। कभी किसी से मत कहिए कि वह गलती पर है। दूसरों के विचारों का प्रत्यक्ष प्रतिवाद और अपने विचारों का सुनिश्चित समर्थन न करें।
- प्रसिद्धि और महानता दो अलग वस्तुएँ हैं। लँगोटी को खोलकर फिरने वाला प्रसिद्ध हो सकता है, पर महानता के लिए दूरदर्शिता ही नहीं, संयमशीलता भी होनी चाहिए।
- बुराई आदमी को पहले अज्ञानी व्यक्ति के समान मिलती है और हाथ बाँधकर नौकर की तरह उसके सामने खड़ी हो जाती है। फिर मित्र बन जाती है, फिर मालिक बनती है और आदमी के सिर पर सवार हो जाती है एवं उसे सदा के लिए अपना दास बना लेती है।
- "आपकी सफलता का श्रेय किसको है ?" एक पत्रकार ने प्रेसीडेण्ट कैनेडी से प्रश्न किया। जॉन कैनेडी ने उत्तर दिया—"असफल व्यक्ति।" "सो कैसे ?" उसने पुनः प्रश्न किया। राष्ट्रपति ने बताया—"मैं जिस किसी असफल व्यक्ति को देखता, उससे बातचीत करके यह पता लगाता कि वह किन कारणों से असफल हुआ ? पीछे उन अनुभवों का लाभ उठाकर ही मैंने सफलता प्राप्त की है।"
- विद्या वह है जो नम्रता सिखाये। उचित-अनुचित का विश्लेषण करे और नीति मार्ग पर चलने का साहस प्रदान करे।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

- सूर्य उदय होते समय भी और अस्त के समय भी लाल ही रहता है। सफलता और असफलता की दोनों स्थितियों में विचारशील एकरस रहते हैं।
- विचारों को सोच-समझकर अपनाओ, क्योंकि वे ही कल कर्म बनेंगे और परसों तदनुरूप प्रतिफल प्रस्तुत करेंगे। यदि तुम भलाई का अनुसरण परिश्रम के साथ करो तो परिश्रम चला जाएगा और भलाई रह जाएगी। यदि तुम बुराई का अनुसरण सुख के साथ करो तो सुख चला जाएगा और बुराई रह जाएगी।
- सितारे रोज चमकते हैं, इसीलिए वे स्मृति में रहते हैं। पुच्छल तारे कभी-कभी निकलते हैं, इसीलिए यदा-कदा ही उनकी चर्चा होती है।
- क्या देना अच्छा ? भोजन। क्या न देना अच्छा है ? गाली। क्या खाना अच्छा है ? गम (धैर्य)। क्या न खाना अच्छा है ? अकर्मण्यता का धन।
- अज्ञानियों की प्रशंसा के बजाय ज्ञानवानों की झिड़कियाँ ठीक हैं, क्योंकि उनकी झिड़की से मनुष्य को अपने दोष का ज्ञान हो जाता है, परन्तु बुद्धिहीन दोषों को भी गुण बतलाकर बड़ाई करते रहते हैं, जो कि अत्यन्त हानिकारक होती है।
- दोष को धिक्कारो पर उसके कर्ता को नहीं।
- यदि मनुष्य सीखना चाहे तो उसकी प्रत्येक भूल उसे कुछ न कुछ सिखा देती है।
- पूर्णता प्राप्त करने के लिए हमें या तो मित्रों की आलोचना से या शत्रुओं के कटुवाक्यों से अपनी त्रुटियों का ज्ञान हो जाना चाहिए।
- दैवीविधान का चक्र निर्मम भाव से घूमता रहता है। जो इस विधान के अनुरूप चलता है, वह इस पर सवारी करता है, पर जो अपनी इच्छा को इस विधान में अड़ाता है, वह अवश्य ही कुचला जाता है।
- महानता के बीज हर किसी के भीतर विद्यमान हैं, पर वे उगते और बढ़ते उसी खेत में हैं, जिसमें आदर्शों का खाद और पराक्रम का पानी मिलने की व्यवस्था है।
- जो गिरतों को उठाता है, असमर्थों को सहारा देता है, सताये हुओं की ढाल बनता है, वही सच्चा शूरवीर है।
- (१) दान, (२) पश्चात्ताप, (३) सन्तोष, (४) संयम, (५) नम्रता, (६) सत्य (७) दया ये सात बैकुण्ठ के दरवाजे हैं।
- अभिमान को इस प्रकार भूल जाओ जिस प्रकार गहरी निद्रा के स्वप्न को जागने पर भूल जाया करते हो और सत्य को इस प्रकार याद रखो, जिस प्रकार प्रतिदिन भोजन की याद रखा करते हो।
- जैसे प्राणियों के सिर पर मृत्यु का भय सर्वदा सवार रहता है, वैसे ही धनवान को राजा, जल, अग्नि, चोर और कुटुम्ब का भय सदा बना रहता है।
- दाता की परीक्षा दुर्भिक्ष में, वीर की युद्ध में, मित्र की आपदकाल में, स्त्री की पति की अशक्त स्थितियों में, अच्छे कुल की विपत्ति में, प्रेम की परोक्ष में और सत्य की परीक्षा संकट के समय होती है।
- तुम चाहे लेखक हो या विचारक या प्रचार तन्त्र के जन्मदाता, किसी भी मूर्ति पर प्रहार करने से पहले यह अवश्य तय कर लो कि उसके बदले में देने के लिए तुम्हारे पास क्या है, कितना है और कैसा है ? अन्यथा जो निर्वात उत्पन्न होगा, वह सबसे पहले तुम्हें ही अपना ग्रास बनाएगा।
- वानप्रस्थ का अर्थ पलायन नहीं। इसमें जीवन में जहाँ साधना, स्वाध्याय, संयम, सेवा में निरत रहने का अनुशासन है, वहाँ एक अनुबन्ध यह भी है कि वन क्षेत्र में रहा जाए। आरण्यक ही उस उच्चस्तरीय जीवनचर्या के लिए उपयुक्त स्थान हो सकता है। घिचपिच बसे, कोलाहल भरे नगरों और गन्दे गली-कूँचों में ऐसा वातावरण होता है, जिसमें आध्यात्मिकता पनपती नहीं। उस घुटन भरी विषाक्तता में उच्चस्तरीय भावनाएँ पनपने नहीं पातीं, निरर्थक चली जाती हैं। वातावरण की श्रेष्ठता कई कारणों पर अवलम्बित है। उनमें से एक तो अनिवार्य ही है और वह है पेड़-पौधों की सघनता और निकटता। वानप्रस्थ का शब्दार्थ है—वन-प्रदेश में निवास व्यवस्था। ऊँचे विचार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ऐसे ही क्षेत्रों में पनपते और फूलते हैं। इसलिए ऋषि-आरण्यक एवं आश्रम वन-क्षेत्रों में होते पाये गये हैं।

- आप बहुत सोये हैं। अब उतना ही जागेंगे भी। अब सोने का युग बीत गया। अन्धविश्वास, पुराने रीति-रिवाज अब धीरे-धीरे दूर हो रहे हैं। बुद्धि और विवेक जाग रहे हैं। आलस्य उड़ता जा रहा है। आगे बढ़ने, सफलता पाने की क्रियाशीलता और चेतना के सभी ओर दर्शन होने लगे हैं। बुराइयों पर अच्छाइयों का बढ़ना मंगलमय भविष्य का प्रतीक है।
- हृदय उन पुष्पों की भाँति है जो कोमलता से गिरती हुई ओस के लिए तो खिले रहते हैं, किन्तु मूसलाधार वर्षा में बन्द हो जाते हैं।
- निष्क्रियता से तात्पर्य शान्ति नहीं है। शान्ति मन की सरसता का बोध कराती है। निष्क्रियता जड़ता का दूसरा नाम है। शान्ति उत्पादक है, निष्क्रियता अनुत्पादक। निष्क्रियता उबाऊ है, शान्ति सरस।
- भाग्य के सम्बन्ध में सुनिश्चित बात एक ही है कि वह मनुष्यों के प्रयासों के अनुरूप बदलता रहता है।
- शान्ति तो तुम्हारे अन्दर है। कामनारूपी डाकिनी का आवेश उतरा कि शान्ति के दर्शन हुए। वैराग्य के महामन्त्र से कामना को भगा दो, फिर देखो शान्ति की शान्त मूर्ति।
- जैसे तालाब से काई को हाथ से हटाने में फिर उसी जगह आ जाती है और किसी खप्पची इत्यादि से हटाने से फिर उसी जगह नहीं आती है, उसी तरह माया यदि किसी प्रकार दूर कर दी जाय, तो उसकी फिर से इच्छा होती है, परन्तु हृदय, भक्ति और ज्ञान से भर लिया जाय तो वह फिर नहीं आ सकती, निश्चय ही इस तरह करने से ईश्वर के दर्शन हो ही जाते हैं।
- इस संसार के द्वेष, द्वेष से शान्त नहीं हो सकते। इन्हें शान्त करने का उपाय अद्वेष या बैर त्याग है। यह प्राचीन नियम (सनातन धर्म) है।
- जिस पुरुष को नींद नहीं आती, उसके लिए रात बहुत लम्बी है। जो बहुत थक गया है, उसके लिए योजन बहुत लम्बा अन्तर है। वह बालबुद्धि पुरुषों के लिए जिन्हें धर्म का ज्ञान नहीं, संसारचक्र बहुत लम्बा है।
- अज्ञानी और मूढ़ मनुष्य केवल मौन से मुनि नहीं हो जाता। वही मनुष्य मुनि है, जो तराजू की तरह ठीक-ठाक जाँच करके सुव्रतों का ग्रहण और पापों का त्याग करता है।
- अपनी मूर्खता का ज्ञान हो जाना ही विद्वत्ता से लाभ उठाना है।
- दीपक जैसे घर को जगमगा देता है, आनन्द उसी तरह जीवन को उज्ज्वलता से भर देता है, आनन्द की अनुभूति जीवन की समस्त जड़ता मिटा देती है। आनन्द हमारे लिए वह पारस है, जिसके छूने से जीवन की प्रत्येक वस्तु सोना बन जाती है।
- **नास्ति सत्यसमोधर्मो न सत्यद्विद्यते परम्।**
  नहि तीव्रतरं किंचिदनृतादिहविद्यते।।
  सत्य के समान कोई नहीं, सत्य से बढ़कर कुछ श्रेष्ठ नहीं और असत्य से बढ़कर तीक्ष्ण और कुछ नहीं।
- जिसके अन्तःकरण में प्रभु की भक्ति है उसके लिए नगर भी वन के समान है और जिसके मन में विकार हैं, उसके लिए कन्दराएँ भी पापमयी हैं।
- जिस प्रकार तालाब में घास की बजह से मछली दिखाई नहीं देती, उसी तरह माया के कारण ईश्वर अन्तःकरण में मौजूद होते हुए भी दिखाई नहीं देता है।
- आकाश में तारे दिन के समय भी रहते हैं, पर धूप के चकाचौंध में दिखते नहीं। परमात्मा का दर्शन और सान्निध्य हर समय पाया जा सकता है, पर माया की मूढ़ता उसे दृष्टिगोचर नहीं होने देती।
- कर्म की गति के पहले की अपेक्षा कुछ शिथिल हो जाने की भी बहुत बड़ी सम्भावना रहती है और वह शिथिल हो भी सकती है, किन्तु इससे कोई हानि नहीं हो सकती। स्थिर-स्थायी कर्म से तो सत्य और महान् शक्ति की उत्पत्ति होती है, हम कर्म का त्याग करने के लिए नहीं कर रहे हैं। अतः सब कर्म छोड़ देने पर भी कर्म त्यागपूर्ण सहनशीलता के धारण करने की शक्ति का रहना आवश्यक है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ **सर्गे सर्गे पृथग्रूपं सन्ति सर्गान्तराण्यपि ।**
तेष्वप्यंतस्थसर्गौघाः कदलीदलपीठवत् ।।
आकाशे परमाण्वन्तर्द्र व्यादेररणुकेऽपिच ।
जवाणुर्यत्र तत्रेद जगद्वेत्ति निज वपुः ।।

—योगवासिष्ठ ४। १८। १६-१७

जिस प्रकार केले के तने के अन्दर एक के बाद एक परतें निकलती चली आती हैं, उसी प्रकार प्रत्येक सृष्टि के भीतर नाना प्रकार के सृष्टिक्रम विद्यमान हैं। इसी प्रकार एक के अन्दर अनेक सृष्टियों का क्रम चलता है। संसार में व्याप्त चेतना के प्रत्येक परमाणु में जिस प्रकार स्थान लोक विद्यमान है, उसी प्रकार जगत् में अनन्त द्रव्य के अनन्त परमाणुओं के भीतर अनेक प्रकार के जीव और उनके जगत विद्यमान हैं।

❑ दुनिया एक बड़ा दर्पण है, जिसमें हर व्यक्ति अपनी स्पष्ट प्रतिच्छाया देखता है।

❑ हम संसार को अपनी दृष्टि से देखते और अपने जैसा मानते हैं, पर वह वस्तुतः वैसा है नहीं। वह उद्यान जैसा है, जिसमें फूल और काँटे अपने-अपने प्रयोजन में संलग्न हैं।

❑ यह संसार आनन्द के लिए ही नहीं है, यह केवल परिश्रम का स्थान है। यहाँ जो आनन्द हमें प्राप्त होता है, वह इसलिए मिलता है कि हम किसी आगामी परिश्रम के लिए और भी दृढ़ हो जाएँ।

❑ भलाई का मार्ग संसार में सबसे अधिक ऊबड़-खाबड़ तथा कठिनाइयों से पूर्ण है। इस मार्ग से चलने वालों की सफलता आश्चर्यजनक है, पर गिर पड़ना कोई आश्चर्यजनक नहीं। हजारों ठोकरें खाते-खाते हमें चरित्र को दृढ़ बनाना है।

❑ तुम्हारी बनायी दुनिया अनोखी है। वह वैसी ही है, जैसी कि तुम्हारी भीतरी आस्था।

❑ सत्य और प्रेम इस संसार की सबसे शक्तिशाली वस्तुएँ हैं, जिस घड़ी यह दोनों साथ-साथ रहते हैं, सरलता से इनका निवारण नहीं किया जा सकता।

❑ संसार में स्वार्थ के कारण सब झगड़े फैलते हैं। अगर इस संसार से स्वार्थपरता चली जाए तो यह अत्यन्त सुन्दर बन जाएगा।

❑ जो संसार को भव-बन्धन कहते हैं और उसे माया-जाल बताकर खिंचे-खिंचे रहते हैं, वे भगवान् की सर्वोपरि कृति की अवमानना करते हैं जो अपने में समाई दुर्भावना है, छोड़ने और हटाने लायक वही है।

❑ संसार हमारे ही मन का प्रतिबिम्ब है।

❑ आकर्षक, हँसमुख व्यक्तित्व एक अमूल्य जीवन-निधि ही नहीं, बल्कि शक्ति और सफलता के आकांक्षियों के लिए नितान्त अनिवार्य आवश्यक है।

❑ देखने में गन्दा और अस्वच्छ व्यक्ति आचार-व्यवहार में भी प्रायः वैसा ही होता है। कोई भी व्यक्ति इतना गरीब नहीं हो सकता कि वह साफ-सुथरा न रह सके या ढंग के कपड़े न पहन सके। इसमें कपड़ों के सस्ते-महँगे होने का प्रश्न नहीं है अपितु उनके पहनने के ढंग और तरीकों का सवाल ही प्रमुख है।

❑ स्वच्छता का प्रभाव चरित्र, शरीर व मन तथा कार्यकुशलता और आत्म-सम्मान पर बहुत अधिक पड़ता है।

❑ स्वस्थ और स्वच्छ शरीर तथा स्वच्छ मन में गहरा और निकट का सम्बन्ध है, जिसमें एक की कमी है, उसमें दूसरी का अभाव स्वाभाविक है।

❑ किसी सुसंस्कृत व्यक्ति को पहचानने के लक्षण स्पष्ट हैं, वह अपने को भुलाकर दूसरों का ख्याल रखता है, वह यथाशक्ति दूसरों की मदद करता है और हर तरह के संग-साथ में अपने शिष्टाचार से पहचान लिया जाता है।

❑ विनम्र लोग प्रसन्न भी रहते हैं। चिड़चिड़ेपन और क्रोधी प्रकृति का प्रभाव सबसे पहले स्वास्थ्य पर पड़ता है।

❑ आत्म-विश्वास की कमी, हीनता की भावना के कारण ऐसी आदतें बन जाती हैं, जिनके कारण व्यवहार अटपटा लगने लगता है, जैसे तुनक-मिजाजी, व्यंग्य करने की आदत, हाथ मलते रहना, अँगुलियों से उलझते रहना आदि।

❑ चाल-ढाल में चुस्ती और साफ उत्तर देने वाले व्यक्ति में सतर्कता और उज्ज्वल व्यक्तित्व की झलक मिलती है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

- प्रत्येक व्यक्ति अपना नाम सम्मान के साथ सुनकर प्रसन्न होता है।
- किसी से कोई काम कराने का संसार में केवल एक ही उपाय है और वह है दूसरे मनुष्य को उस काम को करने की आवश्यकता का अनुभव कराना।
- प्रत्येक व्यक्ति प्रशंसा पसन्द करता है। दूसरों की प्रशंसा करने की आदत डालिए और उसमें कंजूसी मत बरतिए।
- लोगों में उत्साह भरने की अपनी योग्यता ही किसी व्यक्ति की सबसे बड़ी सम्पत्ति है। मनुष्यों के भीतर जो कुछ भी सर्वोत्तम है, उसका विकास प्रशंसा और प्रोत्साहन द्वारा ही किया जा सकता है।
- गुणग्राहिता हृदय से निकलती है और चापलूसी दाँतों से। गुणग्राहिता निःस्वार्थ होती है और चापलूसी स्वार्थमय।
- यदि अभिलाषा करनी है तो निर्मल भजन की कीजिए, समीप रहना है तो मालिक के चरणों के समीप रहिए तथा दूर रहना चाहते हैं तो दुर्जनों और पापियों तथा बुरे संग से दूर रहिए।
- (१) वायु से भी शीघ्रगामी क्या है—मन। (२) तिनकों से भी अधिक असंख्य कौन है—चिन्ता। (३) प्रवासी का मित्र कौन है—साथी। (४) गृहवासी का मित्र कौन है—भार्या। (५) बीमार का मित्र कौन है—वैद्य। (६) मरे आदमी का मित्र कौन है—दान। (७) सब प्राणियों का अतिथि कौन है—अग्नि। (८) धर्म का स्थान क्या है—सेबके अनुकूल रहना। (९) यश की चरम सीमा क्या है—किसी की बुराई न करना। (१०) सब बातों में उत्तम बात क्या है—सबके अनुकूल रहना। (११) उत्तम धन क्या है—शास्त्र का ज्ञान।
- क्या तुम्हें अपने जीवन से प्रेम है ? तो समय को व्यर्थ नष्ट मत करो, क्योंकि जीवन उसी से बना है।
- सतर्कता से अवसर की ताक में रहना, कौशल और साहस से अवसर को प्राप्त करना, शक्ति और दृढ़ता के द्वारा अवसरों को सर्वोत्तम सफलता पर पहुँचना—निश्चय ही सफलता के देने वाले प्रधान सद्गुण हैं।
- प्रत्येक आपत्ति श्राप के सम्मान नहीं होती। जीवन की प्राथमिक आपत्तियाँ बहुधा आशीर्वाद होती हैं। जीती हुई कठिनाइयाँ, न केवल हमें शिक्षा ही देती हैं, बल्कि वे भविष्य के प्रयत्नों में हमें साहसी बनाती हैं।
- इसमें सन्देह नहीं कि बड़े-बड़े कारखानों के मालिकों ने अपना जीवन गरीब लड़कपन से शुरू किया था।
- जो यह समझता है कि वह जानता है, तो यह समझ ही उसकी नासमझी की निशानी है। हाँ जो समझता है कि वह बहुत कम जानता है, उसी की समझ सच्ची राह पर है।
- यदि आप अपने जीवन को सुखी करना चाहते हैं, तो प्रतिदिन उस बलस्वरूप परमात्मा से बल प्राप्त कर उसका उपयोग गरीब और असहाय लोगों को उन्नत बनाने में कीजिए, तभी सच्ची शान्ति मिल सकती है।
- खाली बैठे मनुष्य का दिमाग शैतान का कारखाना है।
- जो सर्वात्मा प्रभु को अपने में और सबमें देखता है, उसे दुःख नहीं होते।
- मनुष्य को तुच्छ स्वार्थों का त्याग करना चाहिए, क्योंकि उसी के कारण वह संसार के बन्धनों में बँध जाता है। इस निजत्व का त्याग करना ही सच्चा त्याग है।
- संसार के प्राणियों के प्रेम में अपने आपको भूल जाना और उनकी सेवा करने में अपना कुछ भी विचार न करना, इसी का नाम वास्तव में सच्ची सेवा है।
- पुस्तक पढ़ने या परीक्षा में पास करने से ही तो विचारशील नहीं हुआ जाता, पुस्तक पढ़ना एक बात है और विचारक होना दूसरी बात।
- पुराने सिद्धान्त केवल पुराने होने के कारण आदरणीय नहीं हो सकते।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

- जो नित्य का भी नित्य है, चेतनाओं का भी चेतन है, जो अकेला ही बहुतों की कामनाओं को पूर्ण करता है, बस शरीरस्थ आत्मा का जिसको अनुभव होता है, उसी को शाश्वत शान्ति प्राप्ति होती है।

- जिसका ईश्वर में दृढ़विश्वास और अचल श्रद्धा होती है, वह दुःख-क्लेश तथा अशान्तिमय जीवन कभी व्यतीत कर ही नहीं सकता। वह सदा प्रसन्नचित्त, शान्त और निर्भय रहता है। उसकी मुद्रा गम्भीर दिखाई देती है। वह अपने लिए कुछ भी नहीं सोचता है और न किसी बात की चिन्ता करता है।

- जिन लोगों में फूट है वे न तो धर्म का आचरण कर सकते हैं, न सुख प्राप्त कर सकते हैं, न गौरव प्राप्त कर सकते हैं और न शान्ति ही प्राप्त कर सकते हैं।

- घास खेत में घूमकर चरी जाती है और जुगाली छाया में बैठकर। अनुभव संसार से एकत्रित करें और पचाने के लिए एकान्त में मनन करें।

- गरीबी में भी याचना न करें। जो पावें उसे ब्याज समेत चुकाने का मन रखें।

- सद्भाव और सत्कर्म अपने साथ ही जीवनोत्कर्ष से भरे-पूरे प्रतिफल लिए चलते हैं। इसके अतिरिक्त भी और कोई सत्परिणाम चाहिए।

- आप जो हैं, वही बने रहिएं। दूसरों की नकल बनाने में आप पायेंगे कम, खोयेंगे बहुत।

- काम अधूरे मत छोड़ो या तो हाथ मत डालो या पूरे करके रहो। थोड़ा करो, पर पूरे मन से करो। जो बहुत समेटता है, पर उन्हें सँभाल नहीं पाता, वह पछताता है और हँसी कराता है।

- हिम्मत करो, उदार बनो और व्यवस्था अपनाओ, ताकि भविष्य को उज्ज्वल बना सको।

- नाम से कोई बड़ा नहीं होता। 'कनक' धतूरे को भी कहते हैं, पर उससे गहने नहीं गढ़े जाते।

- वह सुखी है जिसकी परिस्थितियाँ उसके स्वभाव के अनुकूल हैं, लेकिन वह और भी सुखी है, जो अपने स्वभाव को परिस्थितियों के अनुकूल बना लेता है।

- सादगी आज के युग का सबसे बढ़िया फैशन है। आज का ही नहीं सदा से ही श्रीमान् लोगों ने सादगी को मानवता का पहला लक्षण माना है।

- जीवन में सफलता का सच्चा रहस्य इस बात में है कि हम लोगों को पसन्द करें, न कि इस बात में कि लोग हमें पसन्द करें।

- जिसने दुःख नहीं सहा वह सुख की मिठास क्या जाने। जो रोया नहीं उससे हँसना भी न आएगा। जिसने हार-जीत नहीं देखी उसे पुरुषार्थ का महत्त्व कैसे मालूम होगा ? जिसे सन्देह करना नहीं आता, वह सही चिन्तन भी न कर सकेगा।

- गुनाह छिपा नहीं रहता। वह मनुष्य के मुख पर लिखा रहता है। उस शास्त्र को हम पूरे तौर पर नहीं जानते, लेकिन लिखा साफ है।

- शरीर की संरचना क्रियाशीलता छोड़ दे तो मरण है। सृष्टि की गतिविधियाँ रुक जाएँ तो प्रलय है और मनुष्य कर्त्तव्य छोड़ दे तो उसका पतन है।

- कीचड़ मत उछालो हो सकता है कि वह निशाने तक न पहुँचे और उलटकर तुम्हें ही गन्दगी से सान दे।

- जो खाने और जोड़नेभर की चिन्ता करते हैं, उन्हें महान कार्य कर पाने का सुयोग मिल ही नहीं पाता।

- हम झंझट में तब पड़ते हैं, जब आत्म-सन्तोष की बात छोड़कर दूसरों को प्रसन्न करने के फेर में पड़ते हैं।

- आनन्द बाँटा जा सकता है, क्योंकि उसे लेने के लिए अनेक तैयार हैं। दुःख का वितरण करके अपना बोझ घटना कठिन है, क्योंकि उसे लेने के लिए कोई तैयार नहीं।

- अच्छा कार्य जो कर चुके हो, उसे भूल जाओ, जो कर रहे हो उस पर विचार मत करो, जो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आइन्दा करने वाले हो उसे जल्द से जल्द बल और प्रयत्न के साथ कर डालने का साहस रखो।

- कष्टों को कम करना और उनके कारणों को दूर करने का प्रयत्न करना मनुष्य के करने योग्य कार्य हैं।
- लाल गरम और दहकते हुए गोले को खा जाना अच्छा, मगर असंयत और बदचलन रहना और माँगकर खाना अच्छा नहीं।
- जिस आग को तुम दुश्मन के लिए जलाते हो वह अक्सर तुमको ही ज्यादा जलाती है।
- **अपुत्रस्य गृहं शून्यं सन्मित्ररहितस्य च।**
  मूर्खस्य च दिशः शून्याः सर्वशून्या दरिद्रता।।
  मूर्ख की सब दिशाएँ सूनी हैं और पुत्र तथा सन्मित्र के बिना घर सूना है। दरिद्रता सब बातों से सूनी है।
- सुयश तो आग की तरह है, अगर आप आग जला चुके हैं तो सहज ही इसे जलाये भी रख सकेंगे, पर बुझा डालने के बाद आप इसे फिर सरलता से नहीं जला सकते।
- **जीवन्तं मृतवन्मन्ये देहिनं धर्मवर्जितम्।**
  मृतो धर्मेण संयुक्तो दीर्घजीवी न संशयः।।
  प्रत्येक देहधारी प्राणी को जो कि धर्म से रहित है उसे मरा हुआ ही समझना चाहिए, किन्तु जो धर्म का पालन करता हुआ मरता है, उसे दीर्घजीवी जानना चाहिए, इसमें संशय को स्थान नहीं है।
- मनुष्य को चाहिए कि झूठ से कामना सिद्ध न करो। निन्दा, स्तुति तथा भय से भी झूठ न बोले और न लोभवश। चाहे राज्य भी मिलता हो, झूठ अधर्म को न अपनावे। भोजन, जीविका बिना भी चाहे प्राण जाते हों तो भी धर्म का त्याग न करें, क्योंकि जीव और धर्म नित्य हैं। वे मनुष्य धन्य हैं जो धर्म को किसी भी भाव नहीं बेचते।
- जिसका ईश्वर के सिवा और कोई अवलम्बन नहीं, वह जानता ही नहीं कि संसार में पराभव भी कोई चीज है।
- दरिद्र हैं वे जो धर्म का अनुष्ठान नहीं कर सकते।
- यदि जीवन में बुद्धिमानी की कोई बात है तो वह एकाग्रता है और यदि कोई खराब बात है तो वह है अपनी शक्तियों को बिखेर देना। बहुचित्रता कैसी भी हो, इससे क्या ? वह चीज अच्छी है, जो सारे खिलवाड़ और भ्रम की चीजों को दूर कर देती है और हमें हृदय से अपने काम करने के लिए भेजती है।
- कोई व्यक्ति यदि चाहे तो वह संसार पर थूक सकता है, संसार की कोई हानि न होगी, लेकिन दुनिया उस पर थूकने लगे तो वह उसमें डूब ही जाएगा।
- मनोविज्ञान कहता है—"मेरे साथ आइये ! आप माता, पिता, अध्यापक, उपदेशक, व्यापारी, ग्राहक, विद्यार्थी चाहे कुछ भी हो। चाहे जिस परिस्थिति, जिस हैसियत या किसी उलझन में क्यों न हो मैं आपकी पूरी-पूरी सहायता करूँगा। मेरे बतलाये हुए मार्ग पर चलकर आप जीवन के प्रत्येक मोर्चे पर अभूतपूर्व सफलता लाभ कर सकेंगे, दूसरों को अपना बनाकर प्रभावित कर सकेंगे, साहित्य, कला एवं विज्ञान का पूर्ण आनन्द उठा सकेंगे।

  यदि आप माँ-बाप हैं तो मैं आपको बालकों की मनःक्रिया, अनुभूति, चिन्तन प्रवृत्तियों, कल्पनाएँ सिखाऊँगा। यदि आप अध्यापक हैं तो मुझसे आप शास्त्रीय शिक्षण-पद्धति सीख सकेंगे। आप उपदेशक या वक्ता हैं तो मैं दूसरों पर प्रभाव डालने की विधियाँ सिखाऊँगा। यदि आप व्यापारी, दुकानदार या कार्यालय के मैनेजर हैं तो मैं आपको कर्मचारियों तथा नवागन्तुकों को अपने हाथ में कर लेना बताऊँगा। मैं आपको मूर्खों, दोषियों, पागलों की दशा सुधारना, अभागों, पापियों तथा आलसियों का उद्धार करना, जानवरों का अध्ययन करना, स्वयं अपना संस्कार, मानसिक उलझनों को सुलझाना तथा समग्र जन-समुदाय के पृष्ठभाग में कार्य करने वाले महान् तत्त्वों का दिग्दर्शन कराऊँगा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

- विशेष प्रकार के विचारों, दृष्टिकोणों, आदतों एवं आदर्शों के सम्मिलित योग का नाम स्वभाव है। विशेष प्रकार के विचार मनुष्य का स्वभाव बनाते हैं। जिन विचारों, मन्तव्यों संस्कारों में निरन्तर निवास करते हैं, वे ही क्रमशः हमारे स्वभाव की रचना किया करते हैं। उदासी, खिन्नता, निराशा, चिड़चिड़ापन और क्रोध लगातार एक विशेष मनःस्थिति में निवास करने की प्रतिक्रियाएँ हैं।

- मानसशास्त्र के अनुसार विचार एक जीवित बल है। स्मृति एवं कल्पना का सम्बन्ध तो वास्तविक पदार्थों से है, किन्तु विचार की शक्ति वस्तु के समान उनके गुणों पर भी पृथक विचार करती है। ईश्वर, जीव, प्रकृति विचार के विषय हैं, अतः जितने समय तक एक विचार मन में रहता है, उतने समय तक गतिवाहक तन्तु उसी के अनुसार कार्य करते हैं। विचारों का दृढ़चिन्तन, उनमें विश्वास-श्रद्धा उस विचार को स्वभाव का एक अंग बनाते हैं। जो विचार बार-बार मानस-पटल पर लाया जाएगा और जितनी दृढ़ता से उस पर विश्वास किया जाएगा, वह उतनी ही गति से स्वभाव निर्माण या स्वभाव परिवर्तन करेगा।

- पुनरावर्त्तन के नियमानुसार हममें से प्रत्येक व्यक्ति जैसा चाहे वैसा स्वभाव निर्माण कर सकता है। तुम जैसा स्वभाव चाहते हो, वैसा ही विचार तीव्र गति से मन मन्दिर में प्रविष्ट होने दो, उनका हृदय से स्वागत करो, पालो, पोसो और दृढ़ चिन्तन करो। स्वभाव में इच्छित परिवर्तन हो जाएगा। हम चाहें तो ईर्ष्या, उद्वेग, घृणा, खिन्नता, उदासी आदि स्वभावों को बदल सकते हैं। यदि हम मन की उच्चभूमिका में स्थिर रहने की आदत डाल लें तो साहस, दृढ़ता, पवित्रता का प्रवाह हमारे मन में बहने लगेगा। आत्मा के बिल्कुल पास उससे सटी हुई मन की सर्वोच्च भूमिका है। यहाँ अखण्ड पवित्रता का अमृत बरसता रहता है। इस उच्चतम विकास के निर्मल प्रदेश में जाने का मार्ग मानस प्रदेश विहारियों को मिल जाता है।

- स्थायी विचार स्वभाव, चरित्र व जीवन का निर्माण करते हैं, अतः जैसा स्वभाव चाहो, निरन्तर लगातार वैसे ही विचार प्रचुर संख्या में आने दो और उसी में अपनी आत्मा को स्नान कराते रहो। इस प्रकार तुम नीच से नीच स्वभाव को बदल सकते हो।

- अपने स्वभाव, आदतों, टेव, प्रारब्ध, स्थिति को बनाने, बिगाड़ने या सुधारने की पूरी-पूरी सामर्थ्य मनुष्य के मन में है। मनुष्य जिन विचारों का दृढ़तापूर्वक चिन्तन करता है, जिसमें अपनी आत्मा को निरन्तर स्नान कराता है, तदनुसार ही उसकी चित्त की वृत्ति दृढ़ होती है। इसी दृढ़ चित्तवृत्ति को हम स्वभाव कहकर पुकारते हैं।

- जैसा हम ध्यान करते हैं, वैसे ही हम हो जाते हैं। अतः शुभचरित्र एवं रचनात्मक विचारों को ही मन में प्रवेश करने दीजिए। फिर उन्हीं के अनुसार यथाशक्ति कार्य कीजिए। कुछ काल के अभ्यास के पश्चात् आप अपना स्वभाव अवश्य सुधार सकेंगे।

- चाहे आप किसी अत्यन्त एकान्त गुफा में कोई पाप कर्म, असुन्दर कृत्य, घृणास्पद कर्म कर लो, रात्रि के अन्धकार में उसे छिपाने का प्रयत्न करो, किन्तु विश्वास रखो पाप स्वयं पुकार-पुकार कर अपना ढोल पीटता है। आप बिना किसी विलम्ब के यह देखकर चकित होंगे कि आपके पैरों के नीचे की घास खड़ी होकर आपके विरुद्ध साक्षी देती है। आपको इर्द-गिर्द खड़े वृक्षों की भी जुबान खुल जाती है। उनके पत्ते-पत्ते उद्बोधन कर उठते हैं—"आप प्रकृति की इस कुदरत को, धोखा नहीं दे सकते।"

- प्रकृति के, परमेश्वर के, उस आदिनियन्ता के पाप कर्म देखकर सजा देने के लिए सहस्रों नेत्र हैं, सहस्रों कान हैं और अनगिनत हाथ हैं। वह दिन-रात चौबीस घण्टे आपकी विभिन्न लीलाएँ, मुद्राएँ निहारा करता है। प्रत्येक पापकर्म का किसी न किसी रूप में, किसी न किसी समय अवश्य प्रतिकार मिलता है। इसमें किसी की रिआयत नहीं होती। यह एक दैवीय विधान है।

- मैं परमात्मा को अनेक धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने मुझे गरीब पैदा किया। गरीबी मेरी भली माँ थी, जिसने मुझे जीवन की आवश्यकताओं का सच्चा महत्त्व बताया। बिना उस शिक्षा के मैं उन अमूल्य बातों को नहीं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org

www.vicharkrantibooks.org

जान सकता था। तड़क-भड़क और फैशन के भार से दूर रखते हुए उसने मनुष्यता की सेवा करने में मेरे मन को लगाया। उसने मुझे अज्ञान के अन्धकार में न गिरने देकर सत्य के प्रकाश में ला खड़ा किया। गरीबी स्वर्गीय अप्सरा है, जिसे वह प्यार करती है, उसकी नसों में आनन्द की सरिता बहा देती है। उसका मेरुदण्ड सीधा और भुजाएँ सुदृढ़ हो जाती हैं। गरीबी जिस पर कृपा करती है, उसे जीवन का सच्चा उपहार देती है, वह भेंट संजीवनी बूटी के समान है, जिसे पाकर मनुष्य दुःखों में सुख, कोलाहल में शान्ति, कुरूपता में सौन्दर्य एवं सोने में सुगन्धि का अनुभव करता है। उसके लिए सारा संसार बड़ा पवित्र, सुन्दर और उल्लासमय होता है।

❑ मनुष्य जीवन, कडुएपन, क्लेश, पीड़ा से भरा हुआ है, उसके दुःखों का अन्त नहीं तो भी हम लोग इस जीवन से प्रेम करते हैं, असल में हम लोग दुःख को भी प्यार करते हैं, क्योंकि वह सुख से बहुत कुछ मिलता-जुलता है और कभी-कभी तो वह सुख के साथ भी बड़े परिमाण में मिला रहता है।

❑ यदि गरीबी को दुःख माना जाय तो भी माता के समान स्नेहमयी है। संसार के सारे सुख जब हमें दुरदुराते हैं, तब भी उसकी गोद हमारा स्वागत करने को तैयार रहती है। ऐसी भली माँ को हम प्यार क्यों न करें ?

❑ मैंने अपने गरीब जीवन को बहुत प्यार किया है, क्योंकि उसकी गुदड़ी में से जो रत्न पाये, दूसरी जगह शायद वह मिल नहीं सकते थे।

❑ सिद्धपुरुष का, सफलता प्राप्त मनुष्य का जीवन आदर्श जीवन माना गया है। जो असफल हुआ अपने निर्दिष्ट स्थान तक न पहुँच सका, उसे उपहास और पश्चात्ताप का भागी बनना पड़ता है। इस दुनिया में उसी की वन्दना होती है, जिसने सफलता प्राप्त की है, लोग उसी की प्रशंसा करते-करते नहीं थकते। कारण यह है कि जिसने स्वयं सफलता प्राप्त की है, लोग उसी से ऐसी आशा करते हैं कि यह हमें भी सफलता के मार्ग पर अग्रसर कर सकेगा। जो स्वयं परास्त हुआ है, हार गया है, असफल रहा है, उसके निकट सम्पर्क में आते हुए लोग डरते हैं, वे सोचते हैं कि कहीं ऐसा न हो कि इस व्यक्ति से संसर्ग के कारण हमें भी असफलता, पराजय प्राप्त हो।

❑ संसार में जितने भी महापुरुष और प्रसिद्ध व्यक्ति हुए हैं, उनके जीवन पर जरा गहरी दृष्टि डालिये। आप देखेंगे कि उनकी सफलताएँ ही उन्हें इतना ऊँचा उठाने में, प्रख्यात बनाने में प्रधान रूप से सहायक सिद्ध हुईं। एक छोटे-से काम में छोटी-सी सफलता प्राप्त कर लेने पर भी आदमी का हौंसला बढ़ता है, उसकी हिम्मत चौगुनी हो जाती है। लोगों का ध्यान उस सफलता की ओर खिंचता है, वे उसके प्रशंसक, सहायक और मित्र बन जाते हैं। विजयी मनुष्य को दूसरों का अयाचित और आशातीत सहयोग मिलता है, फलस्वरूप यह द्रुतगति से सफलता के पथ पर बढ़ता जाता है, मोर्चे पर मोर्चा फतह करता जाता है और अन्त में महापुरुष कहलाता है। इसके विपरीत पराजित, असफल मनुष्य के मित्र भी साथ छोड़ जाते हैं, हौंसलापस्त हो जाने के कारण हाथ-पैर फूल जाते हैं और क्रमशः अवनति की ओर बढ़ता हुआ अन्त में वह अन्धकार के गर्त में गिर पड़ता है।

❑ पृथ्वी, पापों का प्रायश्चित्त करने के लिए कुछ दिन विश्राम करने की जगह नहीं है। यह वह घर है, जिसमें रहकर हमें सत्य, न्याय और दया के उस अंकुर को परिपुष्ट करना चाहिए, जिसका बीज प्रत्येक मनुष्य के हृदय के उस शिखर पर पहुँचने की सीढ़ी है, जिसको हम तभी प्राप्त कर सकते हैं, जबकि अपने मन, वचन और कर्म से ईश्वर के प्रकाश को संसार में फैलावें और अपने आपको इस पवित्र काम के लिए समर्पित कर दें कि जहाँ तक हमारे सामर्थ्य में है, उसकी इच्छा पूर्ण करेंगे। जिस समय हमारा न्याय होगा और हमको यह व्यवस्था दी जाएगी कि हम या तो आगे बढ़ें या पीछे हटें, उस समय केवल यही देखा जाएगा कि हमने अपने भाइयों के साथ भलाई की है या बुराई, उनको अपने जीवन-संग्राम में सहायता पहुँचाई है या नहीं ? जितनी अधिक सहानुभूति और जितना अधिक निष्कपट प्रेम हम अपने सजातीय बान्धवों के साथ रखेंगे,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

उतनी ही अधिक हमारी शक्ति बढ़ेगी। हमें यह प्रयत्न करना चाहिए कि मनुष्य जाति एक कुटुम्ब बन जावे, जिसका प्रत्येक अंग प्रज्वलित अणु के समान धार्मिक प्रकाश की किरण बनकर दूसरों के लिए उन पर चमके। इस प्रकार जातिगत पूर्णता पीढ़ी दर पीढ़ी अर्थात् युग-युगान्तर में उन्नति करती जाती है।

- यौवन, जीवन का कोई नियत समय नहीं अपितु मन की स्थिति है, इच्छा का उद्वेग है, कल्पना की विशिष्टता है, अनुभूतियों का प्राबल्य है, भीरुता पर पराक्रम का प्रभुत्व है, आलस्य के प्रति प्रेम की अपेक्षा साहसिक कार्यों की भूख है।
- "अधिक वर्षों तक जीने से ही कोई वृद्ध नहीं हो जाता। लोगों पर बुढ़ापा तभी आता है, जब वे अपनी इच्छा-शक्ति का त्याग कर बैठते हैं। आयु शरीर पर झुर्रियाँ डाल देती है, किन्तु उत्साहहीनता आत्मा पर झुर्रियाँ डालती है। चिन्ता, सन्देह, आत्म-संशय, भय और निराशा ही वे लम्बे-लम्बे वर्ष हैं, जो सिर झुकाकर विकासोन्मुख आत्मा को मिट्टी में मिला देते हैं।"
- "तुम उतने ही जवान हो, जितना तुम्हें विश्वास है, और उतने ही बूढ़े हो, जितना तुम्हें सन्देह है।"
- "तुम उतने ही जवान हो, जितनी तुममें आत्म-दृढ़ता है और उतने ही बूढ़े हो, जितना तुम्हें भय है।"
- "तुम उतने ही जवान हो, जितनी तुम्हारी आशा है और उतने ही बूढ़े हो, जितनी तुम्हारा निराशा है।"
- "जब तक इस पृथ्वी पर तुम्हारा हृदय—सौन्दर्य, उल्लास, साहस, वैभव और शक्ति का सन्देश मनुष्य और निस्सीम से प्राप्त करने में समर्थ है, तब तक तुम जवान हो।"
- "जब सारे तन्तु ढीले पड़ गये हों और तुम्हारे हृदय का केन्द्र स्थान नैराश्य के शीत और कटुता की बर्फ से ढँक गया हो, तभी तुम्हें अपने को बूढ़ा समझना चाहिए और तब परमात्मा तुम पर अपनी कृपा करें।"
- अंज्ञान के बन्धन में से ज्ञान रूपी मुक्ति के प्रकाश में ले जाने वाले उपायों में से अध्यात्म-विद्या के आचार्यों ने चार को सर्व प्रधान माना है—

(१) सत्संग, (२) विचार, (३) शम, (४) सन्तोष। श्रेष्ठ पुरुषों की वाणी या लेखनी से निकले हुए विचारों को ग्रहण करना, उनके आचरणों के अनुसार अपने जीवन को ढालने का प्रयत्न करना, उनके जैसे सद्गुणों का अपने में पैदा करना यही सत्संग है। मनुष्य कोरे कागज के समान होता है। उस पर संगति का असाधारण प्रभाव पड़ता है। जैसे लोगों के बीच, जैसे वातावरण के बीच मनुष्य रहता है, वैसा ही बन जाता है। इसलिए अपने को श्रेष्ठ बनाने के इच्छुकों के लिए सबसे पहली आवश्यकता इस बात की है कि अपने को श्रेष्ठ संगति के समीप ले जावें। मुक्ति का दूसरा उपाय है—विचार। उचित-अनुचित का, सत्य-असत्य का, आवश्यक-अनावश्यक का, धर्म-अधर्म का विचार करते रहने से ही जीवनतत्त्व की प्राप्ति होती है। इस संसार में ऐसे औंधे विचार, विश्वास और आचरण भरे हुए हैं कि किसी का अन्धानुकरण करना एक खतरे का काम है। विवेक की कसौटी पर हर एक विचार और सिद्धान्त को खूब घिस-घिसकर परखना चाहिए और जो बात सत्य एवं उचित प्रतीत हो, विचारपूर्वक उसे ही ग्रहण करना और आचरण में लाना चाहिए। तीसरा उपाय है—शम। इन्द्रियनिग्रह, संयम, वासनाओं पर अधिकार, दुर्भावों का दमन, कुविचारों का समाधान करके अपनी आत्मिकस्थिति को पवित्र रखना शम कहलाता है। चौथा उपाय सन्तोष है—जैसी स्थिति उपलब्ध हो उससे ही बिना जी को जलाये काम चला लेना और भविष्य के लिए आत्मोन्नति के लिए घोर प्रयत्न करते रहना। इन चार उपायों से मुक्ति मिलती है।

- मूर्ख वास्तविकता को भूल जाता है और अपने नियत किए कार्य को छोड़कर जीवन के मूल महत्त्व को भूलकर मालिकी गाठने लगता है। स्त्री का पति बनते हुए, पुत्र का पिता बनते हुए, नौकर का स्वामी बनते हुए मनुष्य घमण्ड में इठला जाता है। समझता है मानो मैं ही उसका बनाने वाला ब्रह्मा हूँ, पालन करने वाला

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विष्णु हूँ और नाश करने वाला शिव हूँ, पर उसकी मालिकी बात-बात में धूल चाटती है।

- विवेक-बुद्धि कहती है—नाशवान शरीर की क्षणिक लालसाओं को तृप्त करने की अपेक्षा स्थायी, अनन्त सच्चे आत्म-सुख को प्राप्त करो। शरीर को भले ही कष्ट हो, परन्तु सद्वृत्तियों द्वारा प्राप्त होने वाले सच्चे सुख को हाथ से न जाने दो। ठीकरी को छोड़कर अशर्फी ग्रहण करो। बहुत के लिए थोड़े का त्याग करो।

- अक्सर धार्मिक विद्वान भोगों को बुरा, घृणित और पापपूर्ण बताया करते हैं। असल में उनके कथन का मर्म यह है कि इन्द्रिय भोगों का दुरुपयोग करना बुरा है। मध्यम मार्ग का अवलम्बन करना चाहिए, अति और अभाव दोनों बुरे हैं।

- अपने लिए अपेक्षाकृत कम चाहना और दूसरों की सुविधा का ध्यान रखना यह मनोवृत्ति धर्म की आधारशिला है।

- हो सकता है कि अक्षर ज्ञान की दृष्टि से आप पीछे हों, परन्तु सद्बुद्धि तो परमेश्वर ने सबको दी है, वह आपके पास भी कम नहीं है। दीनता की भावना को आश्रय देकर आत्मतिरस्कार मत कीजिए।

- बुद्धि और विचारवान मनुष्य यह जानकर कि देहेन्द्रियादि सब अनात्म वस्तु हैं, केवल परमात्मा में लीन होकर रहता है। जो मनुष्य देहेन्द्रियादि आत्म-भाव से ग्रहण नहीं करता, वह पहले इस संसार के दुःख से मुक्त हो जाता है। दूसरी बात यह है कि उसके अन्तःकरण में काम, क्रोधादि विकार उत्पन्न नहीं होते। तीसरे वह अमरत्व को पहुँच जाता है। अन्तिम और सबसे श्रेष्ठ लाभ यह है कि आत्म-प्राप्ति के लिए उसको इधर-उधर नहीं भटकना पड़ता। यदि कोई ज्ञानप्राप्ति के हेतु से एक ही स्थान पर बैठा रहे और सदैव शुभसंकल्प करता रहे, तो कुछ समय में उसका मन परिपक्व हो जाएगा और इस छोटे-से प्रयत्न से ही अमरत्व को प्राप्त कर लेगा।

- यद्यपि जरा और मृत्यु देह के धर्म हैं, तथापि इन पर योगाभ्यास से बहुत कुछ विजय प्राप्त की जा सकती है। हमारा मानवीय जीवन सर्वथा हमारे वीर्य (शुक्र अथवा रेतस) पर अवलम्बित है और वीर्य चित्त पर अवलम्बित रहता है। अतएव जिन उपायों से शुक्र और मन की रक्षा होगी, उन्हीं के द्वारा यौवन और दीर्घजीवन प्राप्त किया जा सकेगा। हठयोग के आचार्यों ने इस विषय को बहुत स्पष्ट कर दिया है, वे कहते हैं कि मनुष्यों का जीवन वीर्य पर निर्भर है और वीर्य केवल मन के अधीन रहता है, इसलिए हर प्रयत्न से मन की रक्षा करनी चाहिए, मन की स्थिरता से प्राण-वायु स्थिर हो जाती है और प्राण-वायु स्थित हो जाती है जब वीर्य स्थिर हो जाता है, तब शरीर में बल उत्पन्न होता है और साहस आता है। उस समय मनुष्य सब प्रकार के भयों से मुक्त हो जाता है। योगीजन वीर्य की रक्षा से मृत्यु को जीतते हैं। वीर्यपात ही मरण और वीर्यधारण ही अमरत्व है।

- संयम और स्वतन्त्रता जिस तरह एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, उसी प्रकार नम्रता और निर्भयता भी एक ही वस्तु के दो रूप हैं। स्वतन्त्रता में जिस प्रकार अपने अधिकारों की रक्षा की प्रतिज्ञा है, उसी प्रकार संयम में दूसरे के अधिकारों की रक्षा का आश्वासन है। जो किसी से डरता नहीं है। जो औरों को डरा सकता है, वह जरूर दूसरों से डरता है।

- जो अपनी गलती को खुद ही देखकर सुधार लेता है और उसका प्रायश्चित्त कर लेता है, वह साधु है। जो गलती बताने पर मान लेता और खेद प्रकट करता है, वह सज्जन और सद्गृहस्थ है। जो गलती मालूम होने पर भी हठ करता है, वह नर-पशु है। जो सही और गलत की तमीज ही नहीं कर पाता या जो गलत को सही और सही को गलत मानता है, वह पशु है।

- धार्मिक, राजकीय अथवा वैज्ञानिक दलीलें जो किसी एक स्थान और एक समय में सही मान ली गई हैं, वह दूसरे स्थान और दूसरे समय में गलत भी हो सकती हैं, परन्तु व्यवहार-नीति एक चिरकाल सत्य है। इससे लोगों को सच्चा सुख, प्रेम और शान्ति प्राप्त हो सकती है।

- जीवन क्षणभंगुर अवश्य है, पर जिस जीवन में वीणा जैसा आकर्षण है, वही अमरता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ स्त्री, पुत्र और धन से किसी को भी सच्ची तृप्ति नहीं हो सकती। यदि हो सकी होती तो अब तक किसी न किसी को अवश्य हुई होती। सच्ची तृप्ति का विषय है केवल निजात्मतत्त्व की प्राप्ति। आत्मतत्त्व की प्राप्ति हो जाने पर वह प्राणी सदा के लिए तृप्त हो जाता है।

❑ पिंजड़े में बन्द पक्षी को कई प्रकार की सुविधाएँ भी होती हैं। शिकारी जानवरों से उसकी प्राणरक्षा वह लोहे की छड़ों का मजबूत पिंजड़ा करता रहता है। वर्षा, धूप, भूख, प्यास से भी पालने पर पक्षी को अपने रहने और पेट भरने के लिए जो कठिन श्रम करना पड़ता है, उस सबसे पिंजड़े में बन्द रहने वाले को छुटकारा मिल जाता है। इस पर भी पक्षी निरन्तर यही प्रयत्न करता रहता है कि मुझे इस बन्धन से मुक्ति मिले और स्वतन्त्र आकाश में उड़ जाऊँ। पिंजड़े की सुविधाओं को वह स्वच्छन्द जीवन की असुविधाओं के ऊपर निछावर कर देना चाहता है। स्वाधीनता सचमुच ऐसी ही वस्तु है, उसका मूल्य बुद्धिहीन पक्षी भी समझता है।

❑ मनुष्य को पशु-पक्षियों से अधिक चेतना प्राप्त है। इसलिए उसके लिए स्वाधीनता का महत्त्व और भी अधिक है। ऋषियों का अनुभव है—**"पराधीन सपनेहु सुख नाहीं।"** स्वाधीन को ही सुख मिल सकता है। आज हम राजनैतिक पराधीनता से बहुत हद तक मुक्ति प्राप्त कर रहे हैं। इस शुभ अवसर पर हर भारतवासी का प्रसन्न होना स्वाभाविक है, पर अभी बौद्धिक पराधीनता शेष है। आइए, इन बन्धनों को भी तोड़ने का प्रयत्न करें तभी सर्वतोमुखी मुक्ति का आनन्द मिल सकेगा।

❑ अन्धकार की अपनी शक्ति है। जब उसकी अनुकूलता का रात्रिकाल आता है, तब प्रतीत होता है कि संसार को उसने अपने अंचल में लपेट लिया। उसका प्रभाव-पुरुषार्थ देखते ही बनता है। आँखें यथास्थान बनी रहती हैं। वस्तुएँ भी अपनी जगह पर रखी रहती हैं। पैरों के समीप रखी हुई वस्तुओं में ठोकर लगने का कुयोग बना रहता है। अन्धकार डरावना होता है। उसके कारण एकाकीपन की अनुभूति होती है और रस्सी का साँप, झाड़ी का भूत बनकर खड़ा हो जाता है। नींद को धन्यवाद है कि वह विस्मृति के गर्त में धकेल देती है अन्यथा करवटें बदलते वह अवधि पर्वत जैसी भारी पड़े।

इतनी बड़ी भयंकरता की सत्ता स्वीकार करते हुए भी हमें दीपक की सराहना करनी पड़ती है, जो जब अपनी छोटी-सी लौ प्रज्वलित करता है तो स्थिति में कायाकल्प जैसा परिवर्तन हो जाता है। उसकी धुँधली आभा भी निकटवर्ती परिस्थिति तथा वस्तु-व्यवस्था का ज्ञान करा देती है। वस्तुबोध की आधी समस्या हल हो जाती है।

दीपक छोटा ही सही, अल्प मूल्य का सही, पर वह प्रकाश का अंशधर होने के नाते अन्धकार के सुदूर फैलाव को चुनौती देता है और निराशा के वातावरण को आशा और उत्साह से भर देता है। इसी को कहते हैं नेतृत्व।

❑ जीवन एक पाठशाला है, जिसमें अनुभवों के आधार पर हम शिक्षा प्राप्त करते हैं। विश्व में आज तक जो भी व्यक्ति आया है, उसने अपनी यात्रा के दिन पूरे करते हुए यही कहा है कि संसार में एक ही वस्तु ग्रहण करने योग्य है, वह है—धर्म। इस लोक की और परलोक की सारी सम्पदाएँ धर्म की धुरी से बँधी हुई हैं। धर्म के बिना स्थायी सुख आज तक न तो किसी को मिला है और न आगे मिलेगा। यह सब कुछ जानते हुए भी जो क्षणिक लालसा के वशीभूत होकर अधर्म की ओर कदम बढ़ाते हैं—हाय ! वे कैसे अभागे हैं ? चमकीले, दमकीले पाप के प्रलोभन में फँसकर अपने भविष्य को अन्धकारपूर्ण और रौरव की ज्वालाओं में जलता हुआ बनाने जा रहे हैं, सचमुच वे अभागे बड़े ही दया के पात्र हैं। संसार की महानताओं के चिरकाल अनुभव से लाभ उठाओ। हर एक सन्त सदा से अपना यही अनुभव कहता रहा है कि धर्म में ही कल्याण है—सो हे कल्याण के चाहने वालो ! ठहरो, अधर्म से डरो और धर्म को अपनाओ।

❑ अन्तः से फूट पड़ने वाला उल्लास ही आध्यात्मिकता का प्रकाश है। यह सदैव उन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सभी के मुखमण्डल पर चमकता देखा जा सकता है, जिन्हें आत्म-ज्ञान हो जाता है। आत्मा का सहज रूप परम सत्ता की तरह आनन्दमय है। इसलिए विद्वानों ने कहा है—"आध्यात्मिकता का ही दूसरा नाम प्रसन्नता है। जो प्रफुल्लता से जितना दूर है, वह ईश्वर से भी उतना ही दूर है। वह न आत्मा को जानता है, न परमात्मा की सत्ता को। सदैव झल्लाने, खीजने आवेशग्रस्त होने वालों को मनीषियों ने नास्तिक बताया है।

❑ संसार रूपी इस जीवन-समर में जो स्वयं को आनन्दमय बनाये रखता है, दूसरों को भी हँसाता रहता है, वह ईश्वर का प्रकाश ही फैलाता है। यहाँ जो कुछ भी है, आनन्दित होने तथा दूसरों को हँसाने के लिए ही उपजाया गया है। जो कुछ भी बुरा या अशुभ है, वह मनुष्य को प्रखर बनाने के लिए विद्यमान है। जीवन में समय-समय पर आने वाली प्रतिकूलताएँ मनुष्य का साहस बढ़ाने, धैर्य की नींव मजबूत करने, शक्ति-सामर्थ्य को विकसित करने को आती हैं। जो इनसे डरकर रो पड़ता है, कदम पीछे हटाने लगता है, उसकी आध्यात्मिकता पर भला कौन विश्वास करेगा ? जिन्दगी सरल तो हो, पर सरस एवं प्रफुल्लता से भरी भी। उसमें संघर्ष का भी स्थान होना चाहिए क्योंकि इसके बिना दुनिया में कोई सफलता जी नहीं सकती।

❑ रोना एक अभिशाप है, जो मात्र अविवेकी नास्तिकों को शोभा देता है। हँसना-मुसकराना एक ऐसा वरदान है, जो वर्तमान में सन्तोष और भविष्य की शुभ सम्भावनाओं की कल्पना को जन्म देकर मनुष्य का जीना सार्थक बनाता है। हम सही अर्थों में आस्तिक बनें। अपने अनुभवों से अन्य को भी अवगत कराएँ एवं सारा वातावरण प्रफुल्लता से ओत-प्रोत कर दें।

❑ अणु का विभु के प्रति समर्पण इसी को विस्फोट कहते हैं। रज घटक जब तक अपने सीमित कलेवर में आबद्ध रहता है, तब तक उसकी स्थिति पददलित धूलि जितनी नगण्य और उपहासास्पद बनी रहती है, किन्तु जब वह विराट से मिलने के लिए आतुर हो उठता है और अपने परम्परागत आवरण को तोड़ने का साहस जुटाता है तो प्रयास को विस्फोट के रूप में आश्चर्यचकित होकर देखा जाता है। उससे निकलने वाले विकरण का प्रभाव कितना गहरा, कितना व्यापक और कितना चिरस्थायी होता है, इसे सभी जानते हैं।

❑ उत्तंग शिखर पर जमा हुआ हिमकलेवर जब असीमता से असन्तुष्ट होकर लोक-साधना की बात सोचता है तो उसे अपनी काया गलानी पड़ती है, उसकी यह करुण-संवेदना गंगोत्री से फूटती है। उसका प्रयाण प्यासी भूमि को सींचने और प्राणियों की प्यास बुझाने का होता है। इसी को गंगावतरण कहते हैं। उसके सभी सहायकों को श्रेय प्राप्त होता है। द्रवित हिमखण्ड धन्य बनते हैं और देवता की तरह अभ्यर्थना प्राप्त करते हैं। अपने वैभव को सार्थक बनाने के अतिरिक्त चरमविकास के लक्ष्य तक पहुँचकर महान समुद्र बनते हैं। धरती की हरीतिमा समुद्र पर भी निर्भर है। हिमखण्ड की उदार साहसिकता पर कृपणों को कुड़कुड़ाने और बहुत कुछ कहने की गुंजाइश है, पर बुद्धिमत्ता बताती है कि समीपता छोड़कर असमीपता के साथ जुड़ जाने में हानि कम और लाभ अधिक है।

❑ आत्मा सीमित है। संकीर्णता, स्वार्थपरता की बेड़ियाँ ही भव-बन्धन हैं। तुच्छता और क्षुद्रता इसी स्थिति को कहते हैं। अन्तरात्मा में व्यापकता के लिए जो आतुरता उठती है उसी का नाम भक्ति है। भक्ति को भाव से कर्म में उतारने का नाम ही साधना है। साधना कृत्य नहीं दुस्साहस है। उसमें बन्धनों को तोड़ने और महान से मिलने की ललक ही महान भूमिका सम्पादित करती है, सिद्धि के लक्ष्य तक पहुँचाती है।

❑ 'मुक्ति' को परम पुरुषार्थ माना गया है। कैदी जेल से छूटता है, छात्र कॉलेज छोड़ता है, गर्भ से बालक धरती पर आता है तो उसे प्रसन्नता भी होती है और सुविधा भी मिलती है। भव-बन्धनों से छुटकारा प्राप्त कर मनुष्य भी समस्त शोक-सन्तापों से रहित होकर सच्चा जीवन-लाभ लेता है।

❑ मुक्ति मरने के बाद होती है और किसी लोक विशेष में रहना पड़ता हो ऐसी बात नहीं है। दुर्बुद्धि और दुष्प्रवृत्तियों के ही बन्धन जीव को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

बाँधे हुए हैं। यदि उनसे छुटकारा प्राप्त कर लें तो फिर जीवन-मुक्ति का आनन्द जीवित रहते हुए ही इसी जन्म में मिलता है, उसके लिए परलोक की प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती।

❑ मुक्त पुरुष न किसी को उद्विग्न करते हैं और न किसी से उद्विग्न होते हैं। उनके लोभ, मोह आदि शत्रु नष्ट हो चुके होते हैं। वे दूसरों की मनःस्थिति जानते हैं और लोकप्रिय आचरण करते हैं। प्रिय और मधुर वाणी बोलते हैं। वे सूक्ष्मबुद्धि से निर्णय करते हैं। सज्जन नागरिकों की तरह आचरण करते हैं। सबके बन्धु होते हैं।

❑ कर्त्तव्य-कर्मों से निष्ठापूर्वक, किन्तु उदासीन की तरह लगा हुआ न आकांक्षा करता है, न चिन्ता, न द्वेष, न हर्ष, न उद्वेग। अवसर के अनुसार यथोचित व्यवहार करता है। भक्त के प्रति भक्त, शठ के प्रति शठ, बालकों के साथ बालक, वृद्धों के प्रति वृद्ध और बुद्धिमानों के साथ बुद्धिमानों जैसा व्यवहार करता है। युवाओं में युवकों की तरह रहता है और दुःखियों को देखकर दुःखी होता है। वह न कभी दीन होता है, न उद्धत, न बौखलाता है और न खिन्न-उद्विग्न होता है, न हर्षोन्मत्त। जिसके मन पर हर्ष, शोक, भय, काम, क्रोध और कृपणता का प्रभाव नहीं होता, वह जीवनमुक्त ही है।

❑ लगता है मनुष्य भूत की उपासना में निरत रहकर भूत बन चुका या बनने जा रहा है। पाँच तत्त्वों को पाँच भूत कहते हैं। भौतिक पदार्थों को भूत की करतूत तब कहा जाता है, जब उसका उपयोग शरीर-निर्वाह से आगे बढ़कर आत्मा के क्षेत्र में प्रवेश करने और स्थान पाने लगते हैं।

शरीर भूतों का बना है और उस इन्जन को चलाने के लिए पदार्थों का ईंधन आवश्यक है, किन्तु आत्मा शरीर नहीं है। उसको आहार व पोषण, विचारणा और भावना की उत्कृष्टता से मिलता है। शरीर को भूत और चेतना को देव कहते हैं। कहते हैं भूत श्मशान में रहते हैं। उन्हें एकाकी खण्डहरों में रहना पसन्द है। भूतकाल की विसंगतियों में ही उलझे खिन्न-विपन्न बने रहते हैं। वे डरते और डराते हैं। जलते और जलाते हैं। चाहते बहुतों से हैं, किन्तु दे किसी को कुछ नहीं पाते। देखना होगा कि यह भूतकल्पना कहीं अपने ऊपर ही तो लागू नहीं होती। कहीं हम स्वयं ही भूतों में निरत रहते, स्वयं ही तो भूत नहीं बन गये हैं।

अपने स्वरूप और लक्ष्य देव हैं। देवों की सम्पदा, विचारणा और भावना की उत्कृष्टता होती है। यह सम्पदा जहाँ भी होगी, वहीं स्वर्गीय वातावरण बनेगा। सत्कर्मों में सहायता करने के लिए देव निरन्तर दौड़ते हैं। देना ही उनका स्वभाव और क्रिया-कलाप होता है। वे सम्मान पाते हैं और वरदान देते हैं। अमृत पीते और अमृत पिलाते हैं। आनन्द पाते और उल्लास बिखेरते हैं।

भूत या देव में हमने जो चुना वह सामने है। यदि चाहें तो स्थिति को बदल भी सकते हैं। भूतयोनि से निकलकर देवयोनि में प्रवेश करना पूर्णतया अपनी इच्छा और हिम्मत पर निर्भर है।

❑ भारत की देव-संस्कृति ने हर सोपान में मानव जाति को एक ही शिक्षा दी है कि वह लोभ, मोह, विलास और अहंता के भव-बन्धन शिथिल करे। आदर्शों की श्रेष्ठता की समुच्चय रूपी समष्टि-सत्ता-भगवान को प्राप्त करने का परम पुरुषार्थ अपनाये। निर्वाह हेतु औसत देशवासियों जितनी साधन-सुविधा भर से काम चलाए। परिवार को छोटा रखे। उसे स्वावलम्बी, सुसंस्कारी भर बनाने का उत्तरदायित्व निभाए। यही परम श्रेष्ठ व एकमात्र कर्त्तव्य परिवार के पालक होने के नाते है। कुटुम्बियों पर वैभव लुटाने जैसी दुर्बुद्धि किसी पर न छाये। कुटुम्बियों की रुचि भड़काने तथा मनचाहे उपहार देने की वित्तेषणा में वह समूचा समुदाय कुसंस्कारी बन जाता है। पेट और प्रजनन के क्षेत्र में चूक करने पर ही तो वर्तमान उद्विग्नता से और भविष्य अन्धतमिस्र से भरता है।

❑ उच्चस्तरीय दृष्टिकोण अपनाना और तदनुरूप जीवनचर्या बनाना कितना सुखद, आनन्ददायक और मंगलमय है, इसे कोई भी अनुभव कर सकता है। इसी मनःस्थिति को स्वर्ग कहा गया है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

व्यवहार में से पशु-प्रवृत्तियों को हटा लेना ही मुक्ति है। परम पुरुषार्थ इसी को कहा गया है। इस स्तर पर पहुँचना ही भारत की देव-संस्कृति के तत्त्वदर्शन का उद्देश्य है।

❑ विचारों की शक्ति अनन्त है। इसका अनुमान लगाना उतना कठिन कार्य है, जितना कि आज से कुछ दशकों पूर्व जड़ अणु की शक्ति का अनुमान लगाना असम्भव माना जाता था। विचार वस्तुतः चैतन्य अणु ही हैं। जब ये स्वार्थ युक्त होते हैं तो उस व्यक्ति व प्रभावक्षेत्र का विनाश ही करते हैं। सर्वहितार्थाय उपजे विचार एक मस्तिष्क से निकलकर सारे विश्व में फैल जाते हैं। संसार में जितने भी महापुरुष हुए हैं, उनके विचार इस प्रकार के रहे हैं। वे ऐसा प्रचण्ड शक्ति-प्रवाह बनाने में सफल हुए हैं कि तत्कालीन समाज का चिन्तन, चरित्र, व्यवहार उसी दिशा में उन्मुख होता चला गया। मनुष्य की शक्ति उसके विचारों में ही सन्निहित है। एक मनुष्य का विचार कुछ भी करने में समर्थ नहीं हो पाता, जबकि दूसरे मनुष्य का विचार सारी दुनिया में उथल-पुथल मचा देता है। जो विचार जितना ही विनाशकारी, द्वेष-भावना युक्त जहरीला होता है, वह उसके जन्मदाता का विनाश करने के लिए उतना ही उद्यत रहता है। भला विचार बाहर जाता है और साहित्य, प्रचार, सत्संग आदि के माध्यम से अनेकानेक व्यक्तियों को नयी प्रेरणा देता है। उदार-आत्मीयता, परमार्थभाव से युक्त विचार दीर्घजीवी होते हैं, अपने जैसी सजातीय विचारों की संख्या बढ़ाते चले जाते हैं। ईसा, महावीर, बुद्ध को गये आज हजारों वर्ष बीत गये। उनके अपने थोड़े ही लोगों तक सीमित थे, परन्तु आज वे संसारभर के करोड़ों व्यक्तियों के जीवन का केन्द्रबिन्दु बने हुए हैं। जो मनुष्य जितना अधिक अपने विचार अपने असीम स्वरूप से मुक्त कर असीम बनाते हैं, वे उन्हें उतना ही शक्तिसम्पन्न, सामर्थ्यों से भरपूर बना लोकहित में नियोजित कर देते हैं। ऐसे ही व्यक्ति महामानव देवदूत की श्रेणी में गिने जाते हैं।

❑ भजन है क्या ? क्या यह संकीर्तन मात्र है ? मात्र नाम का उच्चारण व रटन ही भजन है ? वस्तुतः इस शब्द की व्युत्पत्ति देखने के बाद समझ में आती है कि वैसा है नहीं। **"भज सेवायां"** धातु से भजन शब्द बना है, जिसका सीधा-सादा अर्थ है—सेवा। भजन अर्थात् सेवा। भजन के अन्तर्गत पूजा, कर्मकाण्ड, कीर्तन भी आते हैं, पर उन सबके मूल में एक ही अर्थ है—सेवा। सेवा किसकी, पूजा किसकी ? इसका एक ही उत्तर है—आदर्शों का, श्रेष्ठताओं का समुच्चय ही भगवान है। दुःख-कष्टों का तत्काल संकट-निवारण करने के लिए कुछ साधनों की सहायता की भी आवश्यकता पड़ती है, पर किसी का स्थायी दुःख मिटाना हो तो उसे अपने पैरों पर खड़े कर स्वावलम्बी बनाना होगा। इसका एकमात्र आधार है—आदर्शों के प्रति उसे निष्ठावान बनाना। यही है सही अर्थों में सेवा।

❑ दुःखी को सुखी और सुखी को सुसंस्कृत बनाने का आत्यन्तिक आधार एक ही है—आदर्शों को आत्मसात करना। आदर्शवादिता का अभिवर्द्धन ही सेवा-साधना का एकमात्र व सच्चा स्वरूप है। सेवा के साथ साधना शब्द जोड़कर सेवा-साधना उसे इसीलिए कहा गया है कि सेवा में कहीं आत्म-श्लाघा की प्रवंचना न जुड़ जाए, उदार आत्मीयता का विस्तार होने पर जो करुणा उमगती है और दूसरों को ऊँचा उठाने, आगे बढ़ाने के लिए जो साहस प्रखर होता है, उसकी तृप्ति, अपनी क्षमताएँ सत्प्रयोजनों के निमित्त बढ़ाने के लिए नियोजित किये बिना नहीं होती। इस परमार्थपरायणता को ही सेवा-साधना कहते हैं।

❑ स्रष्टा ने जन्म के समय ही एक पारसमणि तुम्हें प्रदान की है और वह ऐसी है, जिसके आजीवन छिनने या गुमने का कोई खतरा नहीं है। इस पारसमणि का नाम है—विचारणा। जो मस्तिष्क की बहुमूल्य पिटारी में इस प्रकार सुरक्षित रखी जाती है, जहाँ किसी चोर की पहुँच न हो सके। इसके रहते तुम्हें पराभव का संकट आने की आशंका नहीं है।

❑ विचार व्यर्थ के मनोरंजन समझे जाते हैं, पर वस्तुतः उनकी सृजनात्मक शक्ति अनन्त है। वे एक प्रकार के चुम्बक हैं, जो अपने अनुरूप परिस्थितियों को कहीं से भी खींच बुलाते हैं। साधना किसी को उपहार में नहीं मिली और यदि मिली हो तो टिकी नहीं। अपना पेट ही आहार पचाता और जीवित रहने योग्य रस-रक्त का उत्पादन करता है। ठीक इसी प्रकार विचार-प्रवाह ही व्यक्ति का स्तर विनिर्मित करता है। क्षमताएँ उसी के आधार पर उत्पन्न होती हैं। पराक्रम के प्रवाह को दिशाधारा उसी से मिलती है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ विचारणा द्वारा विनिर्मित व्यक्तित्व और पराक्रम ही वह अवसर प्रदान करते हैं जैसा कि सोचा और चाहा गया था।

❑ विचारों की सृजनात्मक क्षमता समझना और उन्हें सही दिशा में गतिशील करना ही वह सौभाग्य है, जिसे उपलब्ध पारसमणि प्राप्त कराती रहती है।

❑ कहने को तो हम लोग रोज ईश्वर रटते हैं, पर असल में शरीर को ईश्वर मानते हैं। दिन-रात हम जो काम करते हैं, उन पर बारीक दृष्टि डालें तो पता चलता है कि चौबीस के चौबीस घण्टे शरीर की पूजा में लगते हैं। शाम को अपनी कमाई पर गौर कीजिए, यह सब शरीरसुख के लिए प्राप्त किया गया है। धन-दौलत इकट्ठा करना हमारा आराध्य विषय है। षट्रस व्यंजन, बढ़िया कपड़े, ऊँचा मकान, कीमती सवारी, सुन्दरी सेविका, यही सब तो हमें प्रिय हैं। इन्हीं के लिए सारा प्रयत्न होता है। सारा का सारा समय शरीरपूजा में लगता है। गिद्ध जैसे कितना ही ऊँचा उड़ जाए पर दृष्टि मुर्दा मांस पर ही रखता है। इसी प्रकार हम चाहे जितनी बढ़-बढ़कर बातें करें, पर दृष्टि शरीर पर ही रहती है।

❑ अभागे मनुष्य ! यह शरीर अमर नहीं है। इसके सुख भी सदा नहीं भोगे जा सकते। विश्व में कोई शरीर सदा नहीं जिया। मौत के दाँतों में लटके हुए आदमी ! यह शरीर कल ही नष्ट होने वाला है। यह ईश्वर नहीं है, इसकी ईश्वर जैसी पूजा मत कर, हाड़-मांस की उपासना करने वाले मूर्ख ! अपने अन्त को देख ! संसार में मृत्यु ही सत्य है। यह शरीर नाशवान है। मनुष्यो ! भूलो मत—यह शरीर नाशवान है। इस मल-मूत्र की गठरी को ईश्वर मत मानो। स्वार्थ से कुछ ऊँची दृष्टि उठाकर परमार्थ की ओर भी देखो। अपने अन्धकारमय भविष्य का भी चिन्तन करो।

❑ सम्पत्ति एक सीमित मात्रा में अपने पास रखी जा सकती है, उससे अधिक नहीं। फिर तृष्णाजन्य उपार्जन से संकट यह खड़ा हो जाता है कि जो चाहा यदि उतना मिलता भी जाए तो वह संचित न रखा जा सकेगा। चीज चाही हुई हो, प्रिय भी हो और मूल्यवान भी, पर उसे रखने का प्रबन्ध किए बिना उसे जहाँ-तहाँ कैसे फेंक दिया जाए ? स्थान बनाये बिना संग्रह कर लेना मुसीबत मोल लेने के समान है।

❑ पेट में चार रोटी का स्थान है। मिष्ठान्न सामने अधिक मात्रा में उपस्थित हो तो उसे छोड़ देने का मन न हो, रखने की जगह नहीं, ऐसी दशा में खाये जाने पर पेट में दर्द उठेगा ही। बाहर कहीं रखेंगे तो चोरी होने या सड़ जाने का संकट खड़ा होगा। यह है सांसारिक मुसीबतों की जड़। साधनों की कमी नहीं, पचाने की क्षमता नहीं। ऐसी दशा में तृष्णा अपनी ही होते हुए भी अपने लिए ही संकट उत्पन्न करती है।

❑ संसार में असीम वैभव भरा पड़ा है, पर वह पात्रता के अनुरूप ही उपलब्ध है। भगवान सुख इतना देता है, जो हजम हो सके। बिना पचे भी दर्द होता है। यही है तृष्णाजन्य दुःख, अन्यथा इस वैभव से भरे संसार में हमें अकारण दुःख क्यों उठाना पड़े ?

❑ यदि मन के ऊपर अंकुश रखने में आपको कठिनाई मालूम पड़ती हो तो उसे लोकलाज के मजबूत रस्से से बाँध दीजिए। बहुत बार ऐसा होता है कि मन में कोई बुरी प्रवृत्ति उठ रही है, किन्तु उसे चरितार्थ करना लोक-लाज के विपरीत पड़ता है, तो अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए उस काम को करने से रुकना पड़ता है। लोक-लाज की रक्षा के लिए बड़ी-बड़ी कुर्बानियाँ की जाती हैं। कोई हमें गरीब न समझे, इस भय से लोग भीतर ही भीतर अनेक कष्ट सहकर भी बाहरी लिफाफा ठीक बनाये रहते हैं। विवाह-शादियों में सामर्थ्य से बाहर खर्च कर डालते हैं। इसका कारण यही है कि हर मनुष्य चाहता है कि मेरे बारे में लोगों के मन में जो अच्छी प्रतिष्ठा युक्त भावनाएँ हैं, वे वैसी ही बनी रहें, नष्ट न होने पावें। आप इस लोक-लाज से अपने सदाचार को सम्बन्धित कर लीजिए, जिससे कि जब गिरने का मौका आवे, तभी सँभल जाएँ, पतन की ओर जिस समय प्रवृत्ति हो उसी समय "कोई क्या कहेगा" "बड़ी बदनामी होगी"

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

"आबरू धूलि में मिल जाएगी" की प्रश्नावली अन्तःकरण में से उठ खड़ी हो और पतन के मार्ग पर बढ़ते हुए पैर को जंजीर से जकड़कर बाँध दें।

❑ पत्थर का कोयला एक विशेष स्तर पर पहुँचकर हीरे की उपमा पा लेता है। यों उसका अनगढ़ प्रयोग करने वाली अँगीठी में जलाकर भी कमरे में रख लेते हैं और भोर होने से पूर्व ही विषैली गैस के कारण मर चुके होते हैं, जबकि हीरा उपलब्ध करने वाले सुसम्पन्न, भागवान् बनते हैं। लोहा, राँगा, सीसा अमुक जैसे सामान्य खनिजों का बाजारू मूल्य तुच्छ होता है, पर उन्हें जब भस्म-रसायन बनाकर ग्रहण किया जाता है तो वे संजीवनी बूटी का काम करते और महँगे मूल्य पर बिकते हैं। पीने का पानी भाप बनाकर जब डिस्टिल्ड वाटर बना लिया जाता है, तब उसकी गणना औषधियों में होती है, उसे कई रासायनिक क्रियाओं एवं सम्मिश्रणों में प्रयुक्त किया जाता है।

❑ यदि सच्चा प्रयत्न करने पर भी तुम सफल न हो सको तो कोई हानि नहीं। पराजय बुरी वस्तु नहीं है, यदि वह विजय के मार्ग में अग्रसर होते हुए मिली हो। प्रत्येक पराजय विजय की दशा में कुछ आगे बढ़ जाना है। उच्चतर ध्येय की ओर पहली सीढ़ी है। हमारी प्रत्येक पराजय यह स्पष्ट करती है कि अमुक दिशा में हमारी कमजोरी है। अमुक तत्त्व में हम पिछड़े हुए हैं या किसी विशिष्ट उपकरण पर हम समुचित ध्यान नहीं दे रहे हैं। पराजय हमारा ध्यान उस ओर आकर्षित करती है, जहाँ हमारी निर्बलता है, जहाँ मनोवृत्ति अनेक ओर बिखरी हुई है, वहाँ विचार और क्रिया परस्पर विरुद्ध दिशा में बह रहे हैं, जहाँ दुःख, क्लेश, शोक, मोह इत्यादि परस्पर विरोधी इच्छाएँ हमें चंचल कर एकाग्र नहीं होने देतीं।

❑ किसी न किसी दिशा में प्रत्येक पराजय हमें कुछ सिखा जाती है। मिथ्या कल्पनाओं को दूर कर हमें कुछ न कुछ सबल बना जाती है, हमारी विशृंखल वृत्तियों कों एकाग्रता का रहस्य सिखाती है। अनेक महापुरुष केवल इसी कारण सफल हुए, क्योंकि उन्हें पराजय की कड़ुवाहट को चखना पड़ा था। यदि उन्हें वह पराजय न मिलती, तो वे महत्त्वपूर्ण विजय कदापि प्राप्त न कर सकते। अपनी पराजय से उन्हें ज्ञात हुआ कि उनके संकल्प और इच्छाशक्तियाँ, निर्बल चित्त स्थिर नहीं हैं, अन्तःकरण में आत्म-शक्ति पर्याप्त रूप से जाग्रत नहीं है। इन भूलों को उन्होंने समझा और उन्हें दूर करके विजय के पथ पर अग्रसर हुए।

❑ डरो मत। श्रद्धा करो। दुःख और आपत्ति की छाया से घिरने पर भी मत डरो। तुम अविनाशी परमात्मा के पुत्र हो। वह दिव्य अखण्ड-ज्योति तुम्हारे अन्धकार को नष्ट कर देगी। धीर बनो। तुम्हारे भीतर वह शक्ति है, जो तुम्हें प्रत्येक परिस्थिति का मालिक बना देगी। उच्च विचारों का आह्वान करो। हृदय को वीर, हाथ को बलवान और इच्छा को अचल बनाओ। सत, चित और आनन्द की प्राप्ति के लिए अपनी शक्ति में श्रद्धा करो। सब प्रयत्नों में जीवन और स्फूर्ति का संचार करो। धैर्य, आशा और दृढ़निश्चय को धारण करो। जिम्मेदारियों को सिर पर लोगे, बल और साहस दिखाओगे तो निश्चय ही तुम्हें सफलता प्राप्त होगी।

❑ समझा जाता है कि सुख और दुःख परस्पर विरोधी हैं। एक को दूसरा काटता है। सुखी और दुःखी दो विपरीत स्थिति के व्यक्ति हैं। पर गहराई से विचार करने पर दूसरी ही बात सामने आती है। चिन्तन बताता है कि दुःख नग्न सत्य है, सुख तो उसका सुसज्जित करने वाला परिधान-अलंकार मात्र है।

❑ पुत्र प्राप्ति की मुसकान के पीछे माता की प्रसव पीड़ा झाँकती है। आज का गौरवान्वित कण्ठाभरण कल सुनार की भट्टी में तप रहा था और हथौड़ों की चोटें खा रहा था। आग पर पकाये बिना स्वादिष्ट भोजन बन सकना कैसे सम्भव हो सकता है ?

❑ धनी किसान, पदोन्नत श्रमिक और पुरस्कृत कलाकार के आज के सौभाग्य को सराहते हुए थोड़ा पीछे मुड़कर भी देखना होगा। उन उपलब्धियों के लिए उन्हें कितने समय तक, कितने मनोयोगपूर्वक, कितनी कठोर साधना करनी पड़ी है। पल्लवित वृक्ष का इतिहास वहाँ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

से आरम्भ होता है, जहाँ एक बीज ने अपनी अस्तित्व की बाजी लगाई थी। चिरन्तन एकाग्र अध्यवसाय के बिना कौन विज्ञविद्वान बन सका है ? सफल लोगों से पूछा जा सकता है कि उन्होंने कितनी ठोकरें खाईं और कितनी असफलताएँ गले उतारीं ?

- दुःख बड़ा भाई है और सुख छोटा। दुःख पहले पैदा हुआ, सुख बाद में। दोनों चिरन्तन सहचर हैं, उनकी एकता को कोई तोड़ नहीं सकता। दुःख के स्वेच्छापूर्वक वरण किये बिना कोई सुख का सौभाग्य पा नहीं सकता।

- अपने व्यक्तित्व को श्रेष्ठ विचारों को स्नान करा देना ही ध्यान कहलाता है। न जाने हमें क्यों समझ में नहीं आता, किन्तु वस्तुतः हमारी समस्त समस्याओं का मूल कारण व्यक्तित्व के गठन में संव्याप्त कमियों में छिपा हुआ है। दुःख-सुख जो भी हमें बहिरंग में अनुभूत होता है, वह व्यक्तित्व में आए बिखराव के कारण ही है। व्यक्तित्व को सही ढंग से निखार लेना, उसका सुनियोजन करना जिस दिन मनुष्य को आ जाता है, उसकी सारी समस्याओं, कष्टों, परेशानियों का अन्त हो जाता है। जीवन जीने की कला के नाम से जिस विधा को पुकारा जाता है, वह यही अध्यात्म साधना है, जिसकी ध्यान एक क्रिया है।

- ध्यान मात्र एकाग्रता नहीं है। वह तो मात्र इसकी पहली अवस्था है। जब व्यक्ति का व्यक्तित्व व्यवस्थित ही नहीं, पूर्णतः प्रकाशित भी होने लगता है—परमात्मचेतना के दिव्य प्रकाश से, तब ध्यान सम्पन्न हुआ माना जाता है। प्रकाशवान् मन जो सतत् श्रेष्ठ विचारों में निमग्न रहता है, आदर्शों के लिए स्व-खपा देने वाला चरित्र तथा सभी से सामञ्जस्य स्थापित कर लेने वाला व्यवहार।

- ध्यान को भी जन-साधारण ने एक कर्मकाण्ड-सा मान लिया है, कुछ विशेष बाह्योपचार समझ लिया है। कर्मकाण्ड यदि हैं तो श्रृंगार मात्र, यदि नहीं हैं तो भी ध्यान का मर्म समझ में आ जाए तो अनिवार्य भी नहीं। व्यक्तित्व की सुव्यवस्था, आमूल-चूल परिष्कार, व्यक्ति को मूर्च्छना से जगाकर उसको आत्म-जाग्रति की स्थिति में लाकर व्यक्तित्व के विस्तार की जानकारी कराना ही ध्यान का मूल उद्देश्य है। चाहे यह प्रयोग निराकार परब्रह्म की चेतना से एकाकार होने के रूप में सम्पन्न हो अथवा त्राटक के माध्यम से दीपक की लौ पर ध्यान द्वारा इष्ट पर केन्द्रित लय की साधना द्वारा-नादयोग के माध्यम से, दिव्य-ध्वनियों के श्रवण द्वारा अथवा सौरचेतना पर केन्द्रित आत्म-चेतना द्वारा—लक्ष्य सभी का एक है आन्तरिक सुव्यवस्था व बहिरंग के साथ सामंजस्य।

- सुविधा-साधन प्राप्त करने के लिए, दूसरों को अनुकूल बनाने के लिए जो प्रयत्न होते हैं, उनमें दबाव या अनुरोध ही प्रधान रखा जाता है। इस आधार पर कुछ तो मिलता है, पर उतना नहीं जितना अपेक्षित है। दबाव की विवशता से किसी प्रकार पीछा छुड़ाने के लिए कोई कुछ देने भी लगे तो उसका स्तर गया-बीता होता है। उपलब्धि क्या है और कितनी है, यह देखना पर्याप्त नहीं ? यह समझना भी आवश्यक है कि वह किस स्रोत से प्राप्त हुई और किस स्तर की है। निकृष्ट स्तर की उलपब्धि विस्तार में कितनी ही बड़ी क्यों न हो, उसका परिणाम अन्ततः दुःखद और दुर्भाग्यपूर्ण ही होता है। इस प्रकार अनुरोध-आग्रह से अपनी दीन, दुर्बलता व्यक्त करते हुए जो मिलता है, उसमें प्राप्तकर्त्ता को असमर्थ, दुर्बल, अभागा जैसी तिरस्कृतियों की मात्रा घुली रहती है। अनुग्रह से जो मिलता है, उसके बदले आत्मा का शमन और आत्मावलम्बन की गरिमा भी निश्चित रूप से घट जाती है।

- सुविधा-साधनों की वास्तविक आवश्यकता वस्तुतः बहुत स्वल्प है। सुखी निर्वाह के लिए जितना आवश्यक है, वह सरलता और स्वल्प श्रम से सर्वत्र पाया जा सकता है। यदि अधिक की आवश्यकता हो तो फिर उसका सही उपाय है—अपनी योग्यता का एवं पुरुषार्थ का अनुपात बढ़ाना। गुण, कर्म, स्वभाव में शालीनता का संवर्द्धन करने से मनुष्य की प्रामाणिकता बढ़ती है और उस पूँजी के मूल्य पर अनायास ही दूसरों का सद्भावसिक्त समर्थन-सहयोग मिलने लगता है। हर मनुष्य और हर पदार्थ के भीतर एक ऐसी श्रेष्ठ सत्ता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विद्यमान है जो शालीनता को समुन्नत बनाने के लिए प्रकृति-प्रेरणा एवं विधि-विधान के अनुसार स्वतः ही कार्य करती और सहायता देती है।

- अपने स्तर और पुरुषार्थ का बढ़ाना, यही है वह सुनिश्चित मार्ग, जिस पर चलते हुए भौतिक साधन-सुविधाएँ ही नहीं आत्म-विभूतियाँ भी प्रचुर परिणाम में उपलब्ध हो सकती हैं।

- मृत्यु से मनुष्य बहुत डरता है। इस डर के कारण की खोज करने पर प्रतीत होता है कि मनुष्य मृत्यु से नहीं, वरन् अपने पापों के दुष्परिणामों से डरता है। देखा जाता है कि यदि मनुष्य को कहीं कष्ट या विपत्ति के स्थान में जाना पड़े तो वह जाते समय बहुत डरता और व्याकुल होता है। मृत्यु से मनुष्य इसलिए घबराता है कि उसकी अन्तःचेतना ऐसा अनुभव करती कि इस जीवन का मैंने जो दुरुपयोग किया है, उसके फलस्वरूप मरने के पश्चात् मुझे दुर्गति में जाना पड़ेगा। जब कोई व्यक्ति वर्तमान की अपेक्षा अधिक अच्छी उन्नत और सुखकर परिस्थिति के लिए जाता है तो उसे जाते समय कुछ भी कष्ट नहीं होता, वरन् प्रसन्नता होती है।

- जो लोग अपने जीवन को निरर्थक, अनुचित और अनुपयोगी कार्यों में खर्च कर रहे हैं वे लोग मृत्यु से उसी प्रकार डरते हैं जैसे बकरा कसाईखाने के दरवाजे में घुसता हुआ भावी पीड़ा की आशंका से डरता है। यदि आप मृत्यु के भय से बचना चाहते हैं तो अपने जीवन का सदुपयोग करना, अपने कार्यक्रम को धर्ममय बनाना आरम्भ कर दीजिए, ऐसा करने से आपकी अन्तःचेतना को यह विश्वास होने लगेगा कि भविष्य अन्धकारमय नहीं, वरन् प्रकाशपूर्ण है। जिस क्षण यह विश्वास हृदय को हुआ उसी क्षण मृत्यु का भय भाग जाता है, तब वह शरीर-परिवर्तन को वस्त्र-परिवर्तन की तरह एक मामूली बात समझता है और उससे जरा भी डरता या घबराता नहीं।

- आनन्द की उपलब्धि में, सफलता के सुयोग में एक ही बाधा है—अपनी स्वनिर्मित क्षुद्रता। हेय गतिविधियाँ अपनाकर ही मनुष्य अपने लिए संकट खड़े करता है और विपन्नताओं में फँसता है। मकड़ी अपने लिए जाला स्वयं बुनती है और उसमें फँसकर स्वयं ही बन्धन में बँधती है। जिस शिकार को पकड़ने के लिए यह श्रम किया गया था, उसकी सफलता में सन्देह है। हो सकता है कि कोई शिकार न भी फँसे, पर अपने हाथ-पाँव जकड़ जाना तो निश्चित ही है। रेशम के कीड़े अपने लिए स्वयं ही खोल बनाते हैं और उसमें कैद रहकर दुर्भाग्य को कोसते हैं। गूलर के भुनगे उसी छोटे दायरे में दिन गुजारते रहते हैं। वे चाहे तो तनिक से प्रयास में छेद करके अपने को बाहर निकाल सकते हैं और स्वच्छन्द वातावरण का आनन्द ले सकते हैं।

- यह विश्व संगीतमय है। शब्द से जिसकी उत्पत्ति है, ऐसी चराचर सृष्टि के विराट् विश्व-संगीत में सूर्य, चन्द्र, तारे, जीव-जन्तु, वनस्पति सदैव अपना विशेष सुर बजाते रहते हैं। जिस प्रकार वीणा का कोई तार मध्यम, कोई पंचम में बाँधा जाता है, तकि उसमें से विभिन्न प्रकार के स्वर निकलें, उसी प्रकार हमें ईश्वर के साथ विशेष सुर जगाना होता है ताकि मानव जीवन भी संगीत युक्त हो, प्रवाहमान बने। एक अपूर्ण व्यक्ति वही है, जिसके जीवन को अभी तारसप्तक में नहीं बाँधा गया। उसके जीवन के मूल तार तुच्छता के कारण विच्छिन्न हो गये हैं। किसी भी प्रकार उन्हें क्रमबद्ध कर एक नित्य सुर को ध्रुव बनाना होगा, इसी में उस मानव का कल्याण है।

  तार को बाँधा कैसे जाए ? ईश्वर की वाणी में इसे बाँधने के ऐसे अनेक स्थल हैं, इन्हीं में से किसी एक को निश्चित करना होगा।

  मन्त्र एक इसी प्रकार का बन्धन है। मन्त्र द्वारा मन के विषय को समष्टि मन के साथ जोड़ा जा सकता है। जैसे वीणा की खूँटी से तार बाँध दिया जाता है, फिर वह छिटकता नहीं। ईश्वर के साथ मानव का जो ग्रन्थि-बन्धन किया गया है, उसमें मन्त्र है **"पिता नोऽसि"**। जीवन को इस सुर में बाँधने से हमारे विचारों और कार्यों में एक विशेष रागिनी बज उठती है। मैं उनका पुत्र हूँ। यह मन्त्र ही संगीत रूप में मूर्तिमान होकर शरीर के हर कोश से झंकृत होने लगता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ सदुद्देश्य के लक्ष्य में यात्राक्रम अखण्ड ही रहना चाहिए। थकान आने पर थोड़ा विश्राम कर लेने में हर्ज नहीं, पर दिशाधारा में परिवर्तन नहीं होना चाहिए।

❑ कितने ही अवरोध ऐसे हैं जो लुभाते, डराते और भ्रटकाने में चूकते नहीं। वन्यप्रदेशों में पशुओं के झुण्ड निरुद्देश्य घूमते रहते हैं। उनके खुरों से पगडण्डियाँ बन जाती हैं। लगता है कि राजमार्ग की अपेक्षा इन पर चलना सीधा पड़ेगा। कई पथिक इस लोभ से उन पर चल पड़ते हैं। परिणाम में कष्ट सहने, थकने और निराश होने के अतिरिक्त और कुछ उपलब्ध नहीं होता।

❑ अपूर्णता से पूर्णता की ओर का प्रमाणक्रम निर्धारित करना और उस पर अनवरत् क्रम से चलने पर ही अभीष्ट लक्ष्य तक पहुँच सकना सम्भव हो सकता है। भटकने में शान्ति और क्लान्ति ही पल्ले पड़ती है। पूर्णता के लक्ष्य तक पहुँचने का मार्ग एक ही है—महानता को दृढ़तापूर्वक पकड़े रहना। अबिचल निष्ठा के साथ अनवरत क्रम से उस पर चलते रहना। अनुसरण वन्यपशुओं के द्वारा विनिर्मित पगडण्डियों का नहीं, वरन् उस राजमार्ग का होना चाहिए, जो सुनिश्चित संकल्प लेकर आगे बढ़े और विश्वास को अविचल रखकर अनवरत क्रम से आगे बढ़े हैं। लक्ष्य तक पहुँचने का एक ही उपाय है—सदुद्देश्यों की दिशा में अवरोधों को लाँघते हुए अपनी प्रयाण साधना को अखण्डक्रम से जारी रखना।

❑ सुविधा-साधन जो मनुष्य को प्राप्त हैं, वे विज्ञान के अनुदान हैं। दूसरी ओर वरदान रूप में उसे प्रतिभा मिली हुई है। दोनों की ही प्रगतिपथ पर अग्रसर होने के लिए अपनी-अपनी उपयोगिता और आवश्यकता है। पदार्थों की अनगढ़ता को मिटाने, उन्हें उपयोगी बनाने में विज्ञान की अपनी भूमिका है। शरीर निर्वाह, उदरपोषण, प्रजनन उमंगों एवं सुरक्षा-सुविधा के लेने का एकमात्र उद्देश्य शरीरयात्रा ही हो तो इन उपलब्धियों से सन्तुष्ट रहा जा सकता है।

❑ विधाता ने मनुष्य को इसी सीमा तक परिबद्ध रहने के लिए इस धरती पर नहीं भेजा। शरीर यात्रा से एक कदम और आगे बढ़कर आनन्द, सन्तोष, सम्मान, श्रेय, कीर्ति, उत्कर्ष जैसी कुछ उच्चस्तरीय उपलब्धियाँ प्राप्त करनी हों, तो उसी आन्तरिक वरिष्ठता का अवलम्बन लेना होगा, जिसे प्रतिभा एवं अध्यात्म की भाषा में मानवीय गरिमा कहा गया है। इसका सीधा सम्बन्ध दृष्टिकोण, व्यवहार की उस उत्कृष्टता से है जिसे व्यक्तित्व कहते हैं। व्यक्तित्वसम्पन्न ही महामानव कहलाते हैं। भले ही सुख-सुविधाओं की दृष्टि से वे समन्वय ही क्यों न हों ? यदि सुविधा और प्रतिभा के समन्वय की, समग्रता के स्वरूप और आनन्द की अनुभूति की जा सके तो समझा जाना चाहिए कि आत्म-बोध सही अर्थों में हो गया। इससे दुरुपयोग के सीमा-बन्धन का, वैभव के सुनियोजन एवं प्रतिभाचातुर्य के सदुपयोग का लक्ष्य भी सध जाता है। इसीलिए कौशल, प्रतिभा एवं वैभव सुख-सुविधा के साथ उस 'सुमति' की भी आवश्यकता पड़ती है, जिसे परिष्कृत में 'प्रज्ञा' नाम से पुकारा जाता है।

❑ बनाने और सँभालने वाले को अपनी वस्तु से स्वभावतः अधिक प्रेम होता है। हम मकान बनाते हैं, उद्यान में सुन्दर पुष्प लगाते हैं, चित्र बनाते हैं, लेख लिखते हैं तो उनसे वैयक्तिक लगाव होना एक सहज प्रक्रिया है। ईश्वर ने, स्रजेता ने हमें बनाया है, सँभाला है और हमारे भविष्य का सारा दायित्व उसी के कन्धों पर है। ऐसी स्थिति में उसका हमारे प्रति प्रेम होना कोई अनुग्रह या संयोग नहीं, विधि-व्यवस्था के अनुकूल एक सहज क्रम है।

❑ हम परमेश्वर की सन्तान हैं। उसे यदि प्राणधारी भी माना जाए तो यह भी मानना पड़ेगा कि वह सर्वश्रेष्ठ, सुविकसित प्राणी है। यदि ऐसा न होता तो मनुष्य जैसी सर्वसाधन सम्पन्न सन्तति का जन्म कैसे होता ? जन्म देकर ही कोई सहृदय अभिभावक अपनी सन्तान को भटकने हेतु नहीं छोड़ देता। फिर परमात्मा हमसे विमुख कैसे हो सकता है ? जब सन्तान के प्रति प्रेम—सृष्टि का नियम है तो परमेश्वर का प्यार अपनी सर्वोत्तम कृति मानव के लिए क्यों नहीं होगा ? आस्तिकता का, ईश्वरनिष्ठा का यही तत्त्व-दर्शन है। हम

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भूल रहे हैं कि हम उस परब्रह्म की सृष्टि के उस विराट परिवार के अंग हैं, जिसकी सुरक्षा-देखभाल का सारा दायित्व उसने अपने कन्धों पर ले रखा है। विस्मृति की यह मूर्च्छना ही है जो हमें स्वयं को पहचानने से उत्कर्ष और आनन्द की उपलब्धियों से वंचित कर देती है। परमपिता का प्रेम यदि याद रहता तो उसके साथ डोरी भी बँधी होती, हमारे जीवन की पतंग उसके द्वारा संचालित होती। अभाव और आत्महीनता हमें इसी कारण सताती है कि हम भ्रान्तिवश अज्ञानान्धकार में भटकना अधिक पसन्द करते हैं। विवेक का जागरण हो सके तो हमें वह ज्ञानरूपी प्रकाश उपलब्ध हो सकता है, जो जीवन की सार्थकता याद दिलाये व हमारा हरक्षण उस परमपिता की व्यवस्था को और सुगढ़ बनाने में नियोजित करे।

- भगवान से प्रार्थना कीजिए, याचना नहीं। आपकी स्थिति ऐसी नहीं कि कमियों और कमजोरियों के कारण किसी का मुँह ताकना पड़े और याचना के लिए हाथ फैलाना पड़े।

- प्रार्थना कीजिए कि आपका प्रसुप्त आत्म-बल जाग्रत हो चले। प्रकाश का दीपक जो विद्यमान है वह टिमटिमाये नहीं, वरन् रास्ता दिखाने की स्थिति में बना रहे। मेरा आत्म-बल मुझे धोखा न दे। समग्रता में न्यूनता का भ्रम न होने दे।

- जब परीक्षा लेने और शक्ति बिखेरने संकटों का झुण्ड आये, तब मेरी हिम्मत बनी रहे और जूझने का उत्साह। लगता रहे कि यह बुरे दिन अच्छे दिनों की पूर्व सूचना देने आये हैं।

- प्रार्थना कीजिए कि हताश न हों, लड़ने की सामर्थ्य को पत्थर पर घिसकर धार रखते रहें। योद्धा बनने की प्रार्थना करनी है, भिक्षुक बनने की याचना नहीं। जब मेरा भिक्षुक गिड़-गड़ाये तो उसे दुत्कार देने की प्रार्थना भी भगवान से करते रहें।

- यदि तुम्हारा तिरस्कार होता है, तो अच्छा यह है कि उसे चुपचाप पार कर जाओ या हँसकर टाल दो। यद्यपि इसमें अपमान है, किन्तु यह बदला लेने के प्रयत्न करने से अच्छा है। यदि तुम अपने विवेक को अपनी भावना के ऊपर रखो और सावधान रहो, तो तुम्हारी रक्षा बड़े अच्छे ढंग से होगी। *—न्यूटन*

- सजीव विचारसृष्टि ही भविष्य की दुनिया है। सर्व सत्यकर्म विचार के मूर्त स्वरूप हैं। "समस्त ब्रह्माण्ड किस कारण अस्तित्व को प्राप्त हुआ है ?" क्या तुम इसे जानते हो ?—कारण यह है कि भगवान के दिव्य चैतन्य में एक विचारतरंग लीला करने लगी इसीलिए।

- संसार आज इसीलिए खड़ा है कि यहाँ घृणा से प्रेम की मात्रा अधिक है, असत्य से सत्य अधिक है। *—महात्मा गाँधी*

- **बुद्धिर्बुद्धीन्द्रियैः सार्धं सवृत्तिः कर्तृलक्षणः।**
  विज्ञानमयकोशः स्यात्पुंसः संसारकारणम्।।

  —विवेक चूडामणि १८६

  पुरुष के जन्म-मरण रूप संसार का कारण यह 'विज्ञानमय-कोश' ज्ञानेन्द्रियों के साथ अपने क्रिया-व्यापार के सहित बुद्धि के जुड़ जाने से विनिर्मित होता है।

- मनुष्य अपने अच्छे या बुरे विचारों के कारण अच्छी या बुरी आदतों में रहते हैं। यदि वे चाहें तो इस संसार को नरक बनावें और यदि चाहें तो इसी को स्वर्ग बनावें। विचार के जिस रंग के चश्मे में वे संसार को देखेंगे, संसार उनको उसी रंग का दिखाई पड़ेगा।

  —जेम्स ऐलन

- सुख के पीछे मत दौड़ो ? वह मृगतृष्णा की तरह है, जो हाथ न आ सकेगा। केवल कर्तव्य को पकड़ो। जो उचित है उसे करना पर्याप्त समझो। सन्तोष के रूप में सच्चा सुख तुम्हें अनायास ही मिल जाएगा। *—अरस्तू*

- विज्ञान ने सारे विश्व को एक बिन्दु पर ला दिया है, अब आवश्यक है कि सारे विश्व की व्यवस्था भी एक ही बिन्दु से हो।

  —प्रिंस क्रोपाटकिन

- इस विचार से अधिक मूर्खता की बात और क्या हो सकती है कि सारे ब्रह्माण्ड और पृथ्वी की अनूठी एक रचना एक आकस्मिक घटना है, जबकि कला की सारी चतुराई एक सिप्पी बनाने में असमर्थ है। *—जर्मीटिलर*

- उस व्यक्ति से सावधान रहो जो तुम्हारे घूँसे का जवाब घूँसे से नहीं देता। ऐसा व्यक्ति न तो तुम्हें माफ करता है और न ही तुम्हें खुद को माफ करने देता है। *—बर्नार्ड शॉ*

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

- मन से बाहर संसार की किसी चीज का अस्तित्व नहीं। —*बर्कले*
- यदि आपके सौ मित्र हैं तो कम हैं उन्हें और बढ़ाओ। यदि आपका एक शत्रु है तो बहुत ज्यादा है, उसे घटाओ। —*सिडनी*
- जब फाख्ता का कौओं से संयोग होता है तो उसके पर श्वेत ही रह जाते हैं, किन्तु हृदय काला हो जाता है। —*जर्मन लोकोक्ति*
- जो बुद्धिमानों की संगति करता है, वह बुद्धिमान ही होगा।
- जो व्यक्ति तुम्हारे सामने औरों की निन्दा करता है, वह अन्यों के सामने तुम्हारी भी निन्दा करने में नहीं चूकेगा। —*शेखसादी*
- विचारों की शक्ति अकूत है। संसार पर शासन मनुष्य नहीं विचार करते हैं। —*स्मिथ*
- जिनके पास अच्छे विचारों का भण्डार है, वे कभी निर्धन तथा एकाकी नहीं रहते। —*सर फिलिप सिडनी*
- जिस क्षण कोई मनुष्य दासत्व ग्रहण करता है, उसी क्षण उसकी आधी योग्यता नष्ट हो जाती है। —*मेक्सिनी*
- एक ही बात लगातार कहने की आदत मानसिक न्यूनता का एक चिन्ह है, उसकी उत्पत्ति इस बात को न जानने से होती है कि दूसरों के मन में क्या हो रहा है ? —*बेगहट*
- जिस काम के लिए ईश्वर ने हमें मुकर्रर किया है, उससे इसलिए भागना कि हमें दूसरे काम से अधिक सुख मिलेगा, व्यर्थ है। इसकी अपेक्षा हमें सुख केवल वहीं ढूँढ़ना चाहिए जहाँ कि वह मिलता है—अर्थात् प्रेमपूर्वक आज्ञापालन में। —*जार्ज इलियट*
- युवक जैसा बनना चाहे, बहुत कुछ वैसा ही बन सकता है, यदि वह प्रतिज्ञा कर ले और उस पर आरूढ़ रहे। —*बक्सटन*
- ऐसा कोई भी व्यक्ति संसार में नहीं है, जिसके पास एक बार भाग्योदय का अवसर न आता हो, परन्तु जब वह देखता है कि वह व्यक्ति उसका स्वागत करने के लिए तैयार नहीं है तो वह उल्टे पैरों लौट जाता है। —*कार्डिनल*
- कभी-कभी हम अपराधों से थरथरा जाते हैं, किन्तु दोषों से बहुत कम भयभीत होते हैं।
- बड़े-बड़े अपराधों का प्रारम्भ छोटों-छोटों से होता है। ऐसा कभी नहीं देखा गया है कि भीरु, निर्दोष मनुष्य एकदम से परले सिरे का दुराचारी बन जाये। —*रैलाइन*
- संगीत के पीछे-पीछे खुदा चलता है, जिसे संगीत से प्यार नहीं उससे शैतान भी डरता है। —*शेक्सपीयर*
- संगीत एक शक्ति है, जो ऐसा इन्द्रिय सुख देती है, जिसमें कोई बुराई नहीं होती। —*जॉनसन*
- कायर अपने से ऊपर वाले लोगों की चापलूसी करता है और जिनको दबा लेता है, उनका अपमान करता है। —*जूनियस*
- आनन्द ही एक ऐसी वस्तु है, जो आपके पास न होने पर भी आप दूसरों को बिना किसी असुविधा के दे सकते हैं। —*कारमेन सिल्वा*
- "तुझे बन्धु-मित्र चाहिए तो ईश्वर काफी है, संगी-साथी चाहिए तो विधाता काफी है, मान-प्रतिष्ठा चाहिए तो दुनिया काफी है, सान्त्वना चाहिए तो धर्म-ग्रन्थ काफी हैं, उपदेश चाहिए तो मौत की याद काफी है और अगर मेरा यह कथन तेरे गले नहीं उतरता हो तो तेरे लिए नरक काफी है।" —*हातिम*
- हमें कल्पनाशक्ति प्रकृतिप्रदत्त है और इसी शक्ति से हम दृश्यजगत् के अन्धकार को प्रकाशमय बना सकते हैं। बुद्धि एवं चिन्तन से मिश्रित कल्पना भौतिक अन्वेषणकर्त्ता का सर्वाधिक शक्तिशाली यन्त्र है। —*जे. टिन्डल*
- दुष्टों पर दया करना, सज्जनों के ऊपर जुल्म करना है। जालिमों को माफ करना, सताये हुओं पर जुल्म करना है। अगर तुम कमीनों के साथ मेल-जोल रखोगे और उन पर मेहरबानी करोगे, तो वे तुम्हारी हिमायत से अपराध करेंगे और तुमको उनके अपराधों का हिस्सेदार बनना पड़ेगा।
- यदि जीवन में बुद्धिमानी की कोई बात है तो वह एकाग्रता है और यदि कोई खराब बात है

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तो वह अपनी शक्तियों को बिखेर देना। बहुचित्तता कैसी भी हो, इससे क्या ?

—एमर्सन

❑ कुछ लोगों का ऐसा विश्वास है कि संसार में कुछ मनुष्यों को गरीब ही होना चाहिए, पर हम पूछते हैं कि परमात्मा ने मनुष्य के लिए जो ढाँचा बनाया है, क्या उसमें गरीबी, दरिद्रता अथवा न्यूनता के लिए कोई स्थान है ? हमारा दृढ़ मत है कि पृथ्वी पर गरीब मनुष्य होना नहीं चाहिए। परम-पिता परमात्मा के भण्डार में समृद्धि की विपुल-सामग्री भरी पड़ी है, पर आश्चर्य है कि हम समृद्धि के भण्डार में रहने पर भी दरिद्र हैं। इसका कारण है, हमारे क्षुद्र और संकीर्ण विचार। *—स्वेट मार्डन*

❑ सोने का एक कण जितना मूल्यवान होता है, समय का एक क्षण उससे सौ गुना, इसीलिए एक-एक क्षण का उपयोग ही बुद्धिमानी है।

—मेसन

❑ विद्वान की मूर्खों में वही दशा होती है, जो किसी सुन्दरी की अन्धों में और धर्म-पुस्तक की नास्तिकों में।

❑ विश्राम का दिन मनुष्य के लिए ठहराया गया है, न कि मनुष्य विश्राम के दिन के लिए। मनुष्य का पुत्र विश्राम के दिन का भी प्रभु है। *—मरकुस—२*

❑ हर व्यक्ति उपभोक्ता है, इसीलिए उसे उत्पादक भी होना चाहिए।

—एमर्सन

❑ विचारों की गन्दगी और जीवन के संकट दोनों समानुपाती हैं। विचार जितने गन्दे होंगे जीवन उतना ही व्याधिग्रस्त होगा। *—एडिंग्टन*

❑ युद्ध में भी जो सेवा की बात सोचे और भयंकर शत्रु की भी हृदय से लगाने के लिए तैयार रहता है, ऐसे किसी से भी द्वेष न रखने वाले व्यक्ति से बढ़कर मेरी दृष्टि में कोई वीर नहीं। *—काउपर*

❑ औरतों का दुर्भाग्य यह है कि वे अपनी माताओं जैसी हो जाती हैं और पुरुषों का यह है वे हो नहीं पाते। *—आस्कर वाइल्ड*

❑ जो बदला लेने की बात सोचता है, वह अपने ही घाव को हरा रखता है, जो कि अब तक कभी का अच्छा हो गया होता। *—बेकन*

❑ जो व्यक्ति ऊँचे विचारों की सुखद संगति में रहते हैं, वे कभी अकेले नहीं हो सकते।

—सिडनी

❑ अगर तू इन्साफ की पूछता है तो भाग्यहीन मनुष्य वह है, जिसके सुख से दूसरों को दुःख हो। *—शेखसादी*

❑ सचमुच आँख खोलकर देखोगे तो तमाम छवियों में तुम्हें अपनी छवि दिखाई देगी और अगर कान खोलकर सुनोगे तो तमाम ध्वनियों में तुम्हें अपनी ध्वनि सुनाई देगी। *—खलील जिब्रान*

❑ अपूर्णता ही है जो अपूर्ण चीज की शिकायत करती है। हम जितने ज्यादा पूर्ण होते हैं उतने ही ज्यादा हम दूसरे के दोषों के प्रति मृदु और शान्त हो जाते हैं। *—फेबोलिन*

❑ जो हम चाहते हैं उसे बार-बार सोचते हैं, पर वह मिले कैसे ? इस प्रश्न पर विचार नहीं करते। यदि इच्छित शुभलक्ष्य के लिए उपयुक्त ढंग खोजा जाए तथा उसके लिए अपने अन्तःकरण को राजी किया जा सके तो उपलब्धि महानतम हो सकती है।

—जेम्स ऐलन

❑ ऐ मनुष्य तू मौन को अपना। शान्त जीवन उन्नति का सूचक है। इतने लम्बे दिन में कम-से-कम एक घण्टा चुप रहे। यद्यपि तेरा सारा दिन बेकार और निरर्थक बातों में व्यतीत हो जाता है, तथापि वास्तविकता यह है कि तुम कुछ भी नहीं करते, अर्थात् उचित और मतलब की बात तेरी दैनिक कार्य-विधि में भी नहीं होती। यदि तुम महान बनना चाहते हो, जिससे तुम्हारी बातों का दूसरों पर कुछ प्रभाव हो, तो थोड़ी देर के लिए अपनी गप्पबाजियों तथा व्यर्थ की बातों को छोड़ दो और मौन का स्वर्णिम सन्देश सुनो। *—ए. एल. सामन*

❑ जब तक हम अपनी पहुँच से बाहर की वस्तुओं की इच्छा में झूला करते हैं, तब तक हम पालने के बच्चे ही हैं। जब हम वासना करते-करते थक जाते हैं, तब इच्छाशक्ति सो जाती है। उस समय हमें मृत्यु शैय्या पर समझना चाहिए। *—बुल्वर*

❑ जिन्होंने वासनाओं को जीता है, वे ही मुक्त हुए हैं। जिन्होंने ईर्ष्या का त्याग किया है, उन्हीं को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रेम की प्राप्ति हुई है और जिन्होंने धैर्य धारण किया है, वे ही शुभपरिणाम को प्राप्त कर सके हैं। —*हसन बसरी*

❑ बुद्धिमत्ता पर यदि आदर्शों का अंकुश न हो तो वह उद्दण्ड उन्माद का रूप धारण करेगी। —*पॉल ब्रन्टन*

❑ जहाँ आवश्यकता समाप्त होती है, वहीं से इच्छा और उत्सुकता आरम्भ होती है, हमारी प्रकृति को ज्यों ही वह प्रत्येक वस्तु प्राप्त हो जाती है, जिसकी उसे आवश्यकता है त्यों ही हम बैठकर बनावटी अभिलाषाएँ गढ़ने लगते हैं। —*जॉनसन*

❑ अपने लम्बे जीवन में मैंने कुछ ध्रुव सत्य देखे हैं। पहला यह है कि घृणा, द्वेष और द्रोह को पल-पल पर मरना पड़ता है। दूसरा यह कि सहिष्णुता से बड़ी कोई प्रीति नहीं होती। तीसरा यह है कि ज्ञान को ही पोषण देने से मनुष्य को आज की कालरात्रि भोगनी पड़ रही है। ज्ञान के साथ-साथ विवेक को भी पुष्ट करते चलिए। भविष्य की हर सीढ़ी निरामय होगी। —*बर्ट्रेंड रसेल*

❑ जब मैंने अपराध करके पश्चात्ताप और परिमार्जन करने के बदले उसका समर्थन करते हुए कह दिया—ऐसे तो चला ही करता है सभी तो करते हैं। इस क्षण को मैं अपने पतन का सबसे निन्दनीय क्षण कहना चाहता हूँ। —*खलील जिब्रान*

❑ समकालीन लोग योग्यता की अपेक्षा व्यक्ति का आदर करते हैं, किन्तु आने वाली सन्तति व्यक्ति की अपेक्षा योग्यता की ओर अधिक ध्यान देगी। —*लेटन*

❑ पाप के अनेक औजार होते हैं, किन्तु झूठ एक ऐसी मूठ है, जो उन सबमें ठीक-ठीक जुड़ जाती है। झूठ बोलना कायरता का एक चिन्ह है। झूठ बोलना महानीच दोष है, पहले तो वह ईश्वर का निरादर करता है और फिर मनुष्यों से डरता है। —*प्लूटार्क*

❑ तलवार की विजय क्षणिक होती है और उसके घाव केवल शरीर में लगते हैं और वह उदार मनुष्यों का बड़प्पन है कि उसे भूल जाएँ और क्षमा कर दें, किन्तु कलम के कलंक हृदय में बिंध जाते हैं। —*वाशिंगटन*

❑ तुलना करने की आदत बड़ी हानिकारक होती है। जब कोई आनन्दमय घटना हो, तो उससे सम्पूर्ण आनन्द उठाना चाहिए और बैठकर यह विचार न करना चाहिए कि किसी दूसरे के साथ जो बात सम्भवतः हो सकती थी, उसके समान वह घटना उतनी सुखकर नहीं है। —*बर्ट्रेंड रसेल*

❑ बचत की आदत स्वयं एक शिक्षा हैं, यह सद्गुण उत्पन्न करती है, आत्म-त्याग की शिक्षा देती है, व्यवस्था की भावना की सृष्टि करती है, आगे की बात सोचना सिखाती है और इस प्रकार मन को विस्तृत करती है। —*मंजर*

❑ वह वस्तु आवश्यक है या विलासिता, जब यह समझ में न आये तो विचारों की शरण जाना चाहिए। विचार करने से आवश्यकता और विलासिता का अन्तर समझ में आ जाएगा। —*खलील जिब्रान*

❑ "जीयो और जीने दो" यह सिद्धान्त ठीक है, परन्तु प्रकृति का यह नियम भी अटल है कि उसी को जीवित रहने का अधिकार है, जो अपनी जीवित रहने की योग्यता सिद्ध कर दे। योग्यतम का ही अस्तित्व रहता है, यह सिद्धान्त नित्य और सत्य है। —*काण्ट*

❑ ज्ञान, समझ के साथ बुद्धिमत्ता, विधि के साथ शक्ति, उदारता के साथ परोपकार तथा धर्म के साथ सद्गुण और शान्ति पैदा करता है। —*हीनफार*

❑ अच्छी बात बच्चे की भी मान लो पर बुरी हो तो फरिश्ते की भी बात मत मानो। —*शोपेन हावर*

❑ कोई संस्कृति विश्व को प्रकाश दे सकती है, तो वह भारतीय संस्कृति ही है। वह किसी एक वर्ग जाति या देश के लिए नहीं। —*रोम्याँ रोलाँ*

❑ गुणों के विकास का परिणाम ही सौभाग्य और उनकी कमी का प्रतिफल ही दुर्भाग्य बनकर सामने आता है। जैसे तेल और बाती जुटने पर ही दीपक प्रकाश फैलाता है, वैसे ही गुणों और क्षमताओं का समन्वय मनुष्य के भाग्य को प्रकाशित करता है। —*ला रोश फूको*

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ काम एक शक्तिशाली आवेग है, जिसे खुला छोड़ देने पर मनुष्य अपने जीवन उद्देश्य से गिर जाता है। *—एमर्सन*

❑ भारतीय धर्म और दर्शन में जीवन की परिपूर्णता है, उसके बिना विश्व-शान्ति सम्भव नहीं। *—रोम्याँ रोलाँ*

❑ जो दूसरे को देखकर जलता है, उस पर जलने की जरूरत नहीं, क्योंकि दाह-रूप शत्रु उसके पीछे लग रहा है। उससे शत्रुता करने की हमें फिर क्या जरूरत है ? *—शैखसादी*

❑ कुरान की रुचि से जहाँ-जहाँ ईश्वर समर्पण है वहाँ-वहाँ इस्लाम है, पर धर्मों को कुरान ने कभी बुरा नहीं बतलाया है। इसका दोष तो कुरान को नहीं उन मुसलमानों को है, जो कुरान के उपदेश के खिलाफ आचरण कर रहे हैं। *—मुहम्मद अली*

❑ लक्ष्मी उसी के लिए वरदान स्वरूप सिद्ध होती है, जो दूसरों के लिए वरदान बना देता है। *—फील्डिंग*

❑ जैसे हमारे विचार होते हैं, वैसी ही हमारी शारीरिक स्थिति होती है। हम चाहें कि हमारी शारीरिक स्थिति इसके विपरीत हो तो यह बात सर्वथा असम्भव है। *—स्वेट मार्डन*

❑ बदी करने के मौके दिन में सौ बार मिलते हैं, लेकिन नेकी करने का मौका साल में केवल एक बार मिलता है। *—वाल्टेयर*

❑ अन्तःकरण की पवित्रता स्वर्ग और उसकी मलीनता ही नरक है। इन दोनों दशाओं का भोग करने के लिए मनुष्य को अन्यत्र नहीं जाना पड़ता। वह अन्तःकरण की स्थिति के माध्यम से अपने घर में बाहर, सोते-जागते, खाते-पीते और उठते-बैठते हर समय भोगता रहता है।

❑ बुद्धिमत्ता की निशानी यह मानी जाती रही है कि उपार्जन बढ़ाया जाए, अपव्यय रोका जाए और संग्रहीत बचत के वैभव से अपने वर्चस्व और आनन्द को बढ़ाया जाए। संसार के हर क्षेत्र में इस कसौटी पर किसी को बुद्धिमान ठहराया जाता है।

मानव-जीवन की सफलता का लेखा-जोखा लेते हुए भी इसी कसौटी को अपनाया जाना चाहिए। जीवन-व्यवसाय में सद्भावनाओं की, सत्प्रवृत्तियों की पूँजी कितनी मात्रा में संचित की गई ? सद्विचारों का, सद्गुणों का, सत्कर्मों का वैभव कितना कमाया गया ? इस दृष्टि से अपनी उपलब्धियों को परखा, नापा जाना चाहिए। लगता हो कि व्यक्तित्व को समृद्ध बनाने वाली इन विभूतियों की सम्पन्नता बढ़ी है, तो निश्चय ही बुद्धिमत्ता की एक परीक्षा में अपने को उत्तीर्ण हुआ समझा जाना चाहिए।

❑ समय, श्रम, धन, वर्चस्व, चिन्तन मानव-जीवन की बहुमूल्य सम्पदाएँ हैं। इन्हें साहस और पुरुषार्थपूर्वक सत्प्रयोजन में लगाने की तत्परता बुद्धिमत्ता की दूसरी कसौटी है। जिन्होंने इन ईश्वर-प्रदत्त बहुमूल्य अनुदानों को पेट-प्रजनन में, विलास और अहंकार में खर्च कर डाला, समझना चाहिए वे बहुमूल्य रत्नों के बदले काँच-पत्थर खरीदने वाले उपहासास्पद मनःस्थिति के बाल-बुद्धि लोग हैं। वस्तु का सही मूल्यांकन न कर सकने वाले और उपलब्धियों के सदुपयोग में प्रमाद बरतने वाले मूर्ख ही कहे जाएँगे, जीवन-क्षेत्र में हमारी सफलता-असफलता का लेखा-जोखा प्रस्तुत करते समय वह देखना चाहिए कि कहीं दूरदर्शिता के अभाव से हम सौभाग्य को दुर्भाग्य में तो नहीं बदल रहे हैं ? जीवन बहुमूल्य सम्पदा है। यह अनुपम और अद्भुत सौभाग्य है। इस सुअवसर का समुचित लाभ उठाने के सम्बन्ध में हम दूरदर्शिता का परिचय दें, इसी में हमारी सच्ची बुद्धिमत्ता मानी जा सकती है। *—विदधनानन्द*

❑ अपनेपन को छोटा करते-करते क्षुद्रता इतनी बढ़ जाती है कि मात्र विलास तक ही मनुष्य की सत्ता सीमाबद्ध रह जाती है। इतने भर के लिए वह अपने पेट को, इन्द्रियों को, स्वास्थ्य तथा दीर्घजीवन को नष्ट करता है, कुविचारों की भरमार से मस्तिष्क श्मशान की तरह मनोविकारों की जलती चिताओं से भरा रहता है। आनन्द और उल्लास के भाव भरे सुमन जिस उद्यान में खिले रह सकते और सम्बद्ध वातावरण को सुरम्य बनाये रह सकते हैं, उस नन्दन-वन में पतझड़ की स्थिति उत्पन्न करने में क्षुद्रता का हिमपात ही प्रधान कारण होता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ क्षुद्रता न पत्नी को विकसित होने देती है, न बच्चों को सुसंस्कृत, वयोवृद्धों को सम्मान देने और उनका दुलार पाने में न तो वस्तुएँ कम पड़ती हैं और न अवकाश की कमी रहती है। ओछेपन और उपेक्षा भरे बर्ताव के कारण ही छोटों और बड़ों के बीच खाई बनी रहती है। वयस्कों में पारस्परिक सद्भाव और सहयोग न बन पाता है और न बढ़ पाता है। परिवार की इस विपिन्न स्थिति में क्षुद्रता का बढ़ा हुआ स्वरूप ही प्रधान कारण पाया जाता है।

❑ हर व्यक्ति अपने सम्पर्क क्षेत्र में सम्मान और विकास का पात्र बनकर भावभरा सहयोग प्राप्त कर सकता है। उदारमना लोगों के लिए यह सारा संसार उदार है। सज्जनता की प्रतिक्रिया सज्जनोचित सहायता के रूप में वापस लौट आती है। सहृदय व्यक्ति सेवा की नीति अपनाकर जो खोते हैं, उससे अनेक गुना प्राप्त कर लेते हैं। क्षुद्रता देखने भर में लाभदायक प्रतीत होती है और उससे स्वार्थ सधने लगता है, पर वस्तुतः उसकी हानि अपार है। उसे अपनाकर मनुष्य न केवल छोटा और बौना रह जाता है, वरन् हानि, विपत्ति तथा प्रताड़ना का भी भाजन बनता है। *—सन्त वास्वानी*

❑ लक्ष्मी पुण्यात्मा के यहाँ रहती है। धनी बनने की इच्छा है तो पुण्य करना चाहिए।

❑ बया दूर-दूर तक जाती है एक-एक तिनका खोजकर घोंसला बनाती है। उसका पल-पल परिश्रम, उसकी लगन और उसका मनोयोग ही एकाकार होकर घोंसला के रूप में प्रस्तुत होते हैं, जिसे देखकर हर किसी को प्रेरणा मिलती है, प्रसन्नता होती है। प्रेरणाएँ और प्रसन्नताएँ सृष्टि की हर रचना में विद्यमान हैं। स्पष्ट है स्रष्टा ने बड़ा भारी परिश्रम किया होगा, अपनी सारी शक्ति लगाई होगी, तब इस भव्य जगत् का निर्माण सम्भव हुआ।

❑ नन्हें से पक्षी बया के घोंसले को नष्ट कर देने वाला बिलाव हर किसी निन्दा का पात्र बनता है, तब फिर परम पिता परमात्मा द्वारा रचित इस संसार को बिगाड़ना, उसे नष्ट करना कोई अच्छी बात है ? हर वस्तु हमारी भलाई के लिए बनी है, हर जीव हमारे कल्याण के लिए बना है, हर समय मनुष्य हमारी आकांक्षाओं की पूर्ति में सहयोग देने वाला बनाया गया है, तब फिर किसी को सताना, कष्ट पहुँचाना और ईश्वरीय कृति को विनष्ट करना क्या शोभा की बात है ? हम बना नहीं सकते तो बिगाड़ने का ही क्या अधिकार ?

आइये आज से, अभी से परमात्मा के बनाये हुए इस संसार को बनाने की बात सोचें ही नहीं, लग जाएँ। बिगाड़ने की तो कभी कल्पना भी नहीं करनी चाहिए। *—बर्ट्रेण्ड रसेल*

❑ जिन्हें जीवन में रुचि है, जो यह चाहते हैं कि वे मानव-जीवन को मनुष्य के अनुरूप ही व्यतीत करें, वे अपने अन्दर की शक्तियों को पहचानें, उन पर विश्वास करें और उन्हें अपने अनुकूल उपयोगी बनाने के प्रयत्न में लग जाएँ।

❑ जीवन को ऊँचे से ऊँचा उठाना और सुन्दर से सुन्दर बनाना ही मानव जीवन का लक्ष्य है। निरुद्देश्य जीवन बिताने में न तो कोई शोभा है और न श्रेय। निर्लक्ष्य जीवन बिताना तो पशुओं को भी आता है।

❑ मनुष्य जीवन एक ईश्वरीय प्रसाद है, उपहार है। उसका अनादर करना परमात्मा का अपमान करना है। किसी काम के लिए पाये हुए एक छोटे-से उपहार को मनुष्य आजीवन सजाकर और सँजोकर रखता है। उसे देख-देखकर हर्षित और गर्वित होता है। तब न जाने किस कारण मानव-जीवन जैसे अनिवर्चनीय उपहार की अवहेलना मनुष्य करता है ? क्या इसलिए कि यह उसे करुणाकर भगवान द्वारा सहज ही में प्राप्त हो गया है ? जीवन खोकर जीवन का मूल्य समझने वालों को युगों तक पश्चात्ताप के अतिरिक्त और कुछ नहीं मिलता। *—सेन्टपाल*

❑ मनुष्य जन्म भगवान का सर्वोपरि उपहार है। उससे बढ़कर और कोई सम्पदा उसके पास नहीं है, जो किसी प्राणी को दी जा सके। इस उपहार के बाद एक और अनुदान उसके पास बच रहता है, जिसे केवल वे ही प्राप्त कर सकते हैं; जिन्होंने अन्धकार से मुख मोड़कर प्रकाश की ओर चलने का निश्चय कर लिया है। इस प्रयाण के मार्ग में आने वाली कठिनाइयों का धैर्य और साहस के साथ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्वागत करने की जिनमें क्षमता है, वह अनुदान उन्हीं के लिए सुरक्षित है।

'मनुष्य-जन्म' ईश्वर का विशिष्ट उपहार है और मनुष्योचित संकल्प भगवान का महानतम अनुदान। मानव-जीवन की सार्थकता इस आदर्श परायण, संकल्पनिष्ठा के साथ जुड़ने से ही होती है। यही सही है कि मनुष्य-कलेवर संसार के समस्त प्राणियों से सुख-सुविधा की दृष्टि से सर्वोत्तम है, पर उसकी गौरव-गरिमा इस बात पर टिकी हुई है कि मनुष्य-जन्म के साथ मनुष्य-संकल्प और मनुष्य कर्म भी जुड़े हुए हैं।

"हमें मनुष्य-जन्म मिला यह ईश्वर के अनुग्रह का प्रतीक है। उसका प्यार मिला या नहीं इसकी परख इस कसौटी पर की जानी चाहिए कि मानवीय दृष्टिकोण और संकल्प अपनाकर उस मार्ग पर चलने का साहस मिला या नहीं जो जीवन-लक्ष्य की पूर्ति करता है। वस्तुतः मनुष्य-जन्म धारण करना उसी का धन्य है, जिसने आदर्शों के लिए अपनी आयु तथा विभूतियों को समर्पित करने के लिए साहस संचय कर लिया। ऐसे मनुष्यों को ईश्वर का उपहार ही नहीं, वरन् प्यार एवं अनुदान मिला समझा जाना चाहिए।" —*जेम्स गिब्सन*

❑ 'जितनी विराट् सृष्टि है, मानवीय अस्तित्व उतना ही विराट नगण्य तो भी उसके जीवनयापन के सभी साधनों का पहले से पहले संचयन"। जब इस तथ्य पर विचार करने लगता हूँ तो लगता है सृष्टि का आविर्भाव करुणा से हुआ है। करुणा अर्थात् किसी निरीह के लिए, व्यक्ति के लिए अन्तःस्फूर्त भावोद्रेक, उसकी पीड़ा में सहयोगी बनने की भावना। यह प्रक्रिया वृक्ष-वनस्पति, जीव-जन्तुओं से लेकर सृष्टि के कण-कण में विद्यमान देखी जा सकती है।

दूसरी बार जब मैं किसी भटके को रास्ता दिखलाता हूँ, किसी पीड़ित के घावों पर मरहम लगाता हूँ, अपनी सहायता से किसी को ऊपर और ऊपर उठता हुआ देखता हूँ, तो हृदय से एक पुलक की संवेदना फूटती है और गले को रौंध देती है। उस समय यद्यपि आँखों में अश्रु उतर आते हैं, पर क्षणभर के बोध में सारे जीवनभर का आनन्द और शान्ति अवतरित हो उठे लगते हैं।

अनुभव करता हूँ कि भावनाओं की इस तरंग का विराट की करुणा से कहीं न कहीं कोई सम्बन्ध है। इसी से हम परमात्मा को करुणा के रूप में उपासते हैं। अपने से निरीह प्राणियों पर करुणा की दृष्टि रखकर ही उस करुणाकर का बोध हो पाया है और अब तो इसीलिए उसे पाने की अपेक्षा प्राणियों में करुणा खोजता-फिरता हूँ। वह जहाँ भी जितनी देर के लिए उपलब्ध हो, ऐसा लगता है उतनी देर हम परमात्मा की गोद में रह आये। —*काण्ट*

❑ ❑

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वेदों की स्वर्णिम सूक्तियाँ

❑ **अवक्षिप्तं देवा उन्नयथा पुनः।**

—ऋ. १०/१३७/१

जो गिरे हुओं को फिर उठाते हैं, वे देव हैं।

❑ **भस्मान्त शरीरम्।** *—यजु. ४०/१५*

यह शरीर एक दिन राख में मिल जाने वाला है।

❑ **अहं भूमिमददामार्यायाहं वृष्टिं दाशुषे मर्त्याय। अहमपो अनयं वावशाना मम देवासो अनु केतमायन्।।**

—ऋ. ४/२६/२

मैंने (परमेश्वर ने) श्रेष्ठ पुरुषों को भूमि दी है, दान देने वाले मनुष्यों के लिए धन तथा सुख की वर्षा करता हूँ। मैं बार-बार शब्द करने व मेघों को लाता हूँ, विद्वान लोग मेरे ज्ञान के अनुसार चलते हैं।

❑ **यथा नः सर्वऽ इज्जनोनमीवः संगमे सुमनाऽअसत्।**

—यजु. ३३/८६

हम सबका व्यवहार इस तरह का हो कि जिससे सबके सब मनुष्य हमारे संग में रोगरहित होकर, उत्तम मान वाले, हमारे प्रति सद्भाव करने वाले हो जावें।

❑ **न संदृशे तिष्ठति रूपमस्य न चक्षुषा पश्यति कश्चनैनम्। ज्ञानप्रसादेन विशुद्धसत्वस्ततस्तुत पश्यतेनिष्कलं ध्यायमानः।।**

—मुण्डकोपनिषद ३१.८

आँखों से न दिखाई देने वाला परमात्मा विमल मन से ध्यान द्वारा देखा जा सकता है।

❑ **विश्वा द्वेषांसि प्र मुमुग्ध्यस्मत्।** *—ऋ. ४/१/४*

हे प्रभो ! हमसे सब द्वेषों को पूरी तरह छुड़ा दो।

❑ **अश्रद्धामनृतेदधाच्छ्रद्धा ँ सत्ये प्रजापतिः।**

—यजु. १९/७७

प्रभु ने झूठ में अश्रद्धा को और सत्य में श्रद्धा को रखा है।

❑ **अध्रुवेहि शरीरे यो न करोति तपोऽर्जनम्। स पश्चात्तप्यते मूढ़ो, मृतो मत्वात्मनो गतिम्।।**

—वाल्मीकि रामायण

यह शरीर क्षणभंगुर है, इसमें रहते हुए जो तप का उपार्जन नहीं करता, वह मूर्ख मरने के बाद जब अपने कर्मों का फल पाता है तो बहुत पश्चात्ताप करता है।

❑ लोग आप ही पाप करते हैं और कलुषित होते हैं। वे आप ही पुण्य-संचय करते और शुद्ध होते हैं। पापी अथवा पुण्यात्मा बनना अपने हाथ की बात है। कोई किसी को शुद्ध-अशुद्ध नहीं कर सकता।

❑ **आत्म ज्ञानं परं ज्ञानम्।**

—वेदव्यास

आत्म-ज्ञान ही समस्त ज्ञान का मूल है।

❑ **परप्रोक्तगुणो यस्तु निर्गुणोऽपि गुणी भवेत्। इन्द्रोऽपि लघुतां याति स्वयं प्रख्यापितैर्गुणैः।।**

—चाणक्य १६/८

जिस गुण की दूसरे लोग प्रशंसा करें, वही सच्चा गुण है और उससे सामान्य व्यक्ति भी गुणवान हो जाता है, पर अपने मुँह से अपनी प्रशंसा करने से इन्द्र भी लघुता को प्राप्त होता है।

❑ मनुष्य जिसके साथ रहता है, जिसकी सेवा करता है और जैसा होना चाहता है वैसा ही हो जाता है।

❑ **नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः। न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः।।**

—गीता २/२३

हे अर्जुन ! आत्मा को शस्त्र काट नहीं सकते, आग जला नहीं सकती, जल गीला नहीं कर सकता और वायु उसे सुखा सकने में समर्थ नहीं।

❑ आत्मा से भिन्न गति नहीं है, सब जगत् आत्मा मय है, आत्मा से विलग कुछ भी नहीं, आत्मा से भिन्न एक तिनका भी नहीं।

❑ जिसने इच्छा का त्याग किया है, उसको घर छोड़ने की क्या आवश्यकता है और जो इच्छा का बँधुआ है, उसको वन में रहने से क्या लाभ हो सकता है ? सच्चा त्यागी जहाँ रहे वहीं वन और वहीं भवन कंदरा है।

❑ विषयों की सड़क पर चलने वाली इन्द्रियाँ उन स्वेच्छाचारी घोड़ों की तरह होती हैं, जो शरीर रूपी रथ को भी तोड़ डालते हैं और सारथी आत्मा को पतन के गर्त में धकेल देते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ **त्वमस्य पारे रजसो व्योमनः स्वभूत्योजा अवसे धृषन्मनः।**
चकृषे भूमिं प्रतिमानमोजसोऽपः स्वः परिभूरेष्या दिवम्।।

—ऋ. १/५२/१२

अर्थात् अन्तरिक्ष और आकाश में भी परे वह परमात्मा अनन्त धैर्य वाला है, पर वह अपने प्रभाव से बलशाली भी है। वह सबसे अधिक शक्तिशाली और सर्वव्यापक होकर भी निर्दोष की रक्षा और पापी को दण्ड भी देता है।

❑ **तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम्।**
ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते।।
तेषामेवानुकम्पार्थमहमज्ञानजं तमः।
नाशयाम्यात्मभावस्थो ज्ञानदीपेन भास्वता।।

—गीता १०. १०-११

जो प्रेम से मेरा सदैव भजन करते हैं, उनको मैं ऐसी बुद्धि देता हूँ, जिससे वे मुझे प्राप्त कर सकें, उन पर अनुग्रह करने के लिए मैं उनकी बुद्धि में वास कर ज्ञान-दीपक की सहायता से ज्ञान-मूलक अन्धकार का नाश करता हूँ। ज्ञान भक्ति से अलग नहीं।

❑ **येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृळ्हा येन स्वः स्तभितं येन नाकः।**
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

—ऋ. १०/१२१/५

जिस दैवी-शक्ति ने विशाल द्युलोक को, पृथ्वी को, स्वर्गलोक और नाक-लोक को अपने-अपने स्वरूप में स्थिर कर रखा है और जो अन्तरिक्ष-लोक में भी व्याप्त हो रही है, उसको छोड़कर हम किस देव की स्तुति और उपासना कर सकते हैं ? अर्थात् हमको उसी महाशक्ति-रूपिणी देवता की पूजा करनी चाहिए।

❑ आहार शुद्ध होने पर अन्तःकरण शुद्ध हो जाता है। अन्तःकरण शुद्ध होने पर ध्रुव स्मृति हो जाती है—अपने ध्रुव एवं नित्य आत्मस्वरूप का स्मरण हो आता है। अपने ध्रुव स्वरूप का स्मरण हो आने पर अन्दर की सब गाँठ खुल जाती है अर्थात् आत्मा बन्धन मुक्त हो जाता है। *—छान्दोग्य उपनिषद्*

❑ **बिन्दु ब्रह्मसकृद्दृष्टवा मनस्तत्रैव नियोजयेत्।**
स्वयमेव तु संपश्येद्वेद्ये बिन्दुं च निष्कलम्।
भ्रूमध्यादूर्ध्वतः सच्चिदानन्दं तेजः कूटरूपम्।
परब्रह्म अवलोकयन्ध्रुवो भवति गर्भजन्मजरा।
मरणसंसारभयात्संतारयेति तस्मात्तारकमिति।।

—महायोग विज्ञान

अर्थात्—भ्रूमध्य भाग के ऊपर सच्चिदानन्दमय तेज राशि विद्यमान है, उसे परब्रह्म कहते हैं। इस ब्रह्मबिन्दु को देखने और उसमें मन लगाने का प्रयत्न करना चाहिए। इसके अतिरिक्त और कहीं मन को न जाने दें। यह बिन्दु ब्रह्म जन्म-मरण से छुड़ाता है, संसार सागर से पार करता है, इसलिए उसे तारक ब्रह्म भी कहते हैं। यह बिन्दु ध्यान तारक योग भी कहलाता है।

हम उस परमज्योति में अपनी ज्योति मिलाकर ही देवताओं की पंक्ति में बैठ सकने योग्य बनें।

❑ **त्रिपञ्चांगान्यथो वक्ष्ये पूर्वोक्तस्य हि लब्धये।**
तैश्च सर्वैः सदा कार्यं निदिध्यासनमेव तु।।
नित्याभ्यासादृते प्राप्तिर्न भवेत्तच्चिदात्मनः।
तस्माद्ब्रह्म निदिध्यासेज्जिज्ञासुः श्रेयसे चिरम्।।

—अपरोक्षानुभूति—१००-१०१

अर्थात्—स्वामी शंकराचार्य जी कहते हैं कि आत्म-ज्ञान के लिए मैं पन्द्रह साधन बताता हूँ, उन सबसे सर्वदा निदिध्यासन करना चाहिए। निरन्तर अभ्यास किए बिना सत और चित स्वरूप आत्मा की प्राप्ति नहीं होती। अतः आत्म-ज्ञान के इच्छुक साधक को चिरकाल तक निदिध्यासन-ब्रह्म चिन्तन करना चाहिए।

❑ **स्मृतेः सकलकल्याणभाजनं यस्य जायते।**
पुरुषस्तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्।।

जिसके स्मरण करने से सर्वत्र कल्याण ही कल्याण होता है, उस अजर-अमर, सदा सर्वत्र विद्यमान, ऐसे ब्रह्म की शरण में मैं उपस्थित होता हूँ, क्योंकि वही सब कल्याणों का करने वाला है।

❑ **दिव्यो ह्यमूर्तः पुरुषः स बाह्याभ्यन्तरो ह्यजः।**
अप्राणो ह्यमनः शुभ्रो ह्यक्षरात्परतः परः।।

वह ब्रह्म दिव्य है, वह निराकार सर्वसामर्थ्य वाला है, सबके अन्दर तथा बाहर व्यापक है। वह अज है। वह प्राण तथा मन से भिन्न है। प्रकृति से परे जो जीव उससे भी परे है, वह देदीप्यमान परम पुरुष है।

❑ **एतद्ध्येवाक्षरं ब्रह्म एतद्ध्येवाक्षरं परम्।**
एतद्ध्येवाक्षरं ज्ञात्वा यो यदिच्छति तस्य तत्।।

—कठोपनिषद १.२.१६

यह ॐ अक्षर ही ब्रह्म है और यही ॐ परम अक्षर ही ब्रह्म है और वही ॐ परम अक्षर है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इसी ॐ अक्षर को जानकर मनुष्य जो कुछ चाहता है, उसे वही मिल जाता है।

❑ **लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणमृषयः क्षीणकल्मषाः।**
छिन्नद्वैधा यतात्मानः सर्वभूतहिते रताः।।

—गीता ५.२५

क्षीण हुए पापों वाले, संशयहीन अपने आपको वश में किए हुए सब प्राणियों के हित में लीन ऋषि लोग ब्रह्म निर्वाण को प्राप्त होते हैं।

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।।

—ईशोपनिषद १

सारे विश्व में अन्तर्यामी भगवान व्याप्त हैं। कर्म करने पर ईश्वर द्वारा जो भी फल प्राप्त हो, उसका तुम उपभोग करो। जो दूसरे को प्राप्त है, उस पर अपना अधिकार मत चलाओ।

❑ **एकः प्रजायते जन्तुरेक एव प्रलीयते।**
एको ऽनुभुङ्क्ते सुकृतमेक एव च दुष्कृतम्।।

इस संसार में जन्तु अकेला ही उत्पन्न होता है और अकेला ही मरता है। अपने अन्दर स्थित परमेश्वर को जो धीर लोग साक्षात करते हैं, उन्हीं को शाश्वत सुख मिलता है अन्य को नहीं।

❑ **अयमात्मा स्वयं साक्षाद् गुणरत्नमहार्णवः।**
सर्वज्ञः सर्वदृक् सार्वः परमेष्ठी निरञ्जनः।।

यह आत्मा स्वयं साक्षात गुण-रूपी रत्नों से भरा हुआ समुद्र है, यह सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, सर्वत्र गतिवाला, परमपद में स्थित (परमेष्ठी) और सब प्रकार की कालिमा से रहित (निरंजन) है।

❑ **न जायते म्रियते वा विपश्चिन्नायं कुतश्चिन्न बभूव कश्चित्।**
अजो नित्यःशाश्वतोऽय पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे।।

—कठोपनिषद १.२.१८

यह चेतन आत्मा न तो उत्पन्न होती है और न मरती है। यह न तो किसी अन्य कारण से उत्पन्न हुई है, न ही बनी है। अजन्मा, नित्य, शाश्वत (सर्वदा रहने वाला) और पुरातन है और शरीर के मारे जाने पर भी नहीं मरती।

❑ **नोच्छिष्टं कस्यचिद्दद्यान्नाद्याच्चैव तथान्तरा।**
न चैवात्यशनं कुर्यान्न चोच्छिष्टः क्वचिद्व्रजेत्।।

—मनुस्मृति

अपना झूठा किसी को न देवे और न किसी का झूठा खावे। दिन और रात्रि के बीच में तीसरी बार भोजन करे, अधिक पेट भरके न खावे, झूठे मुख कहीं न जावे।

❑ **मितभोजनं स्वास्थ्यकरम्।** *—चाणक्य सूत्र ३। ७*

मर्यादित भोजन स्वास्थ्यकर है।

❑ **अजीर्णे भोजनं विषम्।**

अजीर्ण में भोजन करना विष है।

❑ **मात्राशीसर्वकालस्यान्मात्राह्यग्नेः प्रवर्तिका।।**

सदा मर्यादित भोजन करना चाहिए। ऐसा खाना ही जठराग्नि को बढ़ाता है।

❑ **मात्रा प्रमाणं निर्दिष्टं सुखं यावद् विजीर्यते।।**

जो भोजन सहज में पच जाए वही इसकी मात्रा है।

❑ आहार का उपयोग प्राण-धारण के लिए है, प्राण-धारण का उद्देश्य तत्त्व-जिज्ञासा है और तत्त्व-जिज्ञासा की आवश्यकता इसलिए है कि संसार में फिर जन्म-मरण-दुःख न भोगना पड़े।

❑ मुक्ति प्राप्त करने के लिए भोगों का त्याग, आत्म-विचार और मन तथा इन्द्रियों का निग्रह आवश्यक है और इनकी पूर्ति अपने पुरुषार्थ के सिवाय अन्य किसी विधि से नहीं हो सकती।

❑ द्रष्टा के ऊपर दृश्यपदार्थ की सत्ता रहने का नाम बन्धन है और दृश्यपदार्थ की सत्ता जिस दशा में मिट जाए उसका नाम मुक्ति है।

❑ ब्रह्मज्ञान और कौन प्राप्त कर सकता है ? जिसके भोगों की इच्छा दूर हो गई हो, जिसके मनोरथ न रहे हों और जिसकी बुद्धि व्युत्पन्न हो गई हो, वह ब्रह्मज्ञान का अधिकारी है।

❑ **योदयावान्द्विजश्रेष्ठसर्वभूतेषुसर्वदा।**
अहंकारविहीनश्चतस्यतुष्टोऽस्म्यहंसदा।।

—पद्म पुराण ७ खण्ड अ. १६

किसी एक ब्राह्मण से श्री भगवान् कहते हैं कि हे द्विज श्रेष्ठ, जो सर्वकाल में सर्वप्राणियों पर दया करता है और अहंकार से रहित है, उस पर मैं प्रसन्न रहता हूँ।।

❑ **या तु नारी पतिप्राणा पतिपूजापरायणा।**
तस्यास्तुष्टो जगन्नाथो ददाति स्वपदं मुने।।

—नारद पुराण अ. १४

जो स्त्री अपने पति को प्राण समान मानती है और पति का आदर करती है, उस स्त्री को भगवान प्रसन्न होकर अपना पद देते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ **अहिंसा सत्यवचनं दया भूतेष्वनुग्रहम् ।**
यस्यैतानि सदा राम तस्य तुष्यति केशवः ।।

—विष्णुधर्मोत्तर पुराण अ. ५८

अहिंसा, सत्य-भाषण, दया, प्राणियों पर कृपा, जिसके ऐसें लक्षण हैं, हे राम ! उस पर भगवान प्रसन्न रहते हैं।

❑ **कामक्रोधविहीनायेहिंसादंभविवर्जिताः ।**
लोभमोहविहीनाश्चज्ञेयास्तेवैष्णवाजनाः ।।

—पद्म पुराण

काम, क्रोध, लोभ, मोह, हिंसा, दम्भ से जो रहित हैं, उनको वैष्णव जानना चाहिए।

❑ **अमत्सरादयायुक्ताःसर्वभूतहितैषिणः ।**
सत्योक्तिभाषिणश्चैव विज्ञेयास्तेचवैष्णवाः ।।

ईर्ष्या (जलन) से रहित, दयाशील, सबके हितैषी और सत्यवादी ऐसे पुरुषों को वैष्णव जानना चाहिए।

❑ **सत्यं वदन्ति ये देवि नासूयन्ति परानृक्वथित् ।**
परनिन्दां नकुर्वन्तिपरस्वन हरन्ति च ।।

सत्य बोलते हैं, दूसरे के गुणों में दोष नहीं ढूँढ़ते, किसी की निन्दा नहीं करते, दूसरे के धन को नहीं चुराते।

❑ **न स्मरन्ति न पश्यन्ति न स्पृशन्ति कदाचन ।**
परदारान्सुरूपांश्च ये च तान्विद्धि वैष्णवान् ।।

—स्कन्द पुराण २। १। ६

सुन्दर परस्त्री का न स्मरण करते हैं, न देखते हैं, न स्पर्श करते हैं—ऐसे पुरुषों को वैष्णव (विष्णुभक्त) जानना चाहिए।

❑ **ये हिताः सर्वजन्तूनां गतासूया विमत्सराः ।**
ज्ञानिनो निःस्पृहाः शान्तास्ते वैभागवतोत्तमाः ।।

सबके हितकारी, किसी के गुणों में दोष न ढूँढ़ने वाले, ईर्ष्यारहित और शान्तचित्त ऐसे पुरुष भगवद्भक्तों में उत्तम हैं।

❑ **कर्मणा मनसा वाचा परपीडां न कुर्वते ।**
अपरिग्रहशीलश्च ते वै भागवतोत्तमाः ।।

—स्कन्द पुराण

मन, वाणी शरीर से जो किसी को पीड़ा नहीं पहुँचाते, शरीर-निर्वाह मात्र से जो अधिक संग्रह नहीं करते वे भगवद् भक्तों में उत्तम हैं।।

❑ **सदाचार रता ये च सर्वेषामुपकारकाः ।**
सदैव ममताहीनास्ते वै भागवताः स्मृतः ।।

—स्कन्द पुराण

सदाचार के प्रेमी, सबका उपकार करने वाले, हमेशा ममता से रहित ऐसे पुरुष भगवद्भक्तों में उत्तम हैं।

❑ मेरी यह त्रिगुणमयी दैवी माया बड़ी ही दुस्तर है। जो पुरुष मुझको ही निरन्तर भजते हैं, वे इस माया से तर जाते हैं। *—भगवान श्रीकृष्ण*

❑ परमात्मदेव को जानने पर सारे बन्धन कट जाते हैं, क्लेशों के क्षीण होने पर जन्म और मृत्यु से छुटकारा मिल जाता है।

❑ मुझ अविनाशी आत्मा को संसार में कौन पराजित कर सकता है ?

❑ **तुमंसि नाम तं चेव जं हंतव्वं ति मन्नसि ।**
तुमंसि नाम तं चेव जं अज्जवेयव्वं ति मन्नसि ।
तुमंसि नाम तं चेव जं परियावेव्वं ति मन्नसि ।

—आचारांग १। ५। ५

जिसे तू मारना चाहता है, वह तू ही है, जिसे तू शासित करना चाहता है, वह तू ही है। जिसे तू परिताप देना चाहता है, वह तू ही है। अर्थात् विश्वव्यापी चेतना एक समान और अद्वैत है।

❑ जिसका चित्त निर्मल है, वही मोक्ष पाता है।

❑ मैं तो शुद्ध ज्ञान-दर्शन-स्वरूप सदाकाल अमूर्त एक शुद्ध शाश्वत तत्त्व हूँ। परमाणु मात्र भी अन्य द्रव्य मेरा नहीं है—आत्मद्रष्टा ऐसे ही विचार करता है।

—आचार्य कुन्दकुन्द (समयसार ३८)

❑ **यतः प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम् ।**
स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः ।।

—गीता १८। ४६

जिस परमेश्वर से सम्पूर्ण प्राणियों की उत्पत्ति हुई और जिससे वह समस्त-जगत् व्याप्त है, उस परमेश्वर की अपने श्रेष्ठ कर्मों द्वारा पूजा करके मनुष्य परम सिद्धि को प्राप्त हो जाता है।

❑ **तमेव विदित्वातिमृत्युमेति ।**
नान्यः पंथा विद्यतेऽयनाय ।। *—श्वेताश्वतरोपनिषद्*

उस आत्म-परमात्मा को जानकर व्यक्ति मृत्यु को जीत लेता है। मुक्ति प्राप्ति का इससे भिन्न और कोई उपाय नहीं है।

❑ **यस्य मौर्ख्यक्षयं यातं सर्वब्रह्मेति भावनात् ।**
नोदेति वासना तस्य प्राज्ञस्याम्बुमतिर्मम ।।

—योगवासिष्ठ

सर्वत्र ही परमात्मा (ब्रह्म) विद्यमान है—इस भावना के दृढ़ हो जाने पर अज्ञान का स्वयमेव विनाश हो जाता है। इस स्थिति में मति के निर्मल जल के समान शुद्ध हो जाने पर फिर वासना का उदय नहीं होता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ **नित्यं प्रबुद्धचित्तास्तु कुर्वन्तोऽपि जगत्क्रियाः।**
आत्मैकतात्वसंनिष्ठाः सदैव सुसमाधयः।।

—योगवासिष्ठ ५। ६२। ६

जिसका मन प्रबुद्ध है, जो संसार के कर्म करते हुए आत्मा में स्थिर रहता है, वह सदा समाधि में ही है।

❑ **कुलं पवित्रं जननी कृतार्था वसुन्धरा भाग्यवती च तेन।**
अपारसंवित्सुखसिन्धुमग्नं परे ब्रह्मणि यस्य चेतः।।

—स्कन्द पुराण ५५। १४०

उस व्यक्ति का कुल पवित्र हो गया, उसकी जननी कृतार्थ हो गई और उससे यह पृथ्वी पुण्यवती हो गई, जिस व्यक्ति का मन 'अपारचिदानन्द सिन्धु परब्रह्म' में लीन हो गया। अर्थात् परम आनन्द के स्रोत परमात्मा से जुड़ गया। यह उनके लोक-कल्याणकारी कार्यों में हाथ बँटाने लगा।

❑ **अज्ञानहृदयग्रन्थेर्निःशेषविलयस्तदा।**
समाधिनाविकल्पेन यदाद्वैतात्मदर्शनम्।।

—विवेक चूडामणि ३५४

हृदय की अज्ञान रूपी ग्रन्थि का सर्वथा नाश तब होता है, जब निर्विकल्प समाधि द्वारा अद्वैत आत्म-स्वरूप का साक्षात्कार कर लिया जाता है।

❑ जिनमें द्युलोक, पृथ्वी, अन्तरिक्ष और सम्पूर्ण प्राणियों के सहित मन ओत-प्रोत है, उस एक आत्मा को ही जानो और सब बातों को छोड़ दो, यही अमृत (मोक्ष प्राप्ति) का सेतु (साधन) है।

❑ जो पुरुष अव्यभिचारी भक्तियोग के द्वारा मुझको निरन्तर भजता है, वह सत्व-रज-तम तीनों गुणों को लाँघकर ब्रह्म को प्राप्त होता है।

—भगवान श्रीकृष्ण

❑ मुझ अव्यक्त मूर्ति से यह सब जाग्रत परिपूर्ण है और सब भूत मेरे अन्दर स्थित हैं, मैं उनमें स्थित नहीं हूँ और वे भूत भी मुझमें स्थित नहीं हैं, मेरी योगमाया और प्रभाव को देखो कि सब भूतों को धारण, पोषण करने वाला और भूतों को उत्पन्न करने वाली मेरी आत्मा उन भूतों में स्थित नहीं है।

—भगवान श्रीकृष्ण

❑ मुझ में मन लगा दो और मुझ में ही बुद्धि लगा दो, फिर तुम निस्सन्देह मुझको ही प्राप्त होओगे।

—भगवान श्रीकृष्ण

❑ जिसने मन को जीत लिया उसने संसार को जीत लिया।

—शंकराचार्य

❑ **एको वशी निष्क्रियाणां बहूनामेकं बीजं बहुधा यः करोति।**
तमात्मस्थं येऽनुपश्यन्ति धीरास्तेषां सुखं शाश्वतं नेतरेषाम्।।

जो एक, अद्वितीय, स्वतन्त्र परमात्मा बहुत-से अपने अन्तःकरण में स्थित उस देव को मतिमान देखते हैं, उन्हें ही नित्य सुख प्राप्त होता है औरों को नहीं।

—श्वेताश्वतरोपनिषद्

❑ **यस्मिन् ज्ञाते सर्वमिदं ज्ञातं भवति निश्चितम्।**
तस्मिन्परिश्रमःकार्यःकिमन्यच्छास्त्रभाषितम्।।

—शिव संहिता १। १८

जिस एक के ही जानने से निश्चित रूप से सब कुछ जान लिया है, उस एक के लिए ही परिश्रम करना चाहिए। अन्य शास्त्रों में भटकने से क्या लाभ ?

❑ **नीवारसूकवत् शुक्र ज्योतिर्वत् सूर्यवत् तक्वचित्।**
चन्द्रवच्चाणुवत्सूक्ष्मं प्रादेश परिमाणवत्।।
खद्योतवच्च स्फटिकसदृशस्तारकवत्क्वचित्।
नीलज्योतिः क्वचित् रक्तज्योतिः शुभ्रद्युतिः क्वचित्।।
विविध ज्योतिरन्यत्र ज्योतिषां ज्योतिरेव सः।
अभिव्यक्तिकरा एवं आकार ब्रह्मणि स्थिता।।
ज्योतिरेव परं ब्रह्म ज्योतिरेव परं सुखम्।
ज्योतिरेव परा शान्तिर्ज्योतिरेव परं पदम्।।

—महायोग विज्ञान

यह आत्म-ज्योति किसी को शुक्र के तारे के समान, किसी को सूर्य, चन्द्र, अग्नि अथवा अणु जैसी प्रतीत होती है। जुगनू, स्फटिक मणि अथवा मोती की तरह यह चमकती है। कभी नील ज्योति, कभी रक्त ज्योति, कभी श्वेत यह विभिन्न आकृतियों की दिखती है। यह सब अन्तःकरण में विद्यमान ब्रह्म का अभ्यास कराती है। यह आत्म-ज्योति परब्रह्म है। यही परम सुख है। इसी से परम पद और परम शान्ति की प्राप्ति होती है।

❑ **तत्प्रतीतौ भवेन्मुक्तिर्नान्यतो जन्मकोटिभिः।**
तदा लक्षणमात्मनो ज्योतिरूपं प्रपश्यति।
विधूम इव दीप्ताग्निरादित्य इवदीप्तिमान्।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विद्योऽग्निरिवाकाशे पश्यन्त्यात्मानमात्मनि ।।
नेत्रे पश्यति यज्ज्योतिस्तारा रूपं प्रकाशकम् ।
स जीवः सर्वभूतानामात्मानं च समाहितः ।।
यदा प्रकाशते ह्यात्मा घटे दीपो ज्वलन्निव ।
ज्ञानमुत्पद्यतेपुसां क्षयात्पापस्य कर्मणः ।।

—महायोग विज्ञान

अन्तःकरण में जो आत्म-ज्योति प्रकाशित है, उसे लिंग, देह या कारण शरीर कहते हैं। उसका अनुभव होने से ही मुक्ति होती है अन्यथा नहीं। इसलिए इस आत्म-ज्योति का दर्शन करना चाहिए।

निर्धूम, ज्योतिर्मय दीप्ति अथवा सूर्य, विद्युत अथवा अग्नि की तरह हृदयाकाश में यह परम-ज्योति प्रकाशित हुई देखें, यही आत्म-ज्योति सम्पूर्ण प्राणियों में संव्याप्त है। यह जब आत्मा में प्रकाशित होती है तो पापकर्म क्षीण हो जाते हैं और तत्त्व-ज्ञान प्रकाशित होता है।

❑ पृथ्वी की ओर देखकर पैर रखना, जल कपड़े से छानकर पीना, वाणी को सत्य से पवित्र करके बोलना और मन में विचार करने पर जो उत्तम प्रतीत हो वही करना चाहिए।

❑ **वायुनानीयते मेघः पुनस्तेनैव नीयते ।**
मनसा कल्प्यते बन्धो मोक्षस्तेनैव कल्प्यते ।।

—विवेक चूडामणि-१७४

जिस प्रकार बादल वायु के द्वारा आता है और उसी के द्वारा अन्यत्र चला जाता है, उसी प्रकार 'मन' से ही बन्धन की कल्पना होती है और उसी से मोक्ष की।

❑ **विद्या रूपं धनं शौर्यं कुलीनत्वमरोगता ।**
राज्यं स्वर्गश्च मोक्षश्च सर्वं धर्मादवाप्यते ।।

विद्या, रूप, धन, शूरता, कुलीनता, आरोग्यता, राज्य और स्वर्ग तथा मोक्ष ये सभी धर्म से ही प्राप्त होते हैं। धर्मपालन करने वाले में ही ये गुण होते हैं।

❑ परलोक में सहायता के लिए माता-पिता, पुत्र, स्त्री और सम्बन्धी कोई नहीं रहते। वहाँ एक धर्म ही काम आता है। मरे हुए शरीर को बन्धु-बान्धव काठ और मिट्टी के ढेलों के समान पृथ्वी पर पटककर घर चले जाते हैं। एक धर्म ही उसके साथ जाता है।

❑ **न देवो विद्यते काष्ठे न पाषाणे न मृण्मये ।**
भावे हि विद्यते देवस्तस्माद् भावो हि कारणम् ।।

—चाणक्य

देवता न काठ में है, न पत्थर में है और न मिट्टी की मूर्ति में है। निश्चय ही देवता भाव (विश्वास) में है, इसलिए भाव ही सर्वप्रधान है।

❑ परमात्मा सत्य तथा उचित ज्ञान और अखण्ड ब्रह्मचर्य की साधना से मिलता है। यह परमात्मा हमारे ही अन्दर है, जो संयमी और जिनके दोष दूर हो गये हैं, वे ही उसका दर्शन कर सकते हैं।

❑ जिसने दुराचरण को सदा के लिए नहीं छोड़ा, जिसकी इन्द्रियाँ और मन शान्त नहीं, वह मनुष्य केवल पुस्तक ज्ञान से प्रभु को प्राप्त नहीं कर सकता।

❑ **मनसाधप्रदीप्तेनब्रह्मज्ञानजलेनच ।**
स्नातियोमानसेतीर्थेतत्स्नानंतत्त्वदर्शिनः ।। *—महाभारत*

अन्तःकरण में प्रकाशित ब्रह्मज्ञान रूपी जल से मानस तीर्थ में स्नान होता है, तत्त्वदर्शियों का वही परम स्नान है।

❑ **मनो विशुद्धं पुरुषस्य तीर्थं वाचां तथा चेन्द्रिय निग्रहश्च ।**
एतानि तीर्थानि शरीरजानि स्वर्गस्य मार्गं प्रतिबोधयन्ति ।।

—ब्रह्म पुराण

मनुष्य का विशुद्ध मन ही महान तीर्थ है। वाणी और इन्द्रियों का निग्रह यह सद्गुण, शरीर में निवास करने वाला तीर्थ है। इसी मार्ग पर चलकर स्वर्ग पहुँचा जाता है।

❑ **ब्रह्मध्यानं परं तीर्थं तीर्थमिन्द्रियनिग्रहः ।**
दमस्तीर्थं तु परमं भावशुद्धिः परं तथा ।।

—गरुड़ पुराण

ब्रह्म का ध्यान परम तीर्थ है, इन्द्रियों का निग्रह तीर्थ है, मन का निग्रह तीर्थ है, भाव शुद्धि परम तीर्थ है।

❑ **जे एगं नामे, से बहु नामे ।** *—आचारांग १। ३। ४*

अपने को जीत लेने वाला सारे संसार को जीत लेता है।

❑ ब्रह्मज्ञान कौन प्राप्त कर सकता है ? जिसकी भोगों की इच्छा दूर हो गई हो, जिसके मनोरथ न रहे हों और जिसकी बुद्धि व्युत्पन्न हो गई हो—वह ब्रह्मज्ञान का अधिकारी है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ जीव मात्र में एक ही चेतना-आत्मा के दर्शन करता है, वही सच्चा ब्रह्मज्ञानी है। —*वेदव्यास*

❑ **अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च।**
निर्ममो निरहंकारः समदुःखसुखः क्षमी।।
सन्तुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढनिश्चयः।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः।।
यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः।
हर्षामर्षभयोद्वेगैर्मुक्तो यः स च मे प्रियः।।

—*गीता*

"जो किसी से द्वेष नहीं करता, जो भूतमात्र का मित्र है, जो दयाशील है, जिसमें "मेरा और मैं" भाव नहीं है, जिसे सुख-दुःख दोनों समान हैं, जो क्षमावान है, जो हमेशा प्रसन्न, स्थिर-चित्त, संयमित मन, दृढ़ निश्चयी है और जिसने मन और बुद्धि मुझे अर्पण कर दी है, वह भक्त मुझे प्यारा है। जिससे न लोगों को भय है, न उसे किसी से भय है, जो दूसरों का हर्ष, क्रोध, सुख देखकर, खेद, भय और विषाद से मुक्त हो गया है, वह मुझे प्यारा है।

❑ **दातुः परीक्षा दुर्भिक्षे रणे शूरस्य जायते।**
आपत्काले तु मित्रस्याशक्तौ स्त्रीणां कुलस्य हि।
विनये संकटे प्राप्तेऽवितथस्य परोक्षतः।
सुस्नेहस्य तथा तात नान्यथा सत्यमीरितम्।

—*शिवपुराण*

दाता की परीक्षा दुर्भिक्ष में, वीर की युद्धकाल में, मित्र की आपत्ति पड़ने पर, स्त्री की निर्धनावस्था में, श्रेष्ठ कुल की विपत्ति के समय, प्रेम की परोक्ष अवस्था में और सत्य की परीक्षा किसी बड़े संकट के अवसर पर होती है।

❑ **दानेन तुल्यो विधिरस्ति नान्यो लोभाच्च नान्योऽस्ति परः पृथिव्याम्।**
विभूषणं शीलसमं न चान्यत्संतोषतुल्यं धनमस्ति नान्यत्।।

—*पंचतन्त्र*

दान के समान दूसरी कोई निधि नहीं है, लोभ के समान दूसरा कोई शत्रु नहीं है, शील के समान दूसरा भूषण नहीं है और सन्तोष के समान अन्य कोई धन नहीं है।

❑ **द्वे पदे बन्धमोक्षाय निर्ममेति ममेति च।**
ममेति बध्यते जन्तुर्निर्ममेति विमुच्यते।।

—*वेदव्यास*

बन्धन और मोक्ष के दो ही कारण हैं—ममता (मोह) और ममता शून्यता। ममता से प्राणी बन्धन में पड़ता है और ममतारहित होने पर मुक्त हो जाता है।

❑ **जले तैलं खले गुह्यम् पात्रे दानं मनागपि।**
प्राज्ञे शास्त्रं स्वयं याति विस्तार वस्तुशक्तितः।।

—*चाणक्य*

पानी में गिरा हुआ तेल, दुष्ट व्यक्ति से कही गई गुप्त बात, सुपात्र को दिया हुआ दान और बुद्धिमान मनुष्य का शास्त्राभ्यास यदि थोड़ा भी होता है, तब भी वह अपनी ही शक्ति से स्वयं विस्तार को प्राप्त होता जाता है।

❑ **येन्यायेनजिहीर्षन्तोधर्ममिच्छन्तिकर्हिचित्।**
अकूजनेनमोक्षंवानानुकूजेत्कथंचन।।
अवश्यंकूजितव्येवाशंकेरन्प्यकूजतः।
श्रेयस्तत्रानृतंवक्तुंतत्सत्यमविचारितम्।।

—*महाभारत कर्ण. ६९-६९*

न्याय की रक्षा करने वाला कार्य करना ही धर्म है। इसके लिए कभी चुप रहना पड़े तो वैसा ही करना चाहिए। यदि चुप रहने से सन्देह उत्पन्न ही होता है तो झूठ बोल दे। न्याय की रक्षा के लिए वैसा करना भी, निसन्देह सत्य ही कहा जाएगा।

❑ **अधर्मनात्रपश्यन्तिधर्मतत्त्वार्थदर्शिनः।**
यस्तेनैःसहसम्बन्धान्मुच्यतेशपथैरपि।
श्रेयस्तत्रानृतंवक्तुंतत्सत्यमविचारितम्।
नचतेभ्योधनंदेयंशक्येसतिकथंचन।
पापेभ्योहिधनंदत्तंदातारमपिपीडयेत्।
तस्माद्वृथमर्थमनृतमुत्कंनानृतभाग्भवेत्।

—*महाभारत कर्ण. ६९। ६३-६४-६५*

यदि दुष्टों से पाला पड़े तो झूठी शपथ खाकर भी उनसे अपना पीछा छुड़ाले। उनसे अपने धन तथा प्राणों की रक्षा करने के लिए बोला हुआ झूठ, झूठ नहीं है। अपना बस रहते प्राणियों के हाथ अनीतिपूर्वक अपना धन अपहरण न होने देना चाहिए। धर्म के लिए झूठ बोलने से मनुष्य झूठा नहीं कहलाता है।

❑ **न दुरुक्ताय स्पृहयेत्।** —*ऋ. १। ४१। ६*

अपशब्द का अवसर नहीं आने देना चाहिए।

❑ **ये युध्यन्ते प्रधनेषु शूरासो ये तनूत्यजः।**
ये वा सहस्रदक्षिणास्तांश्चिदेवापि गच्छतात्।।

—*अथर्व. १८.२.५७*

संग्राम में लड़ने वाले वीरों की भाँति आदर्श के लिए प्राण त्यागने वाले, अनेक प्रकार के त्याग और दान करने वाले सज्जनों की गति को तू प्राप्त कर।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ **स्वभावो नोपदेशेन शक्यतेकर्तुमन्यथा।**
सुतप्तमपि पानीयं पुनर्गच्छतिशीतताम्।।

—पंचतन्त्र १। २८०

उपदेश मात्र से ही स्वभाव नहीं बदला जा सकता। गरम किया हुआ पानी तो थोड़ी देर में फिर ठण्डा हो जाता है।

❑ **अनवाप्यं च शोकेन शरीरं चोपतप्यते।**
अमित्राश्च प्रहृष्यन्ति मा स्म शोके मनः कृथाः।।

—विदुर नीति ४। ४५

शोक करने से अभीष्ट वस्तु प्राप्त नहीं होती, उससे तो केवल शरीर को पीड़ा होती और शत्रु हँसते हैं। इसका शोक मत करो।

❑ **सुशीलोभव धर्मात्मा मैत्रः प्राणिहिते रतः।**
निम्नं यथापः प्रवणाः पात्रमायान्ति सम्पदः।।

—विष्णु पुराण १। ११। २४

सुशील बनो, धर्मात्मा बनो, सबके मित्र बनो और प्राणियों का हित करो। जैसे पानी नीचे को बहता है, वैसे ही सत्पात्र के पास सब सम्पत्तियाँ इकट्ठी हो जाती हैं।

❑ **एकस्य कर्म संवीक्ष्य करोत्यन्योऽपि गर्हितम्।**
गतानुगतिको लोको न लोकः पारमार्थिकः।।

—पंचतंत्र

संसार में भेड़िया-धसान है, एक का अनुसरण करके दूसरा भी बुरा काम करने लगता है, लेकिन परमार्थ के काम का कोई तत्परता के साथ अनुकरण नहीं करता।

❑ **अहन्यहनिभूतानिगच्छंतीहयमालयम्।**
शेषाःस्थावरमिच्छंतिकिमाश्चर्यमतःपरम्।।

—महाभारत

प्रतिदिन जीव मृत्यु के मुख में चलते जा रहे हैं, पर बचे हुए लोग अमर बने रहने का विचार किया करते हैं, इससे बढ़कर आश्चर्य क्या होगा ?

❑ **अन्यो धनं प्रेतगतस्य भुङ्क्ते**
वयांसि चाग्निश्च शरीरधातून्।
द्वाभ्यामयं सह गच्छत्यमुत्र
पुण्येन पापेन च वेष्ट्यमानः।।

—विदुर नीति ८। १६

मरने पर मनुष्य का धन दूसरे लोग ले लेते हैं, शरीर के मांस को जीव-जन्तु खा जाते हैं या आग जला देती है। परलोक को तो जीव पाप और पुण्य ही साथ ले जाता है।

❑ **न स्फूर्जति न च गर्जति न च कस्काः**
किरति सृजति न च तज्ज्ञिः।
न च विनि मुञ्चति वात्यां
वर्षति निभृतं महामेघः।।

महामेघ (झर बादल) न भड़कते हैं, न गरजते हैं और न ओले फेंकते हैं न बिजली कौंधाते हैं, न तूफान घराते हैं, वे चुपचाप बरसते रहते हैं।

❑ **गुणाधिकान्मुदं लिप्सेदनुक्रोशं गुणाधमात्।**
मैत्रीं समानादन्विच्छेन्न तापैरभिभूयते।।

—श्रीमद्भागवत् ४। ८। ३४

अपने से अधिक गुण वालों से आनन्द प्राप्त करें, कम गुण वालों से मित्रता रखें, ऐसा मनुष्य सन्तापों से व्यथित नहीं होता।

❑ **सुप्तंव्याघ्रंमहौघोवामृत्युरादायगच्छति।**
सँचिन्वानकमेवैनंकामानामवितृप्तकम्।
वृकीवोरणमासाद्यमृत्युरादायगच्छति।

—महाभारत शान्ति. २७७। १८

जल का वेग जैसे सोते हुए बाघ को बहा ले जाता है वैसे ही नाना मनोरथों में बँधे हुए और कामनाओं से अतृप्त मनुष्य को काल घसीट ले जाता है। जैसे—भेड़ के बच्चे को बाघिन उठा ले जाती है, वैसे ही मृत्यु भी अचानक ही इस जीवन को पकड़ ले जाती है।

❑ **वरं प्राणपरित्यागो मानभङ्गेन जीवनात्।**
प्राणत्यागे क्षणं दुःखं मानभङ्गे दिने दिने।।

—चाणक्य

मानभंगपूर्वक जीवित रहने की अपेक्षा प्राण चला जाना ही श्रेष्ठ है। प्राण-त्याग से थोड़ी-सी देर का दुःख होता है, पर मानभंग होने से सदैव दुःखित रहना पड़ता है।

❑ **पण्डा आत्मविषया बुद्धिः येषां ते हि पण्डिताः।**

—गीता २। ११ शांकर भाष्य

आत्मा विषयक बुद्धि का नाम पण्डा है और वह बुद्धि जिनमें होती है वह पण्डित है।

❑ **सत्यं तपो ज्ञानमहिंसता च विद्वत्प्रणामं च सुशीलता च।**
एतानि यो धारयते स विद्वान्न केवलं यः पठते स विद्वान्।।

—सुभाषितरत्न भाण्डागार

सत्य, तप, ज्ञान, अहिंसा, विद्वानों का सत्कार और शीलता ये गुण जिसमें हैं, वह विद्वान (पण्डित) है, केवल शास्त्र पढ़ने वाला नहीं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ **स वा एषा देवतैतासां देवतानां पाप्मानं मृत्युमपहत्य, यत्रासां दिशामन्तास्तद्गमयांचकार तदासां पाप्मनो विन्यदधात्तस्मान्न जनमियान्नान्तमियान्नेत्पाप्मानं मृत्युमन्वायानीति ।।**

—बृहदारण्यकोपनिषद् १। ३। १०

प्राण देवता ने इन्द्रियों के पापों को दिगन्त तक पहुँचाकर विनष्ट कर दिया, क्योंकि वह पाप ही इन्द्रियों के मरण का कारण था। इन कल्मषों को इस निश्चय के साथ भगाया कि पुनः न लौट सकें।

❑ **यथेष्टं धारणां वायोरनलस्य प्रदीपनम् । नादाभिव्यक्तिरारोग्यं जायते नाडिशोधने ।।**

—गोरक्ष प. १। १०

नाड़ी-शोधन हो जाने पर अग्निदीपन, आरोग्य, नाद का स्फुरण, प्राण धारण आदि की सामर्थ्य प्राप्त होती है।

❑ **पञ्चेन्द्रियस्य मर्त्यस्य छिद्रं चेदेकमिन्द्रियम् । ततोऽस्य स्रवति प्रज्ञा दृतेः पात्रादिवोदकम् ।।**

—विदुर नीति

पाँच इन्द्रिय वाले मनुष्य की यदि एक भी इन्द्रिय में दोष आ जाए, तो उससे इसकी बुद्धि टपकने लगती है। जैसे मशक से पानी। अर्थात् ज्ञानेन्द्रियों द्वारा भूल करना ही मूर्खता है।

❑ **एगे अहमंसि न मे अत्थि कोई। न याऽहमवि कस्स वि ।।**

—आचारांग १। ८। ६

"मैं एक हूँ, मैं अकेला हूँ, न मेरा कोई है, न मैं किसी का हूँ।" जो यह विचारता है वह पण्डित है।

❑ **केषां न स्यादभिमतफला प्रार्थना ह्युत्तमेषु।**

—कालिदास (मेघदूत)

श्रेष्ठ पुरुषों से की गई प्रार्थना कभी निष्फल नहीं जाती, फिर ईश्वर से की गई प्रार्थना का तो कहना ही क्या ?

❑ **स्वयं कृतं कर्म यदात्मना पुरा, फलं तदीयम् लभते शुभाशुभम् । परेण दत्तं यदि मन्यते स्फुटं, स्वयं कृतं कर्म निरर्थकं तदा ।।**

—शाण्डिल्य नीति

अर्थात्—जो कर्म पूर्वकाल में मनुष्य द्वारा किया गया है, उसका शुभ तथा अशुभ फल उसको मिलता है। यदि यह माना जाए कि यह फल किसी अन्य व्यक्ति का दिया हुआ है तो अपने किए हुए कर्म निरर्थक ही ठहरेंगे।

❑ **शरीरजैः कर्मदोषैर्याति स्थावरतां नरः । वाचिकैः पक्षिमृगतां मानसैरन्त्यजातिताम् ।। इह दुश्चरितैः केचित्केचित्पूर्वकृतैस्तथा । प्राप्नुवन्ति दुरात्मानो नरा रूपविपर्ययम् ।।**

—मनुस्मृति

शारीरिक पाप कर्मों से जड़ योनियों में जन्म होता है, वाणी पाप से पशु-पक्षी बनना पड़ता है। मानसिक दोष करने वाले मनुष्य योनि से बहिष्कृत हो जाते हैं। इस जन्म के अथवा पूर्व जन्म के किये हुए पापों से मनुष्य अपनी स्वाभाविकता खोकर विद्रूप बनते हैं।

❑ **ज्ञानोदयात्पुराऽऽब्धं कर्म ज्ञानान्न नश्यति । अदत्त्वा स्वफलं लक्ष्यमुद्दिश्योत्सृष्टबाणवत् ।।**

—अध्यात्मोपनिषद् ५३

ज्ञान का उदय हो जाने पर भी पूर्वकृत कर्मों के प्रारब्ध-भोग तो भोगने ही पड़ते हैं। उनका नाश नहीं होता। धनुष से छूटा हुआ तीर प्रहार करता ही है।

❑ ब्रह्मा भी जिस कर्म के अधीन है, उस कर्म को ही नमस्कार है, पहले जन्मों में किया हुआ अपना ही कर्म इस जन्म में प्रबल दैव बन जाता है और कहलाता है। सुख-दुःख देने वाला कोई दूसरा नहीं, अपना क्रियाकर्म ही अपने नैसर्गिक फल को पाता है। अपने कर्म से ही जीव को रुद्रत्व-विष्णुत्व आदि मिलता है। पूर्व जन्म का कर्म ही इस जन्म का दैव है।

❑ **किं तया क्रियते धेन्वा या न दोग्ध्री न गर्भिणी। कोऽर्थः पुत्रेण जातेन यो न विद्वान्न धार्मिकः ।।**

उस गाय से क्या लाभ है जो न दूध देती हो, न गर्भ धारण करती हो, उस पुत्र के उत्पन्न होने से क्या लाभ, जो न विद्वान ही हुआ और न धार्मिक।

❑ प्राण बचाने के लिए भी मित्र को आपत्ति में न डालना सज्जनों का धर्म है। *—जातक*

❑ नारी पुरुष की अर्द्धांगिनी है, उसकी सबसे बड़ी मित्र है। धर्म, अर्थ, काम का मूल है। जो इसका अपमान करता है काल उसे नष्ट कर देता है। जीवनसंगिनी के रूप में नारी ही पुरुष को ऊँचा उठाती है।

❑ आयु कम है, विघ्न-बाधाएँ अनन्त हैं। इसलिए हे तात ! कुसंस्कारों और बुरे कर्मों को हटा बाहर करने में एक भी क्षण देर न करो।

—उत्तराध्ययन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ **न च विद्यासमो बन्धुर्न च व्याधिसमो रिपुः।**
न चापत्यसमः स्नेहो न च धर्मो दयापरः।।
विद्या के समान कोई बन्धु नहीं, रोग के समान शत्रु नहीं, सन्तान जैसा कोई प्रिय नहीं, दया से बढ़कर कोई धर्म नहीं हैं।

❑ बलवान शत्रु के सामने जो गर्वित होता है, वह नष्ट हो जाता है और जो नम्र होता है, वह अपना अस्तित्व स्थिर रखता है, जिस प्रकार पानी के प्रबल प्रवाह में बड़े से बड़ा वृक्ष बह जाता है, किन्तु इसके विपरीत बेंत का वृक्ष झुककर अपना अस्तित्व कायम रखता है।

❑ **दूरस्थाः पर्वता रम्या बन्धुरम्यं परस्परम्।**
युद्धस्य वार्ता रम्या च त्रीणि रम्याणि दूरतः।।
पर्वत दूर से ही शोभनीय या सुहावने लगते हैं—आपस में समान दर्जे वाले बन्धुगण ही अच्छे होते हैं, लड़ाई का वीभत्स दृश्य अच्छा नहीं लगता। ये तीनों बातें दूर से ही सुन्दर प्रतीत होती हैं। *—नीतिरत्नमाला*

❑ **"यावद्भ्रियेज्जठरं तावत्स्वत्वं इह देहिनाम्।**
योऽधिकमभिमन्येत स स्तेनो दण्डमर्हति।।"
—श्रीमद्भागवत्
अर्थात् जितने से उदर-पूर्ति हो जाए, उतना ही जीवनधारियों का स्वत्व है। जो इससे अधिक पर अपना अधिकार मानता है, वह चोर है और दण्डनीय है।

❑ **आलस्यं स्त्रीसेवा सरोगता जन्मभूमिवात्सल्यम्।**
सन्तोषो भीरुत्वं षड् व्याघाता महत्त्वस्य।।
—हितोपदेश
आलस्य, वासना, रोगग्रस्त रहना, जन्म स्थान का मोह, सन्तोष और डरपोकपन—ये सब बातें उन्नति के लिए बाधक होती हैं।

❑ ज्ञान के समान इस संसार में श्रेष्ठ वस्तु कोई नहीं। ज्ञान से ही जीवन की सारी गुत्थियाँ सुलझती हैं और उसके अभाव में नाना प्रकार के शोक-सन्ताप सहने पड़ते हैं। ज्ञान की प्राप्ति के लिए निरन्तर प्रयत्न करना चाहिए। स्वाध्याय एवं सत्संग के लिए सदा प्रयत्नशील रहना चाहिए।

❑ **श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।**
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति।।
—गीता
जिन्होंने अपने ज्ञान से अज्ञान का नाश कर लिया है, उनका ज्ञान सूर्य के समान चमकता है और परम तत्त्व को प्रकाशित कर देता है। ज्ञान प्राप्त होने पर तुरन्त ही परम शान्ति प्राप्त होती है।

❑ **प्राज्ञं विज्ञात विज्ञायं सम्यग् दर्शनमाश्रयः।**
न दहन्ति वनं वर्षासिक्तमग्निशिखा इव।।
—योगवासिष्ठ
जिसने जानने योग्य को जान लिया है और विवेक दृष्टि प्राप्त कर ली है, उस ज्ञानी को मानसिक दुःख उसी प्रकार नहीं सताते जैसे वर्षा के भीगे जंगल को अग्नि नहीं जलाती।

❑ **आधयो व्याधयश्चैव द्वयं दुःखस्य कारणम्।**
तन्निवृत्तिः सुखं विद्यात् तत्क्षयो मोक्ष उच्यते।।
—योगवासिष्ठ ६। ८७। १२
शारीरिक और मानसिक ये दो प्रकार के दुःख इस संसार में हैं। इनकी निवृत्ति ज्ञान द्वारा होती है। इस दुःख निवृत्ति का नाम ही मोक्ष है।

❑ **एकः शत्रुर्नद्वितीयोऽस्तिशत्रुरज्ञानतुल्यःपुरुषस्यराजन्।**
येनावृतःकुरुतेसंप्रयुक्तोघोराणिकर्माणिसुदारुणानि।।
—महाभारत शान्तिपर्व
इस संसार में मनुष्य का एक ही शत्रु है वह है—अज्ञान ! इसके अतिरिक्त उसका कोई शत्रु नहीं है। इस अज्ञान के कारण ही मनुष्य दारुण कर्म करने लगता है।

❑ **पाताले भूतले स्वर्गे सुखमैश्वर्यमेव वा।**
न तत्पश्यामि यन्नाम पाण्डित्यादतिरिच्यते।।
—स्कन्द पुराण ६। १४३। ३
पाताल, भूतल और स्वर्ग में वह सुख कहीं भी नहीं दिखाई देता जो ज्ञानवान् होने पर प्राप्त होता है।

❑ **प्रज्ञाप्रासादमारुह्य शोच्यश्च शोचतो जनान्।**
तमिष्ठानिव शैलस्थः सर्वान् प्राज्ञोऽनुपश्यति।।
प्रज्ञा प्राप्त विवेकवान योगी संसार में शोक ग्रस्त मानवों को ऐसे देखता है जैसे पहाड़ की चोटी पर खड़ा मनुष्य पृथ्वी पर नीचे खड़े हुए मनुष्यों को देखता है।

❑ **बीजान्यग्न्युपदग्धानि न रोहन्ति यथा पुनः।**
ज्ञानदग्धस्तथा क्लेशऽऽत्मना सम्पद्यते पुनः।।
जिस प्रकार आग में भुने हुए बीज नहीं उगते वैसे ही विवेक रूपी अग्नि से जले हुए क्लेश फिर उत्पन्न नहीं होते।

❑ **विशोक आनन्दमयो विपश्चित्,**
स्वयं कुतश्चिन्न बिभेति कश्चित्।
विज्ञ व्यक्ति शोकरहित होकर आनन्दपूर्वक रहते हैं। वे किसी से भी नहीं डरते।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ **विचारात् ज्ञायते तत्त्वं तत्त्वाद्विश्रान्तिरात्मनि।**

—योगवासिष्ठ २। १४। ५३

विचार से तत्त्व-दर्शन होता है और उससे आत्म-शान्ति उपलब्ध होती है।

❑ **देहदुःखं विदुर्व्याधिमाध्याख्यं वासनामयम्।**
मौर्ख्यमूले हि ते विद्यातत्त्वज्ञाने परिक्षयः।।

—योगवासिष्ठ ६। ८१। १४

शारीरिक दुःखों को व्याधि और मानसिक दुःखों को आधि कहते हैं। यह दोनों मूर्खता से उत्पन्न होती हैं और ज्ञान से नष्ट हो जाती हैं।

❑ **तृणपर्णोदकाहाराः सततं वनवासिनः।**
जम्बूकाखुमृगाद्याश्च तापसास्ते भवन्ति किम्।।
आजन्ममरणान्तञ्च गंगादितटिनीस्थिताः।
मण्डूकमत्स्यप्रमुखा योगिनस्ते भवन्ति किम्।।
पारावताः शिलाहाराः कदाचिदपि चातकाः।
न पिबन्ति महीतोयं व्रतिनस्ते भवन्ति किम्।।
तस्मान्नित्यादिकं कर्म्म लोकरंजनकारकम्।
मोक्षस्य कारणं साक्षात्तत्त्वज्ञानं खगेश्वर।।

—गरुड़ प्रेत. अ. ४६

घास, पत्ते, पानी का आहार करने वाले तथा नित्य वन में रहने वाले गीदड़, चूहे, मृगादि क्या तपस्वी हो जावेंगे।

जन्म से लेकर मरने तक गंगादि नदियों के किनारे रहने वाले मेंढक, मछली आदि क्या योगी हो जाते हैं।

पत्थरों का आहार करने वाले कबूतर और कभी भी पृथ्वी का पानी न पीने वाले चातक क्या वे व्रती हो जाते हैं।

इसलिए नित्यादि कर्म तो लोगों को प्रसन्न करने के लिए हैं। मोक्ष का साक्षात कारण तो ज्ञान ही है।

❑ हम अमृत प्राप्त करें, मृत्यु हमसे दूर रहे। ज्ञान ही अमृत और अज्ञान ही मृत्यु है।

❑ **मृत्योर्मामृतं गमय।** *—श्रुति*

मृत्यु की ओर नहीं, जीवन की ओर चलिए। अविद्या ही मृत्यु और विद्या ही जीवन है और इसीलिए अपने अविद्या पूर्ण विचारों को त्यागते हुए हृदय में ज्ञान का प्रकाश धारण करिए।

❑ राग, द्वेष, मोह, हर्ष, शोक, अभिमान, क्रोध और आलस्य अज्ञान से उत्पन्न होते हैं। इसलिए इन्हें छोड़ना चाहिए। *—भीष्म*

❑ **लक्ष्ये ब्रह्मणि मानसं दृढतरं संस्थाप्य बाह्येन्द्रियं**
स्वस्थाने विनिवेश्य निश्चलतनुश्चोपेक्ष्य देहस्थितिम्।

—विवेक चूडामणि—३७६

सर्वप्रथम अपने चित्त (मन) को ब्रह्म परमात्मा में दृढ़तापूर्वक स्थिर करके, बाह्य इन्द्रियों को उनके विषयों से हटाकर, उनको केन्द्रों में स्थिर करो। शरीर को निश्चल रखते हुए उसके प्रति निश्चिन्त हो जाओ। इस प्रकार आत्मा और परमात्मा की ऐक्यानुभूति के साथ अहर्निश मन ही मन ब्रह्मानन्द रस का पान करो, अन्यान्य व्यर्थ की बातों से क्या लाभ ?

❑ **आवाछा त पर तत्व शास्त्राधीतिस्तु निष्फला।**
विज्ञातेऽपि परे तत्वे शास्त्राधीतिस्तु निष्फला।।

परमतत्त्व-आत्मतत्त्व को न जाना जा सका तो शास्त्रों का अध्ययन करना निष्फल ही रहा और यदि जानना सम्भव हो सकता तो भी शास्त्राध्ययन करना निष्फल ही होता है, अर्थात् आत्म-ज्ञान हो जाने पर शास्त्राध्ययन की आवश्यकता नहीं रह जाती है।

❑ **सर्वकर्माण्यपि सदा कुर्वाणो मद्व्यपाश्रयः।**
मत्प्रसादादवाप्नोति शाश्वतं पदमव्ययम्।।

—गीता

मेरा आश्रय ग्रहण करने वाला सदा सब कर्म करता हुआ भी मेरी कृपा से शाश्वत मुक्ति पद पाता है।

❑ **कायेन कुरुते पापं मनसा संप्रधार्यते।**
अनृतं जिह्वया चोक्त्वेत्रिविधं कर्म पातकम्।।

असत्य रूप पाप को मानव पहले मन में विचारता है, फिर अन्त में उसे देह द्वारा करता है, अतः मानसिक, वाचिक और कायिक तीन प्रकार के पातक होते हैं।

—वाल्मीकि

❑ **आविर्भूतप्रकाशानामनुपप्लुत चेतसाम्।**
अतीतानागतज्ञानं प्रत्यक्षान्तविशिष्यते।।

—वाक्य पदीय

चित्त, सत और तम से रहित होकर दीप्तिमान होता है और फिर रज को भी त्यागकर स्थिर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हो जाता है, तो भूत और भविष्य की प्रत्येक बात स्पष्ट दिखाई देने लगती है।

❑ **चित्तायत्तमिदं सर्वं जगच्चराचरात्मकम्।**
चित्ताधीनमतो राम ! बन्धोमोक्षावयि स्फुटम्।।

—योगवासिष्ठ

यह समस्त जड़-चेतनात्मक जगत् चित्त के ही आधीन रहता है। हे राम ! इस संसार को बन्धन और मोक्ष पद की प्राप्ति ये दोनों ही चित्त के वश में हैं। यह अपनी जैसी भी स्थिति बना लेता है, वही प्राप्त कर सकता है।

❑ **एकः सम्पननमश्नाति वस्ते वासश्च शोधनम्।**
योऽसंविभज्य भृत्येभयः को नृशंसतरस्ततः।।

जो अपने आश्रितों को बाँटे बिना अकेला ही अच्छा खाता है, अकेला ही अच्छा पहनता है, उससे बढ़कर और क्रूर कौन होगा ?

❑ **कथंचिदुपकारेण कृतेनकेन मुयति।**
न स्यरत्यपकाराणां शतमत्यात्म वत्तया।।

—वाल्मीकि. अयोध्या-४

रामचन्द्र जी किसी के एक ही उपकार को जन्म भर याद रखते थे, पर सैकड़ों अपकारों को भी तत्काल भूल जाते थे।

❑ जड़, रूढ़, निरर्थक, भावशून्य कर्मकाण्डकर्त्ता और पुरोहित दोनों ही ह्रास का कारण बनते हैं, ऐसा उपनिषदों में बार-बार कहा गया है।

—काका कालेलकर

❑ फल और फूल किसी की प्रेरणा के बिना ही अपने समय पर वृक्षों में लग जाते हैं। उसी प्रकार हमारे द्वारा किए गये हर कर्म का फल अनिवार्य रूप से मिलेगा, भले ही यह आज न मिलकर कल मिले। *—वेदव्यास*

❑ दार्शनिक प्लेटो के द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त मौलिक नहीं, वे भारतीय तत्त्व-ज्ञान की प्रतिध्वनि मात्र हैं। *—प्रो. ई. जे. डर्विक*

❑ **पथ्यमौषधसेवा च क्रियते येन रोगिणा।**
आरोग्यसिद्धिर्दृष्टास्य नान्यानुष्ठित कर्मणा।।

—विवेक चूडामणि ५५

पथ्य और औषधि का सेवन करने वाला रोगी ही आरोग्य लाभ प्राप्त करते देखा गया है, न कि किसी और के द्वारा किए हुए (औषधादि सेवन) कर्म से वह नीरोग होता है। इसी प्रकार आत्म-कल्याण के लिए स्वयं ही प्रयास करना होता है।

❑ **प्राणापानव्यानोदानसमाना भवत्यसौ प्राणः।**
स्वयमेव वृत्तिभेदाद्विकृतिभेदात्सुवर्णसलिलादिवत्।।

—विवेक चूडामणि ९७

जिस प्रकार सुवर्ण और जल अनेक कार्यों व रूपों के आधार पर अनेक नामों (कंगन कुण्डलादि, बर्फ, भाप, वृत्ति भेद, कार्य-भेद) से अनेक नामों—प्राण, अपान, व्यान, समान और उदान से जाना जाता है।

❑ **यदा न ज्ञायते मृत्युः कदा कस्य भविष्यति।**
आकस्मिके हि मरणे धृतिं विंदेत कस्तदा।।
परित्यज्य यदा सर्वमेकाकी यास्यसि ध्रुवम्।
तदानीं न तदा कस्मात्तत्पाथेयमिदं शुभम्।।

जबकि यह नहीं जाना जाता है कि यह मृत्यु किस समय में किसकी हो जाएगी तो उस समय में कौन तुझे धीरज प्राप्त करायेगा ?

❑ उस समय तो यहाँ पर ही यह सभी कुछ ठाट-बाट छोड़कर अकेले ही निश्चय रूप से जाएगा। इसलिए उस समय के वास्ते पाथेय के लिए सत्कर्म क्यों नहीं किया करता ?

❑ **ध्यानात्मा साधकेन्द्रो भवति परपुरे शीघ्रगामी मुनीन्द्रः**
सर्वज्ञः सर्वदर्शी सकलहितकरः सर्वशास्त्रार्थवेत्ता।
अद्वैताचारवादी विलसति परमापूर्वसिद्धिप्रसिद्धो दीर्घायुः
सोऽपि कर्त्ता त्रिभुवनभवने संहृतौ पालने च।।

—षट्चक्र निरूपणम् ३४

आज्ञाचक्र को सिद्ध कर लेने वाला दूरगामी बन सकता है, सूक्ष्म रूप धारण कर सकता है, परकाया प्रवेश कर सकता है। सबका हितकारी, शास्त्रों का ज्ञाता, ब्रह्मवेत्ता, प्रसन्नचित्त, सिद्ध विद्याओं का ज्ञाता, दीर्घायु, लोक-व्यवस्था में सहायता देने वाला बनता है।

❑ **यदात्मतत्त्वेन तु ब्रह्मतत्त्वं दीपोपमेनेह युक्तः प्रपश्येत्।**

—श्वेताश्वतरोपनिषद् २। १५

योग साधक आत्मा के द्वारा ही दीपक के समान प्रकाशयुक्त ब्रह्मतत्त्व के दर्शन करता है।

❑ **नीहारधूमार्कानलानिलनां खद्योतविद्युत्स्फटिकशशीनाम्।**
एतानि रूपाणि पुरःसराणि ब्रह्मण्यभिव्यक्तिकराणि योगे।।

—श्वेताश्वतरोपनिषद् २। ११

योग साधक को कुहरा, धुआँ, सूर्य, वायु, अग्नि, जुगनू, बिजली, स्फटिक मणि चन्द्रमा जैसे कई प्रकाश दृश्य दिखाई पड़ते हैं। यह योग की सफलता के चिन्ह हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ जिस प्रकार का प्रकाश सौरमण्डल को प्रकाशित करता है। यह सोम उसी तरह सारे विश्व में आच्छादित है, इन्हें ज्ञान के नेत्रों से देखा जाता है। इसका ध्यान सर्वविद्या सम्पन्न विद्वान बनाता है।

❑ **अष्टाचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या।**
तस्यां हिरण्ययः कोशः स्वर्गो ज्योतिषावृतः।।
यह शरीर आठ चक्रों और नौ द्वारों वाली देवपुरी अयोध्या है, जिसमें सोने का एक ज्योतिस्वरूप एवं स्वर्ग-सा रमणीय प्रकोष्ठ-मस्तिष्क है। *—अथर्व. १०। २। ३१*

❑ **आलोक्य सर्वशास्त्राणि विचार्य च पुनः पुनः।**
इदमेक सुनिष्पन्नं योगशास्त्रं परं मतम्।।
—शिव संहिता १। १७
सम्पूर्ण शास्त्रों पर बार-बार विचार करने के उपरान्त यह तो निश्चित मत निर्धारित हुआ कि एक योग शास्त्र ही सर्वोपरि है।

❑ **मा भवाज्ञो भव ज्ञस्त्वं जहि संसारभावनाम्।**
अनात्मन्यात्मभावेन किमज्ञ इव रोदिषि।।
कस्तवायं जडो मूको देहो मांसमयोऽशुचिः।
यदर्थं सुखदुःखाभ्यामवशः परिभूयसे।।
अहो नु चित्रं यत्सत्यं ब्रह्म तद्विस्मृतं नृणाम्।
तिष्ठतस्तव कार्येषु माऽस्तु रागानुरंजनाम्।।
—महोपनिषद्
अज्ञानी न बनो, नाशवान पदार्थों के लिए इतने उद्विग्न मत होओ, उनके लिए मत बिलखो, यह जड़ हेतु देह से तुम्हारा कोई स्थिर सम्बन्ध नहीं है। यह तो मांस का पिण्ड भर है। घोर अपवित्र की मूल के इस देह-जाल में जकड़े हुए क्यों तड़पते हो ?

❑ **यो वा एतदक्षरं गार्ग्यविदित्वाऽस्मिँल्लोके जुहोति यजते तपस्तप्यते बहूनि वर्षसहस्राण्यन्तवदेवास्य तद्भवति यो वा एतदक्षरं गार्ग्यविदित्वास्माल्लोकात्प्रैति स कृपणोऽथ य एतदक्षरं गार्गि विदित्वास्माल्लोकात्प्रैति स ब्राह्मणः।।**
—बृहदारण्यकोपनिषद् ३। ८। १०
हे गार्गी जो इस ब्रह्म को न जानकर इस जगत में बहुत वर्षों तक होम, यज्ञ या तपस्या करता है, उसका फल अन्त वाला होता है एवं जो अक्षर-ब्रह्म को बिना जाने इस जगत से प्रयाण करता है, वह दीन होता है और जो उसको जानकर इस जगत से प्रस्थान करता है, वह ब्राह्मण (ब्रह्मविद्) होता है।

❑ **यस्मात्त्रयोऽप्याश्रमिणो ज्ञानेनान्नेन चान्वहम्।**
गृहस्थेनैव धार्यन्ते तस्माज्ज्येष्ठाश्रमो गृही।।
—मनु स्मृति ३। ७८
ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ, संन्यासी इन तीनों आश्रमों का पालन गृहस्थ के ही ज्ञान और अन्न से होता है। इसलिए गृहस्थाश्रम ही सबसे बड़ा है।

❑ **अथो खल्वाहुः काममय एवायं पुरुष इति स यथाकामो भवति तत्क्रतुर्भवति यत्क्रतुर्भवति तत्कर्म कुरुते यत्कर्म कुरुते तदभिसम्पद्यते।**
—बृहदारण्यकोपनिषद् ४। ४। ५
यह मनुष्य भावनामय है। जैसी कामना करता है, वैसे ही विचार आने लगते हैं। जैसे विचार उठते हैं वैसा निश्चय करता है। जैसा निश्चय करता है, वैसा काम होने लगता है। जैसे काम करता है, वैसा फल भोगता है।

❑ मनुष्य जो कुछ मन से ध्यान करता है, वही वाणी में प्रकट करता है, वही कर्म में परिणत करता है। जो कुछ कर्म करता है, उसी को प्राप्त होता है।

❑ **"न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः।"**
—कठोपनिषद्
धन की तृष्णा में मत भूलो, क्योंकि धन से मनुष्य कभी तृप्त होने वाला नहीं।

❑ **कुलीनमकुलीनं वा वीरं पुरुषमानिनम्।**
चारित्र्यमेव व्याख्याति शुचिं वा यदि वाऽशुचिम्।।
—वाल्मीकि रामायण
मनुष्य का आचरण ही यह बतलाता है कि वह कुलीन है या अकुलीन, वीर या कायर है, पवित्र है या अपवित्र।

❑ **मातरं पितरं विप्रमाचार्यं चावमन्य वै।**
स पश्यति फलं तस्य प्रेतराजवशं गतः।।
—वाल्मीकि रामायण
जो कोई माता-पिता, ब्राह्मण और आचार्य का अपमान करता है, वह यमराज के यहाँ जाने पर उस पाप का फल भोगता है।

❑ जो मनुष्य सुनकर, खाकर, देखकर, छूकर न तो प्रसन्न होता है और न उदास होता है, उसे जितेन्द्रिय मानना चाहिए।

❑ **मनस्वी म्रियते कामं कार्पण्यं न तु गच्छति।**
अपि निर्वाणमायाति नानलो याति शीतताम्।।
—हितोपदेश
उच्च मनोबल वाले मनस्वी व्यक्ति मर भले ही जाएँ पर कृपणता, कायरता नहीं करते, जैसे अग्नि भले बुझ जाए पर शीतल नहीं होती।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ **दक्षिणावन्तो अमृतं भजन्ते।**
दक्षिणावन्तः प्र तिरन्त आयुः।।

—ऋ. १/ १२५/ ६

दक्षिणा देने वाले दानी अमृत पद पाते हैं। वे ही दीर्घायु होते हैं।

❑ इस विश्व में जो कुछ श्रेष्ठ है, उसकी देवता रक्षा करते हैं।

❑ **बभार राज्यं सहि पुत्र हेतोः,**
पुत्रं कुलार्थं यशसे कुलं तु।
स्वर्गाय शब्दं दिवमात्महेतो,
धर्मार्थमात्मा स्थितिमाचकांक्ष।।

—बुद्धिचरितम् २/ ५३

उसने राज्य का पुत्र के लिए, पुत्र का कुल के लिए, कुल का यश के लिए पालन किया और यश को स्वर्ग के लिए, स्वर्ग को आत्मा के लिए और आत्मा-जीवन की धर्म के लिए आकांक्षा की।

❑ **योऽसाधुभ्योऽर्थमादाय साधुभ्यः संप्रयच्छति।**
स कृत्वा प्लवमात्मानं सन्तारयति तावुभौ।।

—मनुस्मृति ११/ १६

जो दुष्टों का धन हरण कर सत्पात्र को देता है, वह अपने को नाव बनाकर दोनों को पार करता है।

❑ **न भीतो मरणादस्मि केवलं दूषितं यशः।**
विशुद्धस्य हि मे मृत्युः पुत्र जन्म समः किल।।

—मृच्छकटिक

मरने का भय नहीं। भय केवल यह है कि यश दूषित न हो जाए। यदि यश देने वाली मृत्यु हो तो वह पुत्र जन्म के समान आनन्ददायक है।

❑ **भूत्यै जागरणमभूत्यै स्वपनम्।** *—यजु. ३०/ १७*

जागने में वैभव और सोने में दरिद्र मिलता है।

❑ दान द्वारा कृपणता पर विजय प्राप्त करो। शान्ति द्वारा क्रोध पर विजय पाओ। श्रद्धा को जीतो। सत्य से असत्य को पराभूत करो। यही सन्मार्ग है, स्वर्ग की ओर जाओ। प्रकाश की ओर जाओ।

❑ विचारों की शक्ति सर्वोच्च है, ठीक मनोवृत्ति है, ठीक मनोवृत्ति अपनाइए, ठीक से सोचना सृजन करना है। सभी वस्तुओं की प्राप्ति इच्छा द्वारा होती है। हम जैसा होना चाहेंगे, वैसा हो जाएँगे।

—डेल कार्नेगी

❑ तर्क के सहारे मनुष्य ज्ञानवान बनता है। सत्य के सहारे शान्ति पाता है। विवेक के सहारे सुखी बनता है और संयम बरतने पर दीर्घजीवी बनता है।

❑ **येत्राऽवष्टम्भा शरीरस्य आहारः स्व प्रो ब्रह्मचर्यम्।**

—चरक

शरीर के तीन आधार हैं— १. आहार २. विश्राम ३. ब्रह्मचर्य।

❑ **नात्यश्नतस्तु योगोऽस्ति न चैकांतमनश्नतः।**
न चाति स्वप्नशीलस्य जाग्रतो नैव चार्जुन।
युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा।।

—गीता ६/ १६-१७

ज्यादा खाने वाला या भूखा रहने वाला, बहुत सोने वाला, बहुत जागने वाला इस योग को सिद्ध नहीं कर सकता। जिसके आहार, विहार, निद्रा, कर्म आदि सब व्यवहार सम्यक रूप से हैं, ऐसे पुरुष को योग की सिद्धि होती है।

❑ **भूतं भव्यं च प्रत्यक्षं वेत्ति सर्वं सकारणम्।**
ध्यानमात्रेण सर्वेषां भूतानां च मनोगतम्।।

योगी ध्यान मात्र से भूत, वर्तमान, भविष्य की घटनाओं को कारण सहित जान लेता है तथा सभी प्राणियों के मनोगत भावों को भी जान लेता है।

❑ **अन्तर्लीनमना योगी जगत्सर्वं प्रपश्यति।**
सर्वगुप्तपदार्थानां प्रत्यक्षत्वं च जायते।।

योगी अन्तर्लीन मन द्वारा विश्व के गुप्त पदार्थों एवं रहस्यों को प्रत्यक्षवत देख और जान लेता है।

❑ **यथा वा चित्तसामर्थ्यं जायते योगिनो ध्रुवम्।**
दूरश्रुतिर्दूरदृष्टिः क्षणाद्दूरागमस्तथा।।
वाक्सिद्धिः कामरूपत्वमदृश्यकरणी तथा।

—योगतत्वोपनिषद्

जैसे-जैसे चित्त की सामर्थ्य बढ़ती है, वैसे ही दूरश्रवण, दूरदृष्टि, दूरगमन, वाकसिद्धि, कामनापूर्ति आदि अनेक दिव्य सिद्धियाँ मिलती चली जाती हैं।

❑ **ब्रह्मभूतः स एवेह योगी चाऽत्मरतोऽमलः।**
विषयेन्द्रिय रूपोगात्केचियोगं वदन्ति वै।।

आत्मा को निर्मल बनाकर, इन्द्रियों का संयम कर उसे परम्परागत के साथ मिला देने की प्रक्रिया का नाम योग है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ योगाभ्यास आत्मा का विषय है। इसलिए सिद्धियाँ शरीर को प्राप्त नहीं होतीं, बल्कि आत्मा को होती हैं। *—स्वामी दयानन्द सरस्वती*

❑ योगी पुरुष आत्म-शुद्धि के लिए शरीर, मन, बुद्धि और केवल इन्द्रियों से भी कर्म करते हैं, परन्तु वे इन कर्मों को आसक्ति छोड़कर ही करते हैं। *—गीता*

❑ **न योगो नभसः पृष्ठे न भूमौ न रसातले।**
ऐक्यं जीवात्मनोराहुर्योगं योगविशारदाः।।

—देवी भागवत

योग न आकाश में है, न पृथ्वी में और न रसातल में। योगतत्त्व के ज्ञाता जीवात्मा तथा परमात्मा की एकता को ही योग कहते हैं।

❑ **वांछितार्थफलंसौख्यमिंद्रियाणाञ्च मारणम्।**
एतदुक्तानि सर्वाणि योगारूढ़स्य योगिनः।।

—शिव संहिता ४। ३४

अभीष्ट प्रयोजनों की प्राप्ति, सुख तथा इन्द्रिय-निग्रह ये सब सफलताएँ योग साधक को मिलती हैं।

❑ **जिह्वाप्रवेशसंभूतवह्निनोत्पादितः खलु।**
चन्द्रात्स्रवति यः सारः स स्यादमरवारुणी।।
घुम्बन्ती यदि लम्बिकाग्रमनिशं जिह्वारसस्यन्दिनी।
सक्षाराकटुकाम्लतुग्धसदृशी मध्वाज्यतुल्य तथा।।

—हठयोग प्रदीपिका ३.४९-५०

जिह्वा को उल्टी करके गले में जहाँ कौवा लटकता है वहाँ लगावें। ऐसा करने से मस्तिष्क में जो चन्द्रमा है, उसका रस गर्मी से पिघल के जिह्वा पर आता है यही अमर वारुणी या सोमरस है। इसका स्वाद कभी नमकीन, कभी कड़ुआ, खट्टा, चरपरा और कभी दूध जैसा, कभी मीठा शहद-सा, घृत जैसा चिकना-सा जान पड़ता है।

❑ **योगहीनं कथंज्ञानं मोक्षदं भवतीह भोः।**
योगोऽपि ज्ञानहीनस्तु न क्षमो मोक्षकर्मणि।।
तस्मात्ज्ञानं च योगं च मुमुक्षुर्दृढमभ्यसेत्।

—योगशिखोपनिषद्

योगहीन ज्ञान और ज्ञानहीन योग कभी भी मोक्षप्रद नहीं होता। इसलिए ज्ञान और योग इन दोनों का ही मुमुक्षुजन को दृढ़तापूर्वक अभ्यास करना चाहिए।

❑ **आमं कुम्भमिवाम्भस्थो जीर्यमाणः सदा घटः।**
योगानलेन सदंस्य घटशुद्धिः समाचरेत्।।

—घेरण्ड संहिता २। ८

जैसे कच्ची मिट्टी का घड़ा जल भर देने से गलकर नष्ट नहीं होता, वैसे ही योगाग्नि में शरीर को पका लेने से काया शुद्ध, परिपक्व हो जाती है।

❑ **सदा शिवोक्तानि सपादलक्षलयावधानानि वसन्ति लोकाः।**
नादानुसन्धानसमाधिमेकम् मन्यामहे मान्यतमम् लयानाम्।।

—योगतारावली

भगवान शिव ने मन को लय करने की अगणित साधनाएँ बताई हैं, पर उन सबमें नादानुसंधान सबसे सरल और श्रेष्ठ है।

❑ **सर्वचिन्तां परित्यज्य सावधानेन चेतसा।**
नाद एवानुसन्धेयो योगसाम्राज्यमिच्छता।।

—योगतारावली

यदि योग क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने की आकांक्षा हो तो सब ओर से मन हटाकर नाद साधना में तत्पर होना चाहिए।

❑ **यथाधानिमिषाःस्थूलाजालंछित्त्वापुनर्जलम्।**
प्राप्नुवन्तितथायोगास्तत्पदंवीतकल्मषाः।।
तथैववागुरांछित्त्वाबलवन्तोयथामृगाः।
प्राप्नुवुर्विमलंमार्गंविमुक्ताःसर्वबन्धनैः।।
लोभजानितथाराजनूबन्धनानिबलान्विताः।
छित्त्वायोगाःपरंमार्गंगच्छन्तिविमलंशिवम्।।
सएवचयदाजन्चह्निर्जातबलःपुनः।
समीरणगतःक्षिप्रंदहेत्कृत्स्नांमहीमपि।
तद्वज्ज्ञातबलोयोगीदीप्ततेजामहाबलः।
अन्तकालइवादित्यःकृत्स्नंसशोषयेज्जगत्।।
तदेवचमहास्रोतोविष्टम्भयतिवारणः।
तद्वयोगबलंलब्ध्वाव्यूहतेविषयान्बहून्।।
नयमोनान्तकःक्रुद्धोनमृत्युर्भीमविक्रमः।
ईशतेनृपतेसर्वंयोगस्यामिततेजसः।।

—महाभारत शान्ति. ३००

जैसे मगरमच्छ जाल को काटकर फिर जल में चले जाते हैं, उसी प्रकार योगीजन पाप-बन्धन से छूटकर उस ब्रह्मपद को प्राप्त हो जाते हैं। जैसे बलवान सिंह आदि जांगलिक पशु पिंजरे आदि पाशबन्धनों को तोड़कर सर्व-बन्धनों से छूटकर विशाल मार्ग को प्राप्त हो जाते हैं, वैसे ही हे राजन् ! बलवान, आत्मबल वाले योगीजन लोभ वाले बन्धनों को काटकर विरल ऊँचे कल्याण मार्ग को प्राप्त करते हैं। अग्नि जैसे बढ़ी हुई वायु से भड़काई हुई सारी पृथ्वी को भी शीघ्र जला देती है। इसी प्रकार आत्मबल वाला योगी दीप्त तेज वाली अग्नि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की भाँति, अन्त करने वाले सूर्य की भाँति जगत को सुख देता है या जैसे स्रोत को बाँध या हाथी रोक देता है, उसी प्रकार योगी भी योगबल प्राप्त करके बहुत विषयों को रोक देता है। हे राजन् अतुल बल वाले योगी के ऊपर उसकी भावना पर यम, अन्तक, भयंकर मृत्यु क्रुद्ध हुआ स्वामित्व नहीं कर सकता है।

❑ **अलौल्यमारोग्यमनिष्ठुरत्वं गन्धःशु भोमूत्रपुरीषमल्पम्।**
कान्तिः प्रसादः स्वरसौम्यता च योगप्रवृत्तेः प्रथम हि चिह्नम्।।
अनुरागं जनो याति परोक्षेगुणकीर्त्तनेम्।
नविध्यति च सत्त्वानि सिद्धेर्लक्षणमुत्तमम्।।

—मार्कण्डेय पुराण

चंचलता का दूर हो जाना, आरोग्य, सुहृदयता, देह से सुगन्ध उठना, मल-मूत्र में न्यूनता, चेहरे पर कान्ति, प्रसन्नता, वाणी में मधुरता, यह सब योग की प्रगति के चिन्ह हैं।

जिस अवस्था में मनुष्य की पीठ पीछे प्रशंसा होने लगे। सब कोई उससे निर्भय रहे। यही योग सिद्धि के लक्षण हैं।

❑ **पवनो बध्यते येन मनस्तेनैव बध्यते।**
मनश्च बध्यते येन पवनस्तेन बध्यते।।
मनो यत्र विलीयेत पवनस्तत्र लीयते।
पवनो लीयते यत्रमनस्तत्र विलीयते।।

—हठयोग प्रदीपिका

(प्राणायाम द्वारा) प्राणवायु को अधीन कर लेने वाला मनुष्य अपने मन को भी अपने अधीन कर सकता है। इसी प्रकार अपने मन को अधीन कर लेने वाला प्राणवायु को भी अपने अधीन कर लेता है। जिस स्थान (आधार-चक्र) पर मन का लय होता है, उसी स्थान में प्राण-वायु का भी लय हो जाता है। इसी भाँति जिस स्थान में प्राणवायु का लय होता है, उसी आधार चक्र संस्थान में मन भी आप ही आप लीन हो जाता है।

❑ **नास्ति ध्यानं बिना ज्ञानं नास्ति ध्यानमयोगिनः।**
ध्यानं ज्ञानं च यस्यास्ति तीर्णस्तेन भवार्णवः।।
ज्ञानं प्रसन्नमेकाग्रमशेषोपाधिवर्ज्जितम्।
योगाभ्यासेन युक्तस्य योगिनस्त्वेव सिध्यति।।
प्रक्षीणाशेषपापानां ज्ञाने ध्याने भवेन्मनिः।
पापोपहतबुद्धीनां तद्वार्तापि सुदुर्लभा।।
यथावद्धिर्महादीप्तः शुष्कमार्द्रं च निदहेत्।
तथा शुभाशुभुं कर्म ध्यानाग्निर्दहते क्षणात्।।

—शिव पुराण

ध्यान ही ज्ञान मुख्य साधन है और योग के बिना ध्यान सिद्ध नहीं हो सकता। इसलिए योग द्वारा ध्यान का प्राप्त करना सर्वोपरि कर्त्तव्य है। जो ज्ञान और ध्यान दोनों को प्राप्त कर लेता है, वह इस संसार-चक्र से निश्चय ही मुक्त हो जाता है। जिनके पाप क्षीण हो जाते हैं, उन्हीं की रुचि ज्ञान और ध्यान की ओर जाती है अन्यथा पापी लोगों को तो इस तरह की बातें भी अच्छी नहीं लगतीं। जैसे प्रज्वलित अग्नि गीले-सूखे सब पदार्थों को भस्म कर देती है, उसी प्रकार ध्यान की अग्नि भी कर्मों को शीघ्र ही नष्ट कर देती है।

❑ **न संस्तरोऽश्मा न तृणं न मेदिनी,**
विधानतो नो फलको विनिर्मितः।
यतो निरस्ताक्षकषायविद्विषः,
सुधीभिरात्मैव सुनिर्मली मतः।।
न संस्तरो भद्रं समाधिसाधनं,
न लोक पूजा न च सन्थमिलनम्।
यतस्ततोऽध्यात्मरतो भवार्निशं,
विमुच्य सर्वामपि बाह्यवासनम्।।

—अमितगति

ध्यान करने के लिए पाषाण की शिला, कुशा या पृथ्वी के आसन की आवश्यकता नहीं है, विद्वानों के लिए वह आत्मा ही स्वयं पवित्र आसन है, जिसने क्रोध आदि कषाय (कुवृत्ति) व इन्द्रिय-विषय-वासना रूपी शत्रु का संहार कर दिया है। हे मित्र ! आत्म-ध्यान के लिए न किसी आसन की, न लोकपूजा की और न किसी सभा-सोसायटी की आवश्यकता है। जिस किसी प्रकार अपने हृदय से बाह्य वस्तुओं की वासना को निकालकर अपने ही स्वरूप में प्रतिक्षण लवलीन रहे, यही ध्यान एवं समाधि है।

❑ **न तस्य रोगो न जरा न मृत्युः**
प्राप्तस्य योगाग्निमयं शरीरम्।।

—श्वेताश्वतरोपनिषद् २.१२

जिसने योगाभ्यास की शक्ति से अपने को खूब तपा लिया, उसे फिर न रोग सताता है और न बुढ़ापा। मृत्यु भी उसके पास आने से डरती है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ **प्रयत्नाद्यतमानस्तु योगी संशुद्धकिल्बिषः।**
अनेकजन्मसंसिद्धस्ततो याति परां गतिम्।।

—गीता

योगी लगातार प्रयत्न करता हुआ धीरे-धीरे सारे पापों को धोकर अनेक जन्मों की सिद्धि के अनन्तर परमगति को पा जाता है।

❑ **ध्यायेद्योगी यदा मन्त्रं कम्पोऽथ जायते ध्रुवम्।**

—यो. शि.

शरीर में कम्प और रोमांच होने का कारण यह है कि उस मन्त्र की शक्ति से साधक की प्राण-शक्ति का उत्थान होने लगता है और उसके प्राण उठकर परमात्मा में लीन हो जाते हैं।

❑ **चित्तादिसर्वभावेषु ब्रह्मत्वेनैव भावनात्।**
निरोधः सर्ववृत्तीनां प्राणायामः स उच्यते।।

—अपरोक्षानुभूति— ११८

चित्त-मन आदि के समस्त भावों में ब्रह्मरूप से ही भावना करने से सम्पूर्ण चित्तवृत्तियों का निरोध हो जाता है। वही प्राणायाम कहा जाता है।

❑ **उत्साहात्साहसाद्धैर्यात्तत्वर्याज्ञानाच्च निश्चयात्।**
जनसंगपरित्यागात्षड्भिर्योगः प्रसिद्ध्यति।

—हठयोग प्रदीपिका १। १६

योग सिद्धि के लिए ये ६ बातें आवश्यक हैं—प्रचण्ड उत्साह, प्रखर साहस, अविचल धैर्य, तत्त्व-ज्ञान, निश्चय तथा भीड-भाड़ के प्रति आकर्षण का, लोगों में आसक्ति का परित्याग।

❑ **द्वौ क्रमौ चित्तनाशाय योगो ज्ञानं च राघव।**
योगश्चित्तनिरोधो हि ज्ञानं सम्यगवेक्षणम्।।

—योगवासिष्ठ

मन को वश में करने के लिए योगमार्ग अथवा ज्ञानमार्ग का अवलम्बन लेना चाहिए। चित्त की वृत्तियों के निरोध को योग और ठीक प्रकार से आत्म-अनात्मा को जानना 'ज्ञान' कहलाता है।

❑ **नास्ति ध्यानमयुक्तस्य प्रज्ञा नास्ति अध्यायतः।**
यस्मिन् ध्यानं च प्रज्ञा च तस्य निर्वाणमन्तिके।।

—योग चूडामणि

विवेक जागरण के बिना ध्यान नहीं-ध्यान के बिना विवेक जागरण नहीं। ध्यान और प्रज्ञा के समन्वय से ही महानिर्वाण प्राप्त होता है।

❑ **भयं क्रोधमथालस्यमतिस्वप्नातिजागरम्।**
अत्याहारमनाहारं नित्यं योगी विवर्जयेत्।।
अनेन विधिना सम्यक्नित्यमभ्यसतः क्रमात्।
स्वयमुत्पद्यते ज्ञानं त्रिभिर्मासैर्न संशयः।।

—अमृतनादोपनिषद् २७-२८

योग साधक भय, अधिक निद्रा, अधिक भोजन, अधिक जागरण, निराहार रहना और क्रोध करना छोड़ दे। नित्य-नियमित रूप से साधनारत योग-साधक ही ज्ञान के प्रकाश को प्राप्त करता है।

❑ सब इन्द्रियों को वश में रखकर, सर्वत्र समत्व का पालन करके जो दृढ़ अचल और अचिन्त्य, सर्वव्यापी, अवर्णनीय, अविनाशी स्वरूप की उपासना करते हैं, वे सब प्राणियों के हित में लगे हुए सुख ही पाते हैं। *—भगवान श्रीकृष्ण*

❑ **यथा सुवर्णं पुटपाकशोधितं**
त्यक्त्वा मलं स्वात्मगुणं समृच्छति।
तथा मनः सत्त्वरजस्तमोमलं
ध्यानेन सन्त्यज्य समेति तत्त्वम्।।

—विवेक चूडामणि ३६२

जिस प्रकार अग्नि में पुटपाक विधि से शुद्ध किया हुआ सुवर्ण मलिनता को त्याग कर अपने स्वाभाविक स्वरूप को प्राप्त कर लेता है, उसी प्रकार मन ध्यान के द्वारा मलिनता (सत-रज-तम रूपी) को त्यागकर आत्म-तत्त्व को प्राप्त कर लेता है।

❑ **सीसं जहाँ सरीरस्य जहाँ मूलं दुमस्स य।**
सव्वस्स साहुधम्मस्स तहा झाणं विधीयते।।

—इसिभासियाई २२। २३

आत्म-शोधन की साधना में ध्यान का ऐसा ही प्रमुख स्थान है, जैसे शरीर में मस्तिष्क तथा वृक्ष में उसकी जड़ का।

❑ परमात्मा व्याख्यान से नहीं मिलता, न बुद्धि से और न ज्यादा पढ़ने-सुनने से। बलहीन भी उसे नहीं पा सकते, आलसी भी नहीं। तप और संन्यास के बाहरी चिन्ह ही धारण करने वाले पुरुष भी उसे नहीं पा सकते। त्याग आदि उपायों द्वारा जो लगातार साधना करते रहते हैं, परमात्मा उन्हीं को मिलता है। *—मुण्डकोपनिषद्*

❑ हे दृढ़ बनाने वाले ! मुझे ऐसा दृढ़ बना कि सब प्राणी मित्र की दृष्टि से देखें। मैं स्वयं सब प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखता हूँ और चाहता हूँ कि हम सब आपस में एक-दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखें।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ मनुष्य समाज की सबसे मूल्यवान सम्पत्ति सौम्यता है। सौम्यता का आधार ज्ञान है। ज्ञान को उज्ज्वल रखने का मुख्य साधन है—आचरण। इसलिए श्रुति कहती है उसकी चर्चा, उसका विस्तार, स्वाध्याय करो, प्रवचन करो। सत्य, तप, दम, शम, अग्निहोत्र, अतिथि सेवा, सन्तानोन्नति करो।

❑ **नाश्नन्ति दादुराः शीते, फणिनः पावनाशनाः।**
कूर्माश्चैवांगगाप्रारो दृष्टान्ता योगिना यतः।।
शीतकाल में मेढ़क कुछ भी नहीं खाते, साँप वायु सेवन करके रह जाते हैं, कछुए अंग छिपाए पड़े रहते हैं। योगी भी ऐसा कर सकते हैं।

❑ **तक्षकस्य विषं दन्ते मक्षिकाया विषं शिरः।**
वृश्चिकस्य विषं पुच्छे सर्वांगे दुर्जनो विषम्।।
साँप के दाँत में विष होता है और मक्खी के सिर में विष होता है। बिच्छू की पूँछ में विष होता है, किन्तु दुर्जन के तो सम्पूर्ण अंगों में विष रहता है।

❑ **आत्मैव यदि नात्मानमाहितेभ्या निवारयेत्।**
कोऽन्यो हितकरस्तस्माद्य एनं विनिवारयेत्।।
यदि अपने आप ही अपने को कुमार्ग से नहीं हटाया तो और कौन अपने से बढ़कर हितकारी है जो हटा सकेगा।

❑ **चिन्तनेनैधते चिन्ता त्विन्धनेनेव पावकः।**
नश्यत्यचिन्तनेनैव विनेन्धनमिवानलः।।
ईंधन से जैसे अग्नि बढ़ती है, ऐसे ही सोचने से चिन्ता बढ़ती है। न सोचने से चिन्ता वैसे ही नष्ट भी हो जाती है।

❑ **परस्वानां च हरणं परदाराभिमर्शनम्।**
सुहृदामितिशङ्का च त्रयो दोषाः क्षयावहाः।।
दूसरों के धन का अपहरण, दूसरों की स्त्रियों के साथ अनुचित सम्बन्ध और मित्रों के प्रति अति शंका—ये तीन दोष मनुष्य का नाश कर देते हैं।

❑ **अयं विश्वानि तिष्ठति पुनानो भुवनोपरि।**
सोमो देवो न सूर्यः।।
—साम. ७५७
यह सोमरस सूर्य की भाँति समस्त भुवनों से ऊपर स्थित होकर संसार को पवित्र करते हैं।

❑ **सं ज्योतिषा अभूभेति सं देवैर भूमेत्ये वैतदाह।**
—श. १।६।३।१४
हम उस परम ज्योति में अपनी ज्योति मिलाकर ही देवताओं की पंक्ति में बैठ सकने योग्य बनें।

❑ **खादते मोदते नित्यं शुनकः शूकरः खरः।**
तेषामेषा को विशेषो वृत्तिर्येषा तु तादृशी।।
खाते और मौज करते तो कुत्ते, शूकर और गधे भी हैं, यदि मनुष्य की भी यही वृत्ति रहे तो फिर मनुष्य और पशु में क्या अन्तर रहा ?

❑ **सर्वनाशे समुत्पन्नेऽर्धं त्यजति पंडितः।**
सर्वनाश दिखाई पड़ने पर बुद्धिमान लोग आधा छोड़ देते हैं।

❑ **अयशः प्राप्यते येनयेन धापगतिर्भवेत्।**
स्वर्गाच्च भ्रश्यते येन तत्कर्म न समाचरेत्।।
जिसके करने से अयश प्राप्त हो तथा जिस कर्म से बुरी गति हो और जिस कार्य से स्वर्ग से भ्रष्ट हो उस कर्म को कभी नहीं करना चाहिए।

❑ **न श्रेयः सततं तेजो, न नित्यं श्रेयसी क्षमा।**
तस्मान्नित्यं क्षमा तात, पण्डितैरपवादिता।।
न सदा क्रोध ही कल्याणकर है, न निरन्तर क्षमा ही, इसलिए आचार्यों ने निरन्तर क्षमा के लिए अपवादों की, विशेष अवसरों के लिए विशेष नियमों की रचना की है।

❑ **द्वे कर्मणां नरः कुर्वन् अस्मिंल्लोके विरोचते।**
अब्रुवन् परुषं किंचद् असतोऽनर्चयस्तथा।।
दो काम करने वाले पुरुषों की ही इस संसार में परम प्रतिष्ठा होती है। जो कभी भूलकर भी कठोर या अप्रिय वचन नहीं बोलता और न दुष्ट की पूजा या सत्कार करता है।

❑ **अनन्तपारं बहुवेदशास्त्रं स्वल्पं तथायुर्बहवश्च विघ्नाः।**
सारं ततो ग्राह्यमपास्य फल्गु हंसो यथा क्षीर मिवाम्बुध्यात्।।
वेद व शास्त्र अपार हैं, मनुष्य की आयु थोड़ी है और उसमें अनेकों विघ्न भी उपस्थित होते रहते हैं। अतएव नीर-क्षीर विवेकी हंस के समान व्यर्थ-विस्तार को त्याग कर उपयोगी-सार-तत्त्व को ही ग्रहण करना चाहिए।

❑ **अश्वः शस्त्रं शास्त्रं वीणा वाणी नरश्च नारी च।**
पुरुषविशेषं प्राप्ता भवन्ति अयोग्या अयोग्याश्च।।
घोड़ा हो, शस्त्र हो या शास्त्र हो, वीणा हो अथवा वाणी हो, नर हो अथवा नारी हो, ये सभी व्यक्ति विशेष को प्राप्त होने पर (उस व्यक्ति के अपने गुण-स्वभाव-सामर्थ्य-प्रवृत्ति के अनुसार) योग्य या अयोग्य बन जाते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ **मुहूर्तमपि जीवेत नरः शुक्लेन कर्मणा।**
न कल्पमपि कृष्णेन लोकद्वयविरोधिना।।
मनुष्य यदि श्रेष्ठ पुण्य कर्म करता हुआ मुहूर्त के लिए भी जीता है, तो वह श्रेष्ठ है, किन्तु यदि पाप-कर्म करता हुआ (जो कि दोनों लोकों के विरोधी हैं) एक कल्प तक भी जीवित रहता है, तो यह अच्छा नहीं क्योंकि पाप-कर्म करके जीने से मरना भला है।

❑ **नहि वैरेण वैराणि शाम्यन्तीह कदाचन।**
अवैरेण च शाम्यन्ति एष धर्मः सनातनः।।
द्वेषी के साथ सदा द्वेष-भाव बनाये रखने से द्वेष कभी शान्त नहीं होता है। बैर का त्याग कर देने ही से बैर शान्त हुआ करता है।

❑ **चित्तोन्मेषोनिमेषाभ्यां संसारस्योदयक्षयो।**
वासनाप्राणसंरोधादनिमेषं मनः कुरु।।
चित्त (मन) के उदय और अस्त से संसार का उदय और अस्त होता है। अतः वासना और प्राण का निरोध करके मन का निरोध करें।

❑ **भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमैर्नवाम्बुभिर्भूरिविलम्बिनो घनाः।।**
अनुद्धताः सत्पुरुषाः समृद्धिभिः।
स्वभाव एवैष परोपकारिणम्।।
जिस प्रकार फल होने पर वृक्ष नम्र हो जाते हैं नवीन जल भरने से मेघ झुक जाता है, वैसे ही सत्पुरुष लोग भी सम्पत्ति पाकर उद्धत नहीं होते, बल्कि अधिक नम्र हो जाते हैं। सारांश यह कि परोपकारी जीवों का यह स्वभाव ही होता है।

❑ **युध्यन्ते पक्षिपशवः पठन्ति शुकसारिकाः।**
दातुं शक्नोति यो दानं स शूरः स च पंडितः।।
लड़ते तो पशु-पक्षी भी हैं और पढ़ते तो तोता-मैना भी हैं, इसलिए केवल शास्त्रार्थ या पठन-पाठन की योग्यता से कोई शूरवीर नहीं होता। जो दान दे सकता है, अपनी शक्तियों को परमार्थ में लगा सकता है, वही शूर है और वही पंडित है।

❑ **चलत्येकेन पादेन तिष्ठत्येकेन पण्डितः।**
नासमीक्ष्य परं स्थानं पूर्वमायतनं त्यजेत्।।
बुद्धिमान् पुरुष एक पैर आगे रखता है, परन्तु दूसरा पैर पीछे जमाये रहता है। जब तक दूसरे स्थान की छान-बीन अच्छी तरह नहीं कर लेता, तब तक वह पहले स्थान को नहीं त्यागता।

❑ **प्रायः सुकृतिनामर्थे देवायान्ति सहायताम्।**
अपन्थानं तु गच्छन्तं सीदतोऽपि विमुञ्चति।।
अच्छे काम करने वाले की देवता भी सहायता करते हैं और कुपथ पर चलने वालों को सहोदर भाई भी छोड़ देते हैं।

❑ **सौजन्यधन्यजनुषः पुरुषाः परेषां**
दोषानुपास्य गुणमेव गवेषयन्ति।
त्वक्त्वा भुजंगमविषाणि पटीरगर्भात्
सौरभ्यमेव पवनाः परिवाहयन्ति।।
वे सज्जन धन्य हैं जो अन्य लोगों के दोषों की उपेक्षा करके उनके गुणों को ही खोजते हैं। चन्दन के वृक्ष पर लिपटे हुए सर्पों के विष को ग्रहण न करके वायु उसकी सुगन्ध को ही सर्वत्र प्रसारित करती है।

❑ **अधोऽधः पश्यतः कस्य, महिमा नोपचीयते।**
उपर्युपरि पश्यन्तः सर्व एवं दरिद्रति।।
अपने से नीचे वालों को देखने से मनुष्य अपने को महान अनुभव कर सकता है, पर यदि ऊपर वालों को देखेगा तो अपने को दीन-दुःखी ही समझेगा।

❑ **उत्सवे व्यसने चैव दुर्भिक्षे राष्ट्रविप्लवे।**
राजद्वारे श्मशाने च यस्तिष्ठति स बान्धवः।।
उत्सव में, व्यसन में, दुर्भिक्ष में, गदर के समय, कचहरी में और श्मशान में जो साथ है, वही बांधव है।

❑ **प्रियाश्च भार्या प्रियवादिनी च।**
वश्यश्च पुत्रोऽर्थकरी च विद्या।।
ये बातें सुख देने वाली होती हैं—नित्य धन लाभ, नीरोगता, प्यारी और मीठा बोलने वाली स्त्री, आज्ञाकारी पुत्र और अर्थकारी विद्या।

❑ **दानं, प्रवाक्यमहिरं ज्ञानमगर्व क्षमान्वितं शौर्यम्।**
वित्तं त्यागानियुक्त दुर्लभमेतच्चतुर्भद्रम्।।
मधुर वाणी के साथ दान, अहंकाररहित दान, क्षमा-युक्त वीरता और त्याग (दान) में नियुक्त धन ये चारों दुर्लभ हैं।

❑ **"सर्व परवशं दुःखं सर्वमात्मवशं सुखम्"।**
आत्मवशता सुख है, परवशता दुःख। अतः प्रकृति के उपचार सीखकर हमें से प्रत्येक अपना चिकित्सक स्वयं बन सकता है। अतः इस शास्त्र के सिद्धान्तों का स्वयं ज्ञान प्राप्त कीजिये और प्रकृति के उपचार सीखकर उनका प्रयोग दैनिक जीवन में कीजिए।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ **येनैकादशसंख्यानि यन्त्रितानीन्द्रियाणि वै।**
सतीर्थफलमाप्नोति स्यन्येभ्यः क्लेशभाग्भवेत्।
जिसने अपनी ग्यारह इन्द्रियों को (५—कर्मेन्द्रिय, ५—ज्ञानेन्द्रिय तथा १—मन) वश में कर लिया है, वही तीर्थ का फल पाता है, दूसरे अजितेन्द्रिय मनुष्य तो केवल क्लेश के भागी होते हैं।

❑ **सर्वेषामुत्तमस्थानां सर्वासां थिर सम्पदाम्।**
स्वमनो निग्रहोभूमिर्भूमिः सस्यश्रियामिव।।
समस्त उत्तम परिस्थितियाँ और सम्पूर्ण श्रेय चिरस्थायिनी सम्पदाएँ केवल अपने मन के निग्रह से इसी प्रकार प्राप्त होती हैं, जैसे अच्छी भूमि से सब उत्तम अन्न प्राप्त होते हैं।

❑ **गेहे गेहोपशान्तस्य विजनं दूर काननम्।**
अशान्तस्याप्यखानि विजना सजनापुरी।।
शान्त मन वाले के लिए घर ही निर्जन वन है और अशान्त व्यक्ति के लिए निर्जन वन भी कोलाहलपूर्ण है।

❑ **सर्वत्यागश्च निर्वाणं निर्वाणार्थं च मे मनः।**
त्यक्तव्यं चेन्मया सर्वं वरं सत्वेऽनु दीयताम्।।
मेरा मन मोक्ष चाहता है। मोक्ष क्या है ? सर्वस्व का त्याग ही मोक्ष है। हे मन ! यदि एक दिन यहाँ सब कुछ को छोड़कर ही चले जाना है तो जो कुछ भी तेरे पास है, उसे अभी निज कल्याण के लिए क्यों नहीं दे दिया जाए ? जिससे सहज ही में मोक्ष प्राप्त हो जाए।

❑ **कलना सर्वजन्तूनां विज्ञानेन शमेन च।**
प्रबुद्धा ब्रह्मनामेति भ्रमतीरथ जगत्।।
ज्ञान और शम के द्वारा ही ब्रह्मस्वरूपता को प्राप्त हो जाता है। इनके अभाव में वह इस संसार में भटकता रहता है।

❑ **यथा दीपो निवातस्थो नेङ्गते सोपमा स्मृता।**
योगिनी यतचित्तस्य पुञ्जयो योगमात्मनः।।
जिस प्रकार वायुरहित स्थान-स्थित-दीपक चलायमान नहीं होता, वही स्थिति परमात्मा के ध्यान द्वारा योगी के जीते हुए चित्त की होती है।

❑ **सदेव सोम्येदमग्र आसीत्। तन्नित्यमुक्तमविक्रियं सत्यज्ञानानन्दं परिपूर्णं सनातनमेकमेवाद्वितीयं ब्रह्म।।**
तस्मिन्नुमरुशुक्तिकास्थाणुस्फटिकादौ जलरौप्यपुरुषरेखा-दिवल्लोहितशुक्लकृष्णगुणमयी गुणसाम्यनिर्वाच्या मूलप्रकृतिरासीत्। तत्प्रतिबिम्बितं यत्तत्साक्षिचैतन्यमासीत्।।
हे पगले ! पहले केवल एक ही तत्त्व था। वह नित्य मुक्त, अधिकारी, ज्ञानरूप चैतन्य और आनन्द से परिपूर्ण था, वही ब्रह्म है। उससे लाल, श्वेत, कृष्ण वर्ण की तीन प्रकाश किरणों या गुण वाली प्रकृति उत्पन्न हुई। यह ऐसा था जैसे सीपी में मोती, स्थाणु में पुरुष और मणि में रेखाएँ होती हैं। तीन गुणों से बना हुआ साक्षी भी चैतन्य हुआ।

❑ **स होवाच बालाकिर्य एवैष छायापुरुष-स्तमेवाहमुपास इति तं होवाच बालाकिर्य एवैष शारीरः पुरुषस्तमेवाहमुपास इति स होवाच बालाकिर्य एवैष प्राज्ञ आत्मा येनैतत् पुरुषः सुप्तः स्वप्नयया चरति तमेवाहमुपास इति।**
—कौषीतिकि. २.१४-१
देहधारी के साथ जो छाया रहती है, उस छाया पुरुष की ब्रह्म रूप उपासना करता हूँ। यह जो पुरुष शरीर में निवास करता है, मैं उसे ब्रह्म मानकर उपासना करता हूँ।

❑ **पठतो नास्ति मूर्खत्वं जपतो नास्ति पातकम्।**
मौनिनः कलहो नास्ति न भयं चास्ति जाग्रतः।।
जो निरन्तर अध्ययनशील होता है उसमें मूर्खता नहीं रहती है। जो बराबर जप करता रहता है, उसमें कोई भी पातक नहीं रह सकता है। जो जागता है, उसे किसी का भी भय नहीं हो सकता है। जो मौन धारण करने वाला होता है, उससे किसी का भी कलह नहीं होता है।

❑ **यो यमर्थं प्रार्थयते यदर्थं घेहते क्रमात्।**
अवश्यं तदवाप्नोति न चेच्छान्तोनिवर्तते।।
जो जिस वस्तु की प्राप्ति के लिए इच्छा करे और उसके लिए क्रमपूर्वक वैसा ही प्रयत्न भी करे तो उसकी प्राप्ति अवश्य ही हो जाती है, यदि अपने आरब्ध प्रयत्न को बीच में ही न छोड़ दे।

❑ **को न याति वशं लो जोके मुखे पिण्डेन पूरितः।**
मृदंगो मुखलेपेन करोति मधुरध्वनिम्।।
मुख में पिण्ड अर्थात् भोजन देने से संसार में कौन वश में नहीं हो जाता, खंबक भी मुख पर आटे का लेप करने से मधुर शब्द करने लगता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ **धनिनाऽपि निरुन्मादा युवानोऽपि च चंचलाः।**
प्रभवोऽप्यप्रमत्तास्ते महामहिमशालिनः।।
बड़ी महिमा वाले उत्तम पुरुष धनी होने पर उन्मत्त युवावस्था में चंचल और प्रभुता पाने पर प्रमादी नहीं होते।

❑ **यत्र विद्वज्जनो नास्ति श्लाघ्यस्तत्राल्पधीरपि।**
निरस्तपादपे देशे एरण्डोपि द्रुमायते।।
जहाँ विद्वान मनुष्य नहीं होता, वहाँ थोड़ी बुद्धि वाला भी सराहा जाता है। जहाँ पेड़ नहीं होते, क्हाँ एरंड ही पेड़ मान लिया जाता है।

❑ **अर्थनाशं मनस्तापं गृहे दुश्चरितानि च।**
वञ्चनं चापमानं च मतिमन्न प्रकाशयेत्।।
धन का नाश, मन का दुःख, घर के दुश्चरित, ठगी और अपमान ये बातें बुद्धिमान किसी से न कहे।

❑ **नारिकेलसमाकारा दृश्यन्तेहिप सज्जनाः।**
अन्ये बदरिकाकारा बहिरेव मनोहराः।।
सज्जन नारियल के फल के समान बाहर तो कड़े, परन्तु भीतर बहुत मधुर और कोमल होते हैं और दुष्ट बेर के फल के समान बाहर तो मधुर परन्तु भीतर कड़े होते हैं।

❑ **स जीवति गुणा यस्य धर्मो यस्य स जीवति।**
गुणधर्मविहीनो यो निष्फलं तस्य जीवितम्।।
जिसमें गुण हैं वह जीवित है और जिसमें धर्म है, वह जीवित है। गुण और धर्म से रहित मनुष्य का जीवन व्यर्थ है।

❑ **ईर्ष्यी घृणी त्वसन्तुष्टः क्रोधनो नित्यशंकितः।**
परभाग्योपजीवी च षडेते दुःखभागिनः।।
डाही, घृणी, असन्तोषी, क्रोधी, सदा सन्देही, परभाग्य से जीने वाला, ये छह दुःखी रहते हैं।

❑ **आरभन्तेऽल्पमेवाज्ञाः कामं व्यग्राः भवन्ति च।**
महारम्भाः कृतधियस्तिष्ठन्ति च निराकुलाः।।
अल्पबुद्धि वाले लोग छोटे-छोटे काम आरम्भ करते हैं और बड़े परेशान रहते हैं, किन्तु प्रगल्भ बुद्धि वाले लोग बड़े-बड़े कार्मों का बीड़ा उठाकर भी निश्चिन्त रहते हैं।

❑ **यशस्तु रक्षं परतो यशोधनैः।**
यशस्वी लोग अपने महान धन-यश की रक्षा करते हैं।

❑ **न संरम्भेण सिध्यन्ति सर्वेऽर्थाः सान्त्वया यथा।**
सब काम जैसे शान्ति से सिद्ध होते हैं, वैसे अशान्ति से नहीं।

❑ **कंदुको भित्ति निक्षिप्ति इव प्रतिफलन्मुहुः।**
असत्यात्मनि प्रायो दोषोऽन्यस्य चिकीर्षितः।।
जैसे दीवाल पर फेंकी गेंद अपने ऊपर ही लौटकर आती है, वैसे ही दूसरे के लिए की हुई हानि की योजना भी अपना ही अनिष्ट करती है।

❑ **मांसमूत्रपुरीषास्थिनिर्मितेऽस्मिन्कलेवरे।**
विनश्वरे विहायास्थां यशः पालय मित्र मे।।
हे मित्र ! मांस, मल-मूत्र तथा हड्डी से बने हुए विनाशी शरीर में आस्था को छोड़कर मेरे यश को बढ़ाओ।

❑ **अपमानं पुरस्कृत्य मानं कृत्वा च पृष्ठतः।**
स्वकार्यमुद्धरेत्प्राज्ञः कार्यध्वंसो हि मूर्खता।।
अपमान को आगे कर, सम्मान की ओर कोई भी दृष्टि न रखकर बुद्धिमान पुरुष को अपना कार्य-साधन करना चाहिए, क्योंकि मानापमान के ध्यान से कार्य बिगाड़ लेना महान मूर्खता है।

❑ **अनुभूतेरभावेऽपि ब्रह्मास्मीत्येव चिंत्यताम्।**
अभ्यसत्प्राप्यते ध्यानाच्चित्याप्तं ब्रह्म किं पुनः।।
अनुभव न हो सकने पर भी सर्वदा अपने अन्दर ब्रह्म को होने का चिन्तन-ध्यान करे, जब ध्यान से असत की प्राप्ति हो जाती है—भ्रमर के ध्यान से कीटक-भ्रमर हो जाता है, तब नित्य विद्यमान रहने वाले ब्रह्म की प्राप्ति कैसे नहीं हो सकेगी ?

❑ **तमस्युपरते स्वान्ते तेजः पुंज ददर्श सः।**
ध्यान के अभ्यास से अज्ञानान्धकार के विनष्ट हो जाने से हृदय में तेजपुंज (आत्मा) का अनुभव होने लगता है।

❑ **आत्मनो वै शरीराणि बहूनि भरतर्षभ।**
योगी कुर्याद् बलं प्राप्य तैश्च सर्वे महीं चरेत्।।
प्राप्नुयाद् विषयान् कैश्चित् कैश्चिदुग्रं तपश्चरेत्।
संक्षिपेच्च पुनरुक्तानि सूर्यो रश्मिगणानिव।।
हे राजन् ! योगबल को प्राप्त करके योगी सहस्रों शरीर धारण कर सकता है और उन सबके द्वारा पृथ्वी पर विचरण कर सकता है। किसी शरीर से विषयों को प्राप्त करता है तो किसी शरीर के द्वारा उग्र तप करता है और फिर उन शरीरों को अपने भीतर इस प्रकार समेट लेता है, जैसे सूर्य अपनी रश्मियों को बटोर लेता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ **अयं तु परमो धर्मो यद् योगेनात्मदर्शनम् ।**

योग के द्वारा आत्म-साक्षात्कार करना सबसे बड़ा धर्म है।

जो लोग धर्म की चर्चा करते हैं और साथ ही उसकी उपासना को भी धर्म के अंगों में महत्त्वपूर्ण स्थान देते हैं जैसा कि देना चाहिए, उन्हें इस परम धर्म योग की शरण में आना चाहिए।

❑ **अदत्तानामुपादानं हिंसा चैताभिधानतः ।**
परदारोपसेवा च शरीरं त्रिविधं स्मृतम् ।।

चोरी (अन्याय से दूसरे का द्रव्य लेना), हिंसा, परस्त्रीगमन, यह शरीर के तीन पाप हैं।

❑ **परापवादश्रवणं परस्त्रीणामदर्शनम् ।**
एतच्छौचं श्रोत्रदृशोर्जिह्व शुद्धिरपैशुनम् ।।

दूसरे की निन्दा सुनने में चित्त न देना, पर स्त्रियों को अनुचित दृष्टि से न देखना, यह श्रवण और नेत्रों की शुद्धि है और चुगलखोरी, असत्य, रूखे वचन और व्यर्थ के वार्त्तालाप से बचना यह जिह्वा की शुद्धि है।

❑ **प्राणीवधमभस्तेयं शुचित्वं पादहस्तयोः ।**
अश्लेष परस्त्रीणां शारीरं शौचमिष्यते ।।

हिंसा से बचना पैर की पवित्रता, चोरी न करना हाथ की पवित्रता है, परस्त्रीगमन से बचना शरीर की पवित्रता है।

❑ **स बाह्याभ्यन्तरं शौचमेतदुक्तमशेषतः ।**
सर्वस्मादधिकं प्रोक्तमर्थशौचं स्वयंभुवा ।।

यह बाहरी-भीतरी सम्पूर्ण पवित्रताओं से अधिक पवित्रता ईमानदारी के साथ पैसा पैदा करना है।

❑ **आर्द्र संतानता त्याग काय वाक् चेतसः दमः ।**
स्वार्थबुद्धिं परार्थेषु पर्याप्तमिति सद् व्रतम् ।।

कोमलता, कृपा का बर्ताव, उदारता, शरीर, वाणी, मन को पाप-कर्मों से बचाना, पुण्य-कार्यों को अपने ही समझकर उनके बनाने का प्रयत्न करना इतना सदाचारी काफी है।

❑ **आहारस्वयनाऽब्रह्मचर्यैः युक्त्या प्रयोजितैः ।**
शरीरं धार्यते नित्यंसागरमिवधारणैः ।।

आहार, नींद, मैथुन ये तीन बातें शरीर के धारण के कारण हैं, जैसे—खम्भे मकान को धारण किये रहते हैं।

❑ **सत्यवादिनमक्रोधमध्यात्म प्रवणेन्द्रियम् ।**
शान्तं रुद्वृत्त निरतं विद्यान्नित्यं रसायनम् ।।

सत्यवादी, अक्रोधी, जितेन्द्रिय, शान्तचित्त, सदाचारी ऐसे लक्षण वाला पुरुष नित्य ही मानो रसायन सेवन करते हैं।

❑ **यथा खरश्चन्दन भारवाही, भारस्य वेत्ता न तुचन्दनस्य ।**
एवं हि शास्त्राणि बहून्यधीत्य, चार्थेषु मूढाःखरवद् वहन्ति ।।

जैसे गधे पर चन्दन लदा हो तो वह उससे बोझा ही समझता, है चन्दन नहीं समझता। इसी प्रकार बहुत-से शास्त्र पढ़ लिए पर वास्तविक अर्थ नहीं समझा तो वह गधे के समान बोझ ढोना ही है।

❑ **ईर्ष्या भय क्रोध परिक्षितेन लुब्धेन शुगू दैन्यनिपीडितेन ।**
प्रद्वेषयुक्तेन च सेव्यमानमन्नं न सम्यक् परिपाकमेति ।।

डाह (जलन), भय, क्रोध से युक्त अन्य की बढ़ती देखकर दुःखी, लोभी, चिन्तित, दीनतायुक्त, द्वेषी ऐसे पुरुष को खाया हुआ अन्न भली प्रकार नहीं पचता।

❑ **न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति ।**
हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते ।।

कभी विषयों के उपभोग से इच्छा शान्त नहीं होती, भोगने से वह इस प्रकार बढ़ती है कि जैसे घृत की आहुति से अग्नि।

❑ **वेदास्त्यागश्च यज्ञाश्च नियमाश्च तपांसि च ।**
न विप्रदुष्टभावस्य सिद्धिं गच्छन्ति कर्हिचित ।।

वेद, त्याग, यज्ञ, नियम और तप यह सब भी दुष्ट भाव वाले विषयी मनुष्य को कदापि सिद्धि नहीं देते।

❑ **वशे कृत्वेन्द्रियग्रामं संयम्य च मनस्तथा ।**
सर्वान्संसाधयेदर्थानक्षिण्वन्योगतस्तनुम् ।।

इन्द्रियों को वश में करके मन को रोककर शरीर को पीड़ा न देकर सम्पूर्ण अर्थों (प्रयोजनों) की सिद्धि करे।

❑ **दश कामःसमुत्थानि तथाष्टौ क्रोधजानि च ।**
व्यसनानि दुरन्तानि प्रयत्नेन विवर्जयेत् ।।

दस प्रकार के कामज और आठ प्रकार के क्रोधज ये १८ प्रकार के व्यसन हैं। इन (परिणाम में हानिकारक) व्यसनों को तुरन्त यत्नपूर्वक त्याग देवें।

❑ **मृगयाऽक्षो दिवा स्वप्नः परिवादः स्त्रियो मदः ।**
तौर्यत्रिकं वृथाट्या च कामजो दशको गणः ।।

शिकार खेलना, जुआ, दिन का सोना, निन्दा, स्त्रियों में अधिक आसक्ति, शराब आदि का नशा, नाच-गाना, अतिवृथा भ्रमण ये १० कामज व्यसन हैं।

❑ **परेषां सुख सौकर्य सर्वदा चिन्तयेन्नरः ।**
स्वार्थ एव सदा लग्नः समाजार्हे भवेन्न च ।।

मनुष्य को सर्वथा दूसरों के सुख एवं सुविधा की ओर पूर्ण विचार करना चाहिए। जो व्यक्ति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सदा अपने ही मतलब के कार्य में लगा रहता है और दूसरों का बिल्कुल ध्यान ही नहीं रखता, ऐसा मनुष्य समाज में रहने योग्य नहीं होता।

❑ **दुःखं ददाति योऽन्यश्चः ध्रुवं दुःख स विन्दति।**
तस्मान्न कस्यचित् दुखं दातव्यं दुःखभीरुणा।।
जो मनुष्य दूसरों को दुःख देता है निश्चय ही वह स्वयं दुःख पाता है, इसलिए दुःख से डरने वाले मनुष्य को चाहिए कि वह दूसरों को दुःख न दे।

❑ **प्राणा यथात्मनोऽभीष्टा भूतानामपि ते तथा।**
आत्मौपम्येन भूतेषु दयां कुर्वन्ति साधवः।।
जिस प्रकार अपने प्राण प्यारे हैं, वैसे ही और प्राणियों को भी अपने-अपने प्राण प्यारे हैं, इसलिए साधुजन अपने प्राणों के समान दूसरों पर दया करते हैं।

❑ **क्षमया दयया प्रेम्णा सूनृतेनार्जवेन च।**
वशीकुर्याज्जगत्सर्वं विनयेन च सेवया।।
क्षमा, दया, प्रेम, मधुर वचन, सरल स्वभाव, सेवा और नम्रता से संसार में समस्त प्राणियों को वश में करना चाहिए।

❑ **अक्रोधेन जयेत्क्रोधमसाधुं साधुनाजयेत्।**
जयेत्कदर्यं दानेन सत्येनानृतवादिनम्।।
क्षमा से क्रोध को जीतें, भलाई से बुराई को जीतें, कृपण को उदारता से अर्थात् धन देकर जीतें और असत्यवादियों को सत्य से जीतें।

❑ **यस्तु क्रोधं समुत्पन्नं प्रज्ञया प्रतिबाधते।**
तेजस्विनन्तं विद्वांसो मन्यते तत्त्वदर्शिनः।।
जो मनुष्य उत्पन्न हुए क्रोध को प्रज्ञा द्वारा शान्त कर देता है, उस तेजस्वी पुरुष को तत्त्वदर्शी लोग विद्वान कहते हैं।

❑ **ये क्रोधं संनियच्छन्ति क्रुद्धान् संशमयन्ति च।**
न च कुप्यन्ति भूतानां दुर्गाण्यतितरन्ति ते।।
जो मनुष्य क्रोध को वश में रखते हैं, उस पर नियन्त्रण रखते हैं तथा क्रुद्ध हुए लोगों को शान्त करते हैं और प्राणिमात्र पर कभी क्रोध नहीं करते, वे ही इस लोक के सम्पूर्ण दुस्सह दुःखों से तर जाते हैं।

❑ **क्षमा वशकृतिर्लोके क्षमया किं न साध्यते।**
शान्तिखड्गः करे यस्य किं करष्यन्ति दुर्नराः।।
क्षमा संसार को वश में कर लेती है। क्षमा से क्या सिद्ध नहीं होता ? जिसके हाथ में शान्ति रूपी तलवार है, उसका दुष्ट पुरुष क्या कर सकेगा ?

❑ **परश्छेदंनमतिवादवाणैर्भृशं विद्धं च क्षम एव कार्यः।**
संरोप्यमाणः प्रतिहिष्यति यः स आदत्ते सुकृतं वै परस्य।।
प्रतिपक्षी के कुवाक्य रूपी वाणों से विद्ध होकर भी धीर पुरुष शान्त ही रहा करते हैं। शत्रु के द्वारा क्रोध दिलाने पर भी जो पुरुष क्रोधित नहीं होते हैं, वे धैर्यशाली पुरुष शत्रु के पुण्य का हरण कर लिया करते हैं।

❑ **नाक्रोशी स्यान्ननवमानी परस्य मित्रद्रोहीनोत नीचोपसेवी।**
न चाभिमानी च हीनवृत्तो रूक्षां वाचं रुष्टवीं वर्जयेत्।।
गाली न दे, न अन्य का तिरस्कार करे, मित्र से अनबन न करे, नीच की सेवा न करे, दुराचरण न करे तथा रूखे क्रोधयुक्त वचनों का त्याग करे।

❑ **अद्भिर्गात्राणिशुद्ध्यन्ति मनः सत्येन शुद्ध्यति।**
विद्यातपोभ्यां भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुद्ध्यति।।
जल से शरीर शुद्ध होता है और न सत्य से शुद्ध होता है। विद्या और तप से प्राणियों की आत्मा शुद्ध होती है और बुद्धि ज्ञान से शुद्ध होती है।

❑ बड़ा बनने की इच्छा वालो ! ज्ञानी बनो, पिछड़ो मत।

❑ **क्रोधो नाशयते धैर्यं क्रोधो नाशयते श्रुतम्।**
क्रोधो नाशयते सर्वं नास्ति क्रोध समो रिपुः।।
क्रोध को परम शत्रु मानकर उससे बचना चाहिए, क्योंकि क्रोध से धैर्य, विवेक, ज्ञान, अनुभव सब कुछ नष्ट हो जाता है।

❑ **जायते यत्र स क्रोधस्तद्देहेवेह सर्वतः।**
विषयञ्च क्वचित्क्रोधः सफलो निर्विदेयम्।।
जिस शरीर में क्रोध उत्पन्न होगा, उसे सर्वथा नष्ट कर देगा। इस क्रोध से अग्नि तथा विद्युत् शक्ति के समान बचना चाहिए।

❑ **अपकारिणि कोपश्चेत्कोपे कोपः कथं न ते।**
धर्मार्थकाममोक्षाणां प्रसह्य परिपन्थिनि।।
अपकारी पर क्रोध करने की अपेक्षा क्रोध पर ही क्षुभित होना चाहिए, क्योंकि यही धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति में बाधक है। इसी को अपना परम शत्रु मानकर वशवर्ती बनाना चाहिए।

❑ **न द्विषन्तः क्षयं यान्ति यावज्जीवमपिघ्नतः।**
क्रोधमेवतु यो हन्ति तेन सर्वे द्विषो हताः।।
जीवनपर्यन्त प्रयत्न करने पर भी शत्रुरहित नहीं बन सकते, पर जिसने क्रोध को पराजित कर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दिया उसका कोई शत्रु कुछ नहीं बिगाड़ सकता। क्रोध पर विजय पाना शत्रुओं को समाप्त कर देना है।

❑ **सत्यं मृदु प्रियं वाक्यं धीरो हितकरं वदेत्।**
आत्मोत्कर्षं तथा निन्दां परेषां परिवर्जयेते।।
अपनी प्रशंसा और दूसरों की निन्दा न करने वाले, सदा सत्य, मधुर, प्रिय बोलने वाले ही धैर्यवान कहे जाते हैं।

❑ **अनित्यानि शरीराणि विभवो नैव शाश्वतः।**
नित्यं सन्निहितो मृत्युः कर्तव्यो धर्मसंग्रहः।।
यह शरीर अनित्य, नाशवान क्षण-भंगुर है, इससे सम्बन्धित धन-वैभव, ऐश्वर्य भी स्थायी नहीं। मृत्यु अवश्यम्भावी है। यह विचार कर कर्म संचय करते रहना चाहिए, क्योंकि धर्म नित्य और शाश्वत है।

❑ **अद्रोहं सर्वभूतेषु कर्मणा मनसा गिरा।**
अनुग्रहश्च दानञ्च सतां धर्म सनातनः।।
सब प्राणियों पर मन, वचन, कर्म से द्रोह न रखना तथा दया, दान, प्रेम करना ही सज्जनों का सनातन धर्म है।

❑ **उत्थायोत्थाय बोद्धव्यं किमद्य सुकृतं कृतम्।**
आयुषः खण्डमादाय रविरस्तं गमिष्यति।।
प्रातःकाल उठते ही यह सोचना चाहिए कि मुझे आज क्या करना है, क्या सत्कर्म मैंने किया है, क्योंकि प्रतिदिन ही आयु का एक भाग क्षीण हो जाता है।

❑ **देवेन मनसा सह।**
दिव्य मन के साथ रहा कीजिए। क्या आप इस संसार में सर्वश्रेष्ठ मित्र खोज रहे हैं ? यदि हाँ, तो अपने मन को दिव्य-निष्पाप बना लीजिये, वही सर्वश्रेष्ठ मित्र है।

❑ **नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः।**
यह आत्मा निर्बलों को प्राप्त नहीं होती। इस संसार में दुर्बलता सबसे बड़ा महाघोर पातक है, इसलिए कमजोर सर्वत्र नारकीय यन्त्रणाएँ भोगते देखे जाते हैं।

❑ **रसो वै सः।**
प्रेम ही परमात्मा है। आप परमात्मा को प्राप्त करना चाहते हैं तो उसकी चलती-फिरती प्रतिमाओं से प्रेम कीजिए।

❑ **ऋषयो भद्रां मेधां यां विदुस्तां मय्या वेशयामसि।**
—अथर्व. ६। १०८। ३
बड़े-बड़े ऋषियों ने जिस बुद्धि को श्रेष्ठ माना है, उसे मैं अपने अन्दर प्रविष्ट करता हूँ।

❑ **आर्यकर्माणि रज्यन्ते, भूतिकर्माणि कुर्वते।**
हितं च नाभ्यसूयन्ति पंडिता भरतर्षभः।।
हे धृतराष्ट्र ! पण्डित लोग शास्त्रानुकूल मार्ग पर चलते हैं और जिन कर्मों के करने से कल्याण प्राप्त होता है, उनको करते हैं। हितकारी वाक्यों को प्रेम से सुनते हैं और हितोपदेष्टा का सत्कार करते हैं।

❑ सच बोलो, धर्म का आचरण करो। स्वाध्याय में आलस न करो। आचार्य की सेवा करते रहो और गृहस्थ में प्रवेश करके संसार का क्रम प्रचलित रखो। सत्य, धर्म, कौशल, स्वास्थ्य के नियम, ऐश्वर्य प्राप्ति के साधन करने और पढ़ने तथा पढ़ाने में आलस्य न करो। धार्मिक, पारिवारिक और सामाजिक कर्मों के करने में आलस्य न करो।

❑ माता की पूजा करो, पिता की पूजा करो, आचार्य की पूजा करो, अतिथि (अपरिचित अभ्यागत) का सत्कार करो। भले कर्म करो, बुरे कर्म से बचो। हमारे कर्मों में जो अच्छे हैं, उनका अनुकरण करो, दूसरों का नहीं।

❑ दान श्रद्धा से देना चाहिए, श्रद्धा न हो तो भी देना चाहिए।

❑ दान खुले हाथ देना चाहिए। अधिक न हो सके तो थोड़ा ही देना चाहिए। भय (लोक-लाज) से भी दान देना चाहिए और इस विचार से भी कि जिस काम के लिए दान माँगा जाता है, वह भला काम है।

❑ यदि तुम्हें किसी काम के सम्बन्ध में सन्देह हो कि वह अच्छा है या बुरा है तो देखो कि कोई ऐसे ब्राह्मण हैं, जो समझदार है, नेक है, कोमल स्वभाव वाले हैं, धर्म को प्यार करने वाले हैं। ऐसे अवसर पर जैसे इन पुरुषों का व्यवहार हो, वैसा ही तुम भी करो।

❑ ❑

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

मानवीय-गरिमा

❑ उद्देश्यरहित जीवन जीना केवल अपनी लाश ढोने के समान है। —*गेटे*

❑ उच्चजीवन ही से उच्चचरित्र वाले उत्पन्न होते हैं। —*पोप*

❑ जीवन का द्वार तो सीधा है, किन्तु मार्ग अत्यन्त संकीर्ण है। —*सन्त मेथ्यू*

❑ अच्छा जीवन वही है, जिसमें ज्ञान और भावनाओं—बुद्धि और सुख दोनों का सम्मिश्रण हो। —*सुकरात*

❑ जीवन का रहस्य भोग में नहीं, अनुभव द्वारा आत्म-विकास में है। —*स्वामी विवेकानन्द*

❑ जीवन सब कलाओं से ऊपर है, जो व्यक्ति जीवन में पूर्णता लाने का प्रयास करता है, वह एक महान कलाकार है। —*महात्मा गाँधी*

❑ मनुष्य-जीवन का अधिकांश भाग यही विचारते-विचारते निकल जाता है कि मैं अब जीवन को नाश से बचाऊँगा। फलतः जीवन नष्ट हो जाता है और हम जीवित रहने के उपक्रम में ही व्यस्त रह जाते हैं। —*एमर्सन*

❑ जीवन एक पुष्प है, प्रेम उसका मधु। जिसने यह प्याला पी लिया, अमर हो गया वह।

—*विक्टर ह्यूगो*

❑ मनुष्य-जीवन स्वतः एक बड़ा चमत्कार है। प्रकृति में इतना बड़ा चमत्कार दूसरा नहीं। फिर भी आश्चर्य है कि लोग इतनी महत्त्वपूर्ण उपलब्धि को भौतिक सुखों में गँवा देते हैं।

—*आनन्द स्वामी*

❑ जीवन जीने की कला जिसको आ गई, वह मानो तपस्वी ही हो गया। —*महात्मा गाँधी*

❑ जीवन न अभिशाप है और न वरदान। वह एक परख और कसौटी है, जिसमें अपनी सामर्थ्य का परिचय देने पर ही कुछ पा सकना सम्भव होता है। —*टाकविल*

❑ फूल को खिलने दो, मधुमक्खियाँ अपने आप उस पर आकर मँड़राएँगी। चरित्रवान बनो, विश्व अपने आप तुम पर मुग्ध हो जाएगा।

—*रामकृष्ण परमहंस*

❑ **अंतरं च खलु एमं संपेहाए।**
धीरे मुहुत्त मविणो पमाराए।।

—*आचारांग १।२।१*

मनुष्य जीवन अनन्त जीवन प्रवाह का महान सुअवसर है, उसकी महत्ता समझकर उसके एक पल का भी अपव्यय नहीं करना चाहिए।

❑ जीवित अवस्था में शरीर को लोग देव (नरदेव-भूदेव) शब्दों से पुकारते हैं, परन्तु मर जाने पर उस शरीर के या तो (सड़ जाने पर) कीड़े हो जाते हैं या (जला देने पर) राख हो जाती है, अथवा (पशु आदि के खाने पर उनकी) विष्ठा बन जाती है, वैसे शरीर के लिए जो मनुष्य दूसरे प्राणियों से द्रोह करता है, जिससे नरक की प्राप्ति होती है, वह क्या अपने स्वार्थ को जानता है ? —*देवर्षि नारद*

❑ ज्यों-ज्यों हम महान पुरुषों के निकट आते हैं त्यों-त्यों हमें स्पष्ट होता जाता है कि वे केवल मानव हैं। अपने निकटवर्ती लोगों को वे कभी महान प्रतीत नहीं होते। —*सेमुएल जॉनसन*

❑ **विणाए ठविज्ज अप्पाणं इच्छंतो हियमप्पणो।**

—*उत्तराध्ययन १। ६*

आत्मा को वही सिद्ध कर सकता है, जो सदाचार में स्थित है।

❑ धनी, निर्धन दोनों ही चरित्र के अधिकारी हैं। समाज के लिए दोनों से सुन्दर चरित्र की अपेक्षा है, किन्तु धनी धन के घमण्ड में उसे खो बैठते हैं और निर्धन उसे ही अपना सर्वस्व समझकर सँजोए रहता है। —*स्वेट मार्डन*

❑ मानवीय शक्ति का दूसरा नाम ही भविष्य है, इसलिए भविष्य के लिए मानवीय शक्ति का निर्माण आवश्यक है। —*रूसो*

❑ पशु-पक्षी जन्म लेते ही चलने-फिरने लगते हैं, पर मनुष्य को लम्बे समय तक पराश्रित रखकर भगवान ने बताया कि उसे सेवा और सहयोग का जीवन जीना चाहिए। —*प्रिन्स क्रोपाटकिन*

❑ जिस जीवन में कोई लक्ष्य, कोई उद्देश्य और कोई अपनी हलचल नहीं है, वह निःसार और निकम्मा है। वह नदी में पड़े उस ढेले की भाँति है, जो प्रवाह के अधीन बहता है, उसकी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपनी कोई गति नहीं। आँधी में पड़े उस तिनके समान है, जिसे हवा जब चाहती है आसमान पर चढ़ाती है और जब चाहती है नाली में गिरा देती है। मानव-जीवन नियति की कठपुतली नहीं है, जो उसके संकेतों पर नाचता रहे। मानव-जीवन नियति को विजय करने और उसे अपनी अनुचरी बनाने का शक्तिशाली वरदान है, प्रारब्ध का अभिशाप नहीं।

❑ जीवन की दो ही अवस्थाएँ हो सकती हैं या तो वह साहस, शौर्य, परिश्रम और पुरुषार्थ का केन्द्र बनेगा—जिसका परिणाम सफलता, उन्नति, सम्पन्नता, आनन्द और उल्लास होगा अथवा आलस्य, अकर्मण्यता, भीरुता और अनाकर्षण आदि की प्रेतभूमि—जिसका अर्थ है निर्धनता, दयनीयता, शोक और संताप।

—जगदीश चन्द्र बोस

❑ मनुष्य तू प्रेरणा केन्द्र है, तू अपने स्वरूप की रक्षा करने वाला है, तू प्रकाश को धारण करने वाला है। तू प्रकाश है, तू अमर-ज्योति है। पुरुषार्थ कर, प्रयत्न कर, पग बढ़ा, बराबर वालों से आगे बढ़। जो तुझसे आगे हैं—उन तक पहुँचने का प्रयत्न कर।

❑ धनवान के लिए निरभिमान होना सहज है, किन्तु निर्धन के लिए सन्तोष प्रकट करना कठिन है।

❑ सदाचार के प्रति अनुराग, सौन्दर्य के प्रति अनुराग हृदय से होना चाहिए।

❑ अपनी तुलना में भी दूसरों को परखने का आत्म-शासन रखो, इसी को मनुष्यता का सिद्धान्त कहते हैं।

❑ न्याय के प्रति प्रेम, विद्वत्ता के प्रति आदर तथा सदाचार मनुष्य को विशिष्ट पुरुष बनाने में समर्थ होता है।

❑ उठो तुम परमात्मा के अमृत पुत्रो ! तुम में प्रकृति की सबसे बड़ी शक्ति इस प्रकार पड़ी है जैसे बीज में वृक्ष निहित है।

❑ संसार एक मुसाफिरखाना है।

❑ काम का आरम्भ करना मनुष्य के हाथ में है और उसे पूरा करना ईश्वर के हाथ में है।

❑ क्षर भर अपने क्रोध को दबाकर तुम जीवन भर के पश्चात्ताप से बच सकते हो।

❑ जिस प्रकार तुम दूसरों के दोष दिखाते हो उसी प्रकार अपने दोष भी देखो, दिखाओ।

❑ आज्ञा-पालन सत्कार से कहीं उत्तम है।

❑ बीस वर्ष तक धार्मिक जीवन व्यतीत करना पर्याप्त ही है, किन्तु एक दिन भी बुराई करना बहुत बड़ा दोष है।

❑ बुद्धिमान पुरुष वचन देने में विलम्ब करता है, किन्तु वचन देने पर उसका पालन अवश्य करता है।

❑ आनन्द की तीन कुंजियाँ हैं—(१) दूसरों में दोष न देखना, (२) दूसरों की निन्दा न करना, न सुनना, (३) दूसरों की बुराई न करना।

❑ मनुष्य का हृदय आइना के समान होना चाहिए, जिस पर समस्त वस्तुओं का प्रतिबिम्ब पड़ता है, किन्तु इससे उसमें मैलापन नहीं आता।

❑ कोलाहल न बाजार में है, न शान्ति जंगल में, सब कुछ मनुष्य के हृदय में है।

❑ जब तुम जीवित प्राणी के प्रति अपना कर्त्तव्यपालन करने में असमर्थ हो तो मृत व्यक्ति के प्रति कर्त्तव्य का पालन किस प्रकार कर सकोगे ?

❑ ज्ञानी पुरुष के लिए अपना चित्त स्वर्ग है, किन्तु अज्ञानी के लिए वह नरक है।

❑ सच्चा सद्भाव अपने संगियों के प्रति प्रेम करना है और सच्चा ज्ञान अपने साथियों को पहचानना है।

❑ जो ईश्वरीय नियम से अनभिज्ञ है, वह श्रेष्ठ मनुष्य नहीं हो सकता।

❑ ज्ञानी मनुष्य सन्देह से, धार्मिक मनुष्य चिन्ता से और वीर मनुष्य मद से मुक्त रहता है।

—कुंग

❑ **आत्मज्ञानं समारम्भस्तितिक्षा धर्मनित्यता।**
यमर्था नापकर्षन्ति स वै पण्डित उच्यते।।
जिसने आत्म-ज्ञान का अच्छी तरह आरम्भ किया है, जो निकम्मा आलसी कभी न रहे। सुख-दुःख, हानि-लाभ, निन्दा-स्तुति, हर्ष-शोक न करे, धर्म में ही निश्चिन्त रहे, लुभावनी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विषय-वासनाओं में आकर्षित न हो वही पण्डित कहलाता है।

❑ **देवासुराणां सर्वेषां मानुष्यं याति दुर्लभम्।**
तत्सम्प्राप्य तथा कुर्यान्न गच्छेन्नरकं यथा।।

—शिव पुराण

देव-असुर आदि योनियों में मनुष्य जन्म कठिनता से प्राप्त होता है। उस मनुष्य योनि को प्राप्त करके वह काम करे, जिससे नरक न जाना पड़े, अर्थात् पापकर्म से बचे।

❑ **निवृत्तिःकर्मणःपापत्सततंपुण्यशीलता।**
सद्वृत्तिःसमुदाचारःश्रेयएतदनुत्तमम्।।

—नारद पुराण

पापकर्म से निवृत्त होना, पुण्यकर्म में लगना, सुन्दर व्यवहार, सुन्दर आचरण कल्याण का सर्वोत्तम साधन है।

❑ **उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।**
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया
दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति।।

—कठोपनिषद ३-१४

उठो, जागो और श्रेष्ठ पुरुषों को पाकर (उनके सत्संग) ज्ञान प्राप्त करो, किन्तु जैसे छुरी की धार अतीव तीक्ष्ण होती है, उसी प्रकार ज्ञानी पुरुषों के इस मार्ग को अत्यन्त दुर्गम बतलाया है।

❑ अधिकांश लोग अपने जीवन और आयु का अधिकतम हिस्सा जीविकोपार्जन में ही लगा देते हैं। इसकी उपेक्षा तो नहीं की जानी चाहिए, पर यह भी अनिवार्य रूप से आवश्यक है कि इसे इतना अधिक महत्त्व भी न दें कि अन्य जरूरी बातों को हम भूल ही जाएँ और या उन्हें गौण मान लें। यदि ऐसा होता है तो कहना पड़ेगा कि हमने अपने जीवन का क्रम उलट लिया है—पहले कामों को पीछे डाल दिया है तथा पीछे कामों को आगे कर लिया। यदि हम अपने विचारों, समय और शक्तियों को अपना जीवन सुन्दर बनाने में लगाएँ तो परमात्मा का वह वरदान प्राप्त कर सकेंगे, जिसमें उसे मनुष्य को समृद्धिशाली और आनन्दमय जीवन का वचन दिया है।

—लिलि ऐलन

❑ मनुष्य का जीवन क्षणिक है, पर आत्म-सुधार उसे अनन्त तक फैला देता है। *—एमर्सन*

❑ हम शरीर नहीं, आत्मा हैं। शरीर आवरण, वाहन एवं औजार मात्र है। आवरण के सँजोने में सारी शक्ति लग जाय और आत्मा की समस्याएँ उलझी एवं उपेक्षित पड़ी रहें तो उसे बुद्धिमत्ता नहीं, मूर्खता ही माना जाएगा। हम कितने विद्वान, बुद्धिमान, चतुर और दूरदर्शी हैं? इसकी कसौटी धन, सम्पत्ति या सत्ता को नहीं, वरन् जीवन के सदुपयोग को माना जा सकता है। मूर्खों से यह दुनिया भरी पड़ी है, हमें बुद्धिमान बनने का प्रयत्न करना चाहिए।

❑ जीवन के लिए विचार अपरिहार्य नहीं। फिर जीवन का आदि कारण कोई मानसिक विचार नहीं है। जीवन को आविर्भूत करने का एक साधन मात्र है। "स्व विचारों में मैं जो देख सकता हूँ। मन के विचार मुझे जिन अमुक-अमुक कार्यों का सम्पादन करने की सूचना देते हैं, वे सब मैं कर सकता हूँ। विचार मुझे जो दर्शन कराते हैं, यह स्वरूप मैं धारण कर सकता हूँ।" ऐसी अविचल शक्ति, समर्थता, श्रद्धा प्रत्येक मानव में होनी ही चाहिए, क्योंकि उसके अन्तर में भगवान वास कर रहे हैं। *—महायोगी अरविन्द*

❑ अणु बम की विनाशकारी शक्ति के बारे में बहुत कुछ कहा-सुना जाता है, पर यह अणु की समस्त शक्ति नहीं है। अणुबमों में प्रयोग होने वाली शक्ति अणु की सम्पूर्ण शक्ति का एक हजारवाँ भाग ही है। शेष ९९९ भाग तो प्रसुप्त हुए ही पड़ा रहता है।

मनुष्य की भी इतनी ही शक्ति प्रसुप्त पड़ी रहती और अस्त-व्यस्त होती रहती है। यदि उसको और अपने में सन्निहित शक्ति का समग्र बोध हो सके और उसका सदुपयोग किया जा सके तो वह सामान्य की समग्र परिधियाँ तोड़कर असामान्य बन सका है जैसा कि वस्तुतः वह है भी। *—विनोबा*

❑ कली ऊपर से शंकु-सी लगती है, किन्तु उसके अन्दर महान सौन्दर्य और मधुमास छिपा रहता है, वैसे ही हर मनुष्य की आत्मा में जीवन का अक्षुण्ण सौन्दर्य और अनन्त आह्लान छिपा रहता है, जो उसे जाग्रत करता है, वह महान हो जाता है। *—लुइसकेन*

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ सूर्य प्रतिदिन निकलता है और डूबते हुए, आयु का एक दिन छीन ले जाता है, पर माया-मोह में डूबे मनुष्य समझते नहीं कि उन्हें यह बहुमूल्य जीवन आखिर क्यों मिला ?

❑ महान-विराट और उत्कृष्ट जीवन का नाम ही ईश्वर है। मनुष्य उसी का छोटा, किन्तु दिव्य अंग है। वह स्वप्न नहीं है, न विडम्बना, न दुर्भाग्य। वह ईश्वर का सबसे सुन्दर और दिव्य वरदान है, वह अद्‌भुत है।

❑ अपने भीतर प्रवेश करो। गहरे और गहरे देखोगे कि जीवन प्रेम, आदर्श और आनन्द से भरा-पूरा है। *—सन्त वास्वानी*

❑ पेट भर लेना ही मनुष्य का उद्देश्य नहीं है, कुटुम्ब का भरण-पोषण करना भी मनुष्य-जीवन का परमलक्ष्य नहीं है। अपना जीवन-निर्वाह तो कुत्ता भी कर लेता है, मनुष्य को उससे उठकर सत्य व अमृत की शोध करनी चाहिए। *—लोकमान्य तिलक*

❑ लोग समझते हैं जितना अधिक बन पड़े अच्छा से अच्छा खा लिया जाए, अच्छा से अच्छा पहन लिया जाए। अधिक से अधिक भोग, भोग लेने की मानवीय भूख को किसी ने मिटते नहीं देखा। यह भूख मायाविनी है। बार-बार रूप बदलती रहती है और मनुष्यों को जाल में फँसाकर उसका जीवन नष्ट करती रहती है।

जीवन का रहस्य भोग में नहीं, पर अनुभव द्वारा शिक्षा-प्राप्ति में है। दृश्य बनने की अपेक्षा दर्शक बनने का लाभ कई गुना अधिक है, इससे दृश्य का अनुमान भी होता है और सच्चे ज्ञान की अनुभूति भी होती रहती है। भोग में छल, मिथ्यात्व और प्रवञ्च है। एक बार इसमें फँस जाने के बाद में उससे छूटना कठिन होता है। भोग साध्य कदापि नहीं हो सकता।

यह मनुष्य जीवन इसलिए मिला है कि इस संसार का शक्ति भर अध्ययन किया जाए और उस ज्ञान को मानवता के संरक्षण के लिए बाँट दिया जाए। भाषा, विचार और अनुभूति के जो अनेक उपहार पूर्व पुरुषों ने हमें दिये हैं, उनका हमारे ऊपर ऋण है। इसको चुकाने का काम, यह शिक्षा-भावी है। इसलिए इस अमूल्य मानव जीवन को खोओ मत, अपितु मानवीय गुणों को संगठित करने में उसका अधिक से अधिक उपयोग करो। *—स्वामी विवेकानन्द*

❑ पेट भरने, स्वाद लेने, परिवार बसाने और बड़प्पन जताने की प्रवृत्तियाँ निकृष्ट योनियों में भी होती हैं। मनुष्य में इनसे जो विशेषता है उसका गौरव है। अन्य जीव इन्द्रियों की प्रेरणा पर चलते हैं। मनुष्य अपनी प्रेरणा से इन्द्रियों को चलाता है। अन्य जीव अपने स्वार्थ को प्रधान रखते हैं, दूसरों की चिन्ता नहीं करते। मनुष्य अपनी चिन्ता छोड़कर दूसरों का हित-साधन करता है, यही उसकी विशेषता है। यदि इस विशेषता को वह छोड़ दे तो फिर उसका मनुष्य कहलाना व्यर्थ है।

❑ मनुष्य इसीलिए श्रेष्ठ है कि वह धर्म, सदाचार, नीतिविशेष और परमार्थ को प्रधानता देता है। यदि वह इन पाँचों को छोड़ दे, तब तो उसे सबसे निकृष्ट कहा जाएगा, क्योंकि बुद्धि का उपयोग करके वह संसार में दुःख और क्लेशों को ही बढ़ाता है। *—वेदव्यास*

❑ मनुष्य ईश्वर का प्रतिबिम्ब है, इसका मतलब है कि उसे ईश्वरीय अपेक्षाओं की पूर्ति के लिए बनाया गया है। *—डिजरायली*

❑ महापुरुषों की शिक्षा से क्रुद्ध होना मूर्ख मनुष्य का काम है। चतुर होकर सहनशीलता रखो। नीचवृत्ति के मनुष्यों की संगति न करो। हँसी-मजाक और खेल-कूद भी छोड़ देना चाहिए। *—भगवान महावीर*

❑ मनुष्य महान है, यदि वह पशु को भी मनुष्य बनाये, पर यदि वह स्वयं पशुवत आचरण करे तो वह अन्य पशुओं से भी तुच्छ है। *—जयशंकर प्रसाद*

❑ मनुष्य की श्रेष्ठता इस बात में है कि वह अपने चारों ओर शान्ति और प्रफुल्लता का आनन्दमय वातावरण उत्पन्न करे। यह कार्य वह तभी कर सकता है, जब अपने दृष्टिकोण में उदारता, सज्जनता और कर्त्तव्य में पुरुषार्थ एवं सदाचार का समन्वय रखे। *—याज्ञवल्क्य*

❑ मनुष्य क्या है ? निश्चित रूप से पशु और देव को जोड़ने वाली एक मध्यवर्ती शृंखला। मनुष्य की शालीनता ही वह आधार है, जिसके सहारे वह महानता के तथ्य को प्राप्त करता है।

—विलियम जेम्स

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ एक पशु दूसरे को केवल अपने शारीरिक बल से ही वश में कर लेता है। उसकी जाति का यही कायदा है। मनुष्य-जाति का स्वाभाविक कायदा प्रेम-बल से, आत्मिक-बल से दूसरे को जीतने का है। *—महात्मा गाँधी*

❑ यह आवश्यक नहीं कि कोई व्यक्ति पूर्णता प्राप्त करने के बाद ही ज्ञान-वृद्धि और लोक-सेवा के लिए कदम उठाये। झाड़ू बुहारकर स्वच्छ बनाती रहती है। *—रामकृष्ण परमहंस*

❑ सच मानिए, आप दुनिया के सबसे बड़े महान पुरुष हैं, पर एक ही दुर्गुण है आप में और वह है कि आप अपने महान गुणों को अपने में ही छिपाते रहते हैं, उन्हें प्रकाश में नहीं आने देते। *—एमर्सन*

❑ हीरा जिस खान से निकला उस काली मिट्टी का अस्तित्त्व वहाँ बहुत पहले से ही था। इसे तुच्छ और नगण्य कहना ठीक नहीं। संसार में जिन्हें ओछा और छोटा कहते हो, सम्भव है उन्होंने ही हीरे की तरह महानता को जन्म दिया हो, इसलिए किसी को नगण्य मानकर घृणा न करो। जिसे हम चीज नहीं कहते हैं, बहुधा सबसे बढ़कर उपयोगी निकल आती है। केवल उसे अपनाने और उसे लेकर आगे बढ़ने का हौसला चाहिए। *—रस्किन*

❑ संसार में कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं हुआ और न होगा, जिसे जीवन भर सिर्फ सुख या दुःख ही मिले। सुख और दुःख तो रथ के दो पहियों की तरह हैं—कभी एक पहिया ऊँचा तो कभी दूसरा।

—कालिदास

❑ मनुष्य स्वयं देवता है, उसकी पूजा की जानी चाहिए, अन्तःकरण में सोया देवत्व जगाया जाना चाहिए। *—स्वामी विवेकानन्द*

❑ बिना स्वतन्त्रता के ऐश्वर्य किस उपयोग का है? स्वतन्त्रता दो प्रकार की होती है—एक मिथ्या, जिसमें मनुष्य अपनी इच्छा पूर्ण करने के लिए स्वतन्त्र होता है। दूसरी वास्तविक, जिसमें मनुष्य अपना कर्त्तव्य निबाहने के लिए स्वतन्त्र रहता है। *—किंग्सले*

❑ मनुष्यता में जो कुछ महान और सत्य है, वह सदा हमारे द्वार पर प्रतीक्षा करता है कि हम उसको निमन्त्रित करें। उससे यह प्रश्न करना कि वह किस देश का है, हमारा काम नहीं, किन्तु उसका अपने घर में स्वागत करना और जो कुछ उत्तम से उत्तम वस्तु हमारे पास है, वह उसके सम्मुख भेंट करना ही हमारा कर्त्तव्य है। *—रवीन्द्रनाथ टैगोर*

❑ आदमी खरा है कि नहीं, यह रुपये के सम्पर्क में आने पर ही पहचाना जाता है। इस जगह प्रतारणा नहीं चलती, इसलिए यहाँ मनुष्य का वास्तविक रूप प्रकट हो जाता है। *—शरतचन्द*

❑ मनुष्य का चरित्र ही उसकी भावी सफलता या विफलता का निर्णायक है। *—रहीम*

❑ मनुष्य का आचरण उन विभिन्न शक्तियों का परिणाम है, जो उसके जीवन पर अपनी क्रियाएँ और प्रतिक्रियाएँ करती है और हम स्वयं ही जिसका केन्द्र-बिन्दु हैं, चूल हैं, प्रधान आधार हैं ऐसे ही परिणामों के संयुक्त फलों से समाज का या सामाजिक विधान का निर्माण होता है।

—डॉ. पट्टाभिसीतारमैया

❑ गुनाह करना हर किसी के लिए बुरा है। विद्वान करे तो और भी बुरा है। शैतान से लड़ने के हथियार वाले ही कैद हो जाएँ तो फिर दुनिया की हिफाजत कैसे होगी?

—शेखसादी

❑ खाने और सोने का नाम जीवन नहीं है। जीवन नाम है सदैव आगे बढ़ते रहने की लगन का।

—प्रेमचन्द

❑ जीवन वह समुद्र है, जिसे साहस, सतर्कता और उत्साह के साथ मथा जाय, तो उसमें से चौदह ही नहीं, असंख्य रत्न प्राप्त हो सकते हैं।

—महर्षि कर्वे

❑ हमारे भीतर जो कुछ भी अद्वितीय और मूल्यवान है, वह केवल झलकियों में प्रकट होता है। अगर हम उन झलकियों को पकड़ना और सँभालकर रखना नहीं जानते, तो समझिए कि हमारे अन्दर विकास की कमी है, उल्लास की कमी है।

❑ मनुष्य, पीड़ा और भय में अन्य प्राणियों की भाँति चीखता-पुकारता है, परन्तु अन्य प्राणियों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के विपरीत, केवल मनुष्य ही है, जो मुसकरा सकता है व हँस सकता है।

- जब हम यह सोचने लगते हैं कि अधिकांश लोग हमसे अच्छे नहीं हैं तो संसार हमें अरुचिकर लोगों से भरा हुआ प्रतीत होने लगता है।

- मनुष्य इस संसार में हमेशा से अजनबी रहा है। जब पहली बार उसने शेष सृष्टि से छिटककर अपने अन्दर मानवीय गुणों का समावेश कर लिया, वह अजनबी बन गया, इस लाइलाज अजनबीपन से हमारी लाइलाज अनिश्चितता ने जन्म लिया है, हममें लालसा जागी है कि संसार को मनुष्य की बनाई चीजों से भर दिया जाए और हमें ईश्वर की जरूरत महसूस हुई, जिसने हमें पृथ्वी पर अपना प्रतिनिधि बनाया है।

- भरा-पूरा जीवन ही आसानी से याद रखा जा सकता है। मोड़ों, प्राप्तियों, निराशाओं, आश्चर्यों और संकटों से भरा हुआ जीवन ही अपने पीछे अपने निशान छोड़ जाता है। खाली जीवन की गिनी-चुनी बातें ही धुँधली पड़ जाती हैं और पूरी तरह याद नहीं रहतीं।

- जब हममें जीवित प्राणी की प्रशंसा करने की क्षमता न रह जाए, तो इसे हमें अपने भीतर रेंगने वाली मौत की निशानी समझना चाहिए।

—एरिक हाफर

- जिन्दगी की जिम्मेदारी कोई डरावनी चीज नहीं है। वह आनन्द से ओत-प्रोत है, बशर्ते कि ईश्वर की रची हुई जीवन सरल योजना को ध्यान में रखते हुए अयुक्त वासनाओं को दबाकर रखा जाय, पर जैसे आनन्द से भरी हुई वस्तु है वैसे ही शिक्षा पूर्ण भी है। यह पक्की बात समझनी चाहिए कि जो जिन्दगी को जिम्मेदारी से वंचित हुआ, वह सारे शिक्षण का फल गँवा बैठा।

- बहुतों की धारणा है कि बचपन से जिन्दगी की जिम्मेदारी का ख्याल बच्चों में पैदा हो जाए तो उनका जीवन ही कुम्हला जाएगा। परन्तु जिन्दगी की जिम्मेदारी का भान होने से अगर जीवन कुम्हलाता हो तो फिर वह जीवन-वस्तु रहने के लायक नहीं है। जीवन अगर भयानक वस्तु है, तो बच्चों को उसमें दाखिल मत करो और खुद भी मत जियो, पर अगर जीने लायक वस्तु हो तो अपने बच्चों को उसमें जरूर दाखिल करो और उन्हें जिम्मेवारी के साथ सिखाओ।

—विनोबा

- सच्चा आदमी एक मुलाकात में ही जीवन बदल सकता है, आत्मा को जगा सकता है और अज्ञान को मिटाकर प्रकाश की ज्योति फैला सकता है।

—प्रेमचन्द

- जो व्यक्ति निर्मल चित्त, मात्सर्यरहित, प्रशान्त, शुद्ध चरित्र, समस्त जीवों का सुहृद और हितवादी तथा अभिमान एवं माया से रहित होता है, उसके हृदय में भगवान वासुदेव सर्वदा विराजमान रहते हैं।

- हमारे जीवन का एक प्रधान उद्देश्य होना चाहिए और सारे अन्य सहायक उद्देश्य हमारे मुख्य लक्ष्य की पूर्ति ही के होने चाहिए।

—नार्मन प्रिचड

- आपकी सबसे बड़ी अभिलाषा यह होनी चाहिए कि आप अपने मनुष्यत्व का विकास करें, अपने जीवन को सुन्दर एवं ऐश्वर्यशाली बनायें और अपना अधिकाधिक समय मानवीय गुणों को संगठित करने में ही व्यतीत करें।

—स्वेट मार्डन

- जीवन का एक क्षण सोने की करोड़ों मुद्राएँ देने पर भी नहीं मिल सकता, यदि उसे नष्ट किया जाए तो इससे अधिक हानि क्या हो सकती है ?

—चाणक्य

- निर्माण और सुरक्षा,
  कर्म में अहंभाव का त्याग,
  कर्म करें पर फलाशा नहीं,
  विकास पथ पर उत्तरोत्तर बढ़ें,
  यही मनुष्य मात्र का परम धर्म है।

—ताओ तेह किंग। १०

- जो कोई दान दें, वह सरलता के साथ दान दें। जो कोई दया करें, वह प्रसन्नतापूर्वक करें।
  प्रेम वह है जो निष्कपट हो।
  बुराई से घृणा करनी चाहिए।
  भलाई से विमुख न हो।
  सबके साथ भाई-चारा और प्रेम का व्यवहार करो।
  प्रतिस्पर्द्धा हो तो आदर-सत्कार में।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आलसी न बनें।

दुःख के समय भी आशावान बने रहो।

अतिथि सत्कार व सज्जनों की सहायता करो।

सताने वालों को भी सताओ नहीं।

भले काम करो, सबसे मेल रखो।

प्रतिशोध की भावना का परित्याग करो।

भलाई से बुराई को जीतो।

—रोमियो १२/ ८/ २१

- ७० वर्ष की आयु में आदमी का जीवन औसतन इन आँकड़ों के अनुसार बीतता है—२४ वर्ष सोने में, ११ वर्ष नौकरी, उद्योग, काम-काज, आठ वर्ष खेल-कूद और मनोरंजन, ७ वर्ष खाने में, ६ वर्ष भ्रमण, ३ वर्ष शिक्षा, ३ वर्ष अन्य पढ़ाई, ३ वर्ष बात-चीत और कुल ६ महीने उपासना में। यह आँकड़े बताते हैं कि आज का मनुष्य कितनी बेसमझदारी से जी रहा है ?

- मनुष्य जीवन देकर ईश्वर ने अपना चरित्र अनुग्रह कर दिया, अब तुम्हारी बारी है कि उसकी दुनिया में शान्ति के बीज बोओ और उस पर बदले में अनुग्रह करो।

- **दुर्लभं मानुष जन्मामूल्यं एकोऽपि तत्क्षणः।**
  तथापि काकिणीतुल्यं तद्व्ययं कुर्वते जनाः।।
  मनुष्य का जन्म दुर्लभ है, उसका एक क्षण भी अमूल्य है, तो भी बड़ा आश्चर्य है कि मनुष्य कौड़ियों के समान उसका व्यय करते हैं।

- श्रुति कहती है—
  उत्थाने ते पुरुष नाव यानं जीवातं ते दक्षता तु कृणोमि।
  तू ऊँचा उठ, नीचे मत गिर। ऊपर उठने योग्य तुझे अनेक शक्तियों से सुसम्पन्न बनाया गया है।

- जीवन केवल बिताने के लिए नहीं दिया गया है, तो श्रेष्ठ बनने के लिए दिया गया है।

- अपने निज की शक्ति को अपने व्यवहारों से प्रकट करो। मनुष्य को अपना जीवन अपने ही विचारानुसार ढालना चाहिए।

- जीवन जीना सब कलाओं से ऊपर है। जो उसे सुन्दरतापूर्वक जी सका, वह सच्चा कलाकार है।

- जीवन का लक्ष्य है—आन्तरिक परिशोधन, साहस और परमार्थ। जो उन्हें पकड़े रहता है, वह मार्ग से भटकता नहीं।

- मानव धर्म तो है—विश्वप्रेम और गौरव-सिद्धि यानी अपने आपको अपने बन्धुओं के लिए अर्पण कर देना और मानवीय जीवन को उन्नत करना यह ही सत्य धर्म है, जिससे मनुष्य अमर होता है।

- जीवन का महान सदुपयोग उसे ऐसे उद्देश्य के लिए अर्पित करने में है, जो हमारे बाद भी बना रहे।

- जिन्दगी की कीमत जीने में है, दिन बिताने में नहीं।

- मनुष्य को बड़ी सजगता के साथ जीवन को व्यवस्थित बनाना सीखना चाहिए। अव्यवस्था से समय और शक्ति दोनों का दुर्व्यय होता है। एक बार व्यवस्थित जीवन की आदत बन जाने पर कार्यक्रम में तेजी और खूबसूरती आ जाती है। भीतरी और बाहरी व्यवस्था उन्नति की सबसे पहली एवं सर्वोपरि सीढ़ी है।

- दृढ़ मनुष्य के लिए सदा ही सुअवसर और सुभीता है, हमारे जीवन का उद्देश्य केवल इच्छाशक्ति को दृढ़ बनाना है।

- विश्वास करो कि अधर्मी जीवन बिना मतलब का होता है। बिना सिद्धान्त का जीवन बिना पतवार के जहाज के सदृश्य है। जैसे कि यह जहाज इतस्ततः फिरता रहेगा। ठीक स्थान पर नहीं पहुँच पाता। ऐसे ही अधर्मी जीवन भी संसार में मारा-मारा फिरकर अपने उद्दिष्ट स्थान पर नहीं पहुँचता है।

- जीवनोद्देश्य की खोज ही सबसे बड़ा सौभाग्य है। उसे और कहीं ढूँढ़ने की अपेक्षा अपने हृदय में ढूँढ़ना चाहिए।

- ईश्वर कैसा है और कहाँ है ? इस झंझट में भले ही न पड़ो, पर यह तो देखो कि तुम्हें किसलिए बनाया और किस तरह जीने के लिए कहा।

- जीवन का वास्तविक सुख उन्हीं बिरले भाग्यवानों को प्राप्त है, जो जीवन के एक समझौते के रूप में नहीं एक चुनौती के रूप में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

देखते हैं। चुनौती स्वीकारने का अर्थ है—बढ़िया तरीके से पूरी ईमानदारी के साथ काम करना।

- जीवन एक अभिनय है और मृत्यु उसकी पटाक्षेप। इस अभिनय को हमें इस प्रकार करना चाहिए कि दूसरों की प्रसन्नता बढ़े और अपनी प्रशंसा हो।
- यह शरीर क्षणभंगुर है, इसमें रहते हुए जो तप का उपार्जन नहीं करता, वह मूर्ख मरने के बाद अपने कर्मों का फल पाता है तो बहुत पश्चात्ताप करता है।
- जीवन को पूर्ण बनाने वाली तीन बातें हैं—
  (१) कठिन परिश्रम करने का उत्साह और अभ्यास।
  (२) कर्त्तव्य-धर्म में अटूट श्रद्धा और तत्परता।
  (३) प्राणिमात्र की हितकामना और सेवा-परायणता।
- **सोपानभूतं स्वर्गस्य मानुष्यं प्राप्य दुर्लभम्।**
  तथात्मानं समाधत्स्व प्रभ्यसे न पुनर्यथा।।
  सुरदुर्लभ मानव शरीर जो बड़े पुण्यों से प्राप्त होता है, स्वर्गप्राप्ति का सोपान है। इसे शुभ कर्मों में लगाना चाहिए, ताकि मनुष्य अवनति, पथभ्रष्टता, पतन की ओर अग्रसर न हो सकें।
- मनुष्य को अपना महत्त्व समझ लेने दो, फिर वह सब वस्तुओं को अपने पैरों के नीचे कर लेगा, अपने बस में कर लेगा।
- जीवन स्पंज की तरह है, उसमें जो भी भला-बुरा भरोगे भर जाएगा।
- जीवन के अनेक पक्ष हैं। आवश्यक है कि उनके सभी पक्षों पर समुचित ध्यान दिया जाए और जो जिस दिशा में किया जाना आवश्यक है, उसे परिपूर्ण उत्साह के साथ किया जाए।
- जीवन एक सुयोग है, उसका परिपूर्ण लाभ उठाया जाए। जीवन एक स्वप्न है, जिसे साकार करके दिखाया जाए। जीवन एक आनन्द है, जिसका आनन्द उठाया और बाँटा जाए। जीवन एक चुनौती है, जिसका सामना किया जाए। जीवन एक संघर्ष है, जिसे बहादुरी के साथ लड़ा जाए। जीवन एक कर्त्तव्य है, जिसे पूरी तरह निभाया जाए। जीवन एक खेल है, जिसे खिलाड़ी की भावना से खेला जाए। जीवन एक गीत है, जिसे तन्मयतापूर्वक गाया और सुना जाए। जीवन एक वरदान है, जिसका उपयोग मिलजुलकर किया जाए। जीवन एक रहस्य है, जिसका उद्घाटन करके दिखाया जाए। जीवन एक यात्रा है, जिसे अनवरत चला जाए और लक्ष्य तक पहुँचा जाए।
- मेरा अन्तःकरण कहता है कि इस पृथ्वी पर मनुष्य का अवतरण वास्तव में दूसरों के लिए ही हुआ है। कोटि-कोटि रूपों में बिखरा हमारा मानव-समाज एक अखण्ड आत्मीयता के प्रवाह में बँधा है। मैं प्रतिक्षण यही अनुभव करता हूँ कि मेरे अन्तरीय और बाह्य जीवन के निर्माण में कितने अनुभूति से उद्दीप्त होकर मेरा अन्तःकरण सर्वदा आतुर रहता है कि मैं कम से कम इतना तो इस दुनिया को दे सकूँ, जितना कि मैंने उससे अभी तक लिया है।
- ईमानदारी सर्वोत्तम नीति है। कोई उत्तराधिकार, ईमानदारी के सदृश बहुमूल्य नहीं है। जिस देश के बुद्धिजीवी लोग अपनी बुद्धि का प्रयोग ईमानदारी के साथ करना छोड़ देते हैं, वह देश सब प्रकार से दीन-हीन और नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है। ईमानदारी मनुष्य ईश्वर की सर्वोत्कृष्ट कृति है। ईमानदारी, वचन का पालन और उदारता—ये तीन ऐसे गुण हैं जो स्वाभिमान के साथ अनिवार्य रूप से रहते हैं। जो मनुष्य स्वाभिमानी होगा, वह अवश्य ही ईमानदार होगा। मनुष्य की प्रतिष्ठा ईमानदारी पर ही निर्भर है।
- अल्बर्ट स्वाइत्जर ने अपने एक सन्देश में कहा है—"आदर्शों की अपनी इतनी प्रचण्ड शक्ति है जो नापी नहीं जा सकी। लगता भर ऐसा है कि यह घाटे का सौदा है, जिसे दुनियादारी के व्यवहार में समुचित जानकारी न रखने वाले भावुक लोग अपनाया करते हैं, किन्तु बात ऐसी नहीं। मनुष्य का आत्मबल इसी आधार पर प्रकट और विकसित होता है कि वह कितनी सच्चाई और निष्ठा के साथ आदर्शों को अपने जीवन में उतार सका। जो इतना कर पाते हैं वे जानते हैं कि आदर्शवादिता मनुष्य को इतना प्रचण्ड बल प्रदान करती है, जिसके निमित्त लोकश्रद्धा एवं सहायता खिंचती

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हुई चली आती है। महामानव बनने का यही एक मार्ग और साधन है कि व्यक्ति आदर्शवादी बने और अपने भीतर प्रचण्ड आत्मबल अनुभव करे, जिसकी तुलना में और कोई चिन्तनशक्ति इस संसार में हो नहीं सकती।

❑ भोजन की मात्रा को आधा कर दो, पानी जितना पीते हो उसका दूना पीओ। जितना हँसते हो उसका तिगुना हँसो, चौगुना व्यायाम करो। बुरी आदतों को छोड़ो। खराब संगति में रहने की अपेक्षा अकेले ही रहो। कभी हतोत्साह मत होओ। बुरे विचारों को अपने मस्तिष्क में स्थान न दो।

❑ हाथों की शोभा दान देने में है, सिर की शोभा बड़ों के चरणों में गिरने में है, मुख की शोभा सत्यभाषण में है, बलशाली भुजाओं की शोभा असहायों की रक्षा करने में है, हृदय की शोभा सद्वृत्तियों को धारण करने में है, कानों की शोभा शास्त्रश्रवण में है।

❑ वायुयान यदि किसी स्थान से सीधी रेखा में उड़ता चला जाय तो वापस अपने स्थान पर आ जाएगा, क्योंकि पृथ्वी गोल है, पर यह वायुयान उड़ाने के प्रयास अब तक ध्रुवीय क्षेत्रों के ऊपर से उड़ाने का प्रयत्न नहीं किया गया। इतना ही नहीं, इन दिनों राकेट और उपग्रहों को पृथ्वी के चारों ओर भ्रमण के लिए भेजा गया है, उन्हें भी ध्रुव क्षेत्र से ऊपर से नहीं उड़ने दिया गया है। उनकी दूसरी ही दिशाएँ, कक्षाएँ निर्धारित की गई हैं, क्योंकि इस बात का पूरा भय है कि ध्रुव प्रदेश के ऊपर उड़ने वाले यान अपनी यात्रा सुरक्षित रूप से जारी नहीं रख सकते, वे बीच में ही कहीं गुम हो जाएँ।

यदि हम सीधी राह पर चलें तो यात्रा का अन्त वहीं होगा, जहाँ से आरम्भ हुआ है। सद्भावनाओं और सत्प्रवृत्तियों के दो पहियों की गाड़ी लम्बी यात्रा करने के उपरान्त अपने उद्गम केन्द्र पर जा पहुँचती है। हम ईश्वर से निकलते हैं अस्तु यदि सीधी और सही दिशा में रहें तो ईश्वरप्राप्ति के लक्ष्य तक सरलता-पूर्वक पहुँच सकते हैं, पर यदि जोखिम में डालने वाली दुष्प्रवृत्तियों के जाल में फँस जाएँ तो नष्ट और गुम होने के अतिरिक्त और क्या हाथ लगेगा ?

❑ मनुष्य में जो चेतनापूर्ण गतिमयता है, उसका कारण तो वह विराट शक्ति है, किन्तु कर्म गति की दिशा मनुष्य की अपनी है। परमात्मा विद्युत की भाँति गतिशीलता की शक्ति तो देता है, किन्तु उस शक्ति से संचालित मनुष्य यन्त्र किस ओर जाता है इसका उत्तरदायी वह नहीं है।

❑ मानव हृदय से बढ़कर और कोई तीर्थ नहीं। भगवान इसी में बसते हैं और वहाँ तक पहुँचने वाले को दर्शन दिये बिना नहीं लौटने देते।

❑ स्वच्छता अपनाओ। शरीर, वस्त्र, घर, उपकरण की ही नहीं मन की भी सफाई करो।

❑ दूध में पानी मिलाया जाए तो धुल जाएगा, किन्तु उसी से निकला हुआ मक्खन ऊपर तैरता रहेगा। आत्महीनताग्रस्त लोग मनुष्यों की भीड़ में वैसे ही बन जाते हैं, किन्तु ज्ञानी पुरुष अपना व्यक्तित्व बुरों के बीच में भी ऊँचा रखते हैं।

❑ मेघ समुद्र से झपटता, खारे को मीठा बनाता, नीचे से ऊँचा उठाता और बिना प्रतिफल की आशा के जी खोलकर बरसता है। इसी को कहते हैं—जीवन।

❑ जो एक उद्देश्य को अपने सामने रखता है, उसे सब वस्तुएँ प्राप्त हो जाती हैं।

❑ जो आदर्श के मार्ग पर चलने का कष्टकर जीवन स्वेच्छा से वरण करते हैं, वे न केवल स्वयं ऊँचे उठते हैं, वरन् मनुष्यता का स्तर ऊँचा उठाते हैं।

❑ मनुष्य जहाँ महापुरुषों को देखता है, वहीं उसे अपने बड़े होने का ज्ञान आ जाता है और जितना ही सच्चा इस महानता का दर्शन होता है, उतना ही निश्चित उसका महान बन जाना होता है।

❑ कितना सुन्दर जीवन हो यदि मनुष्य को इस बात का विश्वास हो जाय कि मानव-जीवन की मूल सत्ता में आनन्द है।

❑ चरित्र की रक्षा प्रयत्नपूर्वक करनी चाहिए। धन तो आता है और चला जाता है। धन से क्षीण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मनुष्य विनष्ट नहीं होता, परन्तु चरित्र से क्षीण मनुष्य का पूर्णतया विनाश ही हो जाता है।

❑ जीवन वृक्ष का तना है। ज्ञान-पल्लव सत्कर्मों का नियोजन। फूल उज्ज्वल चरित्र और फल-सेवा साधना का रसास्वादन।

❑ तुम्हारे जीवन के जो क्षण व्यतीत हो रहे हैं, उनको सादे और मीठे, पवित्र और सुन्दर, श्रेष्ठ और आशायुक्त, उच्च और महत्त्वाकांक्षा पूर्ण प्रेममय विचारों से भरो।

❑ किसी आदमी के चरित्रबल को उसके उन प्रयत्नों से नहीं मापना चाहिए, जो कि वह दबाव पड़ने पर करता है, वरन् उसके साधारण व्यवहार से ही उसके चरित्रबल को जाँचना चाहिए।

❑ काम का चुनाव करते समय अपने हृदय से कभी मत पूछो कि कौन-सा व्यवसाय करके हम प्रसिद्धि या धन प्राप्त कर सकेंगे। उसी काम को चुनो, जिसमें तुम अपनी मनुष्यता की सारी शक्ति लगा सकते हो और अपने को ऊँचा बना सकते हो। तुम्हारे लिए न तो धन की आवश्यकता है, न प्रसिद्धि की और न कीर्ति की, तुम्हें केवल महानता की जरूरत है।

❑ तुम सेवा करने के लिए आये हो, हुकूमत करने के लिए नहीं। जान लो कष्ट सहने और परिश्रम करने के लिए तुम बुलाये गये हो, आलसी होकर वार्त्तालाप में समय नष्ट करने के लिए नहीं।

❑ मनुष्य जीवन अपनी समस्त कला, अपने समस्त वैभव और ऐश्वर्य के साथ अन्त में मृत्यु का आश्रित हो जाता है। मृत्यु जीवन की सबसे अज्ञात पहेली, सबसे अन्तिम विजय है।

❑ पशु की परिभाषा करते हुए शास्त्र कहता है—**'पश्यति इति पशुः'** अर्थात् जो देखता भर है और देखे हुए का अनुसरण भर करता है, वह पशु है। 'मनुष्य' की परिभाषा करते हुए कहा गया है—**'मननात् मनुष्यः'** अर्थात् जो मनन-चिन्तन कर सकता है—विवेक, तर्क और औचित्य के आचरण पर निष्कर्ष निकालकर गतिविधि निर्धारित करता है, वह मनुष्य है।

❑ प्रकृति के रहस्यों को जितनी तत्परता से खोजा जा रहा है, उसी अनुपात से एक से एक बड़े रहस्यों और शक्तिस्रोतों का पता लगता चल रहा है। आदिम काल में मनुष्य भी अन्य पशुओं की तरह ही मात्र अपने शरीर पर निर्भर था। तत्परतापूर्ण शोधों ने अग्नि, विद्युत, अणु, ऊर्जा आदि अनेक शक्तियों को उसके वशवर्ती बना दिया। ज्ञान-विज्ञान की अभिनव उपलब्धियाँ ही उसे सशक्त और सुसम्पन्न बनाती चली जा रही हैं। यह सब तत्परतापूर्ण शोधों का ही परिणाम है। अन्य जीवधारी अभी तक असमर्थ एवं असहाय ही बने हुए हैं। यों प्रकृति का महान भण्डार उनके सामने भी खुला पड़ा है, जैसा कि मनुष्य के सामने।

❑ प्रकृति क्षेत्र में अधिक महत्त्वपूर्ण और रहस्यपूर्ण है चेतना का समुद्र। वह सूक्ष्मजगत् के रूप में इस समस्त ब्रह्माण्ड में हिलोरें ले रहा है। समुद्र को रत्नाकर, रत्नभण्डार कहा जाता है, पर वास्तविक सम्पदाएँ और शक्तियाँ चेतना के समुद्र में ही भरी पड़ी हैं। प्रकृति में तो उसी की कुछ तरंगें लहराती दिखती हैं। बीज रूप से वह ब्रह्माण्डीय चेतना मनुष्य के कण-कण में भरी पड़ी हैं, जो सम्पदाओं और विभूतियों का स्रोत, कारण और आधार है। हमारे भीतर और बाहर इतना कुछ है, जिसकी कल्पना करना तक अशक्य है। न तो ब्रह्माण्ड के विस्तार की कल्पना हो सकती है और न चेतना के अन्तरंग-बहिरंग स्तरों की गरिमा का मूल्यांकन कर सकना सम्भव है। हम अनन्त वैभव के भाण्डागार के बीचों-बीच ही तो निवास कर रहे हैं।

❑ दरिद्रता, अतृप्ति और अशान्ति दूर करने के लिए जिस वैभव की आवश्यकता है, उसकी उपलब्धि के दो ही पुरुषार्थ करने पड़ेंगे—एक तत्परतापूर्वक शोध और दूसरा विज्ञान की शक्तियों का पराक्रमपूर्ण उपयोग। जो यह चरण उठा सका उसके लिए ऐश्वर्य और आनन्द की कोई भी कमी नहीं रह सकती है। इसी दिशा में बढ़ चलने का राज-मार्ग साधनापथ कहलाता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

- धनकुबेर हैनरी फोर्ड ने अपनी आत्म-कथा में लिखा है—जहाँ तक मैं समझता हूँ जीवन एक सतत यात्रा है। इसमें कहीं कोई पड़ाव नहीं। जो सोचता है—मुझे करना था कर चुका—समझना चाहिए वह अवनति की ओर जा रहा है। गतिशील रहना ही जीवन का चिन्ह है।
- भौतिक पदार्थों के न रहते हुए भी मनुष्य प्रसन्न रह सकता है। देवता ऐसे ही मनुष्य की सहायता करते हैं।
- जो किसी से द्वेष नहीं करता, जिसमें अहंकार की मात्रा नहीं और जो विषयों से निवृत हो चुका है वह सच्चा विवेकी पुरुष है।
- मनुष्य को अपने उद्धार के लिए स्वयं अपना दोष या मूर्खता स्वीकार करना अनिवार्य है।
- जो शीलवान है, विद्वान है, जो धर्म स्थित है, जो सत्यवादी है, जो अपने कर्मों को करने वाले हैं, ऐसे आदमियों को लोग प्यार करते हैं।
- सत्य बोलो। क्रोध न करो। माँगने पर थोड़ा भी दो। तीनों बातों के करने से आदमी देवताओं के समीप पहुँचता है।
- खुद को कमजोर मत समझो, निर्भयता से बढ़ते रहो। तुममें वह शक्ति है कि दुनिया के बड़े-बड़े दुश्मन तुम्हें परास्त नहीं कर सकते।
- तुम ऐसी किसी भी वस्तु को नहीं बता सकते जो ज्ञान से परे हो, तुम कभी यह मत सोचो कि कोई भी काम तुम्हारी शक्ति से बाहर है। तीव्र इच्छा वाले आदमी के वास्ते कुछ भी असम्भव नहीं है।
- जो मनुष्य दूसरे की सहायता के लिए आत्म-त्याग करना जानता है, खुद कष्ट सहकर दूसरों को सुख पहुँचाता है, वह बुद्धिमान है, उसे उसकी इस बुद्धिमानी का भरपूर फायदा मिलेगा। सज्जन स्वभाव का एक भी व्यक्ति इस पृथ्वी पर भूखा-नंगा नहीं देखा जाता है।
- मनुष्य अपनी दुर्बलता से भली-भाँति परिचित रहता है, परन्तु उसे अपने बल से भी अवगत होना चाहिए।
- अपनी प्रतिभा का हर क्षण ख्याल रखो, इसके बदले वह तुम्हें प्रति घड़ी नया मार्ग सुझावेगी।
- **आरंभगुर्वी क्षयिणी क्रमेण लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात्।**
  दिनस्यपूर्वार्ध परार्धभिन्नछायेव मैत्री खलु सज्जनानाम्।।
  जैसे प्रातःकाल की छाया प्रारम्भ में तो बहुत बड़ी और फिर छोटी होने लगती है, यही दशा दुष्टों की मित्रता की है और सज्जनों की मित्रता दोपहर में तो बहुत छोटी, परन्तु अन्त में बढ़ती ही चली जाती है।
- **सुहृद्भिराप्तैरसकृद्विचारितं स्वयं च बुद्ध्या प्रविचारितं पुनः।**
  करोति कार्यं खलु यः स बुद्धिमान् स एव सौख्यं बहुधा समश्नुते।।
  मित्रों और बुद्धिमान पुरुषों से बार-बार सम्मति लेकर और स्वयं अपने बुद्धि से विचार कर जो पुरुष काम करता है, वह बुद्धिमान कहलाता है और सदा सुख पाता है।
- **सुगन्धिं दर्शनीयं च लोकरंजनतत्परम्।**
  दृष्ट्वा कुसुममारामे सद्भिरप्यभिनंदितम्।।
  प्रसादः सुमुखः शीलं चारित्र्याणां सुवासितः।
  उद्युक्तो लोकसेवायां भवेयामिति भावये।।
  सुगन्धित, सुन्दर लोगों को प्रसन्न करने वाले और साथ ही सबके द्वारा प्रशंसित होने वाले फूल को देखकर मेरे मन में आता है कि हमको भी प्रसन्नमुख, शील और चरित्र की सुगन्धि से सुवासित और लोकसेवा में तत्पर होना चाहिए।
- **जीवितो यशो यस्य कीर्तियस्य स जीवति।**
  अयशोऽकीर्ति संयुक्तो जीवन्नपि मृतोपमः।।
  यशस्वी और कीर्ति वाले मनुष्य का ही जीवन है, कीर्तिहीन मनुष्य जीवित हुआ भी मरे के समान है।
- मनुष्य के भीतर पशु और देव दोनों हैं। पशु का कोलाहल चलता रहता है, पर देव को प्रयत्नपूर्वक जगाना और सधाना पड़ता है।
- विद्वान वह है जिसने आत्मलाभ पाया और अपने को उत्कृष्ट बनाया।
- अहंकार से मनुष्य राक्षस बनते हैं। सज्जनता और नम्रता के बलबूते ही मनुष्य देवत्व से अलंकृत हैं।
- जो मनुष्य जितेन्द्रिय, निर्विकार तथा अभिमान रहित है, उससे देवता भी ईर्ष्या करते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ जिस तरह नदी के एक चुल्लू भर पानी में उसके सभी गुण होते हैं, उसी तरह पुरुष में भी प्रभु के सब गुण होते हैं।

❑ यह न भूलना चाहिए कि जो दैवी अंश तुममें है सो दूसरे में भी है।

❑ उद्यम, साहस, धैर्य, बल, बुद्धि और पराक्रम ये छह गुण जिस मनुष्य में हैं, वह सब कुछ पाता है।

❑ मनुष्य तो प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ है। गाय, बैल, भैंस, घोड़े आदि सभी सशक्त प्राणियों में संततिक्रम सीमित है। कम सन्तान जनने वाले हाथी और ढेल सौ-सौ वर्ष जीते हैं। शेर चालीस, घोड़ा तीस, गाय पच्चीस, कुत्ता पन्द्रह, बकरे-बकरी पन्द्रह वर्ष जीते हैं। जो प्राणी जितने अधिक और जितनी जल्दी बच्चे उत्पन्न करता हो, तो समझना चाहिए कि वह उतनी कम आयु प्राप्त कर सकेगा और उतना ही दुर्बल बनकर रहेगा। जीवन विज्ञान के ये तथ्य पूरी तरह मनुष्य पर भी लागू होते हैं।

❑ जो संसार के समस्त पदार्थों में दोष ही ढूँढ़ता है, वह अन्ततः बहुत घाटे में रहता है। सिर्फ उन्होंने ही कुछ पाया है, जिन्होंने संसार को सत्य समझा है और विनम्र होकर आराधना की है।

❑ जो मनुष्य सदा अपने को धिक्कारता रहता है और अपने स्वभाव की निन्दा करता है, वह अपने आत्म-गौरव को खो बैठता है।

❑ सत्य और निडरता दोनों का साथ है, सच्चा आदमी हमेशा निर्भय रहता है।

❑ तुम्हारी बाहरी दशा कैसी ही साधारण क्यों न हो, किन्तु यदि अन्तःकरण असाधारण है तो निश्चय समझो तुम अपनी सारी परिस्थिति को बदल सकते हो।

❑ यदि तुम्हें महान पूर्व पुरुषों की भाँति काम करने का अवसर न मिले, तब भी कम से कम अपने विचार तो उनकी भाँति रखने चाहिए और उनकी आत्मा के महत्त्व का अनुसरण करना चाहिए।

❑ जो कुछ सीखना है, जवानी में सीख लो। मौज उड़ाने का अवसर तो उसके पश्चात् भी आ सकता है। आराम मुर्दों के लिए है और काम जीवितों के लिए।

❑ सच्चा सुधारक न केवल पाप से घृणा करेगा, वरन् उस स्थान को अच्छाइयों से भरने का उत्साहपूर्वक प्रयास करेगा।

❑ मानव ! सदैव जाग्रत रहो। जाग्रत की बुद्धि सदैव वर्धमान रहती है, जो सुप्त है वह सुखी नहीं होता, जाग्रत रहने वाला ही सदैव सुखी रहता है।

❑ मनुष्य का व्यक्तित्व भी अपने आप में एक छोटा विश्व है। उसकी भीतरी और बाहरी सत्ता में इतना कुछ विद्यमान है, जिसके सहारे आज का दयनीय दुर्दशाग्रस्त जीव कल सर्वसमर्थ ब्रह्म बन सके, पर वह दिव्य, प्रसुप्त पड़ा है। उसे कैसे जगाया और कैसे प्रयोग किया जाय ? यह ऐसा विज्ञान है जिसे जानने पर विश्व की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धियाँ करतलगत होती हैं।

❑ अगर हमें मर जाने के बाद भी दुनिया की स्मृति में ताजे रहने की आकांक्षा है, तो हमें या तो ऐसी चीज लिखनी चाहिए, जो सबके पढ़ने योग्य हो अथवा ऐसे काम करने चाहिए, जो लिपिबद्ध किए जाने के योग्य हों।

❑ यदि मनुष्य सीखना चाहे, तो उसकी हर एक गलती कुछ न कुछ सिखा देती है।

❑ जीवन को श्रेष्ठ बनाने में श्रेष्ठ शिक्षा की जरूरत केवल शुद्धाचरणों तथा पवित्र भावों की है। हर एक बुरे विचार तुम्हारे इसी जीवन को नहीं बल्कि भावी जीवन को भी गिरा देते हैं।

❑ धर्म का मुख्य मार्ग यह है कि कर्त्तव्यपालन करो तो वह अवश्य मिल जाएगा। कर्त्तव्य पालन करने में मनुष्य से डरने की जरूरत नहीं है। ईश्वर से डरने की जरूरत है।

❑ जिन्दगी उसी की बड़ी होती है, जो अपने समय का अच्छा उपयोग करता है। जो समय को नष्ट करता है, उसकी जिन्दगी बड़ी होने पर भी बहुत छोटी समझी जाती है। कर्ममय जीवन ही दीर्घजीवन है और आलस्यमय जीवन ही मृत्यु है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

- मनुष्य विचारशील होने से मनुष्य होता है और निःस्वार्थ कर्म करने से वही देवता भी हो सकता है।
- हृदय में दया रखना, स्वभाव को नम्र रखना और दान में प्रवृत्ति रखना; इन तीनों बातों से मनुष्य सद्गति को प्राप्त करता है।
- जो अपनी पाशविक वृत्तियाँ जाग्रत करके दैवी वृत्तियों को दबा देता है, उसके मानव होने का केवल यही प्रमाण रह जाता है कि दूसरे मनुष्यों की तरह दो हाथ-पैर हैं।
- स्वाभिमानी और पवित्र हृदयी पुरुष निर्धन होने पर भी श्रेष्ठ गिना जाता है।
- जिसके बाल सफेद हो गये हैं, वह बड़ा नहीं, बड़ा वह है, जिसके विचार और कार्य बड़प्पन के हैं।
- अधभरे घड़े छलकते हैं, पर पूरे भरे हुए घड़े शान्त रहते हैं। इसी प्रकार छिछोरे बहुत बकवास करते हैं, पर गम्भीर सारगर्भित बोलते हैं।
- प्रलोभन और विपत्ति, यही दो मनुष्य की परीक्षा हैं। जो प्रलोभन पर फिसलता नहीं और विपत्ति में विचलित नहीं होता, वही वीर पुरुष है।
- व्यक्ति का अन्तःकरण वह न्यायालय है, जिसमें परमेश्वर न्यायाधीश बनकर विराजमान रहता है।
- वैरागी की तरह रहें। सन्त की तरह जिएँ। सम्पन्न जैसे उदार बनें और योद्धाओं जैसा जीवन अपनाएँ। प्रसन्नता और सफलता की कमी न रहेगी।
- किसी व्यक्ति की महानता की परख यह है कि अपने से छोटे के लिए क्या सोचता और क्या करता है ?
- मनुष्य का व्यवहार ही वह दर्पण है, जिसमें उसका व्यक्तित्व भली-भाँति देखा जा सकता है।
- मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है। वह भले-बुरे जिस भी रास्ते को अपनाता है, उसी के अनुरूप भाग्य बना लेता है।
- मनुष्य पशुओं से इसलिए अधिक श्रेष्ठ है कि उसमें बुद्धिमत्ता और भावना की विशेषता रहती है।
- संग्रह के लिए मत ललचाओ, विभूतियों को इस हाथ से उस हाथ जाने दो। परिग्रह का बोझ जितना ही बढ़ता है, मनुष्य उचित को सोचने और करने में असमर्थ होता जाता है।
- मनुष्य उदार हो, तो फरिश्ता और नीच हो तो शैतान। ये दोनों मानवीय वृत्तियों ही के नाम हैं।
- प्रतिभा अपना मार्ग स्वयं खोजती है और दीपक स्वयं लेकर चलती है।
- मनुष्य के मस्तिष्क की तरह लचीली चीज और कोई नहीं है। बन्द की हुई भाप की तरह जितना ही दबाव इस पर पड़ता है, उतनी ही शक्ति से यह दबाव के साथ लड़ती है, जितना अधिक काम इस पर आ पड़ता है, उतना ही अधिक यह उसे पूरा कर लेती है।
- मनुष्य की असफलता और पराजय के कारणों में बहुधा उसकी वह मूर्खता होती है, जब वह दूरवर्ती परिणाम को दृष्टिगत न रखकर सोचता, विचारता और कार्य करता है। संकट के समय चाहे वह एक व्यक्ति का संकट हो अथवा राष्ट्र का, सबको एक बार बैठकर यह निश्चय कर लेना आवश्यक हो कि यह जो एकाएक घटना-सी घटित हो गई है, उसके अन्तिम निष्कर्ष क्या हो सकते हैं ?
- सोने के पात्र में गंगाजल की महिमा कम हो जाती है, क्योंकि अविवेकीजन किसी वस्तु का मूल्यांकन बाह्यदृष्टि से करते हैं। शरीर की उपयोगिता निःसन्देह बहुत अधिक है, पर इसे इतना न सजाओ कि तुम्हारी दिव्य-आत्मा का महत्त्व कम पड़ जाए।
- जो मनुष्य अपनी इन्द्रियों को वश में रख सकता है, अपने दिमाग पर काबू रख सकता है और जो मानव प्रकृति को भलीप्रकार समझता है, संसार में वही सफल और सुखी हो सकता है।
- जब कोई मनुष्य चुप रहता है, तब या तो मूढ़ होता है या ज्ञानी। जब मनुष्य बहुत बक-बक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करता है, तब या तो भोला होता है या अहंकारी। जब मनुष्य बहुत मधुर शब्द बोलता है, तब या तो वह धूर्त होता है या सुसंस्कृत।

- इस संसार में परमात्मा के विशिष्ट प्रतिनिधि देवतागण भी मौजूद हैं, वे हैं—सदाचारी एवं परोपकारी सत्पुरुष।
- जिस प्रकार एक मूर्तिकार अनगढ़ पत्थर में से धीरे-धीरे अपनी इच्छानुसार मूर्ति बना लेता है, उसी प्रकार उत्तम जीवन के अभिलाषी साधक को भी अपने अनगढ़ चित्त पर कार्य करना चाहिए, यहाँ तक कि वह उसको अपने आदर्श के अनुसार बना ले।
- जिन्होंने शरीर को चकनाचूर कर डाला है, वे वीर नहीं कहलाते हैं। धन्य हैं वे वीर जो जितेन्द्रिय हैं।
- विपत्ति में पड़ने पर और प्रलोभन सामने आने पर ही मनुष्य की सच्ची परीक्षा होती है। जो इन परीक्षाओं में धर्म से नहीं डिगता, समझना चाहिए वह देवत्व के निकट पहुँच गया है।
- **यस्मिन् जीवति जीवन्ति बहवः स तु जीवति।**
  काकोऽपि किम्न कुरुते चंच्वास्वोदरपूरणम्।।
  जिसके जीने के कारण अन्य बहुत-से प्राणी जीवन पाते हैं, वही मनुष्य जीवित माना जाता है, अन्यथा कौवा भी तो अपनी चोंच से ही अपना पेट भर लेता है। जो अपने लिए जीता है, वह तो निष्फल ही है।
- सत्कर्मों से होने वाला आनन्द ही सच्चा आनन्द है और इसी आनन्द के द्वारा हृदय की सद्वृत्तियों का विकास होता है और उत्तरोत्तर सत्कार्य करने के लिए मनुष्य अधिकाधिक प्रवृत्त होता है।
- यदि घर की छत ठीक नहीं है तो जिस प्रकार उसमें वर्षा का जल प्रवेश कर सकता है, उसी प्रकार यदि संयम का अभ्यास न हो तो मन में राग प्रविष्ट हो जाता है।
- समझदारी, साहसिकता और पुरुषार्थ-परायणता के समन्वय को प्रतिभा कहते हैं।
- प्रतिभावान स्वतन्त्र वातावरण में स्वतन्त्रतापूर्वक साँस लेता है, उसे घुट मरने की परिस्थिति किसी भी शर्त पर स्वीकार नहीं।
- महापुरुषों में ही महापुरुष उत्पन्न करने की क्षमता होती है। हाथियों के समूह में हाथी बढ़ते और पलते हैं। मूषक तो कुतरने वाली बिरादरी में ही बढ़ते हैं।
- क्षमताओं को अपव्यय से रोककर यदि उन्हें महान प्रयोजनों के लिए नियोजित किया जा सके तो कोई भी व्यक्ति साधारण से असाधारण बन सकता है।
- मनुष्य एक भटका हुआ भगवान है। सही दिशा पर चल सके तो उससे बढ़कर इस संसार में श्रेष्ठ और कोई नहीं।
- **नाप्राप्यमभिवाञ्छन्ति, नष्टं नेच्छन्ति शोचितुम्।**
  आपत्सु च न मुह्यन्ति, नराः पण्डितबुद्धयः।।
  जो अयोग्य वस्तुओं को प्राप्त करने की इच्छा न करे, नष्ट हुए पदार्थों के लिए शोक न करे, आपत्तिकाल में मोहित होकर कर्त्तव्य न छोड़े वही बुद्धिमान पण्डित है।
- **क्षिप्रं विजानाति चिरंशृंणोति, विज्ञायचार्थं भजते न कामात्।**
  नासम्पृष्टो व्युपयुंक्ते परार्थे तत्प्रज्ञानं प्रथमं पण्डितस्य।।
  जो कठिन विषय को भी शीर्ष जान सके, बहुत समय तक शास्त्रों का पठन, श्रवण और मनन करे, जितना ज्ञान हो, उसे परोपकार में लगावे, स्वार्थ भावनाओं का परित्याग करे, अनावश्यक स्थान पर मौन रहे, वह प्रज्ञान पण्डित होता है।
- **निशेवते प्रशस्तानि, निन्दितानि न सेवते।**
  अनास्तिकः श्रद्दधान, एतत्पडिण्तलक्षणम्।।
  सदा धर्मयुक्त कर्मों में प्रवृत्त रहे, अधर्म युक्त कर्मों का त्याग करे, ईश्वर, वेद और सदाचार पर निष्ठा रखे एवं श्रद्धालु हो, यह पण्डितों के लक्षण हैं।
- कृष्ण भगवान ने महाभारत में कहा था कि कुछ लोग इस संसार में प्रवृत्ति मार्ग पर उपदेश देते हैं, कुछ निवृत्ति का, किन्तु मैं निवृत्ति मार्ग वाले अकर्मण्यों से सहमत नहीं हूँ क्योंकि वे शक्तिहीन हैं, मैं श्रीकृष्ण के उपर्युक्त कथन का अनुकरण करता हूँ।
- जो है सो है, जो हुआ सो हुआ, जो होगा सो अच्छा होगा। तुम अतीत का दुःख न करो।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भविष्य से भयभीत न हो। वर्तमान बीत रहा है।

- चिन्ता के समय कातर होकर प्रभु का स्मरण करो। जो कुछ अपना समझते हो उस सबको उस असली मालिक को सौंप दो और फिर अपने आपको उनके चरणों पर भेंट चढ़ाकर निश्चिन्त हो जाओ, फिर तुम एक अद्भुत जीवन का सुख अनुभव करोगे। एक मुसलमान भक्त अपनी वाणी में इसी को कहते हैं—

उठ 'फ़रीदहा' जिकर कर, फिकर करेगा आप।
जिनका यह निश्चय नहीं, उनको है संताप।।

- सदैव अपने भविष्य जीवन पर गहरी दृष्टि रखो। उसे सत्कर्मों से भर दो। जिन्दगी में परिवर्तन होते ज्यादा वक्त नहीं लगता।

- अहंकार को त्याग दो। दूसरों में दोष देखने की दृष्टि को छोड़कर गुणदर्शी बनो। अपने हाथ पेश आने वाली प्रत्येक घटना में शुभफल की ही भावना रखो, क्योंकि संसार में सब कुछ व्यवस्थित रूप से चल रहा है। अतएव विपत्ति में, कष्ट में धैर्य रखो। देखो ! यह दुःख-दर्द तुम्हारे भविष्य के लिए छिपे हुए रूप में आशीर्वाद है—प्यारो ! चिन्ता और शोक के शिकार न बनो।

- अपने आपस के बर्ताव और व्यवहार को ठीक करो। अपनी किसी बात को दूसरों से हठ-पूर्वक मनवाने की चेष्टा न करो। अपनी भूल को मानभंग होने का झूठा भय मानकर स्वीकार करने में लज्जा-संकोच न करो। देखो ! भूल मान लेने से किसी प्रकार की हानि नहीं होती, बल्कि ठीक रास्ता हाथ आता है।

- वास्तव में तुमको किसी का डर नहीं। फिक्र नहीं, सन्देश नहीं, दर्द नहीं, तुम स्वयं को उसे सौंप दो।

- सब धर्मों में श्रेष्ठ हरि नाम जपना और निर्मल काम करना।

- खाली हाथ आये थे सो खाली हाथ चले। जो आज तुम्हारा है यह कल किसी और का था और परसों किसी और का होगा। न यह किसी का था न यह किसी का है। तुम इसको अपना समझकर प्रसन्न होते हो और यही प्रसन्नता तुम्हें अप्रसन्न कर रही है।

- परिवर्तन संसार की जान है। जिसको मौत समझते हो यही जीवन है। मिनट में तुम करोड़ों के वारिश और क्षण भर में लावारिश बन जाते हो। मेरा-तेरा, छोटा-बड़ा, अपना-बेगाना दिल से मिटा दो। ख्याल से हटा दो।

- क्यों बेफायदा चिन्ता करते हो ? किससे बेकार डरते हो ? कौन तुम्हें मार सकता है ? आत्मा न पैदा होता है, न मरता है।

- आत्म-समर्पण करना होगा भगवान के पास, मनुष्य के पास नहीं। भगवान ही अनन्त है, मनुष्य उसको पाने का एक 'बड़ा उपाय' या साधन है। साधन को लक्ष्य समझ लेने की भूल कभी नहीं करनी चाहिए।

- न यह जिस्म तुम्हारा है, न तुम इस जिस्म के हो। यह आग से बनता है और यह आग में मिल-जुल जाता है। मिट्टी से बनता है और मिट्टी में मिल जाता है। यह पानी से पैदा होता है और पानी में समा जाता है। यह हवा से भरा हुआ है और हवा में भर जाता है। न हड्डी रहती है, न जबान, कान, आँख का निशान बाकी रहता है, मगर फिर भी तुम्हारा वैभव वैसे का वैसा ही रहता है। फिर तुम सोचो कि तुम क्या हो ?

- **जे बडु आपि जाणै आपि अपि,**
नानक नदरी करमी दाति।
ईश्वर की महिमा अथवा प्रतिष्ठा का पूर्ण वर्णन वह स्वयं ही जानता है, परन्तु नानक इतना जानता है कि कृपा और अनुग्रह कर्मों के अनुसार आचरण करने पर होती है।

- **तद् बिन सिद्धी किने न पायां,**
करमी मिलें नहीं ठाक रहाई।
बल और महत्त्व जिसको देता है, उसे प्राप्त होता है और उसे भी तू न्याय के आधार पर कर्मों के अनुसार देता है।

- विद्वान पुरुष सुगन्धित पुष्पों के समान हैं, वे जहाँ जाते हैं, वहीं आनन्द साथ ले जाते हैं। उनका सभी जगह घर है और सभी जगह स्वदेश है। विद्या धन है। अन्य वस्तुएँ तो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org

www.vicharkrantibooks.org

उसकी समता में बहुत ही तुच्छ हैं, वह धन ऐसा है, जो अगले जन्मों तक भी साथ रहता है। विद्या द्वारा संस्कारित की हुई बुद्धि आगामी जन्मों में क्रमशः उन्नति ही करती जाती है और उसके जीवन उच्चतम बनते हुए पूर्णता तक पहुँच जाते हैं।

❑ **"चंगा या बुराइंसा बाचे धरम हजूर।"**

शुभकर्म और कुकर्म उस धर्मराज परमेश्वर के सम्मुख प्रगट हैं। इस लोक में, परलोक में सबको अपने ही कर्मों का फल मिलता है और का नहीं।

❑ हमारा लक्ष्य एक 'आध्यात्मिक मानवता'—एक देव-जाति का उत्पन्न करना है, पर जब तक सब लोग समस्त अहंकार को त्याग कर पूर्ण रूप से विद्यमान क्षेत्र में नहीं पहुँच जाएँगे, तब तक वह लक्ष्य कभी नहीं हो सकता। यह अवस्था भूतकाल में कभी नहीं थी, पर अब उत्पन्न होती जाती है। पर इससे यह मत समझ लेना कि यही विकास का अन्त है। यह जगत अनन्त है और इसके विकास की सम्भावना भी अनन्त है। उसमें से कुछ बातें इस युग में पूरी होती दिखलाई पड़ेंगी और अनेक बातें भावी युगों में आएँगी। 'अनन्त' को कोई समाप्त नहीं कर सकता।

❑ जिस प्रकार अपने आपको क्षमा कर सकते हो, उसी प्रकार दूसरों को भी क्षमा करो।

❑ ❑

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

पात्रता का विकास

❑ अन्धा होकर किसी विचार से चिपके रहने की अपेक्षा शंकालु होकर धार्मिक सत्यों का शोध करना उत्तम है। *—डॉ. राधाकृष्णन्*

❑ सारी उन्नति के लिए प्रथम आवश्यक वस्तु विश्वास है। किसी काम में प्रारम्भ से ही शंका करना, अनिवार्य असफलता को आह्वान करना है। सन्देह सारी प्रेरणा का हनन कर देता है और जिस प्रयत्न में प्रेरणा नहीं होती, वह व्यर्थ जाता है। *—डॉ. पट्टाभिसीतारमैया*

❑ जो गुजर गया उसके लिए शोक करना क्या ?

❑ भय और सन्देह से समाज में कटुता, तनाव और विक्षोभ का वातावरण फैलता है। एक व्यक्ति दूसरे के प्रति, एक जाति दूसरी जाति के प्रति और एक राष्ट्र दूसरे के प्रति अनायास ही शत्रु होते चले जाते हैं। अभय का विकास हो तो बहुत सारी सामाजिक कठिनाइयाँ स्वतः समाप्त हो जाती हैं। *—आचार्य तुलसी*

❑ दुःख से घबड़ाकर आत्महत्या करना तो दुःख को जीतना नहीं है। *—शरतचन्द*

❑ जिसके पास ज्ञान नहीं है, श्रद्धा नहीं है और मन संशय से भरा हुआ है, वह नष्ट हो जाता है। संशय वाले पुरुष के लिए न सुख है, न लोक है और न परलोक है। *—गीता*

❑ बाहर की दीनता भीतर भी दीनता ला देती है। *—रवीन्द्रनाथ टैगोर*

❑ **यस्त्वविज्ञानवानभवत्ययुक्तेन मनसा सदा।**
तस्येन्द्रियाण्यवश्यानि दुष्टाश्वा इव सारथेः।।
—कठोपनिषद वल्ली ३ मं. ५

जो योगसाधना से रहित, असावधान, चंचल चित्त और संशयग्रस्त रहता है, उसका मन भी अज्ञानी, विषयी रहता है और उसकी इन्द्रियाँ अनाड़ी सारथी के घोड़ों की तरह वश में नहीं रहतीं।

❑ जो मनुष्य लोगों के व्यवहार से ऊबकर प्रति क्षण अपने मन को बदलते रहते हैं, वे दुर्बल हैं—उनमें आत्मबल नहीं है। *—सुभाषचन्द्र बोस*

❑ **सन्तापाद् भ्रश्यते रूपं सन्तापाद् भ्रश्यते बलम्।**
सन्तापाद् भ्रश्यते ज्ञानं सन्तापाद् व्याधिमृच्छति।।
—विदुर नीति ४। ४४

संताप से रूप नष्ट होता है, सन्ताप से बल नष्ट होता है, सन्ताप से ध्यान नष्ट होता है और सन्ताप से रोग पीछे पड़ जाते हैं।

❑ थोड़े सुख के परित्याग से यदि बहुत सुख प्राप्त होता दिखाई दे तो बुद्धिमान को चाहिए बहुत सुख के लिए थोड़े सुख को त्याग दे।

❑ वह मनुष्य बहादुर नहीं हो सकता जो दुःख को जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप समझता है। *—सिसरो*

❑ भय अपराध का पीछा करता है और उसका दण्ड है। *—वाल्टेयर*

❑ शंकाएँ कायरता का चिन्ह है और विश्वास वीरता का। *—बुल्वर लिटन*

❑ जो यह चाहता है कि उसका कार्यक्रम दूसरे लोग ही निर्दिष्ट कर दें, वह अपने मन्तव्य को पूरा किए बिना ही मर जाएगा। *—लोबेल*

❑ निश्चय ही मनुष्य के लिए यह कभी नहीं कहा जा सकता कि वह खुद अपना स्वामी है। वह समुद्र की एक लहर की तरह है या उड़ते हुए पंख की तरह, जिसे हर झोंका इधर से उधर उड़ा देता है। *—जोन फास्टर*

❑ **अत्यादरो भवेद्यत्र कार्यकारणवर्जितः।**
तत्र शंका प्रकर्तव्या परिणामेऽसुखावहा।।

जहाँ बिना कारण अत्यन्त आदर हो, वहाँ परिणाम में दुःख होने की शंका करनी चाहिए, क्योंकि बिना मतलब कोई खुशामद नहीं करता।

❑ अकारण शंका-कुशंका न करो। निश्चित प्रमाण मिलने तक किसी प्रकार आक्षेप न लगाओ।

❑ चिन्ता, निराशा और ग्लानि शरीर के लिए जहर हैं। आशा, हिम्मत, उल्लास और प्रफुल्लता में संजीवन शक्ति है।

❑ जो सदा शंकाशील रहता है, उसकी गुत्थियाँ उलझती ही जाती हैं। शंका अशुभ भविष्य की कल्पनाएँ गढ़कर सामने खड़ी कर लेती और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

फिर उस झाड़ी के भूत से ही भयभीत होती और जो सहज सम्भव था, उसे कठिन बना लेती हैं।

- उदासीनता मृत्यु से भी अधिक कष्टदायक है। उपेक्षा से बढ़कर और कोई तिरस्कार नहीं।
- अंधड़ का झोंका खोखले पेड़ों को उखाड़ता है, किन्तु पर्वत से टकराकर वेग ही खो बैठता है।
- सदा प्रसन्न रहो। चित्त को मृदुल, कोमल और हर्षमय बनाओ। व्यर्थ का शक करने की आदत का परित्याग कर दो।
- अन्धा मनुष्य सर्प की आशंका से गले में डाली गयी पुष्पमाला को भी उतार फेंकता है। अविवेकी लोग सत्परामर्श को भी घाटा पहुँचने की आशंका से उपेक्षा व अनसुनी कर देते हैं।
- जीवन में कोई स्थिति ऐसी खराब नहीं है कि उसका सुधार न हो सके।
- बहुत सोचो, गम्भीरतापूर्वक विचार करो, पर वह निर्धारित लक्ष्य के सम्बन्ध में ही हो। जो बहुत तरह की बहुत-सी बहुत बातें अधूरी सोचते हैं, वे मन को व्यर्थ ही भ्रमाते और थकाते हैं।
- अमुक चीज तुम्हें अच्छी नहीं लगती, केवल इसी बुनियाद पर उसे बुरा मत मान लो और न उसके विनाश की चेष्टा करो। यह मत समझ बैठो कि तुम्हारे विचार सर्वथा भ्रमरहित हैं और तुम जो करना चाहते हो, वही सर्वश्रेष्ठ है।
- पक्षपात और तरफदारी आदमी की आँखों को वास्तविकता की ओर से अन्धा कर देती है। जो आदमी ऐसे होते हैं, वे किसी चीज को उसको वास्तविक रूप से नहीं देख सकते।
- जिस मनुष्य में ज्ञानसंचय का ठीक क्रम नहीं है, वह जितना विद्वान बनेगा उतना ही अधिक भ्रम में पड़ेगा।
- जो मनुष्य दूसरों की तनिक-सी छेड़-छाड़ से ही क्रोध से उत्तेजित हो जाते हैं, वे दुर्बल हैं।
- मनुष्य तभी दुःख में ग्रसित होता है, जब उसके आन्तरिक विचारों और परिस्थितियों में मेल नहीं खाता।
- आराम मुर्दे के लिए है और काम जीवितों के लिए।
- लोग डरते तो हैं अपने आपसे, पर कहते हैं कि हम दूसरों से डरते हैं। भय एक मानसिक रोग है, जो आत्मिक निर्बलता के कारण उत्पन्न होता है। डरपोक आदमी अपने अन्दर रहने वाली कायरता से डरता है, पर भूत, प्रेत, चोर या शमशेर को डर का कारण बताता है। झूठा आदमी ही दूसरों से डरता है, क्योंकि वह अपने झूठ से डरता है। जो सत्यनिष्ठ है वह सदा निर्भय है, उसे इस दुनिया में किसी से डरने की जरूरत नहीं होती।
- कायर केवल नीति की बातें करते हैं, बहादुर उसकी रक्षा के लिए मिटते हैं।
- मन की दुर्बलता से बढ़कर और कोई बुराई नहीं।
- जो अपनी योग्यता, परिस्थिति और महत्त्वाकांक्षा के बीच सन्तुलन बनाए रहता है, वह सुखी रहता और सफल होता है। जो बहुत चाहता है, किन्तु उसके उपयुक्त योग्यता नहीं बढ़ाता, उसे निराशा के अतिरिक्त और कुछ हाथ नहीं लगता।
- लोग स्वप्न की दुनिया में जीते हैं और वह देखते हैं जो उनके भीतर है।
- प्रत्येक मनुष्य के भीतर जो एक आदेश देने वाली शक्ति होती है, जिसके शासन से सारे जीवन की लीला नियन्त्रित एवं संगठित होती रहती है, वही विवेचना-शक्ति जीवन का देवता है।
- चाहे कोई हमारी बात समझे या न समझे, संक्षेप में कहना हमेशा ही अच्छा है।
- जो कुछ तुम्हें कहना या लिखना हो थोड़े-से ही में कहो या लिखो।
- पुरखों की कब्र मत कुरेदो। मोती पाने के लिए समुद्र में नई डुबकी लगाओ।
- आनन्द और सम्मान के पीछे मनुष्य का विवेकयुक्त परमार्थ छिपा रहता है। भले ही वह आँखों से दिख पड़े या नहीं भी।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

- मूर्ख एक ओर देखता है, बुद्धिमान सब ओर। आँख सबके माथे में जुड़ी होती है, पर विवेक दृष्टि सौभाग्यवानों को ही मिलती है।
- यौवन रहते, वृद्धावस्था की सम्भावना का ध्यान रखो। सुविधा के रहते संकट से बचाव करो। जीवित रहते मृत्यु की पीड़ा से बच निकलो।
- कई बार पुराने खण्डहर गिराने और पुराने कपड़े बदलने पड़ते हैं, यही बात प्रचलनों के सम्बन्ध में भी है। कई बार नए विवेकपूर्ण प्रतिपादन भी इतने सुन्दर होते हैं, जैसे ओस बिन्दुओं से शोभायमान नवोदित कमल पुष्प।
- शीघ्रता के साथ निर्धारित किया हुआ विचार अधिकतर प्रमाद की ओर झुकता है। तदनन्तर अभिमान आकर बुद्धि को जकड़ लेता है।
- घोर पीड़ा और कठिन तूफानों के बीच विवेक ही अचल रखता है। संसार में जब जिसे जो भी सम्मान मिला है, विवेक के ही कारण। विवेकविहीन जीवन सदा पतन और दुःख ही देता है।
- हे बुद्धि ! तू हमारे लिए सर्वश्रेष्ठ वस्तु है।
- बुद्धिमानी और धैर्य से चलो, क्योंकि तेज दौड़ने से अक्सर ठोकर खा जाते हैं।
- जो अपने कर्त्तव्य का विचार नहीं करते और अपने उत्तरदायित्वों को पूरा करने का शक्ति भर प्रयत्न नहीं करते, वे मनुष्य रूप में पशु हैं।
- दानी होने से पहले विचारवान बनना अत्यन्त आवश्यक है। बिना विचारे अनधिकारी को दान देना धन का दुरुपयोग करना है।
- चूँ-चूँ करने वाले किवाड़ों को देखकर बड़बड़ाओ मत, बल्कि उनके जोड़ों में तेल डाल दो।
- ज्ञानप्राप्ति के लिए अपने हृदय का द्वार सदा खुला रखो। हर बात पर विवेक और विवेचना के साथ विचार करो। अन्ध-विश्वासी मत बनो, पर संशयी और अविश्वासी भी न हो जाओ। तर्क और विवेक के आधार पर जीवनभर सत्य की खोज करते रहना चाहिए।
- वह मनुष्य विवेकवान है जो भविष्य से न तो आशा रखता है और न भयभीत ही होता है। किसी काम को करने से पहले भलीप्रकार समझ लो कि इसका अन्तिम परिणाम क्या होगा ?
- सब कामों में प्रारम्भ करने के पूर्व बुद्धिमानी से तैयारी करनी चाहिए।
- चार बातें नहीं भूलनी चाहिए—(१) बूढ़ों का आदर करना (२) छोटों को सलाह देना (३) बुद्धिमानों से सलाह लेना (४) मूर्खों से न उलझना।
- आँखें सिर्फ सफलता देखती हैं, पर विवेक यह पूछता है कि इसके लिए किन परिस्थितियों में कितना प्रयत्न किया गया ?
- अच्छे संकल्प करो ताकि अच्छे मार्ग पर चल सकना सम्भव हो सके।
- जो विवेक का अपहरण कर ले, वह क्रोध नहीं पागलपन है।
- विद्या उसे कहते हैं जो सन्मार्ग पर चलाये और विनयशील बनाए।
- समाधान और उत्कर्ष के लिए प्रयत्न तो कार्य-क्षेत्र में करो, पर उसकी पृष्ठभूमि भीतर बनाओ।
- विवेकपूर्वक सोचो, बोलो और करो। इतना बन पड़े तो समझो कि ईश्वर की प्रार्थना सही अर्थों में की जा रही है।
- अपनी अज्ञानता का आभास होना बुद्धिमानी के मन्दिर का प्रथम सोपान है।
- किसी बात को इसलिए महत्त्व न दें कि वह पुरानी है या लोगों द्वारा अपनायी गई है। न किसी बात का महत्त्व इसलिए कम करें कि उसका प्रतिपादन कम समय से हुआ है अथवा लोग उसका अनुकरण नहीं करते हैं। विवेक की कसौटी पर जो खरा उतरे, वह अपनाया जाना चाहिए, भले वह नया हो या पुराना। बड़ों ने किया है या छोटों ने कहा है, इसे भी महत्त्व नहीं मिलना चाहिए।
- जैसे-जैसे हम सचमुच ज्ञानवान होते जाते हैं वैसे-वैसे उदारता बढ़ती जाती है।
- फूल को किसी भी नाम से पुकारने पर उसकी सुगन्ध में अन्तर नहीं पड़ता। भगवान को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

किसी भी नाम से पुकारो इसमें फर्क क्या पड़ता है ?

❑ विषयों की सड़क पर दौड़ने वाली इन्द्रियाँ उन स्वेच्छाचारी घोड़ों के समान हैं, जो जीवन रूपी रथ को तोड़ डालती हैं और उसके सारथी आत्मा को पतन के गर्त में धकेलती हैं।

❑ शास्त्र पत्थर की लकीर नहीं है और न श्रेष्ठ पुरुषों के वचन आत्यन्तिक सत्यों पर आधारित हैं। ऐसा होता तो उनके बीच विरोध क्यों पाये जाते ? तुम सच्चाई को ढूँढ़ो और वह जहाँ भी मिले वहाँ से चुन लो।

❑ जिस प्रकार कोई बुद्धिमान मनुष्य अन्न छोड़ कर मिट्टी नहीं खाता, उसी प्रकार कोई ज्ञानवान मनुष्य सन्मार्ग को छोड़कर कुमार्ग पर नहीं जाता।

❑ जिस तरह छोटे-छोटे मच्छर बाँस की टहनियों में पानी की बूँद को चलती हुई देखकर उसमें घुस जाते हैं, किन्तु निकलना मुश्किल हो जाता है। उसी तरह संसार की चमक को देखकर अज्ञानी मनुष्य संसार के जाल में तो फँस जाता है, बड़ी सरलता से जाल में चला तो जाता है, परन्तु उसमें घुसने के बाद निकलना मुश्किल होता है।

❑ अपने दोषों का इल्जाम ईश्वर पर न लगाओ और पाप करते हुए यह न कहो कि उसने कराया सो किया।

❑ जो जान लिया वही सब कुछ है, ऐसा मूर्ख ही मानते हैं। बुद्धिमान अपना ज्ञान बढ़ाते रहते हैं, ताकि ढेर में से जो सारगर्भित है, उसे चुन सकें।

❑ रात को चैन की नींद सो सको, दिन में ऐसे काम करो और रात इस प्रकार बिताओ कि दिन में मुँह दिखाने लायक बने रहो।

❑ सामर्थ्य के हाथी पर जब विवेक का अंकुश नहीं रहता तो वह रौंदने और कुचलने को ही जुट पड़ता है।

❑ संसार विचारभिन्नता से भरा पड़ा है, उनमें से मात्र उन्हें ही स्वीकार करो जो विवेक की कसौटी पर खरे उतरें।

❑ आदर के साथ विष खाने पर भी शिवजी जगदीश ही बने रहे और बिना आदर के अमृत खाने पर भी राहु को सिर कटाना पड़ा। *—रहीम*

❑ मनुष्य का मूल्यांकन उसकी सम्पदा से नहीं समाज के लिए उसकी उपयोगिता तथा क्रियाशीलता से किया जाना चाहिए।

❑ किसी भी स्त्री या पुरुष के वास्ते इससे अधिक लज्जा और गिरावट की बात क्या होगी कि उसे एक काम को दुबारा करने के वास्ते कहा जाए कि उसने अपना काम ठीक तौर से नहीं किया है, अधूरा किया है। जो आदमी सम्मान प्राप्त करने की इच्छा करता है, उसे कभी किसी काम को अधूरा या रद्दी न करना चाहिए। जो आदमी अपने मालिक की उपस्थिति में तो ठीक काम करता है, किन्तु उसकी पीठ फिरते ही सुस्ती से भद्दा काम आरम्भ करता है। वह कभी बड़ा नहीं बन सकेगा, सद्गुण उसे दूर से ही प्रणाम करेंगे।

❑ उच्च आदर्शों वाला आदमी हमेशा एक खरे आदमी के समान काम करता है, किराये पर रखे हुए आदमी के समान नहीं। मुझे इतने पैसे मिलते हैं वैसा ही मुझे काम करना चाहिए, इस विचार से प्रेरित होकर वह कभी अपनी कारीगरी को बट्टा न लगायेगा। वह अपनी कला की अच्छाई को मजदूरी के पैसों के नाम पर खराब न करेगा। उसे अपनी तरक्की के लिए न तो षड्यन्त्र बनाने की आवश्यकता होगी और न वेतन बढ़ाने के लिए किसी से कुछ कहना पड़ेगा, क्योंकि दुनिया इस कायदे को मानने के लिए बाध्य है कि जो आदमी योग्यता रखता है, उसे पुरस्कार अवश्य मिलना चाहिए।

❑ जिस विद्या में कर्त्तव्य शक्ति नहीं, स्वतन्त्र रूप से सोचने की बुद्धि नहीं, खतरा उठाने की वृत्ति नहीं, वह विद्या निस्तेज है।

❑ ६ घण्टे की बेगार से, एक घण्टा लगन से काम करना अच्छा, क्योंकि उससे काम भी अच्छा होता है, दाम भी अच्छे मिलते हैं।

—मौलाना रूमी

❑ संसार के बाजार में सभी कुछ बिकता है, जिसे कीमत देकर कोई भी खरीद सकता है। निराश

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उन्हें रहना पड़ता है, जो मुफ्त में या सस्ते में माल पाना चाहते हैं।

❑ कीचड़ में भी कमल उगते हैं। खाद के ढेर में गुलाब महकते हैं। आप विपन्न परिस्थितियों में भी सुन्दर जीवन क्यों नहीं जी पाते ?

❑ कच्ची दवा जैसे स्प्रिट में घुल जाती है, उसी तरह ईश्वर में घुल जाओ।

❑ देवालय के विश्राम घर में जो सट्टा लगा रहे थे और कबूतर बेचने-खरीदने का धन्धा कर रहे थे। ईश्वरपुत्र ने उनकी चौकियाँ उलट दीं और कहा—परमेश्वर के घर को डाकुओं की खोह न बनाओ।

❑ परमेश्वर के राज्य में धनवान का प्रवेश उतना ही कठिन है, जितना सुई के छेद में से ऊँट का निकलना।

❑ बूँदें समुद्र में गिरीं और अपनी सत्ता लुप्त होते देखकर खेद मनाने लगीं। समुद्र बोला—महानता के प्रति समर्पण करके कोई घाटे में नहीं रहा बच्ची। समुद्र का पानी उड़कर बादल बन गया। स्वाति नक्षत्र में बरसा तो बूँद सीपी में पड़कर मोती बन गई। बूँद को पुरानी खिन्नता और समुद्र की सान्त्वना स्मरण आई। उसने अनुभव किया कि महानता के प्रति समर्पण करना घाटे का सौदा नहीं है।

❑ गुरुत्वाकर्षण सिद्धान्त के आविष्कर्त्ता सर आइजक न्यूटन कहा करते थे कि लोग मुझे ज्ञानवान समझते हैं, पर जब मैं अपने उपलब्ध ज्ञान की और विश्व में फैली हुई महान ज्ञान गरिमा की तुलना करता हूँ तो लगता है कि समुद्र के किनारे पर बैठकर घोंघे और सीपी बीनने वाले बालक की तरह ही मेरा तुच्छ प्रयास है।

❑ एक खिला हुआ फूल दूसरा पका हुआ फल—एक सौन्दर्य की मादकता, दूसरा रस का कलश। दोनों की अपनी-अपनी सुवास है और अपनी-अपनी उपयोगिता।

फूल चाहे कि मैं सदा फूल ही बना रहूँ और फल चाहे कि सदा पेड़ की ही शोभा बढ़ाता रहूँ, तो वे दोनों ही मूर्ख हैं। फूल के लिए उचित है कि वह खिले और दर्शकों की आँखों में उत्साह उत्पन्न करे। फल के लिए उचित है कि वह पके और क्षुधार्तों को तृप्ति प्रदान करे।

❑ सोचो, यदि कोई एक दिन में ३ घण्टे निरन्तर चलता रहता है, तो सात साल वह इतना चल लेगा कि जितनी पृथ्वी की परिधि है।

❑ जो कर्त्तव्यपरायण हैं, जिनमें कर्त्तव्यशील हैं, वे किसी दूसरे का मुँह नहीं ताकते। वे अवसर नहीं ढूँढ़ते सिर्फ अवस्था देखते हैं और जैसी स्थिति रहती है, उसी की गुरुता के अनुसार वे व्यवस्था करते हैं।

❑ प्रसन्नता उनके साथ रहेगी जो अन्तरात्मा से अनुकूल ही काम का चयन करते और उसमें पूरे मन से संलग्न होते हैं।

❑ महान व्यक्तित्व झोंपड़ों में भी शोभा पाते हैं, पर निकृष्टजन महलों में भी अभागे बन्दी की तरह जीवन बिताते हैं।

❑ बढ़-बढ़कर बातें मत करो। शेखी न बघारो। तुम क्या हो, इसका परिचय अपने कृत्यों से दो।

❑ योग्यता बढ़ाओ, पात्रता विकसित करो ताकि अभीष्ट सरलतापूर्वक मिल सके। समुद्र के पास नदियाँ बिना बुलाये ही जा पहुँचती हैं।

❑ जो तलवार पर ही भरोसा करता है, ईश्वर उसका भरोसा नहीं करता।

❑ श्रेष्ठ उपार्जित कर सकने की अक्षमता ही जीवन को नीरस-निरानन्द बनाती है।

❑ प्रचलन में सौभाग्य, सम्पदा एवं सफलता को कहते हैं, पर वस्तुतः वह महान अवसरों और व्यक्तियों के साथ जुड़ा रहता है। जो उसे पहचानने और अपनाने की दूरदर्शिता दिखा सकें, वस्तुतः उन्हें ही सच्चे अर्थों में सौभाग्यशाली बनने का अवसर मिलता है।

❑ भविष्य में आपको ऊँचे, अच्छे और लाभदायक काम मिलें। इसके लिए यह आवश्यक है कि आज हाथ के नीचे आये कामों को अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाकर करें और छोटा होते हुए भी उसे इस तरह सम्पन्न करें कि वह स्वयं प्रशंसा योग्य बनें और करने वाले को प्रतिष्ठा प्रदान करें।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ उपहार लेना हो तो इस विश्वास के साथ लो कि उसे समय रहते ब्याज समेत चुका दिया जाएगा, अन्यथा उपहार के साथ तुम्हारा मूल्य गिरेगा।

❑ इस संसार में विभूतियों की कमी नहीं, उन्हें पाने के लिए चरित्र और साहस का सम्बल चाहिए।

❑ निश्चय ही पुकारने और खींचने में बड़ा अन्तर है—सहायता के लिए तुम सर्वदा पुकार सकते हो और पुकारना ही चाहिए और उसके बाद उत्तर आयेगा ग्रहण करने और आत्मसात करने की तुम्हारी क्षमता के अनुपात में। खींचना तो एक स्वार्थपूर्ण क्रिया है, जो तुम्हारी क्षमता की अपेक्षा कहीं अधिक मात्रा में शक्तियों को उतार सकती है और इस तरह वे हानिकारक हो सकती हैं।

❑ बुढ़ापा मन की वह दशा है, जिसमें सब कुछ हाथ से जाता दिखता है। जवानी वह है जिसमें कमाने और बढ़ाने की उम्मीदें उछलती रहती हैं। आयु से बुढ़ापे और जवानी की नाप-तोल करना व्यर्थ है।

❑ जिस तरह कि स्त्री कुटुम्ब का, अपने सास-ससुर का आदर करती है और उनकी आवश्यकताओं को पूरा करती है, परन्तु अपने पति को अधिक प्यार करती है, उसी तरह तुम भी अपने इष्टदेव का भी सत्कार करते रहो, देव एक ही है।

❑ दूध में थोड़ा पानी हो तो थोड़ी लकड़ी में जल्दी ही खोया बन जाता है, पर यदि पानी बहुत और दूध जरा-सा हो तो घण्टों आग जलाने पर उतना खोया नहीं मिलता जितनी कि लकड़ी जल गई। जीवन रूपी दूध में थोड़ी-सी तृष्णा हो तो भजन का लाभ मिल सकता है, पर यदि दुर्बुद्धि ही समा रही हो तो फिर बहुत साधना से भी कुछ विशेष परिणाम नहीं निकलता।

❑ लोग ईश्वर, जीव, प्रकृति, द्वैत-अद्वैत की दार्शनिक गुत्थियों में तो उलझे रहते हैं, पर यह भूल जाते हैं कि जीवन के बहुमूल्य क्षणों का श्रेष्ठतम उपयोग किस प्रकार किया जा सकता है ? उसी रीति-नीति को कार्यान्वित करने का प्रयत्न अधिक आवश्यक है।

❑ कितने ही व्यक्ति धर्म-ग्रन्थों का पाठपारायण इसी दृष्टि से करते हैं कि इन्हें पढ़ने, दुहराने से ही कल्याण हो जाएगा। वे यह भूल जाते हैं कि धर्म-ग्रन्थों में जो राह बताई है, उस पर चलने से ही कुछ काम बनेगा।

❑ गीला, कच्चा बाँस आसानी से मोड़ा, घुमाया जा सकता है, पर सूख जाने पर वह मुड़ता नहीं टूट जाता है। उठती आयु में मन को सँभाला-सुधारा जा सकता है। बुढ़ापे में तो जड़ता जकड़ लेती है, सो न आदतें बदलती हैं न इच्छाएँ सुधरती हैं।

❑ **उभाभ्यामेव पक्षाभ्यां यथा खे पक्षिणां गतिः।**
तथैव ज्ञानकर्माभ्यां जायते परमं पदम्॥
जैसे गगन में दोनों परों से पक्षी उड़ते हैं, एक से नहीं, वैसे ही साधक को ज्ञान और कर्म दोनों से परमपद की प्राप्ति होती है।

❑ धन्य है वह मनुष्य जो दुष्टों की युक्ति पर नहीं चला और न पापियों के मार्ग पर खड़ा हुआ, न उपहास करने वालों की संगति में बैठा।

❑ पुरातन कथनों को पत्थर की लकीर जैसा न मानो, उनमें सत्य के साथ असत्य भी घुल-मिल गया है। इसे छानो, फटको और विवेकपूर्वक देखो कि अपनाने योग्य कितना है, जो उचित है, उसी को अंगीकार करो। अन्धों की तरह किसी के पीछे न चलो, शास्त्रियों के पीछे भी नहीं।

❑ तू भले मनुष्यों के मार्ग में चल और धर्मियों का बाट पकड़े रह, क्योंकि सीधे लोग ही देश में बसे रहेंगे और खरे लोग ही उनमें बने रहेंगे। दुष्ट लोग देश में से नाश होंगे और अविश्वासघाती उसमें से उखाड़े जाएँगे।

❑ सम्मति को सुन ले और शिक्षा को ग्रहण कर ताकि तू अन्तकाल में बुद्धिमान ठहरे।

❑ प्रमादरहित हो अपने विचारों को सुरक्षित करो। कीचड़ में फँसे हुए हाथी के समान बुराइयों से ऊपर उठने का प्रयत्न करो।

❑ जितना लाभ मनुष्य को उसका अपना मन सीधे मार्ग पर चलकर पहुँचा सकता है, उतना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उसके माता-पिता या बन्धु भी नहीं पहुँचा सकते।

❑ जिस भी कार्य में, जिस भी दिशा में प्रवीणता प्राप्त करनी हो उसका उत्साह एवं तत्परता-पूर्वक दैनिक अभ्यास करना नितान्त आवश्यक है। किसी बात को सुन-समझ भर लेने से कोई काम नहीं बनता। प्रवीणता तब आती है, जब उन कार्यों को दैनिक अभ्यास में प्रमुखता दी जाए और उसे लम्बे समय तक लगातार जारी रखा जाए।

❑ जीवन-साधना में यों तो सभ्यता और संस्कृति दोनों का ही समावेश रहता है, पर उसमें संस्कृति को उद्गम और सभ्यता को प्रवाह कहा गया है। संस्कृति विचारणा, मान्यता, आस्था, निष्ठा में उत्कृष्टता के समावेश को कहते हैं। इसी पृष्ठभूमि की प्रेरणा से गतिविधियों का निर्धारण सम्भव होता है। शालीनता की पक्षधर जीवनचर्या को सभ्यता कहते हैं। सभ्य बन सकना उसी के लिए सम्भव है, जो सुसंस्कृत हो। संस्कृति मनसंस्थान में उगाई और बढ़ाई जाती है। सभ्यता अपनाने के लिए शरीर को सधाया जाता है। जंगली जानवरों को सरकस में कलाकारिता दिखाने के लिए जिस प्रकार प्रशिक्षित किया जाता है, उसी प्रकार साधनात्मक अनुशासन में जकड़कर अनगढ़ मनुष्य को सुगढ़, सुसंस्कृत बनाया जाता है। इसी प्रयास को सभ्यता संवर्द्धन कहते हैं।

❑ संक्षेप में श्रद्धा आत्मिक, प्रज्ञा बौद्धिक और निष्ठा शारीरिक उत्कृष्टता का नाम है। श्रद्धा को ब्रह्मचेतना, प्रज्ञा को संस्कृति और निष्ठा को सभ्यता के नाम से जानी जाने वाली त्रिविध आदर्शवादिताओं का समन्वय ही मानवीय गरिमा है। उन विभूतियों की मात्रा जिनके पास जितनी है, उसी आधार पर उन्हें अवतार, देवदूत, सिद्धपुरुष, महामानव आदि नामों से पुकारते हैं। इन दैवी सम्पदाओं से जो जितना धनी है, उसी आधार पर उसमें आत्म-शक्ति की प्रखरता पाई जाती है और तदनुरूप ही वह युग-सृजन जैसे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एवं गौरव-गरिमा भरे काम कर सकने में समर्थ होता है।

❑ योग में 'ध्यान' अभ्यास की प्रमुखता है। मेडीटेशन-एकाग्रता का बहुत माहात्म्य बताया गया है, उसका तात्पर्य यही है कि निकृष्टता के, लोभ-मोह और अहंता के जाल-जंजाल में जकड़े हुए मन को इन विडम्बनाओं में भटकते रहने की आदत छोड़ने और निर्धारित लक्ष्य इष्टदेव के साथ तादात्म्य होने का अभ्यास करना।

इसमें मन की बिखराव की बाल-बुद्धि छोड़ने और इष्टदेव से लेकर दिनचर्या के प्रत्येक क्रिया-कृत्य में तादात्म्य होने का अभ्यास करना भी है। न तो पूजा-उपचार में बिखराव रहे और न दैनिक क्रिया-कृत्यों को बेगार भुगतने की तरह आधे-अधूरे मन से किया जाए।

❑ क्रिया के साथ मनोयोग को घनिष्ट कर देने की सफलता बहुत बड़ी उपलब्धि है। इसे अपनाने वाले भौतिक एवं आत्मिक क्षेत्र में समान रूप से सफल होते हैं। ध्यान केवल किसी देवता का करते रहने और उसी की छवि में मन रमाये रहना मनोनिग्रह का एक स्वरूप तो है, पर उतने भर से ही अभीष्ट सफलता नहीं समझी जानी चाहिए।

❑ ऐसी एकाग्रता तो नट, बाजीगर, मुनीम, कलाकार, वैज्ञानिक भी अपने स्वभाव का अंश बना लेते हैं। मैस्मरेज्म प्रयोगों में तो यह एकाग्रता ही चमत्कार दिखाती है। इतने पर भी वे लोग आत्मिक दृष्टि से किसी भी प्रकार ऊँचे उठे हुए नहीं कहे जा सकते। किसी भी कल्पना पर ध्यान जमाये रहना, उस प्रयोजन के लिए एक उपचार भर है।

❑ लक्ष्य यह है कि सर्वतोमुखी उत्कृष्टता के प्रति सघन श्रद्धा उत्पन्न करना, उसके माहात्म्यों का भाव-भरा चिन्तन करना और अपनी समूची चेतना को उसी में सरावोर कर देना।

❑ अग्नि के सत्संग से काला कोयला, सुनहरी रंग का हो जाता है। सत्पुरुषों के सत्संग से अज्ञान की कालिमा मिट जाती है और हृदय में ज्ञान का प्रकाश होने लगता है।

❑ तराजू का वही पलड़ा झुका रहेगा, जिसमें बोझ अधिक होगा। नम्र और सरल वह होगा, जिसके पास विद्या और विवेक का बोझ होगा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ जो मनुष्य मूली खाता है उसके मुँह से मूली की महक निकलती है। उसी तरह मनुष्यों के हृदय में जो होता है, वही मुँह से निकलता है।

❑ लुहार अपनी धौंकनी को निरन्तर इसलिए धौंकता रहता है कि उसकी भट्टी की आग ठीक प्रकार जलती रहे। बुद्धिमान मनुष्य सत्पुरुषों का सत्संग इसलिए करता है कि उसका विवेक सदैव दीप्तिमान रहे।

❑ बहुत विद्वान होने से ही मनुष्य आत्म-गौरव नहीं प्राप्त कर सकता। इसके लिए सच्चरित्र होना परमावश्यक है। चरित्र के सामने विद्या का मूल्य बहुत कम है।

❑ दर्पण के ऊपर मिट्टी चिपकी हो तो उसके ऊपर सूर्य की किरणें न चमकेंगी, जिसका हृदय कलुषित है, उसे ईश्वरीय-सत्ता का आभास न मिलेगा।

❑ जैसे सफेद वस्त्र में काला निशान हो जाने से बुरा मालूम होता है, उस तरह सज्जन मनुष्य कोई बुरा काम कर डालें तो उनकी सज्जनता में हानि पहुँचती है।

❑ जैसे पानी पर खींची हुई लकीर थोड़ी देर भी नहीं ठहर सकती है, उसी तरह सज्जनों का क्रोध शीघ्रातिशीघ्र गायब हो जाता है।

❑ जिन बन्धनों में तुम जकड़े हुए हो, उन पर क्रोध करना अथवा चिड़चिड़ाना व्यर्थ है। तुम्हें उचित है कि तुम इस बात का पता लगाओ कि तुम क्यों और किस प्रकार इस विपत्ति में आ पड़े और इससे निकलने का सच्चा उपाय क्या है ?

❑ जीवन और मृत्यु, शुभ और अशुभ, ज्ञान और अज्ञान का यह मिश्रण ही माया अथवा जगत प्रपञ्च कहलाता है। तुम इस जाल के भीतर अनन्त काल तक सुख ढूँढ़ते रहो—तुम्हें उसमें सुख के साथ बहुत दुःख तथा अशुभ ही मिलेगा। यह कहना कि मैं केवल शुभ ही लूँगा, अशुभ नहीं, निरा लड़कपन है—यह असम्भव है।

❑ बहुत-से लोग अनुचित साधनों और अवांछनीय उपायों के बल पर उन्नति करते और जोर-जुल्म के बल पर धनवान होते देखे जरूर जाते हैं, किन्तु यह भी न भूलना चाहिए कि उनका अन्त बड़ा शोकपूर्ण होता है। मनुष्य के सारे समयों में उसका अन्तिम काल बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। आयु के अन्तिम चरण में मनुष्य की सारी क्षमताएँ समाप्त हो चुकती हैं। आयु के पूर्व चरणों में जो मनुष्य बड़े से बड़े कष्ट सहन कर सकता है, वह अन्तिम चरण में पहुँचकर कष्ट की कल्पना को भी नहीं सह पाता। तनिक-सी निराशा, थोड़ा-सा विषाद उसे मृत्यु के समान कष्टदायक हो जाता है।

जीवन के पूर्वकाल में मनुष्य जो कुछ अच्छा-बुरा इकट्ठा करता है, जीवन के उत्तर-काल में उस निधि का भोग करता है। जिस प्रकार मनुष्य योनि के अतिरिक्त अन्य योनियों में मुक्ति के लिए कर्म नहीं किये जा सकते, ठीक उसी प्रकार आयु का अन्तिम चरण कुछ कर सकने में असमर्थ रहता है। अपने उत्तर जीवन के पूर्व चरण में सत्कर्मों के बीज बोता है, वह उसके फल खाता हुआ स्वर्गीय आनन्द प्राप्त करता है।

❑ मनुष्य सुख चाहता है और दुःख से दूर भागता है, किन्तु चाहने भर से न तो कोई वस्तु मिलती है और न भागने से कोई भय दूर हो सकता है। सुख पाने और दुःख दूर करने के लिए उसकी परिस्थितियों और कारणों को समझना होगा। मनुष्य न तो सुख की परिस्थितियों को समझना चाहता है और न दुःख के कारणों को जानना चाहता है। यदि मनुष्य इस द्वन्द्व का मूल समझकर उसके अनुसार उपाय करे तो कोई कारण नहीं कि वह अपने ध्येय को न पा ले।

❑ मनुष्य उन विकारों को दूर करने का तो प्रयत्न करता नहीं, जिनके कारण वह दुःखी है। चेष्टा यह जानने की करेगा कि सुख का भण्डार स्वर्ग कहाँ है ? उसका स्वरूप क्या है ? उसमें कौन-कौन से सुख-साधन प्राप्त हो सकेंगे ? क्या उसकी समस्त उचित और अनुचित कामनाएँ वहाँ पूर्ण हो जाएँगी ? वह आनन्द के लिए ईश्वर की खोज करेगा, किन्तु पाँव के नीचे चुभने वाले काँटों को हटाने का प्रयत्न नहीं करेगा। सुख के लिए साध्य को छोड़कर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

असाध्य की उपासना करेगा। इसी उल्टी चाल को हमें सुधारना है।

❑ **पूर्वरात्रे परे चैव भुञ्जानः सततं मनः।**
लघ्वाहारो विशुद्धात्मा पश्यन्नात्मानमात्मनि।।
प्रदीप्तेनेव दीपेन मनोदीपेन पश्यति।
दृष्ट्वाऽऽत्मानं निरात्मानं स तदा विप्रमुच्यते।।
मनुष्य को चाहिए कि वह हल्का भोजन करे और अन्तःकरण को शुद्ध रखे। रात के पहले और पिछले पहर में सदा अपना मन परमात्मा के चिन्तन में लगावे। जो इस प्रकार निरन्तर अपने हृदय में परमात्मा के साक्षात्कार का अभ्यास करता है, वह प्रज्वलित दीपक के समान प्रकाशित होने वाले अपने मनोमय प्रदीप के द्वारा निराकार परमेश्वर का साक्षात्कार करके तत्काल मुक्त हो जाता है।

❑ प्रगति तो हो, पर उत्कृष्टता की दिशा में प्रगति और अवगति का स्वरूप समझने में भूल होते रहने के कारण ही मनुष्य भ्रम में पड़ते, पछताते और दुःसह दुःख सहते हैं। प्रगति की परिभाषा को बलिष्ठता, शिक्षा, सम्पदा और प्राप्त करने तक सीमित समझा जाता है। इस दिशा में जो जितना प्रयत्न करता है, वह उतना पुरुषार्थी कहलाता है और जो जितना सफल होता है, वह उतना भाग्यशाली माना जाता है।

❑ वस्तुओं और सामर्थ्यों का अपना महत्त्व है, पर यह भुला नहीं दिया जाना चाहिए कि उन उपलब्धियों का सत्प्रयोजन में प्रयोग हो सकने पर भी उनके द्वारा वास्तविक प्रगति का लाभ मिलता है। प्रगति की वास्तविकता व्यक्तित्व की गरिमा के साथ जुड़ी हुई है। मनुष्य का चिन्तन, चरित्र एवं लक्ष्य ही वह आधार है, जिस पर व्यक्तित्व की गरिमा टिकी हुई है। यदि इस केन्द्र-बिन्दु पर निकृष्टता आधिपत्य कर ले तो समस्त उपलब्धियाँ हेय प्रयोजनों के लिए ही प्रयुक्त होती रहेंगी और फलतः पाप-पतन और त्रास-विनाश का संकट ही उत्पन्न होता रहेगा। वह प्रगति कैसी जिसमें जले और जलाने का, गिरने और गिराने का ही उपक्रम चलता रहे।

❑ प्रगति का अर्थ है—ऊर्ध्वगमन, उत्कर्ष-अभ्युदय। यह विभूतियाँ अन्तःक्षेत्र की हैं। दृष्टिकोण और लक्ष्य ऊँचा रहने पर इच्छा-आकांक्षा का स्तर ऊँचा उठता है। आत्म-गौरव का ध्यान रहता है। अपना मूल्य गिरने न पाये यह सतर्कता जिसमें जितनी पाई जाती है, वह उतना ही प्रगतिशील है।

❑ सम्पन्नता और सफलता चमत्कृत तो कर सकती है। आकर्षक भी लगती है, किन्तु यदि उसका उपयोग सदुद्देश्य के लिए कर सकने की साहसिकता उत्पन्न न हो सकी तो समझना चाहिए गतिशीलता तो रही अवगति के गर्त तक ले पहुँची। प्रगति वह है जिसके सहारे आत्म-सन्तोष मिल सके और अपनाई गई आदर्शवादिता के सम्मुख जनविवेक का मस्तक झुक सके।

❑ उथली और सुदृढ़ तट से रहित नदियाँ तनिक-सी वर्षा होने पर सब ओर बिखर पड़ती हैं और बाढ़ का रूप धारण कर निकटवर्ती खेतों को नष्ट-भ्रष्ट कर देती हैं। इसके विपरीत दूसरी वे नदियाँ भी हैं, जिनमें प्रचण्ड वेगयुक्त जलधार बहती है, किन्तु उफनने की दुर्घटना उत्पन्न नहीं करती। कारण कि वे गहरी होती हैं और किनारे मजबूत मिट्टी से बने होते हैं।

❑ तनिक-से आकर्षण और भय का अवसर आते ही मनुष्य अपने चरित्र और ईमान को खो बैठता है। तनिक-सी प्रतिकूलता उसे सहन नहीं होती और आवेशग्रस्त स्थिति उत्पन्न कर देती है। इसका कारण व्यक्ति का आन्तरिक उथलापन है। श्रद्धा का अभाव और आदर्शों की कमी। ऐसे लोग तभी तक अच्छे लग सकते हैं, जब तक कि परीक्षा का अवसर नहीं आता। जैसे ही परीक्षा की घड़ी आती है, वैसे वे मर्यादाओं का उल्लंघन करके उथले नालों की तरह बिखरते हैं और बाढ़ का संकट उत्पन्न करते हैं।

मजबूत किनारों का तात्पर्य है—व्रतशील जीवन। आदर्शों और मर्यादाओं के प्रति आस्था। ऐसा संकल्प जो जीवन-क्रम में ऊर्ध्वगामी प्रेरणाएँ भरता रह सके। जिन्होंने अपने किनारे मजबूत बनाये हैं और निश्चय किया है कि किसी भी मूल्य पर आदर्शों की अवहेलना न करेंगे—केवल उन्हीं के लिए यह सम्भव है कि वे मानवों के लिए शोभनीय मार्ग पर अनवरत

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रूप से बढ़ सकें। व्रतशील जीवन का अर्थ है—जीवनलक्ष्य की पूर्ति के लिए अभीष्ट साधन और साहस का सुसञ्चय।

—भगवान महावीर

❑ आग के बिना न भोजन पकता है, न सर्दी दूर होती है और न ही धातुओं को गलाना, ढालना सम्भव हो पाता है। आदर्शों की परिपक्वता के लिए यह आवश्यक है कि उनके प्रति निष्ठा की गहराई, कठिनाइयों की कसौटी पर कसी और खरे-खोटे होने की यथार्थता समझी जा सके। बिना तपे सोने को प्रामाणिक कहाँ माना जाता है ? उसका उपयुक्त मूल्य कहाँ मिलता है ? यह तो प्रारम्भिक कसौटी है।

❑ कठिनाइयों के कारण उत्पन्न हुई असुविधाओं को सभी जानते हैं, इसलिए उनसे बचने का प्रयत्न भी करते हैं। इसी प्रयत्न के लिए मनुष्य को दूरदर्शिता अपनानी होती है, हिम्मत का सहारा लेना पड़ता है और उन उपायों को ढूँढ़ना पड़ता है, जिनके सहारे विपत्ति से बचना सम्भव हो सके। यही वह बुद्धिमानी है जो मनुष्य को यथार्थवादी और साहसी बनाती है। जिन्होंने कठिनाइयों में प्रतिकूलताओं को अनुकूलता में बदलने के लिए पराक्रम नहीं किया, समझना चाहिए कि उन्हें सुदृढ़ व्यक्तित्व के निर्माण का अवसर ही नहीं मिला। कच्ची मिट्टी के बने बर्तन पानी की बूँद पड़ते ही गल जाते हैं, किन्तु जो देर तक अवे की आग सहते रहे हैं, उनकी स्थिरता, शोभा और उपयोगिता कहीं अधिक बढ़ जाती है।

❑ तलवार पर धार रखने के लिए उसे घिसा जाता है। जमीन से सभी धातुएँ कच्ची निकलती हैं। उनका परिशोधन भट्टी के अतिरिक्त और किसी उपाय से सम्भव नहीं। मनुष्य कितना विवेकवान, सिद्धान्तवादी और चरित्रनिष्ठ है, इसकी परीक्षा विपत्तियों में गुजर कर इस तप-तितिक्षा में पककर हो पाती है।

❑ "मैं पतंगे की तरह हूँ। इष्टदेव दीपक की तरह। अनन्य प्रेम के कारण द्वैत को समाप्त कर अद्वैत की उपलब्धि के लिए प्रियतम के साथ एकात्म होता हूँ। जिस तरह पतंगा दीपक पर आत्म-समर्पण करता है, अपनी सत्ता को मिटाकर प्रकाशपुञ्ज में लीन होता है, उसी प्रकार मैं अपना अस्तित्व, अहंकार को मिटाकर ब्रह्म में, गायत्री तपतत्त्व में विलीन होता हूँ।"

❑ "दीपक की ज्योति एक यज्ञ है और मैं उसका भविष्य। अपना अस्तित्व इस यज्ञाग्नि में होम कर मैं स्वयं परमपवित्र तेजपुञ्ज हो रहा हूँ।"

❑ "अपनी अहंता, ममता और द्विधा मिटा देने के बाद मैं आत्मा की परिधि से उठकर परमात्म-सत्ता के रूप में विकसित होता हूँ।"

❑ "मैं अपनी समस्त श्रद्धा प्रभु के समर्पण करता हूँ। बदले में वे उतना ज्ञान, विवेक, प्रकाश एवं आनन्द मेरे कण-कण में भर देते हैं। मुझे अपने समान बना लेते हैं। वैसी ही रीति-नीति अपनाने की प्रेरणा एवं तत्परता प्रदान करते हैं।"

❑ वन्यपशुओं और जंगली झाड़ियों की तरह मनुष्य की सत्ता भी अनगढ़ होती है। उसे प्रयत्नपूर्वक सुगठित एवं परिष्कृत करने के लिए तत्त्वदर्शियों ने जिस प्रक्रिया को अपनाया, उसे संस्कृति कहा जाता है। क्रमशः सभ्यता की लम्बी मंजिल पर चलते हुए ही मनुष्य उस स्तर पर पहुँचता है, जिससे मानवता गौरवान्वित होती है। यह सुन्दर संसार, व्यवस्थित समाज और व्यक्तित्वों के सुविकसित साधनसम्पन्न होने जैसे सभी वरदान इस संस्कृति साधना की देन हैं।

❑ मनुष्य का व्यक्तित्व भी अपने आप में एक छोटा विश्व है। उसकी भीतरी और बाहरी सत्ता में इतना कुछ विद्यमान है, जिसके सहारे आज का दयनीय दुर्दशाग्रस्त जीव कल सर्वसमर्थ ब्रह्म बन सके, पर वह दिव्य वैभव प्रसुप्त पड़ा है। उसे कैसे जगाया और कैसे प्रयोग किया जाय, यह ऐसा विज्ञान है जिसे जानने पर विश्व की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धियाँ प्राप्त होती हैं।

❑ आत्म-साधना, संस्कृति के उच्च सोपान पर पहुँचने का उच्च शिखर है, उस पर खड़ा होने वाला जो देखता, अनुभव करता है और देता है उसे निःसंकोच अनुपम और अद्भुत कहा जा सकता है।

❑ पदार्थ की तरह व्यक्ति भी मूलतः अनगढ़ ही होता है। उसे सँभालने, सजाने से उपयोगिता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बढ़ती और सौन्दर्य निखरता है। अनगढ़ मिट्टी पैरों के तले कुचलती रहती है, पर जब परिश्रम करके बर्तन या खिलौने बनाये जाते हैं तो उसकी विशेषता निखरकर आती है और उससे समुचित लाभ उठाया जाता है।

❑ जंगली पौधे कुरूप झाड़ियाँ बनकर अस्त-व्यस्त फैले होते हैं, पर जब कुशल माली द्वारा उन्हें खाद-पानी दिया जाता है और निराया, गोड़ा, छाँटा जाता है तो उन्हीं पौधों को सुरम्य उद्यान के रूप में देखा जाता है। कच्ची धातुओं की स्थिति उपहासास्पद होती है, पर जब उन्हें तपा-गलाकर शुद्ध किया जाता है और यन्त्र-उपकरण, आभूषणों का रूप दिया जाता है तो उनका सही मूल्यांकन होता है। मामूली से रासायनिक पदार्थ चिकित्सक के परिश्रम से बहुमूल्य औषधि बनते हैं।

❑ व्यक्ति अपनी अनगढ़ स्थिति में नर-पशु से अधिक और कुछ नहीं। गये-गुजरे स्तर का मनुष्य कई बार तो पशुओं से भी अधिक घृणित और दुःखद परिस्थिति में डूबा पड़ा होता है। स्वयं कष्ट सहता और सम्बद्ध व्यक्तियों को दुःख देता है। भार बनकर जीता और भार हलका करने के लिए मृत्यु के मुख में चला जाता है, किन्तु उसे यदि सुविकसित, सुसंस्कृत बनाया जा सके तो लगता है कि वही ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कलाकृति है।

❑ साधना को दूसरे शब्दों में संस्कृति कह सकते हैं। शरीरगत क्रियाशीलता, मनोगत विचारणा और अन्तरात्मा की भाव-सम्वेदना का स्तर किस प्रकार ऊँचा उठाया जा सकता है और किस तरह पशुता को देवत्व में परिणत किया जा सकता है, इसी विद्या का नाम साधना है। अपने आपकी साधना करके कोई भी सिद्ध पुरुष बन सकता है।

❑ अनादिकाल से सृष्टि कर्म की धुरी में घूमती चली आ रही है। विश्व में कर्म को ही प्रधानता दी गई है, जो जैसा कार्य करता है, उसी के अनुरूप उसे फल भी भोगना पड़ता है। संसार एक कर्मभूमि है। यहाँ आकर मनुष्य जैसा बोता है, उसे वैसा ही काटना पड़ता है।

❑ अन्तःकरण रूपी खेत में विचार, बीज स्वरूप होते हैं। यही विचार अंकुरित होकर कर्मरूपी फसल का रूप धारण करते हैं। व्यक्ति जिस तरह के विचारों को मन में आश्रय देता है, वे ही पुष्पित तथा पल्लवित होते रहते हैं तथा इस संसार में जो भी सुख-दुःख की परिस्थितियाँ हमें दृष्टिगत होती हैं, वह कुछ और नहीं हमारे ही बुरे या अच्छे विचारों का परिणाम होती हैं।

❑ यदि कोई किसान अपने खेत में धान बोये और गेहूँ की फसल काटना चाहे तो यह उसी प्रकार असम्भव है, जैसे व्यक्ति बुरे कर्म करके भगवान से यह आशा लगाये कि उसका जीवन सुखी एवं समृद्ध बने।

❑ जीवन को श्रेष्ठ एवं समुन्नत बनाने के लिए यह आवश्यक है कि हम नित्यप्रति के जीवन में उच्च विचारों की दिव्य-ज्योति से अन्तःकरण को आलोकित करते रहें। मनुष्य महानता से उत्पन्न हुआ है, उसका लक्ष्य महान होना चाहिए। इसके लिए मनुष्य को कर्मरूपी गाण्डीव लेकर अपने मन में नित्य-प्रति उत्पन्न होने वाले विकारों से युद्ध करना चाहिए और अपने को शुद्ध एवं सात्विक बनाते चलना चाहिए। शुभ कर्म तथा विचार वह सीढ़ी है, जिसका सहारा लेकर चढ़ने से मनुष्य उच्च, आदर्शवादी एवं महान बन सकता है।

❑ प्राणधारी को दिए गये ईश्वरीय उपहारों में मानव शरीर सर्वोपरि है। इससे बड़ी कोई और सम्पदा ईश्वर के पास है ही नहीं। इसे उसकी सर्वोत्तम कलाकृति कहा जा सकता है। जिन विशेषताओं के साथ इसे सँजोया गया है, उसका दर्शन समस्त संसार में अन्यत्र कहीं नहीं हो सकता। इसमें जितनी अद्भुत सम्भावनाएँ भरी पड़ी हैं, उसे देखते हुए नर को नारायण का छोटा स्वरूप कहने में कोई अत्युक्ति नहीं है। इसका स्वरूप और उपयोग यदि समझा जा सके और ठीक तरह प्रयुक्त किया जा सके तो मनुष्य देवोपम हर्षोल्लास भरा-जीवन जी सकता है और अपने सम्बद्ध क्षेत्र को सुख-शान्ति भरे स्वर्गीय वातावरण का लाभ दे सकता है।

❑ यदि जीवन का महत्त्व, स्वरूप और उपयोग समझा जा सके तो प्रतीत होगा कि और कुछ शेष नहीं है। जो मिला है उसी का प्रयोग करना सीखना है। आरोग्य, आनन्द, धन, बल, यश एवं वर्चस्व के समस्त आधार अपने भीतर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मौजूद हैं। कमी एक ही है कि अपने आपको समझना, जीवनसम्पदा का मूल्यांकन करना है और उपलब्धियों का सदुपयोग करना नहीं आता। यदि यह भूल सुधारी जा सके तो प्रतीत होगा कि अपने चारों ओर अनन्त आनन्द का समुद्र लहलहा रहा है और उच्चस्तरीय प्रगति का सोपान पूर्णतया खुला पड़ा है।

❑ अरस्तू ने एक शिष्य द्वारा उन्नति का मार्ग पूछे जाने पर उसे पाँच बातें बताईं—(१) अपना दायरा बढ़ाओ, संकीर्ण स्वार्थपरता से आगे बढ़कर सामाजिक बनो। (२) आज की उपलब्धियों पर सन्तोष करो और भावी प्रगति की आशा करो। (३) दूसरों के दोष ढूँढ़ने में शक्ति खर्च न करके अपने को ऊँचा उठाने के प्रयास में लगे रहो। (४) कठिनाई को देखकर न चिन्ता करो, न निराश होओ, वरन् धैर्य और साहस के साथ उसके निवारण का उपाय करने में जुट जाओ। (५) हर किसी में अच्छाई खोजो और उससे कुछ सीखकर अपना ज्ञान और अनुभव बढ़ाओ। इन पाँच आधारों पर ही कोई व्यक्ति उन्नति के उच्चशिखर पर पहुँच सकता है।

❑ जो बात आपको सच्ची प्रतीत होती है, उसे बिना किसी हिचकिचाहट के खुली जबान से कहिए। अपने अन्तःकरण को कुचलकर बनावटी बातें करना किसी के दबाव में आकर निजी विचारों को छिपाते हुए हाँ में हाँ मिलाना आपके गौरव के विपरीत है। इस प्रकार की कमजोरियाँ प्रकट करने में डरता है। ऐसे कायर व्यक्ति किसी प्रकार अपना स्वार्थसाधन तो कर सकते हैं, पर किसी के हृदय पर अधिकार नहीं जमा सकते। स्मरण रखिए प्रतिष्ठा की वृद्धि सच्चाई और ईमानदारी द्वारा होती है। आप खरे विचार प्रकट करते हैं, जो बात मन में है उसे ही कह देते हैं तो भले ही कुछ देर के लिए कोई नाराज हो जावे पर क्रोध उतरने पर वह इतना तो अवश्य अनुभव करेगा कि वह व्यक्ति खरा है, अपनी आत्मा के प्रति सच्चा है। विरोधी होते हुए भी वह मन ही मन आदर करेगा।

❑ आप किसी भी लोभ-लालच के लिए अपनी आत्म-स्वतन्त्रता मत बेचिए, किसी भी फायदे के बदले में आत्म-गौरव का गला मत कटने दीजिए। चापलूसी और कायरता से यदि कुछ लाभ होता हो तो भी उसे त्यागकर कष्ट में रहना स्वीकार कर लीजिए, क्योंकि इससे आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी, आत्मगौरव को प्रोत्साहन मिलेगा। स्मरण रखिए आत्मगौरव के लिए जीने में ही जिन्दगी का सच्चा आनन्द है।

❑ आत्म-सम्मान को प्राप्त करने और सुरक्षित रखने का एक ही मार्ग है, वह यह कि 'ईमानदारी' को जीवन की सर्वोपरि नीति बना लिया जाए। आप जो भी काम करें, उसमें सच्चाई की पर्याप्त मात्रा होनी चाहिए। लोगों को जैसा विश्वास दिलाते हैं, उस विश्वास की रक्षा कीजिए। विश्वासघात, दगाबाजी, वचन पलटना, कुछ कहना और कुछ करना मानवता का सबसे बड़ा पातक है। आजकल वचन पलटना एक फैशन-सा बनता जा रहा है, इसे हलके दर्जे का पाप समझा जाता है, पर वस्तुतः अपने वचन का पालन न करना, जो विश्वास दिलाया है, उसे पूरा न करना बहुत ही भयानक, आत्मघाती सामाजिक पाप है। धर्म आचरण की अ, आ, इ, ई, वचन पालन से आरम्भ होती है। यह प्रथम सीढ़ी है जिस पर पैर रखकर ही कोई मनुष्य धर्म की ओर, आध्यात्मिकता की ओर बढ़ सकता है।

❑ आप जवान से कहकर या बिना जवान से कहे या किसी अन्य प्रकार दूसरों को जो कुछ विश्वास दिलाते हैं, उसे पूरा करने का शक्तिभर प्रयत्न कीजिए, यह मनुष्यता का प्रथम लक्षण है, जिसमें यह एक सच्चे मनुष्य को होना चाहिए।

❑ मनुष्य का व्यक्तित्व उसकी आदतों के मिलने से बनता है। मन में तो भले और बुरे दोनों प्रकार के विचार रहते हैं, वे जल्दी-जल्दी बदलते भी रहते है, परन्तु आदतें चिरस्थायी होती हैं, वे देर में बनती हैं और देर तक कायम रहती हैं। ये आदतें ही व्यक्तित्व का निर्माण करती हैं। कोई व्यक्ति जवान से क्या कहता है, इसका कोई विशेष महत्त्व नहीं है, महत्त्व इस बात का है कि उसकी आदतें कैसी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हैं ? वह व्यवहार रूप में अपना आचरण किस प्रकार करता है ?

❑ जैसे शराब की दुकान देखकर शराबी को वहाँ गये बिना रहा नहीं जाता, उसी प्रकार यह भी आदत हो सकती है कि किसकी बुरी दशा देखकर उसकी स्थिति पर दया अवश्य उत्पन्न हो। दया करने से दया की आदत बनती है, हिंसा से हिंसा की प्रवृत्ति उत्पन्न होती है। जिस भी प्रकार की कार्य-प्रणाली को हम व्यवहार में लाते हैं, बार-बार के अभ्यास से वह आदत का रूप धारण कर लेती है। इन आदतों के अनुरूप ही मनुष्य की स्थिति समझी जाती है। आप जिन बातों को अपने व्यक्तित्व की उन्नति के लिए आवश्यक समझते हैं, उन्हें बार-बार कार्यरूप में परिणत करना आरम्भ कर दीजिए। कुछ दिनों में वह बात आपके स्वभाव में शामिल हो जाएगी और आदत बन जाएगी। दया, सेवा, उदारता, सदाचार, संयम, मधुर भाषण आदि सात्विक आत्मिकगुण किसी को अकस्मात ही नहीं आते, वरन् उन्हें बार-बार कार्यरूप में परिणत करने से व्यक्तित्व का अंग बन पाते हैं।

❑ परमात्मा के अमरपुत्र मनुष्य को असीम अधिकार प्राप्त हैं। सम्राटों के सम्राट परमात्मा का युवराज-मनुष्य ऐसे दैवी अधिकारों से सुसम्पन्न बनाया गया है, जिनके द्वारा उसे सृष्टि का मुकुटमणि होने का गौरव प्राप्त है। इन अधिकारों के फलस्वरूप उसे आत्मिक और भौतिक सम्पदाओं एवं समृद्धियों से भरा-पूरा होना चाहिए। अनन्त, अखण्ड, सुख-शान्ति का भागी होना चाहिए।

परन्तु आज विचित्र दशा है—शैतानी, आसुरी शक्तियों ने मनुष्य को उसके दैवी स्वभाव—जन्म सिद्ध अधिकारों से वंचित कर दिया है। अज्ञान, अविवेक, प्रलोभन, भय, नैराश्य एवं संकीर्णता ने उसकी दिव्यदृष्टि का अपहरण करके उसे क्रूर, कुकर्मी, हिंसक, हत्यारा, धूर्त, मूर्ख, पाखण्डी एवं मोहग्रस्त बना दिया है। सृष्टि का मुकुटमणि धर्म-धारण करने वाला, महामानव आज निरीह एवं असहाय की तरह दुःख-दरिद्र की असहनीय पीड़ाओं में जकड़ा हुआ तड़फ रहा है।

❑ अब हम इस स्थिति में रहने के लिए तैयार नहीं, इस शैतानी षड्यन्त्र के विरुद्ध अब हम बगावत का झण्डा उठाते हैं। दुनिया अधिकारों की लड़ाई लड़ रही है, हम भी अपने अधिकारों की आवाज बुलन्द करते हैं। जिसने हमें इस प्रकार पराधीन, लुंज-पुंज बना रखा है उसके विरुद्ध समस्त साधनों से लड़ेंगे और अब हम प्रण करते हैं कि अपने जन्मसिद्ध अधिकारों को, दैवीगुणों को प्राप्त करके रहेंगे।

❑ युगपरिवर्तन की सन्धिवेला में चल रही अनुपयुक्त की गलाई और अभीष्ट की ढलाई का जो उपक्रम इन दिनों चल रहा है, उसमें अनभ्यस्त ढर्रे पर भारी चोट पड़ती है और हर वर्ग एवं प्रचलन को नई रीति-नीति अपनाने में खीझ और असुविधा हो सकती है, किन्तु नियति की विधि-व्यवस्था ने जो नव-सृजन का निर्धारण किया है उसे अपनाने के अतिरिक्त और कोई चारा है नहीं।

❑ वैभव की दृष्टि से बड़े वे हैं, जिनके पास साधनों की प्रचुरता और बुद्धि-कौशल की प्रखरता है। ऐसे लोग ऐश्वर्यवान कहलाते हैं और अपनी सामर्थ्य के बदले सुख-साधन एवं पद-सम्मान पाते हैं।

❑ वर्चस की दृष्टि से महान वे हैं, जिनके दृष्टिकोण एवं चरित्रक्रम का स्तर ऊँचा है। जो आदर्श पर आस्था रखते हैं और उन्हें कठिन अवसरों पर भी अपनाये रहने वाले साहस का परिचय देते हैं। संकीर्ण स्वार्थपरता को ही भव-बन्धन कहते हैं। जिसने इस निकृष्टता से मुँह मोड़ा और उदात्त अन्तःकरण की प्रेरणा से सत्प्रयोजन के लिए कदम बढ़ाया, उस ही जीवनमुक्त को परमपुरुषार्थ माना गया है और उसका श्रेयाधिकारी उसे पाया गया है, जो बड़प्पन से नहीं महानता से प्यार करता है। वैभव से दूसरे चमत्कृत हो सकते हैं, शरीर की सुविधा हो सकती है, किन्तु जहाँ तक आत्म-सन्तोष, लोक-सम्मान एवं दैवी-अनुग्रह जैसी विभूतियों का सम्बन्ध है, वे वैभववानों को नहीं, महामानवों को ही उपलब्ध होती हैं।

❑ दूरदर्शी वे हैं जो क्षुद्रता से ऊँचे उठकर महानता का वरण करते हैं। वैभव नश्वर और अस्थिर ही नहीं मादक भी है। उसमें उन्माद

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उत्पन्न करने का दुर्गुण है। ऐसे कम ही हैं, जो वैभव को पहचाने और उसका सदुपयोग करने में समर्थ होते हैं। अधिकतर तो उसका दुरुपयोग ही होता है, इसके विपरीत महानता की विभूतियाँ ऐसी हैं, जो व्यक्ति की गरिमा बढ़ाती हैं। गरिमा ही वह विभूति है जिसके आधार पर जन-सहयोग बरसता और उच्चस्तरीय सफलताओं का अवसर मिलता है।

❑ अदूरदर्शिता वैभव के लिए मचलती है और उसके लिए क्षुद्रता की रीति-नीति का अनुसरण करती है। दूरदर्शिता हर कसौटी पर वर्चस की गरिमा को परखती और उसी का वरण करती है। महामानव वर्चस के लिए, महत्ता के लिए प्रयत्न करते हैं। फलतः दुहरे नफे में रहते हैं। महानता जहाँ रहती है, वहाँ सम्पदा का भी अभाव नहीं रहने पाता।

❑ कलाकारिता के अनेक पक्ष हैं, पर सबकी व्याख्या एक ही है कि अनगढ़ को सुगढ़ में परिणत कर दें। कुम्हार बेकार मिट्टी को खिलौनों में बदल देता है। स्वर्णकार धातु खण्डों से सुहावने आभूषण बनाता है। लोहे को गलाने वाले, उससे उपयोगी पुर्जे बनाकर अच्छी-खासी मशीन खड़ी कर देते हैं। मूर्तिकार पत्थर के छोटे-बड़े टुकड़ों को छैनी-हथौड़ी की सहायता से देव-प्रतिमा बदल देते हैं।

❑ मनुष्य के हाथ में सबसे बहुमूल्य वस्तु है—'जीवन'। इसे हीरे के समतुल्य समझा जा सकता है। हीरा वस्तुतः पका हुआ कोयला है। उसी खदान में पड़ा रहे तो उसकी कीमत कानी-कौड़ी के बराबर भी नहीं, पर यदि वह जौहरी के पास पहुँचे तो उसे तराशकर ऐसा चमकदार नगीना बनाता है, जिससे देखने वाले और खरीदने वाले का मन पुलकित हो उठे। सुयोग्य माली के हाथों बनाया हुआ उद्यान कितना मनोरम लगता है, उसे सभी जानते हैं। जीवन निरर्थक भी है, जब उसका उपयोग खाने और सोने से अधिक और क्या बन पड़ता है ? अनगढ़ों के हाथ पहुँचने पर वह हेय, निन्दित और पिछड़ेपन से भर जाता है। पग-पग उसे दूसरों की सहायता माँगनी होती है।

पर जीवन के वास्तविक कलाकार वे हैं, जो इस पंचतत्त्वों से विनिर्मित खिलौने को ऐसा सुरुचिपूर्ण बना दें, जिस पर देवता अपने आपको निछावर करने के लिए ललचाएँ।

❑ यह कल्पना कर लेना कि केवल पुस्तकों के अध्ययन से तथा धार्मिक या तात्त्विक बातों को मान लेने से ही उत्तम जीवन प्राप्त हो जाता है और आत्मिक उन्नति के सिद्धान्त समझ में आ जाते हैं, एक साधारण भूल है। ऋषि-मुनियों की अमृतोपम वाणी से आत्मनिष्ठा की परिपक्वता कदापि प्राप्त नहीं हो सकती। स्नान, ध्यान, यम-नियम, योग इत्यादि भी अपने-अपने स्थान पर उत्तम हैं, किन्तु वास्तव में इनमें से कोई भी हमें सरलता से लाभ नहीं कर सकता।

❑ उत्तम जीवन तो मन, वचन तथा कार्य के शुभयोग से प्राप्त होता है। सर्वोत्कृष्ट मन जो चित्र बनावे, वही वचन अर्थात् वाणी से प्रकट हो, फिर वही कार्यों में परिणत हो जाए, तभी उत्कृष्टता प्राप्त हो सकती है।

❑ मन को पूर्ण शान्त अवस्था में रखिए। समस्त भ्रान्तियों, सन्देहों, शक, शुबा इत्यादि को निकालिए और श्रद्धापूर्वक अपने संकल्पों का निर्माण कीजिए। कोई ऐसा कार्य नहीं जो दृढ़ संकल्प के योग से पूरा न हो सके। श्रद्धा तुम्हारे विचार की शक्तियों को केन्द्रित करेगी और संकल्प तुम्हें कार्य में संलग्न होने की प्रेरणा देंगे। मन, वचन तथा कार्य जीवन के प्रेरक हैं। इन्हीं तत्त्वों के शुभयोग का प्रयत्न कीजिए।

❑ भूमि-खण्डों में उर्वरता तो अवश्य है, पर इतनी क्षमता नहीं कि समुद्र से सीधा सम्बन्ध जोड़ सकें। उन्हें बादलों के अनुग्रह का लाभ उठाकर अपनी प्यास बुझानी पड़ती है। इस तृप्ति का लाभ खेतों को हरा-भरा बनाने तथा असंख्य की क्षुधा-पिपासा शान्त होने के रूप में मिलता है। जन-साधारण सभी स्तर के लोगों का एक सम्मिश्रित स्वरूप है। उनमें असंख्य ऐसे भी हैं, जिनमें उच्चस्तरीय प्रतिभाएँ प्रसुप्त स्थिति में पड़ी हैं। उन्हें यदि सदाशयता के साथ सघन सम्बन्ध बनाने का अवसर मिल सके तो वे घिसापिटा जीवन न जिएँ, अपने लिए और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दूसरों के लिए कुछ कहने लायक उपलब्धियाँ प्राप्त कर सकें, पर इसे दुर्भाग्य ही कहना चाहिए कि न कुआँ प्यासे के पास पहुँचता है, न प्यासा कुएँ के पास। महानता प्रतिभाओं के साथ सम्बन्ध जोड़ने को व्याकुल है। प्रतिभाएँ इच्छुक हों चाहे न हों, पर यह निश्चित है कि यदि उन्हें 'सीप को स्वाति बूँद मिलने' जैसा सुयोग मिल सका होता, तो उनमें बहुमूल्य मोती उत्पन्न होते। सौभाग्य सराहा जाता, पर इस हठीले अवरोध का क्या किया जाय जो अपनी जगह चट्टान जैसा अड़ गया है ?

❑ दूरदर्शी वे हैं जो अवरोधों का समाधान निकालते हैं। इससे लोग भले ही श्रमरत रहें और बादलों की तरह घाटा उठाएँ, किन्तु उन्हें देवताओं जैसा श्रेय मिलता है। आसमान पर छाये रहते हैं। उन्मुक्त आकाश में विचरण करते हैं। सभी उनकी प्रतीक्षा करते और नजर गड़ाये रहते हैं। यदि उन्होंने यह कठिन उत्तरदायित्व कन्धों पर न लिया होता तो न कहीं हरीतिमा के दर्शन होते, न जलाशयों का अस्तित्व ही नजर आता। कर्त्तव्य सो कर्त्तव्य। उसे कोई पालकर देखे तो वह अवलम्बन कितना रसीला है ? बादलों को खाली होकर लौटने की प्रक्रिया में रस न आया होता तो निश्चय ही इस रूखे नीरस लगने वाले काम को करने से उन्होंने कबका इनकार कर दिया होता।

❑ महत्त्वाकांक्षाओं का लक्ष्य यदि आदर्शवादी वरिष्ठता को रखा जा सके तो ही उभयपक्षीय प्रयोजन पूरे होते हैं। आरम्भ से ही आत्म-सन्तोष मिलने लगता है। इस प्रयास में सत्प्रवृत्तियाँ उभरती और उपयोगी आदतें परिपक्व होती हैं। व्यक्तित्व का परिष्कार इस मार्ग पर चलने वालों को दैवी वरदान की तरह मिलता है। जिसकी कीमत पर जो महत्त्वपूर्ण है, ऐसा कुछ भी आसानी से खरीदा जा सके।

❑ आदर्शवादी महत्त्वाकांक्षा अपने लिए जितनी लाभदायक होती है, उससे अधिक जन-साधारण के लिए उपयोगी सिद्ध होती है। महामानवों को अनिवार्यतः लोकसेवा में प्रवृत्त होना होता है, अतएव उनके प्रयास-परिश्रम से अनेक का भला होना और बदले में सहयोग भरा श्रद्धा-सद्भाव मिलना स्वाभाविक है।

❑ भौतिक महत्त्वाकांक्षाएँ पानी के बबूले की तरह अपना चमत्कार दिखातीं और थोड़ी-सी स्वार्थ सिद्धि का जायका चखातीं विस्मृति के गर्त में चली जाती हैं, जबकि आदर्शवादिता समुद्र में खड़े प्रकाश स्तम्भों की तरह अपना सर्वोन्नत मस्तक उठाये खड़ी रहती हैं। उस ऊँचाई और रोशनी से नाविक अपनी प्राणरक्षा करते और दर्शक सराहते हुए उधर से निकलते हैं।

❑ महत्त्वाकांक्षाएँ श्रेयस्कर भी हैं और हेय भी। यदि वे क्षुद्र प्रयोजनों में लगें तो हेय और यदि सत्प्रयोजनों की दिशा में चल पड़ें तो समझना चाहिए कि उनसे अधिक या श्रेष्ठ उपलब्धि और कोई हो नहीं सकती।

❑ यह सच है कि हम रात्रि और दिन के चक्र में से गुजरते रहने पर भी मरते नहीं, अपना अस्तित्व यथावत बनाये रहते हैं। उसी प्रकार यह भी सच है कि बार-बार जन्मते-मरने पर भी जीवन का अन्त नहीं है, अविच्छिन्न है। अनादि और अनन्त तक उसकी सत्ता में कोई व्यवधान उत्पन्न नहीं होता।

❑ सूर्य हर दिन पूर्व में उदय और पच्छिम में अस्त होता है। चन्द्रमा का दृश्यस्वरूप अमावस्या की रात को अगोचर रहता है और पूर्णिमा को उसे पूर्णतया उजागर देखा जा सकता है। बीच की तिथियों में उसकी कलाएँ घटती-बढ़ती रहती हैं। इतने पर भी उसके मूल स्वरूप में कोई अन्तर नहीं आता। जन्म और मरण का चक्र भी ऐसा ही है, जिसे जाग्रति और सुषुप्ति के बीच चलने वाली आँख-मिचौनी कहा जा सकता है। बचपन, यौवन, ढलान और मरण का चक्र तो अपने क्रम से यथावत घूमता है, फिर भी उसकी सत्ता अविचल धुरी की तरह अडिग ही बनी रहती है।

❑ मरण से डरना क्या, वह तो पुराने वस्त्र बदलने और नये पहनने की तरह एक सुखद परिवर्तन है। नियति के इस गतिचक्र को रोक सकना किसी के बस की बात नहीं। जो आया है, वह जाएगा अवश्य। इसके लिए न शोक की आवश्यकता है, न सन्ताप की। बुद्धिमत्ता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इसी जीवन में है कि जीवन की अविच्छिन्न शृंखला को शाश्वत समझें और उसकी प्रत्येक कड़ी को अधिक सुव्यवस्थित बनाने के लिए प्रयत्नशील रहें। आज के प्रयास कल को अधिक सुखी, समृद्ध और समुन्नत बनाने के लिए होते हैं। प्रस्तुत जीवन का ऐसा निर्धारण होना चाहिए, जिससे उसका स्वरूप क्रमशः अधिकाधिक श्रेष्ठ, प्रखर और और उज्ज्वल बनता चले और वह पूर्णता को निर्धारित लक्ष्य तक बिना भटकाव के यथासमय जा पहुँचे और अपनाई रीति-नीति पर गर्व कर सके।

❑ कोई मनुष्य मुँह से बढ़-चढ़कर बातें करे और पेट में असत्यता छिपाए हुए हो तो वह बनावट अधिक देर तक ठहर नहीं सकती। आवाज में, शब्दों के उपयोग में, चेहरे में तथा शरीर की हलचल में सत्य और असत्य साफ दीख पड़ते हैं। झूठे आदमी की वाणी में सिटपिटाहट, चेहरे पर निस्तेजता होती है, आँखें मिलाते हुए वह झिझकता है। आशंका और भय से उसका मन अस्थिर एवं चिन्तित-सा दिखाई पड़ता है। असत्य बात कुछ ऐसी अस्वाभाविक होती है कि सुनने वालों के मन में अनायास ही अविश्वास के भाव उठने लगते हैं। इस बीसवीं सदी में झूठ का बड़ा प्रचार है, बड़े कलात्मक ढंग से झूठ बोला जाता है तो भी उसे ऐसा नहीं बनाया जाता कि पकड़ में न आवे।

❑ संसार में अनेक प्रकार के सुख हैं, पर सफलता का, विजय का सुख सबसे बड़ा है, इससे बढ़कर और कोई सुख नहीं। एक मनुष्य जब अपनी चिर-सञ्चित इच्छा और आकांक्षाओं को पूरा हुआ देखता है तो उसे एक आन्तरिक सन्तोष मिलता है। यह सन्तोष एक प्रकार की आध्यात्मिकता की असाधारण वृद्धि होती है।

❑ विजय अकेली नहीं आती, वह अपने साथ अनेक सम्पत्तियाँ लाती है, जिनके वैभव से मनुष्य का मन, शरीर और घर जगमगाने लगता है। जिसने सफलता प्राप्त की, उसके गले में लक्ष्मी की वरमाला पड़ती है, संसार उसके आगे मस्तक झुका देता है। उसके दोष ही गुण बन जाते हैं। यह दुनिया सदा विजयी वीरों की पूजा करती आ रही है। जिसने पराक्रम प्रकट किया है, उसी की महानता स्वीकार की गई है, जिसने चमत्कार कर दिखाया उसे नमस्कार किया गया है।

इसलिए मनुष्य जीवन में प्राप्त हो सकने वाली सम्पदाओं में सफलता को, सिद्धि को सर्वोपरि स्थान दिया गया है। इस महान सम्पदा को हर कोई चाहता है, प्रत्येक व्यक्ति इच्छा करता है कि अमुक काम में सफलता प्राप्त करूँ, परन्तु इन चाहने वालों में से बहुत कम लोग सफल मनोरथ हो पाते हैं।

❑ जिन्हें तुम अप्रिय समझते हो उनकी रचना तुम्हारी परीक्षा करने के लिए की गई है। कसौटी और हथौड़े इसलिए हैं कि सोने की जाँच कर उसकी प्रामाणिकता पर मुहर लगाएँ। यदि तुम भले हो तो उठो बुराइयों को हटाकर वहाँ अपना गुण प्रकट कर दो। छोटा दीपक अन्धकार को गालियाँ नहीं देता वरन् वह खुद जलता है और अपने क्षेत्र में प्रकाश फैलाकर अपनी प्रामाणिकता सिद्ध करता है।

❑ एक शेखचिल्ली ने मधुर कल्पनाओं में मस्त होकर अपने सिर पर रखे हुए तेल के घड़े को फोड़ दिया था और मजूरी के पैसे मिलना तो दूर उलटा लात-घूँसों से पिटा था। वह शेखचिल्ली निस्सन्देह बेवकूफ था और उसकी बेवकूफी की हँसी उड़ाई जाती है।

हम देखते हैं कि हम सब भी प्रकारान्तर से शेखचिल्ली का पार्ट अदा कर रहे हैं। कमाने के लिए घुड़-दौड़ लगाते हुए हम यह भूल नहीं देखते कि साथ ही कितना गँवाया जा रहा है। भौतिक सम्पदाओं के कमाने में, संग्रह में, भोग में हमारा मन ललचाता रहता है और उसकी पूर्ति के लिए सोते-जागते, मन कर्म, वचन से लगे रहते हैं। प्रयत्न से वस्तुओं की जितनी मात्रा मिलती है, तृष्णा उससे भी बहुत आगे निकल जाती है। सम्पदाओं के सुख से सन्तुष्ट होने का अवसर ही नहीं पाता। इस भूमि कूटने में ही जीवन की समाप्ति की घण्टी बज जाती है। सुरदुर्लभ मानव-जीवन को निरर्थक मृगतृष्णा में गँवाकर अन्त में घाटे के साथ लौटना पड़ता है। पिछली कमाई गुम हो जाती है और पाप की गठरी सिर पर होती है। इस दुहरे घाटे के साथ हम अपने घर वापस लौटते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शेखचिल्ली ने तेल की मजूरी जैसे छोटे मामले में प्रमाद किया और सभ्य लोगों की दृष्टि में अपने को उपहासास्पद बनाया, पर हम लोग क्या हैं ? जो मनुष्य जीवन जैसे महत्त्वपूर्ण मामले में इतना भरसक प्रमाद बरत रहे हैं। हमारी बेवकूफी पर कितनी हँसी होगी ? इसे हम लोग क्यों नहीं सोचते ?

❑ कलाकार के हाथ अनगढ़ वस्तुओं को पकड़ते हैं और अपने उपकरणों के सहारे उन्हें नयनाभिराम सुन्दरता से भरते और बहुमूल्य बनाते हैं। कुम्हार मिट्टी से सुन्दर खिलौने बनाते हैं—मूर्तिकार पत्थर के टुकड़े को देवप्रतिमा में परिणत करता है। गायक बाँस के टुकड़े से वंशी की ध्वनि निनादित करता है। धातु का टुकड़ा स्वर्णकार के हथौड़े की चोट खाकर आकर्षक आभूषण बनता है। कागज और कलम से बहुमूल्य चित्र बनाने का चित्रकार का कर्त्तव्य कितना चमत्कार उत्पन्न करता है, इसे कोई भी देख सकता है।

❑ जीवन एक अनगढ़ तत्त्व है। इसे दयनीय दुर्गति से ग्रसित स्थिति में ही अधिकांश व्यक्ति किसी प्रकार गुजारते हैं। उससे लाभ और आनन्द उठाना तो दूर उलटे भार की तरह ढोने में ही कमर टूटती और गरदन मुड़ती दिखाई देती है।

❑ क्या वस्तुतः जीवन ऐसा ही है जिसे रोते-खीजते किसी प्रकार पूरा किया जाना है ? इसके उत्तर में इतना ही कहा जा सकता है कि अनाड़ी हाथों में पड़कर हीरा भी उपेक्षित होता है तो बहुमूल्य मनुष्य जीवन भी क्यों न भार बनकर लदा रहेगा, किन्तु यह भी स्पष्ट है कि यदि उसे कलाकार की प्रतिभा से सँभाला, सँजोया जाय तो निश्चय ही उसे देवोपम स्तर का स्वर्गीय परिस्थितियों से भरापूरा जिया जा सकता है।

❑ साधना, जीवन जीने की कला है। उपासना भी इसी कला, विज्ञान का एक पक्ष है। जो मानवीय अस्तित्व की गरिमा समझ सका और उसे अनगढ़ स्थिति से निकालकर सुसंस्कृत पद्धति से जी सका, उसे सर्वोपरि कलाकार कह सकते हैं।

❑ मनोविज्ञानी शिण्डलर का कथन है—"लोग आयु की दृष्टि से तो बड़े हो जाते हैं, पर चिन्तन की दृष्टि से बालक जैसे अविकसित ही बने रहते हैं। पड़ोसियों का ढर्रा अपनाकर गतिविधियाँ बनती हैं और यह यथार्थता, दूरदर्शिता तथा उपयोगिता की परख करना अनावश्यक मान लिया जाता है। यह अपरिपक्वता ही मानव-जीवन की आन्तरिक प्रगति में सबसे बड़ी बाधा है।

❑ मनुष्य ईश्वर का राजकुमार है। साथ ही बीज रूप में स्रजेता की समस्त विभूतियों का उत्तराधिकारी भी। उसकी सामर्थ्य का उद्गम स्रोत है—विचार निर्झर। इसी में उत्थान-पतन के आधार पर बड़प्पन और पिछड़ेपन का मूल्यांकन होता है। समझने को तो परिस्थितियों को किसी की प्रसन्नता-अप्रसन्नता का कारण माना जाता है, किन्तु तनिक गहराई में उतरने पर तथ्य दूसरे ही सामने आते हैं। मनःस्थिति ही परिस्थितियों की जन्मदात्री है। बीज ही वृक्ष के अस्तित्व का उद्गम है। मनुष्य क्या है ? इसका वास्तविक उत्तर देना हो तो गीताकार के शब्दों में एक शब्द कहना ही पर्याप्त होगा कि **"श्रद्धामयोऽयं पुरुषोः यो यच्छ्रद्धः स एव सः"** अर्थात् मनुष्य का अस्तित्व उसकी श्रद्धा पर अवलम्बित है। जो जैसा सोचता है, वह वैसा ही बन जाता है।

❑ आज की विकृतियों, समस्याओं, विपत्तियों का एकमात्र कारण है चिन्तन में निकृष्टता घुस पड़ने से व्यवहार में उभरी भ्रष्टता और दुष्टता का दौर। परिवर्तन की जिन विशालकाय योजनाओं का इन दिनों अदृश्य जगत में निर्धारण हो रहा है, जिन्हें कार्यान्वित करने के लिए जन-समुदाय बेचैन है, उसका स्वरूप है—'लोकमानस का परिष्कार।' इतना बन पड़े तो फिर जिन समस्याओं का भयावह रूप आज सामने है, उन्हें जादू की छड़ी घुमाने की तरह सरलतापूर्वक बदला जा सकेगा। सड़ी कीचड़ से विषाणु उत्पन्न होते हैं और सड़ी समझ से संकटों के बादल उमड़ते हैं। इस तथ्य को जिस दिन स्वीकारा जा सकेगा, उसी दिन उज्ज्वल भविष्य के निर्धारण का शुभ-मुहूर्त गतिशील हो चला, ऐसा माना जाएगा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ पिछले दिनों भ्रान्तियों, विकृतियों एवं दुष्प्रवृत्तियों में उलझे हुए लोक-मानस ने अपने पैरों कुल्हाड़ी आप मारी है और स्रष्टा के इस विश्व-उद्यान में सुख-शान्ति के साथ जीने देने के मार्ग का परित्याग किया गया है। मनःस्थिति ही परिस्थितियों का सृजन करती है। परिस्थितियाँ भले-बुरे कृत्य कराती हैं। फलतः तदनुरूप प्रतिक्रियाओं के घटाटोप घिर जाते हैं। आज की समस्याओं का एकमात्र कारण है—आस्था-संकट, मर्यादाओं का उल्लंघन, कुकृत्यों का प्रचलन एवं अनीतियुक्त वातावरण में जन-साधारण की मूक दर्शक-सी भूमिका। इस माहौल से जूझा जा सके तो विनाशकारी विभीषिकाओं का सहज समाधान मिल सकता है।

❑ लगता है तो ऐसा कि कुकृत्यों व दुश्चिन्तन से भरा वातावरण सर्वनाशी विनाशलीला प्रस्तुत करके रहेगा, किन्तु इस सन्दर्भ में निराश होने की आवश्यकता नहीं। सघन तमिस्रा के बीच भी आशा की किरणरेखाएँ विद्यमान रहती हैं। प्रतिकार का द्वार सर्वथा बन्द नहीं हुआ है। अभी भी बचाव की पूरी-पूरी गुंजाइश है। जैसे विगत के घटनाक्रमों में ऐसी परिस्थितियाँ आती हैं और अन्ततः जन-साधारण नवयुग को ला सकने में सफल हुआ है, वैसा ही अब भी सम्भव है।

❑ प्रस्तुत सम्मोहन अन्ध-तमिस्रा को युग-मनीषा ही काट सकती है। गहरी नींद में सोये को जाग्रत प्रहरी ही जगा सकता है। आज का यही युग-धर्म है—सबसे बड़ा पुरुषार्थ है। मनुष्य तथ्यतः इतना अदूरदर्शी नहीं है कि आस्थासंकट जैसे कुहासे में अपना स्वरूप और मार्ग भी न देख सके। प्रसुप्ति का दौर, जाग्रति का अभाव ही वह प्रमुख व्यवधान है जिसे दूर करने के लिए समर्थों को आगे आना चाहिए।

❑ जन-साधारण की दृष्टि में सफलता को ही मूल्य है। जो सफल हो गया, प्रशंसा उसी की, की जाती है। देखने वाले यह नहीं देखते कि सफलता नीतिपूर्वक प्राप्त की गयी या अनीतिपूर्वक। झूठे, बेईमान, ठग, चोर, लुटेरे भी बहुत धन कमा सकते हैं, कमा रहे हैं। यह कमाई और विभूति साधारण बुद्धि को चकाचौंध कर देती है। उन्हें प्रशंसा तो मिलती है, पर वह चाटुकारिता अधिक होती है, सम्मान श्रद्धाजन्य प्रशस्ति नहीं। सोचना चाहिए कि क्या यह तरीका उचित है ? क्या इसी प्रकार का जीवन मानव के लिए अभीष्ट है ? सफलता की अपेक्षा नीति श्रेष्ठ है। यदि नीति पर चलते हुए परिस्थितिवश असफलता मिली है तो वह निराशा की बात नहीं गौरव का विषय है। नीति का स्थायी महत्त्व है, सफलता का अस्थायी। सफलता मिलने से भौतिक जीवन के उत्कर्ष में थोड़ी सुविधा रह सकती है, पर नीति त्याग देने पर तो आत्म-सन्तोष, मनःशान्ति, लोक-परलोक, चरित्र, धर्म, कर्त्तव्य और लोकहित सभी कुछ नष्ट हो जाता है। ईसा ने क्रूस पर चढ़कर पराजय स्वीकार की, पर नीति नहीं त्यागी। शिवाजी, राणाप्रताप, बन्दावैरागी, गुरु गोविन्दसिंह, लक्ष्मीबाई, सुभाषचन्द्र बोस आदि को पराजय का मुँह देखना पड़ा, पर उनकी वह पराजय भी विजय से अधिक महत्त्वपूर्ण थी। धर्मशील इसी दृढ़ता को स्थिर रख सकने को एक बड़ी भारी सफलता मानते हैं। अनीति और सफलता में से यदि एक को चुनना ही पड़े तो असफलता का ही वरण करना चाहिए अनीति का नहीं। शीघ्र सफलता प्राप्त करने के लोभ में अनीति के मार्ग पर चल पड़ना ऐसी बड़ी भूल है, जिसके लिए सदा पश्चात्ताप ही करना पड़ता है।

❑ प्राप्त करना उतना कठिन नहीं जितना कि उपलब्धि का सदुपयोग करना। सम्पत्ति अनायास या परिस्थितिवश भी मिल सकती है, पर उसका सदुपयोग करने के लिए अत्यन्त दूरदर्शी विवेकशीलता और सन्तुलित बुद्धि की आवश्यकता पड़ेगी। सुयोग्य व्यक्तियों की समीपता तथा सद्भावना प्राप्त कर लेना उतना कठिन नहीं है, जितना कि उस सान्निध्य का सदुपयोग करके समुचित लाभ उठा सकना।

❑ किंकर्तव्यविमूढ़ता की स्थिति में आत्म-प्रवंचना का एक ही उपाय है कि भाग्य को कोसा जाय। ग्रह-नक्षत्रों या सम्बद्ध लोगों पर प्रस्तुत विपन्नता का दोष थोपकर अपने को निर्दोष समझा जाए। जमाने की हवा, लोगों की दुष्टता, परिस्थितियों, प्रतिकूलता जैसे कुछ कारण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बताकर जी हलका करने में सहारा मिल जाता है, पर इससे भी कुछ बनता नहीं। विपत्ति जहाँ की तहाँ अड़ी रहती है। न दरिद्रता हटती और न दुर्बलता पीछा छोड़ती है।

आधारभूत कारण है दूरदर्शी विवेकशीलता और अनैतिकता से लड़ पड़ने वाली हिम्मत की कमी। यह भीतरी असमर्थता ही प्रसुप्त शक्तियों को जाग्रत होने और प्रतिकूलताओं से निपटने में प्रमुख बाधा है। यदि साहस और संकल्प जगे, सूझ-बूझ से काम लेने का उपक्रम बने तो फिर मनुष्य की निजी गरिमा ही इतनी प्रखर और पर्याप्त है कि सभी विपन्नताओं से जूझ सके और उज्ज्वल भविष्य का सुनिश्चित निर्धारण कर सके।

❑ नियति की इच्छा है कि मनुष्य ऊँचा उठे। उसे आगे बढ़ाने के लिए प्रकृति की शक्तियाँ निरन्तर सहायता करती हैं। ईश्वर के राजकुमार को सुखी और सुसम्पन्न बनाना ही प्रकृति-क्रम है। उसे इसीलिए रचा और इसीलिए खड़ा किया गया है। इतने पर भी यह अधिकार मनुष्य के हाथों ही सुरक्षित रखा गया है कि वह प्रगति किस दिशा में करे ? इसमें किसी को हस्तक्षेप करने का अवसर नहीं दिया जाता। ईश्वर विश्वनियन्ता है। उसका पुत्र स्वभावतः निर्माता तो होना ही चाहिए। प्रकृति उसकी सहायता भर करती है।

❑ अन्तःकरण की आकांक्षा का चयन ही मनुष्य का प्रथम पुरुषार्थ है। इसका चुनाव-निर्धारण उसे स्वयं ही करना पड़ता है। यह दिशा-निर्धारण होते ही आत्म-सत्ता उसकी पूर्ति के लिए जुट जाती है। मनःतन्त्र अपनी विचार-शक्ति को और शरीर-तन्त्र अपनी क्रिया को इसी आदेश के पालन में जुटा देता है। सम्पर्क क्षेत्र से वैसा ही सहयोग मिलता है और परिस्थितियाँ अभीष्ट मनोरथ की पूर्ति के लिए अनुकूल हो जाती हैं। उसके निर्धारण और पुरुषार्थ को इस विश्व में चुनौती दे सकने वाला कोई है भी तो नहीं।

❑ पतन अभीष्ट है या उत्कर्ष ? असुरता प्रिय है या देवत्व ? क्षुद्रता चाहिए या महानता ? यह निर्णय मनुष्य स्वयं करता है। पतन के मार्ग पर चलने पर नारकीय दुःसह दुःख सहने पड़ते हैं और उत्कर्ष के पथ पर स्वर्गीय सुख-शान्ति मिलती है। यह किसी से छिपा नहीं है। चयन में दूरदर्शिता का अपनाना, यही है मनुष्य की बुद्धिमत्ता का प्रमाण एवं परिचय।

❑ सम्पदा का उपार्जन सफलता कही तो जा सकती है, पर इतने भर उन लाभों की आशा नहीं की जा सकती, जो सम्पदा के साथ जुड़े हुए समझे जाते हैं या समझे जाने चाहिए। वैभव दृश्यमान है, इसलिए वह आँखों को प्रभावित-चमत्कृत करता है। उसका स्वरूप बढ़ा-चढ़ा होने पर दर्शकों को सम्पत्तिवान के भाग्य अथवा कौशल की प्रशंसा करनी पड़ती है। इतने पर भी उस लाभ की गारण्टी नहीं बन पड़ती जिसे उठाने के लिए संग्रहकर्त्ता सोचते रहते हैं।

❑ सम्पदा का बहुमूल्य होना एक बात है और उसका सदुपयोग कर सकने की क्षमता बिल्कुल दूसरी बात। वैभव दुधारी तलवार है। वह उलटकर अपने ऊपर भी आक्रमण कर सकती है। सुविधा-साधन अधिक रहने पर सुखी बनने, सरलता से रहने और गर्व-गौरव प्रदर्शित करने का अवसर मिलता है, इसे सभी जानते हैं पर इस रहस्य से विरले ही अवगत रहते हैं कि संचय से भी अधिक बुद्धिमत्ता उसे उपयोग में होती है। इस सम्बन्ध में दृष्टिकोण परिष्कृत न हो तो समझना चाहिए कि वैभव न केवल अपने लिए वरन् उसके उपभोक्ता, कुटुम्बियों के लिए भी आपत्ति का कारण बनेगा। सम्पदा के साथ दूरदर्शिता और शालीनता का समावेश न हो तो वह संग्रहकर्त्ता को दुर्व्यसनी, स्वेच्छाचारी एवं कुकर्मी-अहंकारी बनाकर रख देगी और वह संचय इन्हीं सुराखों में होकर बहता चला जाएगा। इस प्रसंग में आदतें इतनी बिगड़ जाती हैं कि उनके कारण व्यक्तित्व दो कौड़ी का बन जाता है। ऐसे सम्पदावानों की तुलना में वे गरीब हजार दर्जे भले जो अभावग्रस्तता की स्थिति में भी अपनी इज्जत बनाये रहने की बात ध्यान में रखते हुए मितव्ययता, सादगी एवं सज्जनता का अतिरिक्त रूप से अभ्यास करते हैं।

❑ सही कहा गया है कि हर आदमी अपने-अपने विचारों का पुतला है, पहले विचार उठता है,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तब उस पर अमल होता है। बार-बार अमल करने से आदत बनती है और आदतों से आचरण निर्माण होता है।

❑ लोग सच्चरित्रता से यही मतलब निकालते हैं कि आदमी दूसरे की बहू-बेटियों को अपनी ही माँ-बहिन के समान देखता है अथवा दूसरे की सम्पत्ति पर उसके मुँह में पानी नहीं आ जाता। ये बातें चरित्र में खास गुण होती हैं, मगर केवल इन्हीं दो एक बात से चरित्र नहीं ढलता। दुनिया की सभी अच्छी बातों के (जिनमें अपना, अपने समाज का, अपनी जाति और देश का मंगल हो) संग्रह को चरित्र कहते हैं। चीजों का सही से रखना, कपड़े कायदे से पहनना, दर्जा ब दर्जा अपने छोटे-बड़ों की आवभगत करना, वक्त की पाबन्दी, मान-मर्यादा का हरदम विचार, उठना-बैठना, चलना-फिरना सभी चरित्र-निर्माण की सामिग्री है।

❑ कुछ लोग छिपकर काम करते हैं। छिपकर काम करने से उनमें और भी खराब बात पड़ती है और उसके द्वारा चरित्र दूषित होता है। अगर उन चोरों और डाकुओं से जो अपने पेशे की घोषणा करने में जरा भी नहीं शरमाते, पूछा जाय तो वे बतावेंगे, कि उनकी यह कुटेव चुपके-चुपके और छिपकर काम करने से पड़ी।

❑ हर मनुष्य को चाहिए कि वह हर बात को सोचे और उस पर अमल करे, बात भी ऐसी हो जिससे सच्चरित्र निर्माण हो। चरित्र वही है, जिसके द्वारा अच्छे विचारों की और अच्छे काम करने की आदत पड़ जाए।

❑ ज्ञान को आगे रखकर कर्म (पुरुषार्थ) करना चाहिए—पुरुषार्थ से सारे कार्य सिद्ध होते हैं। आलस्य में जीवन बिताना, उसे नीरस-फीका बनाना है। आलस्य सब दुःखों का मूल है। यह दरिद्रता लाता है और ऐश्वर्य ले जाता है। ईश्वर-प्राप्ति के लिए जो पुरुषार्थ होता है, उसे परमपुरुषार्थ कहते हैं। लौकिक और पारलौकिक सुख दोनों इसी में हैं, अतएव मनुष्य को पुरुषार्थी-उद्योगी, यत्नशील होना चाहिए।

❑ अन्धकार को दूर करने का उपाय प्रकाश है—दीपक जलाओ। मल, विक्षेप, आवरण यह तीनों दोष अन्धकार हैं। अशुभ कर्मों के करने से मनुष्य के अंतःकरण में मल बढ़ता है। कृत अशुभ कर्मों के लिए पछतावा और आगे को उनके विपरीत शुभकर्म करने से मल दूर हो जाता है। मल के दूर होते ही उपासना अपना बल बढ़ाना प्रारम्भ करती है। इच्छा की बहुतायत से विक्षेप बढ़ता है। मन का राज होता है। इस कारण मन में चंचलता बढ़ती है, इसलिए मनुष्य को कम से कम १ घण्टा चित्तवृत्ति निरोध का अनुष्ठान अभ्यास द्वारा मन को एकत्र करने का यत्न करना चाहिए। इसी का नाम उपासना है, यही विक्षेप दूर करने का एकमात्र उपाय है। अब मल और विक्षेप के कम होने से प्रभुभक्ति की इच्छा उत्तरोत्तर बढ़ेगी। ऐसी अवस्था आने पर जिज्ञासु उत्तम अधिकारी होकर स्वयं अपने पुरुषार्थ से अज्ञान आवरण को दूर करने लग जाता है और कृतार्थ हो जाती है—ऐसे उत्तमाश्य महाशयों का जीवन प्राणिमात्र के हितार्थ होता है। जब सबके सुख में अपना सुख प्रतीत होने लगा और सारी सत्ता एक ही मान ली तो फिर वहाँ अनिष्ट चिन्ता नहीं रहती और निर्वाण पद प्राप्त हो जाता है।

❑ वृक्ष जिस बीज से उत्पन्न होता है, अपने उत्कर्ष में उसकी ओर ही बन्दित होता है। शिशु की उमंगें परिपक्व मानवता की ओर उमड़ा करती हैं। प्रत्येक जीवित वस्तु अपने स्वरूप को ही फिर उच्चतर रूप में प्राप्त करना चाहती है। इसी का नाम उत्कर्ष है, जो जीव का सहज स्वभाव है। मानव स्तर पर यही उद्देश्य सज्ञान रूप धारण कर लेता है। मन अपने आपे से बाहर निकलकर प्रकृति के अध्ययन में जब शृंखला, व्यवस्था, नियम, उद्देश्य और सौन्दर्य की खोज करता है तो वस्तुतः वह अपने को ही प्रकृति में उसी प्रकार से पाना चाहता है, देखना चाहता है, जैसे आँख स्वयं को दर्पण में। सच पूछा जाए तो प्रकृति आत्म-दर्शन के लिए एक विराट दर्पण ही तो है।

❑ जीवन एक क्रमागत गति है। उत्तरोत्तर विकास तथा नूतन प्रकाश की प्राप्ति हेतु वह सतत प्रयत्नशील रहता है। यह इच्छा आदिम भी है और अन्तिम भी। इसका स्वभाव लगातार आगे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org

www.vicharkrantibooks.org

बढ़ना एवं ऊपर उठना है। पीछे को लौटना, आत्म-केन्द्रित होना और विकास की सम्भावनाओं को निरस्त करना इसकी प्रकृति के अनुकूल नहीं।

❑ सद्बुद्धि का विकास किए बिना मानव-जाति का उद्धार नहीं। मनुष्य की नियति यह है कि वह अपने को दूरदर्शी विवेकशीलता के साथ जोड़े, शालीनता अपनाए और सज्जनों की तरह जिए। दुराग्रह और पक्षपात मनुष्य को उदण्ड बनाते हैं। अहंकारी अपने ही चिन्तन और कर्तृत्व को सबसे ऊँचा और बढ़कर मानता है। उसे यह स्वीकार नहीं कि अपनी मान्यताओं और आकांक्षाओं को औचित्य की कसौटी पर कसे और यह देखे कि वे न्यायसंगत हैं या नहीं। जो चाहा सो कर गुजरना मनुष्य के अन्दर काम करती पशु-प्रवृत्ति है। मनुष्य को यह सोचना होता है कि वह जो जानता, मानता है, चाहता और कहता है वह सार्वजनिक हित में है या नहीं ? धर्म और कर्त्तव्य उसे करने की छूट देते हैं या नहीं।

❑ बुद्धि की महिमा और चतुरता तो है ही, किन्तु सबसे बड़ी बात है विवेकशील न्यायनिष्ठा। हम अपने साथ न्याय करें और दूसरों के साथ भी, पर यह बन तभी पड़ेगा, जब सद्बुद्धि की अवधारणा हो। हम आग्रह छोड़ें और सत्य को अपनाएँ।

❑ इस संसार को माया इसलिए कहा गया है कि यहाँ भ्रान्तियों की भरमार है। जो जैसा है, वैसा नहीं दिखता। यहाँ हर प्रसंग में कबीर की उलटवाँसियों की भरमार है। पहेली बुझौबल की तरह हर बात पर सोचना पड़ता है। प्रस्तुत गोरख-धन्धा बिना बुद्धि पर असाधारण जोर लगाए समझ में ही नहीं आता। तिलिस्म की इस इमारत में भूल-भुलैयाँ ही भरी पड़ी हैं। आँख-मिचौनी का खेल यहाँ कोई जादूगर खेलता-खिलाता रहता है।

❑ प्रस्तुत परिस्थितियों को विधि की विडम्बना, नियति की प्रवंचना भी कहा जा सकता है, पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने पर प्रतीत होता है कि मनुष्य की बुद्धिमत्ता परखने के लिए उस चतुर-चितेरे ने पग-पग पर कसौटियाँ बिछा रखी हैं, जिनके माध्यम से गुजरने वाले के स्तर का पता लगता रहे। लगता है नियन्ता ने अपने युवराज को क्रमशः अधिकाधिक अनुदान देने की व्यवस्था बनाई है और उपयुक्त अधिकारी को उपयुक्त जिम्मेदारियाँ, विभूतियाँ सौंपते चलने की योजना विनिर्मित की है। दूरदर्शी और अदूरदर्शी का पता इस गुत्थी को सुलझा सकने से लग जाता है कि सच्चा स्वार्थ-साधन किसमें है ? किसमें नहीं ? बाहर मात्र एक ही प्रवंचना होती है। तात्कालिक आकर्षणों में यह चंचल मन इतना मचल जाता है कि बुद्धि को उसकी ललक पूरी करने तक का अवसर नहीं मिलता। तरकस से तीर निकल जाने पर पता चलता है कि निशान जहाँ लगाना चाहिए था, वहाँ न लगकर कहीं से कहीं चला गया। सफलता और असफलता का निर्धारण यहीं हो जाता है। व्यवहार-बुद्धि का आश्रय लेने वाले दूरदर्शी इसी कसौटी पर खरे उतरते एवं माया-प्रपंच से बचकर सफलता के साथ आत्मिक प्रगति के पथ पर प्रशस्त होते देखे जा सकते हैं।

❑ उस चर्चा से कोई लाभ नहीं कि आज असुरता का ही चारों ओर साम्राज्य है। उसके समक्ष भलाई ठहर नहीं सकती। वस्तुस्थिति को हम सब जानते ही हैं। भले लोगों की शालीनता की भी कमी नहीं है, पर वह कहीं कोने में मुँह छिपाये बैठी है। आज चारों ओर व्याप्त अशान्ति, असन्तोष, विक्षोभ, अभाव एवं कलह को मिटाने हेतु देवत्व को आगे बढ़ना होगा। यह व्यापक विचार-क्रान्ति, दृष्टिकोण परिवर्तन से ही सम्भव है। यदि हर व्यक्ति अपने चिन्तन में इतना परिष्कार कर ले कि उसके स्वार्थों की सीमा संकुचित नहीं है, उसका क्षेत्र काफी बड़ा है। तृष्णा-वासना के बन्धनों में जकड़े रहने मात्र के लिए नहीं, वरन् धर्म और कर्त्तव्य के निर्वाह हेतु भी उसे जीना है।

❑ बाह्य व्यवस्था को, परिस्थितियों को तो बलात बदला भी जा सकता है। भय, दण्ड, कानून प्रतिबन्ध ब्रेनवाशिंग आदि के माध्यम से अनिच्छापूर्वक लोगों से काम करा भी लेते हैं, पर इनका स्थायित्व नहीं होता। दुष्प्रवृत्तियाँ अवसर पाते ही पुनः उभर आती हैं, जब व्यक्ति, व्यक्ति का अन्तःकरण बदले और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दृष्टिकोण उदात्त हो। इसी में स्थिरता है, वास्तविक शान्ति है। असुरता से मानवीय चेतना को विमुख कर देवत्त्व की ओर उन्मुख करना आज की, युग की महती आवश्यकता है। इसी को जीवन-विद्या अथवा देवत्त्व की ओर बढ़ना भी कह सकते हैं।

❑ फूल की सुन्दरता और महक उसकी किसी पंखुड़ी तक सीमित नहीं है। वह उसकी समूची सत्ता के साथ गुँथी हुई है।

❑ आत्मिकप्रगति के लिए कोई योगाभ्यास विशेष करने से हो सकता है कि स्थूलशरीर या सूक्ष्मशरीर के कुछ क्षेत्र अधिक परिपुष्ट प्रतीत होने लगे और कई प्रकार की चमत्कारी सिद्धियाँ प्रदर्शित की जा सकें।

आत्मा की महानता के लिए इतने भर से काम नहीं चलता। उसके लिए जीवन के हर क्षेत्र को समर्थ, सुन्दर एवं सुविकसित होना है।

❑ दूध के कण-कण में घी समाया होता है। हाथ डालकर उसे किसी एक जगह से नहीं निकाला जा सकता है। इसके लिए उस समूचे का मन्थन करना पड़ता है।

जीवन एकांगी नहीं है। उसके किसी अवयव विशेष को या प्रकृति विशेष को उभारने से काम नहीं चलता। आवश्यक है कि अन्तरंग और बहिरंग जीवन के हर पक्ष में उत्कृष्टता का समावेश किया जाए। ईश्वर का निवास किसी एक स्थान पर नहीं है। वह सत्प्रवृत्तियों का समुच्चय समझा जा सकता है। ईश्वर की आराधना के लिए आवश्यक है कि व्यक्तित्व के समग्र पक्ष को श्रेष्ठ और समुन्नत बनाया जाए।

❑ घी की मूल सत्ता दूध के प्रत्येक कण में ओत-प्रोत रहती है। प्रयत्नपूर्वक उसे मथकर बाहर निकाला जाता है। आत्मिकविभूतियाँ और विशिष्टताएँ जीवनचर्या की प्रत्येक मिनट और प्रत्येक क्रिया-कृत्य के साथ जुड़ी रहती हैं। विचारों की प्रत्येक तरंगों और आकांक्षाओं की प्रत्येक उम्र में घुली रहती हैं। फूल की गन्ध, सुषमा और सुन्दरता किसी विशेष स्थान पर रखी नहीं रहती, वरन् उसके समस्त कलेवर में गुँथी रहती हैं। मनुष्य का समग्र व्यक्तित्व ही उसकी आन्तरिक स्थिति का परिचायक है। किसी विशेष को आत्मिक क्षमताओं का अतिरिक्त केन्द्र मानना भूल है।

❑ साधनापरक योगाभ्यासों में किन्हीं अवयवों को प्रखरता देकर कई प्रकार हलचलों से उन्हें प्रभावित किया जाता है। यह प्रयोगात्मक पद्धति और व्यायामशालाओं में भी ऐसा ही होता रहता है। कई प्रकार के व्यायामों में ऐसा लगता है कि उनका प्रभाव अमुक अवयव पर ही पड़ रहा है। फलतः समस्त शरीर को बलिष्ठ बनाने की कुंजी वही है। देखने में भले ही ऐसा लगता हो, पर वास्तविकता वैसी है नहीं। व्यायाम कोई भी क्यों न हो, उसकी सफलता इसी तथ्य पर निर्भर रहेगी कि समस्त शरीर को बलिष्ठ बनाने की क्षमता उसमें है या नहीं।

❑ आत्मबल का अनुपात जीवन के स्तर के साथ अविच्छिन्न रूप से जुड़ा है। सज्जनता और उदारता से भरापूरा जीवनक्रम ही वह मूल सम्पदा है, जिसे मथने पर सिद्धियों और विभूतियों के नाम से जानी जाने वाली विशिष्टताएँ उभरकर ऊपर आती हैं। कोई साधना ऐसी हो नहीं सकती जो दृष्टिकोण और आचरण में संकीर्णता एवं निकृष्टता भरे रहने पर भी वैसा कुछ परिणाम उत्पन्न कर सके, जैसाकि प्रयोगों के फलस्वरूप अपेक्षा की जाती है।

❑ अपने आपको सुधारना या बिगाड़ना तुम्हारे ही हाथ में है। तुम्हें रोग और व्याधि, शुभ या अशुभ फल अपने कर्मों के ही कारण मिलता है। यदि तुम दास बनना चाहोगे, तो दास बने रहोगे। यदि तुम अपने आपको स्वामी बनाओगे, तो स्वामी बन जाओगे।

❑ आपका कार्य केवल लोगों को प्रसन्न करना, केवल किन्हीं की आज्ञा का पालन करना, किन्हीं के इशारे पर नाचना या किन्हीं का अन्धभक्त बनना नहीं होना चाहिए, वरन् यह होना चाहिए कि उचित, आवश्यक, लाभदायक, धर्मसंगत, विवेकयुक्त कार्य को करेंगे। इस नीति को अपनाने के पश्चात् आमतौर से लोगों की नाराजगी, निन्दा, भर्त्सना, बुराई तथा विरोध का सामना करना पड़ता है। धर्ममय जीवन के मार्ग में प्रधान बाधा यही है। जिसने इस बाधा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

को तुच्छ समझकर ठुकरा दिया तो वह आगे बढ़ जाता है। जो इस कागज के हाथी से डर गया, उसको पश्चात्ताप और शोक में जलना पड़ता है।

❑ आप किसी बात को इसलिए स्वीकार मत कीजिए कि उसे बहुत लोग, बूढ़े लोग, धनी लोग कहते हैं। सत्य की कसौटी यह नहीं है कि उसे बहुत बूढ़े और धनी लोग ही कहते हों। सत्य हमेशा उचित, आवश्यक, न्यायमुक्त तथ्यों से एवं ईमानदारी से भरा हुआ है। थोड़ी संख्या में, कम उम्र के गरीब आदमी भी यदि ऐसी बात को कहते हैं तो वह मान्य है। अकेली आपकी आत्मा ही यदि सत्य की पुकार करती है तो वह पुकार लाखों मूर्खों की बकबक से अधिक मूल्यवान है। जो उचित है, वही ग्रहण करने योग्य है। वही स्वीकार करने योग्य है।

❑ नीचतापूर्ण, ओछे विचार रखना, बेईमानी, धोखेबाजी, खुदगर्जी की नीति का अवलम्बन करना लौकिक और पारलौकिक दोनों ही दृष्टियों से एक बहुत ही हानिकारक दुःखदायी कार्य है। इस मार्ग पर चलने वाले को पग-पग पर घृणा, अविश्वास का सामना करना पड़ता है। उसको सच्चे मित्र और सच्चे सहयोगियों का मिलना प्रायः असम्भव हो जाता है, ऐसे व्यक्ति के लिए अपने जीवन में कोई महत्त्वपूर्ण उन्नति या सफलता प्राप्त करना कठिन है। उसे सदा कुढ़न, द्वेष, विरोध, निन्दा, क्रोध, ईर्ष्या और अशान्ति में ही जलता रहना पड़ेगा। ओछी मनोवृत्ति इस प्रकार की अग्नि है, जो मस्तिष्क की सारी शान्ति और प्रसन्नता को जलाकर खाक कर देती है, जो आदमी कमीने विचार और स्वभावों को अपने मन में स्थान देता है, उसका चित्त सदा मरघट की तरह सुलगता रहता है, किन्तु जिन्होंने उच्च विचारों को अपना लिया है, जो कर्त्तव्यधर्म को प्रधानता देते हुए कार्य करते हैं, वे दिन-दिन आत्मिक और सांसारिक उन्नति के मार्ग पर बढ़ते जाते हैं। स्मरण रखिए नीचे विचार रखना जीवन को नष्ट-भ्रष्ट कर डालने वाला एक भयंकर खतरा है, जिससे हर किसी को सावधान रहने और बचने का प्रयत्न करना चाहिए।

❑ शरीर—अन्न, जल और हवा के आधार पर जीवित रहता है। सम्पन्नता—परिश्रम, चातुर्य और साधनों पर अवलम्बित है, किन्तु अन्तरात्मा को परिपोषण इनमें से किसी के सहारे भी नहीं मिल सकता। सम्पन्नता-सुविधा बढ़ाती है, उसके सहारे शरीरगत विलासिता, तृष्णा और अहंता का परिपोषण हो सकता है। चाटुकारों के मुँह प्रशंसा भी सुनी जा सकती है, किन्तु आत्मिक विभूतियों को अर्जित किए बिना कोई तृप्ति, तुष्टि और शान्ति का रसास्वादन नहीं कर सकता।

❑ समृद्धि दूसरों को चमत्कृत कर सकती है, किन्तु श्रद्धा और सद्भावना उपलब्ध करने के लिए आन्तरिक उत्कृष्टता की आवश्यकता पड़ती है। इसी का दूसरा नाम सज्जनता है। इसे पवित्रता, महानता, उदारता और संयमशीलता के मूल्य पर ही उपलब्ध किया जा सकता है।

❑ यदि शरीर को ही सब कुछ माना जाय तो उसके लिए सुविधा-सम्पादन से विलास, वैभव से सम्बन्ध रख सकता है, किन्तु यदि ऐसा प्रतीत हो कि अपने भीतर अन्तरात्मा नाम की भी कोई वस्तु है, अन्तःकरण भी अपनी आवश्यकताएँ व्यक्त करता है, तो फिर अनिवार्य हो जाता है कि समानता और शालीनता को अपने चिन्तन एवं चरित्र का अविच्छिन्न अंग बनाया जाय। निर्वाह भर से सन्तोष किया जाए और अपनी प्रतिभा को आत्म-परिष्कार के लिए नियोजित किया जाए।

❑ उपासना प्रतिदिन करनी चाहिए। जिसने सूरज, चाँद बनाये, फूल-फल और पौधे उगाये, कई वर्ण, कई जाति के प्राणी बनाये, उसके समीप बैठेंगे नहीं तो विश्व की यथार्थता का पता कैसे चलेगा ? शुद्ध हृदय से कीर्तन-भजन, प्रवचन में भाग लेना प्रभु की स्तुति है, उससे अपने देह, मन और बुद्धि के वह सूक्ष्म संस्थान जाग्रत होते हैं। जो मनुष्य को सफल, सद्गुणी और दूरदर्शी बनाते हैं, उपासना का जीवन के विकास से अद्वितीय सम्बन्ध है।

किन्तु केवल प्रार्थना ही प्रभु का स्तवन नहीं है। हम कर्म से भी भगवान की उपासना करते

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हैं, भगवान कोई मनुष्य नहीं है, वह तो सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान क्रियाशील सत्ता है, इसलिए उपासना का अभाव रहने पर भी उसके निमित्त कर्म करने वाला मनुष्य बहुत शीघ्र आत्म-ज्ञान प्राप्त कर लेता है, लकड़ी काटना, सड़क के पत्थर फोड़ना, मकान की सफाई, सजावट और खलिहान में अन्न निकालना आदि भी भगवान की ही स्तुति है, यदि हम यह सारे कार्यक्रम इस आशय से करें कि इससे विश्वात्मा का कल्याण होगा। कर्त्तव्य भावना से किये गये कर्म, परोपकारों से भगवान जितना प्रसन्न होता है, उतना कीर्तन और भजन से नहीं। स्वार्थ के लिए नहीं आत्म-सन्तोष के लिए किए गये कर्म से बढ़कर फलदायक ईश्वर की भक्ति और उपासनापद्धति और कोई दूसरी नहीं हो सकती।

❑ पूजा करते समय हम कहते हैं—"हे प्रभु तू मुझे ऊपर उठा, मेरा कल्याण कर, मेरी शक्तियों को ऊर्ध्वगामी बना दे और कर्म करते समय हमारी भावना यह कहती है हे प्रभु ! तूने मुझे इतनी शक्ति दी, इतना ज्ञान दिया, वैभव और वर्चस्व दिया, वह कम विकसित प्राणियों की सेवा में काम आये। मैं जो करता हूँ उसका लाभ सारे संसार को मिले। इन भावनाओं में कहीं अधिक शक्ति और आत्म-कल्याण की सुनिश्चितता है। इसलिए भजन को ही नहीं ईश्वर-आदेशों के पालन को सच्ची उपासना मानना चाहिए।

❑ जीवन क्या है ? उसके स्वरूप को समझा जाना चाहिए और उसके साथ जुड़े हुए तथ्यों को स्वीकार किया जाना चाहिए, भले ही वे कठोर और अप्रिय ही प्रतीत क्यों न हों ? जीवन एक चुनौती है, एक संग्राम है और एक जोखिम है, उसे इसी रूप में अंगीकार करने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं। जीवन एक रहस्य है, तिलिस्म है, भूल-भुलैया और गोरख-धन्धा है। गम्भीरता और सतर्कता के आधार पर ही उसकी तह तक पहुँचा जा सकता है और भ्रान्तियों के कारण उत्पन्न होने वाले खतरों से बचा जा सकता है। जीवन कर्त्तव्य के रूप में अत्यन्त भारी किन्तु अभिनेता की तरह हँसने-हँसाने वाला हलका-फुलका रंगमंच भी है।

❑ जीवन एक गीत है जिसे पंचम स्वर में गाया जा सकता है। जीवन एक स्वप्न है जिसमें अपने को खोया जा सके तो भरपूर आनन्द का रसास्वादन किया जा सकता है। जीवन अवसर है, जिसे गँवा देने पर सब कुछ हाथ से गुम जाता है। जीवन एक प्रतिज्ञा है, यात्रा है और कला है। इसको किस प्रकार सफल बनाया जा सकता है ? जिसने इसे जान लिया और मान लिया, समझना चाहिए कि वह सच्चा रत्नपारखी और उपलब्ध विभूतियों का सदुपयोग कर सकने वाला भाग्यशाली है। जीवन सौन्दर्य है, जीवन प्रेम है, जीवन वह सब कुछ है, जो नियन्ता की इस सुविस्तृत सृष्टि में सर्वोत्तम कहा जा सके।

❑ मानव-जीवन एक सौभाग्य है, वरदान है तथा मनुज काया देवताओं के लिए दुर्लभ है। वे तो इसे पाने के लिए तरसते हैं और कभी-कभी अवसर विशेष आने पर जब इस योनि में अवतरित होते हैं तो अपने भाग्य को सराहते हुए देवजीवन जीते हुए स्वयं को व समय को धन्य बना जाते हैं, पर यह तथ्य ईश्वर के ज्येष्ठ पुत्र उसके युवराज, उसकी श्रेष्ठतम कृति इस इनसान नाम के जीव को क्यों समझ नहीं आता, यह एक बड़ा दुविधा भरा प्रश्न है ? सम्भवतः शास्त्रकारों, मनीषियों ने इसी कारण मनुष्य को 'भटका हुआ देवता' कहा है, अर्थात् देवतत्त्वधारी गुणों की आन्तरिक सम्पदा को लिए जन्मी वह जीवसत्ता जो इस मानव चोले में जन्म लेती है, पर अपने उद्देश्य को, लक्ष्य को भूलकर प्रायः भटक जाती है। मृग-मरीचिका की तरह बहिरंग जीवन के सभी आकर्षण उसे लुभाते-ललचाते हैं। आनन्द के परमस्रोत से जन्मी यह दिव्यसत्ता क्षणिक सुख के उन्माद में अपनी ऊर्जस्विता को, जीवन-शक्ति को, विचार-सम्पदा को, क्षणशः नष्ट करती चली जाती है। अधिकांश की नियति यही होती है कि वे पेट-प्रजनन के कोल्हू में विचरते हुए जीवन किसी तरह काट लेते हैं।

इस स्थिति से उबरना ही बन्धन-मुक्ति है। यही मोक्ष है। यही जीवन का परमलक्ष्य है। जो अपनी शाश्वत सत्ता को जान लेते हैं, वे परम सत्ता की आकांक्षा के अनुरूप जीवन जीते हुए लक्ष्य-सिद्धि की ओर बढ़ चलते हैं। इसके लिए

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

साधना करनी होती है, हर पल, हर क्षण, जीवन की हर श्वास के साथ। साधना अर्थात् अपने आपको साधना, अपना नियन्त्रण अपने हाथ में रखना व श्रेष्ठता-उत्कृष्टता की ओर निरन्तर बढ़ते चले जाना। संक्षेप में यही अध्यात्म का मर्म है।

❑ देवलोक में अवस्थित इस कल्पवृक्ष की मान्यता सही नहीं है, जिसके नीचे बैठकर मनुष्य अपनी आवश्यकता पूर्ण करता है। यदि वह कल्पना सही हो भी तो तुम किस प्रकार स्वर्ग पहुँच सकोगे और कैसे उसके सान्निध्य में बैठकर अभीष्ट लाभ उठा सकोगे ?

एक दूसरा वास्तविक कल्पवृक्ष है जो तुम्हारे समीप भी है और मान्यताओं के अनुरूप भी। अच्छा हो उसी के समीप जाओ, और निश्चित रूप से अपना मनोरथ पूरा करो।

वह भूलोक का कल्पवृक्ष तुम्हारा व्यक्तित्व है। धूलि-धूसरित होने के कारण ही वह ठीक से परिलक्षित नहीं होता। उस पर जमी मैल की परत बुहारो और देखो कि वह कितना सुन्दर और कितना उदार है ?

व्यक्तित्व पर चढ़ी दुर्गुणों की मलीनता ही उसे निरर्थक स्तर का बनाये रहती है और किसी काम नहीं आती। यहाँ तक कि उसका भार वहन भी कठिन पड़ता है।

❑ परिष्कृत व्यक्तित्व, जिसमें मानवीय गरिमा के उपयुक्त गुण, कर्म, स्वभाव का बाहुल्य हो, सन्मार्ग पर चलने वालों के लिए घर में पधारे देवता के समान है। उसी की सज्जा और अर्चना करके तुम उस स्थिति में पहुँच सकोगे जो प्रगति और शान्ति के दोनों ही वरदान बिना माँगे प्रदान करता है।

परिष्कृत जीवन प्रत्यक्ष कल्पवृक्ष है। इस उपहार को मनुष्य के हवाले करने के उपरान्त स्रष्टा ने उस पर यह उत्तरदायित्व भी छोड़ा है कि वह उसकी गरिमा को समझे और बनाये रखने के लिए प्रयत्नशील रहे।

❑ साधना की सिद्धि का सिद्धान्त सर्वविदित है, पर साधना किसकी ? यह समझने में प्रायः भूल होती रहती है। जिस देवता की आराधना से अभीष्ट की उपलब्धि होती है, वह जीवन के अतिरिक्त दूसरा और कोई नहीं हो सकता।

❑ उपास्य निर्धारण में दृष्टिभेद हो सकता है, पर उपासना के तत्त्व-ज्ञान को समझा जाय तो उसमें सारतत्त्व इतना ही है—आत्म-परिष्कार का हर सम्भव उपाय अपनाया जाय। इस पुरुषार्थ में जो जितनी प्रगति करता है, उस पर उपास्य का अनुग्रह उसी अनुपात से बरसता है। उपास्य का बाह्य कलेवर कुछ भी क्यों न हो उसकी आत्मा साधक की आत्मा में ही घुली रहती है।

❑ साधना किसकी ? उत्तर एक ही है—आत्म-सत्ता की। अपने को परिष्कृत करने पर ही कोई पदार्थों और परिस्थितियों का लाभ उठा सकता है। कुशल माली ही उद्यान को सुरम्य बनाता और यशस्वी होता है। जीवन-परिष्कार के लिए की गई साधना उन समस्त सफलताओं समेत उपस्थित होती है, जिन्हें ऋद्धि-सिद्धियों के आकर्षण एवं आलंकारिक नामों से जाना जाता है।

इस तथ्य को समझा ही जाना चाहिए कि सुसंस्कृत जीवन का भी दूसरा नाम कल्पवृक्ष है, जिसने उसे प्राप्त कर लिया उसके लिए किसी भी अभीष्ट को प्राप्त कर सकना कठिन नहीं रहता।

❑ आध्यात्मिक पुरुषार्थ का लक्ष्य होना चाहिए अन्तर की उत्कृष्टता का अधिकतम संवर्द्धन। यही है, वह प्रयोग जो व्यक्ति को आत्म-सन्तोष, जन-सहयोग और दैवीअनुग्रह प्रचुर परिमाण में जुटा सकता है। ईश्वर की अनुकम्पा माँगने के लिए किए गये मनुहारों की सार्थकता तभी है, जब अनुग्रह को आत्म-परिष्कार की प्रचण्ड आकुलता के रूप में जाना जा सके।

दैवी-अनुकम्पा इसी रूप में साधकों पर होती रही है। इसी दिव्य अनुदान को विभूतियों की उपलब्धि कहा जाता है। विभूतियों की आन्तरिक विशिष्टताओं की पूँजी जिसके पास जितने परिमाण में बढ़ी-चढ़ी होगी, वह उसी अनुपात से बाह्य जीवन में समर्थ और सुविकसित दृष्टिगोचर हो रहा होगा।

❑ पात्रता के अनुरूप दैवी-अनुकम्पा की उपलब्धि का तथ्य आत्मिक-प्रगति की अपेक्षा करने वाले हर साधक को भलीप्रकार ध्यान में रखना चाहिए। ईश्वर का अनुग्रह इस आधार पर नहीं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मिल सकता कि मनुहार-उपचार की घुड़-दौड़ में कौन कितना आगे निकल गया ? बात तब बनती है, जब अन्तर की उत्कृष्टता का चुम्बकत्व दैवपरिवार को अपनी ओर आकर्षित करता है और अपनी पात्रता के आधार पर प्राणियों का ही नहीं देवताओं का भी मन मोहता है।

❑ उपासना कितनी गहरी और कितनी सार्थक रही, इसका प्रमाण-परिचय एक ही बात से मिलता है कि आन्तरिक सुसंस्कारिता और बाह्य सज्जनता का कितना विकास सम्भव हो सका ? एक ही है और समर्थ बनाने की आकुलता भरी चेष्टा। साधना का केन्द्र-बिन्दु यही है। अस्तु, सिद्धियों का आधार भी इस उद्देश्य के लिए किए गये पुरुषार्थ को समझा जा सकता है।

❑ तीन लोकों के रूप में शास्त्रों में जो आलंकारिक वर्णन मिलता है, वस्तुतः वे मानवीय चेतना के तीन स्तर हैं। पाताललोक अर्थात् अहंकारी, आक्रामक, हेय स्तर के नर-पिशाचों की निवास-स्थली। जहाँ भी पतनोन्मुखी प्रवृत्ति संव्याप्त हो, मानना चाहिए कि वहाँ अधःलोक के निवासियों ने वास कर रखा है, भले ही बाहर से वे सामान्य मनुष्य नजर आते हों। भू-लोक मनुष्य-लोक है। जहाँ रहने वालों की आकृति व प्रकृति एक समान होती है। मानवीय गरिमा की कसौटी एक ही है, प्रकृति-आकृति तो सबकी समान होती है। स्रष्टा द्वारा सौंपी गयी जिम्मेदारी को जो भी निभाता है, मर्यादाओं का निर्वाह भली-भाँति करता है, मानना चाहिए कि वह मानव-स्तर पर जी रहा है। मानवोचित विवेक जिस किसी के पास भी है, वह लोभ मोह की बेड़ियों में न फँसकर विश्व-उद्यान को समुन्नत बनाने में अधिकाधिक हाथ बँटाता है।

स्वर्गलोक इससे भी ऊपर है। उत्कृष्टता, ऊर्ध्वगमन, ऊर्ध्वगति इस स्तर पर पहुँचने का ही नाम है। यहाँ देवमानव बसते हैं। जो आदर्शवादी रीति-नीति अपनाते हैं, उनमें देने की प्रवृत्ति प्रधान होती है।

❑ विकास का सही स्वरूप यही है कि हम जिस स्तर पर जी रहे हैं, उससे ऊँचे धरातल की ओर यात्रा करें। हमें स्वर्गलोकवासी या देवमानव होना चाहिए। इसके लिए हमें कहीं से कुछ नहीं माँगना, भीतर समाए देवत्व को ही उभारना है। भावनात्मक उत्कर्ष की उमंगें ही उभारनी हैं। जहाँ मानव में दैवी-सत्ता का उदय जिस परिमाण में होगा, वहाँ उतनी ही मात्रा में धरती पर स्वर्ग के अवतरण की परिस्थितियाँ बनती चली जाएँगी।

❑ आशावाद आस्तिकता है। सिर्फ नास्तिक ही निराशावादी हो सकता है। आशावादी ईश्वर का डर मानता है, विनयपूर्वक अपना अन्तर्नाद सुनाता है, उसके अनुसार बरतता है और मानता है कि ईश्वर जो करता है, अच्छे के लिए करता है।

निराशावादी कहता है कि मैं करता हूँ, अगर सफलता न मिले तो अपने को बचाकर दूसरे सब लोगों के मत्थे दोष मढ़ता है। भ्रमवश कहता है कि किसे पता ईश्वर है या नहीं और खुद अपने को भला और दुनिया को बुरा मानकर कहता कि मेरी किसी ने कद्र नहीं की एवं अन्त में आत्मघात कर लेता है और यदि न करे तो भी मुर्दे की तरह जीवन बिताता है।

आशावादी प्रेम में मगन रहता है। किसी को अपना दुश्मन नहीं मानता। इससे वह निडर होकर जंगलों में और गाँवों में सैर करता है। भयानक जानवरों तथा ऐसे जानवरों जैसे मनुष्यों से भी वह नहीं डरता, क्योंकि उसकी आत्मा को न साँप काट सकता है। शरीर की तो वह चिन्ता ही नहीं करता, क्योंकि वह तो काया को काँच की बोतल समझता है। वह जानता है कि एक न एक दिन तो यह फूटने ही वाली है, इसलिए वह उसकी रक्षा के निमित्त संसार को पीड़ित नहीं करता। वह न किसी से शत्रुता ही करता है, न किसी की जान पर ही हाथ उठाता है। वह तो अपने हृदय में वीणा का मधुर गान निरन्तर सुनता और आनन्द-सागर में डूबा रहता है।

निराशावादी स्वयं राग-द्वेष से भरपूर होता है, इसलिए वह हर एक को अपना दुश्मन मानता है और हर एक से डरता है। अन्तर्नाद तो उसके होता ही नहीं। वह तो मधु-मक्खियों की तरह इधर-उधर भिन-भिनाता हुआ बाहरी भोगों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

को भोगकर रोज थकता है और रोज नया भोग खोजता है और इस तरह प्रेमरहित तथा अमित होकर इस दुनिया से कूच कर देता है और उसके नाम की याद तक किसी को नहीं आती।

❑ अँग्रेजी की एक कहावत है कि "मेंढ़ा जितनी बार बें-बें करता है, वह उतनी ही बार अपने मुँह के ग्रास को खो देता है।" यह बात उन लोगों पर लागू होती है, जो अपने भाग्य को दोष दिया करते हैं, अपनी अयोग्यता और दीनता का रोना रोया करते हैं। जितनी ही बार ऐसे दुर्बलतासूचक विचार किये जाते हैं उतना ही उनके संस्कार मन पर मजबूती से जमते हैं और कार्यकारिणी शक्ति में घटोत्तरी होती जाती है।

❑ विचारों में एक प्रकार की चुम्बक शक्ति है, जो अपने समान पदार्थों को आकर्षित करती है। अगर आप समान पदार्थों—दीनता, दुर्भाग्य और आधि-व्याधि के विचारों में डूबे रहें तो यही चीजें किसी न किसी प्रकार प्राप्त हो जावेंगी। यह हो नहीं सकता कि जैसे कुछ आप विचार करें, उनके विपरीत परिस्थितियाँ प्राप्त हों।

❑ विचार बीज हैं और परिस्थिति उसका फल है। यात्री का मुँह जिधर होता है, उधर ही उसकी यात्रा बढ़ती जाती है। यदि कायरता और दरिद्रता की ओर आपका मुँह है तो इसी दिशा में लगातार बढ़ते जाओगे। आशंकाएँ अक्सर मूर्तिमान हो जाती हैं, जिन्हें असफलता की, विपत्ति, तंगी की आशंका लगी रहती है। देखा गया कि अक्सर वैसी ही परिस्थितियाँ उनके सामने आ खड़ी होती हैं। इसके विपरीत साहसी और आत्म-विश्वासी लोग निरन्तर विजय के पथ पर बढ़ते चले जाते हैं।

❑ चिन्ताओं और कठिनाइयों पर विजय पाने वाला ही उन्नति के मार्ग पर आगे बढ़ सकता है। जीवन बहुत सुन्दर है, शानदार है, लेकिन वह इससे भी सुन्दर और शानदार बन सकता है। जो लोग इस समय सबसे अधिक सुखी हैं, हमारा उद्देश्य उनसे अधिक सुखी बनना है। हम दासता और भय को दूर कर दें, तो सुख, समृद्धि और सफलता हमारे पाँव चूमेगी।

❑ कोई बड़ा संकट चाहे कितनी ही शीघ्र आने वाला हो, परवाह मत करो; उस समय तक यथासम्भव प्रसन्न रहो। जीवन का यह नियम बना लो कि जब तक सचमुच पुल पार न करना पड़े, यह मत सोचो कि वह कैसे पार होगा ? जो आदमी कल से डरता है, वह जीवन से डरता है और बुजदिल है। उसे भगवान में और अपने में विश्वास नहीं, वह भी कोई महत्त्व प्राप्त नहीं करेगा।

❑ निराशा एक प्रकार की नास्तिकता है, जो व्यक्ति संध्या के डूबते हुए सूर्य को देखकर दुःखी होता है और प्रातःकाल के सुनहरी अरुणोदय पर विश्वास नहीं करता, वह नास्तिक है। जब रात के बाद दिन आता है, मरण के बाद जीवन होता है, पतझड़ के बाद वसन्त आता है, ग्रीष्म के बाद वर्षा आती है, सुख के बाद दुःख आता है, तो क्या कारण है कि हम अपनी कठिनाइयों को स्थायी समझें ? जो माता के क्रोध को स्थायी समझता है और उसके प्रेम पर विश्वास नहीं करता, वह नास्तिक है और उसे अपनी नास्तिकता का दण्ड रोग, शोक, विपत्ति, जलन, असफलता और अल्पायु के रूप में भोगना पड़ता है। लोग समझते हैं कि कष्टों के कारण निराशा आती है, परन्तु यह भ्रम है। वास्तव में निराशा के कारण कष्ट आते हैं। जब विश्व में चारों ओर प्रसन्नता, आनन्द, प्रफुल्लता और उत्साह का समुद्र लहलहा रहा है, तो मनुष्य क्यों अपना सिर धुने और पछताये ? मधु-मक्खी के छत्ते में से लोग शहद निकाल ले जाते हैं, फिर भी वह इकट्ठा करने का कार्य आरम्भ कर देती है। क्या हम इन मक्खियों से कुछ नहीं सीख सकते ? धन चला गया, प्रियजन मर गये, रोगी हो गये, भारी काम सामने आ पड़ा, अभाव बढ़ गये तो हम रोये क्यों ? इन कठिनाइयों का उपचार करने में क्यों न लग जावें ?

❑ ❑

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

कर्मफल और ईश्वर

❑ **इन्द्रः सत्य योनिः।**

परमेश्वर सत्य का प्रवर्त्तक है।

❑ **अल आना खफ्फफल्लाहो अनकुम् व अलिमा ख अन्ना फी कुम ज़ाफा..... वल्लाहो मअस्साबिरीन्।**

—सूरये अन्फाल २। १०। ६५

हे ईमान वालो ! अब अल्लाह ने तुम पर से भार हलका किया और समझा कि तुम में निर्बलता है, अतः यदि तुममें से सौ सच्चे मनुष्य हों तो वह दो सौ पर विजयी होंगे और तुम में से हजार हों तो वे अल्लाह की आज्ञा से दो हजार पर विजयी होंगे। अल्लाह सच्चों के साथ है।

और जब कुछ लोग बुरे कर्म करके झट कह देंगे कि हमने तो अपने बाप-दादों को इस प्रकार करते देखा और अल्लाह ने हमको इसके करने की आज्ञा दी है। हे पैगम्बर ! तुम इन्हें बतलाओ कि अल्लाह बुरे आचरणों की आज्ञा नहीं देता। अल्लाह पर क्यों ऐसे असत्य आक्षेप लगाते हो, जो तुम्हें ज्ञात नहीं।

❑ प्राणी और पदार्थ स्थिर नहीं रहते, वे आते हैं और चले जाते हैं। व्यक्तियों की प्रकृति में भी स्थिरता नहीं। उनकी घनिष्टता, उपेक्षा और शत्रुता में भी बदलती रहती है। इसलिए तुम उनके साथ कर्त्तव्य के नाते उसी सीमा तक जुड़ो, जिसमें वियोग या परिवर्तन पर पश्चात्ताप न करना पड़े।

❑ प्यार करने योग्य एक परमेश्वर ही है। उसी की प्रीति सच्ची है। सबके बदल जाने पर भी वह बदलने वाला नहीं है। उसी को पकड़ो जो तुम्हें छोड़ने वाला नहीं है। *—टामस केम्पस*

❑ मैंने अपने भगवान को अपनी कल्पना, मान्यता और रुचि के अनुरूप ढाला है साथ ही यह आशा भी की है कि वह मेरी इच्छानुसार सोचेगा और चलेगा।

पर जब देखता हूँ कि दूसरों के ईश्वर मेरी मान्यता और कल्पना से बहुत हद तक भिन्न हैं, उनकी आकृति ही नहीं प्रकृति भी मेरी कल्पना के भगवान से तालमेल नहीं खाती। तब सोचता हूँ क्या हर आदमी का भगवान अलग होना चाहिए ? क्या इतने अलग भगवान हो सकते हैं ?

लगता है हर आदमी ने अपना भगवान अपने ढंग से गढ़ा है, उसकी निज की आकांक्षाओं और मान्यताओं के ढाँचे में ढाला गया है। लगता है हर व्यक्ति अपनी ही अहंता को ईश्वर का आवरण पहनाकर पूजने और रिझाने में लगा हुआ है।

काश सबके भगवान एक होते और उस सार्वभौम एकता को ध्यान में रखते हुए एक ऐसा भगवान गढ़ा जाता, जो व्यक्ति के इशारे पर चलने को तैयार न होकर-अपने इशारे पर लोगों को चलाने के लिए विवश करता।

—सन्त वास्वानी

❑ मेरी जानकारी में ईश्वर इस धरती पर कठोर से कठोर काम लेने वाला स्वामी है। वह हमारी पूरी-पूरी परीक्षा करता है। जो उसके इम्तहान में पास होते हैं, उनकी वह पूरी-पूरी सहायता भी करता है, परन्तु उसकी सहायता का स्वरूप हमारी इच्छा के अनुरूप नहीं, उसी की समझ के अनुरूप होता है। अन्धकार को चीरती हुई उसकी प्रकाश किरणें प्रत्येक सच्चे श्रद्धालु का सदा मार्ग-दर्शन करती हैं।

—महात्मा गाँधी

❑ रे मनुष्य ! तू दीन होकर घर-घर क्यों भटकता है ? तेरा पेट तो सेर भर आटे से ही भरता है। सुना है, भगवान तो उस समुद्र को भी भोजन पहुँचाते हैं, जिसका शरीर चार सौ कोस लम्बा-चौड़ा है। संसार में कोई भूखा नहीं रहता, चींटी और हाथी सभी का पेट भगवान भरते हैं। अरे मूर्ख, तू विश्वास क्यों नहीं करता ?

—सुन्दरदास

❑ तू मुझे उत्तम क्यों कहता है ? कोई उत्तम नहीं, केवल एक अर्थात् परमेश्वर ही उत्तम है।

—मरकुस १०

❑ ईश्वर के दर्शन तब होते हैं, जब मन बिल्कुल शान्त हो जाता है। *—रामकृष्ण परमहंस*

❑ ईश्वर निश्चय ही एक है। वह अगम, अगोचर और मानव जाति के बहुजन समाज के लिए

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अज्ञात है। वह सर्वव्यापी है। वह बिना आँखों के देखता है, बिना कानों के सुनता है। वह निराकार और अभेद है। यह अजन्मा है, उसके न माता, न पिता, न सन्तान फिर भी वह पिता, माता, पत्नी या सन्तान के रूप में पूजा को ग्रहण करता है। *—महात्मा गाँधी*

- जिसके मन में ईश्वर का प्रेम हो गया, संसार का सुख अच्छा नहीं लगता। जो एक बार भी बढ़िया मिश्री का स्वाद ले चुका है, वह क्या राख खाना चाहेगा। *—रामकृष्ण परमहंस*
- **तदित्यृधोऽस्याः सावित्र्याः परमेष्ठी प्रजापति।**
  सन्ध्ययोर्वेदविदुषो सप्त व्याहृति पूर्वकम्।।

—विष्णु स्मृति

अर्थात् आदित्य की महाशक्ति सावित्री प्रजापति द्वारा उपासित है। उसे सन्ध्याकालों में सप्त व्याहृतियों समेत जपना चाहिए।

- ईश्वर न कावा में है, न काशी में है, वह तो घर-घर में व्याप्त है—हर दिल में मौजूद है। *—महात्मा गाँधी*
- सत्य, शिव और सौन्दर्य उसी एक (प्रभु) के विभिन्न रूप हैं। *—एमर्सन*
- हमें ईश्वर का सच्चा साक्षात्कार तभी होता है, जब हम उसके सामने अपनी याचनाएँ लेकर नहीं, किन्तु अपनी भेंट लेकर जाते हैं। *—रवीन्द्रनाथ टैगोर*
- भगवान क्या है ? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि 'प्रकाश का पुंज ! ज्ञान और कर्म की उत्कृष्टता का भरा आलोक !' उसे प्राप्त करने के लिए हमें अपने अन्तःकरण की खिड़की खोलनी पड़ती है, ताकि संचित सड़न और अंधकार को हटाकर वहाँ आनन्दमयी प्रकाश-किरणों का समावेश हो सके। हम कमल की तरह प्रकाश-किरणों को आत्मसात करने के लिए आतुर रहें तो निस्सन्देह हम सुरभित एवं विकसित होने के लाभ से लाभान्वित हो सकेंगे। *—सन्त वास्वानी*
- श्रद्धा का अर्थ है—आत्म-विश्वास और आत्म-विश्वास का अर्थ है—ईश्वर का विश्वास। *—महात्मा गाँधी*
- **एष देवो विश्वकर्मा महात्मा**
  सदा जनानां हृदये संनिविष्टः।
  हृदा मनीषा मनसाऽभिक्लृप्तो य
  एतद्विदुरमृतास्ते भवन्ति।।

—श्वेताश्वतरोपनिषद् ४। १७

संसार की रचना करने वाला वह परमात्मा सदैव प्राणियों के हृदय में स्थित है। इस महात्मा (परमात्मा) को जो शुद्ध हृदय और निर्मल मन से अपने भीतर विद्यमान देखते हैं, वे अमृतत्व को प्राप्त कर लेते हैं।

- **ज्योतिषामपि तज्ज्योतिस्तमसः परमुच्यते।**
  ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानगम्यं हृदि सर्वस्य विष्ठितम्।।

—गीता १३। १७

वह परमात्मा अज्ञानान्धकार से परे ज्योति की भी ज्योति है। वह सबका सुहृद, सबमें विराजमान है और वह ज्ञानस्वरूप परमात्मा ज्ञान से ही देखा जाता है।

- **नह्येष दूरे नाभ्याशे नालभ्यो विषमे न च।**
  स्वानन्दाभासरूपोऽसौ स्वदेहादेव लभ्यते।।

—योगवासिष्ठ ३। ६। ३

परमात्मा न तो दूर है और न कठिनाई से प्राप्त होता है। वह अपनी देह के भीतर ही है और आत्मानन्द के रूप में प्रत्यक्ष है।

- भगवान एक है पर मनुष्य की भाव-शक्ति में उसे अनेक रूप देने की क्षमता है। *—पंचतन्त्र*
- जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश अलग-अलग घरों में जाकर भिन्न नहीं हो जाता, उसी प्रकार से ईश्वर की महान आत्मा पृथक-पृथक जीवों में प्रविष्ट होकर विभिन्न नहीं होती। *—महर्षि रमण*
- ईश्वर के साथ सम्बन्ध जुड़ जाने पर भय, शंका, सन्देह अथवा संकीर्णता दूर होकर आपको निर्भयता और शक्ति प्राप्त होती है और आप में दिव्यता का प्रकाश होने लगता है। *—स्वेट मार्डन*
- इस संसार रूपी समुद्र को पार करने के लिए यह मानव शरीर नाव के समान है, जिसमें बैठकर आत्मा रूपी नाविक भवसागर को पार कर सकता है। *—भगवान महावीर*
- भगवान जब किसी सच्चे भक्त को सच्चा प्यार करते हैं तो उसे अपना एक विश्वस्त सेवक प्रदान करते हैं और कहते हैं मेरे प्यारे के साथ रहो—उसका दामन न छोड़ोगे, ऐसा न हो कि वह अकेला रहकर ओछे आकर्षणों की झाड़ियों में भटक जाए। "इस सेवक का नाम

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है—दुःख।" सचमुच वह ईश्वरभक्त के साथ-साथ छाया की तरह चिपका रहता है।

- जिनके लिए कष्ट सहना कठिन है, उनके लिए भगवान पर श्रद्धा करना भी कठिन है। आत्मा के साथ सम्बन्ध जोड़ने का अर्थ है—जीवन को आदर्शों की जटिल परीक्षाओं में झोंक देना। श्रद्धा को हर दिन नई आग में तपते हुए अपनी आभा को तो निर्भय रखना पड़ता है।

तट पर खड़े होकर डूबते हुए को देखते रहना भक्त के लिए सम्भव नहीं हो सकता। वह लहरों से जूझने वाले की सहायता के लिए स्वयं भी कूदता है। एक टाँग पर खड़े होकर पूजा-अर्चा करना सही है या नहीं, यह कहना संदिग्ध है, पर हम दोनों घुटने टेककर गिरजे में बुद्धिमत्तापूर्वक ढंग से रोज प्रार्थना करते हैं। ईश्वर-भक्ति और आदर्शों के लिए कष्ट सहना यह दो हाथ हैं, जिन्हें जोड़कर प्रार्थना का प्रयोजन सही अर्थों में पूरा हो सकता है।

—सन्त तोरेन

- **यथागवां सर्वशरीरसम्भवः पयोधरान्निःसरतीहकेवलम्।**
  तथा परामाखिलंगोपि शाश्वतो विकासमाप्नोति स दिव्यदेशकैः।।

जिस प्रकार दूध गौ के सब शरीर में व्याप्त होने पर भी केवल स्तन द्वारा क्षरित होता है, उसी तरह परमात्मा के व्यापक होने पर भी विकास दिव्य देशों में होता है।

- परमेश्वर सत्य है यह कहने के बजाय 'सत्य ही परमेश्वर है' यह कहना अधिक उपयुक्त है।

- दो मनुष्य ईश्वर को प्रसन्न करते हैं—एक तो वह जो सच्चे हृदय से उसकी सेवा करता है, क्योंकि वह उसे जानता है, दूसरा वह जो निष्कपट भाव से उसे ढूँढ़ता है, क्योंकि वह उसे नहीं जानता।

- जो जानता है कि **"भगवान् सर्वतश्चक्षुः"** (सब ओर देखने वाले) हैं, वह कदापि पाप नहीं कर सकेगा।

- ईश्वर-भक्ति वेश्यावृत्ति नहीं है, जो लौकिक या पारलौकिक प्रलोभनों के लिए नृत्य करती और लुभाने की बात सोचती है। भजन तो पतिव्रत धर्म है, जो समर्पण माँगता है और सन्तोष प्रदान करता है।

- जिसका ईश्वर के सिवा और कोई अवलम्बन नहीं, वह जानता ही नहीं कि संसार में पराभव भी कोई चीज है।

- सब ओर से मन को हटाकर भगवान के चरणों का आश्रय लेने वाले भगवान के प्रिय पुरुष में यदि कोई दोष भी हो तो हृदय में रहने वाले सर्वेश्वर भगवान उसे नष्ट कर देते हैं।

- यदि तुमने इसी जन्म में ईश्वर को जान लिया तब तो ठीक है अन्यथा महाविनाश और हानि है। प्राणिमात्र में जो उसी ब्रह्म को पहचानते हैं, वही बुद्धिमान पुरुष इस शरीर को छोड़कर अमृतत्व प्राप्त करते हैं।

- भगवत नाम से पाप नाश होते हैं और पाप नाश से मन की शुद्धि होती है। अतएव जीभ से नाम का नित्य स्पर्श होता रहे तो बहुत अच्छा है। नाम में शक्ति है। जीभ से उस शक्ति का स्पर्श होता रहेगा तो वह शक्ति भीतर जाएगी और पापों को नष्ट करेगी।

- जीवन का चरम लक्ष्य होना चाहिए भगवान के श्री चरणों की प्राप्ति और इसको मानना चाहिए, परमपुरुषार्थ। जितने भी पुरुषार्थ हैं—प्राप्त करने योग्य पदार्थ हैं, वे सभी गिराने वाले हैं। जब तक यह निश्चय नहीं होता कि भगवान को प्राप्त करना ही परम पुरुषार्थ है तथा यही जीवन का लक्ष्य है, तब तक मनुष्य कहीं भी शान्ति प्राप्ति नहीं करता।

- भगवान जिस पर अनुग्रह करते हैं, उसकी सम्पदाएँ छीन लेते हैं और विभूतियाँ थमा देते हैं। ईश्वर को कल्पवृक्ष कहा गया है, पर कुछ पाने के लिए उसके निकट जाना और छाया में बैठना पड़ता है।

- ईश्वर-प्राप्ति का मार्ग न किसी धर्म विशेष में परिमित है और न वह किसी क्रियाकाण्ड में मिलता है। यह तो मानवीय आत्मा की उन गहराइयों में विद्यमान है, जो कि सब धर्मों, पुरोहितों और क्रियाकाण्डों से मुक्त है।

- ईश्वर अपनी पूजा कराने से खुश नहीं होता, उसे तो वह प्यारा है, जो उसके पुत्रों से प्रेम करता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

- मनुष्य का सबसे बड़ा मुक्तिदाता स्वयं उसी के भीतर विद्यमान है—वह है—'सत्य'। सत्य ही ईश्वर है। जिसके विचार और कार्य भले हैं; वास्तव में वही सच्चा मनुष्य ईश्वर-भक्त एवं जीवनमुक्त है।
- अपने नियम की सुदृढ़ जंजीर से जकड़ा हुआ पक्षपातरहित, सृष्टि संचालक, पाषाण हृदय जो न्यायाधीश है, वही ईश्वर है।
- भगवान समुद्र की तरह एक है। देवताओं और नाम-रूपों की भिन्नता मात्र उसमें उठने वाली तरंगों की तरह हैं।
- ब्राह्मण अनेक नामों से पुकारते, अनेक रूपों में कल्पना करते, वह परमेश्वर एक ही है।
- ईश्वर का दर्शन और अनुग्रह दुर्बल-दुरात्माओं के लिए सम्भव नहीं। उसे उपलब्ध करना मात्र तपस्वी और विवेकवानों के लिए ही सम्भव है।
- ईश्वर को हृदय में बिठाया जा सकता है। मस्तिष्क की उस तक पहुँच नहीं है।
- भगवान अन्तरात्मा में छिपा बैठा है, पर लोग उसे कहाँ-कहाँ ढूँढ़ते-फिरते हैं और थककर निराश लौटते हैं ?
- ईश्वर पाने का उपाय पूछने पर जीसस ने कहा—"अपने आपको खोकर ही उसे पाया जा सकता है।"
- बर्तन खाली होने पर ही उसमें कीमती वस्तु भरी जा सकती है। जब तक स्वार्थ भरी अहंता की कीचड़ से मन भरा है, तब तक उसमें ईश्वर का दर्शन और निवास सम्भव नहीं।
- ईश्वर का भक्त अपने ईश्वर के लिए सब सुखों तथा सब वस्तुओं का परित्याग कर देता है। जैसे कि चींटी चीनी के ढेर में मर जाती है, परन्तु पीछे नहीं लौटती है।
- भगवान में लग जाना यही सर्वोत्तम भाग्य है, बाकी तो सब कुछ अभाग्य ही है। बड़ी से बड़ी सम्पत्ति भी प्राप्त हो गई, अधिकार भी प्राप्त हो गया, सम्मान का सेहरा भी बँध गया, पर यदि वे सब भगवान के प्रतिकूल हैं तो बहुत बड़ी अभाग्यता है। अतः जीवन में जो सबसे बड़ी बात करनी है, वह है—जीवन की गति को भगवान की ओर मोड़ देना।
- जो मनुष्य अपने भाई से तो प्यार करता नहीं है और कहता है कि मैं ईश्वर से प्यार करता हूँ। वह झूठ बोलता है। जो देखा उससे तो द्वेष रखता है, जो अदृश्य है उससे प्यार कैसे करेगा ?
- जो परमेश्वर को आनन्द देने वाले काम करता है, उसे यह सहज ही मिल जाता है।
- जब तक जीव संज्ञा है, जब तक अपनी पृथकता का अनुभव है तथा दुःख से छूटकर सुख पाने की इच्छा है, तब तक जीव को अपने धर्म का पालन करना ही चाहिए। जैसे भगवान का धर्म कृपा है और वैसे ही जीव का धर्म साधन है। वह साधन क्या है ? भगवान-कृपा पर विश्वास करो इतना ही पुरुषार्थ है।
- मैं परमात्मा का साक्षात्कार करने की फिकर और प्रतीक्षा में हूँ, पर वह होगा तब, जब प्रत्येक मनुष्य के भीतर मुझे दिख पड़ेगा। एक दिन उसने कान में कहा था—तू अपनी क्षुद्रता के बन्धन काट, मैं भवसागर से तुझे पार कर दूँगा।
- ईश्वर भक्त-अभक्त का बहीखाता नहीं रखता। उसके लिए हर ईमानदार अपना और हर बेईमान शैतान की बिरादरी का है।
- ईश्वर को किसी से मनुहार नहीं चाहिए, न उपहार। चरित्रवान और लोकसेवी बनकर ही हम उसे प्रसन्न कर सकते हैं।
- ईश्वरीय धर्म वही है, जिससे सारे प्राणियों पर दया हो।
- जिस धर्म से मनुष्यों को हानि पहुँचती हो, वह धर्म मनुष्य का बनाया हुआ है, ईश्वर कृत नहीं है।
- ऊँची जाति का अहंकार कोई न करे, क्योंकि मालिक के दरबार में केवल भक्ति ही प्यारी है।
- परमेश्वर तुम्हारा रूप धारण करने को इस शर्त पर तैयार है कि तुम उसका रूप धारण कर सको।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

- प्रभु का मार्ग सीधा बनाओ। समतल लाने के लिए खाई भरनी पड़ेगी और पहाड़ों को खोदना पड़ेगा।
- महात्मा गाँधी का कथन है कि ईश्वर का निवास मनुष्य की अपनी अन्तरात्मा ही है और उसे किसी भी ईश्वरीय गुण के रूप में सिद्ध किया जा सकता है। ईश्वर सबमें है, किन्तु सब लोग ईश्वर में नहीं हैं। इस सूक्ति का आशय परमात्मा की सार्वदिशिकता में सन्देह करना नहीं है। यों तो सत्य यह है कि जहाँ ईश्वर अणु-अणु में समाया हुआ है, वहाँ अणु-अणु उसमें निहित है, उसी में अवस्थित है। न कोई ईश्वर से रिक्त है और न ईश्वर किसी से रिक्त है। सब उसमें और वह सबमें एक रूप से समाया हुआ है। उक्ति का तात्पर्य यही है कि ईश्वर तो सबको स्मरण रखता है, किन्तु सभी लोग उसको स्मरण नहीं रखते। जिस प्रकार वह परमप्रभु हमें हर समय याद रखता है, उसी प्रकार यदि हम भी उसे याद रखें तो सारी समस्याएँ एक साथ ही हल होती चलें।
- यदि कोई चाहे कि वह दुनिया में अपना स्वार्थ-साधन भी करे और ईश्वर को भी प्राप्त कर ले, तो यह असम्भव है।
- जो जितना सरल होगा, वह उतना ही भगवान को पाने का विशेष अधिकारी होगा। सरल हृदय में ही विश्वास टिकता है।
- एकान्त और शान्ति के रस को पान कर आदमी निडर होता है और धर्म के प्रेम रस को पान कर निष्पाप।
- "यदि कोई चाहे कि वह दुनिया में अपना स्वार्थ-साधन भी करे और ईश्वर को भी प्राप्त कर ले, तो यह असम्भव है।"
- लड़कपन स्वर्गीय आनन्द का समय है। जवानी धन कमाने का समय है, किन्तु बुढ़ापा केवल संचित किए हुए धन से सुख ही प्राप्त करने का समय नहीं है, बल्कि ईश्वर का भजन करने का भी समय है।
- जो वस्तु खोई नहीं उसे ढूँढ़ते कहाँ हैं ? ईश्वर तो तुम्हारे भीतर भी बसता है और बाहर भी। फिर उसे नजदीक ही क्यों नहीं पकड़ लेते ?
- ईश्वर की अनुकम्पा सिर्फ उन पर बरसती है, जो उसकी दुनिया में शान्ति पैदा करते हैं, न कि उन पर जो बड़बड़ाते तो बहुत हैं, किन्तु काम कलह के बीज बोने का करते हैं।
- ईश्वर का कोई रूप नहीं, फिर भी हर रूप में उसे देखा जाता है। देवता की न केवल आरती उतारो, वरन् उसके मन्दिर में झाड़ू भी लगाओ।
- ईश्वर-प्रार्थना का अर्थ है—जगन्नियंता से अपने विकास की याचना। हम अनुभव करते हैं कि हमारे अन्दर कई दुर्बलताएँ हैं, कमियाँ हैं। हम अनुभव करते हैं कि उनकी पूर्ति सर्वथा हमारे बस की बात नहीं है। कहीं न कहीं से उनकी पूर्ति होती हुई हम देखते हैं। उसी अदृश्य शक्ति का नाम ईश्वर है।
- जो चीजें खुद नष्ट होने वाली हैं, उनमें मन लगाकर तुम सुख नहीं पा सकते। वास्तविक सुख उसमें मिल सकता है; जो स्थायी, नित्य और अविनाशी है।
- **ऋतुं पश्यत मा वक्रं सत्यं वदत नानृतम्। दीर्घं पश्यत मा ह्रस्वं परं पश्यत नापरम्।।** अपनी दृष्टि सरल रखो कुटिल नहीं। सत्य बोलो, अनृत नहीं। दीर्घदर्शी बनो, ह्रस्वदर्शी नहीं। परमतत्त्व को देखो, क्षुद्रवस्तु को नहीं।
- अपने हृदय की आवाज को सुनो। वही परमात्मा की आवाज है, वही महामंगलकारिणी है। यह आवाज सबके हृदय में है, परन्तु सुनकर भी उसके अनुसार चलना न चलना अपना काम है। ध्यान दो, कोई बुरा काम करने की नीयत करने पर हमारा हृदय खुद बोल उठता है। यही ईश्वर का नक्कारा है।
- सुख और शान्ति का सबसे प्रथम साधन ईश्वर में विश्वास करना है। यह विश्वास मनुष्य की आत्मा की चिरसम्पत्ति है।
- मनुष्य जब तक मेले से दूर है, तभी तक बाजार का हल्ला सुनता रहता है, किन्तु जब बाजार में आ जाता है तो उसे हल्ले की तरफ ध्यान नहीं रहता। इसी तरह जब तक मनुष्य ईश्वर से दूर है, तभी तक तर्क-वितर्क करता है, किन्तु पास आने पर सब भूल जाता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

- जो मनुष्य ईश्वर और उसके अद्वितीय, अविचल सम्राट पद को नहीं मानता, उसकी आकांक्षा कभी बाज नहीं हो सकती।
- ईश्वर जो कुछ करता है वह बुद्धि से ही करता है। अपनी इच्छानुसार कोई काम नहीं होता है। यह जानना चाहिए कि जो कुछ होता है, वह अच्छा ही होता है।
- यह एक दैवीकानून बाजारों, चौराहों पर लिख देना चाहिए कि ईश्वर की आँखों में मिर्च पटकना स्वयं ही अन्धा बनना है।
- विशेषतः ईश्वर दो प्रकारों से मनुष्यों के धर्म-अधर्म और न्यायी-अन्यायी होने की परीक्षा करता है। पहला सांसारिक विशेषाधिकार और विशेष सुखों की सामग्री देकर, दूसरा अधिक से अधिक कष्टों को देकर।
- सच्चे ईश्वरीय विश्वासी मनुष्य की पहचान यह है कि वह शारीरिक और मानसिक कुकर्मों से दूर रहता है।
- सभी को ईश्वर श्रेष्ठ उत्तरदायित्व सौंपता है, पर प्रसन्न उन्हीं पर होता है, जो उन्हें निभाते हैं।
- ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए तीन काम पर्याप्त हैं—नदी जैसी उदारता, सूरज जैसी गतिशीलता और पृथ्वी जैसी सहनशीलता।
- जो शक्ति इस दृश्यमान एवं अदृश्य जगत के सूत्र-संचालन में अपनी प्रमुख भूमिका सम्पादित कर रही है, वह समस्त संसार इसी से प्रभावित है। जड़ पदार्थ उसी के इशारे पर कठपुतली की तरह नाचते हैं। जीवधारी उसी द्वारा दी गई अन्तःप्रेरणा, विवेक-बुद्धि एवं कार्यक्षमता के सहारे अपना निर्वाहक्रम चलाते हैं।
- जैसे कि बिल्ली दाँतों से दबाकर अपने बच्चे को आराम से ले जाती है और बच्चों को तकलीफ नहीं होती है, किन्तु चूहे को दबाकर मार देती है। उस प्रकार ईश्वरभक्त को माया हानि नहीं पहुँचा सकती है। दूसरों को मार डालती है।
- परमात्मा में विश्वास न होने से ही विपत्तियों का, विषयों के नाश का और मृत्यु का भय रहता है, जिनका उस भयहारी भगवान में भरोसा है, वह सदा निर्भय है।
- जिसने ईश्वर को नहीं पहचाना, उसने कुछ नहीं जाना। जिसने ईश्वर को जान लिया उसने इस संसार को जानने योग्य सम्पूर्ण वस्तुओं को जान लिया।
- वह अन्तरात्मा ही है जो पहले मित्र को सही सलाह और कड़ी चेतावनी देता है। न मानने पर वही है, जो कठोर न्यायाधीश की तरह कड़ी सजा दिए बिना नहीं रहता।
- ईश्वर और पाप के अतिरिक्त किसी से भी न डरो। मृत्यु से भी नहीं।
- भगवान धर्म की स्थापना और अधर्म का नाश करने के लिए जन्मते हैं और यही अपने भक्तों से कराना चाहते हैं।
- ऐसे ईश्वर का सृजन करो जो आदमियों के साथ रहना और उन्हें अपने साथ रखना जानता है।
- विश्व के सभी मनीषियों ने सत्य की महिमा गाई है। सभी धर्म-ग्रन्थ, महापुरुषों के सन्देश इसी तथ्य की ओर निर्देश करते हैं कि मनुष्य सत्य मार्ग का अनुसरण करे।
- दार्शनिक प्लेटो का वचन है—'सत्य को ईश्वर और उसके प्रतिबिम्ब को प्रकाश कहते हैं।' महात्मा शेखसादी की उक्ति है—'ईश्वर को प्राप्त करने का एकमात्र मार्ग सत्य को अपनाना है। जो सच्चाई के मार्ग पर चलता है, वह भटकता नहीं।' मनीषी काण्ट का कथन है—'सच्चाई वह तत्त्व है, जिसे अपनाने पर मनुष्य भले और बुरे की परख कर सकता है। हृदयगत सभी सद्गुणों के विकास की कुंजी मनुष्य की सत्यनिष्ठा में सन्निहित है। विद्वान ऐनोन कहा करता था—'मत यह देखो कि कौन कह रहा, वरन् यह देखो कि सत्य कहाँ से कहाँ जा रहा है ?' होरेसमन का अभिमत है—'यह जरूरी नहीं कि बिना पात्र-कुपात्र का ख्याल किए हर सच्ची बात पूरी की पूरी हर किसी से कह दी जाए; परन्तु इतना ध्यान अवश्य रखा जाए कि जिससे जितना कहा जाए वह सत्य ही होना चाहिए।' सिल्वियो वैसिको ने कहा है—'ईश्वर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

से प्रेम करना और सत्य से प्रेम करना एक ही बात है।"

- ईश्वर अन्ततः है क्या व किस प्रकार की सत्ता ? कैसे उसे जाना जाए व कैसे यह माना जाए कि उसके ही कारण यह सारा क्रिया व्यापार, जगती के क्रिया-कलाप चल रहे हैं ? ईश्वर वस्तुतः शब्दार्थ के नाते ऐश्वर्यमान—सर्व शक्तिमान सत्ता का नाम है। 'ऐश्वर्य' से यहाँ तात्पर्य उस वैभव से है, जो समूची सृष्टि-इकोसिस्टम में विद्यमान नजर आता है। हम प्रार्थना द्वारा ऐश्वर्य-समृद्धि भगवान से सतत माँगते हैं, पर कभी हमने विचारा कि ऐश्वर्य सही मायने में होता क्या है ? सम्पूर्ण सृष्टि ही जिसका कार्य-क्षेत्र हो तथा जिसका अस्तित्व इसके रोम-रोम में, कण-कण में समाया हो, ऐसी अधीश्वर सत्ता को ही ईश्वर मानकर उसकी आराधना, पूजा, उपासना द्वारा स्वयं को आस्तिक बनाया जाता है। उस सत्ता के क्रिया-कलापों को आगे बढ़ाना, सृष्टि के उद्यान को सुरम्य बनाना और उसके ऐश्वर्य में सतत निरन्तर वृद्धि करते रहना ही आस्तिकता है—ईश्वर की आराधना है।

- ईश्वर शब्द से एक और अर्थ निकलता है—हम उस सर्वोच्च शक्तिमान सत्ता को जो ईश के रूप में, ऋत् के रूप में सर्वव्यापी है, अचिन्त्य, अगोचर, अगम्य है, का वरण करें। वरण उसी का किया जाता है जो सर्वश्रेष्ठ है, आदर्शों का समुच्चय है, समस्त सद्गुणों, सत्प्रवृत्तियों का समूह है। ईश्वर हमें उतना ही प्रिय लगे, जितना कि वरण करने वाली स्त्री के लिए उसका प्रियतम पति। समर्पण उसके प्रति हमारा वैसा ही हो जो भाव-सम्वेदना से भरी-पूरी किसी स्त्री का होता है। ईश्वर को यदि सही अर्थों में जीवन में ओत-प्रोत किया जा सके, उसका तत्त्व-दर्शन हमारे कर्त्तव्य में दृष्टिगोचर होने लगे तो समझना चाहिए कि ईश्वर उपासना किसी आस्तिक द्वारा सच्चे मायनों में सम्पन्न की गयी।

- आज की परिस्थितियों में आस्तिकता एवं ईश्वर की नयी प्रगतिशील व्याख्या करना अनिवार्य हो गया है। पारस्परिक शब्दावली में इनसे वही भाव निकलता है, जो आप्तवचनों की दुहाई देते हुए अगणित धर्मोपदेशक कहते रहते हैं। वस्तुतः आस्तिकता ईश्वरीय अनुशासन को कूट-कूटकर अपने चिन्तन-चरित्र एवं व्यवहार में समाविष्ट कर लेने का नाम है। जो आस्तिक है वह भले ही मन्दिरों, पूजा-गृहों में न जाता हो, पर यदि वह परमसत्ता का अनुशासन जीवन में उतारता है, जीवन सही ढंग से जीता है, सृष्टि को एक उद्यान मानते हुए माली की तरह सिंचाई करता है, तो वह सच्चे अर्थों में आस्तिक है। नास्तिक तो वह है, जो बाह्याडम्बर कितने ही रचता हो, दिखता तो धार्मिक हो, पर जीवन के किसी भी कोने से आदर्शवाद, सच्चरित्रता, उत्कृष्टता का एक अंश भी न झलकता हो।

- ईश्वर वह निराकार ब्राह्मी सत्ता है, जो सत्प्रवृत्तियों के, आदर्शों के, सद्गुणों के, श्रेष्ठता के समुच्चय के रूप में तथा समष्टिगत अनुशासन के रूप में हमारे चारों ओर विद्यमान है। वह सत्ता हमें दिखाई भले ही न दे, पर हमारे रोम-रोम में बसकर हमें प्रतिक्षण अपने अस्तित्व का आभास कराती है। यदि ईश्वर की इस रूप में हमें सतत अनुभूति होने लगे तो हमारे जीवन के क्रिया-कलाप बदल जाएँगे, हम सही अर्थों में आस्तिक कहलाने योग्य होंगे।

- ईश्वर का सबसे निकटवर्ती स्थान हमारा अन्तःकरण है। यदि हम उसे वहाँ देखें और ढूँढ़ें तो बाहर भटकने की अपेक्षा उसे अधिक सरलतापूर्वक प्राप्त कर सकते हैं।

- न केवल दर्शन, वरन् उसके साथ वार्तालाप, परामर्श भी हो सकता है। इसके लिए अन्तःकरण से बढ़कर ईश्वर के साथ एकान्त मिलन का और कोई स्थान नहीं है। यदि चाहें तो उसकी छाती से छाती लगाकर राम-भरत की तरह यहीं मिल सकते हैं और उत्कृष्ट की आत्मा रूपी राधा का परमात्मा रूपी कृष्ण से संगम-समर्पण भी यहीं हो सकता है।

- विवेक की आँख खोलकर देखें तो उत्कृष्टता की प्रतिमा के रूप में यही हँसता, मुसकराता मिलेगा। मानवीय आदर्शों की महिमामयी महत्ता से सम्पन्न उज्ज्वल और प्रकाशवान अपनी आत्मा ही परमेश्वर है। मलीनताओं का आवरण उठाकर यदि उसके सत, चित और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org

आनन्दस्वरूप का—सत्यं, शिवं, सुन्दरम् के भवन-प्रकाश का दर्शन करें तो प्रतीत होगा कि दूर समझा जाने वाला भगवान वस्तुतः अपने अति निकट है। कषाय और कल्मषों से ढँका रहने के कारण ही वह दिखता न था।

- विश्वात्मा के रूप में उसकी आत्मा अपने भी भीतर ज्योतिर्मय हो रही है। समस्त प्राणियों में ओत-प्रोत वह दिव्यसत्ता अपने भीतर भी विराजमान है। सबको अपने में और अपने को सबमें देखने का दृष्टिकोण जैसे ही विकसित हुआ कि बदली हटते ही प्रकट होने वाले सूर्य की तरह भगवान सामने आया। व्यक्तिवादी संकीर्णता की बदली ही उस दिव्यदर्शन से हमें वंचित किए रहती है।

- यश उसे मिलता है, जो सत्कर्म करता है।

- जैसे बछड़ा हजारों गौओं के बीच में अपनी माता को ढूँढ़ लेता है, उसी प्रकार पहले का किया हुआ कर्म भी कर्त्ता को पहचान कर उसका अनुसरण करता है। *—वेदव्यास*

- मनुष्य किसी कारण से नहीं स्वयं अपने कर्मों से मारा जाता है।

- शुभकर्म करने में जल्दी करो। पापों को मन से हटाओ। शुभकर्म करने में ढील करने पर मन पाप में रत होने लगता है। *—महात्मा बुद्ध*

- साधनावस्था में साधक को सहनशील रहना चाहिए, सिद्धावस्था में केवल शक्ति की ही साधना करनी पड़ती है, क्योंकि इसी शक्ति ने जीव के साथ ईश्वर के व्यवधान की सृष्टि करके दरवाजा बन्द कर रखा है।

—महायोगी अरविन्द

- शुभकर्म करने वाला मनुष्य दोनों जगह प्रसन्न रहता है, यहाँ भी और परलोक में भी। शुभ कर्मों को देखकर यहाँ भी मुदित होता है, वहाँ भी प्रमुदित होता है। *—महात्मा बुद्ध*

- उस दिन से डरो जबकि तुम अल्लाह की ओर लौटाकर न लाये जाओगे। फिर प्रत्येक पुरुष को उसके किए का पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा और मनुष्यों पर अत्याचार न होगा।

—सूरये बकर १। २। ३६। ८

www.vicharkrantibooks.org

- सुन, ईश्वर न तो खरे मनुष्य को निकम्मा जानकर छोड़ देता है और न बुराई करने पर हारों को सँभालता है। *—अयूब ८। १०*

- पापी मनुष्य दोनों जगह शोक करता है। यहाँ भी और परलोक में भी। अपने दुष्टकर्मों को देखकर दुःखित होता है और पीड़ित होता है।

—महात्मा बुद्ध

- अपने समक्ष आने वाले कर्त्तव्य के पालन करने में भविष्य का विचार न करना इसका नाम ही निष्काम कर्म है और यही धर्म है। *—महात्मा गाँधी*

- हमारा कर्त्तव्य-स्थल वही है, जहाँ हम हैं, न कि वहाँ जहाँ हम रहना चाहते हैं।

—आचार्य गिडवानी

- हृदय जितना बोलता है, ईश्वर उससे अधिक कुछ नहीं सुनता। हृदय यदि गूँगा है तो ईश्वर को बहरा ही पाया जाएगा। *—आर्नोल्ड*

- जब तक पाप कर्म फल नहीं देते, तब तक मूर्ख उन्हें मधु की तरह मीठा समझता है, लेकिन जब पाप कर्म फल देता है, तब उसे दुःख होता है। *—महात्मा बुद्ध*

- जो ईश्वर से डरता है, उसे मृत्यु से भय नहीं रहता। *—महात्मा गाँधी*

- उस काम का करना अच्छा नहीं है, जिसे करके पछताना पड़े और जिसके फल को रोते हुए भोगना पड़े। *—महात्मा बुद्ध*

- ईश्वर संसार का शासन करता है। हमें बुद्धिमत्ता से अपना कर्त्तव्य-पालन करना चाहिए और इस प्रश्न को उसी के सुपुर्द छोड़ देना चाहिए। *—जॉन जे*

- कोई व्यक्ति दो आदमियों की एक साथ सेवा नहीं कर सकता। चाहे ईश्वर की उपासना कर लो, चाहे कुबेर की। *—बाइबिल*

- धन्य हैं वे जिनके मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।

- धन्य हैं वे जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किये जायेंगे।

- परमेश्वर ने कहा था कि अपने पिता और अपनी माता का आदर करना। *—मत्ती १५*

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ सेंध लगाते हुए पकड़ा गया चोर जिस तरह अपने कर्म से काटा जाता (पीड़ित होता) है, उसी तरह से यह जीव इहलोक और परलोक में अपने सामने कर्मों द्वारा पीड़ित होते हैं, क्योंकि संचित कर्मों को भोगे बिना छुटकारा नहीं होता। *—महात्मा बुद्ध*

❑ जो माँ इस भाँति कहती हो—आत्मोन्नति के लिए प्रयत्न मत करो। वह माँ, माँ नहीं है, वह अविद्यारूपिणी है। जो ईश्वर-लाभ के मार्ग विघ्न डालती हो, ऐसी माँ की बात न सुनने से कोई भी दोष नहीं है। ईश्वर के लिए गुरुजनों के वाक्य का उल्लंघन करने में कोई दोष नहीं होता। भरत ने रामचन्द्र के लिए कैकेयी की बात नहीं सुनी। गोपियों ने कृष्ण के दर्शन करने के लिए अपने पतियों का अटकाव नहीं माना। प्रह्लाद ने ईश्वर के लिए अपने बाप की बातें नहीं सुनीं। बलि राजा ने भगवान की प्रीति के लिए गुरु शुक्राचार्य की बातें नहीं मानीं। विभीषण ने राम को पाने के लिए बड़े भाई रावण की बात नहीं मानी थी, किन्तु इस बात को छोड़कर कि भगवान की ओर मत जाओ और उनकी सब बातें अवश्य सुननी चाहिए। *—रामकृष्ण परमहंस*

❑ पैगम्बर मूसा ने कारूँ को इस तरह उपदेश दिया, कि तू लोगों के साथ उसी भाँति भलाई कर जिस भाँति ईश्वर ने तेरे साथ भलाई की है। कारूँ ने उसकी नसीहत पर कान न दिया। पीछे जो कुछ नतीजा निकला, वह तुम लोगों ने सुना ही है। जिसने धन से परोपकार न किया, उसने धनसंग्रह करने के ख्याल में अपनी भावी आशाओं पर भी पानी फेर दिया। अगर तू संसारी धन से लाभ उठाना चाहता है, तो ईश्वर ने जिस तरह तुझ पर मेहरवानी की है, तू भी मनुष्यों पर दया कर। अरब लोग कहते हैं, कि दान करो, किन्तु ऐहसान मत रखो। निश्चय रखो तुमको नफा जरूर मिलेगा। जहाँ परोपकार का वृक्ष जड़ पकड़ लेता है, वहीं से उसकी शाखाएँ आसमान तक पहुँचती हैं। अगर तुम फल खाने की उम्मीद रखते हो तो मेहरवानी के साथ दरख्त लगाओ और उसकी जड़ पर आरा मत चलाओ। ईश्वर को धन्यवाद दो कि उसने तुम्हारे ऊपर मेहरवानी की और तुम्हें अपनी उदारता से वंचित न रखा। इस बात की शेखी न मारो कि हम राजा के यहाँ चाकरी करते हैं, किन्तु ईश्वर को धन्यवाद दो कि उसने तुम्हें राजा की सेवा में नियुक्त किया है। *—शेखसादी*

❑ **नमस्यामो देवान्ननु हतविधेस्तेऽपि वशगा विधिर्वन्द्यः सोऽपि प्रतिनियतकर्मैकफलदः।**
फलं कर्मायत्तं किममरगणैः किंच विधिना नमस्तत्कर्मभ्यो विधिरपि न येभ्यः प्रभवति।।
देवताओं को हम प्रणाम करते हैं, पर वह तो ब्रह्मा के अधीन हैं और ब्रह्मा भी हमको पूर्व कर्मानुसार फल देते हैं, इसलिए फल और ब्रह्मा दोनों ही कर्माधीन हैं। इस कारण हम कर्म ही को सर्वश्रेष्ठ मानते हैं, जिस पर कि ब्रह्मा का भी वंश भी नहीं चलता।

❑ **य इमं मध्वदं वेद आत्मानं जीवमन्तिकात्।**
ईशानं भूतभव्यस्य न ततो विजुगुप्सते, एतद्वै तत्।।
—कठोपनिषद २। १। ५
जो इस जीवन देने वाले, कर्मफल देने वाले और कठोर शासन करने वाले परमेश्वर को अपने निकट देखता है, सो घृणित गतिविधियाँ नहीं अपनाता।

❑ जब तक हृदय में स्वार्थपरता रहती है, तब तक भगवान से प्रेम नहीं हो सकता। *—स्वामी विवेकानन्द*

❑ **स्वयं कर्म करोत्यात्मा स्वयं तत्फलमश्नुते।**
स्वयं भ्रमति संसारे स्वयं तस्माद्विमुच्यते।।
—चाणक्य नीति
जीव आप ही कर्म करता, आप ही फल भोगता है, आप ही संसार में भ्रमता, आप ही उससे मुक्त होता है।

❑ आँख मींचकर दूध पीने वाली बिल्ली समझती है कि घर का कोई व्यक्ति उसे देख नहीं रहा है। उसी प्रकार छिपकर पाप करने वाला सोचता है कि उसके कुकृत्यों पर सदा पर्दा ही पड़ा रहेगा।

❑ प्रत्येक कार्य का अन्त ही सफलता देता है। अन्त तक ठहरो। न्यायी परीक्षक बिना देखभाल के निर्णय नहीं करेगा। *—रेण्डल्फ*

❑ इस संसार में स्वभाव से कोई भी पुरुष किसी भी पुरुष के प्रति न तो उदार होता है, न कोई किसी के प्रति दुष्ट होता है। संसार में मनुष्य के अपने कार्य ही उसको गुरुता अथवा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लघुता पर पहुँचा देते हैं। (अर्थात्) उत्तम कार्यों से ही मनुष्य महान् बन जाता है और अधम तथा निकृष्ट कार्यों से लघु बन जाता है। जो जैसा कार्य करता है, वैसा बन जाता है।

—हितोपदेश

❑ **कृतं फलति सर्वत्र, नाकृतं भुज्यते क्वचित्।**

—वेदव्यास (महाभारत)

अपना किया हुआ कर्म ही सर्वत्र फल देता है, बिना किये कर्म का फल कहीं किसी ने भोगा है ?

❑ इस धरती पर जितने भी प्राणी हैं, वे सब अपने-अपने संचित कर्मों के कारण ही संसार में चक्कर लगाया करते हैं। अपने किये कर्मों के अनुसार वे भिन्न-भिन्न योनियों में जन्म लेते हैं। किए हुए कर्मों का फल भोगे बिना छुटकारा नहीं होता।

❑ जिस मनुष्य ने जैसा कर्म किया है, वह उसके पीछे लगा रहता है। यदि कर्त्ता पुरुष शीघ्रतापूर्वक दौड़ता है तो वह भी उतनी ही तेजी के साथ उसके पीछे जाता है। जब वह सोता है तो उसका कर्मफल भी उसके साथ ही सो जाता है। जब वह खड़ा होता है तो वह भी पास ही खड़ा रहता है और जब मनुष्य चलता है तो उसके पीछे-पीछे वह भी चलने लगता है। इतना ही नहीं, कोई कार्य करते समय भी कर्म-संस्कार उसका साथ नहीं छोड़ता। सदा छाया के समान पीछे लगा रहता है।

❑ **कर्मायत्तं फलं पुंसां बुद्धिः कर्मानुसारिणी।**
तथापि सुधियश्चाऽऽर्याः सुविचार्यैव कुर्वते।।

—चाणक्य नीति

फल मनुष्य के कर्म के अधीन है और बुद्धि कर्म के अनुसार आगे बढ़ने वाली है तथापि विद्वान और सज्जन व्यक्ति अच्छी तरह से विचार करके ही कोई कार्य करते हैं।

❑ **ब्रह्मायेन कुलालवन्नियमितो ब्रह्माण्ड भाण्डोदरे**
विष्णुर्येन दशावतारगहने क्षिप्तो महासंकटे।
रुद्रो येन कपालपाणिपुटके भिक्षाटनं कारितः।
सूर्यो भ्राम्यति नित्यमेवं गगने तस्मै नमःकर्मणे।।

—भर्तृहरि नीतिशतक

ब्रह्मा जिससे प्रेरित होकर कुम्हार की तरह इस सृष्टि का सृजन करते रहते हैं। विष्णु को जिसके कारण दस अवतार धारण करने पड़े और संकट सहने पड़े। रुद्र जिसके दबाव से हाथ में खप्पर लिए भिक्षा माँगते फिरते हैं। जिसके दबाव से सूर्य आकाश में नाचता फिरता है, उस परम देव कर्म को नमस्कार।

❑ सब भूतों के महान ईश्वर रूप मेरे परम भाव न जानने वाले मूढ़ लोग मनुष्य का शरीर धारण करने वाला मुझ परमात्मा को नहीं पहचानते।

—भगवान श्रीकृष्ण

❑ **इति ज्ञात्वा नरः पुण्यं कुर्यात्पापं विवर्जयेत्।**
पुण्येन याति देवत्वमुभयो नरकं व्रजेत्।।

—शिव पुराण २०। ४६

इस प्रकार समझकर पाप कर्म त्यागकर पुण्य कर्म करने के कारण कि पुण्य से देवयोनि प्राप्त होती है, पाप कर्म से नरक मिलता है। पाप को अधर्म और पुण्य को धर्म कहते हैं।

❑ ईश्वर अपनी अद्भुत नाट्य शक्ति से सृष्टि रचता है, कलाकार उसी शक्ति से समाज में नये प्राण भरता है।

❑ नेकी के काम करने वालों से खुदा की रहमत करीब ही है।

—सूरे निसाअ

❑ जिन लोगों ने बुरे काम किये हैं, उनको वैसा ही बुरा नतीजा मिलेगा, लेकिन जिसने भलाई की है उनका कुछ ज्यादा दिया जाएगा।

—सूरे यूनिस

❑ **नास्ति कर्मफलेच्छातो कश्चिल्लोकत्रयेऽपि च।**
इति ते कथितं सर्वं निर्विशंकं भव प्रिये।।

—महाभारत

तीनों लोकों में कोई भी ऐसा पुरुष नहीं है, जो कर्मों के फल का बिना भोग किए नाश कर सके। हे पार्वती, इस विषय में तुम्हें सारी बातें बता दीं। अब सन्देहरहित हो जाओ।

❑ हम सब जिन देव शक्तियों का अर्चना-आराधना के उपायों और विधानों को जानने के लिए उत्सुक रहते हैं, वे देव-सत्ताएँ भी विधि-व्यवस्था से ही बँधी दिखती हैं। दैवी-विधानों की अवहेलना वे भी नहीं करतीं तो क्या उस सृष्टि-संचालक विधान की और उसके विधाता की ही वन्दना की जाए ? पर हमारे भाग्य का निर्धारण तो वह विधि-व्यवस्था हमारे ही कर्मों के अनुसार करती है। यही उसका सुनिश्चित

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नियम है। हमारे अपने ही कर्मों का फल प्रदान करने की प्रक्रिया वह चलाता रहता है।

इस प्रकार हमारे भोगों, उपलब्धियों और प्रवृत्तियों के एकमात्र सूत्र-संचालक हमारे स्वयं के कर्म ही हैं। तब फिर देवताओं और विधाता को प्रसन्न करने की चिन्ता करते रहना कहाँ की बुद्धिमत्ता है ? हमारा साध्य और असाध्य तो कर्म ही है। वही वन्दनीय-अभिनन्दनीय है, वही वरेण्य और आचरण के योग्य है। दैवी विधान भी उससे भिन्न और उसके विरुद्ध कुछ कभी नहीं करता। कर्म ही सर्वोपरि है। परिस्थितियों और मनःस्थितियों का वही निर्माता है, उसी की साधना से अभीष्ट की उपलब्धि सम्भव है।

❑ संसार को आलोकित रखने में सूर्यदेव निरन्तर गतिमान रहते हैं। मेघों का अभाव अवृष्टि का कारण न बने उसके लिए समुद्र सतत बड़वानल में जला करते हैं, सितारे रोज चमकते हैं ताकि मनुष्य अपनी अहंता में ही न पड़ा रहकर विराट ब्रह्म की प्रेरणाओं से पूरित बना रहे। अपनी श्वास-प्रश्वास क्रिया द्वारा संसार का विष पीने और अमृत उँड़ेलने का पुण्य-पुरुषार्थ वृक्षों ने भी बन्द नहीं किया। कर्म का परोपकार में अर्पण सृष्टि की मूल प्रेरणा है, जिस दिन यह प्रक्रिया बन्द हो जाए, उस दिन विनाश ही विनाश, शून्य ही शून्य, अन्धकार ही अन्धकार के अतिरिक्त कुछ भी तो न रह जाए ?

❑ पवन नित्य चलती है और प्राण-दीपों को सजग बनाये रखने का कर्त्तव्यपालन करती है, फूल हँसते और मुसकराकर कहते हैं काँटों की चिन्ता न करके संसार सौन्दर्य बढ़ाते रहने में ही जीवन की शोभा है, कोयल कूकती है तो उसके पीछे जो आभा प्रतिध्वनित होती है, उसमें संसार में माधुर्य बनाये रखने का शान्त सरगम गूँजता प्रतीत होता है। अपने नन्हें से बच्चे की चोंच में दाना डालकर चिड़िया अपने वंश का पोषण नहीं करती, अपितु असमर्थ और अनाश्रितों को आश्रय देने की परम्परा पर भी प्रकाश डालती है।

❑ जीवन की मूल प्रेरणा है—परमार्थ और लोक-कल्याण के लिए कर्त्तव्य कर्म का निरन्तर पालन। जब सृष्टि का प्रत्येक कण इस पुण्य-परम्परा का आदर करने में लगा हुआ है, तब मनुष्य अपनी सृष्टि का सौन्दर्य निखारने का प्रयत्न न करे इससे बढ़कर लज्जा और आपत्ति की बात उसके लिए और क्या हो सकती है ?

—महायोगी अरविन्द

❑ जैसे वास्तविक चीज से परछाई की उत्पत्ति होती है। अग्नि से धुआँ निकलता है, उसी तरह कर्म के करने पर फल मिलता है। मनुष्य जैसा कर्म करता, वैसा ही फल पाता है। अतः सुख और दुःख मनुष्य के कर्मों के पीछे चलते हैं।

❑ "भाग्य के सम्बन्ध में निश्चित बात एक ही है कि वह मनुष्य के प्रयासों के अनुरूप बदलता रहता है।"

❑ कार्य को करना ही मनुष्य का कर्त्तव्य है। उसका फल तो यथायोग्य मिल ही जाता है।

❑ क्रमबद्ध काम करने से ही सफलता मिलती है। चूल्हा जलना, पात्र उस पर रखना, पानी डालना, बाद में चावल डालना। यही है भात बनाने का सही तरीका। यदि यह क्रम आगे पीछे कर दिया जाए या उलट दिया जाए तो उस प्रयास में सफलता न मिलेगी। हमें अपने कार्यों का निर्धारण क्रमबद्ध रीति से करना चाहिए।

❑ समस्या को एक साथ सुलझाने का प्रयास करें और एक-एक को देखें, समझें कि उस स्थिति में क्या सर्वश्रेष्ठ मैं कर सकता हूँ या क्या सुधार कर सकता हूँ ? हर छोटी सफलता साहस कई गुना बढ़ा देगी।

❑ परमेश्वर के कारखाने में साप्ताहिक वेतन नहीं बँटता, वरन् अन्त में एकमुश्त भुगतान होता है।

❑ मिष्ठान्न का नामोच्चरण करने भर से मुँह न मीठा होता है और न पेट भरता है। ईश्वर की रट लगाने और धर्म की दुहाई देने से भी हाथ कुछ नहीं आता।

❑ ईश्वर और उनके नियम भिन्न नहीं हैं। कर्म किसी को छोड़ता नहीं, न ईश्वर किसी को छोड़ता है। दोनों एक वस्तु हैं। एक विचार हमें कठोर बनाता है, दूसरा नम्र। संसार में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कोई न कोई अपूर्ण चेतनमय शक्ति काम कर रही है। उसे आप चाहें जिस नाम से पुकारें, लेकिन वह प्रत्येक काम में हस्तक्षेप तो किया ही करती है। हमारा प्रत्येक विचार कर्म है। कर्म का फल होता है। फल ईश्वरीय नियम के अधीन है। यानी हमारे प्रत्येक काम में ईश्वरीय सत्ता नियम हस्तक्षेप किया ही करता है। फिर भले ही हम इसको जानते हों या अनजान हों, स्वीकार करें या अस्वीकार।

- मनुष्य को उचित है कि वह तब तक कर्म का त्याग न करे, जब तक कर्म उसे स्वयं न त्याग दें अर्थात् ईश्वर प्रेम में सुध-बुध न रहे। जब तक भूख-प्यास शरीर के दुःख-सुख का भान है, तब तक कर्म, नाम स्मरण आदि चलने अति आवश्यक हैं।

- इस संसार में मनुष्य का कोई कर्म ऐसा नहीं, जिसके साथ परिणामों का एक लम्बा क्रम न बँध जाता हो और कोई मनुष्य इतना दूरदर्शी नहीं है कि वह इस क्रम को अन्त तक देख सके।

- बड़े होने के लिए यह कोई बात नहीं है कि मनुष्य को बड़े अधिकार ही मिलें, वरन् दूसरों के अधिकार की प्रतिष्ठा करना ही मनुष्य का कर्त्तव्य है। कर्त्तव्यनिष्ठा का मूल्य इसलिए अधिक है कि इससे मानव मात्र की सेवा होती है। एक छोटे-से क्षेत्र में भी मनुष्य यदि अपने कर्त्तव्य-कर्मों का मनोयोगपूर्वक पालन करता है तो इसका प्रभाव समस्त समाज पर पड़ता है।

- जिन जातियों ने कर्त्तव्यनिष्ठा का मूल्य समझा और इसे बाहर जीवन में निभाया है, वे इस संसार में सदा सम्पन्न रही हैं। सभी से उन्हें सम्मान भी मिला है। भूलकर जिन्होंने यह समझ लिया कि सम्मान उनकी सम्पन्नता को मिला, वे गलत रास्ते पर भटक गये। पर कर्त्तव्यनिष्ठा का जिन्होंने अनुकरण किया है, वे आगे बढ़े हैं। लोगों ने उनकी जाग्रति को सिर झुकाया है। इतिहास के पन्नों में जिनकी कीर्ति प्रकाशित हुई है, उन्होंने अपना कर्त्तव्य जरूर निभाया होगा। हम क्या करें ? यह पूछने की अपेक्षा किस तरह करें ? यह पूछना अधिक सही है, क्योंकि कर्म तो दुष्कर्म भी हो सकते हैं, किन्तु उदात्त दृष्टिकोण से काम करने पर कहीं कुछ कलुष नहीं है। देखने में लगता है लाभ दूसरों को हुआ, किन्तु आध्यात्मिक दृष्टि से कर्त्तव्यपालन के कारण वस्तुतः मनुष्य का निजी हित ही अधिक होता है। कर्म का उपहार जो किसी भी भौतिक लाभ की तुलना में श्रेष्ठ ठहरता है।

- अल्पबुद्धि वाले लोग भाग्य पर और परिस्थितियों में विश्वास करते हैं, किन्तु दृढ़ चित्त लोग कारण और कार्य में विश्वास करते हैं।

- जब तक पाप फल का परिपाक नहीं होता, तब तक वह उसे मधु-सा मधुर लगता है, पर जब पाप का फल सामने आता है तो उसके कष्ट की सीमा नहीं रहती।

- रोग, शोक अपने ही कर्मों का परिणाम हैं।

- पिता के कर्ज को चुकाने वाले तो पुत्र आदि भी होते हैं, परन्तु भव-बन्धन को छुड़ाने वाला तो अपने सिवा कोई नहीं है।

- लोग धर्म के लिए झगड़ते हैं, लिखते हैं, बोलते हैं, खर्च करते व समय लगाते हैं, पर आश्चर्य है कि धर्मशिक्षाओं के अनुरूप जीवन नहीं जीते।

- कोई वह करता है जो उसे नहीं करना चाहिए तो निश्चय ही वह भोगेगा जो उसे नहीं भुगतना पड़ता।

- जीवन के प्रकाशवान क्षण वे हैं, जो सत्कर्मों में बीते और नेकी करते हुए बीते।

- कष्ट भाग्य के धकेले नहीं आते। उन्हें अपनी अनुपयुक्त गतिविधियों द्वारा हम स्वयं बुलाते हैं। ईश्वर तो उन्हें चिन्तन सुधारने और प्रतिभा निखारने के लिए भेजते हैं।

- जो श्रेष्ठ कार्य करता है, वह ईश्वर के खजाने से मय ब्याज के पाता है।

- पुण्यमय श्रेष्ठ कार्य करने में उतनी धन की जरूरत नहीं है जितनी कि सहृदयता एवं दूरदर्शिता की।

- बुरे कर्म का फल अच्छा हो ही नहीं सकता, बुरा कर्म करते हुए जो किसी को फलता-फूलता देखा जाता है, वह उसके उस

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

बुरे कर्म का फल नहीं है। वह तो पूर्व के किसी शुभकर्म का फल है, जो अभी प्रकट हुआ है। अभी जो वह बुरा कर्म कर रहा है, उसका फल तो आगे चलकर मिलेगा।

- जीवन को 'क्षणभंगुर' कहा जाता है। इसका तात्पर्य यह है कि उसका एक क्षण भी बर्बाद न किया जाए।
- प्राणी बिना कुछ लिए आता है, पर आश्चर्य है कि जाते समय पाप की गठरी सिर पर लादकर ले जाता है।
- जो कर्त्तव्यों से बचेगा, वह लाभों से वंचित रहेगा।
- लोग विपत्ति से बचने के लिए पाप-कर्मों में प्रवृत्त होते हैं, जबकि वह उन्हीं के कारण आई होती है। इसी प्रकार सम्पत्ति बढ़ाने के इच्छुक पुण्य-कर्मों से जी चुराते हैं, जबकि वही इसी कृपणता के कारण आने से रुकी रहती है।
- ईश्वर एक है—कर्मफल। भले ही उसके नाम-रूप अनेक हों। धर्म एक है—मानवीय कर्त्तव्यों का निर्वाह। भले ही उसे किन्हीं शास्त्रों द्वारा समझा जाए।
- कर्म किसी को नहीं बाँधते, कर्त्ता ही उन्हें गले में ढोलक की तरह लटकाये फिरता है!
- दुनिया क्या कहेगी ? इस प्रश्न को ध्यान में रखने का नाम कौशल है। भगवान क्या करेंगे ? इस प्रश्न को आगे रखकर चलने का नाम कर्त्तव्य है।
- देवत्व की रक्षा करने से बढ़कर और कोई धर्म नहीं और देवत्व अपनाने से बढ़कर और कोई कर्त्तव्य नहीं।
- श्रेष्ठ कर्म करने वाले पुण्यात्मा अनायास ही स्वर्ग जाते हैं। कुकर्मी दुष्टता का सहारा लेकर स्वयं ही नरक के द्वार तक जा पहुँचते हैं।
- जो कर्म-यज्ञ के लिए (परोपकारार्थ) किए जाते हैं, उनके अतिरिक्त कर्मों से इस लोक में बन्धन पैदा होता है।
- वेद के वचन—**'अकर्मा दस्युः'** में गहरी सत्यता है। जो कर्म करता है, मेहनत और परिश्रम करता है, उसे ही जीवित रहने का अधिकार है। जो काम नहीं करता, मुफ्त का माल उड़ाना चाहता है या दूसरों के अर्जित धन-सम्पत्ति या श्रम पर गुजर करना चाहता है, वह उस चोर-डाकू से कम नहीं जो मुफ्त में अधर्म द्वारा दूसरे की धन-सम्पत्ति हजम करता है। अकर्मा व्यक्ति अपने शरीर से पूरा कार्य न लेने के कारण रोगी, दीन-हीन, अल्पायु बनता है। आलस्य के कारण उसमें नाना प्रकार के शारीरिक विकार घर कर लेते हैं। हम प्रायः देखते हैं कि अनेक मोटे पेट वाले सेठ प्रातः से सायंकाल तक दुकानों की गद्दी पर बैठे-बैठे दिन काट देते हैं, शरीर से कोई भी कार्य नहीं करते, फलतः अनेक घृणित रोगों के शिकार बनते हैं। ये रोग एक दैवी सजा कहे जा सकते हैं। यदि हम अपने शरीर द्वारा कर्म करने की आदत डाल लें तो निश्चय ही शारीरिक व्याधियों से मुक्त हो सकते हैं। स्वयं अपना कार्य करना, दूसरों के आसरे न रहना भी एक संन्यास है।

"कर्म बिना किसी ने सिद्धि प्राप्त नहीं की जो कर्म छोड़ता है, वह गिरता है। कर्म करते हुए भी जो उसका फल छोड़ता है, वह चढ़ता है।" गीता कर्म को अनादि मानती है। हम कर्ममार्गी बनकर ही मानव-जीवन में सुखी, समृद्ध एवं शारीरिक दृष्टि से प्रसन्न बन सकते हैं।

- प्रश्न यह है कि ईश्वर की चाह किसे है ? क्या आप समझते हैं, कि संसार में जितने भी मनुष्य हैं, वे सभी ईश्वर की प्राप्ति के लिए इच्छुक हैं, किन्तु उसे प्राप्त नहीं कर सकते ? ऐसा नहीं हो सकता। मनुष्य के हृदय में कौन-सी ऐसी इच्छा है, जिसका विषय बाह्य जगत में न हो ? मनुष्य साँस लेना चाहता है, इसमें उसे साँस लेने के लिए वायु सदा वर्तमान रहती है। मनुष्य को भोजन की इच्छा होती है और उसकी भूख की निवृत्ति के लिए भोजन भी तैयार रहता है।

मानव जाति के हृदय में जितनी भी इच्छाएँ उत्पन्न होती हैं, उन सभी का उत्पत्ति कारण कोई न कोई वस्तु अवश्य होती है, जो बाह्य जगत में वर्तमान हो। ऐसी परिस्थिति में मनुष्य के हृदय में जब पूर्णता प्राप्त करने की इच्छा उत्पन्न होती है। मनुष्य जब लक्ष्य पर पहुँचने के लिए आवृत्ति से परे होने के लिए इच्छुक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

होता है, तब उसका कोई न कोई प्रयोजन अवश्य होना चाहिए।

जिस किसी के भी मन में ईश्वर को प्राप्त करने की सच्ची इच्छा जाग्रत हो गई, वह अपने लक्ष्य पर, मानव-जीवन के विकास की सीमा पर अवश्य पहुँच जाएगा।

❑ ज्ञान का अपना महत्त्व है, पर उसे हजम करने के लिए कर्म चाहिए अन्यथा वह अपच ही उत्पन्न करेगा। **"सबसे भले विमूढ़, जिनहिं न व्यापहिं जगद गति"** की उक्ति में इसीलिए सार्थकता है कि अनजान पशुवत् शिश्नोदर परायण रहकर अपना निर्वाह चैनपूर्वक कर लेते हैं, किन्तु ज्ञानवानों का अन्तःकरण और विवेक जाग्रत होने पर अपनी क्षुधा प्रकट करता है और उसकी पूर्ति न बन पड़ने पर आत्म-प्रताड़ना के रूप में कुहराम मचाता है।

इसे ही ज्ञान-दण्ड कहते हैं। जैसे धन का सदुपयोग और संरक्षण न बन पड़े तो वह अनेक संकट उत्पन्न करता है और दरिद्र से भी अधिक विपन्न स्थिति में ला पटकता है। वही बात ज्ञान-सम्पदा के सम्बन्ध में भी लागू होती है। यदि उसे कर्म के रूप में परिणत होने का अवसर न मिले तो संग्रहकर्त्ता को हैरान करके रख देता है।

❑ मात्र ज्ञान-संचय तो एक प्रकार का व्यसन है। बुद्धि-विलास इसे ही कहते हैं। उसे कतई निन्दनीय तो नहीं ठहराया जा सकता, पर सार्थकता तभी मानी जाती है, जब उसकी कर्म में परिणति हो। यदि वैसा न बन पड़े तो ज्ञान और कर्म की विसंगति उलटा अन्तर्द्वन्द्व खड़ा करती है। नीतिकार ने ठीक ही कहा है—

"यस्तु मूढतमं लोके यस्तु बुद्धिः परंगता।
उभौ तौ सुखमश्नुते मान्यैवमितरो जनाः।।

"अर्थात् संसार में दो ही सुखी रहते हैं। एक या तो 'मूढ़तम' दूसरे 'पारंगत बुद्धि वाले।' शेष तो सभी दुःखी देखे जाते हैं। मूढ़तम, वे जो पेट-प्रजनन से ऊपर की बात कभी नहीं सोचते। पारंगत बुद्धि वाले वे जो कर्म में बुद्धि को परिणत करके विचार सम्पदा के आधार पर मिलने वाली ऋद्धि-सिद्धियों को उपलब्ध करके पूर्णता के लक्ष्य तक जा पहुँचते हैं, ऐसे ही व्यक्ति श्रेय-सम्मान पाते हैं। समाज इन्हीं को अपना मार्गदर्शक मानता है। हममें से सभी को इस श्रेणी में पहुँचने के लिए तत्पर हो जाना चाहिए।

❑ यदि आपके पास मनचाही वस्तुएँ नहीं हैं तो निराश होने की कुछ आवश्यकता नहीं। अपने पास जो टूटी-फूटी चीजें हैं, उन्हीं की सहायता से अपनी कला को प्रदर्शित करना आरम्भ कर दीजिए, जब चारों ओर घोर घना अन्धकार छाया हुआ होता है तो वह दीपक छदाम की मिट्टी, आधे पैसे का तेल और दमड़ी की बत्ती है—कुल मिलाकर एक पैसे की भी पूँजी नहीं है—चमकती है और अपने प्रकाश से लोगों के रुके हुए कामों को चालू कर देता है, जबकि हजारों पैसे के मूल्य वाली वस्तुएँ चुपचाप पड़ी होती हैं। यह एक पैसे की पूँजी वाला दीपक प्रकाशवान होता है, अपनी महत्ता प्रकट करता है, लोगों का प्यारा बनता है, प्रशंसित होता है और अपने अस्तित्व को धन्य बनाता है। क्या दीपक ने कभी ऐसा रोना रोया है फिर मेरे पास इतने मन तेल होता, इतने सेर रूई होती, इतना बड़ा मेरा आकार होता तो ऐसा बड़ा प्रकाश करता ? दीपक को कर्महीन नालायकों की भाँति, बेकार शेखचिल्लियों के से मनसूबे बाँधने की फुरसत नहीं है, वह अपनी आज की परिस्थिति, हैसियत और औकात देखता है, उसका आदर करता है और अपनी केवल मात्र एक पैसे की पूँजी से कार्य आरम्भ कर देता है। उसका कार्य छोटा है, बेशक; पर उस छोटेपन में भी सफलता का उतना ही महत्त्व है जितना कि सूर्य और चन्द्र के चमकने की सफलता का है।

❑❑

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

पुरुषार्थ

❑ संसार का कोई भी कार्य नहीं जो लगनपूर्ण पुरुषार्थ के बल पर न किया जा सके। निरन्तर सच्चे मन से यत्न करते रहने से मनुष्य रेत से तेल प्राप्त कर सकता है। मनुष्य को न तो कभी हिम्मत हारनी चाहिए और न निराश होकर प्रयत्न से विमुख होना चाहिए। असफलता से हतोत्साहित होकर निरुपाय हो जाना पुरुष को शोभा नहीं देता, पूरी लगन से काम में जुट जाओ, शीघ्र ही तुम सफलता का वरण करोगे।

❑ हम अपने भाग्य के आप मालिक हैं। अपने प्रारब्ध के रचयिता हमीं हैं। *—महात्मा बुद्ध*

❑ नंगों को कपड़ा देकर उनकी नदामत क्या करना ? उनको काम दो जिससे वह निजी परिश्रम से कपड़ों के लिए धन पैदा करें।

—महात्मा गाँधी

❑ मेरा तो कहना ही है कि लोग इसके लिए तैयार हो जाएँ कि हम अपने परिश्रम से अपनी रोटी पैदा कर लेंगे। इससे लोगों में एक किस्म का तेज पैदा हो जाता है, उस तेज से ही आधा काम हो जाता है। *—महात्मा गाँधी*

❑ मनुष्य कष्टों के कारणों को दूर करने का प्रयत्न करके कष्टों को कम कर सकता है। यही उसके करने योग्य कार्य है।

—रवीन्द्रनाथ टैगोर

❑ भूलों के साथ संग्राम करना ही जीवन है।

—महात्मा गाँधी

❑ श्रम की पूजा करो। वह ऐसा प्रभु है जो चतुर्मुख ब्रह्मा और चतुर्भुज विष्णु से भी बढ़कर शक्तिशाली है, उसकी पूजा करने वाला त्रिकाल में भी निराश नहीं होता। *—विनोबा*

❑ किसी के उपदेश की सत्यता की जाँच लोग उसके आचरण से ही किया करते हैं। इसलिए यदि ज्ञानी स्वयं कर्म न करेगा, तो सामान्य लोगों को आलसी बनाने का एक बहुत बड़ा कारण हो जाएगा। *—लोकमान्य तिलक*

❑ कठिनाइयों की सृष्टि करना बुद्धिमानी नहीं है, उन पर विजय प्राप्त करना पुरुषार्थी मनुष्य का काम है। *—प्रेमचन्द*

❑ **सुखंदुःखांतमालस्यंदाक्ष्यंदुःखंसुखोदयम्**
भूतिःश्रीकीर्धृतिःकीर्तिर्दक्षेवसतिनालसे ।।

—महाभारत शान्ति पर्व २७। ३२

आलस्य सभी दुःखों की जड़ है। श्री, ह्री, धृति, कीर्ति तथा भूति का वास दक्ष पुरुषार्थ प्राणी में ही होता है, आलसी में नहीं।

❑ जहाँ उद्योग की प्रतिष्ठा नहीं होती, वहाँ हमेशा ही नाश और अवनति रहती है, विद्या, बल, ज्ञान वहाँ झाँकते भी नहीं, परन्तु जहाँ उद्योग को अपनाया जाता है, वहाँ का मुर्दापन चला जाता है और चैतन्यता चमकने लगती है। *—स्वामी रामतीर्थ*

❑ कोई भी महान कार्य चालाकी से नहीं होता। प्रेम, सत्यपालन और उत्साह द्वारा ही समस्त कार्य पूरे होते हैं, इसलिए अपने पुरुषार्थ का उपयोग करो। *—स्वामी विवेकानन्द*

❑ हमारा भाग्योदय क्यों नहीं होता ? इसलिए कि हम यत्न यानि उद्यम नहीं करते। करने से तो सब कुछ होता है, अतः पहले उद्योग करना सीखो। यत्न को ही देव समझकर दिल में धारण करो। निर्दोष प्रयत्न ही देव है और प्रमाद दैत्य। यत्न न्यायाधिष्ठित होना चाहिए, क्योंकि न्याय ही भगवान का रूप होता है और अन्याय शैतान का।

—समर्थ रामदास

❑ उद्योग में तत्पर रहना ही सफलता का मूल है और यही परम सुख है।

❑ कठोर काम में अनवरत लगे रहने का अभ्यास डालो। पढ़ते समय सारी दुनिया को एक ओर रख दो और पुस्तकों में लेखक की विचारधारा में डूब जाओ। यही तुम्हारी समाधि है। यही तुम्हारी उपासना है और तुम्हारी पूजा है। कठिन परिश्रम करना सीखो। खूब गड़कर, जमकर मेहनत करो और अपने उच्च और पवित्र आदर्श को कभी मत भूलो। शास्त्र और शस्त्र, बुद्धिबल और बाहुबल, दोनों का उपार्जन करो। *—मदनमोहन मालवीय*

❑ जो लोग पाप करते हैं, उन्हें एक न एक विपत्ति सदा घेरे ही रहती है, किन्तु जो पुण्य कर्म किया करते हैं, वे सदा सुखी और प्रसन्न रहते हैं। *—भीष्म*

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ जो कुछ काम करो, पूरे उद्योग और उत्साह से करो। उद्योग, उत्साह और धीरज बड़ी भारी शक्ति है।

—मदनमोहन मालवीय

❑ जब तुम्हें असाधारण अवसर मिले तो तुम हिचकिचाओ मत, बल्कि एकदम काम में जुट जाओ, चाहे वह असम्भव ही क्यों न हो ?

—सन्त तिरुवल्लुवर

❑ जिस घर में उद्यम की तालीम नहीं, उस घर के लड़के जल्दी ही घर का नाश कर देंगे।

—विनोबा

❑ यह नहीं कहा गया कि विधाता नादान-दुर्बलों को अपनी गोद में खिलाता है। वह हमें बुद्धि देता है, जिसका अर्थ है कि हम अपने ही ऊपर निर्भर रहें। उसने हमें यह आदेश दिया है कि हम रोते हुए जाकर उसका दरवाजा न खटखटाएँ। उसने अपने आपको हमारे क्षेत्र से अलग रखा है और वह निरन्तर चिन्ताशील माता के समान बार-बार प्रकट नहीं होता। इसके लिए उसे बन्धन है। पूरी-पूरी जिम्मेवारी का अधिकार बख्शकर उसने पौरुष को सम्मानित किया है। वह कायरों को अपने हाथ का सहारा देकर नहीं चलाता, किन्तु उन्हें मृत्यु के अनुभव से भी अकेले चलाने को मजबूर करता है, ताकि वे निर्भयता से जी सकें।

❑ हे प्रभो ! मेरी केवल एक ही कामना है कि मैं संकटों से डरकर भागूँ नहीं, उनका सामना करूँ। इसलिए मेरी यही प्रार्थना नहीं है कि संकट के समय तुम मेरी रक्षा करो, बल्कि मैं तो इतना ही चाहता हूँ कि तुम उनसे जूझने का बल दो। मैं यह नहीं चाहता कि जब दुःख-सन्ताप से मेरा चित्त व्यथित हो जाए, तब तुम मुझे सान्त्वना दो। मैं अपनी अञ्जलि के भाव-सुमन तुम्हारे चरणों में अर्पित करते हुए इतना ही माँगता हूँ कि तुम मुझे अपने दुःखों पर विजय प्राप्त करने की शक्ति दो।

जब किसी कष्टप्रद और संकट की घड़ी में मुझे कहीं से कोई सहायता न मिले तो मैं हिम्मत न हारूँ। किसी और स्रोत से सहायता की याचना न करूँ, न उन घड़ियों में मेरा मनोबल क्षीण होने पाए। हे प्रभो ! मुझे ऐसी दृढ़ता और शक्ति देना, जिससे कि मैं कठिन से कठिन घड़ियों में भी संकटों और समस्याओं के सामने भी दृढ़ रह सकूँ और तुम्हें हर घड़ी अपने साथ देखते हुए उन्हें हँसी-खेल समझकर अपने चित्त को हल्का रखूँ। मैं बस यही चाहता हूँ।

चाहे जैसी ही प्रतिकूलताएँ हों, व्यवहार में मुझे कितनी ही हानि क्यों न उठानी पड़े, इसकी मुझे जरा भी परवाह नहीं है, लेकिन प्रभु मुझे इतना कमजोर मत होने देना कि मैं आसन्न संकटों को देखकर हिम्मत हार बैठूँ और रोने बैठ जाऊँ कि अब क्या करूँ, मेरा सर्वस्व छिन गया।

प्रभु तुम्हारा और केवल तुम्हारा विश्वास ग्रहण कर लोगों ने अकिंचन अवस्था में रहते हुए भी इतिहास की श्रेष्ठ उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं। मैं इतना ही चाहता हूँ कि तुम्हारा विश्वास मेरे लिए शक्ति बने, याचना नहीं। सम्बल बने, क्षीणता नहीं। बस इतनी ही कृपा करना।

—रवीन्द्रनाथ टैगोर

❑ आप जिसे सुखी और सफल समझते हैं, निकट से उसके विगत जीवन का अध्ययन कीजिए। हो सके तो सीधे उससे ही पूछ लीजिए कि क्या आपके जीवन में कभी कोई मुसीबत नहीं आयी ? तब आपको ज्ञात होगा—सुख और समृद्धि आसमान से फटकर ही उसे आप से आप नहीं मिले। कठिनाइयों और मुसीबतों ने उसके जीवन को भी उसी प्रकार झकझोरा था, जिस प्रकार वह आज आपको परेशानी में डाले हुए हैं। जब आपको यह तथ्य ज्ञात हो जाए, तो आप पुनः पता लगावें कि फिर किसने उसे उस विपत्ति-जाल से उबारा ? क्या किसी जादूगर ने आकर जादू की छड़ी घुमायी और वे सब अवरोध काफूर हो गये ? खोज करने पर आपको पता लगेगा, विपन्नताओं के निवारण में उसका आत्म-विश्वास ही उसका मुख्य सहायक रहा है। जब संसार के सभी मित्रों ने, परिजनों ने उसका साथ छोड़ दिया था, तब इसी आत्म-विश्वास ने आशा के रूप में उभरकर उसको आश्वस्त किया था। हिम्मत बढ़ाकर उसे सतत प्रयास के लिए प्रेरित किया था।

❑ विश्वास कीजिए आपकी आज की परेशानी अपनी निराशा का ही परिणाम है। आप हार मान बैठे हैं कि हमसे कुछ नहीं होगा, विपत्ति स्वयं के बूते नहीं टलेगी। चारों ओर अँधेरा ही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अँधेरा है। कोई प्रकाश दिखाने वाला नहीं, दुःखों से मुक्ति का कोई मार्ग नहीं सूझता। अब जरा अपना आत्म-विश्वास जगाइये, वर्तमान में उपलब्ध साधनों का भले ही वे अपेक्षाकृत कम और छोटे हों, आशावादी दृष्टिकोण से मूल्यांकन करिए। उनके प्रति श्रद्धा का आदर-भाव रखते हुए उनके सदुपयोग में जुट जाइये। कुछ दिनों में ही देखेंगे कि परिस्थिति में परिवर्तन प्रारम्भ हो गया। निराशा आशा में, असफलता सफलता में बदलना प्रारम्भ हो गई। *—स्वामी विवेकानन्द*

❑ सामने जहाँ बस्ती दिखाई दे रही है, रंग-बिरंगे फूल खिल रहे हैं, सुन्दर क्यारियाँ और लता-वितान झूम रहे हैं, वहाँ पहले एक बीहड़ जंगल था। यों कहिये जंगल की कुरूपता में उपवन और व्यवस्थित जीवन का सौन्दर्य छिपा हुआ था, उसे कर्म-साधना द्वारा मुक्त कर लिया गया है। समाज की उच्छृंखल और उन्मुक्त प्रवृत्तियों के बीच न्याय और नियम का स्वर्ग भी इसी प्रकार बसा हुआ है, उसे मुक्त करने के लिए कल्याण साधना आवश्यक है, अनिवार्य है।

मुक्ति हो या आनन्द, सत्य हो या सौन्दर्य, वह अपने आप प्रकट नहीं हो सकता। कुछ नियमों के द्वारा ही आनन्द प्रकाशित होता है। इसी प्रकार आत्मा भी कर्म द्वारा ही व्यक्त होती है। उन्मुक्त प्रकृति आत्मा का स्वरूप नहीं हो सकती, कर्म जो कि कल्याण की कामना से किया जाता है, वही आत्मा का सत्य है। कर्म से आनन्द की प्राप्ति नहीं हुई होती तो आत्मा कभी भी किसी कर्म में प्रवृत्त न होती।

यदि मुक्त आत्माएँ कभी कर्म से बच निकलने का प्रयास नहीं करतीं, वरन् कर्म-बन्धनों को जान-बूझकर स्वीकार करती हैं और उन बन्धनों के भीतर से ही उन्मुक्त आनन्द की प्राप्ति करती हैं। इसलिए उपनिषद्कार ने बताया है—"ऐ मनुष्य ! कर्म करते हुए सौ वर्ष तक जीने की इच्छा कर।" आत्म-ज्ञानी जीवन के कार्यों में संलग्न हुए और उनको सफल नहीं बना लिया तब तक छोड़ा नहीं। उन महान पुरुषों के जीवन-वृत्तान्त अब भी हमें उसी मार्ग का अनुसरण कर मनुष्य जीवन को सार्थक बनाने की प्रेरणा देते हैं। *—रवीन्द्रनाथ टैगोर*

❑ जिधर भी दृष्टि डालें उधर ही चैतन्यता दिखाई देगी। यहाँ तक कि विराट् अन्तरिक्ष के परमाणु भी चुप नहीं हैं। सूर्य, चन्द्रमा और नक्षत्र भी अपने भीतर जो कुछ हैं, उसे विकीर्ण करते रहते हैं और बाहर से कुछ धारण करते हुए अपनी शक्ति बढ़ाते रहते हैं। बढ़ने और बँट जाने की इस अन्तर्चेतना का आधार ढूँढ़ना ही ईश्वर को प्राप्त करने का विज्ञान है।

❑ इस जगत में परमात्मा के अद्भुत कर्म स्थान-स्थान में हो रहे हैं। उनको देखकर ईश्वर की सामर्थ्य की कल्पना करनी चाहिए। वह ईश्वर जीवात्मा का सच्चा मित्र होने से ही जीवात्मा के हित के लिए सब कार्य इस जगत में कर रहा है। यही उसकी अपार दया है। इस दया के प्रति कृतज्ञ होना और उसका कीर्तन करना ही उसकी भक्ति है।

ज्ञानी लोग उसके इस उपकार का स्मरण करते हुए उसका ध्यान करते हैं, इससे उन्हें परमात्मा का साक्षात्कार ऐसे होता है, जैसे साधारण लोगों को सूर्य दिखाई देता है। विचार की दृष्टि से जो लोग इस जगत को देखते हैं, उनको परमात्मा का साक्षात्कार सर्वत्र होता है।

वे जाग्रत आत्माएँ जो आलस्य नहीं करतीं और सदा पुरुषार्थ में तत्पर रहती हैं, वे ही भक्ति, ज्ञान और विज्ञान की इस साधना रूपी त्रिवेणी में स्नान करती हुई सिद्धि प्राप्त करती हैं।

❑ बिना रगड़े हीरे पर चमक नहीं आती और बिना संघर्ष और कसौटियों के मनुष्य पूर्णता को प्राप्त नहीं होता। *—कन्फ्यूशियस*

❑ नैतिकता अजेय है और जो व्यक्ति उसके आधार पर खड़ा होता है, वह जैसे एक अखण्डनीय चट्टान पर खड़ा होता है, इसलिए उसकी पराजय असम्भव है। उसकी विजय निश्चित है। ऐसे व्यक्तियों को परीक्षा से गुजरना होता है और वे परीक्षाएँ बड़ी से बड़ी परीक्षाएँ हो सकती हैं, क्योंकि बिना संघर्ष के विजय प्राप्त नहीं होती। संघर्ष से नैतिक शक्तियों में परिपूर्णता आती है, जो स्वाभाविक है। *—जेम्स ऐलन*

❑ वही आदमी सुखी है जो आज अपना बना सके, जो इत्मीनान के साथ कह सके "ओ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

कल ! तेरी ताकत हो सो कर ले, आज में जी भरकर जी लिया।" —ड्राइडन

❑ मानवीय जीवन में शारीरिक तथा मानसिक परिश्रम के बिना कोई फल प्राप्त नहीं होता। एकाग्रचित्त और महान् उद्देश्य वाला मानव जो करना चाहे सो कर सकता है। —ऐरी शेभर

❑ दरिद्रता तथा ऐश्वर्य के बीच एक मध्यम मार्ग है—सामान्य निर्वाह। इतनी सम्पत्ति पर्याप्त होनी चाहिए, जिससे शरीर यात्रा की वैसी सुविधाएँ मिलती रहें जितनी कि विश्व के अधिकांश नागरिकों को मिलती हैं। दरिद्रता मनुष्य को दयनीय बनाती है और ऐश्वर्य से उच्छृंखलता पनपती है। सामान्य साधन के सहारे ही मनुष्य चिन्ताहीन जीवन जी सकता है और उचित पुरुषार्थ करते हुए ऐसी प्रगति कर सकता है जिसे अनुकरणीय और अभिनन्दनीय कहा जा सके। —अरस्तू

❑ प्रसन्नता काम करने में है। पुरुषार्थी मनुष्य सदा प्रसन्न रहता है। —रूसो

❑ मनुष्य को चमत्कारिक शक्तियाँ कठिन काम करने से प्राप्त नहीं होतीं, बल्कि इस कारण प्राप्त होती हैं कि वह उन्हें शुद्ध हृदय से करता है।
—रिचर्ड बी. ग्रेग

❑ अपने हाथों बनाये ऐश्वर्य को दूसरे लोग भाग्य कहते हैं। —डिजरायली

❑ सतत् पुरुषार्थ का स्थान न मेधा ले सकती है, न प्रतिभा, न शिक्षा। संसार में ऐसे असंख्य मेधावी, प्रतिभाशाली तथा शिक्षित व्यक्ति भरे पड़े हैं, जो जीवन में विफल रहे हैं, परन्तु ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं मिलेगा, जिसने सतत् पुरुषार्थ किया हो और वह असफल रह गया हो। —कालविन कूलिल

❑ फरिश्ते ने जैसे ही इनसान को देखा तो आश्चर्यचकित रह गया। इनसान के मस्तक पर छिटकी पसीने की प्रत्येक बूँद में भगवान् विराजमान थे। —महाकवि नागोची

❑ मनुष्य होकर भी जो औरों का मुँह ताकता है, वह मनुष्य शरीर में जीवित पशु है। —सरमिन्टो

❑ भाग्य और परिस्थितियों पर निर्भर रहना आत्म-बुद्धि वालों का लक्षण है। स्थिर बुद्धि वाले तो कार्य और कारण में विश्वास रखते तथा संघर्षों में आगे बढ़ते हैं। —एमर्सन

❑ तुम कुछ न करो, सब कुछ हो जावेगा, यह ऐसा ही है जैसे कोई कहे दवा देख लो, अच्छे हो जाओगे। —अलेक्जेण्डर

❑ मनुष्य के लिए जीवन में सफलता का रहस्य हर आने वाले अवसर के लिए तैयार रहना है।
—डिजरायली

❑ प्रतिभा महान् कार्यों को आरम्भ करती है, किन्तु उन्हें पूरा करता है केवल श्रम। —स्यूबर्ट

❑ मानव-जीवन में शारीरिक तथा मानसिक परिश्रम के बिना कोई फल प्राप्त नहीं होता। एकाग्र चित्त और महान् उद्देश्य वाला मानव जो करना चाहे वह कर सकता है। —ऐरी शेभर

❑ अपने पुरुषार्थ से अर्जित ऐश्वर्य का ही दूसरा नाम भाग्य है। —डिजरायली

❑ भाग्य साहसी मनुष्य की सहायता करता है, कायर की नहीं। —वर्जिल

❑ तत्त्व-द्रष्टा को किसी के उपदेश की आवश्यकता नहीं होती, वह सत्य को ढूँढ़ने और धारण करने का पुरुषार्थ आप ही करता है। —आचारांग १। २। ३

❑ इसमें सन्देह नहीं कि अनेक धनी लोगों ने अपना आरम्भिक जीवन गरीबी में व्यतीत किया था। —सैथली

❑ सफल जीवन बिताने के लिए आपमें अध्यवसाय की भावना नितान्त आवश्यक है। अगर आप अपने कुछेक प्रयासों में असफल हो हिम्मत हार बैठें तो निश्चय ही आपके मन का काम कम होने पर भी सफलता आपका वरण नहीं कर सकती। आपको सतत् प्रयत्न करना, अपना बनाने की चेष्टा करते रहने का गुण भी आपमें आवश्यक है।

❑ भावनाओं का जीवन में बड़ा स्थान है। वस्तुतः वे जीवन की दिशा में नियन्त्रित करती हैं। अतः भावनाओं के आवेश में कभी मत बहिए। यथार्थ को चाहे कितना ही कष्टपूर्ण हो अपनाना सीखिए। स्वयं को परिस्थितियों के अनुसार मोड़ने की चेष्टा कीजिए।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ सफल जीवन के सम्बन्ध में एक भ्रान्त धारणा अक्सर लोगों में पाई जाती है। जीवन में सफल होने का अर्थ यह कदापि नहीं है कि आप आर्थिक क्षेत्र में सफल हों। सुखी और सफल जीवन के लिए आर्थिक सफलता आवश्यक है, किन्तु इसे ही उसका आधार मान लेना भी तो उचित नहीं कहा जा सकता।

❑ किसी चीज को जरूरत से ज्यादा महत्त्व देने की आदत भी अच्छी नहीं। कैसी भी परिस्थिति हो, शान्तिपूर्वक उसका सामना कीजिए। सफलता के लिए भाग-दौड़ के जीवन में आपको, हर स्थिति में स्वयं को शान्त बनाये रखने की आदत नितान्त आवश्यक है। प्रत्येक अवस्था में मनुष्य को प्रसन्नचित्त, सचेष्ट एवं क्रियाशील रहना चाहिए। असन्तुष्ट, दुःखी अथवा असहयोग की भावना रखने वाले कार्यकर्त्ता से न तो उसके मालिक का ही लाभ होता है और न स्वयं उसका अपना। यदि आप समझते हैं कि आपका कार्य आपकी इच्छा या योग्यता अनुकूल नहीं हो तो उसे जितना जल्दी आप छोड़ सकते हैं छोड़ दीजिए। कम से कम आपको मानसिक कष्ट से मुक्ति तो मिल जाएगी।

❑ स्वयं अपनी योग्यता पर विश्वास रखिए। काम करिए और आगे बढ़िए। जो कुछ आप बनाना चाहते हैं, उसकी तस्वीर हमेशा अपने दिमाग में रखिए और उस ओर आगे बढ़ने के लिए सदा प्रयत्नशील रहिए।

❑ रोचक से भी रोचक काम बोझ समझकर किए जाने पर ठीक से नहीं हो पाता और शुष्क से भी शुष्क काम अभिरुचि के साथ किए जाने पर सफलता के साथ सम्पन्न होता है। जिसे आप बहुत ही मामूली अथवा अप्रिय कार्य समझते हैं, वह भी यदि आप उसमें उत्साह व रुचि दिखायेंगे तो यथेष्ट प्रियकर हो जाएगा।

—आंद्रे-मोराइस

❑ निष्फल कर्मों में श्रम खर्च करना व्यर्थ है। क्रिया-शक्ति और पौरुष का इसमें फिजूल नाश हो जाता है। मुझे बहुत लोगों को इकट्ठा करके दिन-रात उपदेश देते रहना अच्छा नहीं लगता। बुरे को सीख देना अपनी वाणी खोना है। समय तो नष्ट होता ही है, कभी-कभी अकारण बैर-भाव भी ठन जाता है। इसलिए शिक्षा देते समय यह ध्यान दे लेना बहुत उपयोगी होता है कि उस पर जिसे उपदेश दिया जा रहा है, कुछ प्रभाव भी पड़ता है। ऊसर में बीज बिखेरने से क्या लाभ, गन्दी नाली में एक बाल्टी पानी से कहीं सफाई होती है ? दुष्ट को उपदेश देने से क्या लाभ ? दुर्जन को अच्छी-अच्छी शिक्षा दी जाए, तब भी वह साधु नहीं बन सकता, जैसे नीम के पेड़ को यदि घी और दूध से भी सींचा जाए तो भी वह मधुर नहीं होगा।

❑ तुम शिक्षा देने का क्रम बन्द न करना, पर यह देखने में भी भूल न करना कि श्रोतागण आपकी शिक्षा ग्रहण करने के लिए उत्कण्ठित हैं अथवा तुमने वैसी उत्कण्ठा उसमें पैदा कर दी है। बीज जोती हुई जमीन में डालते हैं तो वह उगता भी है, बढ़ता, फलता-फूलता और समय पर फल भी देता है, किन्तु पत्थरों में बीज बिखेरने का कोई फल नहीं, महत्त्व नहीं। ऐसा करोगे तो तुम्हारी गाँठ का बीज भी बेकार जाएगा। दुर्जनों के पास जाकर मौन हो जाना अच्छा है ताकि अपनी वाणी-शक्ति का कम से कम दुरुपयोग तो न हो। *—सेनेका*

❑ शारीरिक परिश्रम, दैनिक श्रम और साधारण सेवाकार्य में एक वास्तविक प्रतिष्ठा है, किन्तु शर्त यह है कि हमारे कार्य उच्च-भावना द्वारा प्रेरित और प्रभावित किए गये हों। इन्हीं से जीवन की महानता की मोहर लगती है।

—विल्बर फोर्स

❑ बुद्धिमत्ता किसी को भी उत्तराधिकार या उपहार के रूप में नहीं मिली, उसे प्रयत्नपूर्वक बुद्धिमानों के सहचरत्व से अर्जित करना पड़ता है। *—बेकन*

❑ प्रतिदिन पाँच घण्टा पढ़कर इतना ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है, जितने से संसार का हर ऐश्वर्य खरीदा जा सके। *—जॉनसन*

❑ सफलता के मणि-मुक्तक धूलि में बिखरे नहीं पड़े हैं। उन्हें पाना तो गहरे उतरने की हिम्मत इकट्ठी करो। कठोर परिश्रम के लिए शपथ ग्रहण करो। कठोर, दम तोड़ और टपकते स्वेद कणों वाला परिश्रम ही जीवन का महान

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पुरस्कार है, इसी के फलस्वरूप सफलताओं और विभूतियों को पाया जा सकता है।

❑ सुअवसरों की प्रतीक्षा में न बैठे रहो। उद्यम के लिए हर घड़ी शुभमुहूर्त है और हर पल सुअवसर। सस्ती सफलता के फेर में पड़े रहने से कुछ लाभ नहीं। चिरस्थायी प्रगति के लिए राजमार्ग पर अनवरत परिश्रम और अपराजेय साहस साथ लेकर चलना पड़ता है। पगडण्डियाँ ढूँढ़ना बेकार है। वे भटका सकती हैं। जिन्होंने भी कुछ कहने लायक सफलता पाई है, उन्हें गहराई तक खोदने और उतरने के लिए कटिबद्ध होना पड़ा है। विजयश्री का वरण करने के लिए कमर कसना, आस्तीन चढ़ाना और खोदना आवश्यक है, पर ध्यान यह भी रखना चाहिए कि कहीं कुदाली से पैर ही न कट जाए।

❑ परिस्थितियाँ, साधन, क्षमता का समन्वय करना समझदारी है, पर सफलता केवल समझदारी पर ही तो निर्भर नहीं है, उसका मूल्य माथे से टपकने वाले श्रम-सीकरों से ही चुकाना पड़ता है।

—*एमर्सन*

❑ लुढ़कते पत्थर पर काई नहीं जमती, काम में आने वाले लोहे पर जंग नहीं लगती। पुनः-पुनः प्रयत्न करने वाला हारता नहीं।

❑ यदि जीवन में बुद्धिमानी की कोई बात है तो वह एकाग्रता है और यदि कोई खराब बात है तो वह है अपनी शक्तियों को बिखेर देना। बहुचित्तता कैसी भी हो, इससे क्या ? वह चीज अच्छी है, जो सारे खिलवाड़ और भ्रम की चीजों को दूर कर देती है और हमें हृदय से अपने काम करने के लिए भेजती है।

❑ उद्यम ही सफलता की कुंजी है, बिना उद्यम किए थाली की रोटी भी अपने मुँह में नहीं जाती।

❑ प्रगति के लिए संघर्ष करो। अनीति को रोकने के लिए संघर्ष करो और इसलिए भी संघर्ष करो कि संघर्ष के कारणों का अन्त हो सके।

❑ तकलीफों से बचकर आदर्शों को छोड़ बैठना न बहादुरी है, न बुद्धिमानी। यह तो कायरता है और नादानी। तकलीफों में पड़े-पड़े सड़ना तो और भी बुरी बात है। उनसे जूझने में भी भलाई है।

❑ जीवन का एक पक्ष संघर्ष भी है। भीतर के कुविचार और बाहर के अनाचार ऐसे हैं, जिन्हें बिना लड़े निरस्त नहीं किया जा सकता।

❑ यदि धन के लिए परिश्रम करने की आवश्यकता नहीं है तो भी स्वास्थ्य के लिए परिश्रम किया जाए।

❑ परिश्रम ही स्वस्थ जीवन का मूल मन्त्र है।

❑ जुगनू जब बैठा होता है, तब नहीं चमकता। उसी प्रकार जब मनुष्य आलसी-अकर्मण्य हो जाता है तो उसकी बुद्धि का दीपक बुझ जाता है।

❑ ध्यान में एकाग्रता होती है और कुछ देखा भी नहीं जाता। स्पर्श का बोध तक भी नहीं होता। सर्प शरीर के ऊपर होकर चला जाता है, उसे मालूम नहीं होता। जो ध्यान करता हो वह भी नहीं होता और सर्प भी जान नहीं सकता है।

❑ **अभिमानवतो मनस्विनः प्रियमुच्चैः पदमारुरुक्षतः।**
विनिपातनिवर्त्तनक्षमं मतमालम्बनमात्मपौरुषम्॥
प्रगति के पथ पर आरोहण करने के इच्छुक मानशाली धीरपुरुष आपत्ति निवारण करने में समर्थ स्वपुरुषार्थ का आश्रय लेना उचित मानते हैं। वीरों का पुरुषार्थ ही सच्चा सहायक है।

❑ **प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः**
प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः
प्रारभ्यचोत्तमजनाः न परित्यजन्ति॥
नीच लोग विघ्न के भय से कोई कार्य आरम्भ नहीं करते, मध्यम श्रेणी के लोग कार्य को आरम्भ करके विघ्न आने पर बीच में ही छोड़ देते हैं, लेकिन उत्तम लोग बारम्बार विघ्न आने पर भी आरम्भ किए हुए कार्य को बीच में नहीं छोड़ते।

❑ चंचलता का एक ही कारण है कामों को खिलौना समझकर खेलना। जब उन्हें तत्परतापूर्वक किया जाता है तो एकाग्रता की ध्यान-साधना का आधा व्यवधान दूर हो जाता है। शेष आधा तब दूर होता है, जब उनमें रस आने लगता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

- समुचित श्रम और सद्भाव में कटौती करके जो भरपूर पारिश्रमिक पाना चाहते हैं, वे चोर हैं।
- एकाग्रता से ही विजय प्राप्त होती है।
- अपने जीवन पर दृष्टि डालो तुम्हें ज्ञात होगा कि जीवन के वे दिन अधिक सुखमय थे, जब तुमने किसी के लिए दया के शब्द मुख से निकाले थे अथवा परोपकार के कार्य किए थे, अथवा दूसरों को अपने स्वार्थ की आहुति दी थी।
- साधारण योग्यता को बुद्धिमानी के साथ काम में लाने से प्रशंसा होती है। उससे इतनी सफलता मिलती है, जितनी वास्तविक चमक में नहीं होती।
- आत्म-विश्वास की कमी ही हमारी बहुत-सी असफलताओं का कारण होती है। शक्ति के विश्वास ही में शक्ति है। जिन्हें अपने ऊपर विश्वास नहीं, वे सबसे अधिक निर्बल हैं, चाहे कितने ही बलवान क्यों न हों ?

  "तुम उतने ही जवान हो जितना तुम्हें विश्वास है और उतने ही बूढ़े हो जितना तुम्हें सन्देह है।"

  "तुम उतने ही जवान हो जितनी तुममें आत्म-दृढ़ता है और उतने ही बूढ़े हो जितना तुम्हें भय है।"
- उद्योगी पुरुष अपना मार्ग ढूँढ़ता है या उसे स्वयं बना लेता है।
- शेखशादी ने कहा है—ऐ भगोड़ो, तुम्हें इस तरह कुछ न मिलेगा। रुको और सीधे पाँवों आगे चलो। चट्टान उठाने का प्रयत्न करो। उसी के नीचे वे चीजें मिलेंगी, जिन्हें तुम छप्पर फाड़कर मिलने की आशा लगाते हैं।
- **उद्यमेन हि सिद्ध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।**
  नहि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः।।

  —पंचतन्त्र

  समस्त कार्य उद्यम करने से सिद्ध होते हैं केवल मनोरथ करने से कुछ नहीं मिलता है। जैसे सोते हुए सिंह के मुख में हिरन अपने आप नहीं चले जाते।
- अभागे वह सोचते हैं जो कर नहीं सकते। भाग्यवान वे हैं, जो कर सकने की सामर्थ्य को निरर्थक नहीं जाने देते।
- उद्योग करते रहो, संसार का सार उद्योग ही है। उद्योग से ही कीर्ति प्राप्त होती है।
- **यथा ह्येकेन चक्रेण न रथस्य गतिर्भवेत्।**
  एवं पुरुषकारेण बिना दैवं न सिद्ध्यति।।

  —याज्ञवल्क्य स्मृति ३५१

  सिद्धान्त की बात है कि जिस प्रकार एक पहिये की गाड़ी नहीं चलती, उसी प्रकार पुरुषार्थ के सहारे कर्मफल बनता है।
- **परं पौरुषमाश्रित्य दंतैर्दन्तान्विचूर्णयन्।**
  शुभेनाशुभमुद्युक्तं प्राक्तनं पौरुषं जयेत।।

  मनुष्य को चाहिए कि पूर्वजन्म के अशुभ पौरुष (कुसंस्कारों) के फलोन्मुख होने पर, दाँतों से दाँतों को पीसते हुए, परम पुरुषार्थ का आश्रय लेकर शुभ कर्मों द्वारा उसको जीत ले।
- भगवान ने मनुष्य के एक हाथ में पुरुषार्थ और दूसरे में श्रेय रखा है। दोनों एक साथ ही मिलते हैं। जो पुरुषार्थ से रहित हैं, उन्हें श्रेय भी नहीं मिलता।
- भाग्य एक कोरा कागज है, उस पर जो चाहो सो लिख सकते हो।
- मनुष्य की सफलता विशेषता इच्छाशक्ति और परिश्रम पर निर्भर है। जो कठिनाइयों का दृढ़ता से सामना करने वाली और उद्योग देवता के नाम से पुकारी जाती है। यह देखकर आश्चर्य होता है कि इसके द्वारा किस प्रकार असम्भव बातें भी सम्भव हो जाती हैं।
- **यद् दुस्तरं यद दुरापं यद् दुर्गम् यच्च दुष्करम्।**
  सर्वं तु तपसा साध्यं तपो हि दुरतिक्रमम्।।

  —मनुस्मृति ११। २३८

  जो बहुत दुस्तर है, बहुत कठिनता से प्राप्त किया जा सकता है। जो दुर्गम और दुष्कर है, वह सब कुछ तप द्वारा सिद्ध किया जा सकता है, क्योंकि कठोर श्रम से मनुष्य प्रत्येक कठिनाई को पार कर सकता है।
- संसार जितना लक्ष्मी के पीछे पागल है, उसका सौवाँ भाग परिश्रम करके ही वह परमार्थ का अचल धन प्राप्त कर सकता है।
- **नात्युच्यशिखरो मेरुः नातिनीचं रसातलम्।**
  व्यवसायद्वितीयानां नाप्यपारो महोदधिः।।

  उद्योगी पुरुष के लिए सुमेरु पर्वत की चोटी भी अधिक ऊँची नहीं है, उसके लिए रसातल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भी अधिक गहरा नहीं है और न वह समुद्र को भी अथाह और अपार समझता है।

- पुरुषार्थ जिस भी प्रयोजन के निमित्त किया जाए तो उसका सत्परिणाम आज नहीं तो कल अवश्य मिलेगा।
- अपनी ओर से उद्योग की पराकाष्ठा करनी चाहिए, पर हार-जीत को अधिक महत्त्व न देना चाहिए।
- ईश्वर से सहायता की प्रार्थना करो, पर अपनी जीवन नैय्या को स्वयं ही खेकर पार लगाओ। प्रयत्नशीला को ही ईश्वर की सहायता प्राप्त होती है।
- प्रयत्न से सांसारिक समृद्धि मिलती है, प्रयत्न से आत्मिक सम्पदाएँ मिलती हैं, प्रयत्न से परमात्मा मिलता है, इसलिए प्रयत्न प्रधान है।
- प्रगतिशीलों के लिए याद रखने लायक बात एक ही है—परिश्रम, परिश्रम, परिश्रम।
- प्रकृति ने शरीर को इस प्रकार बनाया है कि उसे सावधानी बरतने पर सुदृढ़, सुरक्षित रखा जा सकता है। बीमार होने पर अपने ही प्रयत्न प्रायश्चित्त से उसे सुधारा जा सकता है। इस राजमार्ग को छोड़कर दूसरों का सहारा तकते और सहायता की ओर दौड़ते हैं, उन्हें निराश ही रहना पड़ता है। क्या शरीर, क्या मन, क्या जीवन सर्वत्र स्वावलम्बन की ही प्रतिष्ठा है। पराये अनुदान पर कोई कब तक जीवित रह सकता है ?
- सद्उद्देश्य के लिए किया गया पुरुषार्थ, आज नहीं तो कल सत्परिणाम प्रस्तुत करेगा ही।
- पहले अपने को सारी चिन्ताओं से रहित कर दो, मन और बुद्धि को बिल्कुल खाली कर देने से एक स्तब्ध शान्त भाव आता है। उस समय ऊपर से एक आदमी बिल्कुल स्पष्ट रीति से बात कहना प्रारम्भ कर देता है। जो कुछ कहना होता है, वही वह कहता है, जो कुछ करने का काम होता है, वही वह करता है।
- यह ठीक है कि परमेश्वर प्रत्येक जीव को भोजन देता है, परन्तु यह भी ठीक है कि वह किसी के भी मुख में ग्रास नहीं रख जाता।
- परिश्रम ही जीवन का जीवन है और सुस्ती ही बीमारी है; शरीर के हर एक हिस्से का जीवन इसी में है कि वह अपने कार्य की पूर्ति करता रहे।
- बुद्धिमान किसी से अपने कष्टों को बैठकर नहीं रोते हैं, वे तो अपने दुःखों का सामना करते हुए उनके निवारण के लिए कठोर परिश्रम करते हैं।
- जिस प्रकार गंगा की धारा हमेशा अविरल गति से चलती रहती है, उसी प्रकार तुम भी जीवन भर कर्त्तव्य की धारा बहाते रहो। बराबर काम करते रहो। क्षण भर के लिए भी आलसी बन कर तुम न बैठो।
- तुम्हें अपनी निर्बलताओं का दूर करने के लिए प्रतिदिन उद्योग करना चाहिए। निरन्तर के प्रयत्न से हर कोई बुराई दूर हो सकती है।
- कठिन परिश्रम और एकनिष्ठता, यह दो तपस्याएँ ऐसी हैं, जिनको करने वाले अपनी मनोवाञ्छा पूरी होने का वरदान प्राप्त कर लेते हैं।
- कार्य ही संसार का सार है, कार्य करने से ही कीर्ति प्राप्त होती है।
- फल के लिए प्रयत्न करो, परन्तु दुविधा में खड़े रह जाओ। कोई भी कार्य ऐसा नहीं जिसे खोज और प्रयत्न से पूर्ण न कर सको।
- स्वर्ग और पृथ्वी में बहुत भेद नहीं है। श्रम और प्रेम दोनों साथ हों तो स्वर्ग बन जाता है और ये दोनों पृथक हो जाएँ तब पृथ्वी बनती है।
- सफलता जिस ताले में बन्द रहती है, वह दो चाबियों से खुलता है—एक परिश्रम और दूसरा सतप्रयास। कोई भी ताला यदि बिना चाबी के खोला गया तो उपयोगी नहीं रहेगा। इसी प्रकार यदि परिश्रमी और प्रयास की भावना अपने अन्दर पैदा नहीं की तो कोई भी थोपी सफलता टिक न सकेगी।
- एक मनोवैज्ञानिक रिचटर ने अपने लेख 'शक्ति को जीतो' में लिखा है कि जीवन में किये गये सत्कार्य ही स्वर्ग की घण्टी बजाते हैं। दरवाजा अवश्य खुलेगा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ **व्यसनस्य च मृत्योश्च व्यसनं कष्टमुच्यते।**
व्यसन्यधोऽधो व्रजति स्वर्यात्यसनी मृतः।।
दुर्व्यसन और मृत्यु में से दुर्व्यसन ही अधिक कष्टकारक है, क्योंकि व्यसनी मनुष्य पतन के गर्त में गिरता जाता है, जबकि व्यसनरहित मनुष्य स्वर्ग में उन्नति की ओर जाता है।

❑ धर्माडम्बर ऐसी परमेश्वर की कल्पना करता है, जो मनुष्य को दुर्बल बना देता, आत्म-विश्वास नहीं जगने देता और स्वतन्त्रता का अपहरण कर लेता है।

❑ माँ के दूध के बाद यदि कोई वस्तु पूर्ण पवित्र और पोषक हो सकती है, तो वह है—मनुष्य की मेहनत और ईमानदारी की कमाई। परिश्रम की कमाई से शारीरिक और मानसिक दोनों ही स्वास्थ्य स्थिर रहते हैं।

❑ सफलता की पहली शर्त है पूरी तन्मयता, धैर्य और साहस के साथ प्रस्तुत कार्य में जुट जाया जाए। दूसरी शर्त है—उस कार्य के उपयुक्त अपनी योग्यता, साधन-सामग्री एवं सुयोग्य व्यक्तियों की सहायता बढ़ाने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहा जाए।

❑ इस संसार में प्यार करने लायक दो वस्तुएँ हैं—एक दुःख, दूसरा श्रम। दुःख के बिना हृदय निर्मल नहीं होता और श्रम के बिना मनुष्यत्व का विकास नहीं होता।

❑ जंग लगकर खत्म होने की अपेक्षा घिसकर समाप्त होने में शान है। आलसी अमीर से परिश्रमी श्रमिक का महत्त्व अधिक है। भले ही उसे सुविधारहित स्थिति में दिन गुजारने पड़ें।

❑ महत्त्व शक्ति का नहीं उसके स्तर का है। पानी जब नीचे गिरता है तो भी उसमें पतनोन्मुख प्रवृत्ति में शक्ति का परिचय मिलता है। दुष्ट-दुराचारी भी अपने प्रयोजन सामर्थ्य के आधार पर ही पूरे करते हैं। व्यर्थ कार्य करने में भी शक्ति तो लगती ही है भले ही उसे अपव्यय कहा जाए।

❑ सराहनीय सामर्थ्य वह है जो सदुद्देश्य के निमित्त ऊँचे उठने और आगे बढ़ने में लगती है। उससे भी अधिक श्रेयस्कर वह है जो अपना ही नहीं असंख्यों का हितसाधन करने में प्रवृत्त होती है, मूर्छना को जगाने में, दुष्प्रवृत्तियों को हटाने में और पुण्य-परम्परा बनाने में साहसिकता एवं पुरुषार्थ की सार्थकता है।

❑ गर्त में गिरने के लिए पृथ्वी की आकर्षण शक्ति ही पर्याप्त है। कुकृत्य करने में संचित कुसंस्कार ही बहुत कुछ करा लेते हैं। मनस्विता वह है जो उत्कर्ष की योजना बनाने और पतन से जूझने में कटिबद्ध होती है। पतन को उलटकर उत्थान में बदल देना चमत्कार है। ऐसे चमत्कारी प्रतिभावानों को ही महामानव कहते हैं।

❑ अग्रगमन की साहसिकता किन्हीं विरलों में ही होती है। विश्वास के अभाव में लोग अनुकरण मात्र कर पाते हैं, भले ही वह अनुपयुक्त ही क्यों न हो। महामानव विवेक के आधार पर निर्धारण करते हैं और आत्मबल के आधार पर एकाकी बढ़ते हैं। शालीनता के मार्ग पर स्वयं बढ़ना और दूसरों को साथ घसीट ले चलना सच्ची सशक्तता का परिचायक है। ऐसे सशक्त साहसी सामर्थ्यवान कहे और युग तक सराहे जाते हैं।

❑ सबसे अधिक भयानक और बलवान असुर ऐसे मायावी हैं, जो आँखों से दिखाई नहीं पड़ते, मुश्किल से जानने और पकड़ में आते हैं। अत्यन्त गुप्त रूप से यह मन के भीतरी कोने में धँस बैठते हैं और ऐसी जड़ जमाते हैं कि उनको हटाना बड़ा कष्टसाध्य हो जाता है। यह असुर और कोई नहीं 'दुर्भाव' हैं। भीतर ही भीतर यह दुष्ट शरीर और मन को खा डालते हैं और अन्त में बड़ी निर्दयतापूर्वक अलौकिक तथा पारलौकिक नरक की अग्नि में जलते रहने के लिए पटक देते हैं। आप इन शत्रुओं से सावधान रहिए। इन पाजी यमदूतों का अपने घर में आना-जाना रोक दीजिए। यदि वे किसी कोने में छिपे बैठे हों तो बलपूर्वक बाहर निकाल दीजिए। खुदगर्जी, कंजूसी, निष्ठुरता, झल्लाहट, ईर्ष्या, कायरता आदि दुर्भावनाएँ जब भी अपने में दिखाई पड़ें तो तुरन्त ही उनका विनाश करने को ले जाइए। यह अनेक रावण, कंस, पूतना, ताड़का और सूपर्णखाओं का समूह आपको चुनौती दे रहा है। राम, कृष्णो ! उठो अपने हथियार सँभालो और इन असुरों का संहार कर डालो।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ मनुष्यो ! जिओ और जीने योग्य जीवन जिओ, ऐसी जिन्दगी बनाओ जिसे आदर्श और अनुकरणीय कहा जा सके। विश्व में अपने ऐसे पदचिन्ह छोड़ जाओ, जिन्हें देखकर आगामी संतति अपना मार्ग ढूँढ़ सके। आपका जीवन सत्य से, प्रेम से, न्याय से भरा हुआ होना चाहिए। दया, सहानुभूति, आत्मनिष्ठा, संयम, दृढ़ता, उदारता आपके जीवन के अंग होने चाहिए। हमारा जीवन मनुष्यता के महान गौरव के अनुरूप ही होना चाहिए।

❑ भगीरथ जी तप करके गंगा को मृत्युलोक में लाये, पार्वतीजी ने व्रत करके शिव को वर रूप में पाया, ध्रुव ने तप करके अचल राज्य पाया, एक नहीं अनेकानेक प्रमाण इस बात के मौजूद हैं कि तप से ही सम्पदा मिलती है। मनोवांछाएँ पूर्ण करने का एकमात्र साधन तप ही है—परिश्रम एवं प्रयत्न ही है। क्या देव, क्या असुर जिसने भी ऐश्वर्य पाया है, वरदान उपलब्ध किये हैं, तप के द्वारा पाये हैं। अनन्त सम्पदाओं का ढेर अपने चारों ओर बिखरा पड़ा हो तो भी कोई उसे तप बिना नहीं पा सकता। समुद्र के अन्दर अतीतकाल से अनेक रत्न छिपे पड़े थे। उनका अस्तित्व किसी पर प्रकट न था, किन्तु जब देवता और असुरों ने मिलकर समुद्र-मन्थन किया तो उनमें से चौदह अमूल्य रत्न निकले। यदि मन्थन न किया जाता तो चौदह क्या चौथाई रत्न भी किसी को न मिलता। प्रयत्न, परिश्रम और कष्टसहन करने से ही किसी ने कुछ प्राप्त किया है। अकस्मात छप्पर फाड़कर मिल जाने के कुछ अपवाद कहीं-कहीं देखे और सुने जाते हैं, परन्तु यह इतने कम होते हैं कि उन्हें सिद्धान्त रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता। पूर्व जन्मों का संचित पुण्य एकदम कहीं प्रकट होकर कुछ सम्पदा अकस्मात उपस्थित कर दे ऐसा होना असम्भव नहीं है। कभी-कभी ऐसा हो सकता है कि किन्हीं व्यक्तियों को बिना परिश्रम के भी कुछ चीज मिल जाती है, परन्तु इसे भी मुफ्त का माल नहीं कहा जा सकता। पूर्व संचित पुण्य भी परिश्रम और कष्टसहन द्वारा ही प्राप्त हुए थे। भाग्य से अकस्मात प्राप्त होने वाले लाभों में भी अप्रत्यक्ष रूप से परिश्रम ही मुख्य होता है। भाग्य का निर्माण तपस्या से ही होता है।

❑ स्रष्टा का सबसे बड़ा गौरव उसकी सृजन क्षमता में सन्निहित है। यदि उसकी इस विशेषता का प्रकटीकरण न हुआ होता तो यहाँ शून्य आकाश के अतिरिक्त और कहीं कुछ न होता। मानवीय गरिमा इसी आधार पर आँकी जाती है कि उसने सृजन में संलग्न रहकर स्रष्टा की सृष्टि का सौन्दर्य कितना निखारा ? सृजन-क्षमता के कारण ही व्यक्ति महान बनता है। जिसने जिस स्तर का जितना सृजन कार्य किया उसे उसी अनुपात में सराहा और स्मरण रखा जाता है। व्यक्ति की गरिमा एवं क्षमता का मूल्यांकन इसी आधार पर होता है कि उसने उपयोगी निर्माण में अपनी कुशलता एवं श्रमशीलता का प्रमाण-परिचय प्रस्तुत किया।

❑ ध्वंस सरल है, सृजन कठिन। पतन सहज है, उत्थान कष्टसाध्य। उथली बाल-क्रीड़ा कोई भी कर सकता है, पर समुद्र की गहराई में उतरकर मोती बटोरना किन्हीं साहसी गोताखोरों द्वारा बन पड़ता है। वातावरण में अवांछनीयता का समावेश करने में उथले लोग भी बहुत कुछ कर गुजरे हैं। विषैली घुटन उत्पन्न करने में कूड़े-करकट की छोटी ढेरी भी तनिक-सी चिनगारी का सहयोग पाकर सहज समर्थ हो सकती है, किन्तु वातावरण में शान्ति, शीतलता भरने की बात तो अन्तरिक्ष में व्याप्त बादल सोचते और कर-गुजरते हैं। धरती की उर्वरता वर्षा के साथ अविच्छिन्न रूप से जुड़ी हुई है। मानवीय गरिमा को अक्षुण्ण और प्रखर बनाये रखने में युगमनीषा ही पावन की भूमिका निभाती है। सुखद सम्भावनाओं का फला-फूला माहौल बनाने और वातावरण को नयनाभिराम, उल्लासमय बनाने में वसन्त का वातावरण ही सफल होता है।

❑ कभी कार्तिकी अमावस्या को तमिस्रा से छुटकारा दिलाने के लिए गुहार की गयी थी। सूरज, चन्द्रमा ने समर्थ होते हुए अन्धकार से जूझने का संकल्प प्राण हथेली पर रखकर किया था। दीप पर्व उसी आदर्शवादी, बलिदानी, साहसिकता का अनन्तकाल तक जीवन्त रखने वाला और अनुकरण की प्रेरणा देने वाला स्मारक है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सृजन-शिल्पियों को कुछ ऐसा ही सोचना और करना होता है।

- परिवर्तन एक शाश्वत एवं अनिवार्य प्रक्रिया है जो जड़ता-कुरूपता ही उत्पन्न करती है। शैशव, यौवन, वार्धक्य और मृत्यु की शृंखला ही इस जगत को गतिमान, सुन्दर और जीने योग्य बनाये हुए है।

- सामाजिक परम्पराएँ जब ढर्रे में बँधकर पुरानी हो जाती हैं तो उनमें जीर्णता-विकृति आना स्वाभाविक है। विवेकशीलता चाहती है कि इन्हें सुधारा व बदला जाए। इतिहास बताता है कि समय की गति के साथ न चलने वाले पिछड़ जाते हैं और काल देवता उन्हें कुचलते हुए आगे बढ़ जाता है। ऋतु परिवर्तन एक सनातन चक्र है। इस बदलाव के साथ आहार-विहार की रीति-नीति भी बदलनी होती है। युग की आवश्यकता और परिस्थितियों को दृष्टिगत रख हमें विचारना चाहिए कि वर्तमान हमें क्या सोचने और करने के लिए प्रेरित कर रहा है? विचारशीलता की यही माँग है कि आज की समस्याओं को समझा जाए और सामयिक समाधानों से उन्हें सुलझाने का प्रयास किया जाए।

- जो पुराना सो ठीक, जो अभ्यास में है सो सही, जो सब कहते वह करते हैं सो स्वीकार। यह आग्रह बौद्धिक जड़ता का चिन्ह है। जीवित मनुष्य जड़ नहीं होते। उनका जर्रा-जर्रा चेतना से भरा-पूरा होता है। चेतना ही मनुष्य की शोभा है। उचित यही है कि वर्तमान को समझा जाए और मानवीय प्रगति के सुदृढ़ आधार विनिर्मित किये जाएँ।

- देवता दृश्य हैं या अदृश्य? धरती पर रहते हैं या आसमान पर? इस पर्यवेक्षण में अधिक युक्ति-युक्त यही लगता है कि मनुष्यों का ही उत्कृष्ट वर्ग देवता कहा जाता रहा होगा या कहा जाना चाहिए। नर-पशु शब्द का बार-बार उल्लेख होता है। इसी प्रकार नर-नारायण की चर्चा भी अनेक प्रसंगों पर होती रहती है। इन्हें आलंकारिक प्रतिपादन ही कहना चाहिए, नर-पिशाच जैसी भयावह आकृति वाले प्राणी कहाँ मिलते हैं? नर-पशु वर्ग का जीवधारी भी कहीं नहीं देखा गया। शंख, चक्र, गदा, पद्मधारी चतुर्भुज नर-नारायण भी कहाँ किसी के घर में जन्मे हैं? इन्हें भली-बुरी विशिष्टताओं वाले मनुष्य का ही आलंकारिक स्वरूप निर्धारण कहा जा सकता है। भारत-भूमि में तेतीस कोटि देवताओं का निवास होना और इसे **स्वर्गादपि गरीयसी** कहा जाना यही बताता है कि यहाँ के नागरिक कभी उच्चस्तरीय स्वभाव एवं चरित्र वाले रहे होंगे और उनकी अपनी शालीनता से भरी-पूरी गतिविधियों के कारण यहाँ स्वर्गीय वातावरण रहा होगा।

- मानवीय प्रगति की दिशा-धारा यही होनी चाहिए। उसे देवत्व का वरण कराना है और स्वर्गीय परिस्थितियों के सृजन एवं रमण का ताना-बाना बुनना है। यही क्रमिक प्रवाह अपनाना सुखद भी है, स्वाभाविक भी और सरल भी।

- मनुष्य ने प्रगति के प्रयासों की इतनी लम्बी यात्रा स्वयं ही की है। इस मार्ग पर चलते हुए उसे अगणित अवरोधों और व्यतिरेकों का सामना करना पड़ा है। उसी प्रयास-क्रम को आज भी अपनाया है और भविष्य में भी अपनाये रहना है। अपने और अपने साथ जुड़े हुए समस्त विश्व-समाज को सर्वतोमुखी प्रगति की दिशा में चिन्तन, चरित्र और साहस की ईश्वरप्रदत्त सुविधा, उपलब्धियों को अधिक प्रखर-परिष्कृत करने की आवश्यकता है। जो इसके लिए संकल्प एवं पराक्रम सँजो सकेंगे वे अभीष्ट की उपलब्धि में सफल होकर रहेंगे।

- लक्ष्य चाहे भौतिक हो या आध्यात्मिक, पर जीवन की एक दिशा होती जरूर है। सच पूछा जाए तो हमारा सम्पूर्ण जीवन एक प्रकार से लक्ष्य-वेध की ही साधना है। शिकारी की तरह हमें भी अपने लक्ष्य को पाने के लिए सदैव सजग और तत्पर रहना होता है। तीर चलाने के पूर्व जैसे शिकारी साँस रोककर सारा ध्यान अपने शिकार पर जमा देता है, वैसे ही प्रत्येक उद्देश्य की पूर्ति के लिए जो उपक्रम किये जाते हैं, उनमें सफलता के लिए एकाग्रता और संलग्नता बहुत जरूरी है।

- मनोयोग थोड़ा-सा भी अस्थिर हो जाए तो तीर कहीं का कहीं जा गिरे। लक्ष्य पर ठीक तरह से निशाना साधे बिना जिस तरह कोई सफलता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

नहीं मिलती, उसी प्रकार दृढ़ मन्तव्य के बिना मनुष्य का जीवन भी एक क्रीड़ा-कौतुक मात्र बनकर रह जाता है। उससे किसी प्रकार की सफलता की आशा करना निरर्थक ही है।

❑ किसी महान् कार्य को आप पूरा करना चाहते हैं तो उसको एक साथ पूरा कर डालने के लिए मत अकुलाइए, वरन् उस कार्य के एक छोटे भाग को हाथ में लीजिए और उस भाग को पूरी सावधानी, दिलचस्पी, लग्न और दृढ़ता से पूरा करने का प्रयत्न कीजिए। बीच-बीच में यदि कुछ बाधाएँ आवें तो भी उस कार्य को छोड़िए नहीं, वरन् जैसे भी बने वैसे थोड़ा-बहुत समय उस कार्य के लिए नित्य लगाते रहिए। नियमित रूप में निरन्तर कार्य करने से बड़े-बड़े मुश्किल काम आसान हो जाते हैं।

❑ कार्य को आरम्भ करने से पूर्व यह देख लेना चाहिए कि हमारी शक्ति, योग्यता और साधना इस कार्य को पूरा करने में किस हद तक समर्थ है ? यदि इस मार्ग में कठिनाइयाँ आवें तो किस हद तक उनके सामने ठहर सकने की मुझ में सामर्थ्य है। इन सब बातों पर विचार करते हुए कार्य को शुरू करना चाहिए। एक बार जब काम शुरू कर दिया जाए तो उसको किसी अच्छे परिणाम तक ले पहुँचने के लिए जी-जान से कोशिश करनी चाहिए।

❑ हमेशा छोटे कार्यों को हाथ से करना चाहिए, जिससे कि आप आसानी से पूरा कर सकें। सफलता चाहे वह छोटे काम की ही क्यों न हो, मनुष्य को एक नया बल प्रदान करती है, छोटे काम में सफल होने पर वह अपनी योग्यता और प्रतिभा का अनुभव करता है। एक कदम आगे बढ़ा देने पर रास्ता सुगम हो जाता है। जिसका पहिया घूम गया उसकी गाड़ी चलने लगी। जिस आदमी को एक बार अपनी योग्यता पर विश्वास हो गया, वह बड़े-बड़े कठिन कामों में हाथ डालने लगता है और अपने आत्मविश्वास के साथ उसे पूरा कर डालता है।

❑ प्रकृति का नियम है कि संघर्ष से तेजी आती है। रगड़ और घर्षण यद्यपि देखने में कठोर काम प्रतीत होते हैं पर उन्हीं के द्वारा सौन्दर्य का प्रकाश होता है। सोना तपाये जाने पर निखरता है। नानाविधि कष्टदायक संस्कारों पर संस्कृत होने से ही किसी वस्तु को महत्त्व प्राप्त हुआ है। धातु का एक रद्दी-सा टुकड़ा जब अनेक विधि कष्टदायक परिस्थितियों के बीच में होकर गुजर जाता है और तब उसे भगवान की मूर्ति होने का या ऐसा ही अन्य महत्त्वपूर्ण गौरवमय पद प्राप्त होता है।

❑ जीवन वही निखरता है जो कष्ट और कठिनाइयों से टकराता रहता है। विपत्ति, बाधा और कठिनाइयों से जो लड़ सकता है, प्रतिकूल परिस्थितियों से युद्ध करने का जिसमें साहस है, उसे ही, सिर्फ उसे ही जीवन-विकास का सच्चा सुख मिलता है। इस पृथ्वी के पर्दे पर एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं हुआ है, जिसने बिना कठिनाई उठाये, बिना जोखिम ओढ़े कोई बड़ी सफलता प्राप्त कर ली हो।

❑ कष्टमय जीवन के लिए अपने आपको खुशी-खुशी पेश करना—यही तप का मूल तत्त्व है। तपस्वी लोग ही अपनी तपस्या से इन्द्र का सिंहासन जीतने में और भगवान का आसन डुला देने में समर्थ हुए हैं। मनोवांछित परिस्थितियाँ प्राप्त करने का एकमात्र-केवल मात्र ही साधन यह संसार है और वह है—तपस्या। स्मरण रखिए सिर्फ वे ही व्यक्ति इस संसार में महत्त्व प्राप्त करते हैं, जो कठिनाइयों के बीच हँसना जानते हैं, जो तपस्या में आनन्द मानते हैं।

❑ आपत्तियाँ उन पर आती हैं, जो आपत्तियों से डरते हैं। जो विपत्ति से घबराते नहीं, वरन् उसका स्वागत करने को सदैव तैयार रहते हैं वे उनके पास भी नहीं फटकतीं। दूसरे लोग भले ही समझते रहें कि उस पर आपत्ति आई हुई है, पर वह स्वयं उस स्थिति में भी प्रसन्न रहता है। जो सौभाग्य में खुशी से नहीं नाचते, वे दुर्भाग्य के समय रोते भी नहीं। जो सफलता पर उछलता है, वही असफलता पर सिर धुनता है। विचारशील मनुष्य समझता है कि कठिनाइयाँ एक प्रकार का व्यायाम हैं, जिनका निर्माण इसलिए किया गया है कि इनके द्वारा मनुष्य अपनी उन्नति कर सके। जिसने अपने को ऐश-आराम का गुलाम नहीं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बना लिया है, वह विपत्ति को सृष्टि का एक नियम समझेगा और उसे देखकर जरा भी विचलित न होगा। बहादुर वह है, जो विपत्तियों के समूह को देखकर भी नहीं डरता और एक योद्धा की तरह उनका मुकाबला करता है।

- किसी कठिनाई से मत डरो। भय और व्यग्रता को छोड़कर हर परिस्थिति को मुकाबला करने के लिए तैयार रहो। जब कोई संकट आवे तो हँसते हुए उसका सामना करो। स्मरण रखो, संकट के समय मुसकराहट से बढ़कर और कोई सहायक नहीं हो सकता।

- आप दुःखों को देखकर डरिये मत, घबराइये मत, काँपिये मत, उन्हें देखकर चिन्तित या व्याकुल मत होइये, वरन् उन्हें सहन करने के लिए तैयार रहिए। जब दुःख आपके सामने आवें तो छाती खोलकर खड़े हो जाइए और मुस्कराते हुए साहस के साथ कहिए—
"ऐ आने वाले दुःखो ! आओ !! ऐ मेरे बालको, चले आओ ! अपनी भूलों द्वारा मैंने ही तुम्हें उत्पन्न किया है, मैं ही तुम्हें अपनी छाती से लगाऊँगा। दुराचारिणी वेश्या की तरह तुम्हें 'जार पुत्र' समझकर छिपाना या भगाना नहीं चाहता, तुम सती-साध्वी के धर्म के पुत्र की तरह आओ, मेरे आँचल में क्रीड़ा करो। मैं कायर नहीं हूँ जो तुम्हें देखकर रोऊँ, मैं नपुंसक नहीं हूँ जो तुम्हारा भार उठाने से गिड़गिड़ाऊँ, मैं मिथ्याचारी नहीं हूँ जो अपने किए हुए कर्म का फल भोगने से मुँह छिपाता फिरूँ। ऐ कष्टो ! ऐ मेरे अज्ञान के कुरूप मानस पुत्रो !! चले आओ, मेरी कुटी में तुम्हारा स्वागत है। मैं तुम्हें देखकर घबराता नहीं, डरता नहीं, तुमसे बचने के लिए किसी की सहायता नहीं चाहता वरन् एक कर्तव्यनिष्ठ बहादुर मनुष्य की तरह तुम्हें स्वीकार करता हूँ।"

- दुःख एक दयालु डाक्टर की तरह है, जो एक बार फोड़े को चीरकर चिरसंचित मलों की तैयार वेदनाओं को सदा के लिए दूर कर देता है। ऐसा डाक्टर हमारे आदर का पात्र होना चाहिए। आवे तो हमारे घर में उसका भी सुख की भाँति स्वागत होना चाहिए। दुःख और सुख वाला ही विवेकवान कहा जाता है।

- किसके भाग्य में समृद्धि, प्रगति और प्रतिष्ठा बदी है इसे जानने के लिए किसी के ग्रह-नक्षत्र देखने की आवश्यकता नहीं है और न किसी पंडित, ज्योतिष से पूछने की आवश्यकता है। किसी का भी भला-बुरा भविष्य जानने के लिए इतनी जानकारी पर्याप्त है कि कौन अपने को अधिक सुयोग्य, सक्षम एवं सुसंस्कृत बनाने के लिए किस सीमा तक प्रयत्न कर रहा है।

- आज का प्रयास ही कल परिणति बनकर सामने आता है। दूसरा कोई किसी को न ऊँचा उठाता है और न नीचे गिराता है। मनुष्य अपनी विचारणा और क्रियापद्धति के सहारे ही अपने को उत्कृष्ट और निकृष्ट बनाता है। तदनुरूप ही उसके सामने परिस्थितियाँ विनिर्मित होती हैं और सामने आ खड़ी होती हैं।

- दूसरों के दिए हुए अनुदान सुरक्षित रखने तथा उनका सदुपयोग कर सकने की क्षमता अपने भीतर से उत्पन्न होती है, जिन्होंने अपने को शालीनता के ढाँचे में ढाला है, वे समर्थों और सज्जनों से सम्मान तथा सहयोग प्राप्त करते हैं और अपने क्रिया-कलाप के आधार पर ऊँचे उठते रहते हैं।

- अनगढ़ व्यक्तियों की वाणी में कर्कशता, क्रिया-कलाप में अस्तव्यस्तता, चिन्तन में निकृष्टता का प्रवेश होने से उनकी प्रकृति ऐसी बन जाती है, जिससे भविष्य हर दृष्टि से अन्धकारमय ही बनता चला जाता है।

- विश्वास कीजिए कि वर्तमान निम्न स्थिति को बदल देने की सामर्थ्य प्रत्येक मनुष्य में पर्याप्त मात्रा में विद्यमान है। आप जो सोचते हैं, विचारते हैं, जिन बातों को प्राप्त करने की योजनाएँ बनाते हैं; वे आन्तरिक शक्तियों के विकास से अवश्य प्राप्त कर सकते हैं।

- विश्वास कीजिए जो कुछ महत्ता, सफलता, उत्तमता, प्रसिद्धि, समृद्धि अन्य व्यक्तियों ने प्राप्त की है, वह आप भी अपनी आन्तरिक शक्तियों द्वारा प्राप्त कर सकते हैं। आप में वे सभी उत्तमोत्तम तत्त्व वर्तमान हैं, जिनसे उन्नति होती है। न जाने कब, किस समय, किस अवसर, किस परिस्थिति में आपके जीवन का आन्तरिक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

द्वारा खुल जाए और आप सफलता के उच्चतम शिखर पर पहुँच जाएँ।

❑ विश्वास कीजिए आपमें अद्भुत आन्तरिक शक्तियाँ निवास करती हैं। अज्ञानवश आप मन की अज्ञात, विचित्र और रहस्यमय शक्तियों के भंडार को नहीं खोलते। आप जिस मनोबल, आत्मबल या निश्चयबल का करिश्मा देखते हैं, वह कोई जादू नहीं, वरन् आपके द्वारा सम्पन्न होने वाला एक दैवी नियम है। सबमें ये असाधारण एवं चमत्कारिक शक्तियाँ समान रूप से व्याप्त हैं ? संसार के अगणित व्यक्तियों ने जो महान कार्य किये हैं, वे आप भी कर सकते हैं।

❑ पुलिस की सशस्त्र गारद साथ चलती है तो सुरक्षा की निश्चितता हो जाती है और निर्भय, आश्वस्त होकर चला जा सकता है। जिसे ईश्वर पर, उसकी सर्वशक्तिमान सत्ता पर विश्वास है, वह निर्भय होकर चलता है। जिसे ईश्वर पर भरोसा है, उसे हर समय अपने भीतर विद्यमान अनुभव करता है, उसे आत्मविश्वास की कमी क्यों कर होगी ? ईश्वरविश्वास और आत्म-विश्वास एक ही आस्था के दो पहलू मात्र हैं। जो स्वयं पर से, अपनी महानता और सम्भावनाओं पर से आस्था खो बैठा, उसे नास्तिक के अतिरिक्त और क्या कहा जाएगा ?

❑ मनुष्य की छिपी सामर्थ्य और अजस्र गरिमा के प्रकटीकरण का एक ही उपाय है—अनवरत श्रम-निष्ठा, यह शरीर को थकाने वाली प्रक्रिया का नाम नहीं। यह वह साधना है, जिसमें निराकार को साकार में परिणत किया जाता है और साकार को सुविकसित, सुसज्जित बनाया जाता है।

❑ अगति को प्रगति में बदलने की सामर्थ्य केवल श्रम में है। पदार्थ का छोटे से छोटा परमाणु बिना विश्राम किए अनवरत गति से सक्रिय है। पवन को एक क्षण के लिए भी चैन नहीं। सूर्य और सितारे अपने नियत कर्मों में संलग्न हैं।

❑ धरती का चिरन्तन स्वप्न यह है कि उसका पुत्र उसे अधिक शोभायमान बनाने के लिए श्रम करे। संसार की अपेक्षा है कि पुरुषार्थ का पूरा उपयोग हो और सुखद सम्भावनाओं से सारा वातावरण भर दिया जाए। जीवन की माँग है कि उसके प्रत्येक पक्ष को गौरवान्वित बनाने के लिए स्वेदबिन्दु निरन्तर झरते रहें।

❑ पसीने से पवित्र और कुछ नहीं। जिस ललाट पर वह झलकता है, उसे समुन्नत बनाता चला जाता है। जिस भूमि पर गिरता है, उसे नन्दन वन बना देता है। अनगढ़ पत्थरों को देव प्रतिमा के रूप में पूजनीय बनाने का श्रेय, श्रम के देवता को ही दिया जा सकता है। कलाकारिता का सर्वोत्तम रहस्य अनवरत श्रम में सन्निहित है। जो कुछ शुभ है, सुखद है, श्रेयस्कर है, उसे केवल श्रम-साधना से ही पाया जा सकता है। समस्त सिद्धियाँ श्रम देवता के अनुग्रह से ही पाई गई हैं और भविष्य में भी पाई जाती रहेंगी।

❑ प्लेटो ने एक स्थान पर लिखा है कि 'किसी देश का इससे अधिक सौभाग्य क्या हो सकता है कि उसमें श्रेष्ठ आचरण वाले स्त्री-पुरुषों का बाहुल्य हो।' कवि वाल्व व्हाइट मैन का कथन है कि 'किसी देश की महत्ता, उसके ऊँचे भवनों, शिक्षालयों, सम्पत्ति कोषों से नहीं हो सकती। बलवान और चरित्रवान व्यक्ति ही अपने देश को महान बना सकते हैं। वह बड़ा ही भाग्यशाली राष्ट्र है, जिसके निवासी उच्च आचरण को अपना आदर्श मानते हों।' जर्मनी के भाग्य विधाता हिटलर ने एक स्थान पर लिखा है—"हमारे देश को निर्बल स्वास्थ्य वाले धुरन्धर विद्वानों की अपेक्षा ऐसे व्यक्तियों की अत्यधिक आवश्यकता है, जो भले ही कम पढ़े-लिखे हों, परन्तु वे स्वस्थ हों, सदाचारी हों, आत्म-विश्वासी हों और दृढ़ इच्छाशक्ति वाले हों।"

❑ देश की सबसे बड़ी आवश्यकता यह है कि हम उच्च आचरण वाले, निर्भीक, साहसी, सदाचारी और स्वस्थ मनुष्यों की संख्या बढ़ावें। सुख, स्वराज्य, सुशासन तब तक किसी देश में स्थिर नहीं रह सकता, जब तक कि वहाँ के निवासी मानवोचित गुणों वाले न हों, वे मानवता का उत्तरदायित्व अनुभव न करते हों निर्बलता, कायरता, भीरुता, छल, पाखंड और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रवञ्चना का जब तक जोर रहेगा, तब तक दासता और दुर्भाग्य हमारा पल्ला नहीं छोड़ सकते। महात्मा गाँधी का कथन है कि "शारीरिक और मानसिक स्वस्थता की आवश्यकता जो लोग अनुभव करते हों और जो अपने को सब दृष्टियों से बलवान बनाने के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहें, ऐसे ही देश-सेवकों की भारतमाता को आवश्यकता है।"

❑ मनुष्य उतना ही तुच्छ नहीं है जितना कि वह अपने को समझता है। वह स्रष्टा की सर्वोपरि कलाकृति है। न केवल वह प्राणियों का मुकुटमणि है, वरन् उसकी उपलब्धियाँ भी असाधारण हैं। प्रकृति की पदार्थ सम्पदा उसके चरणों पर लोटती है। प्राणी समुदाय उसका वशवर्ती और अनुचर है। उसकी न केवल संरचना अदभुत है, वरन् इन्द्रिय समुच्चय की प्रत्येक इकाई अजस्र आनन्द-उल्लास हर जगह उँड़ेलते रहने की विशेषताओं से सम्पन्न है। ऐसा अद्‌भुत शरीर इस सृष्टि में कहीं भी, किसी भी जीवधारी के हिस्से नहीं आया।

मनःसंस्थान उससे भी विलक्षण है। जहाँ अन्य प्राणिमात्र अपने निर्वाह तक की सोच पाते हैं, वहाँ मानवीय मस्तिष्क भूत, भविष्य का तारतम्य मिलाते हुए वर्तमान का श्रेष्ठतम सदुपयोग कर सकने में समर्थ है। ज्ञान और विज्ञान के दो पंख उसे ऐसे मिले हैं, जिनके सहारे वह लोक-लोकान्तरों को परिभ्रमण करने, दिव्यलोक पहुँचने का अधिकार जमाने में समर्थ है।

इतना सब होते हुए भी स्वयं को तुच्छ मान बैठना एक विडम्बना ही है। यह दुर्भाग्य जिस कारण उस पर लदता है, वह है आत्म-विश्वास की कमी। अपने ऊपर भरोसा न कर पाने के कारण वह समस्याओं को सुलझाने, कठिनाइयों से उबरने और सुखद सम्भावनाओं को हस्तगत करने में दूसरों का सहारा ताकता है। दूसरे कहाँ इतने फालतू होंगे कि हमारी सहायता के लिए दौड़ पड़ें। बात तभी बनती है, जब मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा होता है, अपनी क्षमताओं पर भरोसा करके, अपने साधनों व सूझ-बूझ के सहारे आगे बढ़ने का प्रयत्न करता है। यह भली-भाँति समझा जाना चाहिए कि आत्म-विश्वास संसार का सबसे बड़ा बल है, शक्तिशाली चुम्बक है, जिसके आकर्षण से अनुकूलताएँ स्वयं खिंचती चली आती हैं।

❑❑

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

साहसिकता

- दूसरों पर भरोसा लादे मत बैठे रहो। अपनी ही हिम्मत पर खड़ा रह सकना और आगे बढ़ सकना सम्भव हो सकता है। सलाह सबकी सुनो, पर करो वह जिसके लिए तुम्हारा साहस और विवेक समर्थन करे।

- विश्व-संग्राम में विजय की प्राप्ति के लिए शक्ति, सामर्थ्य एवं दृढ़ता आवश्यक है। दुर्बल, शक्तिहीन, निस्तेज व्यक्ति न तो शासन कर सकता है, न नेतृत्व, न प्रगति।

—स्वामी विवेकानन्द

- पराजय से सत्याग्रह और अहिंसा को निराशा नहीं होती, उससे तो कार्य-क्षमता और लगन बढ़ती है। सत्य से मनुष्य की बुद्धि परिष्कृत होकर उसका मार्ग-दर्शन करती है। *—महात्मा गाँधी*

- तुम मन में निराशा के भाव न लाओ, सावधान होकर रहो, कहीं ऐसा न हो कि आया हुआ सुयोग व्यर्थ हो जाए, सत्कार्य कभी व्यर्थ नहीं जाते। *—मैथिलीशरण गुप्त*

- प्रेम के जाग्रत होने का अर्थ यह नहीं है कि हम मधुरता और सुख में ही विचरण करें, किन्तु इस जाग्रति से हममें उन वीरोचित प्रयत्नों का जागरण हो, जहाँ मृत्यु से जीवन को अमरता प्राप्त होती है और कष्ट-सहन के द्वारा वास्तविक आनन्द मिलता है।

- जहाँ शक्ति का भण्डार न्यून पड़ जाता है, वहाँ सस्ती साधुता अकस्मात आ जाती है। इसके विपरीत जिस मनुष्य में शक्ति का अपूर्व भण्डार है, उसे ललकार स्वीकार करने में प्रसन्नता होती है, वह शक्तियुक्त जीवन व्यतीत करता है।

—रवीन्द्रनाथ टैगोर

- जीर्ण-शीर्ण मान्यताओं में परिवर्तन और नये आदर्शों की स्थापना के लिए जिसमें साहस नहीं होता, वे जातियाँ कभी समर्थ नहीं बन पातीं। प्रगति के लिए परम्पराएँ नहीं परिवर्तन की जिन्दादिली चाहिए। *—स्वामी विवेकानन्द*

- सूर्य के विदा होने पर यदि तुम आँसू बहाओगे तो डबडबाई आँखों से सितारे भी नहीं देख पाओगे। *—रवीन्द्रनाथ टैगोर*

- प्रचुर उन्नति के लिए प्रथम आवश्यक वस्तु विश्वास है। किसी काम में प्रारम्भ ही से शंका करना, अनिवार्य सफलता को आह्वान करना है। सन्देह सारी प्रेरणा का हनन कर देता है और जिस प्रयत्न में प्रेरणा नहीं होती, वह व्यर्थ जाता है। *—डॉ. पट्टाभिसीतारमैया*

- **उठो तो इस तरह जैसे समुन्नत भाल पर्वत का।**
  चलो तो इस तूफान में ज्यों वेग मारुत का।।
  जियो ऐसे कि जीवन बाँटते जाओ सभी को तुम।
  तुम्हारा श्रम तथा पौरुष बदल दे लेख किस्मत का।।

—माया वर्मा

- यदि तेरा मृत्यु-समय उपस्थित नहीं हुआ है तो शेर या चीते के मुँह में पहुँचकर भी तू जिन्दा रह सकता है।

- सत्य को स्वीकार करने वाला व्यक्ति किसी की भी न्याय विरुद्ध और अत्याचारी आज्ञा नहीं मान सकता। ऐसा सत्याग्रह केवल सरकार ही के साथ नहीं वरन् स्वजाति और देश-बान्धवों के साथ भी किया जा सकता है और करना चाहिए। सरकार की ही तरह समाज भी अनेक अवसरों पर उलटे और अनुचित मार्गों का अनुसरण कर बैठता है। उस समय उसके अन्याय का विरोध करना आवश्यक है। नियम भंग का कर्त्तव्य (Duty of civil disobedience) पुस्तक के लेखक थोरो ने इसी तरह स्वजाति के ही विरुद्ध सत्याग्रह किया था। वह अपनी जाति वालों के गुलाम का व्यापार करने को अन्याय कार्य समझता था। इसलिए उनके उस काम का विरोध करना उसने अपना कर्त्तव्य समझा। मार्टिन लूथर अकेले ही सम्पूर्ण जाति के विरुद्ध खड़े होने में विचलित न हुए। यह उनके सत्याग्रह का ही फल है कि जर्मनी आज स्वतन्त्रता का उपभोग कर रहा है। गैलीलियो ने स्वजाति का विरोध किया था। उसके बन्धु जिस समय उसे मारने के लिए तैयार हुए उस समय भी उसने निर्भय होकर उनको जवाब दिया। उसने कहा मुझे मारो या छोड़ो, पर पृथ्वी घूमती है और जरूर घूमती है। आज हम उसके वचनों का वेदवाक्य के समान आदर करते हैं। कोलम्बस को अपनी साथी खलासियों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org

www.vicharkrantibooks.org

के साथ सत्याग्रह करना पड़ा था। बेहद घबराये हुए खलासियों ने उससे कहा था कि तुम हमारी बात मानकर जहाज को घर की ओर लौटा लो, नहीं तो हम तुम्हें गोली से खत्म कर देते हैं, क्योंकि आज अमेरिका मिलने की कोई आशा नहीं है। धीर कोलम्बस ने उत्तर दिया—कुछ परवाह नहीं, मैं निर्भय हूँ। अभी कुछ दिनों और प्रयास करना होगा। अन्त में अमेरिका मिला और कोलम्बस अमर हुआ।

—महात्मा गाँधी

- संसार के हर नये रास्ते—साहसी, शूरवीरों ने बनाये, कायर तो पुरानी लीकों पर चल लेते हैं यही क्या कम है ?

—कीशूट

- यदि दुःख के बाद सुख न आता तो उसे कौन सहता ?

—डॉ. जॉनसन

- जो सदा दूर क्षितिज पर आँखें गड़ाये रहते हैं और जमीन को देखकर कदम बढ़ाते हैं, उन्हीं को सही राह मिलती है। जीवन उसके सम्मुख अपनी मुसकान खोलता है, जो उसे जीत ले। हार मान लेने पर जो मिले उसे अंगीकार मत करो। जब तक पर्वत की चोटी छू न लो, तब तक उसकी ऊँचाई मत नापो। बाद में तुम देखोगे कि वह उससे कहीं नीची थी, जितनी कि दूर खड़े लोग समझते थे।

—डैग हैमर शोल्ड

- उनकी प्रशंसा की जाती है, जिनमें अपने विश्वासों पर अटल रहने का साहस रहा हो, पर कट्टरपंथी तथा धर्मान्ध लोग भी तो ऐसे ही आग्रही होते हैं। असल में इससे भी बड़ा प्रशंसनीय साहस है—अपने विश्वासों की निष्पक्ष आलोचना कर सकना और उनमें से जो गलत प्रतीत हों, उन्हें छोड़ने के लिए तैयार हो जाना।

—सिडनी हैरिस

- जो प्रगति का रास्ता सच्चे मन से ढूँढ़ता है, उसे उपयुक्त अवसर मिलकर ही रहता है।

—सैम्युअल स्माइल्स

- उचित को जानना और जानते हुए भी उचित पर अमल न करना यह दर्शाता है कि ऐसे मनुष्यों में साहस का अभाव है। *—कन्फ्यूशियस*

- भविष्य का भरोसा मत करो, वह चाहे जैसा सुखद प्रतीत हो, मृत काल को अपने मुर्दे गाढ़ने दो। जीवित वर्तमान में कार्य करो, दिल में साहस और ईश्वर पर भरोसा रखो।

—लॉंगफेलो

- मनुष्य तब तक बूढ़ा नहीं होता, जब तक उसके जीवन में मधुरता और उत्साह बना रहता है, जब तक उसके हृदय में महत्त्वाकांक्षा बनी रहती है, तब तक उसके मन में कार्यशक्ति का प्रवाह बहता रहता है।

—स्वेट मार्डन

- सदैव दिन ही दिन नहीं रह सकता, उसी प्रकार अन्धेरे का अस्तित्व भी सनातन नहीं, उसे मिटाना ही है, अन्धकार को चीरकर प्रकाश को तो खिलना ही है चाहे वह आज खिले या कल।

—स्पिनोजा

- भविष्य जानने की इच्छा हो तो अपना भूत देखो और उसके अनुभवों को उपयोग में लाओ। तुम जैसा चाहोगे भविष्य वैसा ही बन जाएगा।

—वर्जिल

- **अल्पल्जीना आमनू व अमिलुस्सुलेहावे तूबा व हुस्नो माब।**

—सूरये राद ३। १३। ४। ५

जिन्होंने विश्वास किया और सुकर्म सम्पादन किया, उनकी प्रशंसा है और उनका स्थान ऊँचा है।

- किसी बात की चिन्ता करो तो उससे और अधिक चिन्ता होगी, चिन्ता और अधिक चिन्ता की जननी है। आशा और आत्म-विश्वास ही वे वस्तुएँ हैं, जो हमारी शक्तियों को जाग्रत करती हैं।

—स्वेट मार्डन

- मानव अपनी ठीक-ठीक शक्ति को तब तक नहीं प्राप्त कर सकता, जब तक कि वह इस बात को मन, वचन और काया से न समझ ले कि विश्व के महान तत्त्व का मैं एक अंश हूँ।

- जीवन में सदा ऐसे महान साहसिक कार्य होने चाहिए, जिसके हर कदम पर खतरा हो। उत्तम जीवन व्यतीत करने के लिए स्पष्ट दृष्टि, बहुमुखी सहानुभूति, सुन्दर साहस और अनन्त सन्तोष की आवश्यकता सदा बनी रहती है।

—हेवलाक एलिस

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

- अत्याचारी के प्रति विद्रोह करना ईश्वरीय आदेश का पालन करना है। —फ्रैंकलिन
- बल तो निर्भयता में है, शरीर में मांस बढ़ जाने में नहीं। —महात्मा गाँधी
- अग्नि सोने को परखती है, आपत्ति वीर पुरुष को। —सेनेका
- विपत्ति से बढ़कर अनुभव सिखाने वाला कोई विद्यालय आज तक नहीं खुला। —प्रेमचन्द
- यदि तेरा कोई साथ न दे तो भी अपने अभीष्ट लक्ष्य की ओर अकेला बढ़ चल। जीवन का संग्राम अकेले-निहत्थे, निःशस्त्र और अँधेरे में भी लड़ा जा सकता है। अपनी पसलियाँ जलाकर जिसे प्रकाश उत्पन्न करना आता है, वह न कभी झुकता है और न कभी रुकता है। —रवीन्द्रनाथ टैगोर
- अपनी शरीर को अन्तरीप समझो, जिसमें समुद्र की लहरें दिन-रात टकराया करती हैं, लेकिन तब भी वह अपने स्थान को नहीं छोड़ता। इसी प्रकार जितनी आपत्तियाँ तुम पर आवें, सभी को वीरता के साथ सहन करो और उनसे विचलित न हो। —मारकस अनटोनियस
- जीवन-संघर्ष में विजय पा लेना कोई सरल कार्य नहीं है। उसके लिए अत्यन्त कठोर साधना की आवश्यकता है। —सर ऑर्थर हेल्प्स
- हमारे लिए सबसे अधिक गौरव की बात इसमें नहीं है कि कभी गिरें नहीं, बल्कि इसमें है कि जितनी बार हम गिरें उतनी बार उठ खड़े हों। —गोल्डस्मिथ
- खतरे का इन्तजार करने से बेहतर यह है कि हम बढ़कर उसका सामना करें। —कौलटन
- अचेत आदमी के लिए संसार भोग-विलास का स्थल है, परन्तु विचारवान के लिए युद्ध क्षेत्र है। जहाँ जीवनपर्यन्त मन और इन्द्रियों से संग्राम करना पड़ता है। —सहजो बाई
- जिसमें प्रगति की इच्छा नहीं वह मुर्दा है, जिसमें इच्छा है पर साहस नहीं, वह मुर्दे का भी मुर्दा है। —अब्राहम लिंकन
- मनुष्य कठिनाइयों से लड़ने के लिए बनाया गया है, जिस दिन उसने विपत्ति से लड़ना छोड़ दिया, उस दिन वह मानवीय गरिमा से गिर गया समझा जाना चाहिए। —डिजरायली
- जिन लोगों ने धर्म पर विश्वास किया और जिन्होंने शुभ कर्म किये, ऐसे ही मनुष्य बहिश्ती हैं। वे सदा बहिश्त में वास करेंगे।
- हँसी की बात नहीं है, यह जीवन का सत्य है। मनुष्य मूर्ख है यदि वह अपना नुकसान देखकर रोता है। नुकसान होने पर ही आत्मा को विचार करने और ईश्वर को पूछने का समय मिलता है और सत्य का दर्शन भी प्रभु तभी कराता है। —टालस्टाय
- जब तुम बेहद दुःखी हो, तब विश्वास रखो कि दुनिया में तुम्हारे करने के लिए कुछ है। जब तक तुम दूसरे के दर्द में तनिक-सी भी मिठास घोल सकते हो, तब तक जीवन व्यर्थ नहीं है। —हेलन केलर
- ईश्वर अपने बच्चों के नेत्र को कभी-कभी आँसुओं से धोता है, ताकि वे उसकी प्रकृति और आदेशों को सही-सही पढ़ सकें। —काइलर
- जिसने विपत्ति को नहीं जाना, उसने न तो कभी अपने को पहचाना और न स्वयं अपने सद्गुणों को समझा। —मैलेट
- पूर्णता प्राप्त करने के लिए हमें या तो मित्रों की आलोचना से अथवा शत्रुओं के कटुवाक्यों से, अपनी त्रुटियों का ज्ञान हो जाना चाहिए। —डायोजेनिस
- सुख उन्हें नहीं मिलता जो कष्ट से डरते हैं।
- पराजय एक उपयोगी शिक्षा है—जिसके सहारे मनुष्य विजय के रहस्यों को समझ सकने योग्य बनता है। —वेंडेल फिलिप
- श्रद्धा से ही सत्य (ईश्वर) प्राप्त होता है।
- मुझे रास्ता मालूम है। वह तंग, किन्तु सीधा है। वह खाँडे की धार जैसा है, उस पर चलने में मुझे आनन्द आता है। जब फिसल जाता हूँ तो जी भरकर रोता हूँ। भगवान का वचन है—कल्याण पथिक की दुर्गति नहीं होती। इस आश्वासन पर मुझे अटूट श्रद्धा है। इस श्रद्धा को गँवाऊँगा नहीं। जिस दिन काया पूर्णतः वश में आ जाएगी, उस दिन उस दिव्यज्योति के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दर्शन अवश्य पाऊँगा, इस पर मेरा अविचल विश्वास है। —महात्मा गाँधी

- यह विश्वास हमें बल देता है कि जीवन चाहे कितना ही कठिन हो, उसे हम अकेले ही जी रहे हैं और हमारे ऊपर-नीचे और अगल-बगल में शाश्वत आत्मा के स्रोत हैं।
- बहुधा जब हृदय शोक से विदीर्ण होता है, तब आत्मिक दृष्टि से हम जैसे जंगल में राह भटके यात्री की तरह भटकते रहते हैं और राह पाने के प्रयत्न में पेड़ों और पत्थरों से टकराते-फिरते हैं। मगर रास्ता मिलता है—आस्था से, जो हमें कठिनाइयों के जाल से निकालकर उस खुली सड़क पर पहुँचा सकता है, जिसकी हमें तलाश है। —हेलन केलर
- श्रद्धा का अर्थ आत्म-विश्वास है और आत्म-विश्वास का अर्थ है ईश्वर-विश्वास। जो तमाम विपत्तियों से घिर जाने पर भी विचलित नहीं होता, वह सच्चा श्रद्धावान है। —महात्मा गाँधी
- जब देखो कि शैतान तुम्हारे पीछे बड़ी लगन से पड़ा हुआ है, तुम्हें पाप करने के लिए लुभा रहा है, तो समझो कि अपनी समझ के अनुसार वह अपने कर्त्तव्य का पालन कर रहा है और उससे यह सीख लो कि किस प्रकार निष्ठापूर्वक अपना कर्त्तव्य निभाया जाता है अर्थात् जमकर उससे लड़ो और उसे पराजित करो।
- योद्धा वह नहीं जो औरों को मारता है। सच्चा योद्धा तो वह है, जो अपनी बुराइयों को मार डालता है। —कार्लाइल
- मनुष्य उसी काम को ठीक तरह कर सकता है, उसी में सफलता प्राप्त कर सकता है, जिसकी सफलता में उसका सच्चा विश्वास है। —स्वेट मार्डन
- श्रद्धा से अग्नि समिद्ध की जाती है। श्रद्धा से अग्नि में हविष्य का हवन किया जाता है। सम्पूर्ण लौकिक, पारलौकिक, आलौकिक सम्पत्तियों में श्रेष्ठ श्रद्धा ही है। यह तथ्य हम सर्वसाधारण के लिए घोषित करते हैं।
- जिस तरह लोहे को कई बार गरम करने पर मुलायम हो जाता है, तो उसको चाहे जिधर मोड़ने से हथियार बना लेते हैं, उसी प्रकार मनुष्य भी आपत्तियों की आग से तपने पर तथा दुनिया की मार खाने से स्वच्छ हृदय का बनता है और भगवत्भक्त हो जाता है।
- किसी के धन का लोभ न करना। जिस घड़ी से तुम इस उपदेश को आचरण में लाते हो, उसी घड़ी से तुम जगत के ज्ञानवान नागरिक बन जाते हो और प्राणिमात्र के साथ मैत्री कर लेते हो। जो मनुष्य ईश्वर और उसके अद्वितीय अविचल सम्राट-पद को नहीं मानता, उसकी आकांक्षा कभी तृप्त हो ही नहीं सकती।
- ईश्वर में श्रद्धा रखने से भय आप ही दूर हट जाता है। श्रद्धा और भय दोनों परस्पर विरुद्ध हैं। वे एक ही स्थान पर नहीं रह सकते।
- सर्वव्यापक परमेश्वर की समीपता का हम जितना अनुभव करते हैं, उतने ही हमें जीवन, प्राण और सामर्थ्य के स्रोत मिलते हैं। समीपता का एकमात्र मार्ग श्रद्धा है।
- दुःखों को साहसपूर्वक सहन करो, इससे तुम्हारी आत्मा किले की भाँति अजेय हो जाएगी और फलस्वरूप भविष्य में आने वाली कोई कठिनाई तुम्हें विचलित न कर सकेगी।
- भगवान कठिनाइयों का भला करें, जिनके कारण समझदारी बढ़ती है और अपने-पराये की परख होती है।
- तकलीफों से बढ़कर भागना न बहादुरी है, न बुद्धिमानी। वह तो कायरता है, तकलीफों में पड़े-पड़े सड़ना तो और भी बुरी बात है। वे जिन्दगी की दौड़ के मैदान में खड़ी हुई भूल-भुलैया हैं। उन्हें तो दूर कर, लाँघकर, रास्ता निकालकर पार करने में ही हमारा भला है।
- प्रत्येक आपत्ति अभिशाप नहीं होती, जीवन की आरम्भिक आपत्तियाँ अनेक बार आशीर्वाद सिद्ध होती हैं, जाती हुई कठिनाइयाँ हमें शिक्षा भी देती हैं और हमारे प्रयत्नों से हमें साहसी बनाती हैं।
- दुःखों को वस्तुतः ऐसा न मानें जैसा वे तत्काल कष्टप्रद दिखते हैं, वे कठोर अध्यापक मात्र हैं, जो गाँठ बाँध लेने जैसी शिक्षाएँ देने आते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

- कठिनाइयाँ जब आती हैं तो कष्ट देती हैं, पर जाती हैं तो आत्मबल का ऐसा उत्तम पुरुषार्थ दे जाती हैं, जो कष्टों की तुलना में हजारों गुना मूल्यवान होता है।
- दुःख का सबसे बड़ा और असली लाभ यह है कि मनुष्य को शुद्ध एवं पवित्र बना देता है और बहुमूल्य अनुभव प्रदान करता है।
- आपत्तिकाल एक परीक्षा की कसौटी है, जिस पर कसे जाने के बाद ही यह जाना जा सकता है कि वह ईमानदार है या नहीं।
- **प्राप्यापदं न व्यथते कदाचित् उद्योगमन्विच्छति चावधानतः।**
  दुःखं च काले सहते महात्मा धुरन्धरं तस्य विषुद्विनश्यते।।
  विपत्ति आने पर कभी दुःखी न हो, बल्कि सावधान होकर उसके टालने का उद्योग करो। जो महात्मा समय पर दुःख सह लेता है, वह संसार के भार को सहन कर सकता है और उसकी विपत्ति भी नष्ट हो सकती है।
- इच्छाशक्ति और परिश्रम पर ही मनुष्य की सफलता निर्भर है, जो कठिनाइयों का दृढ़ता से सामना करने वाली है। यह देखकर आश्चर्य होता है कि इसके द्वारा किस प्रकार असम्भव बातें भी सम्भव हो जाती हैं।
- यदि मनुष्य जीवन को उच्चविजयी बनाना चाहता है तो अपने ऊपर आने वाली आपदाओं, कठिनाइयों और अपमानों से जरा भी नहीं डरना चाहिए, न निराश ही होना चाहिए।
- पतझड़ हुए बिना पेड़ों पर फल नहीं लगते। कठिनाई सहे बिना मनुष्य ऊँचे नहीं उठते।
- कठिनाई और विरोध यह दो आधार ऐसे हैं जो तुम्हारे पराक्रम को निखारते हैं।
- न रगड़ के बिना रत्न चमकते हैं और न कठिनाइयों का सामना किए बिना मनुष्य महान बनता है।
- मनुष्य घोर आपत्तियों से नहीं मरता, वे तो उसके जीवन का निर्माण करती हैं।
- पराजय उच्चकोटि की पाठशाला है, जिसने बार-बार ठोकर खाई हैं, जिसने बार-बार पराजय को अपनाया है, वही जीवन का सच्चा मूल्य समझ सकता है और सच्ची विजय प्राप्त कर सकता है।
- कठिनाइयाँ सच्ची सहायक हैं, क्योंकि वे उस साँचे में हमें ढालती हैं, जिसमें से निकला हुआ मनुष्य फौलाद की तरह सुदृढ़ और पुष्प की तरह सुन्दर बन जाता है।
- दुःख मनुष्यत्व के विकास का साधन है। सच्चे मनुष्य का जीवन दुःख में ही खिल उठता है। सोने का रंग तपाने पर ही निखरता है।
- शक्ति का जन्म सुख में नहीं होता, वह तो चिरकाल के कष्ट-सहन के सन्नाटे की गहराई में पैदा होती है।
- बच्चा कितने ही बार गिरता और फिर उठता है, तब धीरे-धीरे खड़ा होना सीखता है। वैसे ही साधना में गिरना-उठना होता है, उसे घबड़ाना नहीं चाहिए, समय आने पर साधना ठीक हो जाती है।
- विषम क्षणों में स्वभाव को सुन्दर बनाये रखना साहस है।
- विजय की सम्भावना निश्चित होने पर तो कायर भी लड़ सकते हैं। वीर वे हैं जो पराजय की आशंका रहने पर भी दृढ़तापूर्वक लड़ते हैं।
- अगर गिर पड़ो तो हताश मत होओ। गिरना बुरा नहीं है, क्योंकि गिरकर भी उठा जा सकता है। जो चढ़ता है, वही गिरता भी है। घबराओ मत। चलो, गिरो, उठो, फिर आगे बढ़ो।
- दुःख आँधियों की तरह आते हैं। यदि तुम अपने को चट्टान की तरह दृढ़ बनाये रहो तो वे चले जाएँगे और तुम्हारा कुछ न बिगड़ेगा।
- साहस को ठीक ही मानवीय सद्गुणों में सर्वप्रथम स्थान दिया गया है, क्योंकि कहा गया है कि यह एक ऐसा गुण है, जिसके प्राप्त होने पर अन्य सब गुणों का होना निश्चित हो जाता है।
- जीवन में सदा महान साहसिक कार्य होना चाहिए, जिसके कदम-कदम पर खतरा हो।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

- उत्तम जीवन व्यतीत करने के लिए स्पष्ट दृष्टि, बहुमुखी सहानुभूति, सुन्दर साहस और अनन्त सन्तोष की आवश्यकता सदा बनी रहती है।
- भाग्य के भरोसे बैठे रहने पर भाग्य बैठा रहता है और साहसपूर्वक खड़े होने पर भी भाग्य भी उठ खड़ा होता है।
- हम अपना ऐश्वर्य स्वयं बनाते हैं और उसे भाग्य कहते हैं।
- भाग्य पर भरोसा वह करता है, जिसमें पौरुष नहीं होता।
- विपत्तियों को देखकर घबड़ाओ मत। इनका परिणाम अच्छा है। विपत्ति सहने से मनुष्य में ऐसी शक्ति आ जाती है कि उसके सहारे वह सांसारिक कठिनाइयों का सामना कर सकता है।
- सारे विश्व में एक ही तत्त्व काम कर रहा है, एक ही जीवन, एक ही सत्य वर्तमान है। हम सब बस दैवी प्रवाह की ओर जा रहे हैं, जो ईश्वर तक जाता है। इस तरह की मनोभावना रखने से हमें एक अलौकिक प्रोत्साहन प्राप्त होता है। हमारे मन का भय नष्ट हो जाता है।
- जिस पर विश्वास किया जाता है, वे पदार्थ अथवा व्यक्ति उतने समर्थ नहीं होते जितना कि स्वयं अपना विश्वास फलदायक होता है।
- विधाता ने चन्दन का वृक्ष फल-फूल रहित बनाया, तो भी दूसरों के सन्ताप मिटाता रहता है।
- हनुमान जब तक अपने को सुग्रीव का सेवक मात्र समझते रहे, तब दीन-दयनीय स्थिति में थे। जब जामवन्त ने उनके बल और स्वरूप का बोध कराया तो समुद्र छलाँगने, लंका जलाने और पर्वत उठाने में समर्थ हो गये।
- हमारा कर्त्तव्य है कि हम जिसे सही समझते हैं, निर्भय होकर करते रहें, जिसे गलत समझते हैं, उसके आगे किसी भी कीमत पर न झुकें।
- साहस का मार्ग जोखिम भरा तो है, पर गरिमा उसी पर टिकी हुई है। जिन्हें जोखिम से भय लगता है, वे कीचड़ की कृमियों की तरह गई-गुजरी परिस्थितियों में ही गुजर करते हैं।
- कल मैंने क्या कहा था इस बात का संकोच किये बिना आज हमें वही कहना चाहिए जिस पर इस समय अपना विश्वास है।
- जो चीजें सरलता से मिल जाती हैं, वे महान नहीं होतीं। महान चीजों को प्राप्त करने के लिए तो दुर्गम मार्ग से चलना होता है।
- समुद्र में एक बार गोता लगाने से मोती न मिलें तो दूसरी बार गोता लगाओ, मोती अवश्य ही मिलेगा। एक बार गोता लगाने से मोती न मिलने पर यह न समझना चाहिए कि समुद्र में मोती हैं ही नहीं।
- ईश्वर और स्वयं अपने प्रयत्न के अतिरिक्त किसी में विश्वास मत करो। दोनों को कभी पृथक भी मत करो।
- डरपोक की आधी शक्ति नष्ट हो जाती है और आधी बुद्धि भी। बहादुर रहो और साथियों को भी बहादुरी की शिक्षा दो, डरपोक—अनाचारी का हौसला बढ़ाता है, इसलिए वह एक प्रकार का अनाचारी है।
- दृढ़प्रतिज्ञ और सत्यप्रकृति पर ही संसार-चक्र चलता है।
- यदि आप बड़े पदार्थों की आशा करते हैं और अपने मनोभावों को विशाल बनाये हुए हैं तो आपको बड़ी ही ऊँचे दर्जे की सफलता प्राप्त होगी।
- मैंने कोई ऐसा आदमी नहीं देखा जिसने अपने आपको तुच्छ, हीन और बेकार समझते हुए कोई महान कार्य किया हो। जितनी योग्यता का हम अपने आपको समझेंगे उतना ही महत्त्वपूर्ण कार्य कर सकेंगे।
- चरित्र की दृढ़ता दो बातों से प्रकट होती है—इच्छाशक्ति और संयम। इसलिए इसमें दो बातों की आवश्यकता है, दृढ़ विचार और उस पर पूर्ण अधिकार।
- पहले सूर्य उदय होता है, तब मध्यान्ह होता है, इसी प्रकार पहले विश्वास और पीछे ज्ञान होता है। अविश्वासी मनुष्य बलवान और साहसी नहीं हो सकता।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

- हमेशा आगे बढ़ते रहने से और विश्वास करने से कठिनाई दूर हो जाती है और दिखाई देने वाली असम्भवता नष्ट हो जाती है।
- अपनी सहानुभूति और प्रेम का दान देकर आत्मा को दुर्बल और परावलम्बी मत बनाओ। कठोर, और बेरहम आजादी में मुझे अकेला छोड़ दो। जीवन में भयंकरता, निराशा के तूफानों को सहर्ष झेलते हुए वीरतापूर्वक अपने उद्देश्य की प्राप्ति ही मुझे अधिक पसन्द है।
- शिष्यों ने ईसा की नीति पूछी, उसने कहा—सच कहने में डरना नहीं, मौत से अकारण उलझना नहीं और मरने का दिन आ खड़ा हो तो डरना नहीं, हमें विवेक और वीरता का समन्वय करना चाहिए।
- अच्छे दिन, बुरे दिन, यों ही सभी दिन व्यतीत हो जाते हैं।
- यह जन-श्रुति कि विफलता ही सफलता के निमित्त राजमार्ग है, अत्यन्त प्राचीन एवं नितान्त सत्य है।
- असफलता के पश्चात् हमें उसी तरह उठकर कार्य करना चाहिए, जैसे पहले करते थे, सफलता की कुंजी यही है।
- कर्मवीर उदास नहीं देखे जाते। खीजते वे रहते हैं, जो आलस्य में समय गँवाते और जिम्मेदारियों से जी चुराते हैं। हो सकता है कि परिश्रम करो, कठिनाइयाँ झेलनी पड़ें, पर चैन तो निठल्लेपन में भी नहीं मिलता।
- आपत्तियों पर जितना ध्यान दिया जाएगा, उतनी ही बढ़ती हैं। इन पर ध्यान न देने से वे भी दूर हो जाती हैं।
- **तावद्भयेन भेतव्यं यावद्भयमनागतम्।**
  आगतं तु भयं दृष्ट्वा प्रहर्तव्यमशंकया।।
  जब तक भय नहीं आवे, तभी तक उससे डरना चाहिए, भय उपस्थित होने पर तो निःशंक मन से उस पर प्रहार करना चाहिए।
- अस्थिर होकर भाग्य के आगे अपना सिर न झुकाओ, शक्तिमान होकर अचल बने रहो, शक्ति के प्रकाश के लिए ही आशा ने अपने द्वार बन्द कर रखे हैं, बलवान भाग्य की मार खाकर भी बहुबली होकर नवजीवन प्रारम्भ करते हैं।
- दुर्दिनों के, अन्धकार के नाम पर रो-रोकर अपना उत्साह भंग करने की चेष्टा मत करो, अपने मन को धूप की घड़ी की तरह बनाओ, जो केवल दिन के उज्ज्वल प्रकाश में समय को बताया करती है। अपने जीवन के शुभ संयोगों की बातें ही ध्यान में रखने का उद्योग करो।
- यथार्थ में वही पुरुष है, जो समस्त ससार के विरुद्ध होने पर भी अपने विचारों को स्पष्ट रूप से प्रगट करने में नहीं झिझकता।
- आशा, विश्वास और उन्नतिशीलता से विघ्न-बाधा सदा दूर रहते हैं और उपस्थित कठिनाई भी हार मान लेती है।
- जो कर्त्तव्य-परायण हैं, जिसमें कर्त्तव्य-शक्ति है, वे किसी दूसरे का मुँह नहीं ताकते। वे अवसर नहीं ढूँढ़ते, सिर्फ अवस्था देखते हैं और जैसी स्थिति रहती है, उसी की गुरुता के अनुसार वे व्यवसाय करते हैं।
- बुद्धिमान मनुष्य वही है, जो संकट उपस्थित होने पर न उनसे मुँह छिपाता है और न घबराता है, बल्कि शान्ति के साथ स्थिर रहता है।
- हर एक विपत्ति मनुष्य के साहस की परीक्षा लेने आती है और हर एक दुःख ईश्वर के प्रति दृढ़विश्वास की जाँच करने आता है।
- जिन विश्वासों की प्रेरणा से मनुष्य सन्मार्ग की ओर अग्रसर होता है, उन विश्वासों की धारणा ही बुद्धिमानी है।
- अशुभ भविष्य की चिन्ता में उद्विग्न न रहो। साहसपूर्वक प्रगति का सरंजाम जुटाओ और प्रसन्न रहो।
- अपना स्वभाव कछुए का-सा बनाएँ। जरा से स्पर्श के डर से उचकने वाला मेंढक-सा नहीं। खतरा, कठिनाई या असफलता एक व्यक्ति को परेशान कर देती है तो मनस्वी को और अधिक सफल बनाती है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

- जब तुम्हारा मन टूटने लगे, तब भी यह आशा रखो कि प्रकाश की कोई किरण कहीं से उदय होगी और तुम डूबने न पाओगे, पार लगोगे।
- किसी ऐसे आदमी को दुर्भाग्य की शिकायत करते नहीं देखा गया जो मीठा बोलता हो, मेहनत से जी न चुराता हो और ईमानदारी का जीवन जीता हो।
- थोड़ी-से-थोड़ी उन्नति की ओर प्रत्येक सफलता की प्रशंसा की जाए। हृदय से प्रसन्नता प्रकट कीजिए और मुक्तकण्ठ से प्रशंसा कीजिए।
- फूल चुनकर इकट्ठे करने के लिए मत रुको। चल पड़ो, तुम्हारी राह में फूल खिलते मिलेंगे।
- आशा नाम मनुष्याणां काचिदाश्चर्यशृंखला।
  यया बद्धाः प्रधावन्ति मुक्तास्तिष्ठन्ति पंगुवत्।।
  मनुष्यों के लिए आशा नाम की यह कोई आश्चर्य शृंखला ही है, जिसमें बद्ध होने से मनुष्य इधर-उधर भागते-फिरते हैं और इससे मुक्त होने पर पंगु के समान निश्चल रहते हैं।
- भावना जितनी गहरी होगी उत्साह उतना ही उभरेगा और प्रयास उतना ही अधिक बन पड़ेगा।
- आत्म-विश्वास और भविष्य के प्रति अटूट आशा यह दो साधन ऐसे हैं, जिनके सहारे मनुष्य संकट की चुनौतियों को उज्ज्वल भविष्य में बदल सकता है।
- दुनिया में बुराइयाँ इसलिए अधिक हैं कि बुरे आदमी अपने पक्ष में ज्यादा बोलते हैं। सत्य के समर्थक यदि चुप न रहें और बुराइयों के विरुद्ध आवाज उठायें तो दुनिया में से आधी बुराइयाँ दूर हो सकती हैं।
- आशावादी मनुष्यों को प्रायः सफलता ही मिलती है, क्योंकि वे नाना प्रकार के सन्देहों और संकल्प-विकल्पों में अपनी शक्ति नष्ट होने से बचा लेते हैं।
- दिवास्वप्न न देखो। बिना पंख उड़ानें न भरो। वह करो जो आज की परिस्थितियों में किया जा सकता है।
- मृत्यु से मत डरो। वास्तविक अपयश एवं पश्चात्ताप से जो मरनेके बाद भी चिरकाल तक बना रहता है।
- कसौटी पर कसने से मालूम हो जाता है कि सोना खोटा है या खरा। संकट के समय विचलित न होने पर पता चलता है कि मनुष्य बुरा है या भला।
- योद्धा वह है जो बुराई को भलाई से जीते।
- ओछा मनुष्य अपना बखान बहुत करता है, पर आदर्शों के लिए साहस दिखाने में उसकी हिम्मत नहीं पड़ती। सच्चा आदमी साहसी होता है, पर हर साहसी सच्चा भी हो यह आवश्यक नहीं।
- यह जगत बड़ा विचित्र है। इसमें अनगढ़ एवं सुगढ़ दोनों प्रकार के व्यक्ति रहते हैं। इच्छित प्रकृति के सुसंस्कृत व्यक्ति ही सदा मिलते रहें, ऐसा हो नहीं सकता। ऐसा दुराग्रह करना भी अनुचित है। यह संसार मात्र हमारे लिए ही बना है। इसमें भाँति-भाँति के जीवों मनुष्यों के निर्वाह की विधाता ने गुंजाइश रखी है। इस संयुक्त समुदाय के रसोईघर में सदा वह नहीं पक सकता, जो हम चाहते हैं। हमें तो मात्र श्रेष्ठजनों से प्रेरणा लेनी चाहिए। सामान्यों के साथ तालमेल बिठा सकें, बिना टकराये जीवन गुजारा जा सके इसी की बात सोचनी चाहिए।
- हर किसी के साथ अनावश्यक उदारता बरतने की भावुकता अन्ततः बड़ी महँगी पड़ती है। सम्पर्क क्षेत्र में इसी कारण एक सामान्य वर्गीकरण एवं स्तर के अनुरूप अपने व्यवहार में हेर-फेर अनिवार्य हो जाता है। एक कठिनाई वहाँ आती है, जहाँ अनगढ़ों से वास्ता पड़ता है। निजी विवेक के सहारे किसी निर्णय पर पहुँचना उनके बस की बात भी नहीं रहती। ऐसों के लिए प्रताड़ना से सुधार अपना काम नहीं शासन तन्त्र का है। ऐसे में टकराव से बचना ही उचित है। अनगढ़ दुराग्रहियों के प्रति वैसा ही रुख रखा जाए जैसा कि मनोरोगियों के प्रति रखा जाता है। न तो क्षमाशील बना जाए, न ही उपचार से विमुख हुआ जाए, लेकिन सत्परामर्श मान ही लिया जाएगा, यह नहीं सोचना चाहिए अनीति के प्रति असहयोग व्यक्त ही नहीं, चरितार्थ भी करना चाहिए। सच्ची आदर्शवादिता यही है। जब एकाकी साहस जुट पड़ता है तो स्वतः ऐसे व्यक्तित्व

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पीछे-पीछे खिंचे चले जाते हैं। अनगढ़ों में भी परिवर्तन होकर ही रहता है।

❑ यह संसार भले और बुरे दोनों तत्त्वों से मिलकर बना है। यहीं प्रकाश और हलचल भरा दिन भी होता है और निशाचरों को सुविधा प्रदान करने वाली घोर अँधेरी रात भी। दोनों अवसरों पर दो प्रकार की गतिविधियाँ अपनानी पड़ती हैं। रसोईघर और शौचालय दोनों ही एक घर में होते हैं, पर उनका प्रयोग उपर्युक्त भिन्न-भिन्न प्रकार से करना होता है। जन्म और मरण की तरह यहाँ मनुष्यों का स्तर और व्यवहार भी ऐसा है, जिसमें समानता नहीं होती, भिन्नता ही नहीं विपरीतता भी पाई जाती है। यहाँ सज्जन भी बहुत हैं और दुर्जन भी। यहाँ सत्प्रवृत्ति भी विद्यमान है और दुष्प्रवृत्तियों का दौर भी चलता है। पाप और पुण्य के परस्पर विरोधी दृश्य भी अगणित दीख पड़ते हैं। ऐसी दशा में स्थिति के अनुरूप हमारे व्यवहार में भी परिवर्तन होते रहना चाहिए।

❑ सज्जनों के साथ विचार-विनिमय और उदार व्यवहार से काम चल जाता है, किन्तु दुर्जनों के साथ निपटना उस प्रकार नहीं हो सकता। उन्हें भय और प्रलोभन की भाषा में ही जो कहना हो कहा जा सकता है। दुष्टों को दण्ड, भय के अतिरिक्त और किसी प्रकार नहीं समझाया जा सकता है। उनके साथ असहयोग, विरोध और संघर्ष की नीति अपनानी पड़ती है। स्तर और स्थिति के अनुरूप इस प्रकार की भिन्नता अपनाये बिना और कोई चारा नहीं।

❑ अनीति के आतंक से समझौता न करें। पिछड़ेपन का कारण बहुधा प्रतिकूल परिस्थितियों अथवा बाहरी दबावों को माना जाता है। यह एक अंश में ही सही है—पूर्ण तथ्य नहीं। प्रतिकूलताओं और दबावों की शक्ति को जब मनुष्य स्वीकार कर लेता है और उनके आगे झुकने के लिए सहमत हो जाता है तो ही वे अपना प्रभाव दिखा पाते हैं। सहमति न हो तो और कोई बाहरी शक्ति किसी को देर तक विवश नहीं बनाये रह सकती। मनुष्य जड़ नहीं, उसे मांस-पिण्ड नहीं समझा जाना चाहिए। उसके भीतर जो चेतना काम करती है, वह इतनी प्रबल है कि प्रतिकूलताओं और दबावों से इसे देर तक विवश बनाकर नहीं रखा जा सकता। लाचारी की अनुमति और पिछड़ेपन की स्वीकृति जहाँ जिस मात्रा में रहेगी, दबावों का प्रभाव उसी अनुपात से बढ़ता चलेगा।

❑ मानवीय-गौरव के प्रतिकूल परिस्थितियों और परम्पराओं को यह समझा जाना चाहिए कि अनीति का आतंक कितना ही प्रचण्ड क्यों न बना लिया जाए, इस सृष्टि की मूल प्रकृति के विपरीत है। टिकाऊपन, न्याय और औचित्य के साथ ही जुड़ा रहता है। इसलिए बुद्धिमत्ता इसी में है कि पिछड़ापन उत्पन्न करने वाले आतंक से समय रहते ही हाथ खींच लिया जाए।

❑ पिछड़े लोगों को यह समझाया जाना चाहिए कि उन्हें अनीति के साथ समझौता नहीं करना चाहिए। दबावों को न तो स्वीकार किया जाना चाहिए और न उनके साथ सहमति व्यक्त करनी चाहिए। संघर्ष के लिए साधन न हों तो भी असहमति और अस्वीकृत की ज्योति बुझने नहीं देनी चाहिए। औचित्य और न्याय के लिए आग्रह जारी रखा जाय तो आतंक के पैर जम नहीं सकेंगे। यह स्मरण रखा जाना चाहिए कि मनुष्य यदि अनीति के आगे झुके तो उसे और कोई झुका नहीं सकता।

❑ हम किसी से न लड़ना चाहें तो भी संघर्षों से नहीं बचा जा सकता। दुर्बल और सज्जन होना भी एक सीमा तक ही ठीक है। नितान्त भले और भोले होने को दुर्गुणों में गिना जाता है। सामने वाले उसे आसानी से शिकार बना लेते और डरा-धमकाकर अनुचित लाभ उठाते रहते हैं।

आक्रमण के लिए न सही, आत्मरक्षा के लिए भी संघर्ष करना पड़ेगा, प्रतिपक्षियों से निपटना पड़ेगा। जुएँ, खटमल, मच्छर, पिस्सू, दीमक अकारण ही हानि पहुँचाते हैं। चूहे, घुन, कुतरने वाले कीड़े अपनी आक्रमणकारी नीति से कहाँ बाज आते हैं ? इनका प्रतिरोध न किया जाय तो वे बढ़ते-परिपुष्ट होते रहेंगे और जीवन दूभर बना देंगे।

समाज में आक्रान्ताओं का भी एक वर्ग है। सरलतापूर्वक उनके निशाने वे ही बनते हैं, जो आत्मरक्षा में असमर्थ होते दिखते हैं। संघर्ष से बचते रहने पर भी ऐसी ही परिस्थिति आ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सकती है, जब आत्मरक्षा के लिए जूझना पड़े। जो इस साहसिकता को नहीं अपना पाते वे आक्रमणों के शिकार होते और बैमौत मरते देखे गये हैं।

❑ व्यक्ति और समाज परस्पर अन्योन्याश्रित हैं। उद्दण्ड व्यक्ति अपने अनगढ़-कृत्यों से समूचे समाज को प्रभावित करता और अशान्ति फैलाता है। क्रिया की प्रतिक्रिया होती है। अवांछनीय तत्त्वों को देर तक सहन नहीं किया जाता। उन्हें अवरोध उत्पन्न करने की छूट सदा ही नहीं मिल सकती।

व्यक्ति की अनुपयुक्त गतिविधियाँ व्यापक विक्षोभ उत्पन्न करती हैं और समाज तथा प्रकृति की ओर से ऐसे लोगों को नियंत्रण में लाने की, कड़ुवा सबक सिखाने की प्रतिक्रिया चल पड़ती है। इसी का नाम विपत्ति है। विपत्ति से घिरा व्यक्ति सीखता है कि अपने को उबारने के लिए उसे दूसरों की कठिनाई समझनी चाहिए, जैसा कि बुद्धिमान लोग विपत्ति खड़ी होने से पूर्व ही कर लिया करते हैं। सज्जनता किसी पर उपकार करना नहीं है, वरन् अपने आपको भर्त्सना, विरोध, आक्रोश से बचाना है। प्रकृति के कठोर विधान का व्यतिक्रम करके अपने ऊपर विपत्ति टूट पड़ने से समय रहते बचाव कर लेना है।

❑ उद्दण्डता प्रकृति को असहनीय है। समाज भी उसका विरोध करता है और शासन भी। इन सबसे बड़ा अपना अन्तःकरण है, जो उद्दण्डता की अवस्था छुड़ाने के लिए विपत्तियों को जहाँ-तहाँ से न्यौत बुलाता है। अनीति का यही उपचार भी है।

❑ मानव-जीवन संघर्षों से परिपूर्ण है। मनुष्य अपने धार्मिक, राजनीतिक तथा आर्थिक जीवन में अग्रसर होने के लिए कोई न कोई ध्येय अवश्य बना लेता है और इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति के निमित्त उसे जीवन की लड़ाइयों में भाग लेना पड़ता है। परिवर्तनशील जगत कहता है ऐ प्राणियो ! तुम कितने ही कार्य क्यों न करो, तुम्हारे लिए कर्म-परायणता की आवश्यकता मरते दम तक बनी ही रहेगी। मानव गति-हीन अथवा क्रिया-हीन नहीं हो सकता। उसकी वर्तमान अवस्था स्थायी नहीं है। परिवर्तन अवश्य होगा।

❑ आध्यात्मिक विकास तथा जीवन के कंटकाकीर्ण पथ में महत्त्वपूर्ण सफलता आत्म-संयम से ही होती है। क्षणिक आपदाओं से या क्षणिक असफलताओं से हमें निराश होकर कर्त्तव्य-पथ सें विमुख न होना चाहिए। कष्टों के भय से अपनी महत्त्वाकांक्षा को कुचलना आत्मघात करना है और जीवन के संघर्षों से भयभीत होकर आत्मघात करना महान पाप है। इस संग्राम में जो भीरु हैं, मृत्यु से डरते हैं या निराशावादी हैं, वे किसी हालत में सफल नहीं हो सकते। महान उद्देश्य की पूर्ति में मृत्यु का कोई ख्याल न करते हुए जो वीर पुरुष विजय प्राप्त करता है वही सच्चा कर्मवीर है।

❑ यदि हम में उत्साह और विवेक है तो संसार का कोई भी कार्य असाध्य अथवा दुसाध्य नहीं हो सकता। अपने इस संग्राम में विजयी होने के लिए दृढ़, सफल और निर्भयता की सख्त जरूरत है। जिन परिस्थितियों की कल्पना मात्र से कायर सिहर उठता है, उसी दशा में निडर पथिक अग्रसर होते हुए सफलता की सूचना देता है।

❑ लोग क्या कहते हैं ? इसके आधार पर किसी कार्य की भलाई-बुराई का निर्माण नहीं किया जा सकता, क्योंकि कई बार लोग अच्छे कार्यों की बुराई करते हैं और बुरों की भलाई। कारण भले-बुरे की वास्तविक पहचान हर किसी को नहीं होती। हम जो काम करें, उसके लिए यह न देखें कि कौन क्या कहता है ? वरन् यह सोचें कि हमारा इसके लिए क्या कहना है

यदि आत्मा गवाही दे कि हम जो कार्य कर रहे हैं उत्तम है और हमारी बुद्धि निःस्वार्थ है, तो बिना किसी की परवाह किये हुए हमें अपने कार्य में प्रवृत्त रहना चाहिए।

यदि शुभमार्ग में बाधाएँ आती हों और लोग विरोध करते हों, तो घबराइये मत और न ऐसा सोचिए कि हमारे साथ कोई नहीं, हम अकेले हैं। शुभकार्य करने वाला कभी अकेला नहीं है। अदृश्यलोक में महान पुरुषों की प्रबल शक्तियाँ विचरण करती रहती हैं, वे हमें उत्तम पथ दिखाती हैं तथा हमारी सहायता के लिए

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दौड़ पड़ती हैं और इतना साहस भर देती हैं कि एक बड़ी सेना, खाँस देने से डरकर भाग जाती है, किन्तु धर्मात्मा मनुष्य मृत्यु के सामने भी छाती खोलकर अड़ा रहता है। सत्यनिष्ठ की पीठ पर परमेश्वर है। धर्मात्मा मनुष्य किसी भी प्रकार न तो अकेला है और न निर्बल, क्योंकि अनन्त शक्ति का भण्डार तो उसके हृदय में भरा पड़ा है।

❑ सूर्य आये दिन ढलता और अस्त होता है। इतने पर भी किसी को यह नहीं सोचना चाहिए कि अगले प्रभात वह स्वर्णिम किरणें बिखेरता हुआ द्रुतगति से उदय होते हुए न दिख पड़ेगा। चन्द्रमा की कलाएँ घटती देखी जा सकती हैं, पर इस तथ्य को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता कि शुक्ल-पक्ष आते ही वह क्रमशः बढ़ता जाता है और पूर्णिमा के दिन पूर्ण होकर रहता है। समुद्र का जल नीचे उतरता तो है, पर यथासमय उसमें उफनते ज्वार भी आते रहते हैं।

❑ पतझड़ में वृक्ष ठूँठ रह जाते हैं, पर वसन्त आते ही उन्हें फूलों और फलों से लदा देखा जा सकता है। ग्रीष्म की तिलमिला देने वाली गर्मी-दुपहरी तभी तक चिलचिलाती है, जब तक कि सावन की मेघमाला की घटाटोप बरसने में देर रहती है। समय बदलते ही सूखी धरती हरीतिमा की मखमली चादर ओढ़कर मुसकराती है।

❑ जराजीर्ण काया बहुत दिनों तक कराहती नहीं रहती। नियति उसकी स्थिति को बदलती है और शैशव के नये अलंकारों से अलंकृत करती है। शरीर से बहुत कुछ हर दिन निकलता रहता है, पर यह भी स्पष्ट है कि उसकी पूर्ति नये अनुदानों से होती है व प्रकृति उस घाटे की पूरी भरपाई करती रहती है। निराशा की घड़ियाँ आती तो हैं, पर आशा का अभिनव उल्लास उसे खदेड़कर रहता है। अवनति सामयिक और प्रगति शाश्वत है।

पिछले दिनों बहुत कुछ ऐसा घटित हुआ है, जिसे अनर्थ कह सकते हैं। विपन्नता के बहुत अंश अभी भी मौजूद हैं। इतने पर भी जिन्हें नियतिचक्र पर विश्वास है, उन्हें यह आशा करनी ही चाहिए कि उज्ज्वल भविष्य का उदय हुए बिना रह नहीं सकता। इक्कीसवीं सदी ऐसे ही सुखद परिवर्तनों को साथ लेकर आ पहुँचे तो उसे सृष्टिचक्र की सुनिश्चित एवं सुखद सम्भावना ही समझना चाहिए।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

दूरदर्शी विवेकशीलता

❑ **शतं वदान्न विवदेदिति विज्ञस्य संमतम्।**
बिना हेतुमपि द्वन्द्वमेतन्मूर्खस्य लक्षणम्।।

—हितोपदेश

अपनी सैकड़ों की हानि सहन कर ले, पर झगड़े को बचावे। यह बुद्धिमानी का मार्ग है और बिना किसी कारण ही कलह कर बैठना मूर्ख का लक्षण है।

❑ आलस्य दरिद्रता की जड़ है।

❑ आदर्श से हम जितने संलग्न रहेंगे उतना ही वह दूर होता दिखाई पड़ेगा। उतने ही अधिक वेग से उसका अनुसरण करना ही पुरुषार्थ है। जब हम गिर पड़ेंगे तभी खड़े भी होंगे। हमें सुस्ती करना या पीठ दिखाना नहीं चाहिए इतना ही काफी है। *—महात्मा गाँधी*

❑ **इदं च रोगं व्यसनं प्रजानां पश्यंश्च विश्रम्भमुपैविलोकः।**
विस्तीर्णमज्ञान महो नराणां हसन्ति ये रोगभयैरमुक्ताः।।

—बुद्ध चरितम् ३।४६

मनुष्यों को रोग और विपत्ति में पड़ा हुआ देखकर भी लोग निश्चिन्त पड़े हुए हैं। अहो, इनके विस्तृत अज्ञान को तो देखो, जो रोगों और भयों से पीड़ित होते हुए भी हँसते हैं।

❑ **अज्ञःसुखमाराध्यःसुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः।**
ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्माऽपि नरं न रञ्जयति।।

—भर्तृहरि

मूर्ख को सरलतापूर्वक समझाया जा सकता है। विशेषज्ञ को समझा सकना उससे भी सरल है, पर थोड़ा ज्ञान पाकर जो अहंकार से ऐंठ गए हैं, उन्हें ब्रह्मा भी सन्तुष्ट नहीं कर सकता।

❑ मनुष्य जितना छोटा होता है, उसका अहंकार उतना ही बड़ा होता है। *—वाल्टेयर*

❑ **अजातं मृतंमूर्खाणां वरमाद्यौ न चान्तिमः।**
सकृद् दुखःकरावाद्यौ अन्तिमस्तु पदे-पदे।।

—हितोपदेश

जो पुत्र पैदा ही न हुआ हो अथवा पैदा होकर मर गया हो अथवा मूर्ख हो, इन तीनों में पहले दो ही तीसरे की अपेक्षा अधिक अच्छे हैं, क्योंकि वे दोनों तो एक ही बार दुःख देते हैं, जबकि तीसरा (अर्थात् मूर्ख पुत्र) पद-पद पर दुःखकारक होता है।

❑ ज्ञानवान दूसरों के लिए छाया बनकर रहते हैं, किन्तु अज्ञानग्रस्त सदैव दूसरों की छाया में पलते हैं। *—गेटे*

❑ कठोर और मूर्ख मधुमक्खी से कह दो कि जब शहद नहीं देती तो डंक भी मत मार।

—शेखसादी

❑ विद्वान जो संयमी—परहेजगार नहीं है, अन्धा मशालवी है। वह दूसरों को राह दिखाता है, किन्तु उसे स्वयं राह नहीं मिलती। जिसने अपनी उम्र बेखबरी से गँवा दी, वह उसके माफिक है जिसने रुपया तो खर्च कर डाला मगर कुछ चीज न खरीदी। *—शेखसादी*

❑ पुत्र मेरे हैं। घर मेरा है। ऐसा सोच मूर्ख आदमी दुःखी हो जाता है। जब शरीर तक अपना नहीं है, तब पुत्र कहाँ ? और धन कहाँ ? *—महात्मा बुद्ध*

❑ शराब पीने पर बुद्धि का ठिकाना रहना आसान है, पर यदि दौलत पाकर तू मस्त न हुआ तो मर्द आदमी है। *—शेखसादी*

❑ किसी चीज से भी न चिढ़ो। काम उसी निर्लिप्त भाव से करो जिस तरह वैद्य लोग अपने रोगियों की चिकित्सा करते हैं और रोग को अपने पास नहीं फटकने देते। सब उलझनों से मुक्त अथवा द्रष्टा साक्षी की भावना से काम करो। *—स्वामी रामतीर्थ*

❑ ईश्वरप्राप्ति के लिए, मुझे अपनी अनासक्ति ही अच्छी लगती है, उसमें सब कुछ आ जाता है।

—महात्मा गाँधी

❑ कर्म में ही तुझे अधिकार है, उससे उत्पन्न होने वाले फलों में कदापि नहीं, कर्म का फल तेरा हेतु न हो, कर्म न करने का भी तुझे आग्रह न हो। *—भगवान श्रीकृष्ण (गीता)*

❑ भारतीय शास्त्रों के अनुसार जीवात्मा मूल रूप से स्वतंत्र है और लगातार उद्योग करते रहने से उसे कभी न कभी कर्म-बंधन से छुटकारा मिल जाता है, पर कोई पुरुष ज्ञानी भी हो जाए, तो भी कर्म एकाएक नहीं छूट सकते। मनुष्य अपने जीव को इन कर्मों में फँसाकर अपनी आसक्ति से इन्हें अच्छा या बुरा, शुभ या

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अशुभ बना लेता है। इस ममत्वयुक्त आसक्ति के छूटने से कर्म के बन्धन में आप ही टूट जाएगा। *—लोकमान्य तिलक*

❑ **तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर।**
असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पूरुषः।।

—गीता

फल की इच्छा छोड़ निरन्तर कर्त्तव्य कर्म करने वाला मोक्ष प्राप्त करता है।

❑ **तत्त्वमार्गे यथा दीपो दृश्यते पुरुषोत्तमः।**
यः स्तनः पूर्वपीतस्तं निष्पीड्य मुदमश्नुते।
यस्माज्जातो भगात्पूर्वं तस्मिन्नैव भगे रमन्।
या माता सा पुनर्भार्या या भार्या मातरेव हि।।
यः पिता स पुनः पुत्रो यः पुत्रः स पुनः पिता।
एवं संसारचक्रेण कूपचक्रे घटा इव।।
भ्रमन्तो योनिजन्मानि श्रुत्वा लोकान्समश्नुते।
त्रयो लोकास्त्रयो वेदास्तिस्रः संध्यास्त्रयः स्वराः।।
त्रयोऽग्नयश्च त्रिगुणाः स्थिताः सर्वे त्रयाक्षरे।
त्रयाणामक्षराणां च योऽधीतेऽप्यर्धमक्षरम्।।

—योग तत्वोपनिषद्

तत्त्वदर्शी व्यक्ति को अपने पूर्वजन्म प्रकाश की तरह दिखते हैं। प्राणी एक जन्म में जिस स्तन को पीता है, दूसरे में उसी का कामभाव से स्पर्श करता है। कभी जिस योनि से जन्म लेता है तो कभी उसी में रमण करता है। एक जन्म में जो माता होती है, वही कभी पत्नी हो जाती है। जो पिता होता है सो पुत्र बन जाता है और पुत्र पिता हो जाता है। इस तरह सम्बन्ध बदलते ही रहते हैं। यह संसारचक्र कुएँ की रहट की तरह है, जिससे प्राणी एक के बाद दूसरे घड़ों की तरह आते और जाते रहते हैं।

❑ धर्मग्रन्थों का चाहे थोड़ा ही पाठ करे, लेकिन यदि राग-द्वेष तथा मोह से रहित कोई व्यक्ति धर्म के अनुसार आचरण करता है तो ऐसा बुद्धिमान, अनासक्त यहाँ-वहाँ दोनों लोकों में धर्म का भागी होता है।

—महात्मा बुद्ध

❑ जागते रहने वाले की रात लम्बी होती है। थके हुए का योजन लम्बा होता है। इसी प्रकार सधर्म को न जानने वाले मूर्ख आदमी का सांसारिक आवागमन लम्बा हो जाता है।

—महात्मा बुद्ध

❑ **तत्कर्म यन्न बन्धाय सा विद्या या विमुक्तये।**
आयासायापरं कर्म विद्यान्या शिल्पनैपुणम्।।

—विष्णु पुराण

कर्म वह है जिससे बन्धन टूटें, नहीं तो वह प्रयास मात्र है। विद्या वही है, जिससे मुक्ति प्राप्त हो, नहीं तो वह शिल्प-निपुणता मात्र है।

❑ "फलासक्ति छोड़ो और काम करो", "आशारहित होकर कर्म करो", "निष्काम होकर कर्म कर" यह गीता की वह ध्वनि है, जो भुलायी नहीं जा सकती। जो कर्म छोड़ता है वह गिरता है। कर्म करते हुए भी जो उसका फल छोड़ता है वह चढ़ता है। *—महात्मा गाँधी*

❑ गृहस्थाश्रम में रहता हुआ जो व्यक्ति सुन्दर और प्रिय भोगों की प्राप्ति होने पर भी उनसे उदासीन-अलिप्त रहता है व उन्हें पीठ देता है—यही नहीं स्वाधीन होते हुए उन भोगों का परित्याग करता है, वही निश्चय रूप से सच्चा त्यागी है। *—भगवान महावीर*

❑ यदि मूर्ख अपने को मूर्ख समझे तो उतने अंश में तो बुद्धिमान है। असली मूर्ख तो वह है जो मूर्ख होते हुए भी अपने को पंडित समझता है।

—महात्मा बुद्ध

❑ **लभेत सिकतासु तैलमपि यत्नतः।**
पीडयन्विवेच्च मृगतृष्णिकासु सलिलं पिपासार्दितः।।
कदाचिदपि पर्यटञ्छशविषाणमासादयेन्नतु।
प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत।।

—भर्तृहरि

यत्नपूर्वक पेरने से कदाचित बालू में से तेल निकल आवे, मृगतृष्णा से प्यास बुझ जाय, ढूँढ़ने से खरगोश के सींग मिल जाए—चाहे ये सब असम्भव कार्य किसी प्रकार सम्भव हो जाएँ, परन्तु मूर्ख का मन जिस तरफ झुक गया है, उसे हटा सकना किसी प्रकार सम्भव नहीं।

❑ टालमटूल, विस्मृति, सुस्ती और निद्रा; ये चार उन लोगों के खुशी मनाने के बजड़े हैं कि जिनके भाग्य में नष्ट होना बदा है।

—सन्त तिरुवल्लुवर

❑ धर्म का मार्ग अलग है और भोग का मार्ग अलग। एक श्रेय है दूसरा प्रेय। श्रेय को ग्रहण करने वाला कल्याण पाता है। प्रेय को ग्रहण करने वाला अपने उद्देश्य को प्राप्त नहीं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करता। बुद्धिमान श्रेय को चुनता है, परन्तु मूर्ख लोभवश प्रेय को पसन्द करता है।

❑ पहले जो प्रमाद में था और अब प्रमाद से निकल गया, वह दुनिया को बादलों से निकले हुए चाँद की तरह रोशन करता है।

—महात्मा बुद्ध

❑ जब तुम दान करो तो नगाड़े मत बजवाओ। जैसे कि दंभी लोग जरा-सा शुभ कर्म करते हैं और उसका ढिंढोरा गली-गली में पिटवाते हैं ताकि लोग उनकी बड़ाई करें। मैं तुम से सच कहता हूँ कि वे अपना फल पा चुके। जब तुम दान करो तो जो तुम्हारा दाहिना हाथ करता है, उसे बायाँ हाथ न जानने पाये। तुम्हारे गुप्त दान को अदृश्य पिता जानता है और वह बदला देना न भूलेगा।

❑ जब तुम प्रार्थना करो तो धूर्तों की तरह चौराहों पर और हाट-बाजारों में प्रदर्शन मत करो। अपने विज्ञापन के लिए जो भजन करते हैं, वे अपना फल पा चुके। एकान्त स्थान में सच्चे हृदय से जब तुम प्रार्थना करोगे तो घट-घट वासी पिता उसे देखेगा और बदला देगा। प्रार्थना करते समय गला फाड़कर चिल्लाओ मत और न बहुत बक-बक करो। वे और ही लोग हैं जो समझते हैं कि हमारे बहुत बकने पर ही परमात्मा सुनेगा। तुम्हारे माँगने से पहले प्रभु जानते हैं कि तुम्हें क्या चाहिए ? तुम इस प्रकार ही प्रार्थना करना कि 'हे पिता तेरी जय हो ! तेरे पवित्र नाम को दुनिया समझे, तेरी इच्छा पूर्ण हो। हमारे अपराध क्षमा कर। हमें परीक्षा में न डाल, पर बुराई से बचा।'

तुम व्रत रखो तो पाखण्डियों की तरह अपने मुँह पर उदासी मत आने दो। जब तुम उपवास करो तो चेहरे पर प्रसन्नता बनाये रहो ताकि लोगों को नहीं पर अपने अदृश्य पिता को उपवासी दिखाई दो, परम पिता जो गुप्त बातों को भी जानता है, तुम्हें बदला देगा।

यदि तुम दूसरों के अपराध क्षमा करोगे तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराधों को क्षमा करेगा। पर यदि तुम दूसरों के अपराध क्षमा न करोगे तो परमपिता भी तुम्हारे अपराधों को क्षमा न करेगा। सावधान रहो ! प्रदर्शन और ढोंग के साथ धर्मकार्य न करो, नहीं तो कुछ फल न पाओगे। *—महात्मा ईसा*

❑ हे मनुष्यो ! कभी मद्यपान न करना, कभी जुआ न खेलना, दुष्कर्मों को मिटाते रहना। जो सुकुमार बालकों को बहकावें, उन्हें दण्ड दिलाने में पीछे न हटें। नहीं तो संसार में सर्वत्र विनाशकारी परिस्थितियाँ उठ खड़ी होंगी।

❑ हे प्रभु ! दयावन्त के साथ तू अपने को दयावन्त दिखाता, खरे मनुष्य के साथ तू अपने को खरा दिखाता है, शुद्ध के साथ तू अपने को शुद्ध दिखाता है और टेड़े के साथ तू तिरछा बनता है, क्योंकि तू दीन लोगों को तो बचाता है, पर घमंड भरी आँखों को नीची करता है। *—भजन संहिता १८।२५।२७*

❑ पृथ्वी के न्यायी उठ ! घमंडियों को बदला दे।

—भजन संहिता ९४।२

❑ हे वीर, तू बुराई करने पर क्यों बड़ाई मारता है। ईश्वर की करुणा तो लगातार बनी रहती है। तेरी जीभ दुष्टता गढ़ती है। सान धरे हुए छुरे की तरह वह छल का काम करती है, तू भलाई से बढ़कर बुराई में और धर्म की बात से बढ़कर झूठ में प्रीति रखता है। सो हे छली जीव वाले! तू सब विनाश करने वाले वचनों में प्रीति रखता है। निश्चय ईश्वर तुझे सदा के लिए नाश कर देगा।

—भजन संहिता ५२।१५।

❑ जो बड़ा क्रोधी है, उसे दंड भोगने दे, क्योंकि यदि उसे तू बचा ले तो फिर-फिर बचाना पड़ेगा। *—भजन संहिता १९।१९*

❑ अज्ञानता एक ऐसी रात्रि है, जिसमें चाँद है न तारे।

❑ लोगों को आये दिन मरते देखकर भी अज्ञानी यही सोचते रहते हैं कि हम अमर बनकर आये हैं।

❑ जो वस्तु अनादि और अनन्त है, उसी में सुख है, अन्तवान वस्तु में सुख नहीं है, अन्तवान् वस्तु का एक दिन अवश्य नाश होगा, इसलिए जो उस पर आसक्त होगा उसको दुःखी ही होना पड़ेगा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ आत्म-समर्पण ही मुक्ति का सच्चा मार्ग है, पर जब तक हमारे भीतर अहंकार का कुछ भी अंश शेष रहेगा आत्म-समर्पण सम्भव नहीं हो सकता। बहुत-से लोग विचार करते हैं कि हमारा गर्व तो सात्विक है, उसमें कोई हर्ज नहीं। यद्यपि सात्विक अहंकार, राजसिक अथवा तामसिक अहंकार की अपेक्षा श्रेष्ठ दिखाई पड़ता है, पर वास्तव में तो वह अहंकार ही है। सात्विक अहंकार बने रहने से एक दिन राजसिक अथवा तामसिक अहंकार भी उत्पन्न हो सकता है। जहाँ पर सात्विक अहंकार है, वहाँ समझ लेना चाहिए कि राजसिक और तामसिक अहंकार भी उसके भीतर सोया हुआ है और वह कभी भी प्रकट होकर विपत्ति उत्पन्न कर सकता है।

❑ जो पुरुष जानता है, वह ऐसे मार्ग पर चलता है जो अमर जीवन की ओर ले जाता है। प्रमाद का मार्ग मृत्यु की ओर ले जाता है। जो जागते हैं वे स्वतंत्र हैं। जो प्रमाद में फँसे हैं वे मानो अभी मर चुके हैं।

❑ **पारुष्यमनृतं चैव पैशुन्यं चापि संजयः।**
असम्बद्धप्रलापश्च वाङ् मयं स्याच्चतुर्विधम्।।
कठोर वचन, मिथ्या भाषण, चुगलखोरी, निष्प्रयोजन बकवाद यह चार प्रकार के वाणी के पाप हैं।

❑ बढ़-बढ़ कर बातें मत करो। शेखी न बघारो। भीतर और बाहर से एक रहो। नम्रता और शिष्टता का समुचित निर्वाह करो। उस राह पर न चलो जिस पर उद्दंड चलते हैं। कपट का ताना-बाना न बुनो। अपने को उसी रूप में प्रकट होने दो जैसे कि वस्तुतः तुम हो।

❑ बरसात का पानी उँची जगह पर न ठहरकर बहकर नीची जगह पर आ जाता है। उसी तरह ईश्वर की कृपा अहंकारियों पर न होकर नम्रों पर ही होती है।

❑ माया ऐसी है जैसी पानी पर तैरने वाली काई। काई को हटा देने पर तुरन्त तो वह हट जाती है, पर थोड़ी ही देर में फिर जमा हो जाती है। उसी प्रकार स्वाध्याय, सत्संग और मनन-चिन्तन से वह कुछ समय को हट जाती है, पर अवसर पाते ही वह फिर जमा हो जाती है। इसलिए उसे हटाने का निरन्तर प्रयत्न करना चाहिए। एक बार के ज्ञानोदय को पर्याप्त नहीं मान लेना चाहिए।

❑ सूर्य बहुत बड़ा है, पर जरा-सी बदली उसका प्रकाश हम तक आना रोक देती है। इसी प्रकार ईश्वर अति विशाल और सर्वसमर्थ है, पर अज्ञान की अँधियारी उसका अनुग्रह हम तक आने का मार्ग अवरुद्ध कर देती है।

❑ प्याज खाने वाले के मुँह में से निकलने वाली गन्ध को सूँघकर यह बताया जाता है कि उसने प्याज खाई है। निकृष्ट वचन बोलने वाले के भीतर दुर्बुद्धि भरी है, इसका अनुमान लगाया जा सकता है।

❑ दीपक में तेल भरा रहने पर भी हवा का झोंका उसकी ज्योति को बुझा देता है। हर व्यक्ति क्षमताओं से भरा हुआ है, पर असमय का झोंका उसे समय से पहले ही बुझ जाने के लिए विवश करता है।

❑ जिसकी इन्द्रियाँ बस में नहीं, निरंकुश और स्वेच्छाचारिणी हैं, वह एक ऐसा मकान है, जिसकी दीवारें ढह चुकी हैं। *—सुलेमान*

❑ ईर्ष्या वह काली नागिन है, जो समस्त पृथ्वी मण्डल में जहरीली फुँफकारें छोड़ रही है। यह गलतफहमियों की एक गर्म हवा है, जो शरीर के अन्दर 'लू' की तरह चलती है और मानसिक शक्तियों को झुलसाकर राख बना देती है।

❑ प्रतिशोध ने डाँटते हुए धैर्य से कहा—"बन्धु ! आप जैसे कायर व्यक्ति के साथ रहने में मेरी शान घटती है, आप मेरे साथ न रहें तो ही अच्छा।"
धैर्य ने साथ छोड़ दिया, तभी से एकाकी प्रतिशोध भयंकर काण्ड कराता हुआ संसार में विचरण कर रहा है।

❑ संयमित जीवन बिताकर भी मैं रोगी हूँ, महात्मन् ! ऐसा क्यों ? एक ग्रामीण ने महात्मा कन्फ्यूशियस से प्रश्न किया। कन्फ्यूशियस ने थोड़ा विचार किया और बोले—"भाई, तुम शरीर से संयमित हो, पर मन से नहीं। अब जाओ और ईर्ष्या-द्वेष करना बन्द कर दो तो तुम्हें संयम का पूर्ण लाभ मिलेगा।"
यदि सत्य को अपने हृदय में बसाना चाहते हो तो ईर्ष्या-द्वेष को उसमें से निकाल बाहर करो।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जब तक शत्रु घर से बाहर नहीं होगा, मित्र का प्रवेश कैसे हो सकता है ?

- दूसरों का सौभाग्य देखकर ईर्ष्या न करो, क्योंकि ऐसे अनेक व्यक्ति होंगे, जो तुम्हारी श्रेणी में न पहुँचने के लिए भी दुःखी होंगे।
- जो मनुष्य दूसरे के ऐश्वर्य को नहीं सह सकता, जिसकी बुद्धि कलुषित है, जो परधन हरण करता है, जो प्राणियों की हिंसा करता है, जो झूठ बोलता है, जो कठोर वचन कहता है और जिसका मन निर्मल नहीं है, उसके हृदय में भगवान निवास नहीं करते।
- चिन्ता अपने विषय में सोचती और उद्विग्न करती है। ईर्ष्या दूसरे के सम्बन्ध में सोचती और पड़ोसी के चूल्हे से आग लगाकर अपना छप्पर जलाती है।
- परद्रोह की भावना ईर्ष्या-द्वेष के रूप में पल्लवित होकर मनुष्य के अन्तर-बाह्य जीवन को दूषित बना देती है।
- कुसंस्कारों से भरे हुए मूर्ख होने की अपेक्षा नास्तिक होना ज्यादा अच्छा है, क्योंकि उनमें कुछ न कुछ जीवन तो होता है, उनमें सुधार किया जा सकता है, लेकिन जिन लोगों के मस्तिष्क में कुसंस्कार घुस जाते हैं, वे बिल्कुल बेकार हो जाते हैं, मृत्यु के कीड़े उनके शरीर में प्रवेश कर जाते हैं और उनका दिमाग फिर जाता है।

—स्वामी विवेकानन्द

- सब साधन मिल जाने पर जो कार्य करने की प्रतीक्षा करता रहता है, उसे आरम्भ करने का अवसर ही नहीं मिलता।
- हिंसा और अहिंसा की अपनी उपयोगिता है। हिंसा के सहारे दुष्टता से निपटा जाता है और अहिंसा सज्जनता को सींचती है।
- बुरे दिनों की 'चपेट में आने से पहले आदमी अहंकारी हो चुका होता है। उद्धत मनुष्यों की दुर्मति ही उनकी दुर्गति कराती है।
- आलस्य भी एक प्रकार की हिंसा है।

—महात्मा गाँधी

- **देशाटनं राजसभावेशनं शास्त्रचिंतनम्।**
  वैश्यादिसंगतिर्विद्वान्मैत्री कुर्यादतन्द्रितः।।

  देशान्तरों में भ्रमण, राजसभा में आना, शास्त्र का विचार करना, वैश्यों से संगति और विद्वानों से मित्रता, ये बातें आलस्य छोड़कर करनी चाहिए।
- रूस के व्यक्तित्व मनीषी गुरजिएफ के कथनानुसार मनुष्य की आन्तरिक गुलामी का पहला कारण उसकी अज्ञानता ही है। आत्म-ज्ञान के बिना इस अज्ञानरूपी अंधकार को मिटाया नहीं जा सकता। अपनी मूल-सत्ता चेतना को समझे बिना वह गुलामों जैसा जीवन ही व्यतीत करता रहता है। चिरपुरातन धर्मग्रन्थों के अध्ययन और चिन्तन-मनन के पश्चात् ये इसी निष्कर्ष पर पहुँच पाये हैं कि व्यक्ति की कषाय-कल्मषों से मुक्ति अपने भीतर की प्रसुप्त चेतना को जगाने के उपरान्त ही सम्भव है।
- **"आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थ महारिपुः"।**

  अर्थात्—मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु आलस्य ही तो है।
- जैसे असावधानी के साथ पकड़ा हुआ कुश हाथ को काट देता है, वैसे ही अज्ञानी का लिया हुआ संन्यास उसे क्लेश के गर्त में डुबा देता है।
- मुर्गा समझता है कि सूर्य मेरा स्वर सुनने के लिए ही आता है। मुर्गी जब अण्डा देती है तो ऐसी अकड़ती है मानो किसी नक्षत्र को जन्म दे रही है। क्षुद्र लोग अपने नगण्य से कार्यों का ढोल बजाकर मुनादी कराते हैं।
- पूर्ण मूर्ख और पूर्ण बुद्धिमान किसी के लिए हानिकारक नहीं होते। डर के योग्य वे हैं, जो अर्द्धबुद्धिमान या अर्द्धमूर्ख हैं।
- प्रत्येक युवक तथा प्रत्येक युवती जीवन में एक बार अपने को सबसे सुन्दर समझते हैं और वैसा समझकर वह भ्रम पैदा करते हैं, जो जीवन में कष्टप्रद होता है।
- पागलपन यथार्थ जीवन की अड़चनों, कठिनाइयों, विषमताओं से दूर भागने का एक प्रयास है। प्रत्येक पागल एक काल्पनिक स्वप्नलोक में विहार किया करता है।
- मूर्ख अपने दुराचारों तथा अपनी मूर्खता को दूसरे के सिर पर पटकने की कोशिश में रहता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

- यह संसार मृत्यु द्वारा आहत और निष्प्राण किया जा रहा है और बुढ़ापे द्वारा आवृत्त किया जा रहा है। दिन-रात आयु कम हो रही है। अभागे आदमी ! इन सब बातों को जान करके भी तू क्यों नहीं जानता ?
- किसी को नीच, पतित या पापी मत समझो। याद रखो, जिसे तुम नीच, पतित और पापी समझते हो उसमें भी तुम्हारे वही भगवान विराजित हैं, जो महात्मा और ऋषियों के हृदय में हैं।
- धनी तथा अज्ञानी मनुष्य उस भेड़ के समान हैं, जिसके बाल सुनहले हैं।
- मूर्ख लोग केवल इच्छा करते रहते हैं और जब उन्हें कुछ नहीं मिलता तो कुड़कुड़ाने लगते हैं, परन्तु बुद्धिमान मनुष्य काम करते रहते हैं और फल की प्रतीक्षा करते हैं।
- वह ज्ञानी जो किसी की पीड़ा पर रो न सके। जो प्रसन्नता की घड़ी में भी हँस न सके। जो इतना आत्म-केन्द्रित हो जाए, जो दूसरों की चिन्ता ही न करे, अज्ञानी से भी बढ़कर है।
- जो समय के साथ नहीं चलता, वह पिछड़ जाता है। जो समय की माँग को नहीं जानता, वह अनुपयुक्त सोचता है और ऐसा कुछ करता है, जिससे पश्चात्ताप करना और उपहास सहना पड़े।
- मूर्खों की मित्रता से खतरा है। अरम्भ में वह हँसावे तो भी अन्त समय रुलाये बिना न रहेगी।
- मनुष्य पुण्य का फल सुख चाहता है, परन्तु पुण्य नहीं करना चाहता और पाप का फल दुःख नहीं चाहता, पर पाप नहीं छोड़ना चाहता। इसीलिए सुख नहीं मिलता और दुःख भोगना पड़ता है।
- गरीबी अपने आप में कोई अपमानजनक बात नहीं है। उसे दुत्कारा तब जाता है, जब वह मूर्खता, आलस, असावधानी या दुर्व्यसनों की बजह से आयी हो।
- आलस्य का सबसे बुरा फल, कुप्रवृत्तियों को उकसाना है।
- आलस्य वह राजरोग है, जिसका रोगी कभी नहीं सँभलता।
- जब तक तुम घमंड को छोड़कर बच्चों की तरह सरल नहीं हो जाते, जब तक तुम्हारा प्रवेश स्वर्ग के राज्य में नहीं हो सकता।
- आलस्य भिक्षावृत्ति की कुञ्जी और पापों की जड़ है।
- शैतान सब आदमियों को बहकाता है, किन्तु आलसी आदमी शैतान को बहकाता है।
- घबड़ाना तथा शिकायत करना, अज्ञान और आध्यात्मिक अन्धकार के निश्चित चिन्ह हैं।
- मूर्खता और दुराचार से आयु कम होती है इनसे बचे रहकर दीर्घजीवन प्राप्त किया जा सकता है। बहुत-से ऐसे मनुष्य हैं जो व्यर्थ ही अपने को दुःखी बनाकर अपने को नष्ट कर रहे हैं।
- बुद्धिमान मनुष्य सब मनुष्यों की कदर करते हैं, क्योंकि वे प्रत्येक मनुष्य में उसकी भलाई देखते हैं। मूर्ख लोग सबकी बेकदरी करते हैं क्योंकि वह भलाई को तो पहचान ही नहीं सकते और बुराई को चुन लेते हैं।
- अगर मूर्ख लोभ और मोह के पंजे में फँस जाएँ तो वे क्षम्य हैं, परन्तु विद्या और सभ्यता के उपासकों की स्वार्थान्धता अत्यन्त लज्जाजनक है।
- बद्धजीव जब तीर्थ में जाता है, तो उसे वहाँ भी ईश्वर-चिन्तन का समय नहीं मिलता, परिवार वालों की ही गठरी ढोते-ढोते जान जाती है। मंदिर में भी जाकर केवल लड़के को ही प्रणाम कराने और चरणामृत पिलाने में लगा रहता है। ऊँट काँटे खाता है, काँटे उसके मुँह में चुभते हैं और कष्ट देते हैं, लेकिन वह काँटे खाना नहीं छोड़ता। इसी प्रकार बद्धजीव संसार की यातनाएँ सहकर भी संसार में लिप्त रहता है। स्त्री मर जाती है तो फिर विवाह करते हैं, पुत्र के मरने के दुःख से व्याकुल हो उठते हैं, किन्तु फिर भी सांसारिक जाल में रत होते हैं।
- मूर्ख और आलसी तो तारागणों की तरह जैसे के तैसे बने रहते हैं। सम्पत्ति और विपत्ति के, लाभ और हानि के अवसर चन्द्रमा जैसे बड़ों पर आते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

- इन्द्रियसुख को ढूँढ़ते हुए मैं अनेक जन्मों में लगातार संसार में दौड़ता रहा। बार-बार जन्म में दुःख है। हे अज्ञान ! तू दिखाई दे गया। अब कभी तू नहीं फँसा सकेगा। तेरी सब कड़ियाँ टूट गईं, घर का शिखर बिखर गया। चित्त संस्कार मिट गया। तृष्णाओं का क्षय हो गया।

- रस्सी को जला देने से उसकी ऐंठ बनी रहती है, परन्तु उससे कोई काम नहीं ले सकते हैं। इसी प्रकार मनुष्य त्यागी होकर भी अहंकारी दिखाई दे, तो उसे निरर्थक ही समझना चाहिए।

- नीच दूसरों की यशरूपी अत्यन्त तीव्र अग्नि से जलकर और उसके पद को प्राप्त करने में असमर्थ होकर उसकी निन्दा करते हैं।

- संसार का काम, इष्टदेव का काम समझकर करो। इससे वह बन्धन का कारण न बनकर मुक्ति का कारण होगा।

- भलाई करने की गरिमा तभी बनती है, जब उसके साथ प्रतिफल का पुरस्कार पाने या प्रशंसा सुनने की दुर्बलता छिपी न हो। इन्हें चाहने पर भलाई का पुण्य भी चला जाता है और दूरगामी प्रतिफल उत्पन्न करने वाला लोभ भी हाथ नहीं लगता। न चाहने वाले को इनसे वंचित नहीं रहना पड़ता, वरन् धकेलने पर भी पीछे दौड़ता है।

- बिना कारण हँसे, अत्यन्त अविवेकी, विचारशून्य और बहुतों का शत्रु हो उसे मूर्ख जानो।

- बलवान से बैर करे, अपने शरीर पर गर्व करे, बिना बल के सत्ता दिखावे, आत्म-स्तुति करे, दरिद्र स्थिति में रहकर भी बड़ी-बड़ी डींगें हाँके, चिकित्सक एवं सत्ताधारी से अकारण विरोध करे वह मूर्ख है।

- मूर्ख घर में बड़े विवेकी बनते हैं। बहुत बोल कर अपने परिवार के भोले जीवों पर अपनी धाक जमाये रखते हैं एवं स्त्रियों के सम्मुख बहादुरी दिखाते और मौका पड़ने पर पीठ दिखाकर भागते हैं। स्त्रियों में वक्ता बनते हैं, किन्तु सभा में शर्माते हैं ये मूर्ख हैं।

- वृद्धों के सम्मुख ज्ञानीपना प्रकट करें, सात्विक और सरल हृदय के जीवों से छल करें, अपने से श्रेष्ठ के साथ स्नेह करने जावें और उन का उपदेश नहीं मानें वह मूर्ख हैं।

- बिना विचारे तनिक अपराध पर भी दंड दे। मामूली-मामूली बातों में भी कृपा दिखावे वह मूर्ख है।

- नीच से मित्रता करे, रात-दिन परछिद्रान्वेषण को तत्पर रहे वह मूर्ख है।

- विषयी और निर्लज्ज होकर मर्यादा से बाहर कार्य करता फिरे, रोगी होकर पथ्य का पालन न करे उसे मूर्ख जानो।

- व्यसनों के वश में होकर अपनी महत्ता को खो बैठे वह मूर्ख है।

- जहाँ अपमान होता हो, वहाँ बारम्बार जावे, बिना पूछे उपदेश देने लगे वह मूर्ख है।

- जेबों में हाथ डाले अकड़कर बात करे, वह मूर्ख है।

- फैशनपरश्ती की कुटेब में फँसकर अपने आप को रोगी बना ले, माँ-बाप का बात-बात पर अपमान करे, सिर्फ स्त्री एवं पुत्र मात्र को ही अपना कुटुम्ब मानकर लालन-पालन करे, अन्य आत्मीय स्वजनों से घृणा करे, अभक्ष्य-मांसादि का भक्षण करे, गरीब का अहित और अनादर करे, वह विद्वान होते हुए भी मूर्ख है।

- बात-बात में संशय और तर्क करे, अपनी गलती को मंजूर न करे, भौतिक वस्तुओं को ही सब कुछ जाने, प्रत्यक्ष के सिवाय किसी की बात पर विश्वास न करे ऐसे विद्वान अक्षरबोधी को पठित मूर्ख मानो।

- अपना पुत्र, शिष्य और सेवक अधिकारी होकर अपमान करने लगे, तब भी उसकी आशा न छोड़े। अपनी स्त्री एवं पुत्र के मुख पर उनकी प्रशंसा करे, उनके दुराचार को लोभ के वशीभूत होकर सहन करे, वह पठित होकर के मूर्ख है।

- रात-दिन उत्तम-उत्तम ग्रन्थों का पठन और श्रवण करते हुए भी अपने अवगुणों को त्यागे नहीं, अच्छे तत्त्वज्ञ पुरुषों की मस्खरी करता हो, अपने पारलौकिक हित को भूलकर मनमाना पापाचरण करता हो वह पठित मूर्ख है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

- गृहत्याग, वैराग्यधारण करके ईश्वरभजन नहीं करता, सन्त-महन्ताई के अभिमान में चूर होकर नामस्मरण को छोड़ देता है और संसारियों की तरह उदरपूर्ति के साधन व्यापार करने में अपने जीवन को खपा देता है, वह पठित होने पर भी मूर्ख ही है।
- जो स्वधर्म नित्य नैमित्तिक कर्मों से विमुख रहे। ऊँचे कुल में भी जन्मधारण करने पर भी नीच कर्मों में प्रवृत्त होने वाला विद्वान भी मूर्ख है।
- मैं ज्ञानी हूँ, सर्वज्ञ हूँ ऐसा मानकर ऐसे कार्य में हाथ डाल देता है, जो उसकी समझ और बूते से बाहर हैं, परन्तु कार्य सिद्ध न होने पर क्रोध कर उस पर अविश्वास प्रकट करता है, लोगों के अधिकार का विचार किए बिना उनसे बोलने का साहस करता है, वह पठित मूर्ख है।
- अपने ज्ञातापन के अभिमान से सर्वप्राणी मात्र में छिद्रान्वेषण किया करता है। अपने बाहरी एवं घरवालों से प्रेमपूर्वक बर्ताव न करता हो, जिसके बोलने से दूसरों का दिल दुखता हो अर्थात् कटुभाषी हो, ऐसे शिक्षित को पठित मूर्ख मानो।
- औरों को शास्त्रीय एवं महापुरुषों के चरित्रों की कथाएँ कहकर शिक्षा देता हो, स्वयं शिक्षा के अनुसार न चलता हो, पर दोष-दर्शन में महान चतुर और अपने दोषों को छिपाता हो, परम्परागत धर्म को तुच्छ दृष्टि से देखता हो तथा औरों को उनके आचरण से च्युत करता हो, उसे पढ़ा हुआ मूर्ख मानो।
- जो बढ़-चढ़कर ब्रह्मज्ञान की बातें करे, परन्तु झूठे मिथ्या अभिमान का त्याग न करे ऐसे को पठित मूर्ख जानना चाहिए।
- जिन गम्भीर विषयों पर विद्वान भी कुछ कहते हुए डरेंगे, उन्हीं विषयों पर मूर्ख लोग साहस करके खूब बढ़-चढ़कर बोलेंगे।
- **शक्तिमवाप्यैश्वक्तोऽसौ धनवानपि निर्धनः।**
  श्रुतवानपि मूर्खश्च यो धर्मविमुखो नरः।।
  धर्म से विमुख मनुष्य शक्तिमान होने पर भी निर्बल, धन, वैभव रहते भी निर्धन और वेद-शास्त्रों का ज्ञाता होने पर भी मूर्ख रहता है।
- मूर्खों का ही व्यापार लड़ाई करना है।
- **मूर्खस्य पञ्चचिह्नानि गर्वो दुर्वचनं तथा।**
  क्रोधश्च हठवादश्च परवाक्येष्वनादरः।।
  मूर्ख के पाँच चिन्ह हैं—घमंड करना, दुर्वचन बोलना, क्रोध करना, हठ करना और दूसरों की बातों का निरादर करना।
- जो कम पढ़ा है या नहीं पढ़ा है, वह मूर्ख नहीं। मूर्ख वह है, जो अपने को और दूसरों को ठगने का प्रयत्न करता है।
- वास्तविकता को न मानना, बड़ी-बड़ी बातें करना, मुख से अपशब्द बोलना मूर्खों का ही काम है।
- अपने सुहृदय के साथ बुरा व्यवहार करे, सुख और शान्ति का एक शब्द भी न बोले और नीच जनों की स्तुति करे, वह मूर्ख है।
- दूसरे को दुःख में देख हँसे और सुखी देखकर कुढ़े, गई वस्तु का शोक करे, अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा न कर सके, सदा हँसी-ठठ्टा करे, हँसते-हँसते लड़ने लग जाए, उसे मूर्ख जानो।
- घर में अपनी बड़ी बहादुरी प्रकट करे और बाहर दीन बनकर फिरे, उसे मूर्ख जानो।
- विद्या, वैभव, धन, पुरुषार्थ, बल और मान बिना मिथ्या अभिमान करने वाला मूर्ख होता है।
- किसी के किए उपकार को अपकार माने, अपना थोड़ा किया बहुत बतावे, ऐसे कृतघ्न को मूर्ख जानना चाहिए।
- विदेश में बिना परिचय किसी का साथ करे और जाने-बूझे बिना किसी बड़े नगर (शहर) में जावे यह लक्षण मूर्खों में ही होते हैं।
- बुरे का संग करे, आँख मींचकर मार्ग चले, पितृ, गुरुदेव, माता-पिता, गुरुभाई, स्वामी आदि बड़ों का विरोध करे, वह मूर्ख है।
- तामसी, आलसी, मन से कुटिल और अधीर मनुष्य मूर्ख होता है।
- जहाँ बहुत लोग बैठे हों, उनके मध्य में जाकर सोना और विदेश में हर व्यक्ति पर बिना जाने विश्वास कर लेना मूर्खता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

- सांसारिक विषय-वासना को ही मुख्य मानकर ईश्वर को भूल जावे, कर्त्तव्यज्ञान न हो, वह मूर्ख है।
- नीच की मित्रता, परस्त्री के साथ एकान्त और मार्ग चलते खाना मूर्ख के लक्षण हैं।
- क्रोध से, अभिमान से और कुबुद्धि से अपने आप ही बात करे, ऐसा अव्यवस्थित चित्त वाला मूर्ख है।
- मलीन रहना, दाँत, आँख, हाथ, वस्त्र और शरीर सर्वकाल मैले रखे यह कार्य मूर्खों ही के हैं।
- अपने आप को सब प्रकार से पूर्ण माने, शरणागत को धिक्कारे, लक्ष्मी और आयु का भरोसा करे वह मूर्ख है।
- समर्थ के साथ मत्सर करे, अलभ्य वस्तु की आशा करे, अपने ही घर में चोरी करे, घमण्ड के साथ बात करे, बायें हाथ से जल पीए एवं शौच आदि करते बोले, वह मूर्ख है।
- अगर कोई बुद्धिमान मूर्खों के साथ वाद-विवाद करे तो वह अपनी प्रतिष्ठा की आशा न रखे।
- यदि किसी पुरुष को अपने से अच्छा आदमी नहीं मिल सकता, अपने समान भी नहीं मिल सकता तो उसे चाहिए कि अपना समय एकान्त में व्यतीत करे। मूर्ख की संगति से प्रत्येक दशा में बचना चाहिए।
- जिसके उदर से जन्म लिया ऐसी माता और पिता के साथ विरोध करे, सर्वपरिवार को छोड़ स्त्री में रमा रहे, अपने गुप्त मत का प्रकाश स्त्री से करे, जो कि उसके दायरे से बाहर की बात है, वह मूर्ख है।
- ईश्वर को भूलकर मनुष्य पर विश्वास करे, निरर्थक अपनी आयु को नष्ट करे, संसार दुःख से भरा है; ऐसा जानकर भी विषयों में फँसे और मित्रों को भला-बुरा कहे, दूसरे के आश्रम में बिना कहे उच्चासन पर बैठे वह मूर्ख है।
- जब तक आदमी रुचियों और अरुचियों को अवसर देता है, ठीक तब तक उसकी आत्मा स्वतन्त्रता से अपरिचित ही रहती है।
- "तुम संसार की असार वस्तुओं एवं सुखों के साथ समझौता करके जीवन की बहुमूल्य सम्पदा नष्ट न करो। जब तक तुम्हें संसार की वस्तुएँ प्रिय लगती रहेंगी, तब तक अहंकार, कलह, कलंक, शोक-मत्सर, लोभादि दोषों से छुटकारा न होगा।
- मितव्ययता से जीवन-संग्राम में आधी विजय मिल जाती है।
- क्रोध का सबसे अच्छा उपचार है—विलम्ब।
- क्रोध में मधुर-स्मृतियों का लोप हो जाता है।
- "परमात्मा की इच्छा से ही सब कुछ होता है।" इस महामन्त्र की गलत व्याख्या करने वाले कुछ लोग ऐसा कहा करते हैं कि पाप भी परमात्मा की इच्छा से होता है। दुष्टात्मा और बदमाश आदमी अपने दोष को परमात्मा पर मढ़ देने की इस सुगम युक्ति से लाभ उठाने में बड़ी चतुरता दिखाते हैं। वे अक्सर ऐसा कहते सुने जाते हैं कि "क्या करें, परमात्मा की मर्जी, उसे जैसा करना था वही हो गया, भगवान की मर्जी के बिना तो पत्ता भी नहीं हिलता, फिर हम इतना बड़ा दुष्कर्म कैसे कर सकते थे ?" यह युक्तिवाद बड़ा ही गलत, झूठा, भ्रमपूर्ण और धूर्तता से भरा हुआ है। परमात्मा की एकमात्र आज्ञा यह है कि मनुष्य शुभकर्म करे, श्रेष्ठ मार्ग पर चले, यदि ध्यानपूर्वक कोई सुने तो हर एक मनुष्य के अन्तराल में से ऐसी आवाज हर समय उठती हुई सुनाई देगी जो सत्कर्म करने की ओर प्रोत्साहन देती है और दुष्कर्म करने से रोकती है। किसी दीन-दुःखी की सेवा-सहायता करते समय मन में एक दिव्य सन्तोष का अनुभव होता है और चोरी, हत्या आदि दुष्कर्म करते समय पैर काँपने लगते हैं, दिल धड़कने लगता है। परमात्मा की इच्छा और आज्ञा का यह प्रत्यक्ष लक्षण है।
- मनुष्य का दुष्ट चित्त, स्वार्थ और विषय-विकार शरीर और बुद्धि को कुमार्ग की ओर ललचाकर ले जाता है। यह असुर का, शैतान का प्रयत्न है। इसे परमात्मा की आज्ञा या इच्छा समझना एक बड़ी घातक भूल है, ऐसी भूल है जो अनीति के मार्ग पर सरपट दौड़ने के लिए रास्ता साफ कर देती है। चित्त की दुष्टता और दुष्कामना से तो हमें निरन्तर लड़ना और उस पर विजय प्राप्त करनी चाहिए। भगवान ने गीता में ऐसा ही उपदेश दिया है—

"जहि शत्रु महाबाहो, कामरूप दुरासदम्।"

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्वार्थ ही नहीं—परमार्थ भी

❑ बहादुरी के साथ श्रेष्ठ उद्देश्यों के लिए दुस्साहस भरे बलिदान करने वालों की यश गाथा चर्चा का विषय रहती है, किन्तु वे भी कम अभिनन्दनीय नहीं, जो निष्ठापूर्वक सतत सेवामय जीवन जीते और सर्वधारण के लिए आदर्श उपस्थित करते हैं। *—बल्लभ भाई पटेल*

❑ ऐ पेट ! एक रोटी में सन्तुष्ट रह, ताकि दूसरों की सेवा में पीठ न टेढ़ी करनी पड़े।

—शेखसादी

❑ **आदान हि विसर्गाय सतां वारिमुचामिव।**

—कालिदास

बादल पृथ्वी से जल लेकर फिर पृथ्वी को लौटा देते हैं, उसी प्रकार सज्जन पुरुषों को चाहिए कि वे समाज से जो कुछ पाएँ उसका दान भी करें।

❑ कुछ मत माँगो, बदले में कुछ मत चाहो। तुम्हें जो देना है, दे दो वह तुम्हारे पास लौटकर आयेगा, पर अभी उसकी बात मत सोचो। वह वर्धित होकर सहस्र गुना होकर वापस आयेगा, पर ध्यान उधर न जाना चाहिए। तुममें केवल देने की शक्ति है। दे दो, बस बात वहीं पर खत्म हो जाती है। *—स्वामी विवेकानन्द*

❑ जाग्रत होने का अर्थ चलते-फिरते, खाते-पीते दिखना मात्र नहीं है। जो केवल स्वार्थ में डूबा है, वह स्वप्न में डूबे जैसा ही है। जाग्रत व्यक्ति सम्वेदनाशील होता है, उदार और अनुशासित होता है। *—सुकरात*

❑ मनुष्यों को मनुष्य होने के कारण प्यार करना चाहिए, न कि उनकी सम्पत्ति, विद्या या अधिकार के कारण। *—लाला लाजपतराय*

❑ अमीरी प्राप्त करने के लिए भी त्याग और परिश्रम की आवश्यकता होती है, परन्तु वह त्याग और परिश्रम व्यक्तिगत लाभ, प्रतिष्ठा और स्वार्थ के हेतु किए जाते हैं, इसलिए वे समाज-विघातक सिद्ध होते हैं।

—दादा धर्माधिकारी

❑ पड़ोस में आग लगी हो और अपनी चिन्ता करे, वह व्यक्ति समाज का भी शत्रु है, स्वयं अपना भी। *—वायरन*

❑ **यावज्जीवेत् तत्कुर्याद् येन प्रेत्य सुखं वसेत्।**

जीवन भर वह काम करे जिससे परलोक में सुख मिले अर्थात् पुण्य कर्म करे।

❑ सबसे पहले दूसरों की सहायता करो। परोपकार में व्यय करने के पश्चात् बचे हुए का खुद उपभोग करो। कभी लालच मत करो। लालच करने का परिणाम बहुत बुरा होता है। धन किसका है ? इसका विचार करो। सब धन परमेश्वर का ही है।

❑ अल्लाह की राह में खर्च करो और अपने हाथों अपने को विनाश में न डालो और उपकार करो। निस्संदेह अल्लाह उपकारी लोगों को मित्र बनाता है। *—सूरये बकर १। २। २३*

❑ बहुतों का बहुत सुख हो, यही बात नीति की दृष्टि से न्याय और ग्राह्य है। इसी आदर्श पर चलना मनुष्य का कर्त्तव्य है। *—बेंथम*

❑ विनम्रता एक संकेत है, जिसे पवित्रता और शालीनता का परिचय देने के लिए चेहरे पर लटका हुआ देखा जा सकता है। *—सेम्युअल*

❑ संसार में जितनी भी विपत्तियाँ दिखाई देती हैं, उनका मूल कारण वैयक्तिक विचारधारा है। हर आदमी अपने लिए ही सोचने का आदी हो गया है। अलग-अलग सोचने के कारण ही मनुष्य में स्वार्थ की वृद्धि हो जाती है, जिससे पग-पग पर संघर्ष उत्पन्न होने लगता है और सारा संसार एक जलता हुआ नरक कुण्ड बन जाता है। ऐसी दशा में जिस मनुष्य ने अपना आत्म-परिष्कार कर लिया है, वह भी उपयुक्त परिस्थितियाँ प्राप्त नहीं कर पाता है। इन सब बातों का विचार करते हुए यही उचित दिखता है कि मनुष्य वैयक्तिक सुधार के साथ-साथ सामूहिक सुधार का भी प्रयत्न करे। *—कागावा*

❑ **शुद्धपक्षस्य शुद्धस्य हंसौघः सरसो यथा।**
यस्माद्गुणौघो निर्याति जीवितं तस्य शोभते।।

—योगवासिष्ठ ५। ३६। ५३

निर्मल जल भरे सरोवर में से जैसे सफेद हंसों के झुण्ड निकलते हुए शोभायमान होते हैं, वैसे ही जिसमें सद्गुणों का समूह दृष्टिगोचर होता है, उसी का जीवन शोभा पाता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ जीवन एक वृक्ष की तरह होना चाहिए कि उसका कुछ भाग हिलने-डुलने वाला हो और कुछ भाग स्थिर रहने वाला, यही जीवन की पूर्ण कृतार्थता है। हम जीवन के विस्तृत व्यवहार में हिलते-डुलते रहें, समन्वयवादी रहें, पर सत्य के, सिद्धान्त के प्रश्न पर हम स्थिर रहें, दृढ़ रहें और टूट भले ही जाएँ, पर हिलें नहीं, समझौता करें नहीं।

❑ जीवन इतना तो छोटा नहीं है कि परोपकार के लिए भी समय न मिल पाये। *—एमर्सन*

❑ जो परमार्थ रत हैं, जीवन तो उन्हीं का धन्य है।

❑ जो शूरवीर समरांगण में युद्ध करते-करते शरीर त्याग करते हैं अथवा जो दानवीर समाज और राष्ट्र के हितकारी कार्यों के लिए अपनी सम्पत्ति लोकहित के लिए देकर शरीर-त्याग करते हैं, वे समान रूप से सद्गति को प्राप्त होते हैं।

❑ यज्ञ नित्य कर्त्तव्य है, चौबीसों घण्टे आचरण में लाने की वस्तु है। निष्काम सेवा परोपकार नहीं, बल्कि निज के ऊपर उपकार है। जैसे कर्ज चुकाना परोपकार नहीं, बल्कि अपने ऊपर उपकार है, अपने ऊपर से भार उतारना है।

❑ त्याग के माने संसार से भागकर जंगल में जा बसना नहीं है, बल्कि जीवन की प्रवृत्ति मात्र में त्याग का संचार करना है। एक गृहस्थ का जीवन त्यागमय और भोगमय हो सकता है। मोची का जूते सीना, किसान का खेती करना, व्यापारी का व्यापार करना और नाई का हजामत बनाना त्याग-भावना से भी हो सकता है व उसमें भोग की लालसा भी हो सकती है। जो यज्ञार्थ व्यापार करता है, वह करोड़ों के व्यापार में भी लोकसेवा का ही ख्याल रखेगा। वह किसी को धोखा नहीं देगा, सादगी से रहेगा, किसी की हानि नहीं करेगा।

❑ यज्ञ करने वाले अनेक लोग मानते हैं कि हम निष्काम-भाव से सेवा करते हैं, अतः लोगों से आवश्यकता भर को और अनावश्यक भी लेने का हमें परवाना मिल गया है। यह विचार आया और सेवकाई गई, सरदारी आई। सेवा में अपनी सुविधा के विचार की गुंजाइश ही नहीं होती। सेवाकार्य में बेगार भी नहीं काटी जाती। अपना काम तो सँवारे, लेकिन पराया काम बिना पैसे से करना है, इस ख्याल से जैसा-तैसा या जब चाहे तब करने में भी हर्ज न समझने वाला यज्ञ व्यवहार भी नहीं जानता। शुद्ध यज्ञ करने वाले के लिए अपना कुछ नहीं है। उसने सब 'कृष्णार्पण' कर दिया है। *—महात्मा गाँधी*

❑ सड़ी लकड़ी स्वयं तो पानी में पार हो जाती है, पर यदि कोई छोटा पक्षी भी उस पर बैठ जाए तो डूबने में देर नहीं लगती, किन्तु नाव में लगी हुई मजबूत लकड़ी स्वयं पार होने के साथ-साथ दूसरों को भी पार करती है।

जो अपने ही उद्धार की चिन्ता करते हैं, वे सड़ी लकड़ी के समान हैं, किन्तु जो स्वयं पार होते और दूसरों को पार करते हैं, वे नाव के समान प्रशंसा योग्य माने जाते हैं।

—रामकृष्ण परमहंस

❑ उस मनुष्य के लिए अग्नि जल के समान हो जाती है, समुद्र तत्काल नहर के समान हो जाता है, मेरु पर्वत छोटे-से पत्थर के समान हो जाता है, सिंह का झुण्ड मृग के समान हो जाता है, सर्प माला की डोर के समान हो जाता है—जिस मनुष्य के शरीर में सम्पूर्ण प्राणियों के लिए अत्यन्त प्रिय, शील, सदाचार चमकता रहता है। *—भर्तृहरि*

❑ आदमी मर जाता है, उसके साज-सामान, महल, तिवारे टूट-फूट जाते हैं, परन्तु कीर्ति ऐसी वस्तु है, जो युगों तक जीवित रहती है। जिसने सर्वस्व देकर यश कमाया, उसने बहुत अच्छा व्यापार किया। बर्साती फूँस को बेचकर एक पक्का कोठा खरीद लेना बुद्धिमानी है। वे महान आत्मा हैं, जो अपना जीवन उज्ज्वल कीर्ति कमाने में लगाते हैं, उन अभागों के पैदा होने से क्या लाभ जो जीवन भर पेट भरते रहे और अन्त में कुत्तों की मौत मर गये। आदमी की सबसे बड़ी सफलता और इज्जत यह है कि वह अपने पीछे ऐसी कोई बात छोड़ जाए, जिसके लिए लोग उसकी सराहना करें और बार-बार स्मरण करें। वे जीवित रहेंगे जो पवित्र जीवन बिताते हैं और उज्ज्वल कीर्ति का सम्पादन करते हैं। जिन्हें अपने भविष्य की चिन्ता नहीं और स्वार्थ की परिधि से आगे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कुछ नहीं देख सकते, वे मुर्दे हैं, भले ही वे साँस लेते हों या खाते-पीते और चलते-फिरते दिखाई देते हों। मूर्ख लोग धन जमा करके रख जाते हैं, ताकि पीछे वाले चन्द लोग खाएँ और खुश रहें। कितना अच्छा होता, यदि वह अपने सामने ही सत्कार्यों में उसे लगाता, ताकि वह श्रेष्ठ भूमि में उगता और अपनी छाया में असंख्य प्राणियों को शान्ति देता।

❑ बेवकूफ उसे कहते हैं, जो फायदे की चीज को फेंक देता है और हानि करने वाली वस्तुओं को अपनाता है। जो कड़ुई और अनर्गल बातें अपनी जिह्वा से बकते हैं, उन्हें बेवकूफ के अलावा और क्या कहा जाए ? कोई आदमी कितना ही पढ़ा-लिखा और चतुर क्यों न हो, पर यदि वह भलाई को छोड़कर बुराई अपनाता है, तो उसे पहले सिरे का मूर्ख समझना चाहिए। *—सन्त तिरुवल्लुवर*

❑ **मनसा वाचा कर्मणा जो नर एक समान।**
तामें और भगवान में, किंचित भेद न जान।।

इस पद से हमें यह शिक्षा मिलती है कि मनुष्य जैसा मन से सोचे वैसा ही वाणी से कहे और जैसा वाणी से कहे वैसा ही कार्य-रूप में करके दिखावे—यही सत्पुरुषों के कार्य करने का मार्ग है। उनके वह तीनों स्थान एकता और सत्य की डोरी से बँधे हुए होते हैं तभी उनके हृदय मन्दिर में भगवान आ विराजते हैं, जिनकी शक्ति से हर कठिन से कठिन कार्य आनन-फानन में उनके द्वारा होता दिखाई देता है, जिसे देखकर दूसरे व्यक्ति जिनके मन, वाणी और कार्य में एकता नहीं है, आश्चर्य में भर दाँतों में अँगुली दबाते हैं। इसी गुरु को काम में न लाकर मनुष्य पापों के दलदल में फँसते रहते हैं और अपनी हर प्रकार की उन्नति में स्वयं बाधा पहुँचाते हैं। हम जो कुछ भी करते हैं, वह सर्वप्रथम मन से होता है। उपर्युक्त पद में भी मनसा (मन) शब्द कवि ने प्रथम इसीलिए रखा है। कार्य का प्रथम स्थान मन है। आध्यात्मिक उन्नति के लिए तो मन का पवित्र करना अति आवश्यक कहा गया है। मन को पवित्र करने के लिए वेद में भगवान से अनेक प्रार्थना की गई हैं। मन से जैसा हम सोचते हैं, वास्तव में कार्य की वही आकृति है। पाप-पुण्य का स्थान भी हमारा मन है। हानि-लाभ, सुख-दुःख भोगवश प्राप्त होते हैं, ऐसा महात्मा तुलसीदास जी ने रामायण में कहा है। मनुष्य किसी का हानि-लाभ नहीं कर सकता। हम दूसरे को अपने मन से हानि पहुँचाना सोचते हैं, जो कि भोगवश उसको पहुँचना अवश्य था, तो इस प्रकार मन ने उसके लिए बुरा चाहकर हमने अकारण पाप मोल ले लिया, क्योंकि हानि तो हमारे बिना चाहे भी अवश्य उसे होती। इसी प्रकार यदि हम मन से किसी की भलाई चाहते हैं और भलाई उसके भोगवश उसे मिलती है, तो हम अनायास ही पुण्य के भागी बन जाते हैं, इसलिए मन से सदा दूसरों का कल्याण ही सोचना श्रेष्ठ और हितकर है। दूसरों का हानि, लाभ विचारना अपना ही हानि-लाभ विचारना है, जो दूसरों का लाभ सोच रहे हैं, वह अपना लाभ कर रहे हैं। इसके द्वारा उनका मन शुद्ध, पवित्र बन रहा है, मन शुद्ध होकर प्रभु के पवित्र प्रेम को प्राप्त करेगा, जो मुक्ति जैसे दुर्लभ सुख की प्राप्ति का हेतु होगा। अतएव मन से सदैव दूसरों का कल्याण सोचिए। होगा तो वही जो होना है, अकारण क्यों बात-बात में पापी बना जाए ? *—श्री धर्मपाल जी बिरला*

❑ मैंने इतना किया, पर इसका बदला मुझे क्या मिला ? उतावले मनुष्य ! बदले के लिए इतनी जल्दी क्यों करते हो ? बादलों को देखो, वे सारे संसार पर जल बरसाते फिरते हैं, किसने उसके अहसान का बदला चुका दिया ? बड़े-बड़े भूमिखण्डों का सिंचन करके उनमें हरियाली उपजाने वाली नदियों के परिश्रम की कीमत कौन देता है ? हम पृथ्वी की छाती पर जन्मभर लदे रहते हैं और उसे मल-मूत्र से गन्दी करते रहते हैं, किसने उसका मुआवजा अदा किया है ? वृक्षों से फल, छाया, लकड़ी पाते हैं, पर उन्हें क्या कीमत देते हैं ? परोपकार स्वयं ही एक बदला है। इस समय तुम उसे व्यर्थ समझ रहे हो, पर जब तुम परोपकार करने का स्वयं अनुभव करोगे, तो देखोगे कि ईश्वरीय वरदान की तरह यह दिव्य गुण स्वयं ही कितना शान्तिदायक है, हृदय को कितनी महानता प्रदान करता है। उपकारी जानता है मेरे कार्यों से जितना लाभ दूसरों का होता है, उससे कई गुना स्वयं मेरा होता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ज्ञानवान पुरुष जो कमाते हैं, वह दूसरों को बाँट देते हैं, वे सोचते हैं कि प्रकृति जब जीवन सरीखी बहुमूल्य वस्तु मुफ्त दे रही हैं, तो हम अपनी फालतू चीजें दूसरों को देने में कंजूसी क्यों करें ? वह बुरे दिनों में और विपत्तियों की घड़ियों में भी इस दिव्यगुण का परित्याग नहीं करता। वह जब भौतिक पदार्थ देने में असमर्थ होता है, तो अपनी सद्भावनाएँ और शुभकामनाएँ ही दूसरों को देता रहता है।

—सन्त तिरुवल्लुवर

❑ इतना काम करो कि तुम सुखी हो अथवा दुःखी, इस ओर तुम्हारा ध्यान भी न जाए। काम स्वयं ही आनन्द की स्थिति है, पर इसके लिए तुम्हें आपको पूर्ण रूप से घुला देना पड़ेगा। इस जीवन का सच्चा सुख है—ऐसे उद्देश्य में जिसे तुम स्वयं ही महान समझते हो काम आ जाना। अपने व्यक्तिगत कामों से कुछ समय निकालकर उसे परोपकार में लगा देना। समाज की भलाई का उत्तरदायित्व भी तुम्हारे ऊपर उतना ही है जितना तुम अपने शरीर के प्रति कर्त्तव्यों का पालन करते हो। तुम्हारा हित भी सबके हित में ही सन्निहित है और उसे सबकी भलाई के साथ ही प्राप्त करना है। कहीं तुममें स्वार्थ का भाव न आ जाए तो अपने भौतिक सुखों के पीछे अपनी ही छाया की तरह चिपटे रहो। तुम्हें सबकी भलाई, सबके कल्याण के लिए पैदा किया गया है, अतः यह आवश्यक भी है कि तुम अपना अस्तित्व समाजोत्थान के लिए काम करते-करते घुला दो। एक कर्मठ-शक्ति बनकर जीना अच्छा है, बजाय इसके कि तुम रोग और स्वार्थ से ग्रसित तथा क्षुद्रपीड़ा सहते हुए रोते फिरो कि दुनिया तुम्हें सुखी बनाने की ओर कुछ ध्यान नहीं देती। अपनी माँग पेश करने के बजाय यह अच्छा है कि तुम शान और साहस के साथ सबके लिए जियो। संसार की भलाई में ही जिस दिन पूर्ण व्यस्त हो जाओगे, उस दिन संसार तुम्हारे सारे सुख लौटा देगा।

—जार्ज बर्नार्ड शॉ

❑ आपके सोचने के लिए संसार में बहुत कुछ है। सदा अपनी ही बात मत सोचिये। अपनी ही उलझनों में मस्तिष्क को मत उलझाये रहिये, वरन् यह भी देखिए और सोचिए कि संसार में दूसरे लोगों के सामने जो समस्याएँ उपस्थित हैं, वे आपकी ही तरह हैं या नहीं। हर व्यक्ति अपनी ही चिन्ता में डूबा रहे तो वह उन्हें सुलझा न सकेगा, क्योंकि हर मनुष्य की कठिनाइयों और सुविधाओं में बहुत कुछ दूसरे लोगों का भी योग होता है। यदि हम अन्य लोगों के प्रति उपेक्षा करते हैं तो वे भी वैसा ही कर सकते हैं और जब दूसरों का साहाय्य न मिलेगा तो अकेले अपने बल-बूते हम अपनी हर समस्या सुलझा सकें यह भी सम्भव न होगा।

वस्तुतः कठिनाइयों का एक बड़ा कारण यह होता है कि दूसरों ने हमारे कार्यों में दिलचस्पी नहीं ली या सहयोग नहीं दिया। उन्होंने ऐसी उपेक्षा क्यों बरती ? इसका कारण उन लोगों का दोष हो सकता है, पर निश्चय ही एक कारण यह भी होता ही है कि उनके प्रति हम भी उपेक्षा या असहयोग की नीति अपनाये रहे हैं। जितना स्नेह-सौजन्य एक मनुष्य को दूसरे के साथ दिखाना चाहिए, उसमें न्यूनता बरतने से ही वे कठिनाइयाँ उठ खड़ी होती हैं, जो परस्पर सद्भाव बनाये रहने पर न उठतीं।

—बांग सूचिनवे

❑ धागे में गाँठ लगी हो तो वह सुई की नोंक में नहीं घुस सकता और उससे भलाई नहीं हो सकती। मन में स्वार्थ भरी संकीर्णता की गाँठ लगी हो तो वह ईश्वर में नहीं लग सकता और जीवन-लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सकता।

❑ जिनका भला करना चाहिए यदि तुझमें शक्ति रहे तो भला करने से न रुकना। यदि तेरे पास देने को कुछ हो तो अपने पड़ोसी से कहना कि कल फिर आना, कल मैं तुझे और दूँगा। जब तेरा पड़ोसी तेरे पास बेखटके रहता है, तब उसके विरुद्ध बुरी युक्ति न बाँधना। जिस मनुष्य ने तुझसे बुरा व्यवहार न किया हो, उससे अकारण मुकदमा खड़ा न करना। उपद्रवी पुरुष के विषय में डाह न करना और न उसकी-सी चाल चलना।

❑ लोग मित्र से प्रेम करते हैं और शत्रु से द्वेष। पर मैं तुझसे कहता हूँ कि बैर रखने और शत्रुता बरतने वाले के साथ भी तुम सज्जनता बरतना। अन्यायी अपनी मौत मरेगा, पर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सज्जनता सदा जीवित रहेगी। कृतघ्नों के प्रति भी करुणा बरतो, क्योंकि ईश्वर भी वैसा ही करता है।

- यदि कोई चाहे कि दुनिया में अपना स्वार्थ-साधन भी करे और ईश्वर को भी प्राप्त कर ले, तो यह असम्भव है।
- भक्त वह नहीं, जो नाम रटता रहता है, वरन् वह है, जो उसकी प्रजा को सुखी और समुन्नत करने के लिए अपनी सुविधाओं की बाजी लगाता है।
- अपने सुख के लिए दूसरों को कष्ट देना महापाप है।
- दूसरों के अधिकारों का अतिक्रमण करने वाली शक्ति न तो चिरस्थायी होती है, न शान्ति देती है। शक्ति वह है, जो स्वयं बढ़े और दूसरों को बढ़ाये।
- दूसरों की उन्नति करने में स्वाभाविक ही तुम्हारी भी उन्नति हुआ करती है। दूसरों की भलाई करने में तुम अपने अहंकार और लौकिक हित को जितना ही भूलोगे, उतना ही उसका परिणाम अधिक शुभ होगा।
- तुम प्रतिदिन दूसरों के कष्टों का विचार करो, फिर तुम देखोगे कि तुम अपने आपका कष्ट भूल से गये हो।
- **परोपकारशून्यस्य धिङ् मनुष्यस्य जीवितम्।**
  जीवन्तु पशवो येषां चर्माप्युपकरिष्यति।।
  मनुष्य होकर भी जो किसी का कोई उपकार नहीं करता उसके जीवन को धिक्कार है। उससे अच्छे तो वे पशु ही हैं, जिनका चमड़ा मरने पर दूसरों के काम आता है।
- **आत्मार्थं जीव लोकेऽस्मिन्को न जीवति मानवः।**
  परं परोपकारार्थं यो जीवति स जीवति।।
  अपने आपके लिए इस जीवलोक में कौन मनुष्य नहीं जीवित रहता है ? पर सच्चा जीवन उसी का है, जो परोपकारार्थ जीता है।
- जब संसार में चारों ओर अत्याचार, अन्याय, स्वार्थ आदि का साम्राज्य फैला हो, तो यह मानकर कि हमारा कर्त्तव्य पूरा हो गया, ईश्वरीय प्रेम में मग्न या मस्त रहने से मानवता की वृद्धि नहीं हो सकती।
- प्रत्येक से प्यार करो, थोड़े में सन्तोष रखो, किसी को भी दुःख न देना चाहिए।
- धनहीन मनुष्य को तो उसके स्त्री, पुत्र भी त्याग देते हैं।
- मुकुट बनकर इतराने वाले फूल की क्या प्रशंसा ! सराहो उन शूलों को जो कली की लाज बचाने के लिए कमर कसे रहते हैं।
- जब स्वार्थ का अन्त समय आ जाता है, तब क्लेश का भी अन्त समय होता है।
- **उपकुर्याण्निराकांक्षी यः स साधुरितीर्यते।**
  साकांक्षमुपकुर्वाणः साधुत्वे तस्य को गुणः।।
  जो निःस्वार्थ भाव से किसी का उपकार करता है, वही वास्तव में साधु है, पर जो किसी आकांक्षा से किसी का उपकार करता है, उसकी साधुता का क्या महत्त्व है ? अर्थात् वह तो साधारण लोकव्यवहार है।
- परामर्श देने वालों की कमी नहीं, पर अन्तरात्मा से बढ़कर उत्तम सलाह देने वाला और कोई नहीं। भटकाने वाले बहुत हैं, पर लालच से बढ़कर धूर्त और कोई नहीं।
- याद रखना चाहिए कि दूसरों का भला करने वालों का परिणाम कभी बुरा हो ही नहीं सकता।
- तुम वैभव और परमेश्वर दोनों की सेवा एक साथ नहीं कर सकते।
- गरीबी एक अपराध है और आधुनिक सभ्यता की देन है, जहाँ भाई का नाता भी 'पोजीशन' की मर्यादाओं में बँधा है, जहाँ श्रद्धा, भक्ति यहाँ तक कि जीवन-संगिनी पत्नी के प्रेम की भी कीमत है। यह आधुनिक सत्यता है।
- संकीर्ण स्वार्थपरता देखने में स्वाभाविक और निर्दोष जैसी प्रतीत होती है, पर उसी के कारण व्यक्ति अनुदार एवं निष्ठुर बनता है। लोभ-लिप्सा की महत्त्वाकांक्षाएँ जब उत्तेजित होती हैं तो मनुष्य उद्दण्ड, अपराधी, दुष्ट एवं भ्रष्ट बनता चला जाता है। परमार्थपरायणता का श्रेय साधने के लिए जिस उदार सेवा-साधना की आवश्यकता पड़ती है, उसे जुटा सकना लोभ-मोह से आकुल व्यक्ति के लिए किसी प्रकार सम्भव नहीं हो पाता। उदारता ही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अध्यात्म है, उसी के सहारे जीवन-लक्ष्य की प्राप्ति होती है। यह महान उपलब्धि स्वार्थपरता का नियमन करने से ही हस्तगत होती है।

❑ जैसी नदियाँ अपने जल को सागर में बहाकर ले जाती हैं, जहाँ से वह पहले आया था। इसी प्रकार कृतज्ञ मानव को प्रसन्नता होती है, जब वह उस लाभ को वहाँ ही पहुँचा देता है, जहाँ से उसने प्राप्त किया था।

❑ **वरमगी तरवो वन गोचराः**
शकुनिसार्थ विलुप्त फलश्रियः।
न तु धनाढ्यगुहाः कृपणाः फणाः
निहित रत्न भुजंगमवृत्तयः।।
सर्प के समान फन में मणि रखने वाले इन धनी कंजूसों से तो वन के वृक्ष ही अच्छे जिनकी फलश्री का लाभ पक्षीगण उठाते हैं।

❑ हमेशा दूसरों की नेकी और भले का ख्याल रखो। किसी की बुराई स्वप्न में भी मत सोचो। किसी को फरेब और जाल में फँसाकर धोखा मत दो। किसी के साथ असभ्यता से पेश मत आओ। हमेशा नेकचलन रहो।

❑ मनुष्यों की ईमानदारी की माप उनके कथन से नहीं, किन्तु उनके आचरण से होती है।

❑ दूसरों की सहायता और सेवा करना बड़ी उत्तम बात है, पर तभी हो सकता है, जब तुम स्वयं सच्चे और पवित्र बन जाओ।

❑ प्रत्येक को अपनी उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिए, बल्कि सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझना चाहिए।

❑ शान्ति और दृढ़निश्चय का साथ जब न्याय-युक्त कारण के साथ होता है, तब उसके नतीजे में हमेशा जीत ही मिलती है। न्याय के कारण मनुष्य प्राण छोड़ दे, यह उसका कर्त्तव्य है। अपने लिए प्राण छुड़वा लेना पशु का नियम है।

❑ कृपण का धन उस ढँके हुए तालाब के समान है, जो किसी के काम नहीं आता और निरर्थक पड़ा-पड़ा सूख जाता है।

❑ जैसे धीवर आँकड़ा डालकर मछली मारता है, वैसे ही पाप, मनुष्य को लोभ के फन्दे में डालकर मारता है।

❑ छल सबसे बड़ी नीचता है। जो दूसरों को धोखे में डालकर अपना उल्लू सीधा करता है, उसे निकृष्ट श्रेणी का मनुष्य समझना चाहिए।

❑ जो दूसरों को धोखा देना चाहता है वास्तव में वह अपने आप को ही धोखा देता है।

❑ जो व्यक्ति दूसरों से जितनी घृणा करता है समझिए कि वह परमात्मा से उतनी ही दूर है।

❑ ज्ञानियों का अधिकार भी है और उत्तरदायित्व भी कि वे अज्ञानियों को समझाएँ और घसीटकर सही रास्ते पर लाएँ।

❑ प्रिय व्यक्ति के लिए भी मानवता के सिद्धान्त ताक पर मत रखिये।

❑ नाव स्वयं ही नदी पार नहीं करती। पीठ पर अनेक को भी लादकर उतारती है। सन्त भी अपनी सेवा-भावना का उपयोग इसी प्रकार किया करते हैं।

❑ **अर्थी करोति दैन्यं लब्धार्थो गर्वपरितोषम्।**
नष्टधनश्च स शोकं सुखमास्ते निःस्पृहः पुरुषः।।
धन को चाहने वाला मनुष्य दीनता करता है और जो धन प्राप्त कर लेता है, वह घमण्ड करने लगता है और जिसका धन नष्ट हो जाता है, वह शोक करता है किन्तु निस्पृहजन सुखी रहता है।

❑ एकान्त सेवन का उद्देश्य है, जन-समुदाय के साथ उपयोगी आदान-प्रदान की क्षमता का अर्जन।

❑ जो स्वार्थ की साधना में लगा रहता है, वह पाता कुछ नहीं, खोता बहुत है। जो इन्द्रियों की तृप्ति में ही लगा रहता है, उसे उसकी वासना ही खा जाती है, तृष्णा से किसी की तृप्ति नहीं हुई। जो इसी सीमा तक अपने को बाँधे रहता है, उसका जीवन असफल ही कहा जाएगा। बुद्धिमान वह है जो सबकी भलाई में अपना हित देखता है और सोचता है कि दूसरों को सुखी बनाकर ही मैं सुखी रह सकूँगा।

❑ खुद अच्छा बन गया तो क्या हुआ ? जो गलत चल रहे हैं, उन्हें भी तो नेकी की राह पर चलाने की कोशिश कर।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

- जीवन उसी का धन्य है जो अनेक को प्रकाश दे। प्रभाव उसी का धन्य है, जिसके द्वारा अनेक में आशा जाग्रत हो।

- दूसरों की अवनति करके, दूसरों की बुराई करके आप अपनी उन्नति या भलाई करने में समर्थ नहीं हो सकते। आपकी उन्नति उन्हीं कार्यों द्वारा होनी सम्भव है, जिनमें दूसरों की भी उन्नति होती है।

- जो अपने लिए उचित न समझो, दूसरों के लिए भी वैसी इच्छा मत करो। सब किसी के हक को पहचानो।

- स्वार्थ से भरा हुआ प्रेम हृदय को कलुषित करता है। अपने सुख की लालसा और पवित्र प्रेम परस्पर भिन्न वस्तु हैं। प्रेम कंचन है और स्वार्थ काँच है।

- जो अपना सुधार कर लेता है, वह एक दर्जन बातूनी नेताओं की अपेक्षा जनता की अधिक भलाई करता है।

- वेद में कहा गया है कि "जो लोग सम्पूर्ण प्राणियों के हित में संलग्न रहते हैं, परमात्मा उनका भार स्वयं वहन करता है", पर समाज के प्रति अपने कर्त्तव्यों का समुचित रीति से पालन न करने वाले ईश्वरभक्त आत्म-कल्याण में समर्थ नहीं होते। समाज भी तो मनुष्य का अपना ही स्वरूप है। अपने स्वार्थ की पूर्ति में तो उद्यत रहा जाए, पर अपने ही समान अपने समाज के प्रति परमार्थ का ध्यान न रखा जाए तो उस ईश्वर-उपासना से आत्म-सन्तोष होना सर्वथा असम्भव है।

- मनुष्य-जन्म पशु-जीवन से इसलिए श्रेष्ठ और ऊँचा माना गया है कि उसमें पेट-प्रजनन से आगे बढ़कर ऊँचा उठकर, कुछ सोचने और करने की ईश्वरप्रदत्त विशेषता विद्यमान है। दूसरे प्राणी यह सब नहीं कर पाते। उन्हें शरीर की आवश्यकताएँ पूरी करने भर में अपने सारे क्रिया-कलापों को सीमित रखना पड़ता है। बलपूर्वक उनसे कोई लाभ उठाने की बात दूसरी है, पर पशु जान-बूझकर स्वेच्छा-भावना से किसी का उपकार करने की, दूसरों को सुखी बनाने की बात प्रायः कम ही सोचते हैं। सोचते हैं तो वह परिधि सन्तान एवं साथियों तक सीमित होकर रह जाती है। दूरदर्शिता का आश्रय लेकर सुविस्तृत विश्व में शान्ति-सुविधा बढ़ाने की बात वे कहाँ सोच पाते हैं ? और ऐसा कुछ कहाँ कर पाते हैं ? इसी विवशता के कारण पिछड़े प्राणी वर्ग को हेय स्थिति में समझा जाता रहा है और मनुष्य की स्थिति उनसे अच्छी बताई जाती रही है।

  मानवीय महानता के प्रधान आधार यही हैं कि वह अपने को आदर्श बनाये, उत्कृष्ट चिन्तन प्रक्रिया को अपनाये और ऐसे कार्य करे, जिनमें भले ही उसे त्याग करना पड़े अथवा कष्ट सहना पड़े, किन्तु दूसरों की समाज और युग की सेवा के लिए बढ़-चढ़कर अनुदान प्रस्तुत कर सके। इस स्तर के जीवन को ही मानव-जीवन की गौरव-गरिमा के साथ अलंकृत और सम्मिलित किया जा सकता है।

- शरीर को जहाँ भौतिक सुविधाओं, सुख-साधनों से सन्तोष मिलता है, वहाँ आत्मा को परमार्थ में सुखानुभूति होती है। जब तक मनुष्य स्वयं को परहितार्थाय नियोजित नहीं करता, तब तक आत्मा असन्तुष्ट ही बनी रहेगी। सारी सुख-सुविधाएँ एक ओर तथा अन्तः की अशान्ति एक ओर। वास्तविक सुख है—आत्मा की तुष्टि। इसी को व्यावहारिक स्वरूप देने के लिए सेवा-साधना का विधान आर्यसंस्कृति में बनाया जाता रहा है। जो काम उच्च और उज्ज्वल उद्देश्य की पूर्ति हेतु किए जाते हों वे ही परमार्थ हैं। यद्यपि परमार्थ का क्षेत्र बहुत विस्तृत है, पर सामान्यतः उसका सर्वसुलभ रूप किसी न किसी रूप में दूसरों की सेवा ही बनता है। सेवाभावी का जीवन ही सफल और सार्थक माना जाता है।

- मेंहदी पीसने वालों के हाथ स्वयं भी रँग जाते हैं। सेवा करने वाला इसी प्रकार अपना हित भी साधता है, दूसरों को सन्तोष भी देता है। इससे आत्मिक सन्तोष, प्रफुल्लता व सद्भावना जैसे अनेकानेक गुण अपने अन्दर विकसित होते हैं। इस प्रक्रिया से अपना अन्तरंग तो फलता-फूलता है ही, बहिरंग-व्यक्तित्व भी परिष्कृत होता है। व्यक्तित्व ही मनुष्य की मूल सम्पदा है। ऐसे व्यक्ति ही लोकसम्मान पाते व यश के भागी बनते हैं। सेवा-साधना किसी भी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दृष्टि से घाटे का सौदा नहीं, यह हर किसी को जान लेना चाहिए।

- दान और कुछ नहीं, उधार देने की एक वैज्ञानिक पद्धति है। जो कुछ हम दूसरों को देते हैं, वह हमारी रक्षित पूँजी की तरह जमा हो जाता है। अच्छा दान वह है जो जरूरतमन्द को दिया जाता है। बिना जरूरत वाले को देना कुछ ज्यादा महत्त्व नहीं रखता। नालिश के मुकदमों में न्यायाधीश देखता है कि बिना जरूरत कर्ज तो नहीं दिया था, यदि उसे सन्देह होता है कि जान-बूझकर फिजूलखर्ची कराने के लिए ऋण दिया गया था तो वह उसकी डिक्री को देने में बहुत ढिलाई से काम लेता है। कुपात्रों को धन देना व्यर्थ है। जिसका पेट भरा हुआ है, उसे और भोजन कराया जाए तो वह बीमार पड़ेगा और अपने साथ दाता को भी अधोगति के लिए घसीटेगा।

- दान देना एक बहुत ही उत्तम धर्मकार्य है। जो अपनी रोटी दूसरों को बाँटकर खाता है, उसको किसी बात की कमी न रहेगी। जो अपने पैसे को जोड़-जोड़कर जमीन में गाढ़ते जाते हैं, उन पाषाण-हृदयों को क्या मालूम होगा कि दान का मजा क्या है ? मृत्यु बड़ी बुरी लगती है, पर मौत से भी बुरी बात यह है कि कोई आदमी दूसरों को दुःखी देखे और उनकी किसी प्रकार सहायता करने में अपने को असमर्थ पावे।

- शास्त्र कहते हैं कि मनुष्य जीवन में परोपकार ही सार है, हमें सदैव परोपकार में रत रहना चाहिए, किन्तु वह अभिमान, दम्भ या कीर्ति के लिए नहीं, आत्म-कल्याण के लिए होना चाहिए। मेरे कारण दूसरों का यह भला हुआ, यह सोचना मूर्खता है। हमारे बिना संसार का कोई कार्य अटका नहीं रहेगा। हमारे पैदा होने से पहले संसार का सब काम ठीक-ठाक चल रहा था और हमारे बाद भी वैसा ही चलता रहेगा। परमात्मा इतना गरीब नहीं है कि हमारी मदद के बिना सृष्टि का काम न चला सके। किसी भिखारी को हमारे ही देने की कोई बड़ी भारी आवश्यकता नहीं, यह हमारी एक रोटी के बिना भूखा न मर जाएगा।

सच पूछो तो जिसने हमें उपकार करने का अवसर दिया है, उसका कृतज्ञ होना चाहिए। हमारी उपकार बुद्धि जाग्रत करके वह हमें ऋणी कर देता है। इससे जो मानसिक उन्नति होती है और आत्मा को जो शक्ति प्राप्त होती है, वह दान लेने वाले को नहीं, वरन् देने वाले को प्राप्त होती है। दूसरों का उपकार करना मानो एक प्रकार से अपने ही कल्याण का प्रयत्न करना है। किसी को एक पैसा देकर हम भला उसका कितना भला कर सकते हैं ? किन्तु उसकी अपेक्षा अपना भला हजारों गुना कर लेते हैं। हमारी उदारता का विकास न होने से संसार का रत्ती भर भी हर्ज न होगा, किन्तु हमारा ही आनन्द-स्रोत नष्ट हो जाएगा।

- मनुष्यो ! परोपकार को अपना जीवन-लक्ष्य बनाओ। जितनी हो सके दूसरों की भलाई करो। इसमें तुम्हारा ही भला है, तुम्हारा ही लाभ है, तुम्हारा ही कल्याण है।

- मानव-सेवा से बढ़कर सुख और शान्तिदायक कोई उपाय संसार में नहीं है। जब किसी की सेवा करके उसका दुःख दूर कर दिया जाता है तो उसकी आत्मा से अद्भुत आनन्द की तरंग वातावरण को प्रभावित करती है, जिससे संसार में मानवों के हृदय पर अनुकूल प्रतिक्रिया होती है।

- मन में जब सुख और शान्ति का समावेश हो जाता है, तब उसका प्रतिबिम्ब बाहर भी दिखाई देता है। इसलिए हर मनुष्य को यथासम्भव मानवता की सेवा करने में तत्पर रहना चाहिए। जिसे भी आवश्यकता है, उसके लिए कुछ न कुछ करना चाहिए।

बिना मानवता की सेवा किए कोई भी सच्ची सुख-शान्ति नहीं पा सकता। मनुष्य की सेवा करना अपनी सेवा करना है। फिर क्यों न अपने तक सीमित रहने के स्थान पर सामाजिक परिधि के माध्यम से अपनी सेवा की जाए ? आत्मा का विकास परोपकार भावना और उसी के अनुसार कार्य करने से ही होता है। वैसे न उस विकास की सरल सम्भावना रहती है और न उसका कोई महत्त्व है।

—रवीन्द्रनाथ टैगोर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ समाज के हित-अनहित की परवाह किये बिना निजी लाभ की प्रवृत्ति ही वह क्षुद्रता है, जिसके उदर से छोटे-बड़े अनेक दोष-दुर्गुणों का प्रसव होता रहता है। स्वार्थ यों निर्दोष दिखता है, पर वस्तुतः उसी की परिणति दुर्व्यसनों-प्रवंचनाओं से लेकर अपराधी आक्रामकता तक बढ़ती चली जाती है। इसके विपरीत किसी सद्गुण का अभ्यास न करने पर भी दृष्टिकोण को समूहवादी, सार्वजनीन, सार्वभौम बना लेने पर मनुष्य को इस बात का ध्यान रहता है कि जो सोचा जा रहा है व जो किया जा रहा है वह सार्वजनीन हित में है या नहीं, इस कसौटी को दृढ़तापूर्वक अपनाये रहने पर कोई ऐसा कृत्य बन ही नहीं सकता, जो निजी लाभ की ही पूर्ति करता हो, किन्तु निर्धारित नीति-नियमों का उल्लंघन करके समाज की व्यवस्था एवं प्रगति में अड़चन उत्पन्न करता हो।

❑ व्यक्तिवादी चाहे सन्त हों या सेठ, चाहे विद्वान हों या पहलवान, चाहे कलाकार हों, चाहे सत्ता सम्पन्न अपनी समर्थता का उपयोग संकीर्ण स्वार्थों की पूर्ति में करते रहेंगे। फलतः दुष्प्रवृत्तियाँ ही परिपुष्ट होती चलेंगी और प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से भ्रष्ट-चिन्तन एवं दुष्ट आचरण का सिलसिला चल पड़ेगा।

'स्व' को जो जितना सुविस्तृत करता है, उतनी ही उसमें सुसंस्कारिता उगती है। परमार्थ-परायण दृष्टिकोण और महान व्यक्तित्व कहने-सुनने में दो दिखते हैं, पर वस्तुतः इन दोनों को एक रूप नहीं तो परस्पर पूरक तो कहा ही जा सकेगा। इसी स्तर पर पहुँचे लोग सज्जन और सद्गुणी कहलाने लगते हैं। इसके लिए अलग से कुछ सीखने-सिखाने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

❑ अपने दृष्टिकोण को सेवा-धर्म से पुनीत बना लेने से अन्तःकरण को असाधारण शान्ति प्राप्त होती है। जीवन में पग-पग पर उल्लास बढ़ता जाता है। क्रूरता, कुटिलता, छल, पाखण्ड से जो मानसिक उद्वेग उत्पन्न होता है, वह जीवन को बड़ा ही अव्यवस्थित, अशान्त एवं कर्कश बना देता है। मानव-जीवन में जो आध्यात्मिक अमृत छिपा हुआ है, वह स्वार्थी लोगों को उपलब्ध नहीं हो सकता। जो व्यक्ति अपने ही सुख का ध्यान रखता है, अपनी ही चिन्ता करता है और दूसरों के स्वार्थों की परवाह नहीं करता, वह विषम विपत्ति में फँस जाता है। सब लोग उससे घृणा करते हैं। कोई भी सच्चे दिल से उसे प्यार नहीं करता। स्वार्थी मनुष्य कुछ सम्पदा इकट्ठी भले ही कर ले, परन्तु वह असल में बहुत घाटे में रहता है, उसकी सारी मानसिक सुख-शान्ति नष्ट-भ्रष्ट हो जाती है।

❑ परमार्थ, सेवा, त्याग और निःस्वार्थ प्रेम-व्यवहार को अपनी प्रमुख नीति बना लेने से अपना जीवन आनन्द से परिपूर्ण हो जाता है। शत्रु भी उससे घृणा नहीं करते। सेवा से सन्तुष्ट हुए अनेक लोगों को आशीर्वाद, सद्भाव, शुभसंकल्प, देवताओं की भाँति पुष्प-वृष्टि करते रहते हैं। अदृश्य लोक से अपने ऊपर अमृत वृष्टि होती हुई, वह सेवाभावी मनुष्य अनुभव करता है। जीवन का अमर फल उसी को प्राप्त होता है, जो स्वार्थ की अपेक्षा परमार्थ को अधिक महत्त्व देता है।

❑ प्रकृति का नियम है—जो देता है वह पाता है, जो रोकता है वह सड़ता है। छोटी पोखर का पानी घटता, सड़ता और सूखता है, किन्तु झरने में सदा स्वच्छता गतिशीलता बनी रहती है और वह अक्षय भी बना रहता है। जो देने से इनकार करेगा वह गतिशीलता के नियम का उल्लंघन करके संचय में निरत होगा, उसे थोड़ा ही मिलेगा। अजस्र अनुदान पाने की पात्रता से उसे वंचित ही रहना पड़ेगा।

धरती अपना जीवन-तत्त्व वनस्पति को देती है। अनादिकाल से यह क्रम चल रहा है। धरती का कोष घटा नहीं, वनस्पति की सड़न से बना खाद और वर्षा का जल उसका भण्डार भरते चले आ रहे हैं। धरती को देते रहने की साध उसकी मूर्खता नहीं है—जो देती है, प्रकृति उसकी पूरी तरह भरपाई करती रहती है।

❑ वृक्ष फल-फूल, पत्ते प्राणियों को देते हैं। जड़ें गहराई से लाकर उनकी क्षतिपूर्ति करती हैं। समुद्र बादलों को देता है, उस घाटे को नदियाँ अपना जल देकर पूरा किया करती हैं। बादल बरसते हैं, उन्हे समुद्र कंगला नहीं बनने देता। हिमालय अपनी बर्फ गलाकर नदियों को देता है, नदियाँ जमीन को सींचती हैं। हिमालय पर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बर्फ जमने का क्रम प्रकृति ने जारी रखा है, ताकि नदियों को जल देते रहने की उसकी दानवीरता में कमी न आने पावे।

❑ आज का दिया हुआ भविष्य में असंख्य गुना होकर मिलने वाला है। कब मिलेगा इसकी तिथियाँ न गिनो ? विश्वास रखो देने वाला खाली नहीं होता। प्रकृति उसकी भरपाई पूरी तरह कर देती है।

❑ धरती अन्न उपजाती है। अन्न और वनस्पति उगाकर वह समस्त प्राणियों का पेट भरती है, पर यह नहीं सोचती कि मेरा भण्डार खाली हो जाएगा। उसकी यह उदारता सृष्टिक्रम के अनुसार लौटकर उसी के पास वापस आ जाती है। प्राणी पृथ्वी के अनुदान का उपभोग तो करते हैं, पर प्रकारान्तर से उसकी निधि उसी को वापस कर देते हैं। मल-मूत्र, खाद, कूड़ा, मृत शरीर यह सब लौटकर धरती के पास आते हैं और उसी में समा जाते हैं।

❑ बँटवारा करके अलग-अलग रखने की नीति अव्यावहारिक है। धरती कितनी बड़ी है, यह अपने ही पिता की बनाई है। इसलिए अपना हक बाँटने और उसे अलग-अलग रखने से सारी धरती के टुकड़े कट जाएँगे और अपने हिस्से का टुकड़ा इतना छोटा रह जाएगा, जितने पर जरूरत की सभी चीजें न उगाई जा सकेंगी न सँभालकर रखी जा सकती हैं।

नदी, पर्वत, उद्यान सभी तो अपने पिता के बनाये हुए हैं। इसका बँटवारा करने पर इतने छोटे हिस्से में आवेंगे कि या तो उतने में काम न चलेगा या बँटवारा हो जाने पर वे किसी के काम के न रहेंगे। पक्षी आकाश बाँट लें तो उतने भर से उड़ने का क्या आनन्द रहेगा ? सरोवर का पानी बाँटकर रहें तो उतने भर से किसका काम चलेगा ? बँटवारे को लेकर आये दिन का कलह खड़ा होता रहेगा।

बँटवारा सम्भव नहीं। इस विश्व-वैभव की उपयोगिता इसी में है कि सब मिल-बाँटकर खाएँ। सब मिलकर इसे सँजोएँ और अपने महान वैभव की प्रचुरता का आनन्द उठाएँ। संसार एक है, सबका है। जितना अपने लिए आवश्यक है, उतना उपयोग करके शेष दूसरों के लिए छोड़ दें इसी में दूरदर्शिता है। संग्रह से तो कलह और विग्रह ही हाथ लगेगा। ब्राह्मण सही अर्थों में वही कहलाता है, जो संग्रह से दूर रहता है, अपरिग्रह की रीति-नीति अपनाता है।

❑ परमात्मा के अनन्त वैभव से विश्व में कमी किसी बात की नहीं। भगवान आपके हैं और उसके राजकुमार के नाते सृष्टि की हर वस्तु पर आपका समग्र अधिकार है। उसमें से जब जिस चीज की जितनी आवश्यकता हो उतनी लें और आवश्यकता निबटते ही अगली बात सोचें। संसार में सुखी और सम्पन्न रहने का यही तरीका है।

बादल अपने, नदी अपनी, पहाड़ अपने, वन-उद्यान अपने। इनमें से जब जिसके साथ रहना हो, रहें। जिसका जितना उपयोग करना हो, करें। कोई रोक-टोक नहीं है। दुःखदायी तो संग्रह है। नदी को रोककर यदि अपनी बनाना चाहेंगे और किसी दूसरे को पास न आने देंगे, उपयोग न करने देंगे तो समस्या उत्पन्न होगी। एक जगह जमा किया हुआ पानी अमर्यादित होकर बाढ़ के रूप में उफनने लगेगा और आपके निजी खेत-खलिहानों को ही डुबो देगा। बहती हुई हवा जितनी सुरभित है, पर उसे आप अपने ही पेट में भरना चाहेंगे तो पेट फूलेगा, फटेगा। औचित्य इसी में है कि जितनी जगह फेफड़ों में है, उतनी ही साँस लें और बाकी हवा दूसरों के लिए छोड़ दें। मिल-बाँटकर खाने की यह नीति ही सुखकर है।

❑ धर्मात्मा की पहचान यह देखकर की जा सकती है कि वह अपनी ताकत का इस्तेमाल किस प्रकार के कामों में कर रहा है ? यदि किसी के पुण्यात्मा या पापी होने की परीक्षा करनी हो तो देखना चाहिए कि वह अपने निकटवर्ती लोगों के साथ कैसा बर्ताव करता है ? यदि वह सहानुभूति, उदारता, साहस और ईमानदारी का बर्ताव करता हो तो समझना चाहिए कि यह धर्मात्मा है और यदि कटु-भाषण, निन्दा, कुढ़न, अनुदारता, द्वेष और कपट से उसका व्यवहार भरा हुआ हो तो समझ लेना चाहिए कि वह धर्मात्मा नहीं है।

❑ नीति का वाक्य है कि दुष्ट पुरुष विद्या को विवाद में धन को अहंकार में, बल को परपीड़ा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में लगाते हैं, इसके विपरीत धर्मात्मा पुरुष विद्या से संसार में ज्ञान का प्रकाश करते हैं, धन को दान करते हैं और बल से निर्बलों की रक्षा करते हैं। मनुष्य में यह तीन बल ही प्रधान हैं। ज्ञान द्वारा संसार की सेवा करने वाले ब्राह्मण हैं, बल द्वारा संसार का उपकार करने वाले क्षत्रिय हैं, धन द्वारा विश्व-कल्याण की साधना करने वाले वैश्य हैं। जिनके पास इन तीनों बलों में से एक भी नहीं, जो पराधीन रहकर टहल-चाकरी करते हैं, वे निम्न कोटि के हैं। वे लोग असुर या दैत्य हैं, जो इन तीनों शक्तियों के स्वामी होते हुए भी उनका दुरुपयोग करते हैं।

❑ देवता और असुरों में एक ही अन्तर है कि देवता अपनी शक्तियों द्वारा दूसरों का हित-साधन करते हैं, सहारा देते हैं, किन्तु असुर लोग किसी के कष्ट या अभाव की परवाह न करते हुए अपनी खुदगर्जी को तृप्त करने में अन्धे रहते हैं। यही धर्मात्मा और पापी की पहचान है।

❑ दुष्ट लोग उस मूर्खता से नहीं डरते, जिसे पाप कहते हैं। मगर विवेकवान सदा उस बेवकूफी से दूर रहते हैं। बुराई से बुराई ही पैदा होती है, इसलिए बुराई को अग्नि से भी भयंकर समझकर उससे डरना और दूर रहना चाहिए। जिस तरह छाया मनुष्य को कभी नहीं छोड़ती, चरन् जहाँ-जहाँ वह जाता है उसके पीछे-पीछे लगी रहती है। उसी तरह पाप कर्म भी पापी का पीछा करते हैं और अन्त में उसका सर्वनाश कर डालते हैं। इसलिए सावधान रहिए और बुराई से सदा डरते रहिए।

❑ जो काम बुरे हैं उन्हें मत करो, क्योंकि बुरे काम करने वालों को अन्तरात्मा के शाप की अग्नि में हर घड़ी झुलसना पड़ता है। वस्तुओं को प्रचुर परिमाण में एकत्रित करने की कामना से, इन्द्रियभोगों की लिप्सा से और अहंकार को तृप्त करने की इच्छा से लोग कुमार्ग में प्रवेश करते हैं, पर यह तीनों ही बातें तुच्छ हैं। इनसे क्षणिक तुष्टि होती है, पर बदले में अपार दुःख भोगना पड़ता है। खाँड मिले हुए विष को लोभवश खाने वाला बुद्धिमान नहीं कहा जाता, इसी प्रकार जो तुच्छ लाभ के लिए अपार दुःख अपने ऊपर लेता है, उसे भी समझदार नहीं कह सकते।

❑ इस दुनिया में सबसे बड़ा बुद्धिमान, विद्वान, चतुर और समझदार वह है, जो अपने को कुविचार और कुकर्मों से बचाकर सत्य को अपनाता है, सत्मार्ग पर चलता है और सतविचारों को ग्रहण करता है। यही बुद्धिमानी अन्त में लाभदायक ठहरती है और दुष्टता करने वाले अपने बेवकूफी से होने वाली हानि के कारण सिर धुन-धुनकर पछताते हैं।

❑ ❑

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

प्रगति की आकांक्षा

- संयम मनुष्य को देवतुल्य बना देता है।

  —भगवान महावीर

- यह सारी सृष्टि एक दैवीअनुशासन पर चलती है। जिस प्रकार सूर्य, चन्द्र, आकाश, समुद्र, पर्वत और हमारे चतुर्दिक नक्षत्रगण एक अनुशासन पर चलकर अपनी-अपनी मर्यादा पर कायम रहते हैं, वैसे ही मनुष्य को भी अपने चतुर्दिक के सभी कामों में अनुशासन का पालन अचूक और नियमित रूप से करना चाहिए।

  —महात्मा गाँधी

- बहुत-से व्यक्ति कम योग्यता रखते हुए भी बहुत काम कर डालते हैं और बड़ी सफलता प्राप्त करते हैं, इसका एकमात्र कारण होता है—सन्तुलित मस्तिष्क, निश्चित कार्यक्रम और व्यवस्थित क्रिया-पद्धति।

  —स्वेट मार्डन

- निश्चय समझ रखिए कि अगर हमारा जीवन संयममय हो जाएगा तो हम जो चाहेंगे प्राप्त कर सकेंगे।

  —महात्मा गाँधी

- मनुष्य लड़ाई में हजार आदमियों पर विजय पा सकता है, लेकिन जो अपने ऊपर विजय पाता है, वही सबसे बड़ा विजयी है।

  —महात्मा बुद्ध

- अध्यात्म मार्ग में अनावश्यक देह-दण्ड से कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होता। अनावश्यक देह-दण्ड से साधक का ध्यान पीड़ा की ओर लगा रहेगा, ध्येय की ओर नहीं। इस प्रकार तो दण्ड अथवा पीड़ा की उपासना ही होगी, जिससे पीड़ा और उद्विग्नता की ही वृद्धि होगी, शान्ति की नहीं, जबकि अध्यात्म का लक्ष्य शान्ति ही है।

  अनावश्यक कष्ट और क्लेश उठाने से धर्म नहीं होता। वास्तविक तपस्या तो मन की है। मन को पवित्र और निर्मल करना ही तप है। तन को दुःखाना और मन को उद्विग्न करना तप नहीं।

  मन को वश में करने के लिए तन को ऐसी तपस्या में नहीं लगना चाहिए, जिससे मन उस पर दया करके उसका पक्षपात करने लगे। मानस शान्ति और उसकी प्रसन्नता के प्रकाश में ही आत्मा के दर्शन किए जा सकते हैं। मनुष्य को सामान्य एवं साधारण तपस्या द्वारा तन-मन को मैत्रीपूर्वक वश में करना चाहिए, न कि निर्दयी शत्रु की तरह।

  —जे. सत्यमूर्ति

- जीवन की सफलता के लिए मनुष्य को कम से कम इच्छाओं के साथ अनुशासित, संयमित एवं कटी-छँटी जिन्दगी को लेकर प्रसन्नतापूर्वक कार्यरत रहना चाहिए।

  इस प्रकार अबोझिल जिन्दगी में न असन्तोष होता है और न क्षोभ। उसकी जिन्दगी हर ओर सुन्दर बनकर कलापूर्ण बन जाती है।

- अपनी पीड़ा सह लेना और दूसरे जीवों को पीड़ा न पहुँचाना, यही तपस्या का स्वरूप है।

  —सन्त तिरुवल्लुवर

- जो मनुष्य अपने क्रोध को अपने ही ऊपर झेल लेता है, वह दूसरों के क्रोध से बच जाता है।

  —सुकरात

- दुःख का मूल नाश करने के लिए ब्रह्मचर्य का व्रत-पालन अत्यन्त आवश्यक है।

  —महात्मा बुद्ध

- इन्द्रियों के विषय या भोग-विलास में सुख नहीं है। सुख तो तुम्हारे भीतर है, जो ब्रह्मचर्य में ही मिल सकता है।

  —स्वामी रामतीर्थ

- जो मनुष्य ब्रह्मचारी नहीं, उसको कभी सिद्धि नहीं होती। वह, जन्म-मरणादि क्लेशों को बार-बार भोगता रहता है।

- ब्रह्मचर्य से पाप इस प्रकार कटता है, जिस प्रकार सूर्योदय से अन्धकार का नाश होता है।

- ब्रह्मचर्य से ही ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने की योग्यता प्राप्त होती है।

  —ऋषिवर पिप्पलाद

- ब्रह्मचारी रहकर नियमित रूप से अध्ययन करना चाहिए। विधिरहित अध्ययन करने से स्वाध्याय का फल नहीं मिलता।

  —महामान्य हारीत

- हे जनक जी ! जिसने ब्रह्मचर्य से चित्त की शुद्धि की है, उसी को अन्य आश्रमों (गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास) में आनन्द मिलता है।

  —शुकदेव

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

- बिना ब्रह्मचर्य के (विषय-भोगों से) आयुष्य, तेज, बल, वीर्य, बुद्धि, लक्ष्मी, महत्त्वाकांक्षा, पुण्य, तप और स्वाभिमान का नाश हो जाता है।

—गौतम मुनि

- ब्रह्मचर्य और अहिंसा शारीरिक तप हैं।

—भगवान श्रीकृष्ण

- इच्छा से वीर्य का नाश करने वाला ब्रह्मचारी निश्चयपूर्वक अपने व्रत (ब्रह्मचर्य) का नाश कर देता है। *—मनु*

- ब्रह्मचर्य से ही ब्रह्मस्वरूप के दर्शन होते हैं। हे प्रभो ! एकाग्रता ही प्रदान कर दास को कृतार्थ करें। *—मुनिवर भारद्वाज*

- जीवात्मा ब्रह्मचर्य से ही परमात्मा में लीन होती है। आत्म-धर्म ही चारों फल की प्राप्ति का साधन है। *—वेदव्यास*

- ब्रह्मचारी को सब कुछ सम्भव है। उत्साह से ही सब कार्य सिद्ध होते हैं। वे ही पुरुष-रत्न हैं, जो अपने व्रत का सदा पालन करते हैं।

—महावीर हनुमान

- हे राजन ! ब्रह्मचारी को कहीं भी दुःख नहीं होता, उसे सब कुछ प्राप्त है। ब्रह्मचर्य के प्रभाव से अनेक ऋषि ब्रह्मलोक में स्थित हैं।

—भीष्म

- ब्रह्मचर्य पालन से मनुष्य के अशुभ लक्षण भी नष्ट हो जाते हैं।

- जो उत्तम धर्म का पालन करना चाहे, वह इस संसार में ब्रह्मचर्य का पालन करे।

—पीयूषपाणि धन्वन्तरि

- ब्रह्मचर्य का पालन कर लेने पर मनुष्य किसी भी आश्रम (गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास) में प्रविष्ट हो सकता है। *—ऋषीश जापाल*

- ब्रह्मचर्य के संरक्षण से मनुष्य को सब लोकों में सुख देने वाली सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं।

—मुनिराज अत्रि

- ब्रह्मचर्य से मनुष्य दिव्यता को प्राप्त होता है। शरीर को त्यागने पर सद्गति मिलती है।

—मुनीन्द्र गर्ग

- ऋषिवर ! ब्रह्मचारी पुरुष मुझे परमप्रिय जान पड़ता है। ब्रह्मचर्य से ही मेरा निर्भय पद प्राप्त हो सकता है।

- ब्रह्मचर्य के पालन से आत्म-बल प्राप्त होता है।

—योगाचार्य पतञ्जलि

- ब्रह्मचर्य के बल से ही मनुष्य ऋषिलोक को जाता है। *—कपिल मुनि*

- ब्रह्मचर्य से ब्रह्मतेज का सञ्चय होता है। पूर्ण तपस्वी अपना तप इसी के बल पर साध सकता है। *—देवराज इन्द्र*

- ब्रह्मचर्य का पालन ब्रह्मपद का मूल है। जो अक्षय पुण्य को पाना चाहता है, वह निष्ठा से जीवन व्यतीत करे। *—देवर्षि नारद*

- ब्रह्मचर्य और तप के द्वारा देवताओं ने मृत्यु पर विजय प्राप्त की।

- हे निष्पाप ! ब्रह्मचर्य से ही संसार की स्थिति है। मूलाधार के नष्ट होने पर ही पदार्थ का नाश होता है, अन्यथा नहीं। *—महर्षि वशिष्ठ*

- ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने वालों को मोक्ष मिलता है। *—सनत्सुजात मुनि*

- ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए, वेदादि शास्त्रों का अध्ययन योग्य है। अधिकारी पुरुष ही अपनी सम्पत्ति की रक्षा कर सकता है।

—महर्षि अंगिरा

- वीर्य ही सारे शरीर का सार है। मनुष्य का बल वीर्य के अधीन है। ओज ही शरीर की धातुओं का तेज है। *—वैद्यक*

- देव, मनुष्य और असुर सबके लिए ब्रह्मचर्य अमृत-रूप है। जो वरदान चाहे वह ब्रह्मनिष्ठा से प्राप्त हो सकता है। *—ब्रह्मा*

- अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन कर लेने पर, सुलक्षणा स्त्री से विवाह करना चाहिए।

—मिताक्षरा

- हे जीव ! ब्रह्मचर्यरूपी सुधानिधि तेरे पास है। उसकी प्रतिष्ठा से अमर बन। निराश मत हो। मनुष्यता को सार्थक बनाने का उद्योग कर।

—श्रुति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ मोक्ष का दृढ़सोपान ब्रह्मचर्य है। ब्रह्मचर्याश्रम के सुधरने से सब क्रियाएँ सफल होती हैं।

—महामुनि दत्त

❑ ब्रह्मचर्य का अर्थ कान, आँख, नाक, जीभ और चर्म—इन सब इन्द्रियों का संयम है। यह धर्म केवल संन्यासी के लिए नहीं, सद्गृहस्थों के लिए है। जो सदा इस नियम का पालन करता हो वह सद्गृहस्थ नहीं।

❑ सदाचारी पुरुष ब्रह्मचर्य पालन करते हुए जहाँ तक सम्भव होगा, अपने बल-वीर्य की रक्षा करेंगे। वे कभी चोरी न करेंगे, घूँस न लेंगे, दूसरों का अथवा अपना समय व्यर्थ न बितावेंगे, अकारण धन-संचय न करेंगे, ऐश-आराम की वृद्धि न करेंगे और आवश्यक वस्तुओं को केवल सुख-चैन के लिए काम में न लावेंगे। वे सादगी से रहकर और इस बात का दृढ़ विश्वास रखकर कि हम शरीर नहीं, किन्तु आत्मा हैं और आत्मा को मारने वाला कोई 'माई का लाल' संसार में पैदा ही नहीं हुआ, आधि-व्याधि-उपाधि के भय से रहित होकर चक्रवर्ती राजा के वैभव और शान-शौकत से अथवा अभिमान से अन्धे न होकर निर्भयतापूर्वक अपने सारे कार्य करते हैं।

—महात्मा गाँधी

❑ यथार्थ में विजय आत्मा पर पाना है और उसके बिना विजयी मनुष्य केवल दूसरे प्रकार का दास ही है।

—सेन्टपाल

❑ जो आत्मा पर विजय पाता है और इच्छाओं, भय तथा क्रोध का दमन करता है, वही सबसे अधिक बलशाली है।

—अफलातून

❑ छाती पर गोली झेलना इतना कठिन नहीं, पर रोज काम करना, पल-पल पर अपने साथ लड़ना, अपनी आत्म-शुद्धि करना कठिन है।

—महात्मा गाँधी

❑ आत्म-सम्मान, आत्म-ज्ञान, आत्म-संयम ये तीनों पूर्ण शक्ति को प्राप्त कराते हैं। मनुष्य की सर्वोत्कृष्ट विजय वह है, जो अपने आप पर प्राप्त करता है।

—जार्ज स्टर्लिंग

❑ जो मनुष्य युद्ध में दस लाख सैनिकों को जीत लेता है, उससे अधिक विजय का पात्र तो वह है जो अपनी आत्मा के विकारों के साथ युद्ध करके अपने मन को काबू में कर लेता है।

—भगवान महावीर

❑ लोभ और मोह को छोड़ने पर ही मनुष्य अपने मन को वश में कर सकता है।

—भीष्म

❑ **न पिशाचा न रक्षांसि न दैत्या न च शत्रवः।**
न च व्याघ्रो भुजंगो वा द्विषन्ति शमशालिनम्।।

—योगवासिष्ठ

जिसने अपने मन का नियमन कर लिया, उससे पिशाच, राक्षस, दैत्य, शत्रु, व्याघ्र, भुजंग आदि कोई बैर नहीं करते।

❑ संयम जहाँ अर्थहीन है, वहाँ सिर्फ निष्फल आत्म-पीड़न है और उसी को लेकर मानना सिर्फ अपने ही को ठगना नहीं, बल्कि दुनिया को भी ठगना है।

—शरतचन्द

❑ "संयम से ही विकास होता है। वृक्ष की जड़ें पृथ्वी के साथ जकड़ी हुई हैं" इसीलिए वह ऊँचा होकर फलों से शोभा पाता है। वृक्ष कहें कि वह जड़ों का बन्धन किसलिए? मुझे इन्हें तोड़कर स्वच्छन्द ऊपर उठने दो, तो क्या ऐसा होने पर वृक्ष सुरक्षित रह सकेगा? यह पृथ्वी से जकड़ा हुआ है, इसीलिए ऊँचा उठ सका। सितार के तार बँधे होने के कारण ही दिव्य-संगीत सुना सकते हैं। यह सब संयम की महिमा है। संयम बिना सुसंस्कृति नहीं, विकास नहीं।"

—रवीन्द्रनाथ टैगोर

❑ तप का फल है—प्रकाश और ज्ञान।

—वेदव्यास

❑ **तपो हि परमं श्रेयः सम्मोहमितरत्सुखम्।**

—वाल्मीकि ७। ८४। ६

तप (कष्टसहिष्णुता) ही परम कल्याण को करने वाला होता हैं। तप से रहित जो सुख है, वह तो बुद्धि के सम्मोह को उत्पन्न करता है।

❑ **यद्दुरापंभवेत्किंञ्चित्तत्सर्वंतपसोभवेत्।**
ऐश्वर्यमृषयःप्राप्तास्तपसैवनसंशयः।।

—महाभारत शान्तिपर्व १६। २। ४

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जो कुछ दुर्लभ हो वह सब तप से प्राप्त हो जाता है, ऋषियों ने तप से ऐश्वर्य प्राप्त किया इसमें सन्देह नहीं है।

❑ **अस्मिन्ल्लोकेतपस्तप्तंफलमन्यत्रभुज्यते।**
ब्राह्मणानामिमेल्लोकाधात्वेतपसितिष्ठताम्।।

—महाभारत

इस लोक में जो तपस्या की जाती है, उसका फल परलोक में भोगा जाता है। इस प्रकार एक ही तपस्या ऋद्धि और समृद्धि के भेद से दो प्रकार की है।

❑ **तपस्विनः पूजनीयाः।**

तपस्वी पूजनीय होते हैं।

❑ **तपसा प्राप्यते सत्वं सत्वात् संप्राप्यते मनः।**
मनसा प्राप्यतेत्वात्मा, स्यत्मापत्या निवर्तते।।

तप से सत्व (ज्ञान) प्राप्त होता है, सत्व से मन का निग्रह होता है, मन स्थिर होने पर परमात्मा की प्राप्ति होती है और बन्धन छूट जाते हैं।

❑ कठिनाई से निग्रह किये जा सकने वाले शीघ्रगामी जहाँ चाहे वहाँ चलाये जाने वाले चित्त का दमन करना अच्छा है। दमन किया हुआ चित्त सुख देने वाला होता है।

—महात्मा बुद्ध

❑ जिसने ईर्ष्या त्यागी, प्रेम का आनन्द उसी ने पाया, जिसने वासनाएँ जीत लीं, वह इस शरीर से ही भगवान बन गया। *—हसन बसरी*

❑ खाने और बोलने के सम्बन्ध में जिसने जबान की चंचलता रोक ली, उसने मानो सबको अपने वश में कर लिया। *—महात्मा गाँधी*

❑ **वनेपिदोषाःप्रभवन्तिरागिणांगृहेपिपंचेन्द्रियनिग्रहस्तपः।**
अकुत्सितेकर्मणियःप्रवर्ततेनिवृतरागस्यगृहंतपोवनम्।।

—पद्म पुराण १९। २९५

रोगी पुरुषों को (जिनके हृदय में काम-क्रोधादि हैं) वन में चले जाने पर भी दोष लगे रहते हैं। घर में रहता हुआ, इन्द्रियों को बुरे विषयों से रोके हुए है तो वह मानो तप कर रहा है। खोटे कर्म (हिंसा, चोरी आदि) में प्रवृत्त नहीं, राग-द्वेष से रहित है, ऐसे पुरुष का घर ही तपोवन है।

❑ जो नदी मर्यादा छोड़कर चलती है, वह अपना ही तट खिसकाकर गन्दी होती है और वट के वृक्षों को गिराकर अपनी ही शोभा बिगाड़ती है।

—भगवान श्री रामचन्द्र

❑ तप और संयम द्वारा अपनी आत्मा का दमन करना ही उत्तम है, अन्यथा (कर्मजन्य) मार अथवा दूसरे बन्धन मुझे दमन करेंगे ही ?

—भगवान महावीर

❑ जितना ही हम अध्ययन करते हैं, उतना ही अधिक ज्ञान आता है और जितनी हम तपस्या करते हैं हमें यह ज्ञात होता है कि हम कितने अल्पज्ञानी हैं। *—वाल्टेयर*

❑ मितव्ययता दरिद्री को भी धनवान बना सकती है। *—सेनेका*

❑ चरित्र से बढ़कर और कोई उत्तम पूँजी नहीं है।

—स्माइल्स

❑ एक सदाचारी मनुष्य बिना जबान हिलाये सैकड़ों मनुष्यों का सुधार कर सकता है, पर जिसका आचरण ठीक नहीं है, उसके लाखों उपदेशों का कुछ फल नहीं होता।

—मौलाना रूमी

❑ उत्तम शिष्टाचार अच्छे मन का आभूषण है। कोई भी बिना इन भूषण के सचमुच महान नहीं हो सकता है। *—ए. वी. एलकट*

❑ **केवलो नान्यासां कीर्तयाश्चन।** *—अथर्व. ७। ३८। ४*

पर नारी का चिन्तन तक मत करो।

❑ **अथैष ज्ञानमयेन तपसा चीयमानोऽकामयत बहु स्यां प्रजायेयेति। अथैतस्मात्तप्यमानात्सत्यका-मात्त्रीण्यक्षराण्यजायन्त। तिस्रो व्याहृतयस्त्रिपदा गायत्री त्रयो वेदास्त्रयो देवास्त्रयो वर्णास्त्रयोऽग्नयश्च जायन्ते।**

ब्रह्म ने ज्ञानमय तप से वृद्धि प्राप्ति की। तब एक से अनेक होने की इच्छा की और इस हेतु पुनः तप किया। तब तीन अक्षर, तीन आवृत्ति, त्रिपदा गायत्री, तीन वेद, तीन देव, वर्ण और तीन अग्नि प्रकट हुए।

❑ तप से प्रजापति ने इस सृष्टि को सजा। सूर्य तपा और संसार को तपाने में समर्थ हुआ। तप के बल से शेष पृथ्वी का भार उठाते हैं। शक्ति और वैभव का उदय तप से ही होता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तपाने पर धातुओं से उपकरण ढलते हैं। सोने के आभूषण बनते हैं। बहुमूल्य रस भस्में तपाये जाने पर ही अमृतोपम गुण दिखाती हैं।

तपस्वी बलवान बनता है, विद्वान और मेधावी बनता है। ओजस, तेजस और वर्चस प्राप्त करने के लिए तपश्चर्या का अवलम्बन लेना पड़ता है।

विलासी, आलसी और कायर मरते हैं, प्रतिभा गँवा बैठते हैं। प्रामाणिकता न रहने पर उन्हें लक्ष्मी छोड़कर चली जाती है। वे पराधीन की भाँति जीते और दीन-दुर्बल की तरह उपहासास्पद बनते हैं।

अस्तु, तपस्वी होना चाहिए। तप में प्रमाद नहीं करना चाहिए। तपस्वी को रोको मत। तपस्वी को डराओ मत।

❑ केवल बातों से वर्तमान युद्ध का यह दावानल शान्त थोड़े ही होने वाला है ? अपने आप तो वह किसी रोज शान्त होगा ही, परन्तु इसका अर्थ यह हुआ कि उसके शान्त होने के पहले यादव संहार होगा। यादव लोग एक-दूसरे से लड़ मरे और पृथ्वी का भार हल्का हुआ। दावानल धधकता ही रहे, इससे तो बेहतर यह है कि वह यादव संहार के जरिए शान्त हो जाए, परन्तु ऐसी इच्छा कोई नहीं करेगा। इच्छा तो ऐसी करनी चाहिए कि सर्वनाश होने से पहले इस दावानल को किसी न किसी प्रबल अहिंसात्मक प्रयोग से शान्त किया जाए।

अपने धर्म-ग्रन्थों में हम पढ़ते हैं कि प्राचीनकाल में जब कोई बड़ी विपत्ति या उपद्रव से बचने के लिए सामान्य उपाय बेकार हो जाते थे, तब लोग तपश्चर्या करते थे यानी सचमुच जलते थे। इन बातों को मैं दन्तकथा नहीं मानता। तपश्चर्या के अनेक प्रकार होते हैं। मूढ़ मनुष्य भी तपश्चर्या कर सकता है। आज भी ऐसे लोग पाये जाते हैं। ज्ञानी भी तपश्चर्या करते हैं। तपश्चर्या का महत्त्व समझ लेना, पाश्चात्य शास्त्रों ने तपश्चर्या करके ही तो आविष्कार किए। तपश्चर्या महज जंगल में जाकर अपने आस-पास धूनी लगाकर बैठने से नहीं होती। ऐसी तपश्चर्या में तो निरी मूढ़ता भी हो सकती है। इसलिए तपश्चर्या का विस्तृत व ठीक अर्थ करना चाहिए।

यह सम्भव है कि ऐसे तपस्वी बहुत कम हों—इतने कम हों कि उनके काम का कोई परिणाम न निकले, लेकिन मैं तो कह चुका हूँ कि—"यदि एक ही व्यक्ति प्रायः पूर्णतया अहिंसक हो तो वह दावानल को बुझाने की सामर्थ्य रख सकेगा।"

❑ मनुष्य जीवन उस दुर्गम घाटी के समान है, जिसमें पग-पग पर फिसलन, हर अगले क्षण या तो उतार या फिर चढ़ाव। कँटीली झाड़ियाँ भी हैं और ऐसे गहरे गड्ढे जहाँ गिरकर फिर ऊपर तक पहुँच पाना सम्भव ही न हो। जो लोग यह मानते हैं कि वे अपनी अकेले की शक्ति से आगे बढ़ सकते हैं, उनकी समझ को ऐसी दुर्गम घाटी में बिना प्रकाश और पाथेय घूमने वाले पथिक की तरह मूर्खतापूर्ण ही कहा जाएगा। जीवन पग-पग पर प्रकाश चाहता है, पथ-प्रशस्ति चाहता है, उसका मिल जाना मनुष्य जीवन मिलने जैसा परम सौभाग्य समझा जाता है।

❑ वह सौभाग्य कैसे मिले ? जीवन का पथ कौन आलोकित करे ? विवादों के घेरे में उलझे इस प्रश्न को मैंने बहुत कठिनाई से सुलझा तो लिया। महापुरुष ही वह सुयोग है—यह बात समझ तो ली—हृदय की गहराई में उतार तो ली, किन्तु महापुरुष कहाँ मिलें ? यह प्रश्न फिर सामने आ खड़ा हुआ। मैं समझता हूँ उसे सुलझा लेना मनुष्य जीवन का दूसरा असाधारण सौभाग्य है।

❑ मुझसे कोई कहे कि मैं ऐसा कुतुबनुमा जानता हूँ जिसकी सुई सदैव उस ओर रहती है, जिधर महापुरुष रहते हों तो उसे मैं अपना सब कुछ बेचकर खरीद लूँगा और उसे जीवन का असाधारण सौभाग्य मानूँगा। *—एमर्सन*

❑ किसी धार्मिक ग्रन्थ या वेद मन्त्रों के तोता की भाँति रटने से कुछ लाभ नहीं हो सकता। हमें उन नियमों को अपने जीवन में धारण करना चाहिए।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ जो अपने मुँह की चौकसी करता है सो अपने प्राण की रक्षा करता है, पर जो गाल बजाता है, उसका नाश हो जाता है।

—भजन संहिता १३। ३

❑ अपनी जीभ बुराई से रोक रख और अपने मुँह की चौकसी कर कि उससे छल की बात न निकले। बुराई को छोड़ और भलाई कर। मेल को ढूँढ़ और उसका पीछा न छोड़।

—भजन संहिता ३४। १३। १५

❑ अल्लाह के दोस्त वे हैं जो उसके बन्दों के साथ नेकी का सलूक करते हैं। जन्नत उन लोगों के लिए है जो तंगदस्ती में भी खैरात करते हैं, गुस्से को जज्ब करते हैं और लोगों के कुसूर माफ कर देते हैं।

❑ अपनी मुराद वे लोग हासिल करेंगे, जो नेक काम करने की सलाह देते हैं और बुरे कामों से रोकते हैं।

—सूरये आलि इम्रान

❑ अल्लाह उन लोगों के साथ है, जो दूसरों के साथ है जो दूसरों के साथ भलाई से पेश आते हैं और खुद परहेज (संयम) करते हैं।

❑ अल्लाह को वे पसन्द नहीं हैं जो ज्यादती करते हैं। इसलिए अपने हाथों को खुर्रेजी में मत डालो, दूसरों पर एहसान करो।

—सूरये बकर

❑ **बलअज़ुऽल आखिरति खैरुल्लज़ीना आमनू ऽवकाऽनू ऽयत्तकून।**

—सूरये यूसुफ ३। १३। ८

और अन्तिम दिवस का परिणाम उन लोगों के लिए उत्तम है, जिन्होंने विश्वास किया और जो संयम से रहे।

❑ **वस्तईनूबिस्सब्रि व स्सलात।**
व अन्न हुम अलयूहि राज़िऊन।।

—सूरये बकर १। १। ६

सन्तोष, सहनशीलता और नमाज का आश्रय ग्रहण करो। निस्सन्देह यह कठिन काम है, परन्तु उन लोगों के लिए कठिन नहीं, जिनके अन्तःकरण नम्र हैं और जिनके समक्ष यह विचार रहता है कि उन्हें अपने परिपालक से मिलना है और उसी ओर लौटकर जाना है।

❑ **या अय्युहल्लजीना आमनू कातिलुल्लजीना।**
वऽलम् अत्रऽल्लाहा मऽअल मुत्क़ीन।।

—सूरये तोवा २। ११। १६। ७

हे विश्वासियो ! अपने आस-पास के काफिरों से लड़ो और चाहिए कि तुम में दृढ़ता प्रकट हो। याद रखो, अल्लाह उन लोगों का साथी है, जो संयमी हैं।

❑ सुचरित्र बन और धर्म में चल, अधर्म में मत चल। धर्मात्मा इस लोक और परलोक दोनों में सुख पाता है।

—लोक वग्गो

❑ **या अय्युत्रवियुहर्रिजल् मुप्रमिनीना विअन्हुयकउ मुल्लाफ़क़हून।**

—सूरये अन्फाल २। १०। ६। ५

हे पैगम्बर ! ईमान वालों को युद्ध के लिए उत्तेजित करो कि तुम में से स्थिर रहने वाले बीस भी होंगे तो वह दो सौ पर विजयी होंगे और यदि तुममें से सौ होंगे तो हजार काफिरों पर विजय प्राप्त करेंगे, क्योंकि यह काफिर लोग धर्म को समझते ही नहीं।

❑ श्रेष्ठ और सदाचारी पुरुष जिस प्रकार कर्त्तव्य करते हैं, उसी प्रकार हर एक मनुष्य को अपना कर्त्तव्य उत्तम रीति से करना चाहिए।

❑ **न तपस्तपं इत्याहुर्ब्रह्मचर्य्य तपोत्तपम्।**
ऊर्ध्वरिता भवेद् यस्तु स देवो न तु मानुषः।।

अर्थात्—ब्रह्मचर्य से बढ़कर और कोई तप नहीं है। ऊर्ध्वरिता (जिसका वीर्य मस्तिष्क आदि द्वारा उच्च कार्यों में व्यय होता है) पुरुष मनुष्य नहीं प्रत्यक्ष देवता है।

❑ **ब्रह्मचर्य परम् तपः।**

ब्रह्मचर्य ही सबसे श्रेठ तपश्चर्या है।

❑ **एकतश्चतुरो वेदाः ब्रह्मचर्य तथैकतः।**

अर्थात्—एक तरफ चारों वेदों का फल और दूसरी ओर ब्रह्मचर्य का फल, दोनों में ब्रह्मचर्य का फल ही विशेष है।

❑ **सिद्धे बिन्दौ महायत्ने किं न सिद्ध्यति भूतले।**
यस्य प्रसादान्महिमामवाप्येतादृशो भवेत्।।

अर्थात्—महान परिश्रमपूर्वक वीर्य की साधना करने वाले ब्रह्मचारी के लिए इस पृथ्वी पर भला किस कार्य में सफलता नहीं मिलती ? ब्रह्मचर्य के प्रताप से मनुष्य मेरे (ईश्वर के) तुल्य हो जाता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org

www.vicharkrantibooks.org

- जो अपने मुँह को वश में रखता है सो अपने प्राण को विपत्तियों से बचाता है। जो अभिमान से रोष में आकर काम करता है, उसका नाम अभिमानी, अहंकारी, ठट्ठा करने वालों में पड़ जाता है।

- पारे लगे हुए शीशे में जैसे मनुष्य अपना चेहरा देख लेता है, उसी प्रकार ब्रह्मचर्य से जिसने बल और पवित्रता की रक्षा की है, उसके अन्तःकरण में शक्तिशाली प्रभु की परछाई का दर्शन होता है।

- मनुष्य की सत्ता एक बीज है, जिसमें विकास की वे सभी सम्भावनाएँ विद्यमान हैं, जो अब तक उत्पन्न हुए मनुष्यों में से किसी को भी प्राप्त हो चुकी हैं। प्रत्येक व्यक्ति की मूल सत्ता समान स्तर की है। अन्तर केवल प्रयास एवं परिस्थितियों का है, यदि अवसर मिले तो प्रत्येक व्यक्ति उतना ही ऊँचा उठ सकता है जितना कि इस संसार का कोई व्यक्ति कभी भी आगे बढ़ सका। भूतकाल में जो हो चुका है वह शक्य सिद्ध हो चुका है। सुनिश्चित सिद्धि तक उपयुक्त साधना के आधार पर पहुँचने में कोई सन्देह नहीं किया जा सकता। बात आगे की सोची जा सकती है। जो भूतकाल में नहीं हो सका, वह भी भविष्य में हो सकता है। मनुष्य की सम्भावनाएँ अनन्त हैं। भूत से भी अधिक शानदार भविष्य हो सकता है, इसकी आशा की जा सकती है, की जानी चाहिए।

- मनुष्य की अपनी सत्ता में अनन्त सामर्थ्य और महान सम्भावनाएँ छिपी पड़ी हैं। उन्हें समझने और विकसित करने के लिए सही रीति से, सही दिशा में अथक एवं अनवरत प्रयास करना—समस्त सिद्धियों का राजमार्ग है, ऐसी सिद्धियों को जो उसकी प्रत्येक अपूर्णता को पूर्णता में परिणत कर सकती हैं। *—शोपेनहावर*

- प्रत्येक मनुष्य को उचित है कि अपनी वाणी पर संयम रखे और अपने आचरण के प्रति सजग रहे।

- **धैर्यं यस्य पिता क्षमा च जननी शान्तिश्चिरं गेहिनी**
  सत्यं सूनुरयं दया च भगिनी भ्राता मनः संयमः।
  शय्या भूमितलं दिशोऽपि वसनं ज्ञानामृतं भोजनम्
  एते यस्य कुटुम्बिनो वद सखे कस्माद्भयं जायते।।

  —बाण भट्ट

  जिसका पिता धैर्य हो, क्षमा जिसकी माता हो, शान्ति जिसकी गृहिणी हो, सत्य जिसका पुत्र हो, दया बहिन हो, संयम भाई हो, भूमितल शय्या हो, दिशाएँ वस्त्र हों, अमृतमय ज्ञान ही भोजन हो—इस प्रकार के परिवार से युक्त व्यक्ति के लिए, हे मित्र ! इस संसार में किससे भय होता है ? अर्थात् किसी से नहीं।

- शास्त्र कहता है—**"मरणं बिन्दुपातेन जीवनं बिन्दुधारणात्"** अर्थात् वीर्य का पात करना ही मृत्यु और वीर्य धारण करना ही जीवन है।

- जिन्होंने न ब्रह्मचर्य का पालन किया, न जवानी में धन कमाया, वे बिना मछली के तालाब में बूढ़े क्रोंच पक्षी की तरह ध्यान लगाते हैं।

- **किं बहूक्तेन लोकेऽस्मिन्साधनं यद्धि विद्यते।**
  ब्रह्मचर्यं तु तत्सर्वमन्तर्भवति सर्वथा।।

  ब्रह्मचर्य की महत्ता के विषय में जितना कहा जाए कम है। इस संसार में सुख-सुविधाएँ प्राप्त कराने वाले जितने भी साधन हैं, उन सबमें श्रेष्ठ साधन ब्रह्मचर्य है। अन्य सब साधन तुच्छ हैं।

- ब्रह्मवस्तु (वीर्य) जब हमारे पास है, तभी तो आनन्द प्राप्त होता है, नहीं तो रमणी के देह में तो कुछ भी नहीं है। जो चीज देह से निकलते समय क्षणकाल के लिए इतना आनन्द दे जाती है, यदि उसको देह में रखा जाए तो कितने आनन्द की प्राप्ति हो सकती है ?

- संयमविहीन जीवन शुष्क एवं पशु के समान निःसार है।

- आहार, विहार, निद्रा पर नियन्त्रण रखो, ऐसा करने से स्वस्थ रहेंगे और ज्ञान द्वारा सुख रूप परमात्मा की प्राप्ति कर सकोगे।

- मूर्ख दो प्रकार के होते हैं—एक मूर्ख, दूसरा पठित मूर्ख। मैं आपके सामने मूर्खों ही के लक्षणों को धर्मशास्त्र के आधार पर वर्णन करूँगा—क्या आपमें भी निम्नांकित सूक्तियों के लक्षण मिलते हैं ? यदि मिलते हों तो आप अपना भी परिमार्जन करिए और मूर्खता के कलंक से बचकर निर्मल होने का प्रयत्न करिए।

  जितना बने कम बोलो, पूछे बिना सलाह देने को न दौड़ो, जो बिना पूछे बोलता है, उसे लज्जित होना पड़ता है, किसी का जी दुखे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ऐसी बातें मत कहो। सत्य ही प्रधान गुण है इसे अपनाओ।

- इस संसार में वह सुखी रहेगा जो अपनी नीयत में कमखर्ची, पवित्रता और सत्यता को प्रथम स्थान देगा। इस संसार में स्वस्थ वह रहेगा, जो आज संयम और प्रसन्नता को अपना स्वभाव बना लेगा।
- "आत्म-ज्ञान, आत्मसम्मान और आत्म-संयम ही मनुष्य को महती शक्ति की ओर ले जाते हैं।"
- दुर्भाग्य छोटे हृदय को दमन कर अपने वश में कर लेता है, परन्तु विशाल हृदय उस पर विजय पाकर खुद उसे दबा देते हैं।
- **योगस्य प्रथमद्वारे वाङ् निरोधोऽपरिग्रहः।**
  निराशा च निरीहा च नित्यमेकान्तशीलता।।
  योग-साधना में प्रवृत्त लोगों के लिए प्राथमिक स्तर पर वाणी पर संयम, धन का अनावश्यक संग्रह न करना, भौतिक साधनों की (अधिक मात्रा में) आशा छोड़ना, कामनाओं का त्याग करना और नित्य एकान्त में रहना—अपेक्षित होता है।
- जो जन्म-जन्मान्तरों की संचित पशु-प्रवृत्तियों का नियमन कर सकता है, वह योगी है।
- आत्मा ही आत्मा का सहायक है। दूसरा और भला कौन सहायक हो सकता है ? आत्म-संयम से मनुष्य दुर्लभ सहायता को प्राप्त कर लेता है।
- बुरे प्रभावों से बचना, उनका प्रतिकार करना, इसी का नाम संयम है, जो मनुष्य में योग्यता पैदा कर उसे प्रभावशाली बनाता है।
- रोग वे दण्ड हैं जो स्वास्थ्य के सम्बन्ध में भूल करने या संयम से दूर रहने के कारण भोगने पड़ते हैं।
- निश्चय समझ रखिए कि अगर हमारा जीवन संयममय हो जाएगा तो हम जो चाहेंगे प्राप्त कर सकेंगे।
- वीर्य संचित होने से मस्तिष्क में प्रबल शक्ति आती है और इस महती शक्ति के सहारे एकाग्रता साधन करना सहज हो जाता है।
- जो ब्रह्मचारी नहीं हैं, जिन्होंने कुछ कमाया नहीं, जिन्होंने कुछ सीखा नहीं, वे अपने अन्तिम क्षणों में टूटे हुए धनुष के समान अपने अतीत की याद कर-कर आँसू बहाते रहते हैं।
- **यथा गजपदे सर्वे पादा अन्तर्भवन्ति हि।**
  नैतस्मादधिकं किंचिद् ब्रह्मचर्यादिहिष्यते।।
  ब्रह्मचर्य से बढ़कर इस संसार में कोई उत्तम, श्रेष्ठ साधन नहीं है। हाथी के पैर के सामने जिस प्रकार सब छोटे हैं, उसी प्रकार सब साधन ब्रह्मचर्य में विलीन हो जाते हैं।
- **ये तपश्चतपस्यन्ते कौमाराः ब्रह्मचारिणः।**
  विद्यावेदव्रतस्नाता दुर्गाण्यपि तरन्ति ते।।
  अर्थात्—जो ब्रह्मचारी, ब्रह्मचर्य रूपी तपस्या करते हैं और उत्तम विद्या एवं ज्ञान से अपने को पवित्र बना लेते हैं, वे संसार की समस्त दुर्गम कठिनाइयों को पार कर जाते हैं।
- लोग व्यभिचार को बुरा कहते हैं, पर मैं तुमसे कहता हूँ कि न कुदृष्टि से देखना और न पाप का चिन्तन करना। संयम ही तुम्हारा साथी और हितैषी है।
- अपने परिश्रम से महत्ता और उपयोगिता प्राप्त करके महान और उत्तम बने हुए पुरुषों के जीवन-चरित्र का अवश्य अभ्यास करना चाहिए। ऐसे-ऐसे अभ्यास से प्रोत्साहन और उच्च विचार प्राप्त होते हैं।
- आप चाहते हैं कि आपको बीमारी न सतावे तो स्वास्थ्य के नियमों पर दृढ़तापूर्वक चलना प्रारम्भ कर दीजिए।
- घण्टों निरर्थक बकवास करने से एक क्षण का वह वचन अच्छा, जिससे किसी को धैर्य, प्रोत्साहन या कल्याण की प्राप्ति हो।
- मनुष्यता सीखने की सबसे बड़ी पाठशाला अपना घर है। स्नेह और त्याग, क्षमा और तत्परता की भावनाओं के विकास के जितने सुन्दर अवसर घर में मिलते हैं, उतने और कहीं नहीं मिल सकते। हमारी सबसे पहली धर्मशिक्षा यह होनी चाहिए कि अपने आचरण से अपने घर को स्वर्ग बनावें।
- जो सादा कपड़े पहनता हुआ भी दान्त है, इन्द्रिय दमन करता है, नियमित रहता है, ब्रह्मचारी है तथा किसी प्राणी को सताता नहीं, वही ब्राह्मण है, वही श्रमण है, वही भिक्षु है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

- तलवार की कीमत म्यान से नहीं, बल्कि धार से होती है। इसी प्रकार मनुष्य की कीमत धन से नहीं सदाचार से आँकी जाती है।
- दीपक बोलता नहीं प्रकाश से अपना परिचय देता है। तुम अपने सम्बन्ध में बढ़-चढ़ कर बातें न करो, लोगों को कृतियाँ देखकर वस्तुस्थिति जानने का अवसर दो।
- सांसारिक वासना को तुम भयानक रोग की तरह समझो, संयम को औषधि की तरह समझो। वासनारहित जीवन ही स्वस्थ जीवन है।
- अगर तुमने खुद पर शासन करना सीख लिया, तो तुम सारी दुनिया पर शासन करने का दावा कर सकते हो।
- प्राचीनकाल में जीवन का आधार संयम था, पर आजकल उसका आधार भोग-विलास है। इसका फल यह हुआ है कि हम लोग बलहीन होकर, कायर हो गये हैं।
- निर्धनता मनुष्य के लिए बेइज्जती का कारण नहीं हो सकती। यदि उसके पास वह सम्पत्ति मौजूद हो, जिसे 'सदाचार' कहते हैं।
- गान्धारी असाधारण रूपवती थी। उनका विवाह अन्धे धृतराष्ट्र के साथ हुआ। साथ ही वे कुरूप भी थे। गान्धारी को अपना पतिव्रतधर्म निबाहना था। आशंका यह थी कि उनका रूप देखकर कोई उनके पीछे न पड़े अथवा वे ही किसी अवसर पर फिसल न जाएँ इसके लिए यह अनुशासन अपने ऊपर लगाया कि आँखों से जीवन भर पट्टी बाँधे रहने का व्रत ले लिया।

  कर्त्तव्य मार्ग पर चलने में आने वाले कष्टों को स्वेच्छा और शान्ति से सहन करना ही सच्ची तपस्या है।
- वही अनशन, तप, श्रेष्ठ है जिससे कि मन अमंगल न सोचे, इन्द्रियों की क्षति न हो और नित्यप्रति की योगधर्म क्रियाओं में विघ्न न आए।
- ज्ञान का जितना भाग व्यवहार में लाया जा सके वही सार्थक है, अन्यथा वह गधे पर लदे बोझ के समान है।
- जिस तरह जलादि शोधक द्रव्यों से मैला वस्त्र भी शुद्ध हो जाता है, उसी तरह आध्यात्मिक तप-साधन द्वारा आत्मा ज्ञानावरणादि अष्टविध कर्मफल से मुक्त हो जाता है।
- जिस भी साधना में दुष्प्रवृति तपाई, जलाई जा रही हो ऐसा कोई कृत्य तप है।
- तप से उच्चस्तरीय और अपराजेय समर्थता प्राप्त होती है।
- जिसका अपने मन पर काबू है, जिसका मन पूर्णतः स्वस्थ है, वह बीमार नहीं पड़ सकता।
- अगर तुम शरीर की रक्षा करना चाहते हो तो मन की रक्षा करो, अगर तुम शरीर को जीवन देना चाहते हो तो मन को सुन्दरता दो। मत्सरता, द्वेष, निरुत्साह और निराश के विचार शरीर से स्वास्थ्य और सौन्दर्य का हरण करते हैं।
- मन की चंचलता से बचो, मन का संयम रखो, मन का दुश्चरित्र छोड़कर सात्विक आचरण करो।
- बाहर के कौतूहलों को देखने भर से किसी की प्यास नहीं बुझती। देखने योग्य भीतर है। उसी को खोजो और भावनापूर्वक देखो।
- **जीयतां दुर्जया देहे रिपवश्चक्षुरादयः।**
  जितेषु ननु लोकोऽयं तेषु कृत्स्नस्त्वया जितः।।
  अपने ही शरीर में रहने वाले चक्षु आदि दुर्जय शत्रुओं को पहले जीतना चाहिए। उनके जीत लेने पर ऐसा समझो कि मानो सारा संसार तुमने जीत लिया।
- यदि तुमको आनन्द और शान्ति की आवश्यकता है, तो उसकी प्राप्ति का केवल यही रास्ता है—अपने को जीतो, अपनी समस्त अभिलाषाओं का अन्दर रहने वाली शक्ति को पहरेदार बना दो।
- शस्त्र युद्ध में विजय प्राप्त करने की अपेक्षा आत्म-जय करने में अधिक वीरता है।
- वीर वह है जिसने दूसरों को परास्त कर दिया। बहादुरों में भी बहादुर वह है, जिसने अपने को जीत लिया।
- पूर्ण मनुष्यत्व पाने के लिए अपने आपको वश में करो।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

- अपनी मानसिक अवस्थाओं को वश में करो, उत्तेजनाओं का शासन अस्वीकार कर दो।
- क्रोध दिलाने पर भी चुप रहना बड़ी भारी बुद्धिमानी है, उससे बढ़कर बुद्धिमानी मन की चंचलता को रोकने में है।
- व्यक्तित्व युक्त आदमी सदा अपने मन पर काबू रखते हैं और अपने आपको मानसिक अवस्थाओं के वशवर्ती नहीं होने देते।
- जो मनुष्य विद्या कम भी जानता हों, परन्तु दुष्ट आचरण छोड़कर धार्मिक आचरण करता हो तथा खाना-पीना, बोलना-सुनना, उठना-बैठना, लेना-देना आदि सब व्यवहार को यथायोग्य सत्यानुकूल करता हो, वह कभी दुःख को प्राप्त नहीं होता और जो सारी विद्या पढ़कर पूर्वोक्त सद्व्यवहारों को छोड़कर दुष्ट कर्म करता है, वह कभी कहीं भी सुख प्राप्त नहीं कर सकता।
- मूर्ख को उसी मूढ़ता के अनुसार उत्तर न देना। ऐसा न हो कि तू भी उसके तुल्य ठहरे।
- सन्तरा रस से भरा हो तो कितना सुन्दर लगता है, पर यदि उसका रस निचोड़ लिया जाए तो खोखले छिलके को देखने तक के लिए जी नहीं करता।

  पेड़ के तने को गोद दिया जाय तो उस स्थान पर गोंद जैसे फफोले उठने लगेंगे। थोड़ा गोंद पाने का तात्कालिक लाभ तो है, पर साथ ही पेड़ की बढ़त रुक जाने और सूखने लगने का खतरा भी स्पष्ट है।

  खेत की मेड़ बँधी रहे और पानी रुका रहे तो फसल अच्छी पैदा होगी, पर यदि मेड़ जहाँ-तहाँ से टूटी हो और वर्षा का पानी बिना रुके बाहर निकलता रहे तो नमी के अभाव में फसल का चौपट होना निश्चित है।

  किसी मकान के नल में ऊपर तथा नीचे टोंटी तो हो, पर नीचे वाली के खुली रखने पर पानी नाली में बहता रहेगा और ऊपर वाले किरायेदार को प्यासा मरना पड़ेगा। मस्तिष्क और ज्ञानेन्द्रियाँ ऊपर के किरायेदार हैं, यदि यौनाचार से जीवन रस बेहिसाब बहाया जाए तो फिर आँख, कान आदि की क्षमता और मेधा का भण्डार असमय में ही चुक जाएगा।
- धूलि हर कहीं बिखरी पड़ी है। वह प्रकृति का उद्भव है। मलीनता और कूड़ा-करकट कहीं भी बिखरा देखा जा सकता है। वह बिना बुलाये भी घर में घुस पड़ता है। कपड़े अनायास ही मैले होते रहते हैं। मनुष्य का मन भी ऐसा है जो पानी की तरह नीचे की ओर अनायास ही ढुलकता रहता है। प्रमादी लोग कहीं भी मैले-कुचैले देखे जा सकते हैं। उनका रुझान सहज ही पतन-पराभव की दिशा में होता है। यदि सतर्कता न रखी जाए तो मलीनता से लदा और घिरा रहना पड़ेगा।

  हमारे मन की आदत भी ऐसी ही है। वह सर्वत्र संव्याप्त मलीनता की ओर अनायास ही खिंच जाता है। प्रवाह के साथ बहने में उसे सरलता और सुविधा प्रतीत होती है।

  सुरुचिसम्पन्न इस अनुपयुक्तता को ध्यान में रखते हैं और अपने को अनगढ़ समुदाय में सम्मिलित होने से बचाते रहते हैं। हाथी नदी में स्नान करने के उपरान्त भी बाहर निकलते ही धूलि अपने ऊपर छिड़क लेता है। बच्चे धुला हुआ कपड़ा पहनने के बाद भी उसे लोट-पोट कर मैला कर लेते हैं। क्या हमें भी ऐसा ही करना चाहिए ?

  मनुष्य से सुसंस्कृत होने की आशा की जाती है और यह अनुमान लगाया जाता है कि वह अपनी बुद्धिमत्ता का उपयोग भीतरी और बाहरी स्वच्छता बनाये रखने के लिए करेगा।
- आपको अपने जीवन में अनेक प्रकार की आवश्यकताएँ अनुभव होती हैं, अनेक अभाव प्रतीत होते हैं और अनेक इच्छाएँ अतृप्त दशा में अन्तःकरण में कोलाहल कर रही हैं। इस प्रकार का अशान्त एवं उद्विग्न जीवन जीने से क्या लाभ ? विचार कीजिए कि इनमें कितनी इच्छाएँ वास्तविक हैं और कितनी अवास्तविक ? जो तृष्णाएँ मोह-ममता और भ्रम-अज्ञान के कारण उठा खड़ी हुई हों, उनका विवेक द्वारा शमन कीजिए, क्योंकि इन अनियन्त्रित वासनाओं की पूर्ति, तृप्ति और शान्ति सम्भव नहीं। एक को पूरा किया जाएगा कि दस नई उपज पड़ेंगी।

  जो आवश्यकताएँ वास्तविक हैं, उनको प्राप्त करने के लिए अपने पुरुषार्थ को एकत्रित

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करके उनका उचित उपयोग कीजिए। पुरुष का पौरुष इतना शक्तिशाली तत्त्व है कि उसके द्वारा जीवन की सभी वास्तविक आवश्यकताएँ आसानी से पूरी हो सकती हैं। हममें से अधिकांश का पौरुष सोया हुआ रहता है, क्योंकि उसे प्रेरणा देने वाली अग्नि आत्म-शक्ति मंद पड़ी रहती है। उस चिनगारी को जगाकर अपने शक्तिभण्डार को चैतन्य किया जा सकता है। यह सचेत पौरुष हमारी प्रत्येक सभी आवश्यकता को पूरी करने में पूर्णतया समर्थ है। आइए, अभावग्रस्त, चिन्तातुर स्थिति से छुटकारा पाने के लिए तृष्णाओं का विवेक द्वारा शमन करें और आवश्यकता को पूर्ण करने वाले पौरुष को जगाने के लिए आत्म-शक्ति की चिनगारी को जगावें।

❑ जिसके दोष देखने को हम बैठते हैं उसके दोष ही दोष दिखाई पड़ते हैं। ऐसा मालूम पड़ता है कि इस प्राणी या पदार्थ में दोष भरे हुए हैं, बुराइयाँ ही बुराइयाँ उसमें संचित हैं, पर जब गुणग्राहक दृष्टि से निरीक्षण करने लगते हैं तो हर प्राणी में, हर पदार्थ में कितनी ही अच्छाइयाँ, उत्तमताएँ व विशेषताएँ दिख पड़ती हैं।

वस्तुतः संसार का हर प्राणी एवं पदार्थ तीन गुणों से बना हुआ है। उनमें जहाँ कई बुराइयाँ होती हैं, वहाँ कई अच्छाइयाँ भी होती हैं। अब यह हमारे हाथ में है कि उसके उत्तम तत्त्वों से लाभ उठावें या दोषों को स्पर्श कर दुःखी बनें। हमारे शरीर में कुछ अंग बड़े मनोहर होते हैं, पर कुछ ऐसे कुरूप और दुर्गन्धित हैं कि उन्हें ढँके रहना ही उचित समझा जाता है।

❑ इस गुण-दोषमय संसार में से हम उपयोगी तत्त्वों को ढूँढ़ें, उन्हें प्राप्त करें और उन्हीं के साथ विचरण करें तो हमारा जीवन सुखमय हो सकता है। बुराइयों से शिक्षा ग्रहण करें, सावधान हों, बचें और उनका निवारण करने का प्रयत्न करके अपनी चतुरता का परिचय दें तो बुराइयाँ भी हमारे लिए मंगलमय हो सकती हैं। चतुर वैद्य वह है, जो विषों को शोधन और मारण करके अमृतोपम औषधि बना लेता है। चतुर मनुष्य वह है, जो बुराइयों से भी लाभ प्राप्त कर लेता है। गुणग्राहक दृष्टि को जाग्रत करके हम हर स्थिति से लाभ उठा सकते हैं।

❑ परमेश्वर ने सबको समान शक्तियाँ प्रदान की हैं। ऐसा नहीं कि किसी में अधिक, किसी में न्यून हों, किसी के साथ खास रियायत की गई हो। परमेश्वर के यहाँ अन्याय नहीं। समस्त अद्भुत शक्तियाँ तुम्हारे शरीर में विद्यमान हैं। तुम उन्हें जाग्रत करने का कष्ट नहीं करते। कितनी ही शक्तियों से कार्य न लेकर तुम उन्हें कुण्ठित कर डालते हो ? अन्य व्यक्ति उसी शक्ति को किसी विशेष दिशा में मोड़कर उसे अधिक परिपुष्ट एवं विकसित कर लेते हैं। अपनी शक्तियों को जाग्रत तथा विकसित कर लेना अथवा उन्हें शिथिल, पंगु, निश्चेष्ट बना डालना स्वयं तुम्हारे ही हाथ में है।

❑ स्मरण रखिए, संसार की प्रत्येक उत्तम वस्तु पर तुम्हारा जन्मसिद्ध अधिकार है। यदि तुम अपने मन की गुप्त महान सामर्थ्यों को जाग्रत कर लो और लक्ष्य की ओर प्रयत्न, उद्योग और उत्साहपूर्वक अग्रसर होना सीख लो तो जैसा चाहो आत्म-निर्माण कर सकते हो। मनुष्य जिस वस्तु की आकांक्षा करता है, उसके मन में जिन महत्त्वाकांक्षाओं का उदय होता है और जो-जो आशापूर्ण तरंगें उदित होती हैं, वे अवश्य पूर्ण हो सकती हैं—यदि वह दृढ़ निश्चय द्वारा अपनी प्रतिभा को जाग्रत कर ले।

अतएव प्रतिज्ञा कर लीजिए कि आप चाहे जो कुछ हों, जिस स्थिति, जिस वातावरण में हों, आप एक कार्य अवश्य करेंगे—वह यही कि अपनी शक्तियों को ऊँची से ऊँची बनायेंगे।

❑ जीवन एक वन है जिसमें फूल भी हैं और काँटे भी, जिसमें हरी-भरी सुरम्य घाटियाँ भी हैं और ऊबड़-खाबड़ जमीन भी। अधिकतर वनों में वन्य-पशुओं और वनवासियों के आने-जाने से छोटी-मोटी पगडण्डियाँ बन जाती हैं। देखने में तो यह सुव्यवस्थित रास्ते प्रतीत होते हैं, किन्तु यह जंगलों में जाकर लुप्त हो जाते हैं। आसानी और शीघ्रता के लिए बहुधा यात्री इन पगडण्डियों को पकड़ लेते हैं और सही रास्ते को छोड़ देते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जीवन-वन में ऐसी पगडण्डियाँ बहुत हैं, जो छोटी दिखती हैं, पर गन्तव्य स्थान तक पहुँचती नहीं हैं। जल्दबाज लोग पगडण्डियाँ ही ढूँढ़ते हैं किन्तु उनको यह मालूम नहीं होता कि ये अन्त तक नहीं पहुँचतीं और जल्दी काम बनने का लालच दिखाकर दल-दल में फँसा देती हैं। ये रास्ते वास्तव में बड़े ही आकर्षक होते हैं।

पाप और अनीति का मार्ग जंगल की पगडण्डी, मछली की वंशी और चिड़ियों के जाल की तरह है। अभीष्ट कामनाओं की जल्दी से जल्दी, अधिक से अधिक मात्रा में पूर्ति हो जाए, इस लालच से वह काम करना चाहते हैं, जो जल्दी ही सफलता की मंजिल तक पहुँचा दे। जल्दी और अधिकता दोनों ही वांछनीय हैं, पर उतावली में उद्देश्य को ही नष्ट कर देना, बुद्धिमत्ता नहीं माना जाएगा।

❑ जीवन-वन का राजमार्ग सदाचार और धर्म है। उस पर चलते हुए लक्ष्य तक पहुँचना समय-साध्य तो है, पर जोखिम उसमें नहीं है। ईमानदारी के राजमार्ग पर चलते हुए मंजिल देर में पूरी होती है, उसमें सीमा और मर्यादाओं का भी बन्धन है, पर अनीति का वह दल-दल, वन की वह कँटीली झाड़ियाँ और उबड़-खाबड़ जमीन राजमार्ग में कहाँ ? जिनमें फँसकर जीवनोद्देश्य ही नष्ट हो जाता है। हम पगडण्डियों पर न चलें, राजमार्ग ही अपनावें। देर में सही, थोड़ी सही, पर जो सफलता मिलेगी, वह स्थायी भी होगी और शान्तिदायक भी।

❑ अधिक-उपभोग की लालसा में मत बँधो। इतना मत चाहो जो सर्वसाधारण को उपलब्ध नहीं है। इस प्रयास में घाटा ही घाटा है। प्रकृति किसी को भी नियत मर्यादा से अधिक न तो संग्रह करने देती है और न उपयोग।

वैभव अर्जित करने और उनका असीम उपभोग करने की लिप्सा किसी को जितना हैरान करती है, उसका दृश्य उन लोगों का आरम्भ और अन्त को देखने भर से किया जा सकता है। क्या आवश्यकता है कि उसका प्रयोग-अनुभव अपने ही ऊपर किया जाए ? कँटीले मार्ग पर चलने वालों के पैर किस प्रकार लहू-लुहान होते हैं, यह दूसरों को वैसा करते देखकर या उनसे पूछकर भी जाना जा सकता है। फिर क्यों अटकाव की हर विपन्नता को अपनाया जाए और उनका त्रास सहा जाए।

मनुष्य जन्म का बहुमूल्य अवसर उपहासास्पद पृष्ठ-पोषण में गँवाया जाए, इसमें कोई बुद्धिमानी नहीं। जिन्होंने बहुत कमाया और बहुत उड़ाया उनकी अन्तरात्मा क्या कहती है और लोक-भर्त्सना कितनी सहनी पड़ती है ? यह अपने इर्द-गिर्द बिखरे हुए अनेकानेक उदाहरणों से भी जाना जा सकता है। इस सुयोग के सदुपयोग के लिए अनेक प्रयोजन सामने विद्यमान हैं। क्यों न उन्हीं की ओर ध्यान दिया जाए ? और क्यों न ऐसा मार्ग अपनाया जाए, जिसका अनुगमन करके अन्यों को भी श्रेय और प्रकाश मिल सके ?

❑ सेन्द्रिय प्राणियों के सामान्यतया तीन स्तर माने जा सकते हैं। नरपशु, मानव, देवमानव। वस्तुतः ये मानवीय चेतना के ही तीन विभाजन समझे जा सकते हैं। नरपशु वे हैं, जिन पर हमेशा पेट-प्रजनन की प्रकृति-प्रेरणा का आवेश छाया रहता है और इसी दबाव में विवशतापूर्वक वे कुछ न कुछ कृत्य करते रहते हैं। शरीरयात्रा ही इनके लिए सब कुछ होती है। बिना असन्तोष के उल्लासरहित जिन्दगी ज्यों-त्यों गुजर जाती है। औसत मनुष्य चतुर भी है और महत्त्वाकांक्षी भी। उसमें पशुओं की तरह वासना भी होती है, साथ ही तृष्णा भी प्रबल रहती है। आकांक्षा की ललक थोड़ी आगे बढ़ते ही उद्धत आचरण, अपराधी वृत्ति एवं विलासिता के रूप में परिलक्षित होने लगती है। वे पग-पग पर अन्तर्द्वन्द्वों की—दूसरे शब्दों में नरक की आग में झुलसते रहते हैं। देवमानवों की दुनिया इनसे ऊँची होती है। उनमें इन्द्रियाँ भी होती हैं और बुद्धि भी, पर दोनों पर अनुशासन स्थापित करने वाला तन्त्र भी उनमें होता है, जिसके कारण वे सज्जनों जैसी जीवनचर्या अपनाकर सतत आत्म-सन्तोष का रसास्वादन करते रहते हैं।

❑ देवमानवों के अन्तःकरण में आत्मीयता की उमंगें सतत उठती रहती हैं, जो तृप्ति पाये बिना चैन नहीं लेने देतीं। यही एक प्रमुख कारण है कि देव-मानव संचित पशु-प्रवृत्तियों और प्रचलित लोकप्रवाह की उपेक्षा करने में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जरा भी कठिनाई अनुभव नहीं करते। इन्हीं को बोलचाल की भाषा में महामानव, लोकसेवक, जाग्रत आत्मा, सुधारक, भूसुर, ऋषि, द्रष्टा आदि नाम दिये गये हैं। नवयुग जब भी आयेगा, इन्हीं के बलबूते। इन दिनों अनेक व्यक्तियों की जीवनचर्या में ऐसा प्राणवान परिवर्तन होते देख, यह आशा और भी सुदृढ़ होती चली जा रही है कि युग-परिवर्तन की वेला अब है सन्निकट।

❑ डार्विन ने कहा है कि मनुष्य बन्दर की सन्तान है। यह विषय विवादास्पद है। फिर भी इतना जरूर है कि मनुष्य व बन्दरों में आकृति-भेद होते हुए भी कितनों की ही प्रकृति एक जैसी होती है। वनमानुषों जैसी मनोभूमि वाले नर-पामरों की कमी नहीं है। ऐसे भी हैं जो कर्त्तव्यों के दायित्व को भूलकर निरुद्देश्य जीवन जीते हैं और मर्यादा-बन्धन का पालन उतनी ही मात्रा में, उतनी ही देर तक करते हैं, जब तक कि उन्हें लगाम, नाथ, अंकुश, हण्टर या चाबुक का भय दिखता है। दबाव हटते ही वे बन्दरों की तरह स्वेच्छाचारी व्यवहार करते, पशु-प्रवृत्तियों में मोद मनाते देखे जाते हैं।

❑ मानवी आकृति निश्चित ही सुविधाजनक व सब जीवों में श्रेष्ठ है, पर मानव जन्म के साथ जुड़ा सौभाग्य तब सार्थक माना जाता है, जब आकृति के साथ मानवी प्रकृति भी हो। आकृति भगवान देते हैं, प्रकृति निज के पुरुषार्थ से अर्जित करनी होती है। इसके लिए जिन दो कदमों को उठाना पड़ता है, उनकी धातु की गलाई-ढलाई से उपमा दी जाती है, पर इनके बिना कोई गति नहीं है। प्रगतिपथ पर चलने वाले हर किसी को एक कदम छोड़ना, दूसरा उठाना पड़ता है। पहला कदम है—संचित पशु-प्रवृत्तियों का परित्याग। दूसरा कदम है—मानवीय गरिमा को धारण करना। मानवीय तन होते हुए भी मानवीय गरिमा के अनुरूप जीवन जीकर प्रगति का पथ प्रशस्त किया गया कि नहीं, इसकी जाँच-पड़ताल दो तथ्यों के पर्यवेक्षण करने पर ही हो सकती है। एक है—मर्यादा का निर्वाह, दूसरा—कर्त्तव्य-पालन। इस कसौटी पर जो सही सिद्ध हो, समझना चाहिए उसने मानवीय जीवन को सार्थक बनाने का, देव-मानव बनने का राजमार्ग अपनाया।

❑ जन-साधारण को प्रामाणिकता एवं प्रखरता का विश्वास दिलाने का एक ही आधार है कि प्रलोभनों और दबाव के लिए कठिन समय रहते हुए भी झुका गया या सीधे तनकर खड़ा रहा गया। महत्त्वपूर्ण पद प्राप्त करने के लिए हर किसी को उसकी पात्रता सिद्ध करने के लिए अनेकों परीक्षाओं में प्रवेश करने और बाजी मारने की आवश्यकता पड़ती है। इसके बिना यह कैसे जाना जाए कि महत्त्वपूर्ण उत्तरदायित्वों के निर्वाह में कोई कितना समर्थ एवं सुयोग्य है ? आवश्यक नहीं कि विपत्ति आसमान से टूटे तभी उसका सामना किया जाए। स्वेच्छापूर्वक सुविधाओं का परित्याग और असुविधाओं का वरण विचारशील व्यक्ति करते हैं। इसी को तप-साधना कहते हैं। इन्द्रियों को अपने-अपने रसों की चाह रहती है। वे इसके लिए मचलती हैं और कई बार तो शारीरिक, मानसिक, नैतिक स्तर गिराकर अपनी ललक पूरी करती हैं। इनका प्रतिरोध तप है। इसे स्वेच्छापूर्वक संकल्प के साथ निभाया जाना ही व्रत है। दबावों के आगे न झुकने और अपने नियमों पर अड़े रहने के आदर्शवादी निर्धारण ऐसे हैं, जिन पर टिके रहने के लिए अभ्यस्त आदतों से पूरी तरह लड़ना पड़ता है। इस अन्तःसंघर्ष को एक आमन्त्रित विपत्ति ही कहा जा सकता है। इस तपन में स्वेच्छापूर्वक प्रवेश करने में जो असुविधा होती है, उसका सामना करने पर व्यक्ति मनस्वी बनता और दृढ़चरित्र वाला कहलाता है। यह लाभ उन सुविधाओं से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है, जो विलासी दिनचर्या बिताते, समय काटते उपलब्ध होता है।

❑ जो आदमी केवल इन्द्रिय-सुखों और शारीरिक वासनाओं की तृप्ति के लिए जीवित है और जिसके जीवन का उद्देश्य 'खाओ, पीओ, मौज उड़ाओ' है। निःसन्देह वह आदमी परमात्मा की इस सुन्दर पृथ्वी पर एक कलंक है, भार है, क्योंकि उसमें सभी परमात्मीय गुण होते हुए भी वह एक पशु के समान नीच वृत्तियों में फँसा हुआ है। जिस आदमी में ईश्वरीय अंश विद्यमान हैं, वही अपने मुख से हमें अपने पतित जीवन की दुःख भरी गाथा सुनाता है। यह कितने दुःख की बात है कि जिस आदमी का शरीर सूजा हुआ, भद्दा, लज्जायुक्त, दुःखी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और रुग्ण है, वह इस सत्य की घोषणा करता है कि जो आदमी विषय-वासनाओं की तृप्ति में अन्धा-धुन्ध बिना आगा-पीछा देखे लगा रहता है, वही शारीरिक अपवित्रताओं, यातनाओं को सहता है।

वास्तव में आदर्श मनुष्य वह है, जो समस्त पाशविक वृत्तियों तथा विषय-वासनाओं को रखता हुआ भी उनके ऊपर अपने सुसंयता तथा सुशासक मन से राज्य करता है, जो अपने शरीर का स्वामी है, जो अपनी समस्त विषय-वासनाओं की लगाम को अपने दृढ़ तथा धैर्ययुक्त हाथों में पकड़कर अपनी प्रत्येक इन्द्रिय से कहता है कि तुम्हें मेरी सेवा करनी होगी, न कि मालिकी। मैं तुम्हारा सदुपयोग करूँगा, दुरुपयोग नहीं। ऐसे ही मनुष्य अपनी समस्त पाशविक वृत्तियों तथा वासनाओं की शक्तियों को देवत्व में परिणत कर सकते हैं। विलास मृत्यु है और संयम जीवन है। सच्चा रसायन-शास्त्री वही है, जो विषय-वासनाओं के लोहे को आध्यात्मिक तथा मानसिक शक्तियों के स्वर्ण में पलट लेता है।

❑ आप अपने को आत्मा माना कीजिए। 'मैं' या 'हम' शब्द का अर्थ 'आत्मा' है, यह बात अन्तःकरण में बहुत गहराई तक उतार लीजिए, उसे भलीप्रकार हृदयंगम कर लीजिए। आपके मस्तिष्क में जो विचार उठते हैं, आपके मन में जो विश्वास जमे हुए हैं, उनका सावधानी से निरीक्षण कीजिए और देखिए कि वे 'आत्मा' जैसे महान तत्त्व के गौरव के अनुरूप हैं या नहीं ? आप जो काम करते हैं या करना चाहते हैं विचार कीजिए कि वे परमात्मा के राजकुमार के योग्य हैं या नहीं ? यदि आपका विवेक स्वीकार करे कि हाँ, यह विचार और कर्म आत्मा के महान गौरव के अनुरूप है, योग्य है, उचित है तब तो उसे प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण करते रहिए। यदि आपका अन्तःकरण कहे कि विचार और कार्य तुच्छ हैं, निकृष्ट हैं, ओछे हैं, आत्म-सम्मान के विरुद्ध हैं तो उन्हें साहसपूर्वक परित्याग कर दीजिए, दूध में से मक्खी की तरह निकालकर दूर फेंक दीजिए। जिस विचार या कार्य को करने से आपको भय, झिझक, लज्जा, अधर्म, असन्तोष, पश्चात्ताप का अनुभव होता हो उसे एक क्षण के लिए भी मत अपनाइये, भले ही उसके द्वारा सांसारिक बड़े से बड़ा लाभ होने वाला हो। जिस विचार या कार्य को करने से आपको प्रसन्नता, आनन्द, उल्लास, सन्तोष, गर्व, महत्त्व, सम्मान, उन्नति, पुण्य का अनुभव होता है, उसे अपनाने में एक क्षण के लिए भी विलम्ब मत कीजिए, भले ही उसके द्वारा कोई सांसारिक घाटा या हानि दिखाई देती हो, यही आत्म-ज्ञान का सीधा-सा मार्ग है।

❑ मैं भूखा हूँ, इसलिए चोरी करूँगा ऐसा मत विचारो; क्योंकि इससे तुम्हारी भूख घटेगी नहीं बढ़ ही जाएगी। कीचड़ पाकर किसने दुर्भिक्ष को काटा है ? पापकर्म तो तुम्हें और भी अधिक कंगाल बना देंगे। आग से आग की उत्पत्ति होती है और पाप से पाप की, इसलिए बुद्धिमानी इसी में है कि भूल के मूल कारण पाप से ही दूर रहा जाए। ओस चाटने से तृप्ति नहीं हो सकती और न अधर्म का धन सन्तोष करा सकता है। तुम्हारा पेट चोरी से नहीं परिश्रम से भरेगा। किसी की तिजोरी को मत झाँको, अपनी भुजाओं को देखो, उनमें पेट के भर देने की भरपूर क्षमता है।

पाप कर्मों से दूर रहो। जैसे साँप से दूर रहते हो। यदि तुमने पाप का भूत पाल लिया, तो यह बड़ा दुःख देगा। जहाँ जाओगे तो वहीं छाया की तरह घेरे फिरेगा और हर घड़ी नारकीय वासनाओं में झुलसाता रहेगा। यदि तुम्हें अपने आप से प्रेम है, तो देखो, पाप कर्मों की ओर मत झुकना। आपत्तियों को सहना, पर कर्त्तव्य-धर्म से विचलित मत होना। वे मूर्ख हैं, जो पाप को पसन्द करते हैं और दुःख भोगते हैं, तुम्हारे लिए दूसरा मार्ग मौजूद है, वह यह कि आधे पेट खाना, पर पाप-कर्मों के पास न जाना।

❑ अन्याय एक प्रकार की दुधारी तलवार है जो निर्बल को घायल करती है, किन्तु साथ ही घायल करने वाले को भी अछूता नहीं छोड़ती। पड़ोसी के छप्पर में आग लगाकर, अपना घर बचा लेना मुश्किल है, इसी प्रकार दूसरों पर अन्याय करके स्वयं चैन से रहना कठिन है। अन्याय एक तेजाब है। जो पहले उसी पात्र पर असर करता है जिसमें वह रखा हुआ है। मनुष्य कागज की पुड़िया के समान है, जो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अन्दर अन्याय को धारण करता है, अन्यायी बनता है, वह कुछ समय में अपने आप ही गलकर नष्ट हो जाता है।

इसलिए आप अन्याय से उसी तरह दूर रहिए जैसे सिंह और सर्प से दूर रहते हैं। इन्द्रियों के और मनोविकारों के बहकावे में आकर अपनी आत्मा के साथ अन्याय मत कीजिए। अहंकार से उद्धत होकर एवं लालच से अन्धे होकर दूसरों का अधिकार मत छीनिए, उनके स्वत्वों का हरण मत कीजिए, क्योंकि अनाचार और अत्याचार पारे की तरह हैं, जो किसी को पच नहीं सकता, उसकी चमक पर मुग्ध होकर लोग पेट में रखने की कोशिश करते हैं, परन्तु अन्याय रूपी पारा घमण्डी और लालचियों की मूर्खता पर हँसता हुआ उनके रोम-रोम को चीरकर बाहर निकलता है। आप सूक्ष्मदृष्टि से न्याय-अन्याय की विवेचना कीजिए और जिस बात को अन्याय समझें उसे त्यागते हुए न्याय के पथ पर आरूढ़ हों यही कल्याण का मार्ग है।

❑ उन कार्यों को क्यों करते हो जिनके करने से न तो कीर्ति प्राप्त होती है और न लाभ मिलता है। जो मनुष्य उच्चपद पाना चाहते हैं, ऊर्ध्वगति के इच्छुक हैं, उन्हें ऐसे कार्यों से दूर रहना चाहिए, जिससे कीर्ति में बट्टा लगने की आशंका हो। श्रेष्ठ पुरुषों की मैत्री सफलता दे सकती है, किन्तु आचरण की श्रेष्ठता तो मनोकामनाओं को ही पूर्ण कर सकने की क्षमता रखती है। खबरदार ! कोई ऐसा काम मत करना, जिससे भले मनुष्य बुरा बतावें और जिनके करने से माता-पिता को भी कलंकित होना पड़े। सूरत से कोई आदमी बुरा नहीं है। काला-पीला रंग भले-बुरे की पहचान नहीं है। श्रेष्ठ पुरुष तो वह है जिसके आचरण श्रेष्ठ हैं।

अधर्म से धन कमाकर सम्पत्तिशाली बनने की अपेक्षा यही अच्छा है कि मनुष्य श्रेष्ठ आचरण करता हुआ गरीब बना रहे। जो पैसा दूसरों को रुलाकर इकट्ठा किया जाता है, वह क्रन्दन कराता हुआ विदा होता है। निष्पाप रीति से जो धन प्राप्त किया जाता है, अन्त में वही सच्चा आनन्द देगा। ऐ भले आदमियो ! दया और न्याय से रहित पैसे को कभी छूने की कोशिश मत करना और खबरदार ! किसी पर अन्याय का हाथ मत उठाना।

❑ पानी जैसी जमीन पर बहता है, उसका गुण वैसा ही बदल जाता है। मनुष्य का स्वभाव भी अच्छे-बुरे लोगों की संगति के अनुसार बदल जाता है। इसलिए चतुर मनुष्य बुरे लोगों का साथ करने से डरते हैं, लेकिन मूर्ख व्यक्ति बुरे आदमियों के साथ घुल-मिल जाते हैं और अपने को भी वैसा ही बना लेते हैं। मनुष्य की बुद्धि तो मस्तिष्क में रहती है, जहाँ वह उठता-बैठता है और जिन लोगों की सोहबत पसन्द करता है। आत्मा की पवित्रता मनुष्य के कार्यों पर निर्भर है और उसके कार्य संगति के ऊपर निर्भर हैं। बुरे लोगों के साथ रहने वाला अच्छे काम करे यह बहुत ही कठिन है। धर्म से स्वर्ग की प्राप्ति होती है, लेकिन धर्माचरण करने की बुद्धि सत्संग से ही उत्पन्न होती है। याद रखो कुसंग से बढ़कर कोई हानि नहीं और सत्संगति से बढ़कर कोई लाभ नहीं।

❑ तुम्हारा मन जब ईमानदारी को छोड़कर बेईमानी की तरफ चलने लगे तो समझना कि अब तुम्हारा सर्वनाश निकट आने वाला है। बेईमानी से पैसा मिल सकता है, पर देखो, सावधान रहना ! उस पैसे को छूना मत !! क्योंकि वह आग की तरह चमकीला तो है, पर छूने पर जलाये बिना रह नहीं सकता। क्या तुमने किसी बेईमान की सन्तान को फलते-फूलते देखा है ? ईमानदारी से चाहे थोड़ी ही सम्पत्ति भले ही कमाई जाए, पर वह कई पीढ़ियों तक कायम रहेगी और बढ़ती रहेगी, जबकि बेईमानी का पेड़ आँधी के एक ही झोंके में उखड़ जाता है। वह एक दिन अवश्य उन्नति करेगा, जो दूसरों के लाभ को अपने ही लाभ की तरह देखता है। यह मत समझो कि ईमानदार को भोंदू और गरीब को अकर्मण्य समझा जाएगा। मूर्ख ही ऐसा ख्याल कर सकते हैं। विवेकवानों की दृष्टि में न्यायशील और ईमानदार आदमी ही बड़ा समझा जाएगा फिर वह चाहे भले ही गरीब है।

❑ दूर की न सोचने वाला लालची नष्ट हो जाता है और जो कहता है कि मुझे नहीं चाहिए, उसे बहुत मिलता है। जिसे न्याय और अन्याय

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का ज्ञान है, जो लेने योग्य और न लेने योग्य का भेद समझता है, ऐसे श्रेष्ठ पुरुष का घर ढूँढ़ती-ढूँढ़ती लक्ष्मी स्वयं उसके पास पहुँच जाती है। पारा कितना लुभावना है, फिर भी कोई उसे पचा नहीं सकता है। अधर्म की कमाई भली मालूम पड़ती है, पर उसका पचना लोहे के चनों जितना कठिन है। पाप को कोई नहीं पचा सकता, इसलिए अधर्म का धन खाने की इच्छा मत करो। लोभ का पाश ऐसा है कि इसमें अच्छे-अच्छे समझदार मनुष्य फँस जाते हैं और उस जाल में जैसे-जैसे फड़फड़ाते हैं, वैसे ही वैसे और अधिक फँसते जाते हैं। लालच मनुष्य से कौन-सा बुरा काम नहीं करा सकता ? किन्तु उदार विचार वाला मनुष्य दूसरों को अपना समझता है और उनके धन को विराना नहीं मानता। आत्मीयता की भावनाएँ उसके मन में प्रवेश पा लेती हैं, वह थोड़े में गुजारा कर लेता है और कहता है—बस, मेरे लिए इतना ही पर्याप्त है, मुझे और कुछ नहीं चाहिए।

❑ दुनिया को मत बाँधो—अपने को बाँध लो। अपनी इन्द्रियों को वश में कर लो तो तुम विजयी कहलाओगे। अपनी इन्द्रियों की रखवाली वैसे ही करो जैसे एक कर्त्तव्यनिष्ठ सिपाही खजाने के दरवाजे की रक्षा करता है। यदि चोरों को अवसर मिलेगा तो वे इन्हीं दरवाजों से घुस पड़ेंगे और सारा खजाना खाली कर देंगे। इसलिए खबरदार ! दरवाजों पर गफलत न होने देना। इन्द्रियों पर पाप का कब्जा न होने पावे, वरना धर्म का खजाना खाली हो जाएगा। मन के संयम से स्वर्ग मिलता है किन्तु अनियन्त्रित इन्द्रियाँ तो नरक की ओर ले दौड़ती हैं। क्या तुम नहीं जानते कि उत्तम स्वास्थ्य, दीर्घ-जीवन, दिव्य-बुद्धि और सांसारिक सम्पदाएँ इन्द्रियनिग्रह से ही मिलते हैं। जिसने अपने ऊपर काबू पा लिया है, वह हर परिस्थिति में पर्वत की तरह स्थिर बना रह सकता है।

❑ प्रगति की आकांक्षा मनुष्य का एक स्वाभाविक गुण है। चेतनासम्पन्न तो अन्य प्राणी भी पाये जाते हैं, परन्तु यह विशिष्टता मात्र मानव के साथ ही जुड़ी है। यह आकांक्षा ही महत्त्वाकांक्षा बनती और मनुष्य को भौतिक अथवा आध्यात्मिक क्षेत्र में क्रमशः ऊँचे सोपानों पर पहुँचाती देखी जाती है। महत्त्वाकांक्षा से रहित दो ही श्रेणी के व्यक्ति हो सकते हैं। मूढ़मति जड़ता से विभूषित मनुष्य अथवा स्थित प्रज्ञ-परमहंस। मूढ़ अपनी जड़ता एवं ब्रह्मज्ञानी अपनी दिव्य चेतनावश सांसारिक महत्त्वाकांक्षाओं से बचे रहते हैं और सन्तोष के साथ स्वल्प साधनों से गुजारा करते देखे जाते हैं।

❑ मूढ़मति जिन्हें कभी जगद्गति से कोई नाता नहीं रहता एवं इन्द्रिय-लिप्सा में निमग्न प्राणियों में कोई विशेष अन्तर नहीं। ढर्रे की जिन्दगी जीते इन प्राणियों को निम्नतम श्रेणी में रखा जा सकता है। इससे ऊँचा स्तर अहंता, यश-लिप्सा प्रधान भौतिकवादी दृष्टिकोण वाले मनुष्यों का होता है। चर्चा का विषय बनने के आकांक्षी इस समूह की बहुलता सामान्य जन-समुदाय में चारों ओर देखी जा सकती है। लोभ एवं अहंकार की पूर्ति की यह व्यग्रता तृष्णा कहलाती है और न्यूनाधिक रूप में बहुसंख्या में पायी जाती है। इससे भी ऊँची परत अध्यात्म प्रधान है। उत्कृष्ट आदर्शवादिता से भरी-पूरी सद्भावसम्पन्न आकांक्षाएँ ही आत्मिक प्रगति का माध्यम बनती हैं। महत्त्वाकांक्षाओं का यह मोड़ ही जीवन का काया-कल्प करता है। गुण, कर्म, स्वभाव में उत्कृष्टता के समावेश तथा लोकमंगल की कामना से जिया गया जीवन ही मनुष्य को अभीष्ट है, इसी के लिए उसका जन्म हुआ है। कौन, कब, कितना अपनी आकांक्षाओं का स्तर मोड़ पाता, ऊँचा उठा पाता है, इसी पर निर्भर है मनुष्य की वास्तविक प्रगति।

❑ व्यभिचार सबसे बड़ा विश्वास है। किसी स्त्री के पास तुम तभी तो पहुँच पाते हो जब उसके घर वाले तुम्हारा विश्वास करते हैं और उस तक पहुँच जाने देते हैं। कौन है जो किसी अपरिचित व्यक्ति के घर में निधड़क चला जावे और उससे मनचाही बात-चीत करे। इसलिए सज्जनो ! अपने मित्र के घर पर हमला मत करो। जरा पाप से डरो और हया शर्म का ख्याल रखो। क्या पाप, घृणा, बदनामी और कलंक का तुम्हें जरा भी डर नहीं है ?

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ सद्गृहस्थ वह है जो पड़ोसी की स्त्री के रूप में अपनी माता की छाया देखता है। वीर वह है जो पराई स्त्री पर पाप की दृष्टि से नहीं देखता। स्वर्ग के वैभव का अधिकारी वह है, जो स्त्रियों को माता, बहिन और पुत्री समझता हुआ उनके चरणों में प्रणाम करता है।

❑ मनुष्यो ! व्यभिचार की ओर मत बढ़ो। यह जितना ही लुभावना है, उतना ही दुःखदायी। अग्नि की तरह यह सुनहरा-सुनहरा चमकता है, पर देखो जड़-मूल से भस्म कर डालने की उसमें बड़ी घातक शक्ति है। इस सर्वनाश के मार्ग पर मत चलना, क्योंकि जिसने भी इधर कदम बढ़ाया है, उसे भारी क्षति और विपत्ति का सामना करते हुए हाथ मल-मलकर पछताना पड़ा है।

❑ सुखी और समृद्ध बनाने वाले साधन-रत्न हर दिशा में पर्याप्त संख्या में मौजूद हैं। मनुष्य का मनुष्य से सहयोग होने पर एक से एक बढ़िया आनन्ददायक अवसर उपलब्ध होते हैं, मित्रता, प्रेम, प्रतिष्ठा, आदर, सेवा, सहायता, दान, उदारता, मधुरता आदि के द्वारा आपसी सहयोग होने पर सामाजिक जीवन में ऐसे-ऐसे आनन्दमय अवसर उपस्थित होते हैं, जिन्हें 'रत्न' से किसी प्रकार कम नहीं कहा जा सकता। विद्या की दिशा में लीजिए अध्ययन, ज्ञान, विशेषता के कारण मनुष्य जितना सूक्ष्म एवं समर्थ हो जाता है, वह महत्ता भी जवाहरात के थैले की महत्ता से कम नहीं है। उत्तम स्वास्थ्य का, नीरोगता का प्राप्त होना एक बेशकीमती हीरा है। आर्थिक स्थिति का अच्छा होना, अच्छा व्यवसाय मिल जाना, एक ऋद्धि समझी जाती है। सद्गुण, मीठा स्वभाव, भले विचार, सुन्दर चरित्र बहुमूल्य हारों की भाँति विभूषित करने वाले आभूषण हैं। आत्मिक आनन्द, प्रसन्नता, सन्तोष, निराकुलता एवं जीवन-मुक्ति, सृष्टि की सर्वोच्च सम्पदा है। इस प्रकार विभिन्न दिशाओं में विभिन्न प्रकार के अनमोल जवाहरात पग-पग पर बिखरे पड़े हैं। इनमें से अपनी योग्यता की प्रामाणिकता के आधार पर हर मनुष्य मनचाही मात्रा में प्राप्त कर सकता है। यह योग्यता की प्रामाणिकता जिसकी बजह से जीवन को बनाने के साधन प्राप्त होते हैं केवल परिश्रमशीलता है।

❑ जीवन में जितनी सांसारिक कठिनाइयाँ हम देखते हैं; उनका बीज, कारण हमारे अन्दर रहता है। किसी विशेष कारण से कुछ समय के लिए खास स्थिति प्राप्त हो जाए तो वह अधिक समय ठहरती नहीं, स्थायी रूप से मनुष्य को वही मिलता है, जिसके वह योग्य है, जिसका वह अधिकारी है।

❑ यदि आप आज किन्हीं कठिनाइयों में हैं तो इसका कारण ईश्वर नहीं है, वरन् आपके ही कुछ दोष हैं, जिन्हें आप भले ही जानते हों या न जानते हों। पाप एवं दुष्कर्म ही एकमात्र दुःख का कारण नहीं होते। अयोग्यता, मूर्खता, निर्बलता, निराशा, फूट एवं आलस्य भी ऐसे दोष हैं, जिनका परिणाम पाप के ही समान और कई बार उससे भी अधिक दुःखदायी होता है। व्यक्तिगत दुर्गुणों से व्यक्ति दुःख पाते हैं और जातीय दुर्गुणों से जातियाँ विपत्ति के दलदल में फँस जाती हैं।

❑ आप कठिनाइयों से बचना या छुटकारा प्राप्त करना चाहते हैं, तो अपने भीतरी दोषों को ढूँढ़ डालिए और उन्हें निकाल बाहर करने में जुट जाइए। दुर्गुणों को हटाकर उनके ध्यान पर आप सद्गुणों को अपने अन्दर जितना स्थान देते जाएँगे, उसी अनुपात के अनुसार आपका जीवन विपत्ति से छूटकर सम्पत्ति की ओर अग्रसर होता जाएगा।

❑ विकसित व्यक्तित्व की एक ही पहचान है—उच्च चरित्र। चरित्र क्या है—सद्गुणों का समुच्चय। सद्गुणों के सत्यपरिणामों से भी सभी परिचित हैं। फिर उन्हें प्रयोग-व्यवहार में लाने में क्या कठिनाई पड़ती है ? और क्यों उसका समाधान नहीं निकलता। इसका एक शब्द में दिया जाने वाला उत्तर है—व्यक्ति का 'स्व' केन्द्रित होना। अपने आपको छोटे दायरे में बाँध लेने वाले सम्पर्क क्षेत्र पर अपने आचरण की प्रतिक्रिया पर ध्यान नहीं देते और मात्र अपनी ही प्रसन्नता-सुविधा की बात सोचते रहते हैं। ऐसे लोगों के लिए नीति-नियमों की कथा-गाथा भर सुगम पड़ती है, वे संकीर्ण स्वार्थपरता को मजबूती से पकड़े रहते हैं। जो अपने को सुहाती है, भले ही उसका दूसरों का कितना ही अहित क्यों न होता हो ?

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दर्शन करते हैं, पतंग भी हवा के सहारे आकाश चूमती है। आँधी के सम्पर्क में धूलिकण और तिनके तक ऊँची उड़ानें भरते हैं। फिर मनुष्य को उत्कर्ष की दिशाधारा अपनाने से कौन रोक सकता है ?

❑ आश्चर्य है कि लोग अपनी क्षमता और बुद्धिमत्ता का उपयोग पतन के गर्त में गिरने के लिए करते हैं। यह तो अनायास भी हो सकता है। ढेला फेंकने पर नीचे गिरता है और बहाया हुआ पानी नीचें की दिशा में गति पकड़ लेता है।

दूरदर्शिता इसी में है कि ऊँचा उठने की बात सोची और वैसी योजना बनाई जाए। जिनके कदम इस दिशा में बढ़ते हैं, वे नर-पशु न रहकर महामानव बनते हैं।

❑ लगता तो यही अच्छा है कि जो अपना है, वह अपने पास रहे और जो दूसरों का है, वह भी किसी प्रकार घिसटकर अपने पास चला आये। वैभव वृद्धि का प्रयास इसी दृष्टि से चलता है। उसके लिए अनीति अपनाने तक में संकोच नहीं किया जाता। लगता है साधनों का बाहुल्य होने से सुविधा के साथ-साथ प्रसन्नता भी बढ़ेगी और प्रगति का द्वार खुलेगा।

वस्तुतः वैसा है नहीं। उपार्जन उपयुक्त रीति-नीति से किया जाए तो ही वह फलता-फूलता है, अन्यथा अनीति की विषाक्तता घुल जाने पर वह वमन, अतिसार का कारण बनता है और रक्त में घुलकर अनेकानेक रोगों का कारण बनता है पाप पचता नहीं, चमड़ी छेदकर बाहर फूटता है।

❑ संचय और उपार्जन सरल है। पचाना कठिन है। वह अनीतिपूर्वक या संयोगवश भी हो सकता है, पर उसे पचाना हर किसी के बस का नहीं। संचय में प्रतिभा काम करती है, किन्तु पचाने के लिए व्यक्तित्व की शालीनता अपेक्षित होती है। उसके अभाव में वैभव के फलस्वरूप दुर्व्यसन पनपते हैं और अहंताजन्य ऐसे कुकृत्य बन पड़ते हैं, जिनका प्रतिफल अपने और दूसरों के लिए नितान्त कष्टकर ही सिद्ध होता है। येन-केन प्रकारेण स्वादिष्ट भोजन प्राप्त कर लेना उतना कठिन नहीं जितना उसे पचा लेना। पचाने की क्षमता उपार्जित होती है, तभी दावत दूसरों के यहाँ खाई जा सकती है।

पाचन क्षमता को बढ़ाना व्यक्ति की अपनी विशिष्टता है। उसी प्रकार वैभव को पचा लेने पर ही सत्परिणामों की आशा की जा सकती है।

❑ सज्जनोचित दृष्टिकोण और विवेकशीलों जैसा व्यवहार बनाकर जो अपनी वरिष्ठता को प्रखर बना पाते हैं, उनके लिए यह भी सम्भव है कि स्वल्पसाधनों और सामान्य परिस्थितियों में भी विपुल प्रसन्नता और समग्र प्रगति का मार्ग खोज निकालें।

❑ बुद्धि स्थिर करने के उपाय बताकर भगवान् कृष्ण ने यह निर्देश दिया है कि इन्द्रियों के दास होकर नहीं, स्वामी होकर रहना चाहिए। संयम के बिना सुख एवं प्रसन्नता प्राप्त नहीं हो सकती। नित्य नए-नए भोगों के पीछे दौड़ने का परिणाम दुःख और अशान्ति है।

❑ श्री गीता पढ़ने, सुनने या समझने की सार्थकता इसी में है कि इन्द्रियों का संयम किया जाए। इन्द्रियों का वेग तथा प्रवाह में बह जाना मानव धर्म नहीं है। किसी भी साधन, योग, जप, तप, ध्यान इत्यादि का प्रारम्भ संयम बिना नहीं होता।

❑ संयम के बिना जीवन का विकास नहीं होता। जीवन के सितार पर हृदयमोहक मधुर संगीत उसी समय गूँजता है, जब उसके तार नियम तथा संयम से बँधे होते हैं।

❑ उपनिषदों में कहा गया है कि जिस घोड़े की लगाम सवार के हाथ में नहीं होती, उस पर सवारी करना खतरे से खाली नहीं है। संयम की बागडोर लगाकर ही घोड़ा निश्चित मार्ग पर चलाया जा सकता है। ठीक यही दशा हृदयरूपी अश्व की है। विवेक तथा संयम द्वारा इन्द्रियों को अधीन करने पर ही जीवन-यात्रा आनन्दपूर्वक चलती है।

❑ उच्छृंखल युवक कभी-कभी मानसिक, सामाजिक और राष्ट्रीय बन्धनों को तोड़ देना चाहते हैं। यह भारी भूल है। जीवन में जोश के साथ होश की उसी प्रकार आवश्यकता है जैसे अर्जुन के साथ श्रीकृष्ण की। अर्जुन में बल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दर्शन करते हैं, पतंग भी हवा के सहारे आकाश चूमती है। आँधी के सम्पर्क में धूलिकण और तिनके तक ऊँची उड़ानें भरते हैं। फिर मनुष्य को उत्कर्ष की दिशाधारा अपनाने से कौन रोक सकता है ?

❑ आश्चर्य है कि लोग अपनी क्षमता और बुद्धिमत्ता का उपयोग पतन के गर्त में गिरने के लिए करते हैं। यह तो अनायास भी हो सकता है। ढेला फेंकने पर नीचे गिरता है और बहाया हुआ पानी नीचें की दिशा में गति पकड़ लेता है।

दूरदर्शिता इसी में है कि ऊँचा उठने की बात सोची और वैसी योजना बनाई जाए। जिनके कदम इस दिशा में बढ़ते हैं, वे नर-पशु न रहकर महामानव बनते हैं।

❑ लगता तो यही अच्छा है कि जो अपना है, वह अपने पास रहे और जो दूसरों का है, वह भी किसी प्रकार घिसटकर अपने पास चला आये। वैभव वृद्धि का प्रयास इसी दृष्टि से चलता है। उसके लिए अनीति अपनाने तक में संकोच नहीं किया जाता। लगता है साधनों का बाहुल्य होने से सुविधा के साथ-साथ प्रसन्नता भी बढ़ेगी और प्रगति का द्वार खुलेगा।

वस्तुतः वैसा है नहीं। उपार्जन उपयुक्त रीति-नीति से किया जाए तो ही वह फलता-फूलता है, अन्यथा अनीति की विषाक्तता घुल जाने पर वह वमन, अतिसार का कारण बनता है और रक्त में घुलकर अनेकानेक रोगों का कारण बनता है पाप पचता नहीं, चमड़ी छेदकर बाहर फूटता है।

❑ संचय और उपार्जन सरल है। पचाना कठिन है। वह अनीतिपूर्वक या संयोगवश भी हो सकता है, पर उसे पचाना हर किसी के बस का नहीं। संचय में प्रतिभा काम करती है, किन्तु पचाने के लिए व्यक्तित्व की शालीनता अपेक्षित होती है। उसके अभाव में वैभव के फलस्वरूप दुर्व्यसन पनपते हैं और अहंताजन्य ऐसे कुकृत्य बन पड़ते हैं, जिनका प्रतिफल अपने और दूसरों के लिए नितान्त कष्टकर ही सिद्ध होता है। येन-केन प्रकारेण स्वादिष्ट भोजन प्राप्त कर लेना उतना कठिन नहीं जितना उसे पचा लेना। पचाने की क्षमता उपार्जित होती है, तभी दावत दूसरों के यहाँ खाई जा सकती है।

पाचन क्षमता को बढ़ाना व्यक्ति की अपनी विशिष्टता है। उसी प्रकार वैभव को पचा लेने पर ही सत्परिणामों की आशा की जा सकती है।

❑ सज्जनोचित दृष्टिकोण और विवेकशीलों जैसा व्यवहार बनाकर जो अपनी वरिष्ठता को प्रखर बना पाते हैं, उनके लिए यह भी सम्भव है कि स्वल्पसाधनों और सामान्य परिस्थितियों में भी विपुल प्रसन्नता और समग्र प्रगति का मार्ग खोज निकालें।

❑ बुद्धि स्थिर करने के उपाय बताकर भगवान् कृष्ण ने यह निर्देश दिया है कि इन्द्रियों के दास होकर नहीं, स्वामी होकर रहना चाहिए। संयम के बिना सुख एवं प्रसन्नता प्राप्त नहीं हो सकती। नित्य नए-नए भोगों के पीछे दौड़ने का परिणाम दुःख और अशान्ति है।

❑ श्री गीता पढ़ने, सुनने या समझने की सार्थकता इसी में है कि इन्द्रियों का संयम किया जाए। इन्द्रियों का वेग तथा प्रवाह में बह जाना मानव धर्म नहीं है। किसी भी साधन, योग, जप, तप, ध्यान इत्यादि का प्रारम्भ संयम बिना नहीं होता।

❑ संयम के बिना जीवन का विकास नहीं होता। जीवन के सितार पर हृदयमोहक मधुर संगीत उसी समय गूँजता है, जब उसके तार नियम तथा संयम से बँधे होते हैं।

❑ उपनिषदों में कहा गया है कि जिस घोड़े की लगाम सवार के हाथ में नहीं होती, उस पर सवारी करना खतरे से खाली नहीं है। संयम की बागडोर लगाकर ही घोड़ा निश्चित मार्ग पर चलाया जा सकता है। ठीक यही दशा हृदयरूपी अश्व की है। विवेक तथा संयम द्वारा इन्द्रियों को अधीन करने पर ही जीवन-यात्रा आनन्दपूर्वक चलती है।

❑ उच्छृंखल युवक कभी-कभी मानसिक, सामाजिक और राष्ट्रीय बन्धनों को तोड़ देना चाहते हैं। यह भारी भूल है। जीवन में जोश के साथ होश की उसी प्रकार आवश्यकता है जैसे अर्जुन के साथ श्रीकृष्ण की। अर्जुन में बल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दर्शन करते हैं, पतंग भी हवा के सहारे आकाश चूमती है। आँधी के सम्पर्क में धूलिकण और तिनके तक ऊँची उड़ानें भरते हैं। फिर मनुष्य को उत्कर्ष की दिशाधारा अपनाने से कौन रोक सकता है ?

❑ आश्चर्य है कि लोग अपनी क्षमता और बुद्धिमत्ता का उपयोग पतन के गर्त में गिरने के लिए करते हैं। यह तो अनायास भी हो सकता है। ढेला फेंकने पर नीचे गिरता है और बहाया हुआ पानी नीचें की दिशा में गति पकड़ लेता है।

दूरदर्शिता इसी में है कि ऊँचा उठने की बात सोची और वैसी योजना बनाई जाए। जिनके कदम इस दिशा में बढ़ते हैं, वे नर-पशु न रहकर महामानव बनते हैं।

❑ लगता तो यही अच्छा है कि जो अपना है, वह अपने पास रहे और जो दूसरों का है, वह भी किसी प्रकार घिसटकर अपने पास चला आये। वैभव वृद्धि का प्रयास इसी दृष्टि से चलता है। उसके लिए अनीति अपनाने तक में संकोच नहीं किया जाता। लगता है साधनों का बाहुल्य होने से सुविधा के साथ-साथ प्रसन्नता भी बढ़ेगी और प्रगति का द्वार खुलेगा।

वस्तुतः वैसा है नहीं। उपार्जन उपयुक्त रीति-नीति से किया जाए तो ही वह फलता-फूलता है, अन्यथा अनीति की विषाक्तता घुल जाने पर वह वमन, अतिसार का कारण बनता है और रक्त में घुलकर अनेकानेक रोगों का कारण बनता है पाप पचता नहीं, चमड़ी छेदकर बाहर फूटता है।

❑ संचय और उपार्जन सरल है। पचाना कठिन है। वह अनीतिपूर्वक या संयोगवश भी हो सकता है, पर उसे पचाना हर किसी के बस का नहीं। संचय में प्रतिभा काम करती है, किन्तु पचाने के लिए व्यक्तित्व की शालीनता अपेक्षित होती है। उसके अभाव में वैभव के फलस्वरूप दुर्व्यसन पनपते हैं और अहंताजन्य ऐसे कुकृत्य बन पड़ते हैं, जिनका प्रतिफल अपने और दूसरों के लिए नितान्त कष्टकर ही सिद्ध होता है। येन-केन प्रकारेण स्वादिष्ट भोजन प्राप्त कर लेना उतना कठिन नहीं जितना उसे पचा लेना। पचाने की क्षमता उपार्जित होती है, तभी दावत दूसरों के यहाँ खाई जा सकती है।

पाचन क्षमता को बढ़ाना व्यक्ति की अपनी विशिष्टता है। उसी प्रकार वैभव को पचा लेने पर ही सत्परिणामों की आशा की जा सकती है।

❑ सज्जनोचित दृष्टिकोण और विवेकशीलों जैसा व्यवहार बनाकर जो अपनी वरिष्ठता को प्रखर बना पाते हैं, उनके लिए यह भी सम्भव है कि स्वल्पसाधनों और सामान्य परिस्थितियों में भी विपुल प्रसन्नता और समग्र प्रगति का मार्ग खोज निकालें।

❑ बुद्धि स्थिर करने के उपाय बताकर भगवान् कृष्ण ने यह निर्देश दिया है कि इन्द्रियों के दास होकर नहीं, स्वामी होकर रहना चाहिए। संयम के बिना सुख एवं प्रसन्नता प्राप्त नहीं हो सकती। नित्य नए-नए भोगों के पीछे दौड़ने का परिणाम दुःख और अशान्ति है।

❑ श्री गीता पढ़ने, सुनने या समझने की सार्थकता इसी में है कि इन्द्रियों का संयम किया जाए। इन्द्रियों का वेग तथा प्रवाह में बह जाना मानव धर्म नहीं है। किसी भी साधन, योग, जप, तप, ध्यान इत्यादि का प्रारम्भ संयम बिना नहीं होता।

❑ संयम के बिना जीवन का विकास नहीं होता। जीवन के सितार पर हृदयमोहक मधुर संगीत उसी समय गूँजता है, जब उसके तार नियम तथा संयम से बँधे होते हैं।

❑ उपनिषदों में कहा गया है कि जिस घोड़े की लगाम सवार के हाथ में नहीं होती, उस पर सवारी करना खतरे से खाली नहीं है। संयम की बागडोर लगाकर ही घोड़ा निश्चित मार्ग पर चलाया जा सकता है। ठीक यही दशा हृदयरूपी अश्व की है। विवेक तथा संयम द्वारा इन्द्रियों को अधीन करने पर ही जीवन-यात्रा आनन्दपूर्वक चलती है।

❑ उच्छृंखल युवक कभी-कभी मानसिक, सामाजिक और राष्ट्रीय बन्धनों को तोड़ देना चाहते हैं। यह भारी भूल है। जीवन में जोश के साथ होश की उसी प्रकार आवश्यकता है जैसे अर्जुन के साथ श्रीकृष्ण की। अर्जुन में बल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

था, परन्तु श्रीकृष्ण की नीति और बुद्धि ने उसे हजार गुना बढ़ा दिया था।

❑ तप की महिमा अपार है। तपस्या से मनुष्य तेजस्वी होता है, बलवान होता है, शत्रुओं को जीत सकने में समर्थ होता है, मनचाही इच्छाओं को पूर्ण कर सकता है, स्वस्थ रहता है, ऐश्वर्य प्राप्त करता है, सोने की तरह चमकता है, स्वर्ग प्राप्त करता है और अमर तक बन जाता है।

पर यह तप है क्या है—सुनो ! दूसरों की भलाई के लिए अपने सुखों की परवाह न करना यही तप है। तुम्हारे उपकार के बदले में यदि कोई प्रशंसा न करे, कृतज्ञता प्रगट न करे तो भी कुछ परवाह मत करो, यहाँ तक कि भोजन, वस्त्र में भी न्यूनता आवे और सर्दी-गर्मी से बचने का भी प्रबन्ध न हो तो इन सब कष्टों को खुशी-खुशी से सहन कर लो, यह मत सोचो कि दूसरे लोग थोड़े परिश्रम से बहुत सुख पाते हैं और तुम्हें बहुत करने पर भी कुछ नहीं मिलता है और तुम्हें बहुत मिलने वाला है। तप परीक्षा है, यदि तुम इसमें उत्तीर्ण होते हो, खरे तपस्वी सिद्ध होते हो, तो वे सब विभूतियाँ तुम्हें प्राप्त होंगी, जो कि तपस्वियों को प्राप्त होती रहती हैं।

❑ हमें दुनिया में भुखमरों की पलटनें दौड़ती दिखाई पड़ती हैं। ये लोग तप का महत्त्व भूल गये हैं और बीज बोकर फसल तक ठहरने पर विश्वास नहीं करते। प्रभु, इन्हें बीज देता है कि इसे बोओ और सींचो ताकि हजार गुना अन्न उपजे और तुम्हारे भण्डार भर जावें, किन्तु इन्हें इतना धैर्य कहाँ ? आज के बीज को यह आज ही कुटक लेते हैं और खाली हाथ हिलाते-फिरते हैं। क्या इस प्रकार इनका पूरा पड़ेगा ? तपस्वी—बुद्धिमान किसान है। वह कष्ट सहकर खेती करता है और फसल तक के लिए विश्वासपूर्वक ठहरता है। जब पौधे पकते हैं तो वह देखता है कि उसकी मेहनत अकारथ नहीं गई। जो बीज रेत में बिखेर दिया गया था, वह हजार गुना होकर लौट आया है।

❑ साधना का तात्पर्य है—आत्मानुशासन। अपने ऊपर विजय प्राप्त करने वाले को सबसे बढ़कर योद्धा माना गया है। दूसरों पर आक्रमण करना सरल है। बेखबर लोगों पर हमला करना तो और भी सरल है। इसलिए आक्रमणकारियों को योद्धा कहने का औचित्य कम ही है।

❑ असली शत्रु हमारे कुसंस्कार हैं—जो पशु-प्रवृत्तियों के रूप में अन्तरंग की उत्कृष्टता को दबाये बैठे रहते हैं और उत्कृष्टता की दिशा में एक कदम बढ़ाने की तैयारी करते ही भारी अड़चन बनकर द्वार रोकते हैं। इनसे निपटना कम बहादुरी का काम नहीं है।

घुन लकड़ी को और विषाणु स्वास्थ्य को चौपट करते हैं। व्यसन और दुर्गुण ही मनुष्य को नीचे गिराते हैं और उसके अभ्युदय का कोई प्रयास सफल नहीं होने देते।

यदि हम अपने असली शत्रुओं को समझ पाएँ और उनकी जड़ों को उखाड़ पाएँ तो समझना चाहिए कि परम पुरुषार्थ कर गुजरने में सफलता पाई। आत्म-विजेता को ही विश्व विजेता कहा है।

❑ दृश्यमान जगत् वस्तुतः आणविक-रासायनिक जड़-पदार्थों से बना है। जीवधारियों की काया भी इन्हीं पंचतत्त्वों से बनी है। स्पष्ट है कि इस निर्जीव संरचना में ऐसा कुछ नहीं है, जो चेतना को किसी प्रकार की भावनात्मक अनुभूति करा सके। अधिक से अधिक जड़ जगत् की क्षमता इतनी ही मानी जा सकती है कि सर्दी-गर्मी जैसे प्रकृति प्रभावों की काय-कलेवर को अनुकूल-प्रतिकूल प्रतिक्रिया की प्रतीति हो सके।

❑ चेतना को जिस आनन्द की आकांक्षा रहती है, जिस प्रकार उल्लास और सन्तोष होता है, वह भावात्मक है। भाव का उद्भव वस्तुओं से सम्भव नहीं। न उसे रासायनिक पदार्थों में पाया जा सकता है और न मल-मूत्र की गठरी किसी काया में वैसा कुछ होता है। चेतना को तृप्ति और तुष्टि देने वाली सरसता उसका अपना उत्पादन है। सुसंस्कृत अन्तःकरण एक प्रकार का कस्तूरी जैसा घटक है, जो मृग को भी उत्साहित करता है और समीपवर्ती वातावरण में भी मादक सुगन्ध बिखेरने का निमित्त रहता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

❑ परिष्कृत अन्तःचेतना मनुष्य जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है। उसके कारण अनायास ही कण-कण में रस छलकता है और क्षण-क्षण में आनन्द और उल्लास भरी लहरों का उभार अनुभव होता है। परिष्कृत दृष्टि जहाँ भी पड़ती है, वहीं सौन्दर्य छलकने लगता है। आन्तरिक श्रेष्ठता का स्पर्श जिस भी जीवधारी के साथ होता है, उसके श्रेष्ठ अंश को प्रतिध्वनित होने का अवसर मिलता है। परिष्कृत आत्म-चेतना, जड़-जगत् के दर्पण में आत्मीयता और शालीनता के रूप में सर्वत्र परमात्म-सत्ता की झाँकी करती है।

❑ स्वर्ग का द्वार हर मनुष्य के लिए खुला है। जो चाहे सो उसमें बड़ी आसानी के साथ प्रवेश कर सकता है। परमात्मा ने श्रेष्ठ, शुभ और पुण्य-कार्यों को बड़ा ही सरल बनाया है, इस राजमार्ग पर चलने का हर कोई अधिकारी है। झूठ बोलने में बहुत सोचने-समझने, विचारने और सँभल-सँभलकर बात करने की जरूरत होती है, परन्तु सत्य बोलने में जरा भी खटपट नहीं। चोरी करने के लिए बड़ी तिकड़म लड़ानी पड़ती है, परन्तु ईमानदारी से रहना बेहद आसान है, एक कम बुद्धि का आदमी भी ईमानदारी का व्यवहार बड़ी सुगमता से कर सकता है, इसमें उसे कुछ भी परेशानी न उठानी पड़ेगी। इसी प्रकार जुआ, व्यभिचार, ढोंग, छल आदि में पग-पग पर कठिनाई पड़ती हैं, परन्तु पावन कर्त्तव्यों का पालन करते रहना बेहद आसान है, उसमें कोई आपकी बदनामी या कठिनाई नहीं है।

❑ लोग समझते हैं कि असत्य का, पाप का रास्ता सरल और सत्य धर्म का रास्ता कठिन है, परन्तु असल बात ऐसी नहीं है। नरक के द्वार तक पहुँचने में बहुत कठिनाई है और स्वर्ग का द्वार सड़क के किनारे है जहाँ हर कोई बड़ी आसानी के साथ पहुँच सकता है। यह द्वार हर किसी के लिए हर घड़ी खुला रहता है। आप चाहें तो आज ही, अभी ही, उसमें बे-रोक-टोक प्रवेश कर सकते हैं। अपने अन्तःकरण को टटोलिए, आत्म-निरीक्षण कीजिए, आपके अन्दर जो ईश्वरीय दिव्यतेज जगमगा रहा है उसके दर्शन कीजिए। विवेक के प्रकाश में अपनी सद्भावनाओं और सद्प्रवृत्तियों की सम्पत्ति को तलाश कीजिए यही आपकी अमर सहचरी हैं। ये अप्सराएँ आपको क्षणभर में स्वर्ग के दरवाजे तक पहुँचा सकती हैं।

❑ सहकारिता के आधार पर ही मनुष्य बुद्धिमान, बलवान, सम्पत्तिवान बना है। सहकार को मानवीय प्रगति का उद्गम माना जाता है। विचारणीय है कि आखिर यह सहकार है क्या ? तनिक-सा विश्लेषण करने पर स्पष्ट हो जाता है कि स्वार्थ और परमार्थ का समन्वय ही सहकार है। इस प्रक्रिया को अपनाने पर समृद्धि और प्रगति का वातावरण बनता है। सहकार को समाज की उन्नति एवं संस्कृति का मेरुदण्ड कहा जाए तो तनिक भी अत्युक्ति न होगी। इस सत्प्रवृत्ति को अपनाने की प्रथम शर्त यही है कि व्यक्ति औचित्य की मर्यादा में रहे, औसत स्तर की सुविधा से सन्तुष्ट रहना सीखे और वह आधार अपनाए, जिसमें अन्यान्यों के हित कटते न हों। अपनी भलाई उसी सीमा तक की जाए, जिसमें दूसरों के साथ बुराई करने पर उतारू न होना पड़े। नैतिक अनुशासन इसी के लिए बाधित करता है। धर्मधारणा का विशाल काय-कलेवर मनुष्य को इसी परिधि में रहने के लिए, स्वेच्छा सहमत रखने के निमित्त बनाया-खड़ा किया गया है।

❑ धर्म किसी प्रथा-प्रचलन, कर्मकाण्ड या पूजा विधान को नहीं कहते, वरन् वह एक ऐसा राजमार्ग है, जिस पर चलने वाले को बायीं ओर रहना और बिना टकराये चलना पड़ता है। नीतिवान ही धर्मात्मा है। कर्मकाण्डी तो पुजारी भर कहे जा सकते हैं। धर्म और सहकार की एकात्मता पर ही समाज का ढाँचा खड़ा हुआ है। नीति-मर्यादाओं का पालन ही धार्मिकता है। जहाँ भी इनकी उपेक्षा होगी, मनमर्जी बरती जाएगी। अराजकता फैलेगी और समाज संरचना का ढाँचा ही बिखर जाएगा। अध्यात्म अनुशासन का तकाजा व्यक्ति को इसी दृष्टि से नीति-नियमों के बन्धन में रहने हेतु बाधित करता है।

❑ बेल पेड़ से लिपटकर ऊँची तो उठ सकती है, पर उसे अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिए आवश्यक रस भूमि के भीतर से ही प्राप्त

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करना होगा। पेड़ बेल को सहारा भर दे सकता है, पर उसे जीवित नहीं रख सकता। अमरबेल जैसे अपवाद उदाहरण या नियम नहीं बन सकते।

व्यक्ति का गौरव या वैभव बाहर बिखरा दिखता है। उसका बड़प्पन आँकने के लिए उसके साधन एवं सहायक आधार-भूत कारण प्रतीत होते हैं, पर वस्तुतः बात ऐसी है नहीं। मानवीय प्रगति के मूलभूत तत्त्व उराके अन्तराल की गहराई में ही सन्निहित रहते हैं।

❑ परिश्रमी, व्यवहारकुशल और मिलनसार प्रकृति के व्यक्ति सम्पत्ति उपार्जन में समर्थ होते हैं। जिनमें इन गुणों का अभाव है, वे पूर्वजों की छोड़ी हुई सम्पदा की रखवाली तक नहीं कर सकते। भीतर का खोखलापन उन्हें बाहर से भी दरिद्र ही बनाये रहता है।

❑ गरिमाशील व्यक्ति किसी देवी-देवता के अनुग्रह से महान नहीं बनते। संयमशीलता, उदारता और सज्जनता से मनुष्य सुदृढ़ बनता है, पर आवश्यक यह भी है कि उस दृढ़ता का उपयोग लोकमंगल के लिए किया जाए। पूँजी का उपयोग सत्प्रयोजनों के निमित्त न किया जाए तो वह भारभूत ही होकर रह जाती है। आत्म-शोधन ही उपयोगिता तभी है, जब वह चन्दन की तरह अपने समीपवर्ती वातावरण में सत्प्रवृत्तियों की सुगन्ध फैला सके।

❑ उपार्जन में उत्साह होना सराहनीय है। इससे पुरुषार्थ जगता है—पराक्रम में प्रखरता आती है, प्रगति की सम्भावनाएँ साकार होती हैं और सफलताओं का आनन्द मिलता है। उपार्जन के लिए उमंग न रहने पर मनुष्य अन्यमनस्क रहने लगता है और उदासीन की प्रतिक्रिया पक्षाघात की अपंगता जैसी हानिकारक सिद्ध होती है।

इतना होते हुए भी और भी अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि जो उपलब्ध है, उसका मूल्यांकन किया जाए और यह सोचा जाए कि जो हाथ में है, उसका श्रेष्ठ उपयोग कैसे किया जा सकता है ? वह विवेक-बुद्धि न हो तो उपार्जन का उत्साह, अधिक संचय की सुविधा तो देगा, पर सदुपयोग की बात न रहने पर उपलब्ध वैभव या तो निरर्थक चला जाएगा या फिर अनर्थमूलक दुष्परिणाम उत्पन्न करेगा।

❑ जितना महत्त्वपूर्ण प्रगति के लिए प्रयत्न करना है, उससे भी अधिक आवश्यक यह है कि हाथ के साधनों पर नये सिरे से विचार करें और यह देखें कि उनका अनावश्यक संचय तो नहीं हो रहा है ? इनका अपव्यय का दुरुपयोग तो नहीं चल रहा है ? ऐसा कुछ लगे तो उन छिद्रों को बन्द करने की बात सोचनी चाहिए, जिसके कारण अब तक के प्रयत्नों का परिणाम निरर्थक नष्ट होने एवं हानिकारक प्रतिक्रिया उत्पन्न होने का खतरा निश्चित है।

❑ उपार्जन और उपयोग यह दोनों ही तथ्य समान महत्त्व के हैं। दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। एक के बिना दूसरा अपंग है। अस्तु आगे बढ़ने और अधिक कमाने की जाग्रत आकांक्षा के साथ इस विवेकशीलता को भी जगाना चाहिए, जो उपलब्ध साधनों को सत्प्रयोजनों में लगाने की चेतावनी देती है। छलनी में दूध दुहने से तो प्रगति के लिए किया गया श्रम, मात्र थकान और पश्चात्ताप ही दे सकेगा।

❑ यह संसार चतुर प्राणियों से भरा पड़ा है। घात लगाकर दूसरों को उदरस्थ कर जाने वाले जीव-जन्तुओं का बाहुल्य है। अपनी स्वार्थ सिद्धि की कला में प्रवीण लोगों का ही यहाँ बहुमत है। इसके लिए उन्हें दूसरों को जो क्षति पहुँचानी पड़ती है, उस कुकृत्य के भी वे अभ्यस्त हो जाते हैं। ऐसे लोगों को ही चतुर कहते हैं। उनमें से अधिक प्रवीणों को जेलखानों में कैद और प्रतिशोधों की प्रताड़ना सहते कहीं भी देखा जा सकता है।

❑ पक्षी पेड़ों पर बिना एक-दूसरे को क्षति पहुँचाये, चहकते-फुदकते दिन बिताते हैं। चींटियाँ, मधुमक्खियाँ और तितलियाँ भी जीवनयापन की प्रकृतिप्रदत्त सुविधाओं के सहारे ही जीवन बिता लेती हैं। हिरणों के झुण्ड और कबूतरों के टोले भी बिना अनीति अपनाए अपनी सामान्य बुद्धि के सहारे गुजारा कर लेते हैं।

❑ मानवीय बुद्धिमत्ता का यदि सदुपयोग बन पड़े तो वह अपने लिए तो नहीं दूसरों के लिए प्रगति और समृद्धि के उपादानों में सहायता कर ही सकता है, पर लगता है कि बुद्धिमत्ता अपनाने वाले लोग कम हैं। सबको चतुरता सुहाती है। चतुरता की परिभाषा है—"दूसरों के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

उचित अधिकारों का अपहरण करते हुए अपनी वितृष्णाओं की पूर्ति करना।" चतुरता और बुद्धिमत्ता में से किसे अपनाया जाए ? इस सन्दर्भ में मनुष्य भारी भूल करता देखा जाता है। यही है वह विभाजन रेखा जो मनुष्य को सामान्य व असामान्य में बाँटती है।

❑ जीवन-समुद्र का मंथन करने पर हमारे हाथ तीन रत्न ही लगते हैं (१) प्रेम की साध (२) ज्ञान की खोज और (३) पीड़ित मानवता के प्रति असह्य करुणा। इन तीनों के जितने अमृतकण हमारे हाथ लगते हैं हम उतने ही धन्य बनते हैं।

❑ एकाकीपन की ऊब, कठोर परिश्रम की थकान और उतार-चढ़ावों के विक्षोभों से भरी इस जिन्दगी में सरसता केवल प्रेम में है। समस्त सुख-संवेदनाओं की अनुभूति एकदम एक ही केन्द्र पर एकत्रित है। प्रेम की पुलकन ही आनन्द भरे उल्लास में परिणत होती है। प्रेमी बनकर भले ही हमें कुछ खोना पड़े, पर जो पाते हैं, वह खोने से लाख-करोड़ गुना अधिक होता है।

सत्य महान है। मनुष्य क्रमशः उसके उच्च शिखर पर चढ़ता है। जो अब तक जाना जा सका वह अद्‌भुत है, पर इससे क्या जो जानने को शेष पड़ा है, वह अनन्त है। सत्य को जानने, खोजने और पाने के प्रयासों में ही अब तक की विविध उपलब्धियाँ प्राप्त हुई हैं। आगे इसी प्रयास में खुले मस्तिष्क से लगे रहेंगे तो उसे भी प्राप्त कर सकेंगे, जो अब तक प्राप्त नहीं किया जा सका।

संसार में सुख न हो सो बात नहीं, पर पीड़ाएँ भी बहुत हैं। अज्ञान और पतन की भटकन कितनी कष्टकर है ? इस पर जो हृदयतापूर्वक विचार करेगा, उसकी करुणा उमड़े बिना न रहेगी। आत्मा स्वर्ग से उतरकर इस पृथ्वी पर रहने के लिए इसीलिए तो आई है कि वह करुणार्द्र होकर कष्ट-पीड़ितों की सेवा करते हुए मानव-जीवन का आनन्द ले सके।

❑ जो नहीं है उसे पाने के लिए अधिकांश मनुष्य लालायित देखे जाते हैं। अप्राप्त को पाने के लिए व्याकुल रहने वालों की कमी नहीं, पर ऐसे कोई बिरले ही होते हैं, जो आज की अपनी उपलब्धियों और क्षमताओं की गरिमा का मूल्यांकन कर सके। उनके सदुपयोग की सुव्यवस्थित योजना बना सके। जो मिला हुआ है, इतना अधिक है कि उसका सही और सन्तुलित उपयोग करके प्रगति-पथ पर बहुत दूर तक आगे बढ़ा जा सकता है। अधिक पाने के लिए प्रयत्न करना उचित है, पर इससे भी अधिक आवश्यक यह है कि जो उपलब्ध है उसका श्रेष्ठतम सदुपयोग करने के लिए योजनाबद्ध रूप से आगे बढ़ा जाए। जो ऐसा कर सके, उन्हें जीवन असफल रहने का दुर्भाग्य कभी भी सहन नहीं करना पड़ा है।

❑ मानवीय भविष्य के उज्ज्वल या अन्धकारमय होने की यह विषम वेला है। इसे आपत्तिकालीन स्थिति समझा जाना चाहिए। बाढ़, अग्निकाण्ड, भूकम्प, महामारी, युद्ध, दुर्घटना जैसी विषम परिस्थितियों में समीपवर्ती व्यक्ति किसी न किसी रूप में योगदान देता है। प्रसुप्तों की बात दूसरी है।

❑ जिन्हें युग-परिवर्तन का आभास हो, जिन्हें अपने भीतर नर-पशुओं से कुछ ऊँचे स्तर का आभास होता हो, उन्हें पेट और प्रजनन की क्षुद्रप्राणियों जैसी निर्वाह प्रक्रिया तक सीमित नहीं रहना चाहिए। उन्हें कुछ समय की माँग, युग की पुकार, कर्त्तव्यों की चुनौती एवं महाप्रज्ञा की प्रचण्ड प्रेरणा को सुनने, समझने और तदनुरूप ढलने, बदलने का प्रयत्न करना चाहिए। अन्तरात्मा पर गहन तमिस्रा और सघन प्रसुप्ति का साम्राज्य हो तो बात दूसरी है अन्यथा इस युगसन्धि की परिवर्तन वेला में युगधर्म से विमुख रह नहीं सकता। लोभ और मोह की सीमित आवश्यकता समझी जा सकती है और उसकी पूर्ति भी चलते-फिरते हो सकती है, पर उन्हीं हथकड़ी, बेड़ियों में बँधकर अपंग बन जाना अशोभनीय है। विशेषतया ऐसी विषम वेला में जैसी कि महाभारत काल में अर्जुन जैसों के सम्मुख प्रस्तुत थी।

❑ निर्वाह और परिवार की समस्याओं का समाधान करते हुए भी हर भावनाशील, युगचेतना में किसी न किसी प्रकार निश्चित रूप से सहयोगी बन सकता। गिलहरी और शबरी जैसे अंशदान तो विषम परिस्थिति वालों के लिए भी सम्भव

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हैं। यह जी चुराने और 'कार्दन्य' चिरकाल तक पीड़ा और प्रताड़ना का कारण बना रहेगा, इस अहित को भी वे समझें तो हर घड़ी, हर बात में लाभ ही लाभ की बात सोचते रहते हैं।

❑ मनुष्य को सोचने और करने की स्वतन्त्रता प्राप्त है। उसका उपयोग भली या बुरी, सही या गलत किसी भी दिशा में वह स्वेच्छापूर्वक कर सकता है। भव-बन्धन में बँधना भी उसका स्वतन्त्र कर्त्तव्य ही है। इसमें माया, प्रारब्ध, शैतान, ग्रह-नक्षत्र आदि किसी अन्य का कोई दोष या हस्तक्षेप नहीं है। जीवन के स्वरूप और उद्देश्य से अपरिचित व्यक्ति भौतिक लालसाओं और लिप्साओं में स्वतः आबद्ध होता है। वह चाहे तो अपनी मान्यता और दिशा बदल भी सकता है और जिस तरह बन्धनों को अपने इर्द-गिर्द लपेटा था, उसी प्रकार उनसे मुक्त भी हो सकता है।

❑ मनुष्य की बुद्धिमत्ता प्रसिद्ध है। उसकी चतुरता, क्रिया-कुशलता और सोचने की अद्भुतशक्ति की जितनी प्रशंसा की जाए उतनी ही कम है, सृष्टि का मुकुटमणि होने का गौरव उसने अपनी बुद्धिमत्ता के बल पर प्राप्त किया है और विविध दिशाओं में अनेकानेक आविष्कार करके अपने को साधनसम्पन्न बनाया है। इतना होते हुए भी हम देखते हैं कि मनुष्य में मूर्खता की मात्रा कम नहीं है।

हम नित्य असंख्यों को मरते हुए देखते हैं, पर अपने आपको अमर जैसा अनुभव करके काम और लोभ में फँसे रहते हैं। पाप के दुष्परिणामों से असंख्यों प्राणी दुःख से बिलबिलाते हुए देखे जाते हैं, उन्हें देखते हुए भी हम पाप करते हैं और सोचते हैं कि पाप के फल के मिलने वाले दुःख से बचे रहेंगे। क्षणिक सुखों के बदले चिरकालीन सुखशान्ति को ठुकराते रहने वालों की संख्या कम नहीं है। इन क्रिया-कलापों को किस प्रकार बुद्धिमानी कहा जाएगा ?

❑ सांसारिक मनोरंजन की बातों में बुद्धिमानी दिखाना और आत्म-स्वार्थ को भूले रहना यह कहाँ की समझदारी है ? पाठको ! मूर्ख मत बनो। मनुष्योचित बुद्धिमत्ता को अपनाओ। खिलौने रँगने के लिए अपना रक्त मत बहाओ, सच्चे स्वार्थ को ढूँढ़ो और परमार्थ की ओर कदम बढ़ाओ।

❑ साधनों के माध्यम से सुख पाने की प्रचलित मान्यता ने मनुष्य को इस दिशा में उत्तेजित किया है कि वह अधिक मूल्यवान और अधिक मात्रा में पदार्थों का संग्रह करके सुखी बने और सुसम्पन्न कहलाये। इसी मान्यता से प्रेरित और प्रभावित व्यक्ति अपनी समूची शक्ति धन उपार्जन में लगाते और प्रयत्न में सफल होते हैं। प्रायः प्रत्येक व्यक्ति अपने निर्वाह की मौलिक आवश्यकता से कम नहीं, कुछ अधिक ही कमा लेता है।

देखते हैं कि इतनी सफलता प्राप्त कर लेने पर भी मनुष्य सुखी नहीं रह पाता। अत्यधिक उपार्जन नई विकृतियाँ और नई समस्याएँ साथ लेकर आता है और कई बार तो अशान्ति की दृष्टि से वह निर्धनता से भी महँगा पड़ता है। कारण उपार्जन में दोष होना नहीं, वरन् तत्त्व-दृष्टि के अभाव में है। न जाने क्यों इस तथ्य की उपेक्षा की जाती है कि सुख पदार्थों की प्रचुरता में नहीं, परिष्कृत दृष्टिकोण और सद्गुणसम्पन्न व्यक्तित्व में सन्निहित है। उसी के अभाव में धनी और निर्धन समान रूप से दुःखी बने रहते हैं।

❑ जितना श्रम सम्पन्नता के लिए किया जाता है, उसका आधा, चौथाई भी यदि सुसंस्कारिता और सज्जनता उत्पन्न करने और बढ़ाने में किया जा सके तो देखा जाएगा कि सन्तोष और उल्लास की अनुभूतियों से अन्तःकरण भर गया। वस्तुओं से नहीं उनके प्रति रखे गये दृष्टिकोण और दूरदर्शितापूर्ण उपभोग से सुख मिलता है। उपार्जनकर्त्ताओं को सोचना होगा कि यदि वे सचमुच सुखी बनना चाहते हैं तो उन्हें सम्पत्ति की तरह सज्जनता के अभिवर्द्धन में भी दत्तचित्त होना चाहिए।

❑ सूर्य में इतनी गर्मी मौजूद है कि उसके द्वारा यह पृथ्वी कुछ ही क्षणों के अन्दर जल-भुन कर भस्म हो सकती है, परन्तु क्या कभी उसने ऐसा किया है ? क्या वह कभी अपनी महानता और मर्यादा को भंग करता है ? संसार में अनेकानेक—एक से एक ऊँची शक्ति सम्पन्न सत्ताएँ मौजूद हैं, पर वे कभी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अमर्यादित नहीं होतीं फिर तुम ही आपे से बाहर क्यों हुए जा रहे हो ? जो शक्तियाँ और योग्यता आज तुम्हें प्राप्त हैं, वे ईश्वर ने लोक-सेवा और आत्म-उन्नति के लिए दी हैं, न कि इसलिए कि उनसे असहाय लोगों को सताओ, उनके अधिकारों का हरण करो और अनीति बरतो। देखो, तुम्हारा अन्याय तभी तक चल सकता है, जब तक सहन करने वाले मर्यादा के अन्दर हैं, हो सकता है कि तुम्हारे बहुत सताये जाने पर वे उछल पड़ें और वैसे ही क्रूर कर्म करने पर उतर आवें जैसे कि तुम करते हो, तब क्या होगा ? जरा विचार करो, तब तुम्हारा आज का बर्ताव तुम्हारे लिये कितना विषम, घातक और दुखदाई परिणाम उपस्थित कर देगा।

इसलिए, ठहरो ! शक्तिशालियो ! जुल्म करने से पहले एक घड़ी ठहरो !! और विचार करो कि तुम्हारी शक्ति का सर्वोत्तम उद्देश्य और उपयोग क्या है ? ईश्वर ने शक्ति की रचना उन्नति और सेवा के लिए की है। शक्तिशालियो ! जुल्म और अपहरण में उसका दुरुपयोग न करो।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परमपूज्य गुरुदेव की अभिनव पाँच स्थापनाएँ

युगदृष्टा के स्तर की अवतारी सत्ता के रूप में परमपूज्य गुरुदेव ने अपने अस्सी वर्ष के जीवनकाल में जितना भी कुछ किया, उसकी मिसाल कहीं देखने को नहीं मिलती। करोड़ों व्यक्तियों के मनों का निर्माण, उनके सोचने के तरीके में बदलाव एवं युग निर्माण की पृष्ठभूमि बनाकर रख देने का कार्य इन्हीं के स्तर की सत्ता कर सकती थी, जो लाखों वर्षों में कभी-कभी धरती पर आती है। उनके द्वारा की गयी स्थापनाओं का जब प्रसंग आता है तब ईंट-गारे-चूने-सीमेंट से बने भवनों से पहले उनकी स्नेह-संवेदना से सिक्त हुए, ममत्व में स्नानकर उनके अपने हो गये लाखों व्यक्ति दिखाई पड़ते हैं, जिनने उनके एक इशारे पर अपना सब कुछ उनको अर्पित कर दिया। स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में कभी ऐसा ही वातावरण भारत के कोने-कोने में दिखाई देता था, जब हर घर से सत्याग्रही निकलकर आ रहे थे। भावनाओं का आवेग चिरस्थायी नहीं रहता। वे ही लोग जो कभी राष्ट्र निर्माण के लिए अपना सब कुछ छोड़, पढ़ना-लिखना छोड़ देश को आजाद बनाने के लिए कूद पड़े थे, कभी गड़बड़ाने न पाएँ, उसी के लिए बापू ने आजादी के बाद काँग्रेस भंग कर देने व सभी को एक आदर्श स्वयं-सेवक की तरह दरिद्र नारायण का उत्थान कर राष्ट्र निर्माण में लग जाने की सलाह दी थी।

सभी इस तथ्य को जानते हैं कि ऐसा नहीं हुआ, राष्ट्र का कीर्ति-स्तम्भ रूपी वह महापुरुष भी एक वर्ष के अंदर ही शहादत को प्राप्त हो चला गया। गिने-चुने उनके आदर्शों पर चलने वाले रह गये, अवसरवादियों को राजनेतृत्व भाने लगा एवं राष्ट्र आजाद होकर भी उनके हाथ में आ गया जो ब्रिटिश तो नहीं थे किन्तु, उसी रंग में रँगे सत्ता के उन्माद में काम करने वाले शासक थे- सृजेता नहीं। जिंदा रहा तो मात्र बापू का दर्शन बुनियादी आधार पर टिका- मानव को बनाने का तंत्र-आश्रम तंत्र जो सेवाग्राम-साबरमती आश्रम के रूप में कार्य करता रहा और वह भी शीर्ष-पुरुष के न रहने, बिनोवाजी के चले जाने के बाद अस्तित्व व महत्व की दृष्टि से गौण हो गया। परमपूज्य गुरुदेव ने अपनी दिव्य-दृष्टि से यह सब पूर्व में ही देख लिया था कि कोई भी भव्य निर्माण, आश्रम या तंत्र बनाने से पूर्व राष्ट्र को सांस्कृतिक, भौतिक, आध्यात्मिक आजादी दिलाने वाले अगणित व्यक्ति तैयार करने पड़ेंगे। १९११ में आज से ८४ वर्ष पूर्व वि.संवत् २०८६ में जन्मे, राष्ट्र की आजादी में उन्मत्त बने श्रीराममत्त कहलाने वाले, आचार्यश्री ने पहले स्वयं को तपाया, वैचारिक क्रान्ति के निर्माण का आधारभूत तंत्र स्वयं व परमवंदनीया माताजी के रूप में खड़ा किया, 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका अपनी लेखनी से लिखी, ममत्व भरी चिट्ठियों व छोटी-छोटी एक आने की किताबों से जन-जन के मन को छुआ, तब जाकर अपने एक लक्ष के २४ गायत्री महापुरश्चरणों की पूर्णाहुति पर उन्होंने गायत्री तपोभूमि, मथुरा की स्थापना की बात १९५२-५३ में सोची। सबसे पहली मंत्र दीक्षा वहीं पर १९५३ में दी व यह मानते हुए कि बिना आध्यात्मिक आधार बनाये, मनोभूमि में, भावनाओं के स्तर पर बदलाव लाये कोई क्रान्ति सफल नहीं हो सकती, धीमी खुराक देते हुए हर व्यक्ति को गायत्री व यज्ञ के तत्त्वदर्शन से जोड़ते हुए चले गये। गायत्री परिवार रूपी विराट वृक्ष का मूल आधार वह स्थापना है जो जन-जन के मनों में पहले हुई- उनकी भाव संवेदनाओं के उदात्तीकरण के रूप में सम्पन्न हुई व उनके अंदर अपनी गुरुसत्ता को त्याग करने की, यज्ञीय जीवन अपनाने की प्रेरणा बलवती होने लगी। उन्होंने सर्वमेध के रूप में अपना सर्वस्व बलिदान एवं नरमेध के रूप में अपने आप को समाज के हित न्यौछावर करने की भावना से दो यज्ञ किये। अपनी जमींदारी के बाण्ड बेचकर एवं परमवंदनीया माताजी के कीमती सोने के जेवर (ढाई सौ तोले) बेचकर जो स्वेच्छा से सम्पन्न हुआ, एक स्थापना भवन के रूप में जो हुई- वह थी **गायत्री तपोभूमि, मथुरा** जो वृन्दावन रोड पर ऋषि दुर्वासा की जन्मस्थली पर बनी आज से ४२ वर्ष पूर्व १९५३ में। प्रारंभिक स्थापना यों अखण्ड ज्योति संस्थान को माना जा सकता है जहाँ अखण्ड दीपक अपनी जन्मभूमि आँवलखेड़ा से जो वहाँ से मात्र ४० मील दूर थी स्थापित किया गया था एवं प्रारंभिक तप-तितिक्षा वहीं पर १९४१ से, तपोभूमि की स्थापना से भी १२ वर्ष पूर्व आरम्भ हो गयी थी। इस प्रकार जन-जन के मनों का निर्माण उनके अंतःस्थल में प्रवेश कर उनके अंदर देवत्व के जागरण की ललक पैदा करने वाली पृष्ठभूमि पर स्थापनाओं का क्रम बना। किराये की ऐसी हवेली जिसे भुतहा हवेली कहा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
जाता था, में अखण्ड दीपक की स्थापना, उसके समक्ष तप, **अखण्ड ज्योति संस्थान, घीयामण्डी, मथुरा** के रूप में विकसित हुआ एवं एक और दूसरा निर्माण मथुरा में ही गायत्री तपोभूमि के रूप में हुआ जो कि ३ मील दूर वृन्दावन रोड पर १९५३ में बनाई गई। १९५३ में क्रमशः सुसंगठित गायत्री परिवार के बनने की प्रक्रिया चल पड़ी।

इस प्रारंभिक भूमिका को समझने के बाद ही परमपूज्य गुरुदेव की पाँच मूल स्थापनाओं एवं बाद में देश के कोने-कोने में बनी भव्य इमारतों के रूप में शक्तिपीठों, प्रज्ञा संस्थानों, भारत व विश्वभर में घर-घर में स्थापित स्वाध्याय मण्डलों व गायत्री परिवार की शाखाओं, प्रज्ञापीठों, चरणपीठों का महत्त्व समझा जा सकता है। नहीं तो जैसे अन्यान्य आश्रम-संस्थान बनते हैं, ऐसे इनका भी वर्णन किया जा सकता था व यह कहा जा सकता था कि यह वैभवपूर्ण स्थापनाएँ पूज्यवर ने कीं। उनमें यदि प्राण फूँके गये हों, प्राणवान व्यक्ति वहाँ रहते हों व उस शक्ति के महा-अवसान के बाद भी वे सतत् उसी दिशा में चल रहे हों तो माना जाना चाहिए कि प्रारंभिक पुरुषार्थ जो किया गया, वह औचित्यपूर्ण था।

परमपूज्य गुरुदेव की महत्त्वपूर्ण पाँच स्थापनाएँ इस प्रकार हैं–

(१) युगतीर्थ आँवलखेड़ा (२) अखण्ड ज्योति संस्थान, घीयामण्डी, मथुरा (३) गायत्री तपोभूमि, मथुरा (४) शान्तिकुंज, गायत्री तीर्थ, सप्तसरोवर, हरिद्वार तथा (५) ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान, सप्तसरोवर, हरिद्वार ।

युगतीर्थ आँवलखेड़ा का नाम सबसे पहले इसलिए लिखा कि यहीं पर वह युगपुरुष संवत् १९६८ की आश्विन कृष्ण त्रयोदशी तिथि के दिन, ब्राह्ममुहूर्त में, जो अँग्रेजी तारीख से २० सितम्बर, १९११ के दिन आती थी, में जन्मा। एक श्रीमंत ब्राह्मण परिवार में, जहाँ धन की कोई कमी नहीं थी, पूरा परिवार संस्कारों से अनुप्राणित, पिता भागवत के प्रकाण्ड पंडित, बहुत बड़ी जागीर के मालिक। आज जहाँ पूज्यवर की स्मृति में एक विराट स्तंभ की, एक चबूतरे की तथा उनके कर्तृत्व रूपी शिलालेखों की स्थापना हुई है- वहीं पूज्यवर ने शरीर से जन्म लिया था। समीप बनी दो कोठरियाँ जो काल प्रवाह के क्रम में गिर सी गयी थीं, जीर्णोद्धार कर वैसी ही निर्मित कर दी गयी हैं- जैसी उनके समय में थीं। जन्मभूमि का कण-कण उस दैवीसत्ता की चेतना से अनुप्राणित है। उनके हाथ से खोदा कुँआ जिसे पूरे गाँव का एकमात्र मीठे जल वाला कुँआ माना गया- वह अभी भी है, उनके हाथ से रोपा नीम का पेड़ एवं वह बैठक जहाँ स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में सब बैठकर चर्चा करते थे, आज भी उन दिनों की याद दिलाते हैं। पास में ही दो कोठरियाँ हैं जिनमें से एक कक्ष में वह स्थान है जहाँ दीपक के प्रकाश में से सूक्ष्म शरीरधारी गुरुसत्ता प्रकट हुई थी तथा जिसने उनके जीवन की दिशाधारा का १९२६ के बाद के क्रम का निर्धारण कर दिया था। यह सब देखकर मस्तिष्क-पटल पर वह दृश्य उभर आता था, जिसे गुरुसत्ता ने कभी देखा था व जो गायत्री परिवार की स्थापना का मूल आधार बना। आँवलखेड़ा में ही उनकी माताजी की स्मृति में स्थापित माता दानकुँवरि इण्टर कालेज है जो उनके द्वारा दान दी गयी जमीन में प्रदत्त धनराशि द्वारा विनिर्मित है। १९६३ से चल रहे इस इंटर कालेज से कई मेधावी छात्र निकल कर आत्म-निर्भर बने हैं व उच्च पदों पर पहुँचे हैं।

१९७९-८० में गायत्री शक्तिपीठ एवं कन्या इंटर कॉलेज की स्थापना का ताना-बाना बुना जाने लगा जो एक विशाल शक्तिपीठ तथा आसपास के दो सौ ग्रामों की बालिकाओं के पठन-पाठन की व्यवस्था करने वाले, उन्हें सुशिक्षित, संस्कारवान, आत्मावलम्बी बनाने वाले कन्या महाविद्यालय का अब रूप ले चुका है। प्रथम पूर्णाहुति हेतु इसी भूमि को जो शक्तिपीठ-जन्मभूमि-ग्रामीण क्षेत्र के चारों ओर है, इसीलिए चुना गया कि यहाँ से उद्भूत प्राण ऊर्जा से यहाँ आने वाला हर संकल्पित साधक अनुप्राणित होकर जाए व राष्ट्र के नव-निर्माण की सांस्कृतिक व भावनात्मक क्रान्ति की पृष्ठभूमि रख सके। यहाँ पूज्यवर १९३६-३७ तक ही रहे, कुछ दिन आगरा रहकर १९४०-४१ में मथुरा चले गये, जहाँ दो-तीन मकान बदलने के बाद वर्तमान मकान किराये पर लिया जिसे आज अखण्ड-ज्योति संस्थान कहते हैं।

अखण्ड ज्योति संस्थान, घीयामण्डी, मथुरा में स्थित है। परमपूज्य गुरुदेव सीमित साधनों में अपने अखण्ड दीपक के साथ यहीं रहने लगे एवं यहीं से क्रमशः आत्मीयता विस्तार की जन-जन तक अपने क्रान्तिकारी चिंतन के विस्तार की प्रक्रिया 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका, जो आगरा से ही आरम्भ कर दी गयी थी, की 'गायत्री चर्चा' स्तम्भ व अन्यान्य लेखों की पंक्तियों के माध्यम से सम्पन्न होने लगी। व्यक्तिगत पत्रों द्वारा उनके अंतःस्थल को स्पर्श कर एक महान स्थापना का बीजारोपण होने लगा। यहीं पर अगणित दुःखी, तनावग्रसित

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
व्यक्तियों ने आकर उनके स्पर्श से नये प्राण पाये तथा उनके व परमवंदनीया माताजी के हाथों से भोजन-प्रसाद पाकर उनके अपने होते चले गये। हाथ से बने कागज पर छोटी ट्रेडिल मशीनों द्वारा यहीं पर अखण्ड ज्योति पत्रिका छापी जाती थी व छोटी-छोटी किताबों द्वारा लागत मूल्य पर उसे निकालने योग्य खर्च निकलता था। बगल की एक छोटी-सी कोठरी में जहाँ अखण्ड दीपक जलता था, आज पूजाघर विनिर्मित है। पूरी बिल्डिंग को खरीद कर उनके सुपुत्र ने एक नया आकार व मजबूत आधार दे दिया है किन्तु यह कोठरी अंदर से वैसी ही रखी गयी है जैसी पूज्यवर के समय में १९४२-४३ में रही होगी। तब से लेकर आगामी ३० वर्ष का साधनाकाल-लेखनकाल पूज्यवर का इसी घीयामण्डी के भवन में छोटी-छोटी दो कोठरियों में गहन तपश्चर्या के साथ बीता। तपोभूमि निर्माण की पृष्ठभूमि यहीं बनी, १९५८ में सहस्र कुण्डी यज्ञ की आधारशिला यहीं रखी गयी, यहीं सारी योजना बनी एवं विधिवत-गायत्री परिवार बनता चला गया। रोज आने वाले पत्रों को स्वयं परमवंदनीया माताजी पढ़ती जातीं एवं पूज्यवर इतनी ही देर में जवाब लिखते जाते, यही सूत्र संबंधों के सुदृढ़ बनने का आधार बना। हर परिजन को तीन दिन में जवाब मिल जाता, शंका-समाधान होता चला जाता एवं देखते-देखते एक विराट गायत्री परिवार बनता चला गया। गायत्री महाविज्ञान के तीनों खण्ड, युग निर्माण परक साहित्य, आर्ष-ग्रन्थों के भाष्य को अंतिम आकार देने का कार्य यहीं सम्पन्न हुआ। जनसम्मेलनों, छोटे-बड़े यज्ञों एवं १००८ कुण्डी पाँच विराट् यज्ञों में पूज्यवर यहीं से गये एवं विदाई सम्मेलन की रूपरेखा बनाकर स्थायी रूप से इस घर से १९७१ की २० जून को विदा लेकर चले गये। इस संस्थान के कण-कण में जहाँ आज १० लाख से अधिक संख्या में हिन्दी सहित सभी भाषाओं में अखण्ड ज्योति पत्रिका के प्रकाशन, विस्तार, डिस्पैच आदि का एक विराट तंत्र स्थापित है, परमपूज्य गुरुदेव की चेतना संव्याप्त अनुभव की जा सकती है। भले ही बहिरंग का कलेवर बदल गया हो, अंदर प्रवेश करते ही परमपूज्य गुरुदेव व परमवंदनीया माताजी की सतत विद्यमान प्राणचेतना के स्पन्दन वहाँ विद्यमान हैं, यह प्रत्यक्षतः देखा जा सकता है।

गायत्री तपोभूमि, मथुरा को परमपूज्य गुरुदेव की चौबीस महापुरश्चरणों की पूर्णाहुति पर की गयी स्थापना माना जा सकता है, जिसे विनिर्मित ही गायत्री परिवार रूपी संगठन के विस्तार के लिए किया गया था। इसकी स्थापना से पूर्व चौबीस सौ तीर्थों के जल व रज को संग्रहीत करके यहाँ उनका पूजन किया गया, एक छोटी किन्तु भव्य यज्ञशाला में अखण्ड अग्नि स्थापित की गयी तथा एक गायत्री महाशक्ति का मन्दिर विनिर्मित किया गया। चौबीस सौ करोड़ गायत्री मंत्रों का लेखन जो श्रद्धापूर्वक नैष्ठिक साधकों द्वारा किया गया था, यहाँ पर संरक्षित कर रखा गया है। पू. गुरुदेव की साधनास्थली व प्रातःकाल की लेखनी की साधना की कोठरी यदि अखण्ड ज्योति संस्थान में थी तो उनकी जन-जन से मिलने, साधनाओं द्वारा मार्गदर्शन देने की कर्म-भूमि गायत्री तपोभूमि थी। यहीं पर १०८ कुण्डी गायत्री महायज्ञ में १९५३ में पहली बार पूज्यवर ने साधकों को मंत्र दीक्षा दी। यहीं पर १९५६ में नरमेध यज्ञ तथा १९५८ में विराट सहस्रकुण्डी यज्ञायोजन सम्पन्न हुए। श्रेष्ठ नररत्नों का चयन कर गायत्री परिवार को विनिर्मित करने का कार्य यहीं व्यक्तिगत मार्गदर्शन द्वारा सम्पन्न हुआ। हिमालय प्रवास से लौटकर पूज्य आचार्यश्री ने युग निर्माण योजना के शत-सूत्री कार्यक्रम एवं सत्संकल्प की तथा युग निर्माण विद्यालय के एक स्वावलम्बन प्रधान शिक्षा देने वाले तंत्र के आरम्भ होने की घोषणा की। यह विधिवत् १९६४ से आरम्भ किया गया एवं अभी भी सफलतापूर्वक चल रहा है। जिस कक्ष में परमपूज्य गुरुदेव सभी से मिला करते थे, अभी भी यहाँ देखा जा सकता है। भव्य निर्माण परमपूज्य गुरुदेव की १९७१ की विदाई के बाद यहाँ हो गया है किन्तु, कण-कण में उनकी प्राणचेतना का दर्शन किया जा सकता है। विराट प्रज्ञानगर, युग निर्माण विद्यालय, साहित्य की छपाई हेतु बड़ी-बड़ी ऑफसेट मशीनें तथा युग निर्माण साहित्य जो पूज्यवर ने जीवन भर लिखा, उसका वितरण-विस्तार तंत्र यहाँ पर देखा जा सकता है।

शान्तिकुंज, हरिद्वार ऋषि परम्परा के बीजारोपण केन्द्र के रूप में १९७१ में स्थापित किया गया था, जब परमपूज्य गुरुदेव मथुरा स्थायी रूप से छोड़कर परमवंदनीया माताजी को अखण्ड ज्योति दीपक की रखवाली हेतु यहाँ छोड़कर हिमालय में चले गये। गुरुसत्ता के निर्देश पर वे पुनः एक वर्ष बाद लौटे व तब शांतिकुंज को उनने एक बड़ा विराट रूप देने, सभी ऋषिगणों की मूलभूत स्थापनाओं को यहाँ साकार बनाने का निश्चय किया। इससे पूर्व परमवंदनीया माताजी ने २४ कुमारी कन्याओं के साथ अखण्ड दीपक के समक्ष २४० करोड़

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org
गायत्री मंत्र का अखण्ड अनुष्ठान आरंभ कर दिया था। पूज्यवर ने प्राण प्रत्यावर्तन सत्र, जीवन साधना सत्र, वानप्रस्थ सत्र आदि के माध्यम से विभिन्न क्षेत्र में सक्रिय कार्य करने वाले कार्यकर्त्ता यहीं गढ़े। यह सत्र शृंखला कल्प साधना, संजीवनी साधना सत्रों के रूप में तब से ही ९ दिवसीय सत्रों व एक माह के युग शिल्पी प्रशिक्षण सत्रों के रूप में चल रही है, अभी भी अनवरत उसमें आने वालों का ताँता लगा रहता है। पहले से ही सब अपनी बुकिंग इसमें करा लेते हैं।

शांतिकुंज को गायत्री तीर्थ का रूप देकर सप्तऋषियों की मूर्तियों की स्थापना १९७८-७९ में की गयी, एक देवात्मा हिमालय विनिर्मित किया गया एवं यहाँ सभी संस्कारों को सम्पन्न करते रहने का क्रम बन गया जो सतत् चल रहा है। नित्य यहाँ दीक्षा, पुंसवन, नामकरण, विद्यारम्भ, यज्ञोपवीत, विवाह, श्राद्ध-तर्पण आदि संस्कार सम्पन्न होते हैं। इस बीच परमवंदनीया माताजी ने जागरण सत्र शृंखलाएँ सम्पन्न करना आरम्भ रखा। देव कन्याओं को प्रशिक्षित कर पूरे भारत में जीप टोलियों में भेजा गया। इनके माध्यम से तीन वर्ष तक भारत के कोने-कोने में तुमुलनाद होता रहा।

शांतिकुंज का गायत्री नगर जो आज एक विराट स्थापना के रूप में, एक एकेडमी के रूप में नजर आता है व जिसमें एक बार में एक साथ दस हजार व्यक्ति एक साथ ठहर सकते हैं, १९८१-८२ में बनना आरम्भ हुआ । विलक्षण, दुर्लभ जड़ी-बूटियों के पौधे यहाँ लगाये गये तथा प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा रूपी तीर्थस्थली का पूज्यवर ने अपने सामने निर्माण कराया। यहीं उनके निर्देशानुसार उनके शरीर छोड़ने पर दोनों सत्ताओं को अग्नि समर्पित की जानी थी। स्वावलम्बन विद्यालय से लेकर एक विशाल चौके का निर्माण एवं गायत्री विद्यापीठ से लेकर भारत के सभी सरकारी विभागों के प्रशिक्षण के तंत्र की स्थापना यहाँ पर की गयी है एवं यह एक जीता-जागता तीर्थ अब बन गया है, जहाँ पर उज्ज्वल भविष्य की पूर्व झलक देखी जा सकती है। कम्प्यूटरों से सज्जित विशाल कार्यालय से लेकर पत्राचार विद्यालय जहाँ नित्य हजारों पत्रों के द्वारा पूरे तंत्र का मार्गदर्शन किया जाता है, यहाँ की विशेषता है।

ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान परमपूज्य गुरुदेव की अभिनव पाँचवीं स्थापना है, जहाँ पर विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय का अभिनव शोध कार्य चल रहा है। इसे १९७१ की गायत्री जयंती पर आरम्भ किया गया था। वर्तमान शांतिकुंज- गायत्री तीर्थ से आधा किलोमीटर दूरी पर गंगातट पर स्थित यह संस्थान अपनी आकर्षक बनावट के कारण सहज ही सबके मनों को मोहकर आमंत्रित करता रहता है। इसमें तीन मंजिलों में प्रथम तल पर एक विज्ञान के उपकरणों से सुसज्जित यज्ञशाला विनिर्मित है तथा चौबीस कक्षों में गायत्री महाशक्ति की चौबीस मूर्तियाँ बीजमंत्रों व उनकी फलश्रुतियों सहित स्थापित हैं। द्वितीय तल पर एक वैज्ञानिक प्रयोगशाला है, जहाँ ऐसे उपकरण स्थापित हैं जो यह जाँच-पड़ताल करते हैं कि साधना से पूर्व व पश्चात्, यज्ञादि मंत्रोच्चारण के पूर्व व पश्चात् क्या-क्या परिवर्तन शरीर-मन की गतिविधियों व रक्त आदि संघटकों में देखने में आये। इनके आधार पर साधकों को साधना संबंधी परामर्श दिया जाता है। यहाँ पर वनौषधियों का विश्लेषण भी किया जाता है तथा यज्ञ ऊर्जा-मंत्र शक्ति का क्या प्रभाव साधक की मस्तिष्कीय तरंगों, जैव विद्युत आदि पर पड़ा, यह देखा जाता है। विभिन्न प्रकार के मनोवैज्ञानिक परीक्षण भी यहाँ किये जाते हैं। तृतीय तल पर एक विशाल ग्रंथागार स्थापित है, जहाँ विश्वभर के शोध प्रबंध वैज्ञानिक अध्यात्मवाद पर एकत्रित किये गये हैं। यहाँ प्रायः ४५००० से अधिक ग्रंथ हैं, जिनमें कई पुरातन पाण्डुलिपियाँ हैं। यह अपने आप में एक अनूठा संकलन है जो और कहीं एक साथ देखने में नहीं मिलता।

परमपूज्य गुरुदेव की उपरोक्त पाँच स्थापनाएँ किसी को भी यह परिचय दे सकती हैं कि किस विलक्षण दृष्टास्तर की वह महासत्ता थी जो हम सबके बीच अपना लीली संदोह रचकर चली गयी। प्रत्यक्ष तो यह केन्द्रीय पाँच स्थापनाएँ नजर आती हैं किन्तु ४८०० से अधिक अपने भवनों वाले प्रज्ञा संस्थान ४०००० से अधिक प्रज्ञामण्डल व स्वाध्याय मण्डल तथा अगणित गायत्री परिवार की शाखाएँ यदि इनमें मिलाई जाएँ तो इनका मूल्य राशि में आँका नहीं जा सकता। यही वह सब है जो उस महापुरुष को एक अवतारी स्तर की सत्ता के रूप में प्रतिष्ठापित करता है व जिसके कर्तृत्व पर श्रद्धावनत होने का मन करता है। ❑❑❑

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य का जीवनदर्शन : समग्र वाङ्मय

परमपूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने जीवन भर जो अपनी लेखनी से लिखा, औरों को प्रेरित कर उनसे सृजनात्मक लेखन करवाया, पुस्तकों-पत्रिकाओं में जो प्रकाशित हुआ, समय-समय पर उनने अमृतवाणी के माध्यम से जो विचारों की अभिव्यक्ति की, विचारसार व सूक्तियाँ जो वे लिख गये या अनायास कभी कह गये तथा पत्रों के माध्यम से जो अंतरंग स्पर्श जन-जन को दिया, वह समग्र इस वाङ्मय के खण्डों में है । जिनके नाम इस प्रकार हैं :-

१. युगद्रष्टा का जीवन-दर्शन
समग्र वाङ्मय का परिचय
२. जीवन देवता की साधना-आराधना
३. उपासना-समर्पण योग
४. साधना पद्धतियों का ज्ञान और विज्ञान
५. साधना से सिद्धि-१
६. साधना से सिद्धि-२
७. प्रसुप्ति से जाग्रति की ओर
८. ईश्वर कौन है, कहाँ है, कैसा है ?
९. गायत्री महाविद्या का तत्वदर्शन
१०. गायत्री साधना का गुह्य विवेचन
११. गायत्री साधना के प्रत्यक्ष चमत्कार
१२. गायत्री की दैनिक एवं विशिष्ट अनुष्ठान-परक साधनाएँ
१३. गायत्री की पंचकोशी साधना एवं उपलब्धियाँ
१४. गायत्री साधना की वैज्ञानिक पृष्ठभूमि
१५. सावित्री, कुण्डलिनी एवं तंत्र
१६. मरणोत्तर जीवन : तथ्य एवं सत्य
१७. प्राणशक्ति : एक दिव्य विभूति
१८. चमत्कारी विशेषताओं से भरा मानवी मस्तिष्क
१९. शब्द ब्रह्म-नाद ब्रह्म
२०. व्यक्तित्व विकास हेतु उच्चस्तरीय साधनाएँ
२१. अपरिमित संभावनाओं का आगार मानवी व्यक्तित्व
२२. चेतन, अचेतन एवं सुपर चेतन मन
२३. विज्ञान और अध्यात्म परस्पर पूरक
२४. भविष्य का धर्म : वैज्ञानिक धर्म
२५. यज्ञ का ज्ञान-विज्ञान
२६. यज्ञ : एक समग्र उपचार प्रक्रिया
२७. युग-परिवर्तन कैसे और कब ?
२८. सूक्ष्मीकरण एवं उज्ज्वल भविष्य का अवतरण-१
२९. सूक्ष्मीकरण एवं उज्ज्वल भविष्य का अवतरण-२ (सतयुग की वापसी)
३०. मर्यादा पुरुषोत्तम राम
३१. संस्कृति-संजीवनी श्रीमद्भागवत एवं गीता
३२. रामायण की प्रगतिशील प्रेरणाएँ
३३. षोडश संस्कार विवेचन
३४. भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्त्व
३५. समस्त विश्व को भारत के अजस्र अनुदान
३६. धर्मचक्र प्रवर्त्तन एवं लोकमानस का शिक्षण
३७. तीर्थ सेवन : क्यों और कैसे ?
३८. प्रज्ञोपनिषद्
३९. नीरोग जीवन के महत्त्वपूर्ण सूत्र
४०. चिकित्सा उपचार के विविध आयाम
४१. जीवेम शरदः शतम्
४२. चिरयौवन एवं शाश्वत सौन्दर्य
४३. हमारी संस्कृति : इतिहास के कीर्ति स्तम्भ
४४. मरकर भी अमर हो गये जो
४५. सांस्कृतिक चेतना के उन्नायक : सेवाधर्म के उपासक
४६. भव्य समाज का अभिनव निर्माण
४७. यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता
४८. समाज का मेरुदण्ड सशक्त परिवार तंत्र
४९. शिक्षा एवं विद्या
५०. महापुरुषों के अविस्मरणीय जीवन प्रसंग-१
५१. महापुरुषों के अविस्मरणीय जीवन प्रसंग-२
५२. विश्व वसुधा जिनकी सदा ऋणी रहेगी
५३. धर्मतत्त्व का दर्शन व मर्म
५४. मनुष्य में देवत्व का उदय
५५. दृश्य जगत् की अदृश्य पहेलियाँ
५६. ईश्वर विश्वास और उसकी फलश्रुतियाँ
५७. मनस्विता प्रखरता और तेजस्विता
५८. आत्मोत्कर्ष का आधार- ज्ञान
५९. प्रतिगामिता का कुचक्र ऐसे टूटेगा
६०. विवाहोन्माद : समस्या और समाधान
६१. गृहस्थ : एक तपोवन
६२. इक्कीसवीं सदी : नारी सदी
६३. हमारी भावी पीढ़ी और उसका नवनिर्माण
६४. राष्ट्र समर्थ और सशक्त कैसे बने ?
६५. सामाजिक, नैतिक एवं बौद्धिक क्रान्ति कैसे ?
६६. युग निर्माण योजना-दर्शन, स्वरूप व कार्यक्रम
६७. प्रेरणाप्रद दृष्टान्त
६८. पूज्यवर की अमृतवाणी (भाग एक)
६९. विचारसार एवं सूक्तियाँ (प्रथम खण्ड)
७०. विचारसार एवं सूक्तियाँ (द्वितीय खण्ड)

वाङ्मय के आगे प्रकाशित होने वाले ३८ खण्ड निम्न विषयों पर होंगे—

७१. मनोविकारों की मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि
७२. तनाव के कारण एवं उनके निवारण के उपाय
७३. चिन्तन का विधेयात्मक-निषेधात्मक स्वरूप
७४. पुरुषार्थ और मानवी जिजीविषा
७५. संकल्प बल का अनूठा प्रभाव
७६. बाल-विकास के विविध सोपान
७७. बाल मनोविज्ञान का सही उपयोग
७८. पारिवारिकता में सुसंस्कारों का योगदान
७९. पारिवारिक पंचशील और परिवार-निर्माण
८०. व्यक्तित्व के विकास की प्रक्रिया
८१. विचार-विज्ञान का महत्त्व
८२. सामाजिक समस्याएँ और उनका समाधान
८३. समाज-निर्माण के विभिन्न चरण
८४. सामाजिक जीवन में सद्गुणों की भूमिका
८५. नर-नारी की सामान्य समस्याएँ और उनका समाधान
८६. नारी जागृति की बाधाएँ एवं उनके निराकरण के उपाय
८७. पारिवारिक जीवनः एक तप-साधना
८८. दाम्पत्य जीवन के संयुक्त दायित्व
८९. नीति-विज्ञान और नैतिकता
९०. कृषि, व्यवसाय और उद्योग की उन्नति के आधार
९१. पूज्य गुरुदेव के स्फुट विचार
९२. पूज्यवर की अमृतवाणी-२
९३. पूज्य गुरुदेव की दिव्य अनुभूतियाँ
९४. पूज्य गुरुदेव के लिखे स्मरणीय पत्र
९५. तंत्र महाविज्ञान विवेचन
९६. मंत्र महाविज्ञान विवेचन
९७. महापुरुषों के प्रेरक जीवन-प्रसंग
९८. प्रेरणाप्रद कथा एवं गाथाएँ
९९. हृदयस्पर्शी विविध कथाएँ
१००. शान्तिकुंज का प्रज्ञा अभियान
१०१. युग निर्माण मिशन का क्रमिक इतिहास
१०२. वेद-सार-चिन्तन
१०३. पुराण-शोध-सार
१०४. उपनिषद् और आरण्यकों की दार्शनिक विषयवस्तु
१०५. काव्य-गीत-मंजूषा
१०६. मिशन के रचनात्मक कार्यक्रमों का क्रमिक इतिहास
१०७. मिशन की लोक-व्यवहार संहिता
१०८. गुरुदेव की अपने आत्मीय जनों से अपनी बातें

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar, Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning 3000+ Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities, Poems and Many More www.vicharkrantibooks.org